प्रसिद्ध उपन्यास THE AMERICAN

हृदय के बंधन

हेनरी जेम्स

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

THE AMERICAN by Henry James का अनुवाद

अनुवादक

चिन्तामणि चतुर्वेदी

मूल्य : सात रुपये

विशिष्ट लायब्रेरी संस्करण का मूल्य : आठ रुपये

प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६
मुद्रक : युगान्तर प्रेस, मोरी गेट, दिल्ली-६

HRIDAYA KE BANDHAN by Henry James
NOVEL 7·00

परिचय

हेनरी जेम्स की गिनती संसार के महान उपन्यासकारों में होती है। उन्हें अमरीका का फ़्लाबेयर कहा जाता है। उन्होंने उपन्यास को एक आधुनिक उन्नत कला-रूप में विकसित किया और उसे अमरीका के प्रादेशिक धरातल से उठाकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाया। वे पहले अमरीकी लेखक थे जिन्होंने उसमें 'मन का वातावरण' उपस्थित करने का प्रयास किया और उसमें सफलता प्राप्त की। 'हृदय के बंधन' उनके सुप्रसिद्ध उपन्यास 'द अमेरिकन' का अनुवाद है।

हेनरी जेम्स का जन्म १८४३ में न्यूयार्क नगर के उस स्थान पर हुआ था जहां आज न्यूयार्क विश्वविद्यालय की इमारत खड़ी है। पिता की बचपन में ही एक टांग जाती रही थी। वे बड़े ही अस्थिर स्वभाव के थे और कहीं भी एक जगह जमकर नहीं रहते थे। इसीलिए जेम्स का बचपन अधिकतर घर की चारदीवारी से बाहर और खुले वातावरण में बीता। शिक्षा के लिए उन्हें बाहर भेजा गया। किन्तु स्कूल और घरेलू अध्यापकों से उन्हें चिढ़ थी और वे पुस्तकालय में बैठे घंटों तरह-तरह की पुस्तकों में डूबे रहते थे।

रोड द्वीप पर एक बार जेम्स की चित्रकार जॉन ला फार्गे और आलोचक टी० एस० पेरी से मुलाकात हुई जो शीघ्र ही गहरी मित्रता में बदल गई। इस मित्रता का फल यह हुआ कि जेम्स का झुकाव लेखन की ओर हो गया। १८६४ में उनकी पहली कहानी एक पत्रिका में छपी और १८६८ तक, केवल आधी दर्जन कहानियां प्रकाशित कराके ही, उन्होंने अमरीकी कहानीकारों में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया। हेनरी जेम्स ने इस बीच आलोचनात्मक लेख भी लिखे, जिन्हें अच्छा सम्मान मिला।

अमरीकी गृहयुद्ध के प्रारम्भिक दिनों में ही एक आग को बुझाने में सहायता करते हुए उनकी रीढ़ की हड्डी में चोट आ गई, जिसके कारण कई वर्ष एक तरह की निष्क्रियता में ही बिताने पड़े। १८६९-७० में उन्होंने यूरोप की यात्रा की और फिर कोई दो वर्ष इटली में बिताए। तभी उनका पहला उपन्यास

'ए पैशनेट पिलग्रिम' छपा और उसके कुछ समय बाद पहला महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'रोड्रिक हडसन' आया जिसकी चारों ओर खूब चर्चा हुई। १८७५ के आखिर मे वे पेरिस गए जहां उनकी भेंट प्रख्यात रूसी उपन्यासकार तुर्गनेव से हुई। तुर्गनेव के द्वारा वे फ़लाबेयर, ज़ोला, दोदे और मोपासां जैसे चोटी के साहित्यकारो के सम्पर्क में आए। किन्तु उन्हें सबसे अधिक प्रभावित तुर्गनेव ने ही किया। तुर्गनेव से उन्होंने यह सीखा कि महत्त्वपूर्ण कहानी नहीं, बल्कि चरित्र हैं और वही वस्तुतः कहानी को बनाते है।

हेनरी जेम्स अब लंदन में बस गए। उन्होंने अपना जीवन पूरी तरह साहित्य को अर्पित कर दिया और अपनी लेखनी से उसकी सभी विधाओं—कहानी, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र, आलोचनात्मक निबन्ध, यात्रा-संस्मरण, आत्मजीवनी, कला-समीक्षा आदि को खूब समृद्ध किया। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी और उनकी कृतियों में गहरे मनोविश्लेषण, कुशल कलाकारिता और सूक्ष्म एवं कोमल अभिव्यंजनाओं का एक अनुपम सौन्दर्य है। शीघ्र ही उनकी ख्याति सारे यूरोप में फैल गई। अपने सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रमुख उपन्यासों—'द एम्बेसेडर', 'द विंग्स ऑव द डव' और 'द गोल्डन बाउल' की रचना उन्होंने इसी काल में की। जेम्स ने उपन्यास को कहानी और घटनाओं की शृंखला के स्तर से ऊपर उठाकर एक महान कलारूप में विकसित किया।

'द अमेरिकन' (हृदय के बंधन) की रचना हेनरी जेम्स ने १८७७ में की थी, जब उनकी कला में काफी निखार आ चुका था। अभिजात मान्यताओं और संस्कारों के साथ नई सभ्यता के संघर्ष की इस कहानी के द्वारा हेनरी जेम्स ने अपने इस उपन्यास में अमरीकियों की नैतिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को यूरोप की प्राचीन नैतिकता और प्रथाओं के सन्दर्भ में रखा है।

एक

सन् १८६८ का मई [illegible] था। चटक धूप खिली थी। लूव्र संग्रहालय के एक कक्ष में रखे बृहत् वृत्ताकार दीवान (कौच) पर एक सज्जन आराम से पड़े थे। अब यह बड़ा कौच हटा दिया गया है। इसका जल्दी थक जानेवाले सभी कलाप्रेमियों को बड़ा खेद है, लेकिन इस सज्जन ने उस दीवान के सबसे गुदगुदे हिस्से पर कब्ज़ा कर रखा था। उसने अपना सिर पीछे की ओर टिकाकर पैर फैला रखे थे और वह बड़े आनन्द से म्यूरिलो के सुन्दर चित्र 'मेडोना' को देख रहा था। उसने अपना हैट उतार लिया था; उसके पास बगल में उसकी लाल रग की गाइड बुक और ओपेरा ग्लास (नाटक आदि देखने की दूरबीन) पड़ा था। काफी गरमी थी, और चलने के बाद इस सज्जन को स्वभावत: और ज़्यादा गरमी महसूस हो रही थी, और वह कुछ क्लान्त भाव से बार-बार रूमाल से अपने माथे का पसीना पोंछ रहा था। लेकिन वह सज्जन उन लोगों में नहीं था जो सरलता से थक जाते हों। वह लम्बा, छरहरा और हृष्टपुष्ट था; उसको देखकर लगता था कि वह कठोर श्रम का अभ्यासी है। लेकिन उस दिन उसपर असाधारण श्रम पड़ गया था, हालांकि संग्रहालय में शांतिपूर्वक घूमने में जो श्रम पड़ा था, उससे कहीं ज़्यादा शारीरिक श्रम उसने पहले कई अवसरों पर किया था। लेकिन वह इससे कम थका था। उसकी लाल किताब में जिन-जिन चित्रों को महीन टाइप में तारांकित किया गया था, उन सबको उसने संग्रहालय में देखा था। इस कारण उसे मानसिक क्लान्ति अनुभव हो रही थी, आंखें चौंधिया गई थीं और इस सौंदर्य-दर्शन की अति से सिरदर्द हो रहा था। उसने न केवल सारे मूल चित्र देखे थे, बल्कि मूल चित्रों की उन प्रतियों को भी देखा था, जो आगे रखी थीं और जिन्हें सराहनीय सौंदर्य-प्रसाधनों से युक्त हाथों से उन असंख्य नवयुवतियों ने बनाया था, जो फ्रांस में महान और प्रसिद्ध चित्रों (की नकलें तैयार कर उन) के प्रचार में रत रहती हैं, और सच बात यह थी कि इस सज्जन को मूल के बजाय चित्रों की प्रतिलिपियां देखने में अधिक आनन्द आता था। इस सज्जन को देखते ही पता चल जाता था कि वह काफी चुस्त, चतुर और सक्षम व्यक्ति था। वास्तविकता यह थी कि

अनेक बार वह हिसाब के कागजो की जाच करने मे रात-रात-भर लगा रहता था और जब सवेरे मुर्गा बाग देता था, तो उसने जमुहाई भी नही ली होती थी, लेकिन राफेल और तिशियां और रूबा के चित्र उसके लिए जैसे एक नई अंकगणित थे। जीवन मे पहली बार हमारे मित्र ने कुछ आत्मविश्वास की कमी अनुभव की थी।

ऐसे प्रेक्षक को जो विभिन्न देशो के लोगों को पहचानने का [illegible] करता है, उन अनुन्नत कलाप्रेमी महाशय की राष्ट्रीयता जानने मे [illegible] भी कठिनाई न होती। उसमे अपने देश के राष्ट्रीय गुण इतने कूट-कूटकर भरे थे कि उसको देखकर प्रेक्षक को विनोदपूर्ण आनन्द प्राप्त होता। दीवान पर जो सज्जन था, वह हृष्टपुष्ट अमरीकन था। उसका स्वास्थ्य इतना अच्छा था कि उससे प्रभावित हुए बिना नही रहा जा सकता था। इस स्वास्थ्य की रक्षा के लिए उसे कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता था। अगर कोई जगह दूर हो और उस जगह पैदल जाना आवश्यक होता, तो वह पैदल चला जाता था, लेकिन व्यायाम उसने कभी नही किया था। शीतल पानी के स्नान या मुगदर फिराने का उसने कभी कोई अभ्यास नही किया था, न कभी नाव खेई थी, न राइफल चलाई थी और न पटेबाजी की थी। इस तरह के मनोरंजनों के लिए उसके पास कभी समय नहीं रहा। उसे यह भी पता न था कि घुड़सवारी से कुछ प्रकार के अपच रोगो का इलाज हो जाता है। वह स्वभावत: शराब से बचता था। लेकिन लूव्र आने के एक दिन पहले रात को उसने काफे-आग्लाई में भोजन किया था, क्योकि किसीने उससे कह दिया था कि वहा कम से कम एक बार भोजन अवश्य करना। इसके बाद वह वाजिब-वाजिब ही सोया था। वह चलता था तो ऐसा लगता था कि आराम से लुड़कते-पुड़कते चला जा रहा हो, लेकिन कभी-कभी जब वह सावधानी की मुद्रा मे सीधे होकर मार्च करता तो लगता कि कोई ग्रेनेडियर (तोपची) परेड कर रहा है। उसने कभी सिगरेट या तम्बाकू नहीं पी थी। जैसीकि बातें कही जाती है, उसे भी समझाया गया था कि स्वास्थ्य के लिए सिगार पीना बड़ा लाभदायी है और वह यह बात मानने को तैयार था, लेकिन उसे तम्बाकू का भी उतना ही ज्ञान था जितना होमियोपैथी का। उसका सिर बड़ा था, सामने का हिस्सा चौड़ा और फि[र] बाद का कुछ उठा हुआ था, जिसपर सूखे भूरे बालों के बजाय सीधे खड़े बाल थे उसका वर्ण भूरा था और नाक खासी बड़ी और नुकीली थी। आंखें बिलकुल साफ शीतल, सफेदी लिए थीं और बड़ी-बड़ी मूंछों को छोड़ दाढ़ी सफाचट थी। जबड़ चौरस था, लेकिन गरदन की नसें उभरी थीं, जैसीकि प्राय. अमरीकनों की होती है

लेकिन चेहरे-मोहरे से भी अधिक राष्ट्रीयता के अन्य मूल लक्षण कहीं अधिक सशक्त ढंग से आदमी का परिचय देते हैं, और इस दृष्टि से हमारे इस मित्र का हुलिया ज़ोर-ज़ोर से उसका परिचय दे रहा था। विवेकशील प्रेक्षक, जिसकी हम कल्पना कर रहे हैं, चेहरे-मोहरे की अभिव्यक्ति को समझ तो अवश्य लेता, लेकिन उसका वर्णन शायद वह भी न कर पाता। चेहरे पर निरर्थकता-सी थी, लेकिन शून्यता नहीं थी; रिक्तता थी, लेकिन उसे सरलता नहीं कहा जा सकता; एक ऐसा भाव था, जिससे लगता था कि यह व्यक्ति किसी वस्तु-विशेष का कट्टर समर्थक नहीं है, वह जीवन में आनेवाले हर अवसर का स्वागत करने के लिए प्रस्तुत है, जो अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए बहुत कुछ स्वतंत्र है, वही विशेषता जो बहुत-से अमरीकनों के चेहरे पर दिखलाई पड़ती है। हमारे मित्र की आंखों से मुख्यत: उसके चरित्र का पता लगता था, आंखों में निर्बोधता और अनुभव का अनोखा समन्वय था। इसमें पर-स्पर-विरोधी बातें भरी लगती थीं। आंखों में प्रेमी नायक जैसी चमक तो नहीं थी, लेकिन उनमें आप अपने हृदय का कोई भी भाव पढ़ सकते थे। कठोर होते हुए भी उससे मित्रता प्रकट होती थी, स्पष्टवादिता का भाव होते हुए भी सावधानी का अभाव न था, चालाकी भी ज़ाहिर होती थी, किन्तु सहज विश्वास का भाव लापता नहीं था, संदिग्धता होते हुए भी दृष्टि में रचनात्मकता थी, संकोचशीलता के साथ ही आत्मविश्वास भी था, अत्यंत बौद्धिकता और विपुल सहज विनोद का भाव प्रकट होता था। यह भी प्रकट होता था कि जब यह व्यक्ति किसीको बोलने देता है, तो उसमें अवज्ञा या विरोध निहित रहता है और अगर चुप रहता है, तो वह मौन भी आश्वासनदायी होता है। इस सज्जन का मूंछें रखने का ढंग, मूंछों के ऊपर गालों पर अवस्था के पहले ही आईं दो झुर्रियां, कपड़ों का फैशन, जिसमें कमीज़ का सामने का खुला हिस्सा और उसमें पड़ी सलवट का भी महत्त्वपूर्ण स्थान था। यह सब मिलकर उसका पूरा परिचय दे रहे थे। संभवत: हम लोग उसके पास अनुकूल समय पर नहीं पहुंचे थे, किसी भी प्रकार यह नहीं कहा जा सकता था कि वह अपना चित्र अंकित कराने बैठे हैं। वह सोफे पर क्लान्त हो पड़ा था, और किसी सौंदर्य-संबंधी जिज्ञासा से परेशान था। लेकिन वह एक बड़ी त्रुटि का दोषी है। (जोह में अभी पता लगी है।) उसका दोष यह है कि वह कलाकार के सौंदर्य और उसके चित्रांकन की प्रतिभा को एक समझ बैठा है, (क्योंकि उसके सामने एक तरुणी बैठी है, जो चित्र बना रही है, और वह उसे किशोर बालकों जैसी रुचि के साथ बड़ी सराहना के भाव

से देख रहा है। उसका ख्याल है कि युवती बड़ी आकर्षक है।) और समझ रहा है कि उससे परिचय बढ़ाया जा सकता है। निश्चय, उत्फुल्लता, शरारत, खुशहाली—ये सब तो उसके व्यक्तित्व के ही अंग थे, ज़ाहिर था कि वह व्यवहारकुशल व्यक्ति था लेकिन जो विचार उसके मन में आया था, वह अपरिभाषित और रहस्यमय-सा था और जिसने उसे सक्रिय बनाने के बजाय उसके कल्पना के जगत् में हलचल मचा दी थी।

वह किशोरी सामने के चित्र की प्रतिकृति बना रही थी और बारम्बार जब-तब अपने छवि-अंकन की सराहना करनेवाले पुरुष पर भी कटाक्षपात करती जाती थी। युवती के विचार से इस ललित कला के अभ्यास में काफी नाटक भी शामिल था। कभी वह दोनों हाथ बांधकर कुछ दूर खड़ी हो जाती, कभी अपना सिर एक तरफ झुकाकर देखती तो कभी दूसरी तरफ, कभी वह मांसल हाथ से अपनी गड्ढे-दार ठोड़ी पर उंगली से थपकी-सी देती दीर्घ निःश्वास छोड़ती, तो कभी पैर से थपकी देती और अपनी लटों में इधर-उधर उलझे बालों के कांटे ढूंढती। इन कार्य-कलापों के साथ युवती की बेचैन निगाहें उपर्युक्त सज्जन पर भी पड़तीं और ज़रूरत से ज्यादा देर तक ठहर जातीं। आखिर उससे न रहा गया। वह सज्जन उठा, उसने अपना हैट लगाया और उस तरुण युवती की ओर चल दिया। वह उस चित्र के सामने खड़ा हो गया, जो वह तरुणी बना रही थी। जब वह चित्र देख रहा था, तो युवती इस तरह चित्र बनाती रही, जैसे उसे पता ही न हो कि उसकी कलाकृति का कोई निरीक्षण कर रहा है। इसके बाद उसने फ्रेंच भाषा का वह एकमात्र शब्द बोला, जो उसे आता था। उसने अपनी एक उंगली उठा ली थी, जिससे वह समझता था कि उसका अभिप्राय स्पष्ट हो जाएगा। उसने यकायक फ्रेंच में कहा, 'कितना दाम है ?'

एक क्षण के लिए कलाकार रमणी ने उसकी तरफ देखा, कुछ रुष्ट भाव से अपने होंठ बिचकाए, कंधे उचकाए, रंगों की तश्तरी और तूलिकाएं नीचे रख दीं और खड़ी-खड़ी हाथ मलने लगी।

"कितना दाम लेंगी ?" हमारे मित्र ने अंग्रेजी में पूछा, "चित्र बेचेंगी ?"

"मोशियो, क्या मेरा चित्र खरीदना चाहते हैं ?" युवती ने फ्रेंच में पूछा।

"बहुत सुन्दर है, शानदार ! बेचिएगा ?" अमरीकी सज्जन ने प्रश्न दोहराया।

"मोशियो को मेरा यह चित्र अच्छा लगा है ? इसका विषय बड़ा सुन्दर है !" तरुणी ने कहा।

"मैडोना, हां, मैं कैथोलिक नहीं हूं लेकिन मैं चित्र खरीदना चाहता हूं। बेचिएगा? यहां लिख दीजिए।" और उसने अपनी पॉकेट बुक से पेंसिल निकालकर अपनी गाइड बुक पर एक जगह लिखने का इशारा किया। तरुणी उसकी तरफ देखती रही और ठोड़ी पर पेंसिल से खुजलाती हुई कुछ देर सोचती रही। "क्या यह चित्र बिक्री के लिए नहीं है?" सज्जन ने पूछा। इस सवाल के बावजूद जब वह कुछ सोचती हुई-सी खड़ी रही और इस तरह देखती रही, जिससे यह लगता था कि इस तरह चित्र खरीदने का ढंग बहुत पुराना है, उसकी आंखों से अविश्वास भी झलक रहा था। उस सज्जन को लगा कि कही मैंने तरुणी को नाराज़ तो नहीं कर दिया। लेकिन वह केवल अपनी उदासीनता प्रकट कर रही थी और सोच रही थी कि वह क्या मांगे। "मैने गलती तो नहीं की···आपको अपमानित तो नहीं किया···नहीं न?" उस सज्जन ने अपनी आशंका व्यक्त करते हुए कहा, "क्या आप थोड़ी भी अंग्रेज़ी नहीं समझती?"

उस किशोरी ने ज़रा-सी देर के नोटिस पर अपना पार्ट जिस तरह निभाया, वह तारीफ के काबिल था। उसने एक बार अपनी आंखें गड़ाकर जताते हुए उन सज्जन की तरफ देखा और पूछा कि आप फ्रेंच बिलकुल नहीं जानते? फिर सक्षेप में बोली, "कृपया दीजिएगा।" और खुली गाइड बुक ले ली। उसके ऊपर के खाली हिस्से में एक जगह उसने कुछ रकम लिखी। अंक बड़े महीन पर सुस्पष्ट थे। इसके बाद गाइड बुक वापस कर दी और रंग वाली तश्तरी फिर उठा ली।

हमारे मित्र ने रकम पढ़ी: "२००० फ्रांक"। कुछ क्षण उसने कुछ नहीं कहा। वह चित्र देखता रहा और प्रतिकृति तैयार करनेवाली कलाकार रमणी रंगों और तूलिका से खिलवाड़ करती रही। "लेकिन एक चित्र की नकल-मात्र की यह कीमत कुछ ज़्यादा नहीं है?" अन्ततः उसने पूछा, "यह कीमत क्या कुछ ज़्यादा नहीं है?"

तरुणी ने रगों की तश्तरी से अपनी नजरें उठाई और अमरीकी सज्जन को एक बार सिर से पैर तक देखा और फिर बिलकुल ठीक-ठीक उत्तर दिया, "हां, रकम काफी बड़ी है। लेकिन मेरी अनुकृति में कुछ सिफ्तें हैं। इनकी वजह से इस रकम से कम में वह नहीं बिकेगी।"

यह सज्जन, जिसकी हमने चर्चा की, फ्रेंच नही जानता था, लेकिन मैं कह चुका हूं, वह बड़ा बुद्धिमान था, और उसको बुद्धिमान सिद्ध करने का यह अच्छा अवसर था।

उसने स्वभावत: अनुमान लगा लिया कि क्या उत्तर दिया गया है और, वह इस बात से खुश हुआ कि स्त्री ईमानदार है। सौंदर्य, प्रतिभा, गुण सभीका संगम था। "लेकिन आप इसे खत्म तो कर लें," उसने कहा, "खत्म कर ले," और चित्र के उस स्थल की ओर इशारा किया, जहां चित्र में हाथ पर रंग नही भरा गया था।

"ओह! इसे मैं पूरा कर दूगी, बिलकुल बढ़िया ढग से।" युवती ने कहा और अपने वादे की पुष्टि करने के लिए युवती ने मैडोना के गाल में लाल रग लगा दिया।

लेकिन अमरीकी की त्यौरियां चढ़ गई। "एह, बहुत ज़्यादा लाल रग भर गया, बहुत ज़्यादा!" वह बोल पड़ा। म्यूरिलो के चित्र की तरफ इशारा करके उसने कहा, "मैडोना का वर्ण बड़ा हलका है।"

"हलका? ओह मोशियो, बिलकुल बिस्कुटों की तरह हलका और नाज़ुक हो जाएगा। मैं इसे अभी हलका करूंगी। मुझे अपनी कला के रहस्य मालूम हैं। आपको यह चित्र कहां भेजा जाए? आपका पता?"

"मेरा पता? ओह, हां।" और उस सज्जन ने एक कार्ड पाकेट बुक से निकालकर उसपर कुछ लिखा। इसके बाद कुछ झिझकते हुए कहा, "चित्र तैयार होने के बाद अगर मुझे पसन्द नही आया, तो मै उसे खरीदने के लिए बाध्य नहीं हू।"

तरुणी भी अमरीकी सज्जन से कम नहीं थी। वह भाव समझ गई। उसके होंठों पर शरारत-भरी मुस्कराहट खेल गई। वह बोली, "मुझे विश्वास है, मोशियो अस्थिर मानस के व्यक्ति नहीं हैं।"

"अस्थिर?" और मोशियो इस बात पर हंस पड़ा। "नहीं, मैं अस्थिर नहीं हूं। मैं वादे का पक्का और स्थिर निश्चय करनेवाला आदमी हूं। समझ गई न आप?"

"मैं समझ गई, मोशियो अपनी बात से नहीं फिरते। यह गुण बड़ा दुर्लभ है। इसके कारण ही आपको चित्र तैयार होने के बाद तुरन्त मिलेगा। चित्र पर रंगों के सूखते ही उसे आपके पास भेज दूंगी, अगले सप्ताह। मैं मोशियो का कार्ड ले लेती हूं।" और उसने कार्ड लेकर नाम पढ़ा, "क्रिस्तोफर न्यूमैन"। इसके बाद उसे ज़ोर से दोहराने का प्रयत्न किया। वह अपने उच्चारण पर स्वयं हंस पड़ी। "आप लोगों के नाम, अंग्रेज़ी नाम, बड़े विचित्र होते हैं।"

"विचित्र?" मि० न्यूमैन ने भी हंसते हुए कहा, "आपने कभी क्रिस्टोफर कोलम्बस का नाम सुना है?"

"क्यों नहीं। उसने अमरीका का पता लगाया था, वह बड़ा महान व्यक्ति था। और क्या वे आपके सरक्षक है ?"

"मेरे संरक्षक ?"

"हां, क्या वे आपके संरक्षक-सत है ?"

"हा, हा। मेरे माता-पिता ने उनके नाम पर ही मेरा नाम रखा है।"

"मोशियो, क्या अमरीकी हैं ?"

"आप देख नहीं रहीं ?" मोशियो ने पूछा।

"तो आप मेरा चित्र अमरीका ले जाएंगे ?" कुछ संकेत करके युवती ने अपनी बात समझाई।

"ओह, मै अभी बहुत-से चित्र खरीदूंगा, बहुत सारे, बहुत सारे, बहुत सारे।" न्यूमैन ने कहा।

"यह मेरा भी कुछ कम सम्मान नही है," युवती ने कहा, "क्योंकि मेरा विचार है कि आप बड़े ही सुरुचि-सम्पन्न व्यक्ति हैं।"

"लेकिन आप भी तो अपना कार्ड मुझे दें," न्यूमैन ने कहा, "समझ गई न ? अपना कार्ड !"

युवती के मुंह पर एक क्षण के लिए कुछ कठोरता आ गई, लेकिन फिर तुरन्त ही बोली, "मेरे पिता आपके पास जाएंगे।"

लेकिन इस बार न्यूमैन की समझ ने काम नही किया। उसने अपनी बात फिर कही, "आपका कार्ड, आपका पता ?"

"मेरा पता ?" युवती ने कहा। इसके बाद अपने कंधे को जरा-सा हिलाकर कहा, "आपकी खुशकिस्मती है कि आप अमरीकी है। मैं किसी पुरुष को जीवन में पहली बार अपना कार्ड दे रही हूं।" और अपनी जेब से छोटा-सा चिकना बैग निकालकर ग्राहक को विज़िटिंग कार्ड दिया। उसपर पेंसिल से काफी खूबसूरती से लिखा था : नोएमी नियोशे। लेकिन युवती के ढंग के विपरीत मि० न्यूमैन ने कार्ड पर लिखा नाम गंभीरता से पढ़ा—हालांकि सभी फ्रांसीसी नाम उसके लिए भी विचित्र ही थे।

"और यह लीजिए, मुझे घर वापस ले जाने मेरे पिता भी आ गए हैं," मदामाजेल नोएमी ने कहा, "मेरे पिता अंग्रेजी जानते हैं। वे आपसे बातचीत कर सकेंगे।" और वह एक नाटे कद के वृद्ध के स्वागत के लिए मुड़ गई—जो लटपटाते

हुए और न्यूमैन को अपने चश्मे के शीशों के ऊपर से घूरते हुए आगे बढ़े आ रहे थे।

मो० नियोशे सिर को जिस 'विग' से ढंके थे उसका रंग बड़ा अस्वाभाविक था। विग उनके विनम्र, सफेद, भावशून्य चेहरे पर नीचे की तरफ गिरा-सा जा रहा था। जिस तरह 'विग' लगे नाइयों के दूकानों में रखे खिलौनों के सिर भावशून्य दीखते हैं, वैसे ही इन वृद्ध का चेहरा भी भावहीन था। यह वृद्ध अटपटी सज्जनता के अनोखे नमूने थे। जो कोट वे पहने थे, वह छोटा था और ठीक तरह से सिला न था। उसे ब्रश से जल्दी-जल्दी झाड़ा गया था, फिर भी ठीक तरह साफ नहीं हुआ था, दस्ताने जगह-जगह रफू किए गए थे, जूतों पर चमकीली पालिश थी, हैट जर्जर हो गया था और एक ऐसे व्यक्ति का चरित्र प्रकट करता था, जिसने काफी नुक-सान उठाया था, और जो अब भी अपनी अच्छी आदतों को बनाए रखने का प्रयत्न कर रहा था, हालांकि उन आदतों को बनाए रखने के उसके पास कोई साधन नहीं थे। अन्य बातों के साथ मो० नियोशे ने अपना साहस भी खो दिया था। बुरे दिनों ने न केवल उन्हें बरबाद कर दिया था, बल्कि उन्हें डरा भी दिया था और ज़ाहिर था वे अपने जीवन के शेष दिन कठिनाई से बिता रहे थे। उन्हें बराबर यही डर लगता रहता था कि कहीं और बुरे दिन न देखने पड़ जाएं। उन्होंने सोचा, अगर यह अजनबी मेरी पुत्री से कोई अनुचित बात कह रहा होगा, तो मैं उसे टाल जाऊंगा और सहिष्णुता का प्रदर्शन कर उसपर कृपा करूंगा, लेकिन साथ ही कह दूंगा कि किसी प्रकार की अनुचित बात करना ठीक नहीं है।

"इन सज्जन ने मेरा बनाया चित्र खरीदा है," युवती ने अपने पिता से कहा, "तैयार हो जाने पर आप टैक्सी से चित्र को इनके पास पहुंचा दीजिएगा।"

"टैक्सी में !" मो० नियोशे बोले। वे ऐसे देखने लगे, जैसे उन्होंने आधी रात को सूरज निकलता देख लिया हो।

"आप देवीजी के पिता हैं ?" न्यूमैन ने पूछा, "मेरा ख्याल है, इन्होंने मुझे बताया था कि आप अंग्रेज़ी जानते हैं।"

"अंग्रेज़ी जानता हूं—हां, बोल लेता हूं।" अपने दोनों हाथ धीरे-धीरे मलते हुए वृद्ध ने कहा, "हां, मैं टैक्सी में ले जाऊंगा।"

"तो कुछ कहिए न," पुत्री ज़रा तेज़ी से बोल पड़ी, "बहुत नहीं, थोड़ी तो कृतज्ञता प्रकट कीजिए, धन्यवाद दीजिए।"

"हां बेटी, थोड़ी कृतज्ञता," मो० नियोशे उलझन में पड़ गए थे, "कितने में ?"

"दो हजार में।" युवती ने कहा, "ज़्यादा शोर मत कीजिएगा, नहीं तो फिर चित्र नहीं बिकेगा।"

"दो हजार !" वृद्ध के मुंह से चीख-सी निकल गई, और वह इधर-उधर जेब में अपनी सुंघनी की डिबिया ढूंढ़ने लगा। वृद्ध ने न्यूमैन को सिर से पैर तक देखा, फिर अपनी पुत्री को देखा और अन्त मे चित्र पर नज़र डाली। इसके बाद हर्षातिरेक से वह लगभग चिल्ला ही पड़े, "देखना, तस्वीर कहीं खराब न हो जाए।"

युवती ने कहा, "अब घर चलना चाहिए। आज काफी काम हो गया। ज़रा ध्यान से ले चलिएगा चित्र को।" और उसने चित्रकारी का सामान बटोरना शुरू कर दिया।

"मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूं!" मो० नियोशे ने कहा, "मेरा अंग्रेजी का ज्ञान भी पर्याप्त नहीं है।"

"क्या ही अच्छा होता, मैं फ्रेंच भाषा भी अच्छी बोल-समझ सकता !" न्यूमैन ने अपने हंसमुख स्वभाव के अनुकूल कहा, "आपकी पुत्री बड़ी चतुर है।"

"ओह, श्रीमन् !" और मो० नियोशे अपने चश्मे के कांचों से ऊपर की तरफ से देखने लगे। उनकी आंखो में आसू थे और उन्होने कई बार सिर हिलाया—विषाद की साक्षात् मूर्ति की तरह। "इसे बड़ी अच्छी शिक्षा दिलाई है (चित्र-कला की)। कोई बात नहीं है, जो सिखाई न गई हो। सूखे रगों से चित्रकारी का प्रत्येक पाठ सीखने के लिए दस-दस फ्रांक दिए हैं। तैल-चित्रकारिता की शिक्षा के हर पाठ के लिए बारह-बारह फ्रांक चुकाए हैं। मैंने इस काम में फ्राकों की फिकर नहीं की। वह कलाकार जो ठहरी।"

"क्या आपको बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ीं ?" न्यूमैन ने पूछा।

"मुसीबतें ? ओह श्रीमन्, बड़े दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा।"

"व्यापार में असफल रहे क्या ?"

"बहुत ही असफल रहा श्रीमन्।"

"कोई डर नही है, आप जल्दी ही अपने पांवों पर फिर खड़े हो जाएंगे," न्यूमैन ने ढाढस बंधाते हुए कहा।

वृद्ध ने अपना सिर एक तरफ झुका लिया और इस तरह देखा, जैसे किसीने उसके साथ क्रूर परिहास किया हो।

"क्या कहा इन्होंने ?" युवती ने पूछा।

वृद्ध ने एक चुटकी सुंघनी लेते हुए कहा, "ये कहते है कि मैं फिर व्यापार में खूब धन कमाऊंगा।"

"शायद यह आपकी मदद करें। और क्या कहा ?"

"कह रहे हैं, तू बड़ी चतुर है।"

"हां, यह हो सकता है, लेकिन आप भी तो यही समझते है, पिताजी ?"

"समझता हूं, बेटी ! इस प्रमाण के बाद भी।" और वृद्ध के चेहरे पर चमक आ गई, उसने चित्र बनाने की तख्ती 'ईजल' को देखते हुए उसे ज़ोर से थप-थपाया।

"इनसे पूछिए, क्या यह फ्रेंच सीखना चाहेंगे ?"

"फ्रेंच सीखना चाहेंगे ?"

"हां, फ्रेंच पढ़ेंगे।"

"फ्रेंच पढ़ेंगे, बेटी ! तुमसे ?"

"आपसे।"

"मुझसे बेटी, मैं कैसे पढ़ाऊगा ?"

"बहस न कीजिए। तुरन्त पूछिए।" मदामाजेल नोएमी ने कोमल किन्तु संक्षिप्त रूप से कहा।

मो० नियोशे चकित थे, लेकिन पुत्री देख रही थी, उन्होंने अपने आपको संभाला। होंठों पर सौजन्यतापूर्ण मुस्कराहट ले आए और पुत्री के आदेश का पालन किया। उन्होने अनुरोधपूर्ण आग्रह से पूछा, "आप क्या हमारी मीठी भाषा सीखना चाहेंगे ?"

"यानी फ्रेंच ?" न्यूमैन ने घूरते हूए पूछा।

मो० नियोशे ने अपनी उंगलियों के पोरुए मिला लिए और थोड़े-से कंधे उठा लिए। "हां, बातचीत करने के लिए।"

"बातचीत के लिए—बिलकुल ठीक।" मदामाजेल नोएमी बुदबुदाई। उसने यह शब्द पकड़ लिया—"सर्वोत्तम शिष्ट समाज की बातचीत।"

मो० नियोशे ने साहसपूर्वक बातचीत आगे बढ़ाई, "आप जानते ही है, फ्रेंच-वार्ताचार प्रसिद्ध है, बड़ा प्रतिभायुक्त होता है।"

"लेकिन भाषा बहुत कठिन नहीं है, क्या ?" न्यूमैन ने सरलता से पूछा।

"आप जैसे उत्साही व्यक्ति के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आप तो सौन्दर्य

के हर रूप के प्रशंसक हैं।" और मो० नियोशे ने अपनी पुत्री द्वारा बनाए गए मैडोना के चित्र पर अर्थभरी दृष्टि डाली।

न्यूमैन ने हंसते हुए कहा, "मैं फ्रेंच में बात करते हुए अपनी शक्ल की कल्पना नहीं कर सकता। लेकिन फिर भी मेरा विचार है कि आदमी को जितना अधिक ज्ञान हो उतना ही अच्छा है।"

"आपने अपनी बात बहुत अच्छे ढग से कही है। वाह !"

"मैं समझता हूं कि फ्रेंच का ज्ञान प्राप्त कर लेने से पेरिस घूमने में और ज़्यादा मदद मिलेगी।"

"आह, मोशियो बहुत-सी बातें कहना चाहते होंगे ! कठिनाई होती होगी !"

"जो भी बात मै कहना चाहता हू, वही कठिन लगती है। लेकिन क्या आप फ्रेंच पढ़ाते है ?"

बेचारे मो० नियोशे बड़े चक्कर में पड़ गए, पर उन्होंने और अधिक मुस्कराहट बिखेर दी। "मैं शिक्षक नही हूं," उन्होंने स्वीकार किया। फिर अपनी पुत्री से कहा, "पर मैं यह तो नही कह सकता कि मैं प्रोफेसर हूं।"

"आप कहिए कि यह बड़ा अचूक अवसर है," मदामाजेल नोएमी ने कहा, "घर बैठे मौका हाथ आ गया है, एक सज्जन दूसरे से बात कर रहा है। याद रखिए आप कौन हैं, क्या रहे हैं।"

"कुछ भी रहा हूं, लेकिन भाषाओं का शिक्षक तो कभी नहीं रहा। जितना पहले था, आज उससे कुछ कम ही हूं। और अगर उन्होंने पूछा कि पढ़ाने की फीस क्या लूगा, तो क्या कहूंगा ?"

"वे नहीं पूछेंगे," मदामाजेल नोएमी ने कहा।

"जो उसे अच्छा लगे, वही कहूं ?"

"नहीं, यह बात करने का खराब ढंग है।"

"अगर वह पूछे तो ?"

मदामाजेल नोएमी ने अपना बोनेट (टोपी) सिर पर रख लिया था और उसके रिबन बांध रही थी। रिबन को सीधा करने के बाद अपनी कोमल ठोड़ी आगे निकालकर युवती ने जल्दी से कहा, "दस फ्रांक।"

"ओह बेटी, इतना मांगने की मेरी हिम्मत नहीं है।"

"मत कहिए तो फिर। जब तक सारे पाठ खत्म नहीं होंगे, वह आपसे फीस

नहीं पूछेंगे और तब मैं बिल बना दूंगी।"

मो० नियोशे फिर अपने विदेशी ग्राहक की ओर देखने लगे और दोनों हाथ मलने लगे। उनकी मुद्रा से लगता था कि वे अपने-आपको दोषी समझ रहे हैं। लेकिन चूंकि यह उनकी सामान्य मुद्रा थी, इसलिए ज़्यादा बुरा नही लगा। न्यूमैन को यह सूझा ही नहीं कि वह यह पूछता कि फ्रेंच पढ़ाने की आपके पास क्या योग्यता है। वह इतना ज़रूर समझ गया था कि मो० नियोशे अपनी भाषा जानते हैं और मो० नियोशे के चेहरे पर जो एकाकीपन था, वह भी न्यूमैन की ऐसे व्यक्तियों की कल्पना के अनुकूल था, जो विदेशी भाषाए पढ़ाते हैं। न्यूमैन ने भाषा-विज्ञान-सम्बन्धी प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में कभी कुछ नही सोचा था। अपने अंग्रेज़ी के शब्दों को जो कुछ फ्रेंच भाषा के रहस्यमय शब्दो में अनुवाद करके न्यूमैन ने जाना था, वह यह था कि उच्चारण में जबड़े का बहुत अधिक व्यायाम हो जाता है और जबड़े की यह तोड़-मरोड़ कभी हास्यास्पद भी लगती है।

"आपने अंग्रेज़ी कैसे सीखी ?" उसने वृद्ध से पूछा।

"जब मैं छोटा था, मेरे ऊपर मुसीबतें नहीं पड़ी थी। उन दिनों मैं बहुत चौकन्ना भी रहता था। मेरे पिता व्यापारी थे। उन्होंने मुझे एक वर्ष इंगलैंड की एक कपनी में नौकर करा दिया था। तभी मैंने अंग्रेज़ी सीखी थी। अब तो कुछ-कुछ भूल भी गया हू।"

"मैं एक महीने में कितनी फ्रेंच सीख लूगा ?"

"क्या पूछ रहे हैं," मदामाजेल नोएमी ने जिज्ञासा प्रकट की।

मो० नियोशे ने बता दिया।

"बहुत बढ़िया फ्रेंच बोलने लगेंगे।" पुत्री ने कहा।

लेकिन मो० नियोशे की ईमानदारी की मूल भावना ने आखिर व्यापारिकत पर विजय पा ही ली, "मोशियो !" उन्होंने जवाब दिया, "वह सब जो आपको मैं सिखा सकता हूं।..." लेकिन इसके बाद अपनी पुत्री के एक संकेत पर संभल गए। "मैं आपके पास होटल में आऊंगा।"

"अवश्य आइए, मैं फ्रेंच सीखना चाहूंगा" न्यूमैन ने अपने लोकतांत्रिक ढंग से कहा, "मैंने तो फ्रेंच सीखने की बात भी कभी नहीं सोची थी। मैं तो समझ बैठ था कि फ्रेंच सीख पाना असम्भव है। लेकिन अगर आप मेरी भाषा सीख सकते हैं तो मैं आपकी भाषा क्यों नहीं सीख सकता ?" और वह अपनी बात पर खुलक

हंस पड़ा। "हम लोग बातें करेंगे, हां, आपको बातचीत का कोई अच्छा-सा विषय ढूंढ़ लेना होगा।"

"आप तो बड़े ही सज्जन हैं, आपने मेरा हृदय जीत लिया।" मो० नियोशे ने अपने हाथ आगे फैला दिए। "लेकिन आपकी वजह से दो व्यक्ति खुश होंगे।"

"ओह नहीं, आप स्वय भी खुश रहिए, यह हमारे सौदे की शर्त है।"

मो० नियोशे ने अपने सीने पर हाथ रख लिया और जरा-सा झुक गए। "ठीक है, श्रीमन्! मैं तो आपसे मिलकर ही इतना ज़्यादा खुश हो गया हूं।"

"ठीक है, आप आइए और साथ में मेरा खरीदा हुआ चित्र भी लाइए। हम दोनों उसके बारे में बात करेंगे। यह अच्छा विषय रहेगा।"

मदामाजेल नोएमी ने अपने सारे उपकरण इकट्ठे कर लिए थे। उसने अपना चित्र बहुमूल्य 'मैडोना' बाप को थमा दिया। वे उसे पकड़े-पकड़े आगे चले गए और आंखों से ओझल हो गए। तरुण युवती ने भी पेरिस की सुन्दरियों की भांति अपना शॉल लपेटा और उन्हीकी तरह मुस्कराकर अपने चित्र के ग्राहक से विदा ली।

दो

वह घूमघामकर फिर कौच के पास वापस लौट आया और इस बार दूसरी तरफ मुंह करके बैठ गया। इस तरफ से उसे पॉल बैरोनीज़ का वह महान चित्र दिखलाई पड़ रहा था, जिसमें उसने कैना की शादी की दावत अंकित की थी। न्यूमैन थका तो था ही, इसलिए उसे यह चित्र देखने में बड़ा मनोरंजक लगा। चित्र उसकी कल्पना के अनुकूल था। बहुत बड़ी दावत के बारे में उसकी जो ऊंची कल्पना थी, वह इस चित्र द्वारा काफी पूरी हो जाती थी। चित्र के बायें कोने में एक तरुणी थी, जिसकी स्वर्णिम लटें सुनहरे शिरोवस्त्र से ढकी थीं। चित्र में तरुणी कुछ आगे झुकी हुई थी और अपने पास बैठे व्यक्ति की बात आकर्षक मुस्कानसहित सुन रही थी। न्यूमैन ने भोज में शामिल बहुत-से लोगों के बीच उस तरुणी को खोज लिया था और उसके सौंदर्य की सराहना कर रहा था। यहां भी उसने देखा कि चित्र की प्रतिलिपि बनाने में एक कलाकार जुटा हुआ है। अकस्मात् उसकी संग्रहकर्ता की प्यास फिर जाग उठी। वह

पहला चरण उठा चुका था; अब क्यों न आगे बढ़ता जाए ? अभी बीस मिनट पहले ही उसने अपने जीवन में पहली बार चित्र खरीदा था और वह चित्रों के ग्राहक के रूप में अपने-आपमें बडा आनन्द अनुभव कर रहा था। कुछ देर इस विषय पर सोचने के कारण वह और हर्षित हो उठा था, तथा वह आगे बढकर युवक कलाकार से यह प्रश्न करना ही चाहता था कि 'कितना लोगे ?' इस सबध मे दो या तीन बातें और ध्यान मे रखने की थीं। हालाकि तर्कबुद्धि से इन बातो को जोड़नेवाली कड़ियां सम्भवत· अपूर्ण-सी लगी। वह जानता था कि मदामाजेल नियोंशे ने उससे बहुत अधिक मूल्य मांगा था। इसके लिए उसके मन मे कोई रोष की भावना न थी और वह इस तरुण कलाकार को भी उचित धनराशि देने के लिए कृतनिश्चय था। लेकिन तभी उसका ध्यान एक अन्य सज्जन की ओर आकर्षित हुआ। यह सज्जन कमरे के एक दूसरे हिस्से से आ रहे थे और उनकी चाल-ढाल से ऐसा लगता था कि जैसे कला-कक्ष में वे पहली दफा आए हों; हालांकि न तो उनके पास गाइड बुक थी और न आपेरा-ग्लास। उनके हाथ में सफेद छतरी थी, जिसके नीचे का अस्तर नीली रेशम का था। वह पॉल बैरोनीज के चित्र के सामने से टहलते हुए निकल गए। चित्र की तरफ उन्होंने सरसरी नज़र ही डाली। लेकिन वे चित्र के इतने समीप थे कि उसे शायद ही ठीक से देख पाए हो। क्रिस्टोफर न्यूमैन के सामने की तरफ वे कुछ रुके और मुड़े और तब हमारे मित्र को, जो इन सज्जन को पहले से देख रहा था, इस बात का मौका मिला कि सरसरी तौर पर देखने से उनके मन में जो सन्देह उत्पन्न हो गया था, उसकी पुष्टि कर सके। पास आने पर ध्यान से देखने का परिणाम यह हुआ कि न्यूमैन तुरन्त उठ खड़ा हुआ और कमरे की दूसरी ओर चला गया। उसने अपना हाथ आगे बढ़ा रखा था और जाते ही नीले अस्तर वाले छाते के सज्जन को पकड़ लिया। यह सज्जन न्यूमैन को कुछ क्षण देखते रहे, लेकिन उन्होंने भी अपना हाथ बढ़ा लिया। यह सज्जन स्थूल थे और उनका वर्ण गुलाबी था। उनके चेहरे पर बढ़िया खसखसी दाढ़ी थी, जो सावधानी से बीच से दो भागों में बंटी हुई थी और जिसको दोनों तरफ से भली-भांति ब्रश से संवारा गया था। दाढ़ी के कारण चेहरे की अभिव्यक्ति की गहराई नही बढ़ी थी, लेकिन ऐसा अवश्य लगता था कि यह सज्जन किसीसे भी हाथ मिलाने के लिए खुशी से तैयार हो जाएंगे। मुझे पता नहीं न्यूमैन ने उनके चेहरे के बारे में क्या सोचा, लेकिन उसे ऐसा लगा कि जिन सज्जन से वह मिला है, वह उसे ठीक से नहीं पहचान पाए है।

"ओह," उसने हंसते हुए कहा, "अब यह मत कहने लगिएगा कि आप मुझे जानते ही नहीं हैं—यह बात दूसरी है कि मेरे पास सफेद छाता नहीं है।"

आवाज सुनते ही आगन्तुक सज्जन की स्मृति हरी हो गई और उनके चेहरे से खुशी छलक उठी और वे भी ज़ोर से हंस पड़े। "क्यो, न्यूमैन—खुदा की मार मुझ-पर पड़े। दुनिया के किस कोने से—मैं कहता हूं कौन सोच सकता था ? आप जानते हैं, कितने बदल गए है आप !"

"आप तो नही बदले ?" न्यूमैन ने कहा।

"लेकिन इसमें शक नहीं कि परिवर्तन से मेरी शक्ल-सूरत कोई अच्छी नहीं हो गई होगी। आप कब आए ?"

"तीन दिन पहले।"

"आपने मुझे पहले क्यो नही लिखा ?"

"मुझे पता ही नही था कि आप यहा होगे।"

"मैं यहा छ. बरस से हू।"

"आठ-नौ साल तो बीत ही गए होगे हम लोगो को मिले।"

"हा, इतना समय तो हुआ ही होगा। उस समय तो हम दोनों काफी जवान थे।"

"हम लोग युद्ध के दौरान सेंट लुई में मिले थे। तब आप फौज में थे।"

"ओह, नही। मैं नहीं था। लेकिन आप थे।"

"हां, मैं तो था।"

"युद्ध से तो आप जीते-जागते निकल आए न ?"

"हा, हाथ-पैर साबित लेकर और सन्तोष के साथ फौज से बाहर आया था। लेकिन ऐसा लगता है कि यह सब बहुत पुरानी बात हो।"

"और यूरोप आए आपको कितने दिन हो गए ?"

"सत्तरह दिन।"

"पहली बार आए है ?"

"हा, बिलकुल पहली बार आया हू।"

"अच्छा, तो सारी ज़िन्दगी के लिए [illegible] ?"

क्रिस्टोफर न्यूमैन एक क्षण के लिए चुप हो गया और फिर उसने गम्भीर मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "हां।"

"और अब उस दौलत को खर्च करने पेरिस आए हो, क्यों ?"

"यह तो देखा जाएगा। तो यहां लोग ये छाते लेकर चलते हैं—विशेष रूप से पुरुष ?"

"बेशक, छाते लेकर तो चलते है। यहां के लोग वाकई ऊंचे लोग है। सुख-चैन से ज़िन्दगी बिताना तो कोई इनसे सीखे।"

"छाते कहां से खरीदते है ?"

"कहीं से भी, हर जगह मिलते हैं।"

"भई ट्रिस्टरैम, आपके मिल जाने से मैं बहुत खुश हुआ हूं। अब आप मुझे सब कुछ बता सकेंगे। मेरा ख्याल है कि पेरिस के बारे में तो आप खूब अच्छी तरह जानते होगे ?"

मि० ट्रिस्टरैम के होंठों पर आत्मप्रशंसापूर्ण मधुर मुस्कराहट नाच उठी।

"हा, मेरा ख्याल है कि अब शायद ही यहां कोई ऐसा आदमी हो, जो मुझे पेरिस के बारे में ज़्यादा कुछ बता या दिखा सके। मैं तुम्हें सब कुछ बता दूगा, दिखा दूगा।"

"कितने अफसोस की बात है कि अभी कुछ मिनट पहले आप यहां नहीं थे। अभी-अभी मैंने एक तस्वीर खरीदी है। आप इसके खरीदने में मेरी मदद कर सकते थे।"

"चित्र खरीदा है !" मि० ट्रिस्टरैम ने सरसरी तौर पर दीवाल पर अपनी नज़र घुमाते हुए कहा, "क्यों, क्या ये लोग यहां चित्र बेचते भी हैं ?"

"मेरा मतलब चित्र की प्रतिलिपि से है।"

"ओह, यह चित्र," मि० ट्रिस्टरैम ने तिशियां और वानडाइक्स के चित्रों को देखकर सिर हिलाते हुए कहा, "मेरा ख्याल है ये चित्र तो मूल है।"

"हां, मैं भी यही समझता हूं," न्यूमैन ने कहा, "मैं प्रतिलिपि की प्रतिलिपि तो नहीं खरीदना चाहता।"

"आह !" मि० ट्रिस्टरैम ने रहस्यमय ढंग से कहा, "आप कुछ नही कह सकते। यह कमबख्त बहुत ही अच्छी नकल करते हैं। ठीक उन जौहरियों की तरह, जो नकली जवाहरात रखते हैं। पैले रायल जाइए। वहां आधी दूकानों पर नकली जवाहरात दिखलाई देंगे। इन जवाहरातों पर कानूनन व्यापारी यह लिखने के लिए बाध्य होते हैं कि ये चीजें नकली हैं; लेकिन अगर वह परचा हटा लिया जाए, तो असली और नकली चीज़ का भेद बताना असम्भव है। सच तो यह है," मि० ट्रिस्टरैम कहे

जा रहे थे, "मैं चित्रो की बाबत ज्यादा नही जानता। यह काम मैंने अपनी पत्नी के सुपुर्द कर रखा है।"

"क्यों अपने विवाह कर लिया ? पत्नी है ?"

"अरे, यह मैने नही बताया ? बड़ी अच्छी स्त्री है वह; आपका उससे अवश्य परिचय होना चाहिए। वह एवेन्यू द आइना मे है।"

"तो आप खूब अच्छी तरह जम गए है—घर और बच्चे और सभी कुछ ठीक-ठाक है ?"

"हां, काफी आलीशान आधुनिक ढग का घर है और कुछ बच्चे भी है।"

"अच्छा," क्रिस्टोफर न्यूमैन ने अपना हाथ कुछ आगे बढाते हुए और गहरी सास छोड़ते हुए कहा, "मुझे आपसे ईर्ष्या हो रही है।"

"ओह, नही ! मुझसे ईर्ष्या मत करिए।" मि० ट्रिस्टरैम ने अपने छाते की छड़ी को थोड़ा-सा न्यूमैन के चुभाते हुए कहा।

"मुझे माफ करना भाई, लेकिन जलन तो हो रही है।"

"अच्छा तो आपको तब ईर्ष्या नही होगी, जब···जब···"

"आपका यह तो मतलब नही है कि जब मैं आपके घर को देख लूगा ?"

"जब आप पेरिस देख लेगे मेरे दोस्त। आप अपने स्वामी स्वयं होना चाहेगे।"

"ओह, मै जिन्दगी-भर अपना मालिक खुद रहा हू और अब मै इससे ऊब गया हू।"

"अच्छा तो पेरिस मे कुछ दिन रहकर देखिए। अब क्या आयु है आपकी ?"

"छत्तीस।"

" 'सेलाबेलाज' जैसाकि यहां लोग कहते है।"

"इसका क्या मतलब है ?"

"इसका मतलब है कि जब तक आदमी का पेट न भर जाए, उसे अपनी थाली पर से नही उठना चाहिए।"

"अरे, इतना सारा मतलब ?" मैने अभी-अभी फ्रेंच भाषा सीखने का प्रबन्ध किया है।"

"ओह, आपको फ्रेंच सीखने की जरूरत नही है। वह तो अपने-आप आ जाएगी। मैने फ्रेंच सीखी थोड़े ही है।"

"मेरा ख्याल है कि आप फ्रेंच और अग्रेजी, दोनों ही भाषाएं अच्छी तरह बोल

लेते होगे ?"

"फ्रेंच मै ज्यादा अच्छी बोलता हू ।" मि० ट्रिस्टरैम ने गोलमोल ढग मे कहा, "बड़ी शानदार भाषा है । इसमे आप ऊचे से ऊचे विचार और सभी तरह की बातें कह सकते हैं ।"

"लेकिन मेरा ख्याल है," क्रिस्टोफर न्यूमैन ने ज्ञानवर्धन की हार्दिक इच्छा प्रकट करते हुए कहा, "लेकिन आप स्वय भी तो योग्य थे ।"

"बिलकुल नही; यही तो तारीफ है ।"

दोनों दोस्त जहा मिले थे, वही खडे-खडे आपस मे बाते कर रहे थे और उस रेलिग का सहारा लिए हुए थे, जो चित्रो के आगे लगी हुई थी । मि० ट्रिस्टरैम ने अन्त में कहा कि मैं थक गया हू और कही बैठने को जगह मिल जाए, तो अच्छा रहेगा । न्यूमैन ने कक्ष में पड़े दीवान की बडी तारीफ की, जिसपर कुछ देर पहले वह बैठा था । दोनो ही उसपर बैठने के लिए आगे बढ़े । "यार, यही अच्छी जगह है; है न ?" न्यूमैन ने उत्साहपूर्वक कहा ।

"बड़ी अच्छी जगह है, बड़ी अच्छी जगह है । दुनिया की सबसे अच्छी जगह है ।" और तब यकायक मि० ट्रिस्टरैम कुछ हिचकिचाए और अपने चारों तरफ देखने लगे । "मेरा ख्याल है कि यहा लोग धूम्रपान तो न करने देते होगे ।"

न्यूमैन घूरने लगे । "धूम्रपान ? इस बारे मे तो मुझे नही मालूम । यहां के नियमों के बारे में तो मुझसे ज्यादा आप जानते होगे ।"

"मै ? मैं तो यहा पहले कभी आया ही नहीं !"

"कभी नही ? छः वर्षो मे कभी भी नहीं ?"

"मेरा ख्याल है कि एक बार मेरी पत्नी मुझे यहा घसीट लाई थी । यह बात उस समय की है, जब हम पहले-पहल पेरिस आए थे, लेकिन इसके बाद दुबारा मैं यहा कभी नही आ पाया ।"

"लेकिन आप तो कहते है कि मै पेरिस खूब अच्छी तरह देख चुका हू !"

"मै इसे पेरिस नही कहता ।" मि० ट्रिस्टरैम ने कुछ और गे विश्वासपूर्वक कहा, "आओ, हम लोग पैलेरायल चले । वहां धूम्रपान करेंगे ।"

"मैं तो धूम्रपान नहीं करता," न्यूमैन ने कहा ।

"तो कुछ पिएगे ।"

और मि० ट्रिस्टरैम अपने दोस्त के साथ चल पड़े । वे म्यूज़ियम के शानदार कक्षों से

हाते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरे और शीतल तथा कुछ अंधेरी वीथिकाओं से निकले, जिनमें मूर्तियां रखी हुई थी और इसके बाद बहुत बड़े अहाते मे बाहर आ गए। न्यूमैन ने अपने चारो तरफ देखा और आगे बढ़ते गए। लेकिन उन्होने कोई टीका-टिप्पणी नही की। जब आखिरकार वे खुली हवा मे पहुचे, तो उन्होने अपने मित्र से कहा, "मुझे प्रतीत होता है कि अगर मैं आपकी जगह होता, तो कम से कम सप्ताह में एक बार यहा अवश्य आया करता।"

"ओह, नही। आप भी कभी नही आते।" मि० ट्रिस्टरैम ने कहा, "आपका ख्याल है, लेकिन आप ऐसा कभी न करते। आपके पास समय ही न बचता। आप हमेशा सोचते रहते कि मैं जाऊगा, लेकिन कभी भी आ न पाते। पेरिस में इस कला-सग्रहालय से ज़्यादा मनोरंजन की और भी चीजें हैं। चित्र देखने है, तो इटली जाइए। जब तक वहां नहीं जाते, तब तक इंतज़ार करिए। आप-को इटली जाना ही होगा, क्योकि इसके सिवा और कोई चारा नही है। यह तो बड़ा अजीब देश है, यहा अच्छा सिगार भी नही मिलता। मुझे खुद पता नहीं कि आज मैं कैसे संग्रहालय चला गया। मैं यूं ही घूम रहा था और तबियत बहल नही रही थी। तभी मैने लूव्र सग्रहालय की इमारत देखी। मुझे ध्यान आया कि क्यों न अन्दर चलू और देखू कि क्या हो रहा है। लेकिन अगर आ। मुझे न मिले होते, तो मुझे यह अफसोस होता कि मैने अपना समय व्यर्थ ही गंवाया। भाड़ में जाए, मुझे ये चित्र देखने की तनिक भी लालसा नहीं है; इनसे तो मुझे यथार्थ चीज़ें देखनी अच्छी लगती है।" और मि० ट्रिस्टरैम ने अपना खुशी पाने का फार्मूला ऐसे विश्वास से झाड़ दिया, जिसे सुनकर बहुत-से ऐसे लोग, जो 'संस्कृति' से बहुत बुरी तरह पीड़ित रहते है, उनसे ईर्ष्या करने लगते।

दोनों व्यक्ति रू द रिवोली से होते हुए पैलेस रायल पहुचे और वहां वे काफे के दरवाजे के सामने पड़ी बहुत-सी मेजो में से एक छोटी-सी मेज़ के सामने रखी कुर्सियों पर बैठ गए। इस जगह से सामने का बड़ा चौरस मैदान बिलकुल साफ-साफ दिखाई पड़ता था। वह जगह लोगों से भरी हुई थी, फुवारों से पानी निकल रहा था, बैंड बज रहा था, पेड़ो के नीचे लोग कुर्सियों पर जमे थे, बैंचों पर सफेद टोपी वाली मोटी-मोटी नर्सें बैठी थीं और बच्चो को दूध पिला रही थीं। वाता-वरण में काफी आत्मीयता और उत्फुल्लता-सी थी। क्रिस्टोफर न्यूमैन को महसूस हुआ कि यह पेरिस की विशेषता है।

"और अब," मि० ट्रिस्टरैम ने आर्डर दिया और आ जाने के बाद सामने रखी शराब की चुस्की लेते हुए पूछा, "अब आप मुझे अपने बारे में सब कुछ बताइए। आपका क्या विचार है, क्या योजनाए है, आप कहा से आ रहे हैं और आपका कहां जाने का इरादा है ? और सबसे पहले यह बताइए कि आप ठहरे कहां है ?"

"ग्राण्ड होटल मे," न्यूमैन ने कहा।

मि० ट्रिस्टरैम ने अपने चेहरे पर उगली गड़ाते हुए कहा, "वहा नहीं चलेगा ! होटल बदलना होगा।"

"बदलना होगा ?" न्यूमैन ने पूछा, "क्यों, इतने बढ़िया होटल में तो मैं पहले कभी नहीं रहा।"

"आपको एक बढिया होटल की ही ज़रूरत नहीं है ; आपको ऐसी जगह चाहिए, जो छोटी हो और शान्त हो तथा सुरुचि-सम्पन्न हो। जहा आपके घण्टी बजाते ही कोई आ जाए, जहां आपके व्यक्तित्व की कद्र हो।"

"वहा तो लोग मेरे घण्टी बजाने के पहले ही यह देखने के लिए दौड़ पड़ते हैं कि मैंने घण्टी कही छुई तो नहीं है," न्यूमैन ने कहा, "और जहा तक मेरी कद्र का सम्बन्ध है, वे लोग हमेशा झुक-झुककर मुझे सलाम ही करते रहते हैं।"

"मेरा ख्याल है कि आप उन्हें हर वक्त इनाम देते रहते होंगे। यह बड़ा खराब ढग है।"

"हमेशा ? नहीं ! कल एक आदमी मेरे पास कुछ लाया और मेरे चारों तरफ ऐसे घूमने लगा, जैसे कुछ मांगना चाहता हो। मैने उसे एक कुर्सी की तरफ इशारा करके बैठ जाने के लिए कहा। क्या यह कोई बुरा ढग था ?"

"बहुत बुरा।"

"लेकिन वह तुरन्त ही भाग गया। कुछ भी हो, मुझे तो उस जगह बडा मज़ा आ रहा है। भाड़ में जाए आपकी सुरुचि-सम्पन्नता। उससे यों ही मुझे बड़ी बोरियत होती है। कल रात मैं दो बजे तक ग्राण्ड होटल के चौक में बैठा रहा और लोगों को आते-जाते और घूमते-फिरते देखता रहा।"

"तुम्हे खुश करना बड़ा आसान है। लेकिन तुम तो स्वतंत्र हो, जो चाहे वह कर सकते हो। आपने बहुत कमाई कर ली है, है न ?

"मैंने काफी रकम बना ली है।"

"यह कह सकनेवाला आदमी निश्चय ही बड़ा सुखी होगा। काफी रकम

बना ली है, लेकिन किसलिए ?"

"कुछ समय आराम करने के लिए, अपनी व्यापार-सम्बन्धी चिन्ताएं भुला देने के लिए, चारों तरफ घूमने के लिए, दुनिया देखने के लिए, मज़े का समय बिताने के लिए, कुछ सीखने के लिए और अगर मेरी तबियत चाहे, तो किसी स्त्री से विवाह करने के लिए मेरे पास काफी रकम है।" न्यूमैन ने रुक-रुककर धीरे-धीरे अपनी बात कही। यह उसके बोलने का अपना ढग था, लेकिन उसने जो शब्द कहे, उनमें यह ढग विशेष रूप से लक्षित होता था।

"अरे वाह ! आपने तो पूरा कार्यक्रम बना डाला है।" मि० ट्रिस्टरैम ने ज़रा जोर से कहा, "बेशक इस सब काम में तो धन खर्च होता ही है, और खास तौर पर विवाह करने में। अगर कोई स्त्री मेरी पत्नी की तरह अपने-आप राज़ी हो जाए, तो बात दूसरी है। और हां, यह तो बताइए कि आपने इतना सारा नामा कैसे कमा लिया ?"

न्यूमैन ने अपना हैट सिर से कुछ पीछे कर लिया था, अपने हाथ बाध लिए थे और पैर आगे की तरफ फैला लिए थे। वह संगीत सुन रहा था और अपने चारों ओर होनेवाले जनरव को सुन रहा था, फुवारों से नीचे गिर रहे पानी की आवाज़ को सुन रहा था और बच्चों-सहित जो नर्सें बैठी थीं, उनको देख रहा था। "मैंने काम किया है।" आखिर, उसने जवाब दिया।

ट्रिस्टरैम कुछ क्षण तक उसकी तरफ देखता रहा और अपनी शान्त नज़रों से अपने दोस्त के लम्बे-चौड़े शरीर को नापता-जोखता रहा। और इसके बाद उसकी दृष्टि अपने मित्र के सुखभरे चिन्तनयुक्त मुखमण्डल पर ठहर गई। "लेकिन आखिर आपने क्या काम किया ?" उसने पूछा।

"ओह, कई तरह के काम किए।"

"मेरा ख्याल है कि आप बड़े चतुर व्यक्ति हैं ?"

न्यूमैन नर्सों और उनके साथ के बच्चो को देखता रहा। उन लोगों की उपस्थिति से चारों तरफ का दृश्य बड़ा स्वाभाविक-सा लग रहा था। "हां," आखिर उसने कहा, "मेरा ख्याल है कि मैं चतुर हूं।" और तब अपने साथी की जिज्ञासाओं के उत्तर में उसने संक्षेप में अपनी अंतिम मुलाकात के बाद, जो कुछ उसपर गुज़रा था, उसका इतिहास सुना दिया। न्यूमैन की कहानी उस व्यक्ति की कहानी थी, जिसने पश्चिमी अमरीका में रहकर और व्यापार करके धन अर्जित किया

था। इस सम्बन्ध में पाठकों को विस्तार के साथ बताना आवश्यक नही है। जब युद्ध समाप्त हुआ तो न्यूमैन को नाम के लिए ब्रिगेडियर जनरल की पदवी प्राप्त थी, जो कम से कम न्यूमैन के मामले में, बिना किसीसे द्वेष उत्पन्न करनेवाली तुलना किए हुए कहा जा सकता है, कि ठीक ही दी गई थी। इसमे शक नही कि आवश्यकता पडने पर न्यूमैन बहुत अच्छी तरह लडा था, लेकिन युद्ध से उसे हार्दिक घृणा थी। उसने सेना में चार वर्ष बिताए थे और सैनिक के रूप में उसके अनुभव बडे आक्रोशपूर्ण तथा कटु थे। वह समझता था कि युद्ध मे जीवन, समय और मूल्य जैसी बहुमूल्य वस्तुओं का अकारण विनाश और अपव्यय होता है और इस तरह फौज से छूटने के बाद उसने शांति-काल में बडे उत्साह और शक्ति से व्यापार में मन लगाया था। इसमें कोई शक नहीं कि जब वह सेना में भरती हुआ था, उस समय भी और इसके बाद जब उसने फौज से छुट्टी ली, तब भी उसकी जेब मे कानी कौड़ी भी नहीं थी और उसकी एकमात्र पूजी उसका दृढ़ निश्चय तथा लक्ष्य और साधनों की स्पष्ट कल्पना ही थी। परिश्रम और लगन, उसके लिए वैसे ही स्वाभाविक थी, जैसे सांस लेना। न्यूमैन से अधिक स्वस्थ व्यक्ति पश्चिम अमरीका की उर्वर भूमि पर शायद ही पहले कभी देखा गया हो। उसकी क्षमता और अनुभव, दोनों ही बड़े व्यापक थे। जब वह चौदह वर्ष का था तो परिस्थितियों से लाचार होकर उसे रात का खाना जुटाने के लिए दर-दर की खाक छाननी पडती थी। उसने न केवल रात का खाना जुटाया, बल्कि अगली रात के खाने के लिए भी काफी कुछ कमा लियां। और इसके बाद जब भी उसे रात का खाना नसीब नहीं हुआ, तो इसकी वजह यह नहीं थी कि उसके पास खाने के लिए जेब में काफी पैसा नहीं था, बल्कि उसका कारण यह होता था कि वह उस पैसे को या तो किसी और अच्छे मनोरंजन या काम की चीज खरीदने के लिए बचाए रखना चाहता था या और अधिक मुनाफा कमाने के लिए। उसने अपने बुद्धि-विवेक का प्रयोग कर खूब परिश्रम किया था। उद्यम की कमी नहीं थी, इसलिए उसने कई साहसिक कार्य किए और कई में तो जीवन की परवाह भी न की। एक ओर उसे कटु असफलताओं का अनुभव था, तो दूसरी ओर उसे शानदार सफलताएं भी मिली थीं; लेकिन वह जन्मजात प्रयोगवादी था और वह हमेशा आवश्यकता के वातावरण में पहुंचकर कोई न कोई लाभ उठा लेता था। ऐसे मौकों पर भी उसने फायदे उठाए थे, जब उसे मध्यकालीन भिक्षु की तरह फटे-पुराने कपड़े पहनने पड़ जाते थे। ऐसे भी

मौके आए, जब उसने जिस काम में भी हाथ डाला, उसमें ही असफलता हाथ लगी। दुर्भाग्य हाथ धोकर उसके पीछे ही पड गया, और वह जो स्पर्श करता, वही मिट्टी हो जाता, सोना बनना तो दूर रहा। सासारिक मामलों मे आध्यात्मिक तत्त्व का सर्वाधिक स्पष्ट ज्ञान उसे तब हुआ, जब उसका दुर्भाग्य अपनी चरम सीमा पर था। उसे लगा कि जीवन में अपनी दृढ इच्छाशक्ति से बढकर भी कोई अन्तर्यामी शक्ति है। लेकिन यह रहस्यमयी शक्ति केवल शैतान ही हो सकता है और इस तरह उसके मन में इस शैतानियत की ताकत के खिलाफ जबर्दस्त विरोध का भाव पैदा हो गया था। उसने यह भी महसूस किया था कि सब कुछ जमा-पूंजी लुट जाने पर कगाल हो जाने का क्या अर्थ है, गन्दे रहने पर कैसी आत्मपीड़ा होती है। उसने वह दिन भी देखे थे, जब वह किसीसे एक डालर भी उधार न ले सकता था और उसे वह सांझ भी याद थी, जब वह किसी नये शहर में पहुचा था और उसकी जेब में फूटी कौड़ी भी न थी। इन परिस्थितियों से गुज़रकर उसने सानफ्रांसिस्को में अपना जीवन शुरू किया। वहां उसके भाग्य ने करवट ली। यही उसे सबसे अधिक धन की उपलब्धि हुई। अगर फिलाडेल्फिया में डा० फ्रेंकलिन की भाति उसे सड़कों पर एक पैनी मे मिलनेवाली डबल रोटी खाते हुए दर-दर नहीं भटकना पड़ा, तो इसका एकमात्र कारण यही था कि ऐसा करने की कोई ज़रूरत नही पड़ी। अपने दुर्भाग्य के दिनो मे उसकी केवल एक यही इच्छा रहती थी और जैसाकि वह कहता भी था कि मुझे इन कठिनाइयों का पूरी तरह सामना करना है। आखिर, उसने कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की और सुख और चैन के दिन देखे और खूब धन कमाया। यह भी मानना ही पड़ेगा कि क्रिस्टोफर न्यूमैन के जीवन का अब तक का लक्ष्य केवल धन अर्जित करना था और उसने विषम परिस्थितियों और प्रतिकूल समय के बावजूद ज्यादा से ज्यादा धन कमाया था। यह महसूस करके कि उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता पाई है, न्यूमैन को बड़ा सन्तोष होता था। जहा तक धन के उपयोग का सम्बन्ध है, जीवन मे खूब सारा धन कमा लेने के बाद उसको काम में लाने का सम्बन्ध है। न्यूमैन ने अपने जीवन के पैंतीसवें साल तक इस बारे में बहुत ही कम सोचा था। जीवन उसके लिए एक बड़े जुए के खेल की तरह था और यह खेल उसने बड़े से बड़ा दांव लगाकर खेला था। अन्ततः, खेल में वह विजयी रहा था और अपनी जीती हुई धनराशि बटोरकर ले आया था; और अब वह इसका क्या करे? वह ऐसा

व्यक्ति था, जिसके सामने देर या सबेर यह प्रश्न अवश्य ही उठता और इस प्रश्न का उत्तर ही इस उपन्यास की मूल कथा है। न्यूमैन का जो अपना जीवनदर्शन था, उसकी तुलना में उक्त प्रश्न के कुछ अन्य उत्तर भी हो सकते है। इस बात का हलका आभास उसे था और इन्ही विचारो मे वह धीरे-धीरे पेरिस के उस कोने मे अपने मित्र के साथ बैठा चिन्तन की गहराइयों मे डूबता जा रहा था।

"मुझे यह तो मानना ही होगा," न्यूमैन ने कहना शुरू किया, "कि यहा मै अपने-आपको चतुर अनुभव नही कर पाता। मेरी विलक्षण प्रतिभा यहां बिलकुल उपयोगी सिद्ध नही हो रही है। मैं एक छोटे बच्चे की तरह अबोध लगता हू और यहां पर एक छोटा बच्चा भी मुझे उगली पकड़कर सड़कों पर घुमा सकता है।"

"ओह, उस छोटे बच्चे का काम मैं करूंगा," ट्रिस्टरैम ने हंसते हुए कहा, "मै आपकी उंगली पकड लूगा। आप मेरा विश्वास कर सकते हैं।"

"मैं काम करने में होशियार हू," न्यूमैन कह रहा था, "लेकिन मेरा ख्याल है कि मैं घूमने-फिरने के मामले मे बड़ा बोदा हू। मैं विदेश मनोरंजन के लिए आया हूं, लेकिन विदेश-यात्रा मे किस तरह मनोरंजन प्राप्त किया जाता है, यह मुझे नही मालूम।"

"ओह, यह बात तो बड़ी आसानी से सीखी जा सकती है।"

"हां, शायद मै भी सीख सकता हू, लेकिन मुझे भय है कि मैं इसे आवृत्तियों से ही नही सीख सकूगा। मेरी बहुत इच्छा है कि मैं मनोरंजन का ढग सीख सकू, लेकिन मेरा ख्याल है कि मेरी बुद्धि इस ओर नही चलती। घुमक्कड़ के रूप में मैं कभी मौलिक नही हो सकूंगा। आपकी तरह कभी सफलता नही प्राप्त कर सकूगा।"

"जी हां," ट्रिस्टरैम ने कहा, "मेरा ख्याल है कि मैं मौलिक हूं, ठीक उन सब अनैतिक चित्रों की तरह, जो लूव्र में है।"

"लेकिन इसके अलावा," न्यूमैन ने अपना कथन जारी रखा, "मैं आनन्द के लिए की जानेवाली यात्रा में ठीक उसी तरह काम नही करना चाहता, जिस तरह काम करते समय खेलना मुझे नापसन्द है। अब मैं बिलकुल आराम करना चाहता हूं। मुझे बड़ा आलस्य-सा घेरे हुए है और मैं जिस तरह रह रहा हूं, उसी तरह कम से कम छः महीने बिताना चाहता हूं। जी करता है कि किसी पेड़ के नीचे बैठा रहूं और बैंड बजते सुनता रहू। एक ही चीज़ चाहता हूं, मैं चाहता हूं कि अच्छा संगीत सुनने को मिले।"

"संगीत और चित्र ! हे भगवान क्या परिष्कृत रुचि है ! आप तो मेरी पत्नी के शब्दों मे बुद्धिजीवी है। मैं बिलकुल नही हूं, लेकिन इस पेड़ के नीचे बैठे रहने की बजाय मैं आपके लिए कोई और अच्छा मनोरजन का साधन तलाश कर दूगा। शुरू में तो सबसे पहले आपको हमारे साथ क्लब चलना होगा।"

"कैसा क्लब ?"

"पाश्चात्य ढंग का। वहां तुम्हे सभी अमरीकी दीखेंगे ; कम से कम सबसे अच्छी तरह के अमरीकी। आप 'पोकर' तो खेलते ही होगे ?"

"ओह, मै कहता हूं," न्यूमैन ने ज़ोर से कहा, "आप मुझे क्लब में ले जाकर बन्द नहीं कर सकते और न किसी ताश खेलने की मेज़ पर मुझे एक कुर्सी पर बाध-कर बैठा सकते हैं। मैं इस काम के लिए इतनी दूर से यहा नही आया हूं।"

"तो यहा क्यो आए है ? सेंट लुई मे, मुझे याद है, जब आपने मुझे हराया था तब तो आप पोकर खेलते थे।"

"मैं यूरोप इसलिए आया हूं कि यहा की जितनी भी अच्छी चीज़ें है, उनको देख सकू। मै यहा के सभी बड़े-बड़े स्थानो को देखना चाहता हूं और वे सारे काम करना चाहता हू, जो किसी भी होशियार आदमी को करने चाहिए।"

"होशियार आदमियो को ? बड़ा कृतज्ञ हूं आपका। तो आपने मुझे बेवकूफ समझ रखा है ?"

न्यूमैन कुछ एक तरफ खिसककर अपनी कोहनी कमर पर रखे और सिर को एक हाथ पर टिकाए बैठा था। विना हाथ-पैर हिलाए कुछ देर वह अपने साथी की ओर एकटक देखता रहा। उसके होंठो पर सूखी-सी मुस्कान थी, जो उसके अच्छे स्वभाव की परिचायक तो थी, लेकिन उससे कोई भाव प्रकट नहीं होता था। "तो आप मेरा अपनी पत्नी से परिचय करा दीजिए।" आखिर उसने कहा।

ट्रिस्टरैम अपनी कुर्सी मे ही उछलता रहा। "नहीं, मैं यह नहीं करूंगा। मेरी पत्नी को मुझे चिढ़ाने के लिए आपकी सहायता की जरूरत नहीं है ; और मेरा ख्याल है कि न ही मुझे चिढ़ाने के लिए आपको उसकी सहायता चाहिए।"

"मैं आपको चिढ़ा तो नहीं रहा मित्र ! न मैं किसीको चिढ़ाता हूं, और न मैं घमण्डी हूं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं। यही कारण है कि मैं बड़े लोगों के दृष्टान्त का अनुकरण करने के लिए तैयार हू।"

"जो हो, मैं गुलाब नहीं हूं तो क्या, लेकिन जैसीकि कहावत है, गुलाबों के

पास रहा जरूर हूं। मैं आपका परिचय कुछ बड़े लोगों से करा दूंगा। आप जनरल पैकर्ड से परिचित हैं ? सी० पी० हैच को जानते है ? कुमारी किटी अपजॉन से आपका परिचय है ?"

"मुझे इन लोगों से मिलकर खुशी होगी, मैं अच्छे समाज मे उठना-बैठना चाहता हूं और भले लोगो से परिचय बढाना चाहता हू।"

ट्रिस्टरैम बेचैन-सा लग रहा था और उसे कुछ सन्देह-सा भी हो रहा था ; उसने अपने मित्र की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा और पूछा, "आपकी मंशा क्या है ? क्या आप कोई पुस्तक लिखना चाहते है ?"

क्रिस्टोफर न्यूमैन अपने मुह के एक कोने को मरोडता रहा और चुप रहा। फिर बोला, "एक दिन कुछ महीने पहले एक अजीब घटना घटी। मैं एक जरूरी काम से न्यूयार्क गया था। क्या काम था, यह किस्सा बड़ा लम्बा है, लेकिन सक्षेप में मुझे शेयर मार्केट में एक विपक्षी से पहले पहुंचना था। मेरे इस प्रतिपक्षी ने एक बार मेरे साथ बड़ी कमीनी हरकत की थी ; इसलिए मेरे मन में उसके प्रति काफी प्रतिहिंसा की भावना थी। मै उस समय बड़ा नाराज़ था और तभी मैंने प्रतिज्ञा की थी कि जब भी मौका मिलेगा, उसको कमीनेपन की राजा जरूर दूगा। साठ हज़ार डालर का सौदा था। अगर मैं यह सौदा उसके हाथ से छीन लेता, तो यह ऐसा प्रहार था, जिसकी चोट वह आसानी से भुला नही सकता था और सच तो यह था कि इस तरह की मार का वह पूरी तरह से अधिकारी भी था, उसके ऊपर किसी तरह की दया दिखाने की जरूरत नहीं थी। मैं तुरन्त ही एक गाड़ी पर सवार होकर काम के लिए चल पड़ा, और गाड़ी में बैठे-बैठे वह अजीब बात हुई जो मैं आपको बतलाने जा रहा हूं। जैसी और गाड़ियां होती हैं, वैसी ही यह गाड़ी भी थी। केवल यह गाड़ी अन्य गाड़ियों की तुलना में कुछ ज्यादा गन्दी थी। इसकी गद्दियों पर और गाड़ियों के मुकाबले ज्यादा मैल जमा हुआ था। शायद मेरी आंख लग गई ; मैंने सारी रात यात्रा की थी। हालांकि मैं अपने काम के जोश में काफी उत्साह अनुभव कर रहा था, लेकिन नींद के कारण थकावट महसूस हो रही थी। जो भी हो, यकायक जब मेरी आंख खुली, चाहे तो वह नींद रही हो या किसी तरह का दिवास्वप्न, लेकिन जब मैं जगा, तब एक असाधारण तरह का भाव मेरे मन में उठा। अकस्मात् मुझे उस कार्य से, जो मैं करने जा रहा था, बड़ी घृणा, वितृष्णा-सी उत्पन्न हो गई। यह भावना," उसने चुटकी बजाते

हुए कहा, "इस तरह से मेरे मन मे उठी, जैसे किसीके हृदय के घाव में टीस-सी उठने लगती है। मुझे केवल यही महसूस हुआ कि जो कुछ मैं करने जा रहा हूं, वह बड़ा कुत्सित है और मुझे उससे अलग हो जाना चाहिए। साठ हज़ार डालर से हाथ धोने की बात, प्रतिपक्षी के जीत जाने की बात और इस सम्बन्ध में कभी कुछ भी ज़िक्र न करने की बात ही मुझे दुनिया की सबसे मधुर चीज़ लग रही थी। और यह सब कुछ मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरे दिमाग में आ रहा था और मै भावनाओं के इस ज्वार को उसी तरह देख रहा था, जैसे कोई दर्शक रंगशाला में बैठा कोई नाटक देख रहा हो। यह सब कुछ मेरे अन्दर हो रहा था। मेरी बात मानिए कि हम लोगों के अन्दर ही अन्दर कुछ न कुछ जरूर होता है, जिसके बारे में हम बहुत कम जानते हैं।"

"हे भगवान! आपकी बातें सुनकर तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए।" ट्रिस्टरैम ने कहा, "और जब आप गाड़ी में बैठे थे और यह नाटक देख रहे थे, जैसाकि आप कहते है, आपका विरोधी आगे बढ़ गया और उसने वे साठ हजार डालर अपनी जेब में रख लिए ?"

"मुझे कुछ पता नहीं। मेरा ख्याल है कि उसने ज़रूर ही वह रकम प्राप्त कर ली होगी। लेकिन मैंने इस बात का कभी पता नही लगाया। गाड़ी वाल स्ट्रीट में उस जगह जाकर रुकी, जहां मुझे उतरना था। लेकिन मैं अपनी जगह पर ही बैठा रहा। अंत में जब मैं नहीं उतरा, तो कोचवान अपनी जगह से नीचे उतरकर आया और उसने मुझे देखा कि मैं क्या कर रहा हूं। लेकिन मुझसे तो अपने स्थान से उठा ही नहीं जा रहा था। ऐसा लग रहा था कि मेरे हाथ-पैरों में दम ही नहीं रहा है। आखिर मुझे क्या हो गया था ? शायद तुम कहो कि यह मूर्खता का क्षणिक आवेश था, लेकिन उस समय एक ही विचार मेरे दिमाग में था और वह यह कि मैं वाल स्ट्रीट से बाहर निकलकर कही और चला जाना चाहता था। मैंने कोचवान से कहा कि वह मुझे ब्रुकलिन के घाट पर ले चले और नदी के उस पार पहुचा दे। जब हम नदी-पार पहुंचे, तो मैंने उससे कहा कि अब तुम मुझे देहात की तरफ ले चलो। मैंने कोचवान से शुरू में यह कहा था कि वह जितनी जल्दी हो सके, मुझे वाल स्ट्रीट पहुंचा दे और अब मैं उससे वाल स्ट्रीट से भागने के लिए कह रहा था, इसलिए स्वाभाविक था कि गाड़ीवान मुझे कुछ पागल समझता। शायद था भी ऐसा ही। लेकिन इस मामले में मैं अब भी विक्षिप्त-सा हूं। मैंने वह

सुबह लांग आइलैंड में पेड़ों की हरयाली देखने में बिताई। मैं व्यापार से ऊब गया था। मै सब कुछ छोड़-छाड़कर कहीं दूर भाग जाना चाहता था। मेरे पास काफी धन था और यदि नही था, तो भी मै प्राप्त कर सकता था। मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे पुराने शरीर में एक नये आदमी ने जन्म लिया है और मैं एक नये संसार में विचरण करना चाहता हू। जब किसी आदमी का मन इतना व्याकुल हो उठे, तो यही उचित होता है कि वह अपनी मनोव्यथा को दूर करने के लिए उपाय करे। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। मैंने अपने-आपको अपने मन के हवाले कर दिया और सोच लिया कि वह शान्ति के लिए जो चाहे करे। जैसे ही मैं अपने व्यापारिक उत्तरदायित्वों से मुक्त हुआ, वैसे ही यूरोप रवाना हो गया। इस तरह से आज आप मुझे यहां अपने सामने देख रहे हैं।"

"आपको वह गाड़ी खरीद लेनी चाहिए थी," ट्रिस्टरैम ने कहा; "इस गाड़ी को यों ही छोड़ देना सुरक्षा की दृष्टि से उचित नहीं है। तो क्या आपने अपना सारा कारोबार बन्द कर दिया? व्यापार से संन्यास ले लिया है?"

"मैंने अपने एक मित्र को अपना व्यापार सौंप दिया है। जब भी मेरी इच्छा होगी, मैं वापस लौटकर अपना कारोबार फिर सभाल सकता हूं। मेरा ख्याल है कि एक बरस में मेरी मनोदशा बदल जाएगी। मैं फिर कारोबार में मन लगा सकूंगा। किसी मौके पर, जब मैं गोण्डोला में बैठा हूंगा या सांड़नी की सवारी कर रहा हूंगा, तो यकायक मुझे अमरीका लौट जाने की इच्छा होगी और मैं घर लौट पड़ूंगा। लेकिन इस समय मैं बिलकुल स्वतंत्र और मुक्त हूं। मैंने अपने मित्र से यहां तक कह दिया है कि मेरे पास व्यापार-सम्बन्धी कोई पत्र तक न भेजा जाए।"

"ओह, यह तो सचमुच ही बड़े आदमी की सनक है," ट्रिस्टरैम ने कहा। "भाई मैं कुछ नहीं कर सकूंगा, मुझ जैसा छोटा आदमी आपकी इस शानदार छुट्टी बिताने में कोई सहायता नही कर सकता। आपको तो किन्हीं राजाओं-महा-राजाओं से मिलना चाहिए।"

न्यूमैन एक क्षण के लिए उसकी तरफ देखता रहा, फिर अपनी सरल मुस्कान बिखेरते हुए उसने पूछा, "यह कैसे होगा?"

"अच्छा तो आओ, मुझे आपकी यही बात तो बड़ी अच्छी लगती है।" ट्रिस्टरैम ने कहा, "इसका मतलब है कि आप सचमुच बहुत उत्सुक हैं।"

"बेशक मैं उत्सुक हूं। मैंने आपसे नहीं कहा था कि मैं सबसे बढ़िया से बढ़िया

बातें चाहता हूं ? मैं जानता हूं कि केवल धन से हर बढ़िया चीज नहीं प्राप्त की जा सकती, लेकिन धन से काफी मदद ज़रूर मिल सकती है। इसके अलावा मैं आवश्यक कष्ट उठाने को भी तैयार हूं।"

"आप संकोच तो नहीं कर रहे ?"

"नहीं, इसका तो मुझे ख्याल भी नहीं है। किसीभी आदमी को मनोरंजन का जो बड़े से बड़ा साधन उपलब्ध हो सकता है, वह मैं चाहता हूं। मैं लोगों से मेल-मुलाकात करना चाहता हूं, अच्छी-अच्छी जगहें देखना चाहता हूं, कला-वस्तुएं और सुन्दर प्राकृतिक स्थलों की यात्रा करना चाहता हूं। यह सब करना चाहता हूं। मैं ऊचे से ऊंचे पर्वत देखने का इच्छुक हूं, नीली और गहरी झीलें देखना चाहता हूं, सुन्दर चित्र देखना चाहता हू, बड़े-बड़े चर्च देखना चाहता हूं, प्रसिद्ध लोगों से मिलना चाहता हूं और सुन्दरी स्त्रियों से मेल-जोल बढ़ाना चाहता हूं।"

"तो फिर पेरिस में बस जाइए। यहां पहाड़ तो नही हैं, जहां तक मुझे पता है और झील के नाम पर यहां 'बॉय दु बूलों' ही है, जो बहुत नीली नहीं है। लेकिन इसके अलावा यहां सब कुछ है। असख्य चित्र है, चर्च हैं और प्रसिद्ध व्यक्तियों की कोई कमी नहीं है और इसके अलावा वहुत-सी खूबसूरत स्त्रियां भी हैं।"

"लेकिन मैं इस मौसम मे तो पेरिस में रहना पसन्द न करूंगा, क्योंकि गर्मियां आ रही हैं।"

"ओह, तो गर्मियों में त्रूवील चले जाना।"

"यह कौन-सी जगह है ?"

"यह फ्रांस की ठण्डी जगह है। आधे अमरीकी वहां जाते है।"

"क्या यह आल्प्स के पास कहीं है ?"

"यह जगह पहाड़ के उतने ही पास है, जितना अमरीका का न्यूपोर्ट नगर रॉकी पर्वतमाला के समीप।"

"ओह, मैं मों ब्ला देखना चाहता हूं," न्यूमैन ने कहा, "और एम्सटर्डम की सैर करना चाहता हू, राइन देखना चाहता हू और अन्य बहुत-सी जगहों पर जाना चाहता हूं, खास तौर से वेनिस। वेनिस के बारे में मैंने बहुत कुछ सुन रखा है।"

"आह," ट्रिस्टरैम ने उठते हुए कहा, "मुझे लगता है कि आपका परिचय मुझे अपनी पत्नी से कराना ही होगा।"

तीन

यह कार्य उसने अगले दिन पहले से तय समय पर क्रिस्टोफर न्यूमैन के रात के समय भोजन करने पहुंचने पर कराया। मिस्टर और मिसेज ट्रिस्टरैम आर्क द ट्रायम्फ के पास बैरन हासमैन द्वारा निर्मित चौड़ी सड़कों के किनारे बने सफेद रंग की इमारतों के पीछे बने मकानों में से एक में रहते थे। उनका घर सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं और उपकरणों से सुसज्जित था। ट्रिस्टरैम ने भी गैस के लैम्प और चूल्हे आदि की ओर न्यूमैन का ध्यान आकृष्ट करने में ज़रा भी समय नहीं गंवाया। "जब भी आपको घर की याद सताए," उसने कहा, "तो आप सीधे यहां चले आया करें। हम आपको एक कुर्सी पर आराम से गैस के गरम चूल्हे के पास बैठा देंगे और···"

"और आप जल्दी घर की याद करना भूल जाएंगे," मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा।

उनके पति घूरते रह गए। ट्रिस्टरैम की पत्नी अक्सर ऐसे लहजे में बात कह जाती थीं, जिसको ठीक-ठीक समझ पाना कठिन होता था। ट्रिस्टरैम स्वयं जीवन-भर यह नहीं बता सकते थे कि उनकी पत्नी ने यह बात गंभीरतापूर्वक कही है या विनोद में। वास्तविकता यह थी कि मिसेज ट्रिस्टरैम के जीवन की परिस्थितियां ऐसी रही थीं कि व्यंग्य में बोलने की उनकी कुछ आदत-सी पड़ गई थी। पति और पत्नी की रुचियों में काफी अन्तर था और अपने पति की रुचि के लिए वे काफी झुक जाती थीं, लेकिन यह मानना पड़ता था कि कभी-कभी पति की इच्छा के आगे उनका इस प्रकार नतमस्तक हो जाना मर्यादापूर्ण नहीं लगता था। उनका ख्याल था कि वे किसी दिन कोई बहुत बड़ा काम करेंगी। वह काम क्या होगा, यह बताना उनके बूते का रोग नहीं था। लेकिन इस बीच वे उसके लिए धीरे-धीरे तैयारी कर रही थीं। अपनी अन्तरात्मा का सुधार कर रही थीं।

यहां यह बात तुरन्त बता देनी चाहिए, जिससे कोई भ्रम न हो पाए, कि मिसेज ट्रिस्टरैम की स्वतंत्र योजना में किसी अन्य व्यक्ति या पुरुष की सहायता लेने का कोई कार्यक्रम न था। वे दूसरों के साथ प्रेमाभिनय करने के लिए अपने गुणों का विकास नहीं कर रही थीं। इसके कई कारण थे। पहला तो यह था कि उनका चेहरा बिलकुल सीधा-सादा था और उन्हें अपने रूप के बारे में कोई भ्रम न था। अपने सौंदर्य के बारे में उन्होंने पूरी तरह नाप-जोख कर ली थी और उसके उत्कृष्ट

श्रौर निकृष्ट दोनों ही पक्षों से वे भली भांति परिचित थीं। वे जैसी भी थी, इस सम्बन्ध में उन्होंने अपने-आपसे समझौता कर लिया था। इसमे सन्देह नहीं कि उनकी मान्यता और नतीजे संघर्ष बिना नही निकले थे। एक तरुण युवती के रूप में वे घण्टों दर्पण की ओर पीठ करके बैठ जाती थी और घण्टो रो-रोकर अपनी आंखें लाल कर लेती थीं। बाद मे हतोत्साहित होकर उन्होंने यह आदत अपना ली थी कि वे सबके सामने अपने-आपको दुनिया की सबसे बदसूरत औरत कहती थीं, जिससे कि और लोग स्वभावत: उनकी बात का खण्डन कर दें और यह आश्वस्त कर दें कि नहीं, वे सुन्दर है। यूरोप आने के बाद से उन्होंने अपने सौदर्य पर दार्शनिक ढग से विचार करना शुरू कर दिया था। बहुत चिन्तन के बाद वे इस नतीजे पर पहुची थी कि स्त्री का पहला कर्तव्य सुन्दर होना नहीं है, बल्कि उसमें दूसरों को खुश करने का गुण होना चाहिए। और उन्होंने ऐसी बहुत-सी स्त्रियों को देखा था, जो बिना सुन्दरता के भी दूसरे लोगों को प्रसन्न कर लेती थीं। इस तरह उन्होने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया था। एक बार उन्होंने किसी उत्साही संगीतज्ञ को यह कहते सुना था कि वास्तव में उचित ढंग से गाने में सुरीली आवाज बाधा है और तभी उन्हें यह ख्याल हुआ कि आकर्षक चाल-ढाल और व्यवहार में सुन्दर चेहरा भी बाधा ही सिद्ध होता है। तब से मिसेज ट्रिस्टरैम ने यह फैसला किया कि वे हमेशा दूसरों को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करेंगी और यह काम उन्होने बड़ी ही मर्मस्पर्शी लगन से किया। अपने इस लक्ष्य में वे कहां तक सफल हुई, यह तो मैं नहीं कह सकता; दुर्भाग्यवश उन्होने बीच में ही यह काम छोड़ दिया। उनका यह कहना था कि उनके आसपास के मिलनेवाले लोगों ने उन्हें उत्साहित नही किया। लेकिन मेरा ख्याल है कि इस काम के लिए भी उनके पास वस्तुत: प्रतिभा नहीं थी; अगर होती, तो वे इस आकर्षक कला को छोड़ नहीं देतीं। इन देवीजी में कई दोष थे। बाद में उन्होने सुन्दर वस्त्रों का सहारा लिया। इनकी अच्छाइयां-बुराइयां उन्होंने भली भांति समझ लीं और बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहनकर सन्तुष्ट रहने लगी। वे पेरिस में रहती थीं और ऊपर से कहती थीं कि उन्हें पेरिस बिलकुल पसन्द नही है। लेकिन पेरिस ही ऐसी जगह है, जहां लोगों को अपने वर्ण के अनुकूल सौदर्य प्रसाधन और परिधान उपलब्ध हो सकते है। इसके अलावा पेरिस के बाहर दस बटन वाले दस्ताने प्राप्त करना हमेशा न्यूनाधिक कष्टसाध्य कार्य होता है। जब वे रेल द्वारा इस शहर में आई, और तब आप अगर उनसे यह पूछते

कि वे कहां रहना पसन्द करेंगी, तो शायद वे ऐसा उत्तर देती, जिसकी आशा आप उनसे न करते। वे कहती कि कोपेनहैगन या बार्सीलोना शहर मे रहना पसन्द करूंगी। यूरोप घूमते समय वे इन शहरों में कुछ दिन ठहरी थी। कुल मिलाकर उनकी काव्यात्मक आडम्बरपूर्ण स्कर्ट की प्लेटों और उनके कुछ अजीब ढंग के किन्तु बुद्धिमत्तापूर्ण चेहरे से जब आप परिचित हो जाते, तो वे आपको निश्चय ही काफी दिलचस्प महिला लगने लगतीं। वे स्वभाव से संकोची थीं और अगर वे सुन्दर होती, तो भी उनमें (कोई अभिमान न होता) और वे शायद संकोची ही बनी रहतीं। अब वे आत्मविश्वासहीन भी थीं और अति आग्रही भी। वे कभी-कभी अपने मित्रों से भी बात छिपा जाती थीं तथा अपरिचितों से बहुत-सी बाते कह जाती थीं। उन्हें अपने पति से चिढ़ थी, बहुत ही चिढ़ थी; हालांकि वे चाहतीं तो उनसे शादी न करने के लिए बिलकुल स्वतंत्र थीं। वे ऐसे व्यक्ति से प्रेम करती थीं, जो बड़ा चतुर था और जिसने उन्हें नीचा दिखाया था। फलतः उन्होंने एक मूर्ख व्यक्ति से इस आशा से विवाह कर लिया कि यह कृतघ्न व्यक्ति जब बाद में विचार करेगा, तो इस नतीजे पर पहुंचेगा कि मिसेज़ ट्रिस्टरैम को उसकी चतुराई ज़रा भी अनुकूल ढग से प्रभावित नहीं कर सकी है, और वह यह मान बैठा था कि वे केवल उसकी ही परवाह करती है। मिसेज़ ट्रिस्टरैम बेचैन थीं, असन्तुष्ट थीं, दिवा-स्वप्न देखा करती थीं। उनकी कोई निजी महत्त्वाकांक्षा नहीं थी, लेकिन कल्पनाशक्ति की थोडी प्रखरता ज़रूर थी; और जैसाकि मैंने कहा, उनमें अन्य भी अनेक दोष थे। भला हो या बुरा, वे कोई भी काम शुरू कर देती, लेकिन वह अपूर्ण रहता। वे आरम्भ-शूर थीं। लेकिन नैतिक दृष्टि से उनमें अच्छी बातों के लिए बड़ा जोश था।

न्यूमैन को प्रायः सभी परिस्थितियों में स्त्रियों की सगत पसन्द थी। और चूंकि अब वह अमरीका से बाहर आ गया था, तथा रोज़गार-सम्बन्धी काम उसे घेरे नहीं रहते थे, इसलिए उसे समय बिताने के लिए स्त्रियों के साथ रहना और भी अच्छा लगने लगा था। वह मिसेज़ ट्रिस्टरैम के प्रति काफी खिच आया था। पहली भेंट के बाद ही मि० ट्रिस्टरैम की बैठक मे न्यूमैन ने घण्टों बिताने शुरू कर दिए थे। दो-तीन बार की बातचीत के बाद वे दोनों घनिष्ठ मित्र बन गए थे। स्त्रियों के साथ व्यवहार करने का न्यूमैन का विशिष्ट ढंग था और महिलाओं को यह पता लगाने में कि न्यूमैन उनका प्रशंसक है या उनकी सराहना करता है, काफी प्रयत्न करना पड़ता था। वह कभी मुंह पर स्त्रियों की प्रशंसा नहीं करता था और न बढ़-बढ़-

कर बातें बनाता था। हालांकि पुरुषों से अपने वार्तालाप और व्यवहार में वह बड़ा खुला रहता था, लेकिन सोफे पर किसी स्त्री की बगल में बैठकर वह यकायक ही बड़ा गम्भीर हो जाता था। वह संकोची नहीं था और उसमें संकोचजन्य अटपटापन भी नहीं होता था, लेकिन फिर भी वह बड़ा गम्भीर हो जाता था, बहुत विनय से ध्यानपूर्वक स्त्रियों की बातें अक्सर चुपचाप सुनता रहता था और इस तरह वह उन बातों का मौन होकर आनन्द लेता था। उसका यह भाव कोरा सैद्धांतिक नहीं था और बहुत ज़्यादा भावनात्मक भी नहीं था; सच तो यह है कि उसने स्त्रियों की 'स्थिति' के विषय में बहुत कम सोचा था और वह उनके सम्बन्ध में सहानुभूति अथवा इसके विपरीत पक्ष से परिचित नहीं था। उसका यह रवैया उसके अच्छे स्वभाव का परिणाम था और कुछ अंशों में वह यह भी मानता था कि हर व्यक्ति को आराम से जीवन बिताने का हक है। अगर एक भिखारी को रहने, खाने और आजीविका कमाने के साथ मतदान का अधिकार है, तो बेशक स्त्रियों को भी यह अधिकार है, जो भिखारी से भी कमजोर हैं और जिनका शरीर स्वयं आकर्षण का केन्द्र है। वह यह मानता था कि स्त्रियों को सरकारी खर्च पर भी हर सुख-सुविधा प्रदान की जानी चाहिए। और इस कार्य के लिए न्यूमैन अपने साधनों के अनुपात से भी अधिक कर देने के लिए तैयार था। इसके अलावा स्त्रियों-संबंधी बहुत-सी आम परम्पराए उसकी अपनी निजी धारणाओं और अनुभवो पर आधारित थी। न्यूमैन ने अपने जीवन में कभी उपन्यास नहीं पढ़ा था। वह स्त्रियों की बौद्धिकता, उनके पैने व्यंग्यों, उनके कौशल और उनके निर्णय करने की योग्यता से प्रभावित हुआ था। उसे ऐसा लगता था कि स्त्रियां बड़े व्यवस्थित ढंग से सोच सकती हैं। अगर यह सच है कि प्रत्येक व्यक्ति को किसी धार्मिक आदर्श या अन्य किसी तरह के आदर्श के अनुकूल काम करना चाहिए, तो न्यूमैन यह अनुभव करने लगा था कि मुझे भी किसी अनुभवी स्त्री के शासन के अधीन रहना चाहिए।

मिसेज़ ट्रिस्टरैम उसे तरह-तरह की सलाहें देती रहती थीं और उसने ये घण्टों सुनी थी। यहां यह बता देना जरूरी है कि न्यूमैन ने ये सलाहें कभी नहीं मांगी थीं। वह सलाह मांग ही नहीं सकता था, क्योंकि उसे कठिनाई महसूस ही नहीं होती थी और इसलिए कठिनाई दूर करने के उपाय के बारे में भी वह नहीं सोचता था। पेरिस का जटिल जीवन उसे बड़ा साधारण-सा लगता था; वह उसे बड़ा विराट् और विस्मयपूर्ण तो समझता था, लेकिन उससे न तो उसकी कल्पना

प्रखर हो उठती थी और न उसे कोई जिज्ञासा ही होती थी। वह अपने हाथ जेबों में डालकर बड़े प्रसन्न भाव से देखता चलता था। उसकी यही इच्छा रहती थी कि उससे कोई महत्त्वपूर्ण वस्तु न छूट जाए, और बहुत-सी चीज़ों को वह काफी पास जाकर देखता था। लेकिन वह वापस कभी नहीं लौटता था। मिसेज ट्रिस्टरैम की 'सलाह' भी इसी 'शा' का भाग थी। मिसेज़ ट्रिस्टरैम की गप्पों में उसे ज़्यादा आनन्द आता था। उसे यह भी अच्छा लगता था कि मिसेज ट्रिस्टरैम उसके बारे में बातें करें। यह भी मिसेज़ ट्रिस्टरैम की स्त्री-सुलभ सुन्दर बुद्धि-कौशल का अंग प्रतीत होता था। लेकिन न्यूमैन ने मिसेज़ ट्रिस्टरैम की किसी भी सलाह का कभी कोई उपयोग नहीं किया और सच तो यह है कि उनसे दूर जाकर न्यूमैन को यह भी याद नहीं रहता था कि मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने उसे क्या सलाह दी थी। मिसेज़ ट्रिस्ट-रैम ने न्यूमैन पर अपना अधिकार जमा रखा था। वे यह समझती थीं कि न्यूमैन के बारे में उन्हें महीने में कई बार विचार करना पड़ता है और वह काफी मनोरंजक है। वे उसके लिए कुछ करना चाहती थीं, लेकिन क्या, यह उन्हें स्वयं पता नहीं था। न्यूमैन का डीलडौल अच्छा-खासा था; वह अमीर था, सरल था, उसका व्यव-हार बड़ा मित्रतापूर्ण और खुश करनेवाला था। लेकिन फिर भी मिसेज़ ट्रिस्टरैम के प्रति अपने आकर्षण को न्यूमैन बड़ी सावधानी से एक निश्चित दायरे में ही रखता था। वर्तमान स्थिति में मिसेज़ ट्रिस्टरैम इतना ही कर सकती थीं कि वे उसे पसन्द करें। मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने न्यूमैन से कहा था कि वह बड़े भयंकर किस्म का पश्चिमी अमरीकी है, लेकिन यह विशेषण भी हृदय से निकला हुआ नहीं था। वे न्यूमैन को अपने साथ घुमाने ले जाती थीं, पचास आदमियों से परिचय कराती थीं और अपनी इस विजय पर बड़ा सन्तोष अनुभव करती थीं। न्यूमैन भी हर प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता था, हरेक से हाथ मिला लेता था और ऐसा करने में उसे न तो कोई क्षोभ होता था और न ही कोई प्रसन्नता। टॉम ट्रिस्टरैम अपनी पत्नी के बराबर न्यूमैन के साथ रहने की शिकायत करता था और कहता था कि अपने मित्र के साथ उसे एकान्त में पांच मिनट का समय भी बात करने के लिए नहीं मिलता है। अगर उसे पहले यह पता होता कि ऐसा होगा, तो वह न्यूमैन को कभी भी इस घर में न लाता। ये दोनों व्यक्ति पहले घनिष्ठ नहीं थे, लेकिन न्यूमैन को अपने मेज़बान के बारे में पहले की एक बात याद आ गई और मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने स्पष्ट रूप से तो नहीं कहा, लेकिन न्यूमैन को यह पता लग गया कि वे अपने पति को बड़ा

नीच समझती हैं। पचीस वर्ष की आयु में ट्रिस्टरैम बड़ा सज्जन था और इस अर्थ में वह अब भी बदला नहीं था। लेकिन अब जो आयु उसकी थी, उसमें उससे कुछ और भी आशा की जाती थी। लोग कहते थे कि ट्रिस्टरैम बड़ा मिलनसार है, लेकिन यह बात उतनी ही स्वाभाविक थी, जितना स्पंज को पानी में डुबा दिए जाने के बाद उसका फैलना। सच तो यह है कि उसमें उत्कृष्ट ढंग की मिलन-सारिता भी नहीं थी। वह बड़ी गप्पें हांकता था और बातें बनाता था, और हंसाने के लिए वह किसी भी तरह का मज़ाक करने से न चूकता था। न्यूमैन अपने पुराने मित्रों के प्रति बड़ा दयालु था, लेकिन उसने भी यह अनुभव किया कि ट्रिस्टरैम काफी पतित हो गया है। मि० ट्रिस्टरैम की एकमात्र अभिलाषा यह रहती थी कि वह पोकर खेलता रहे, क्लबों में जमा रहे, वहां आनेवाली औरतों के नाम जाने, सबसे हाथ मिलाता रहे और अपने पेट में खाने-पीने की चीजें ठूसता रहे और शैम्पेन उंडेलता रहे और वहां रहनेवाले अमरीकनों के लिए कठिनाइयां उत्पन्न करता रहे।

वह बड़ी निर्लज्जता से निरुद्देश्य, कामुकतापूर्ण और आडम्बरपूर्ण जीवन व्यतीत करता था। वह हमारे मित्र से अमरीका के बारे में अप्रत्यक्ष ढंग से निन्दात्मक बातें करता था, तंग करता था और न्यूमैन की समझ में यह नही आता था कि आखिर ट्रिस्टरैम को अमरीका क्यों पसन्द नहीं आया। वह स्वय कभी वाचाल देशभक्त नहीं रहा था, लेकिन उसे यह जानकर बुरा लगता था कि वह अपने मित्र को पुरानी कटु स्मृतियां याद दिलाने का माध्यम है। अन्त में एक दिन न्यूमैन को ज़ोर से यह कहना पड़ा कि अमरीका दुनिया का सबसे अच्छा देश है। उसके सामने यूरोप के सारे देशों का कोई मूल्य नहीं है और जो अमरीकी अपने देश की बुराई करता है, उसे पकड़कर अमरीका वापस ले जाना चाहिए और जेल में बन्द कर देना चाहिए। (न्यूमैन के लिए यह बात कहना बड़ा कठिन कार्य था)। ट्रिस्टरैम को डांट खाकर कुछ भी बुरा न लगा, क्योंकि उसे इसकी आदत पड़ गई थी। वह बराबर न्यूमैन से यही कहता रहा कि न्यूमैन अपनी शामें ऑक्सीडेंटल क्लब में बिताए।

क्रिस्टोफर न्यूमैन ट्रिस्टरैम के घर कई बार रात को भोजन कर चुका था और ट्रिस्टरैम हमेशा भोजन जल्दी समाप्त कर देने के पक्ष में रहता था। इस बात का मिसेज़ ट्रिस्टरैम विरोध करती थीं और कहतीं कि मेरे पति तो मुझे नाराज़ करने में ही अपनी सारी अकल खर्च कर देते हैं।

"ओह नही प्रियतमे, मै ऐसा नहीं करना चाहता," वह जवाब देता, "मैं जानता हूं मेरा तो बोलना ही तुम्हे बुरा लगता है।"

न्यूमैन को पति-पत्नी का यह झगड़ा बड़ा बुरा लगता और वह समझता था कि इस झगड़े के कारण दोनों में से कोई एक अवश्य ही बड़ा दुखी होगा। उसे यह भी पता था कि ट्रिस्टरैम दुखी होनेवाला व्यक्ति नहीं है। मिसेज़ ट्रिस्टरैम के कमरों के सामने एक छज्जा था। इस छज्जे पर वे जून में शाम को अक्सर बैठ जाती थीं और न्यूमैन बहुधा साफ-साफ कह देता था कि क्लब के बजाय इस छज्जे पर बैठना मुझे ज़्यादा पसन्द है। छज्जे पर टबों में कुछ सुगधित फूल वाले पौधे थे। यहां बैठकर सामने की चौड़ी सड़क बिल्कुल साफ दिखलाई पड़ती थी। गर्मियों की तारों-भरी रात में आर्क ऑव ट्रायम्फ भी हल्का-सा दिखलाई देता था। कभी-कभी न्यूमैन मि० ट्रिस्टरैम के साथ आधे घण्टे के लिए ऑक्सीडेंटल या ऐसे ही किसी अन्य क्लब में, जिसका कि नाम वह अक्सर भूल जाता था, चला जाता था; क्योंकि उसने पहले से वायदा कर रखा होता था। मिसेज़ ट्रिस्टरैम न्यूमैन से बहुत-से प्रश्न उसके बारे में करतीं, लेकिन वह अपने बारे में बहुत उदासीन भाव से बताता। सच तो यह था कि वह अपने बारे में बात करना पसन्द नही करता था। लेकिन फिर भी जब न्यूमैन यह देखता कि मिसेज ट्रिस्टरैम वास्तव में उसके बारे में जानने के लिए बहुत उत्सुक है, तो वह यथाशक्ति अपनी कहानी सुनाता। उसने अपनी बहुत-सी बातें बताई थीं और साथ ही अमरीका के पश्चिमी भाग के जीवन के अनेक चुटकुले भी सुनाए थे। मिसेज़ ट्रिस्टरैम स्वयं फिलाडेल्फिया की थीं और आठ वर्ष पेरिस में रहने के बाद वे अपने-आपको पूर्वीय समझने लगी थी। लेकिन कहानी का हीरो सदैव कोई अन्य व्यक्ति होता। इससे हमेशा ही न्यूमैन को लाभ नहीं होता था। और न्यूमैन अपने अनुभव भी सिलसिलेवार नहीं सुना पाता था। मिसेज़ ट्रिस्टरैम की एक खास इच्छा यह जानने की थी कि न्यूमैन ने कभी सचमुच हृदय से किसी-को प्रेम किया है। जब इस बारे में अप्रत्यक्ष ढग से पूछने पर कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिला, तो मिसेज ट्रिस्टरैम ने अपनी जिज्ञासा की शांति के लिए सीधे सवाल किया। कुछ देर के लिए न्यूमैन ज़रा हिचकिचाया, लेकिन फिर उसने जवाब दिया, "नहीं।" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा कि यह उत्तर सुनकर उन्हें प्रसन्नता हुई है, क्योंकि उनका अपना ख्याल यह था कि न्यूमैन ऐसा जीव नहीं है, जो भावनाओं के जाल में फस सके।

"सच ?" न्यूमैन ने गम्भीरता से पूछा, "क्या आप सचमुच ऐसा समझती हैं ? आप यह कैसे पहचानती हैं कि कोई आदमी भावुक है ?"

"मैं नही बता सकती," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "आप बहुत भावुक हैं या नहीं, यह भी नही कह सकती।"

"मैं बड़ा गम्भीर व्यक्ति हूं, यह सच है।"

"अगर मैं आपसे यह कहूं कि आप बिलकुल भावुक नही है, तो क्या आप मेरी बात का ज्यों-का-त्यों विश्वास कर लेंगे ?"

"पूछ देखिए," न्यूमैन ने कहा।

"आप मेरा विश्वास तो करेंगे, लेकिन मेरी बात की परवाह नही करेंगे," मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा।

"आप मुझे बिलकुल गलत समझी है। मै आपकी बात की बहुत कद्र करूंगा, लेकिन मैं विश्वास नही करूंगा। सच तो यह है कि मुझे अपने जीवन मे भावुक बनने का कभी अवसर ही नहीं मिला। मुझे अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए काम करना पड़ा।"

"मैं कल्पना कर सकती हूं कि शायद आपको कभी-कभी बहुत ज्यादा काम करना पड़ा।"

"हां, यह बात तो सही है।"

"लेकिन जब आप बहुत गुस्से से कोई काम करें, तो उसमे आनन्द नहीं मिलता।"

"लेकिन मैं कभी गुस्सा नही होता।"

"तो क्रुद्ध होते हैं या अप्रिय हो जाते है।"

"मैं कभी क्रुद्ध नहीं होता और मुझे नाराज हुए इतने दिन हो गए है कि मैं भूल गया हूं कि नाराज होना क्या चीज है।"

"मैं नही मानती," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "कि आप कभी नाराज नहीं होते। कभी-कभी तो आदमी को क्रुद्ध होना ही चाहिए और आप कोई देवता नहीं हैं जो कभी क्रुद्ध ही न हों।"

"शायद कभी पांच वर्षों में एक बार मुझे भी क्रोध आ जाता हो।"

"तो अब वह समय आ रहा है," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "अगले छः महीने के अन्दर ही मैं आपको किसी न किसी दिन बड़ा नाराज देखूंगी।"

"क्या आप मुझे क्रुद्ध करेंगी ?"

"इसके लिए मुझे अफसोस न होगा। आप तो हर चीज़ बड़े शातभाव से ग्रहण करते हैं। कभी-कभी तो मैं झुंझला उठती हूं और तब आप बड़े खुश होते है। आप-में सबसे बड़ा गुण यह है कि आपने यह पहले से ही सोच रखा है कि मैं आनन्द के लिए निकला हू और यह आनन्द प्राप्त करना मेरा अधिकार है। आप कभी भी न तो भूत के लिए और न भविष्य के लिए चिंतित नजर आते है। ऐसा लगता है कि आपकी सारी चिन्ताएं समाप्त हो गई हैं।"

"हां, मैं समझता हू कि मैं प्रसन्न हूं," न्मैयून ने सोचते हुए कहा।

"लेकिन बहुत भद्दे ढंग से सफल रहे ।"

"तांबे की खानों के काम में सफल रहा हूं," न्यूमैन ने कहा, "रेल-मार्गों के काम में यूं ही रहा और तेल के कुओं को खोजने में तो मैंने मुंह की खाई।"

"यह जानना अच्छा नहीं लगता कि अमरीकनों ने धन किस प्रकार कमाया है। अब आपके सामने सारी दुनिया पड़ी ।आपको केवल आनन्द प्राप्त करना है।"

"ओह, मेरा ख्याल है कि मैं बड़ा सुखी हूं," न्यूमैन ने कहा, "मैं केवल इसी बात से ऊबा हुआ हूं कि अब यह आनन्द मेरे ऊपर लाद दिया गया है। इसके अलावा मेरे भी अपने कई दोष हैं। मैं बुद्धिवादी नहीं हूं।"

"लोग आपसे बुद्धिवादी होने की आशा भी नहीं करते," मिसेज ट्रिस्टरैम ने उत्तर दिया, और फिर इसके एक क्षण बाद बोली, "इसके अलावा आप बुद्धिवादी हैं भी।"

"मैं बुद्धिवादी चाहे हूं या नहीं, लेकिन मैं यह ज़रूर चाहता हूं कि अपना समय आनन्द से बिताऊ," न्यूमैन ने कहा। "मैं सुसंस्कृत नहीं हूं, पढ़ा-लिखा भी नहीं हूं, मुझे इतिहास, कला या कोई भी विदेशी भाषा नहीं आती, मैं अन्य किसी प्रकार की विद्या भी नहीं जानता। लेकिन मैं बेवकूफ भी नहीं हूं। यूरोप-यात्रा समाप्त करने से पहले मैं यहां के बारे में काफी कुछ जान लूंगा।" एक क्षण के बाद न्यूमैन ने फिर कहा, "मेरे यहां पसलियों के नीचे पेट की तरफ एक अजीब-सी अनुभूति होती है और मेरा यह जी करता है कि मैं बाहर निकल पड़ूं और खूब घूमूं।"

"शाबाश !" मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा, "यह तो बड़ी अच्छी बात है। आप बड़े भारी बर्बर पश्चिमी अमरीकावासी हैं, जो अपने अज्ञान को दूर करने के लिए इस

पुरानी दुनिया को देखने आए है; इसे आप थोड़ी देर ताकते है और फिर इसपर झपट्टा मारकर टूट पड़ते है।"

"ओह," न्यूमैन ने कहा, "इस तरह की बातें न करो। मैं बर्बर नहीं हूं, बल्कि मैं ठीक उलटा हूं। मैंने बर्बर लोग देखे हैं और मैं जानता हूं कि वे क्या होते हैं।"

"मेरा यह मतलब नहीं है कि आप रेड इंडियनों के सरदार हैं या कम्बल ओढ़ते हैं और पंखों का मुकुट लगाते हैं। बर्बरता भी तरह-तरह की होती है।"

"मैं बहुत सभ्य जाति का व्यक्ति हूं," न्यूमैन ने कहा, "और मैं यह बात बराबर कहूंगा। अगर आपको विश्वास न हो, तो मैं इस बात को आपके सामने सिद्ध भी कर दूंगा।"

मिसेज़ ट्रिस्टरैम कुछ देर चुप रहीं। फिर बोलीं, "मैं चाहूंगी कि आप अपनी बात सिद्ध करें। मैं आपसे किसी बड़े कठिन मौके पर यह बात साबित करने के लिए कहूंगी।"

"अवश्य कहिएगा," न्यूमैन ने कहा।

"आपकी बात से कुछ अभिमान प्रकट होता है।" मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा।

"ओह," न्यूमैन ने कहा, "मेरी अपने बारे में बहुत अच्छी राय है।"

"मेरी इच्छा है कि मै आपकी परीक्षा लूं। मुझे समय दीजिए, मैं ऐसा करूंगी।" और मिसेज़ ट्रिस्टरैम इसके बाद काफी देर के लिए चुप हो गई। ऐसा लगा जैसे वह अपने वचन का पालन करने का प्रयत्न कर रही हैं। प्रतीत होता है कि उस दिन शाम को उन्हें सफलता नही मिली, लेकिन जब न्यूमैन विदा लेने के लिए उठ रहा था, तो वे यकायक बोलीं जैसा कि उनका स्वभाव था। उनके स्वर में विनोद नहीं था, बल्कि वह सहानुभूति से प्रकम्पित हो उठा था। उन्होंने कहा, "मैं बड़ी गम्भीरता से यह बात कह रही हूं। मि० न्यूमैन, मुझे आपमें पूर्ण विश्वास है। मुझमें देशभक्ति की जो भावना है, उसे आपको देखकर बल मिलता है।"

"आपकी देशभक्ति की भावना को बल मिलता है?" क्रिस्टोफर ने पूछा।

"हां, यह स्पष्ट करने में भी काफी वक्त लगेगा और शायद आप समझ भी नहीं पाएंगे। इनके अलावा शायद आपको लगे कि मैं बड़ी ऊची बात कर रही हूं। लेकिन मेरे इस कथन का आपसे निजी तौर पर कोई सम्बन्ध नहीं है; इसका सम्वन्ध उस सबसे है, जिसका आप प्रतिनिधित्व करते है। सौभाग्य से इस सम्बन्ध में आप

ज़्यादा नहीं जानते। अगर जानते होते तो शायद आपमें बहुत अधिक अहंमन्यता घर कर जाती, जिसे सहन करना कठिन होता।"

न्यूमैन कुछ देर ठगा-सा खड़ा रह गया और सोचता रहा कि आखिर वह किस चीज़ का 'प्रतिनिधित्व' करता है।

"मैंने आपसे अभी जो अजीब ढंग की बातचीत की है, इसके लिए मुझे क्षमा कीजिएगा और जो मैंने सलाह दी है, उसे भी भूल जाइएगा। आपको यह बताना कि आप क्या करें और क्या न करें, मेरे लिए बड़ा ही मूर्खतापूर्ण है। जब कभी आपको कोई बात अटपटी लगे, तो आप ठीक उसी तरह व्यवहार करें, जैसा आप उचित समझें और आपका यही आचरण सर्वोत्तम होगा। जब आप किसी कठि-नाई में हों, तो उसपर विजय पाने का आप स्वयं ही सबसे अच्छा रास्ता खोज लेंगे।"

"आपने जो बातें मुझे बताई हैं, उन सबको मैं याद रखूंगा," न्यूमैन ने कहा, "यहां इतने रूपक और प्रपंच होते रहते है—"

"बेशक, मेरा मतलब इन रूपकों और प्रपंचों से ही है।"

"आह, लेकिन मैं इन सबको देखना चाहता हूं और इनमें भाग भी लेना चाहता हूं," न्यूमैन ने कहा, "क्या मुझे भी अन्य लोगों की तरह ऐसा ही करने का अधि-कार नहीं है ? मैं प्रपंचों या परम्पराओं से घबराता नहीं हूं और आप मुझे इन्हें तोड़ने के लिए भी न कहें; क्योंकि मै आपकी यह बात नहीं मानूंगा।"

"मेरा यह मतलब नही है। मेरा आशय यह था कि आप अपने ढंग से इन चीज़ों को देखें। जो सवाल उठें, उन्हें खुद हल करें।"

"ओह, मुझे विश्वास है कि मुझे इस सम्बन्ध में कोई कठिनाई नहीं होगी।" न्यूमैन ने कहा।

अगली बार जब मिसेज़ ट्रिस्टरैम के यहा न्यूमैन रात के भोजन के लिए गया, तो वह इतवार का दिन था। उस दिन मि० ट्रिस्टरैम भी क्लब नहीं गए थे और इस तरह शाम को छज्जे पर तीनों आदमी बैठे थे। बहुत-सी चीज़ों के बारे में बातें हो रही थीं। तभी अन्त में अकस्मात् मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा कि अब समय आ गया है, जब क्रिस्टोफर न्यूमैन को विवाह कर लेना चाहिए।

"सुनिए, ज़रा इनका दुस्साहस तो देखिए!" ट्रिस्टरैम ने कहा। वह इतवार की संध्या को अक्सर लड़ाई-झगड़े के लिए आमादा रहता था।

"आपने शादी न करने का निश्चय तो नहीं कर रखा है ?" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने अपनी बात जारी रखी।

"खुदा खैर करे !" न्यूमैन ने ज़ोर से कहा, "मैंने शादी करने का दृढ़ निश्चय कर रखा है।"

"शादी करना तो बहुत आसान है," ट्रिस्टरैम ने कहा, "बहुत ही आसान है, बिलकुल मरने की तरह !"

"तो मेरा ख्याल है कि आप पचास साल की आयु तक तो प्रतीक्षा नहीं करेंगे।"

"इसके विपरीत मैं बहुत जल्दी शादी कर लेना चाहता हूं।"

"लेकिन आपकी बात का कोई विश्वास नहीं करेगा। क्या आप यह उम्मीद करते हैं कि कोई सुन्दरी आपके पास आएगी और वह आपसे शादी का प्रस्ताव करेगी ?"

"नहीं, मैं स्वयं शादी का प्रस्ताव करने के लिए तैयार हूं। मैं इस बारे में काफी कुछ सोचता रहता हू।"

"अच्छा तो बताइए कि आपने क्या सोचा है।"

"हां," न्यूमैन ने धीरे-धीरे कहना शुरू किया, "मैं बहुत अच्छी शादी करना चाहता हूं।"

"तो साठ साल की बुढ़िया से विवाह कर लीजिए," ट्रिस्टरेम ने कहा।

"किस अर्थ में ?"

"हर अर्थ में। मुझे खुश करना बड़ा मुश्किल काम है।"

"आपको यह यह याद रखना चाहिए, जैसा कि फ्रेंच कहावत है—दुनिया की नुन्दर से सुन्दर स्त्री भी आपको वही दे सकती है, जो उसके पास है।"

"चूंकि आप मुझसे पूछ रहे हैं," न्यूमैन ने कहा, "मैं आपको साफ-साफ बता दू कि मेरी शादी करने की बड़ी गहरी लालसा है। इस दिशा में प्रयत्न करने का समय भी आ गया है। मैं जान सकू इसके पहले ही मेरी आयु चालीस की हो जाएगी। कभी-कभी मैं अपने-आपको बड़ा एकाकी और अगहाद अनुभव करता हू। मुझे इससे बड़ी उकताहट होती है। लेकिन अगर मैं अब विवाह करता हूं, क्योंकि मैंने बीस वर्ष की अवस्था में ही जल्दी में विवाह नहीं किया है, तो मुझे यह काम आंखें खोलकर करना होगा। मैं अपना विवाह अच्छे ढंग से करना चाहता हूं। मैं न केवल इस सम्बन्ध

में कोई गलती ही नही करना चाहता, बल्कि मैं चाहता हूं कि मेरा दाम्पत्य जीवन बड़ा सफल रहे। मै सबसे अच्छी स्त्री चुनना चाहता हूं। मेरी पत्नी बड़ी ही शानदार होनी चाहिए।"

"वाह, क्या कहने !" मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा।

"ओह, मैने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ सोच रखा है।"

"शायद आप बहुत ज्यादा सोचते हैं। सबसे अच्छी बात तो यही है कि आप सीधे-सादे ढंग से किसीसे प्रेम करने लगें।"

"जब मुझे अच्छी लगनेवाली कोई सुन्दरी मिल जाएगी, तो मैं उससे प्रेम करूंगा। मेरी पत्नी बड़े सुख-चैन से रहेगी।"

"वाह, क्या कहने हैं ! यह लीजिए एक शानदार सुन्दरी के लिए यह सुनहरा मौका है।"

"यह ठीक नही है," न्यूमैन ने जवाब दिया, "पहले तो आप किसीसे उसके मन की बात जान लेने की कोशिश करती हैं और जब वह उसे कह देता है, तो फिर आप उसपर हंसती हैं !"

"मैं आपको विश्वास दिलाती हूं," मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा, "मैं ज़रा भी मज़ाक नहीं कर रही। इस बात को साबित करने के लिए मैं एक प्रस्ताव आपके सामने रखती हू। क्या आप पसन्द करेंगे कि मैं आपके विवाह के लिए प्रबन्ध करूं ?"

"मेरे लिए आप पत्नी तलाश करेंगी ?"

"वह तो मैंने खोज ली है। मै आप दोनों को मिला-भर दूगी।"

"ओह, अब बताओ भी," ट्रिस्टरैम ने कहा, "हम कोई विवाह कराने का कार्यालय नहीं खोले बैठे हैं। न्यूमैन सोचेगा कि अब तुम कुछ कमीशन लेना चाहती हो।"

"मेरी कल्पना के अनुसार अगर कोई स्त्री है, तो आप मुझे उससे मिलवाइये," न्यूमैन ने कहा, "मैं उससे कल ही शादी कर लूंगा।"

"आप बड़ी अजीब-सी बात कर रहे हैं, और मैं उसे समझ नहीं पा रही हूं। मैं यह नहीं समझती कि इस मामले में भी आप इतने सोच-विचार और धीरज से काम लेंगे।"

न्यूमैन कुछ देर चुप रहा। अन्त में वह बोला, "मैं एक महान स्त्री चाहता

हूं। और मै अपने हठ का पक्का हूं। मै ऐसी स्त्री से विवाह करने में समर्थ हूं और ऐसा ही करना भी चाहता हूं। आखिर मैंने इतने सारे वर्ष तक किसलिए इतना संघर्ष किया और परिश्रम किया ? अन्ततः मै अपनी जीवन-यात्रा में सफल रहा हूं। तब इस सफलता का क्या किया जाए ? इस सफलता को पूर्ण करने के लिए मैं अनुभव करता हूं कि मुझे एक अत्यन्त सुन्दरी से विवाह करना चाहिए, ठीक उसी तरह जिस तरह किसी सुन्दर स्मारक पर प्रतिमा स्थापित की जाती है। वह स्त्री सुशील और गुणवान होने के साथ ही सुन्दर और चतुर भी होनी चाहिए। मैं अपनी पत्नी को बहुत कुछ दे सकता हूं, इसलिए अगर मै बहुत कुछ मांगता हूं, तो वह गलत न होगा। अगर वह मुझसे बहुत ज़्यादा अच्छी हो, तो भी मुझे कोई आपत्ति न होगी। वह मुझसे भी अधिक चतुर और बुद्धिमान हो सकती है और इससे मुझे प्रसन्नता ही होगी। एक शब्द में मेरी इच्छा यह है कि मै सबसे सुन्दर और अच्छी स्त्री से विवाह करूं।"

"तुमने यह बात शुरू से ही क्यों नही बता दी ?" ट्रिस्टरैम ने पूछा, "मैं तुम्हें अपना घनिष्ठ मित्र बनाने का प्रयत्न कर रहा था।"

"यह तो बड़ी दिलचस्प बात है," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "मुझे ऐसे आदमी पसन्द हैं, जो अपने बारे में बिलकुल स्पष्ट विचार रखते हैं।"

"मैं अपने बारे में ये विचार काफी समय पहले से स्थिर कर चुका था," न्यूमैन कह रहा था, "मैंने अपना यह निश्चय जीवन मैं काफी पहले कर लिया था कि अतीव सुन्दरी स्त्री से ही विवाह करना चाहिए। परिस्थितियों पर मेरी यह सबसे बड़ी विजय होगी। जब मैं सुन्दर कहता हूं, तो मेरा मतलब शारीरिक, मानसिक और व्यावहारिक, तीनों तरह की सुन्दरता से है। इस तरह की स्त्री से विवाह करने का मुझ ऐसे व्यक्ति को अधिकार है, बशर्ते वह ऐसी स्त्री पा सके। ऐसा करने के लिए उस व्यक्ति को कोई विशेष गुण प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। केवल उसमें पौरुष होना चाहिए। इसके बाद उसमें इच्छाशक्ति और बुद्धि होनी चाहिए, जिसका वह प्रयोग करे।"

"मुझे ऐसा लगता है कि आप विवाह भी अपने अहं को सन्तुष्ट करने के लिए करना चाहते हैं ?"

"हां, वह तो तय है," न्यूमैन ने कहा, "अगर लोग मेरी पत्नी को देखकर उसकी तारीफ करते हैं, तो मुझे गुदगुदी होगी।"

"इसके बाद भी," मिसेज ट्रिस्टरैम ने ज़ोर से कहा, "क्या किसी व्यक्ति को सुशील कहा जा सकता है ?"

"लेकिन कोई भी मेरी पत्नी की उतनी तारीफ नही कर सकेगा जितनी शंसा मैं करूंगा।"

"मैं देखता हूं कि तुम्हें शान-शौकत से बड़ा लगाव है।"

न्यूमैन कुछ हिचकिचाया ; और फिर बोला, "यह सच है।"

"और मेरा ख्याल है कि शायद आप ऐसी सुन्दरी की तलाश काफी कर चुके हैं।"

"हां, अवसर के अनुसार काफी कर चुका हूं।"

"और आपको ऐसी कोई युवती नहीं दिखलाई पड़ी, जिससे आप सन्तुष्ट हो गए हों ?"

"नहीं," न्यूमैन ने कुछ संकोचपूर्वक कहा, "मै यह कहने के लिए विवश हूं कि मैंने अभी तक कोई ऐसी लड़की नहीं देखी, जिससे मैं वस्तुतः सन्तुष्ट हो सका हूं।"

"आप मुझे फ्रेंच रोमांटिक कवियों के नायकों का स्मरण कराते हैं। रौलां और फारचूनियो तथा ऐसे ही कुछ और भी हीरो है, जिनकी सौंदर्य की पिपासा शान्त ही नहीं होती है। लेकिन मेरा ख्याल है कि आप सचमुच विवाह करना चाहते हैं और मैं आपकी मदद करना चाहूंगी।"

"वह कमबख्त कौन है, डार्लिंग, जिसे तुम न्यूमैन से मिलाना चाहती हो ?" ट्रिस्टरैम ने पूछा। "हम कई सुन्दर लड़कियों को जानते हैं, लेकिन इतनी शानदार स्त्री दिखलाई पड़ना आम तौर पर कठिन होता है।"

"आपको किसी विदेशी से विवाह करने में क्या कोई आपत्ति होगी ?" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने न्यूमैन से प्रश्न किया, जो अब अपनी कुर्सी से पीठ टिकाकर कुछ पीछे की तरफ झुक गया था, और उसने अपने पैर छज्जे की रेलिंग के एक डण्डे पर रख लिए थे तथा दोनों हाथ जेबों में डालकर आसमान पर तारों को देख रहा था।

"यह किसी आयरिश युवती से विवाह नहीं करेंगे," ट्रिस्टरैम ने कहा। न्यूमैन कुछ देर सोचता रहा। "नहीं, किसी विदेशी से भी विवाह करने में···कोई आपत्ति नहीं है," अन्ततः उसने कहा, "मेरे मन में किसीके प्रति कोई द्वेष-भाव नहीं है।"

"मेरे मित्र, ऐसा लगता है कि आप बड़े निधड़क हैं।" ट्रिस्टरैम ने कहा।

"आपको पता नहीं है कि ये विदेशी स्त्रियां कैसी होती हैं। विशेष रूप से जो 'शानदार' कहलाती है। अगर तुम्हें किसी ऐसी सरकेशियन युवती से विवाह करना पड़े, जो अपनी कमर की पेटी में छुरा रखती है, तो कैसा लगेगा ?"

न्यूमैन ने अपने घुटने ज़ोर से थपथपाए। "अगर मुझे पसन्द आ जाए, तो मैं जापानी लड़की से भी शादी कर लूंगा," न्यूमैन ने अपने विचार की पुष्टि की।

"बेहतर होगा कि हम लोग यूरोप तक ही सीमित रहें," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "बात केवल इतनी सी ही है कि जो भी युवती हो, वह आपकी पसन्द की हो।"

"यह आपको एक गवर्नेस से विवाह कराना चाहती हैं !" ट्रिस्टरैम ने कराह-कर कहा।

"यह तो तय है कि अगर अन्य सब बातें हों, तो मैं अपने देश की लड़की से ही शादी करना पसन्द करूगा। अगर हम दोनों एक ही भाषा बोलें, तो सुविधा होगी, लेकिन मैं विदेशी से भी विवाह करने में डरूंगा नहीं। इसके अलावा मुझे किसी यूरोपियन लड़की से शादी करना अधिक अच्छा लगेगा। इसकी एक वजह यह है कि यहां चयन का काफी विस्तृत क्षेत्र है। जब आप बहुत बड़ी संख्या में से अपने मन की पत्नी चुनते हैं, तो आपकी अभिरुचि की छोटी से छोटी बात भी पूरी हो सकती है।"

"आप तो बिलकुल सारडानापौलुस की तरह बात कर रहे है।" ट्रिस्टरैम ने कहा।

"ये सब बातें आप उस व्यक्ति से कहिए, जो आपकी बात सुन रहा हो," न्यू-मैन की ओर देखते हुए मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "मैं अपने परिचित मित्रों में ऐसी कई लड़कियों को जानती हूं, जो ससार की सबसे सुन्दर युवतियों में से हैं। मै उन्हें बहुत आकर्षक या बहुत सम्माननीय या बड़ी सुन्दरी नहीं कहती, लेकिन इतना ही कहती हूं कि वह स्त्री ससार की सबसे प्रेममयी युवती है।"

ट्रिस्टरैम ने कहा, "तो अब तक तुम चुप क्यों थीं ? मुझे क्यों नही बताया; क्या तुम मुझसे डरती थी ?"

"आप उसे देख चुके है," ट्रिस्टरैम की पत्नी ने उससे कहा, "लेकिन क्लेयर के गुणों को परखने की क्षमता ही आपमें नहीं है।"

"आह, क्या वह क्लेयर है ? फिर मुझे कुछ नहीं कहना।"

"क्या आपकी मित्र विवाह करने की इच्छुक है ?" न्यूमैन ने पूछा।

"बिलकुल नहीं। उसे शादी करने के लिए राज़ी करना आपका काम होगा। उसे सहमत करना सरल नहीं होगा। उसका पहले विवाह हो चुका है और उस विवाह के बाद से पुरुष-जाति के बारे में उसकी राय कोई अच्छी नहीं रही है।"

"ओह, तब क्या वह विधवा है ?" न्यूमैन ने कहा।

"आप तो अभी से ही डर गए ? उसका विवाह अठारह वर्ष की उम्र में उसके माता-पिता ने फ्रांस के रिवाज के अनुसार एक बुड्ढे खूसट से कर दिया था। लेकिन सौभाग्य से वह कुछ ही वर्ष बाद मर गया। और अब क्लेयर की आयु पच्चीस वर्ष की है।"

"तो वह फ्रेंच है ?"

"उसके पिता फ्रेंच थे और मां अंग्रेज़। वस्तुतः, वह फ्रेंच से ज़्यादा अंग्रेज़ है और वह हमारी और आपकी तरह ही या शायद हम दोनों से अच्छी अंग्रेज़ी बोलती है। वह बड़े ही ऊंचे खानदान की है। माता और पिता, दोनों तरफ से ही उसके परिवार का बड़ा लम्बा और सम्मानपूर्ण इतिहास है। उसकी मां अंग्रेज़ कैथोलिक सामन्त की पुत्री है। उसके पिता मर चुके हैं और क्लेयर विधवा होने के बाद से अपनी मां के साथ रहती है। उसका भाई भी साथ रहता है, जिसका विवाह हो चुका है। क्लेयर का एक और छोटा भाई है, जो कुछ-कुछ पागल-सा है। रू द ल' यूनिवर्सिटी में उनका एक बहुत पुराना मकान है, लेकिन उनकी सम्पत्ति बहुत कम है और वे मितव्ययिता से साधारण लोगों की तरह से ही रहते हैं। जब मैं छोटी थी, तो मुझे शिक्षा के लिए एक कन्वेंट में भरती कर दिया गया था और मेरे पिता यूरोप का दौरा करते थे। हालांकि कन्वेंट में रहना मुझे पसन्द नहीं था, लेकिन उसका एक फायदा यह हुआ कि मेरा परिचय क्लेयर द बेलगार्द से हो गया। वह मुझसे उम्र में छोटी थी और हम दोनों में गहरी मित्रता हो गई। मैं उससे बहुत प्रेम करने लगी और वह भी मुझे बहुत चाहने लगी। क्लेयर पर उसके घरवालों का बड़ा कड़ा नियंत्रण था, और जब मैं कन्वेंट से आ गई, तो हम लोगों का मिलना-जुलना भी खत्म हो गया। मैं उसके समाज की नहीं थी, और न अब हूं। लेकिन फिर भी कभी-कभी हम लोग मिल लेते हैं। उसके घरवाले बड़े ही अजीब लोग हैं और वैसा ही इन लोगों का समाज भी है। ऐसा लगता है कि हर व्यक्ति एक-एक मील ऊंचे पहाड़ की चोटी पर बैठा हुआ है और उसी अनुपात में उनकी लम्बी-

चौड़ी वंश-परम्परा भी है। पुराने सामन्तों का उनका इतिहास है। आप जानते हैं कि लैजिटिमिस्ट या अल्टरा मौनटेने क्या होता है ? अगर नहीं तो मदाम द सांत्रे के ड्राइंगरूम में किसी दिन शाम को पांच बजे जाइए। आपको पता लग जाएगा। मैंने आपसे जाने के लिए तो कह दिया है, लेकिन उनके यहां बिना परिचय के कोई नहीं जा सकता।"

"और आप इस सुन्दरी से मेरा विवाह कराना चाहती हैं ?" न्यूमैन ने पूछा। "एक ऐसी स्त्री से, जिसके पास मैं जा भी नहीं सकता ?"

"लेकिन अभी आपने यह कहा था कि अपने विवाह के मामले में आप किसी बाधा को नहीं मानेंगे।"

"कुछ देर न्यूमैन मिसेज़ ट्रिस्टरैम की ओर देखता रहा और अपनी मूंछों को थपथपाता रहा। "क्या वह अतीव सुन्दरी है ?" न्यूमैन ने पूछा।

"नहीं।"

"ओह, तब फिर क्या फायदा है..."

"नहीं, वह अतीव सुन्दरी तो नहीं है, लेकिन सुन्दर ज़रूर है। ये दोनों ही अलग-अलग चीज़ें हैं। अनिंद्य सुन्दरी के चेहरे में कोई दोष नहीं होता ; इसके विपरीत सुन्दर स्त्री के चेहरे में त्रुटि तो होती है, लेकिन यह त्रुटि भी उसके आकर्षण को और बढ़ा देती है।"

"मदाम द सांत्रे, मुझे अब याद आ गई," ट्रिस्टरैम ने कहा। "वे तो बल्लम के डण्डे की तरह सामान्य हैं। कोई भी आदमी उनकी तरफ एक से दूसरी बार नहीं देखना चाहेगा।"

"यह कहकर कि वे दूसरी बार उसकी तरफ नहीं देखेंगे, मेरे पति ने क्लेयर के सौंदर्य की काफी प्रशंसा कर दी है," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने जवाब दिया।

"क्या वे बहुत अच्छी हैं, काफी चतुर हैं ?" न्यूमैन ने पूछा।

"वे हर तरह से उपयुक्त हैं। इससे अधिक मैं कुछ नहीं कहूंगी। जब आप किसी व्यक्ति से किसीका परिचय करा रहे हों, तो उसके बारे में विस्तार से बताना ठीक नहीं होता। मै कोई अतिशयोक्तिपूर्ण बात नहीं करूंगी, केवल इतना ही कहूंगी कि आप क्लेयर से मिलिए। मैं उसकी सिफारिश करती हूं। जितनी स्त्रियों को मैं जानती हूं, उन सबमें वह अनुपम है। वह सबसे भिन्न है।"

"मैं उनसे मिलना चाहूंगा," न्यूमैन ने केवल इतना ही कहा।

"मैं आपको मिलाने का प्रयत्न करूंगी। मिलाने का एकमात्र ढंग यही है कि उसे रात के खाने पर बुलाऊं। इसके पहले मैंने उसे डिनर पर कभी निमंत्रित नहीं किया है और नही जानती कि वह मेरा निमंत्रण स्वीकार करेगी। उसकी मां सामन्तवादी रानियों की तरह परिवार का बड़े ही कठोर ढंग से शासन करती है, क्लेयर की किसीसे मित्रता नही होने देतीं और सिर्फ उन्हीं लोगोंसे मिलने देती है. जिनको वे उचित समझती हैं। क्लेयर कुछ खास-खास आदमियों से ही मिलने जा सकती है। लेकिन फिर भी मैं निमंत्रण तो दूगी ही।"

"तभी मिसेज़ ट्रिस्टरैम की बात में बाधा पड़ गई। नौकर छज्जे पर आया और उसने बताया कि ड्राइंगरूम में कुछ मेहमान आए है। जब मिसेज़ ट्रिस्टरैम अपने मेहमानों से मिलने चली गई, तो टॉम ट्रिस्टरैम ने न्यूमैन से बातचीत शुरू की।

"तुम इस झगड़े में मत पड़ना, दोस्त," उसने सिगार का आखिरी कश लेते हुए कहा, "वहां कुछ नही धरा है।"

न्यूमैन उसकी तरफ जिज्ञासु की तरह देखने लगा। "तुम तो दूसरी ही कथा कह रहे हो, क्या ?"

"मैं इतना ही बताना चाहता हूं कि मदाम द सात्रे ऐसी सफेद गुड़िया है, जो काफी अभिमानिनी है।"

"आह, क्या वह बड़ी अभिमानिनी है ?"

"वह तुम्हारी तरफ ऐसे देखेगी जैसे तुम हवा का छोटा-सा बगूला हो और तुम्हारी कोई परवाह भी नहीं करेगी।"

"क्या वह बड़ी गर्वीली लड़की है ?"

"गर्वीली ? वह उतनी ही अभिमानिनी है, जितना मैं विनम्र।"

"और क्या खूबसूरत भी नहीं है ?"

ट्रिस्टरैम ने अपने कंधे उचकाए। "उसका सौंदर्य ऐसा है कि उसे समझने के लिए आपको बड़ी अक्ल लगानी पड़ेगी, लेकिन मुझे अब ड्राइंगरूम में जाना चाहिए और वहां मेहमानों का जी बहलाने के लिए बातचीत करनी चाहिए।"

जब न्यूमैन अपने दोस्त के जाने के बाद ड्राइंगरूम में पहुंचा, तो कुछ समय गुज़र चुका था। वह कुछ ही देर ड्राइंगरूम में बैठा और इस बीच बिलकुल मौन रहा। मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने एक महिला से न्यूमैन का परिचय कराया, जो बिना रुके

बराबर बोले जा रही थीं। न्यूमैन उस महिला को देखता रहा और उसकी बातें सुनता रहा। थोड़ी देर बाद वह उठकर गया और उसने मिसेज ट्रिस्टरैम से विदा मांगी।

"यह महिला कौन है ?" उसने पूछा।

"मिस डोरा फिंश। आपको कैसी लगी ?"

"बहुत बात करती है।"

"उसे बड़ा प्रतिभा-सम्पन्न समझा जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि आपको खुश करना बड़ा कठिन है।" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा।

न्यूमैन कुछ देर सोचता हुआ खड़ा रहा, फिर बोला, "अपनी उस मित्र के बारे में भूलिएगा मत। मदाम, क्या नाम है उनका ? वही अभिमानिनी सुन्दरी का ? उनको डिनर पर अवश्य निमंत्रित कीजिएगा और मुझे भी काफी पहले बता दीजिएगा।" यह कहकर न्यूमैन चल दिया।

कुछ दिन बाद वह फिर ट्रिस्टरैम के घर आया। तीसरे पहर का समय था। मिसेज़ ट्रिस्टरैम अपने ड्राइंगरूम में थीं। उनके यहां कोई मेहमान आया था। एक बहुत सुन्दर तरुण महिला थी, जो श्वेत परिधान धारण किए थी। दोनों स्त्रियां उठ खड़ी हुईं और ऐसा लगता था कि मेहमान युवती मिसेज ट्रिस्टरैम से विदा ले रही है। जब न्यूमैन अन्दर पहुंचा, तो मिसेज ट्रिस्टरैम ने एक विशेष दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए न्यूमैन का स्वागत किया। इस दृष्टि का आशय न्यूमैन तुरन्त नहीं समझ पाया।

"यह हमारे बड़े घनिष्ठ मित्रों में हैं।" अपनी मित्र-महिला की ओर मुड़कर देखते हुए मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "इनका नाम है मिस्टर क्रिस्टोफर न्यूमैन। मैं तुम्हें इनके बारे में बता चुकी हूं और ये तुमसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं। अगर तुम मेरे यहां डिनर पर आतीं, तो इनसे परिचय का अवसर मिल जाता।"

अजनबी युवती ने मुड़कर न्यूमैन की तरफ मुस्कराते हुए देखा। ऐसा करने पर न्यूमैन को कुछ भी अटपटा नहीं लगा, क्योंकि उसमें असीम आत्मविश्वास की भावना थी; लेकिन जैसे ही न्यूमैन को यह पता लगा कि यही वह सुन्दरी मदाम द सान्त्रे हैं, जो दुनिया की सबसे मधुर महिला हैं, वैसे ही वह सावधान हो गया। उसने देखा कि मदाम द सान्त्रे का चेहरा कुछ लम्बा, गौर वर्ण का है और दोनों आंखें बड़ी चमकीली हैं, जिनमें करुणा का भाव है।

"मुझे सचमुच बड़ी प्रसन्नता होती," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "लेकिन दुर्भाग्य

से, जैसाकि मैंने अभी मिसेज ट्रिस्टरैम को बताया, सोमवार को मैं गाव जा रही हूं।"

न्यूमैन ससम्मान गम्भीरता से नत हो गया। "मुझे बहुत खेद है," उसने कहा।

"पेरिस में अब काफी गरमी पड़ने लगी है," मदाम द सान्त्रे ने कहा और मिसेज़ ट्रिस्टरैम का हाथ विदा लेने के लिए अपने हाथ में ले लिया।

मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने इस बीच अकस्मात् कुछ और फैसला कर लिया था, और वे काफी गम्भीरता से मुस्करा रही थीं, जैसाकि इस तरह के फैसले के बाद अक्सर महिलाएं मुस्कराती हैं। "मैं मि० न्यूमैन से तुम्हारी मित्रता कराना चाहती हूं," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने अपना मुंह मदाम द सान्त्रे के कान के पास ले जाते हुए कहा। वे बराबर मदाम द सान्त्रे के बोनेट के रिबनों को देख रही थीं।

क्रिस्टोफर न्यूमैन गम्भीर मुद्रा में मौन खड़ा रहा। मिसेज़ ट्रिस्टरैम चाहती थीं कि मदाम द सान्त्रे एकाध शब्द कहकर न्यूमैन को सामान्य शिष्टाचार से कुछ अधिक बात करके प्रोत्साहित करें। मदाम द सान्त्रे मिसेज़ ट्रिस्टरैम की अत्यन्त घनिष्ठ मित्र क्लेयर थीं, जिनकी वे मन ही मन बड़ी तारीफ करती थीं, लेकिन मदाम द सान्त्रे के लिए यह सम्भव नहीं हुआ कि वे मिसेज़ ट्रिस्टरैम का डिनर का निमंत्रण स्वीकार कर लेतीं।

मिसेज़ ट्रिस्टरैम की तरफ देखते हुए मदाम द सान्त्रे ने कहा, "अगर न्यूमैन मुझ-से मिलें, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "यह बहुत बड़ी बात है कि मदाम द सान्त्रे यह कहें।"

"मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूं," न्यूमैन ने कहा, "मिसेज़ ट्रिस्टरैम मेरे बारे में मेरी अपेक्षा आपको बेहतर ढंग से बता सकती हैं।"

मदाम द सान्त्रे ने फिर न्यूमैन की तरफ देखा। उनकी दृष्टि में चमक थी और कोमलता भी। "क्या आप पेरिस काफी दिन रुकेंगे?" मदाम द सान्त्रे ने पूछा।

"हम इन्हें रोक लेंगे," मिसेज़ ट्रिस्टरैम बोलीं।

"लेकिन इस समय तो आप मुझे रोके हुए हैं।" और मदाम द सान्त्रे ने मिसेज़ ट्रिस्टरैम से हाथ मिलाया।

"एक मिनट और," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा।

मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन की तरफ फिर देखा; इस बार वे मुस्कराईं नहीं। वे एक क्षण एकटक देखती ही रहीं। "क्या आप मेरे घर आकर मुझसे मिलेंगे ?" मदाम द सान्त्रे ने पूछा।

मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने मदाम द सान्त्रे का चुम्बन लिया। न्यूमैन ने धन्यवाद दिया और इसके बाद मदाम द सान्त्रे चली गईं। मिसेज़ ट्रिस्टरैम अपनी मित्र को पहुंचाने दरवाज़े तक गईं और न्यूमैन को एक क्षण के लिए अकेला छोड़ गईं। थोड़ी देर बाद जब वे लौटीं, तो वे अपने हाथ मल रही थीं। "यह तो बड़ा ही अच्छा संयोग हुआ," उन्होंने कहा, "क्लेयर यह कहने आई थी कि वह मेरा डिनर का निमंत्रण नहीं स्वीकार कर सकेगी। इस बीच आप आ गए और आपने बाज़ी मार ली। उसने तीन मिनट की मुलाकात के बाद ही आपको अपने घर पर मिलने के लिए बुला लिया।"

"जीत तो आपकी हुई है," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन आपको उसपर बहुत ज्यादा ज़ोर नहीं डालना चाहिए।"

मिसेज़ ट्रिस्टरैम एकटक देखती रहीं। "क्या मतलब है आपका ?"

"मुझे तो उसमें अभिमान लेशमात्र को भी नहीं दिखलाई पड़ा। मुझे ऐसा लगा कि वह स्वभाव से बड़ी शर्मीली है।"

"आपका कहना ठीक है। उसके चेहरे के बारे में आपका क्या ख्याल है ?"

"बहुत सुन्दर है।" न्यूमैन ने कहा।

"मेरा भी यही ख्याल है। बेशक आप उससे मिलने तो जाएंगे ही !"

"कल।" न्यूमैन ने कहा।

"नहीं, कल नहीं; परसों। परसों इतवार होगा। वह सोमवार को पेरिस से रवाना होगी। अगर आप नहीं भी मिल पाए तो कोई बात नहीं, कम से कम शुरूआत तो हो जाएगी।" और मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने न्यूमैन को मदाम द सान्त्रे के घर का पता बता दिया।

इतवार को गर्मियों के तीसरे पहर न्यूमैन सीन नदी के पार घूमता हुआ पैदल पहुंचा। इसके बाद फाबर्ग सेंट जर्मेन की सिलेटी और मौन सड़कों पर चलता रहा। यहां दोनों तरफ बने मकान कुछ-कुछ पूर्वी देशों की गढ़ी जैसे, रनिवास या हरमों जैसे लगते हैं। न्यूमैन को लगा कि मालदार लोगों के रहने का यह विचित्र ढंग है। न्यूमैन का आदर्श था कि ऐसा मकान हो, जिसकी शान चारों तरफ, बाहर

की ओर दिखलाई पड़े और ऐसा लगे कि वहा कोई भी व्यक्ति पहुचेगा, तो उसका स्वागत किया जाएगा। इसके विपरीत इन मकानों में बड़ी सुरक्षा-सी थी और लगता था कि इनमें प्रवेश करनेवाले अजनबी को पसन्द नहीं किया जाएगा। जिस मकान पर न्यूमैन को पहुंचना था, वह कुछ काला-सा था; उसकी दीवारों पर काफी धूल जम गई थी और प्रवेश-द्वार रंगा हुआ था। जब उसने घण्टी बजाई, तो दरवाज़ा खुल गया। इस दरवाज़े से अन्दर घुसने पर सामने की ओर पक्का चौक था, जिसके तीन तरफ बन्द दरवाज़ों वाली खिड़कियां थी, चौथी ओर एक दरवाज़ा था, जो सड़क की तरफ निकलता था। इसमें तीन सीढ़ियां थीं तथा टीन का सायबान था। चारों तरफ छाया थी और न्यूमैन को लगा जैसे वह किसी कन्वेंट में आ गया था। परिचारिका यह नहीं बता सकी कि मदाम द सान्त्रे घर में हैं या नहीं; इसके लिए न्यूमैन को अगले दरवाज़े पर जाकर पूछना होगा। न्यूमैन ने चौक पार किया। पोर्टिको की सीढ़ियों पर एक आदमी बैठा था, जिसके सिर पर टोपी नहीं थी। वह एक डण्डे से खेल रहा था। न्यूमैन को आता देखकर वह उठ खड़ा हुआ। जैसे ही न्यूमैन ने घण्टी बजाई, तो उस व्यक्ति ने अंग्रेज़ी में कहा कि थोड़ी देर न्यूमैन को प्रतीक्षा करनी होगी। नौकर, लगता है, इधर-उधर गए हुए हैं। वह खुद भी काफी देर से घण्टी बजा रहा है, लेकिन पता नहीं अन्दर से कोई जवाब क्यों नहीं मिल रहा। यह व्यक्ति युवावस्था मे था और उसकी अंग्रेज़ी बहुत अच्छी थी। मुस्कराहट से उसकी स्पष्टवादिता प्रकट होती थी। न्यूमैन ने बताया कि वह मदाम द सान्त्रे से मिलना चाहता है।

"मेरा ख्याल है," युवक ने कहा, "कि मेरी बहन घर में हैं। अगर आप मुझे अपना कार्ड देंगे, तो मैं उन तक पहुंचा दूंगा। अन्दर आइए।"

न्यूमैन मदाम द सान्त्रे से मिलने कुछ भावुक हृदय से आया था। उसमें, मैं नहीं कहूंगा कि उसके मन में किसीके प्रतिरोध का भाव था—किसीकी आलोचना करने या अपनी सफाई देने की इच्छा थी, जिनकी शायद आवश्यकता पड़ सकती थी, लेकिन न्यूमैन को देखने से लगता था कि वह कुछ सोच रहा है और सन्देह तथा जिज्ञासा की दृष्टि से सारी चीज़ें देख रहा है। उसने अपनी जेब से पोर्टिको में खड़े-खड़े एक कार्ड निकाला और अपने नाम के नीचे 'सान्फ्रांसिस्को' शब्द लिख दिया। यह कार्ड देते समय वह उस युवक को बड़ी सावधानी से देखता रहा। उसकी दृष्टि में मित्रता झलकती थी। उसे युवक का चेहरा-मोहरा पसन्द

आया था, जो मदाम द सान्त्रे से काफी मिलता-जुलता था।

जाहिर था कि यह युवक मदाम द सान्त्रे का भाई था। युवक ने भी न्यूमैन को पूरी तरह जल्दी-जल्दी देख डाला था। उसने कार्ड ले लिया और वह घर में अन्दर घुसने ही वाला था कि दरवाजे पर एक और व्यक्ति आ गया। यह व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक आयु का था और चाल-ढाल से अधिक सुसंस्कृत लगता था। उसने शाम का सूट पहन रखा था। नये व्यक्ति ने न्यूमैन को बड़ी कठोरता से देखा और न्यूमैन ने उसे देखा। पहले वाले युवक ने न्यूमैन का परिचय देते हुए कहा, "आप मदाम द सान्त्रे से मिलने आए हैं।" दूसरे व्यक्ति ने युवक के हाथ से कार्ड ले लिया और उसे जल्दी से पढ़ा और इसके बाद फिर न्यूमैन को सिर से पैर तक देखते हुए एक क्षण के लिए झिझका। फिर गम्भीरतापूर्वक लेकिन बड़ी सभ्यता से बोला, "मदाम द सान्त्रे तो घर पर नहीं हैं।"

कम अवस्था वाले युवक ने हाथ से कुछ संकेत किया और फिर न्यूमैन की तरफ मुड़कर कहा, "मुझे बड़ा अफसोस है, श्रीमन्।"

न्यूमैन ने सौहार्द्रपूर्ण ढंग से सिर हिलाया और यह प्रकट किया कि उसके मन में इस उत्तर से कोई मैल नहीं आया है और वापस लौट पड़ा। नौकर के बैठने की जगह पहुंचने के बाद न्यूमैन रुक गया। वे दोनों व्यक्ति अब भी पार्टिको में खड़े थे।

वृद्धा नौकरानी के दोबारा दिखलाई पड़ने पर न्यूमैन ने उससे पूछा, "कुत्ते के साथ जो सज्जन खड़े है वे कौन है?" उसने यह प्रश्न फ्रेंच मे किया।

कुछ-कुछ फ्रेंच उसे आ गई थी।

"वे मोंश्यू ल काम्त है।"

"और दूसरे सज्जन कौन है?"

"वे मोंश्यू ल मार्क्विस है।"

"मार्क्विस हैं?" क्रिस्टोफर ने अंग्रेज़ी मे कहा। सौभाग्य से बुढ़िया नौकरानी कुछ नहीं समझी। "ओह, तो वह आदमी बटलर नहीं है!"

चार

एक दिन सवेरे क्रिस्टोफर न्यूमैन के तैयार होने के पहले ही उनके होटल के कमरे में एक वृद्ध व्यक्ति आया, जिसके पीछे एक युवक था, जो चमकीले फ्रेम में लगे एक चित्र को साथ लिए था। पेरिस के व्यस्त जीवन में न्यूमैन, मो० नियोशे और उनकी गुणवती पुत्री को भूल ही गया था, लेकिन उनका इस प्रकार आना याद दिलाने का अच्छा माध्यम था।

"शायद आप तो यह सोचे बैठे होंगे कि अब मैं नहीं आऊंगा।" वृद्ध ने कहा और साथ ही बार-बार अभिवादन करते हुए क्षमायाचना की। "हमने आपसे कई दिन प्रतीक्षा कराई। शायद हमें आप कोस रहे होंगे और कह रहे होंगे कि हम अपने वायदे पर खरे नहीं उतरे। लेकिन लीजिए, अन्ततः मैं आ ही गया हूं और यह रहा खूबसूरत मेडोना का आपका चित्र। इसे कुर्सी पर रख दो, मेरे दोस्त, जिससे इसपर प्रकाश पड़े और मोंश्यू अच्छी तरह देखकर चित्र की प्रशंसा कर सकें।" और मो० नियोशे ने अपने साथी से यह बात कहते हुए उसे चित्र को उतारने में सहायता दी।

चित्र पर काफी मोटी वार्निश की तह थी और उसका फ्रेम भी बड़ा शानदार था, जो कम से कम एक फुट चौड़ा तो था ही। प्रभात के प्रकाश में चित्र काफी चमक रहा था और न्यूमैन को बड़ा शानदार और बहुमूल्य प्रतीत हो रहा था। उसे लगा कि उसने बड़ी अच्छी चीज़ खरीदी है और चित्र के मिलने से उसे गर्व अनुभव हुआ। वह बड़े सन्तोष से खड़ा-खड़ा चित्र को देखता रहा और तैयार होता रहा। मो० नियोशे ने मजदूर विदा कर दिया और हाथ मलते हुए चित्र के आसपास ही मुस्कराते हुए घूमते रहे।

"चित्र की 'फिनिश' बड़ी अच्छी आई है," उन्होंने उसपर हाथ फेरते हुए बुदबुदाकर कहा। "और यहां-वहां रंगों का प्रयोग बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। शायद आप भी यह देख रहे होंगे। मैं जब रास्ते में चित्र लेकर आ रहा था, तो कई लोगों ने इसे बड़े गौर से देखा। रंगों का गहरा और हल्कापन भी बड़ा मौजू है। यही चित्रकारिता की तारीफ है। मैं इसलिए प्रशंसा नहीं कर रहा कि मैं उसका पिता हूं, बल्कि एक सुरुचिसम्पन्न व्यक्ति दूसरे सुरुचिवाले व्यक्ति से बात कर रहा है। मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आपके पास एक बड़ी ही अनु-

पम कलाकृति आई है । इस तरह का चित्र बनाना बहुत ही कठिन कार्य है और इससे भी अधिक कठिन उस चित्र को बेच देना । अगर हमारे पास पर्याप्त धन होता, तो शायद हम इस चित्र को अपने पास ही रखते । मैं सचमुच यह कहना चाहता हूं,"—और मो० नियोशे ने अर्थभरी हंसी हंसते हुए कहा, "मैं सचमुच ही यह कहना चाहता हूं कि मुझे आपसे ईर्ष्या हो रही है," फिर कुछ देर बाद उन्होंने कहा, "हमने आपसे बिना पूछे ही इस चित्र को फ्रेम में जड़वा दिया है । इससे चित्र का मूल्य कुछ बढ़ गया है । लेकिन फ्रेम में जड़वा देने से आप जैसे नाज़ुक-मिज़ाज व्यक्ति को बाज़ार में जाकर चित्र को फ्रेम में जड़वाने की जहमत नहीं उठानी पड़ेगी । फ्रेम के लिए सौदेबाज़ी करने मे दुकानों पर आप नाहक परेशान होते ।" मो० नियोशे बड़ी ही उलझी भाषा में बोल रहे थे । उसे ज्यों का त्यों यहां लिख सकना सम्भव नहीं है। किसी समय उनको अंग्रेजी का कुछ ज्ञान था और उनकी अंग्रेजी में लन्दन का कॉकनी उच्चारण भी मिश्रित था। लेकिन अंग्रेज़ी का अभ्यास न होने के कारण उनकी भाषा काफी टूटी-फूटी थी और शब्दावली भी बड़ी दोषपूर्ण थी। इसलिए उन्होंने बीच-बीच मे बड़े-बड़े फ्रेंच वाक्यों का उदारता से प्रयोग किया था, और अपनी अजीब शैली से फ्रेंच शब्दों को अंग्रेज़ी में 'फिट' करने का यत्न किया था । कुछ फ्रेंच कहावतें तो उन्होंने शाब्दिक रूप से अंग्रेज़ी में अनूदित कर दी थी। अगर उसी रूप में मो० नियोशे के वाक्यों को रख दिया जाए, तो उसका एक शब्द भी पाठक की समझ में आना कठिन है, इसलिए मैंने जान-बूझकर उनके भाव सम्पादित करके अपने शब्दों में प्रकट किए हैं। न्यूमैन भी उस पूरे कथन का आधा भाग ही समझ सका था, लेकिन उसे यह बातचीत बड़ी दिलचस्प लगी। न्यूमैन बड़े दृढ़ स्वभाव का व्यक्ति था और उसे यह पसन्द नहीं आता था कि कोई अपने सारे दु:खों और कष्टों को प्रारब्ध पर थोप दे और वृद्ध मो० नियोशे यही कह रहे थे। न्यूमैन की यकायक यह इच्छा होती थी कि अपनी कमाई का कुछ अंश देकर मो० नियोशे की गरीबी बिलकुल दूर कर दे। मदामा जेल नोएमी ने अपने पिता को इस अवसर के लिए काफी सिखा-पढ़ाकर भेजा था ; और वे प्रकम्पित उत्सुकता से नये अवसरों की तलाश में थे।

"इस फ्रेम-समेत मुझे आपको कितना देना है ?" न्यूमैन ने पूछा ।

"कुल मिलाकर तीन हज़ार फ्रांक," वृद्ध ने मुस्कराते हुए कहा और अपने दोनों हाथ विनयशीलता प्रकट करने के लिए जोड़ लिए ।

"क्या आप रसीद लाए है ?"

"जी हां, मै रसीद लाया हू," मो० नियोशे ने कहा। "मैंने रसीद पहले ही तैयार कर ली थी, इसलिए कि अगर मो० चित्र का मूल्य चुकाना चाहें, तो मैं तुरन्त रसीद दे सकू।" और उन्होंने अपनी पॉकेटबुक से एक कागज़ निकालकर चित्र के ग्राहक के सामने रख दिया। यह रसीद बड़ी अजीब हस्तलिपि में बारीक अक्षरों और चुनी इबारत मे लिखी हुई थी।

न्यूमैन ने रकम गिनकर सामने रख दी और मो० नियोशे एक-एक करके बड़े चाव से सिक्को को चमड़े की थैली में डालते गए।

"और आपकी पुत्री का क्या हाल है ?" न्यूमैन ने पूछा। "मै तो उनसे बहुत प्रभावित हूं।"

"बहुत प्रभावित है ? मोंश्यू बहुत अच्छे है। मोंश्यू मेरी पुत्री की सुन्दरता की सराहना करते है !"

"बेशक आपकी पुत्री बहुत सुन्दर है।"

"जी हा, दुर्भाग्य से वह बहुत सुन्दर है।"

"उनके सुन्दर होने से क्या नुकसान है ?"

मो० नियोशे ने जमीन पर बिछे कालीन पर एक जगह अपनी निगाह गड़ा ली और सिर हिलाने लगे। इसके बाद न्यूमैन की तरफ देखते हुए उनकी आंखों में कुछ चमक आ गई और वे बड़ी हो गई, "मोंश्यू जानते हैं कि पेरिस कैसी जगह है। सुन्दर लडकियों के लिए यह शहर बड़ा खतरनाक है, और खास तौर पर जब किसी सुन्दर लड़की के पास धन न हो।"

"आह, लेकिन आपकी पुत्री के साथ तो यह बात नहीं है, अब तो वह अमीर हो गई है।"

"ठीक है, छः महीने के लिए हम अमीर हो गए हैं, लेकिन अगर मेरी पुत्री सुन्दर न होकर साधारण लड़की होती, तो मैं शायद चैन से सो सकता था।"

"क्या आप युवकों से परेशान हैं ?"

"जवानों और बूढ़ों, दोनों से।"

"उनकी शादी कर देनी चाहिए।"

"आह, मोंश्यू, पति मुफ्त में तो नहीं मिल सकता। वर्तमान स्थिति में मेरे पास शादी करने के लिए केवल लड़की ही है, साथ में देने के लिए कुछ नहीं। लेकिन

कोइ भा युवक इतनी गरीब लड़की से शादी करने के लिए राजी नहीं होता।"

"ओह," न्यूमैन ने कहा, "क्या आपकी पुत्री की प्रतिभा स्वयं दहेज़ नहीं है ?"

"आह श्रीमन्, पहले उस प्रतिभा से धन आना चाहिए।" और मो० नियोशे ने अपने हाथ की थैली को हटाने के पहले कोमलता से थपथपाया।

"और इस तरह चित्र रोज-रोज नहीं बिका करते है।"

"आपके यहां के युवक बड़े गन्दे हैं," न्यूमैन ने कहा, "मैं तो इतना ही कह सकता हूं। उन्हें तो चाहिए कि वे आपकी पुत्री को पाकर अपने-आपको धन्य समझें और उसकी कीमत चुकाएं न कि खुद दहेज मागें।"

"मोंश्यू यह आदर्श अच्छे हैं लेकिन आप क्या करेंगे ? पूरा समाज तो यह बात नहीं मानता। जब कोई शादी करने निकलता है, तो वह देखता है कि लड़की के घर में क्या कुछ है।"

· "आपको अपनी पुत्री के विवाह के लिए लगभग कितनी रकम दहेज़ मे देनी होगी ?"

मो० नियोशे कुछ देर देखते रहे और सोचते रहे कि वह आगे क्या कहें; लेकिन फिर वे जल्दी ही संभल गए और बोले कि मैं एक बहुत अच्छे लड़के को जानता हू जो किसी बीमा कम्पनी में नौकर है और अगर उसे पन्द्रह हज़ार फ्रांक दहेज़ में मिल जाएं, तो वह शादी कर लेगा।"

"अच्छा, तो आप अपनी पुत्री से कहिए कि वह मेरे लिए छः चित्र और बना दे और मैं उसके दहेज़ की रकम दे दूगा।"

"छः चित्र—उसका दहेज़ ! मोंश्यू सोच-समझकर तो बोल रहे है न ?"

"अगर आपकी पुत्री मेरे लिए इस मेडोना जैसी छः या आठ अन्य चित्रों की प्रतियां भी लूव्र के कला-संग्रहालय मे रखे चित्रों में से बना देती है, तो मैं उसे दहेज़ की रकम दे दूंगा," न्यूमैन ने कहा।

बेचारे मो० नियोशे का एक क्षण के लिए बोल बन्द हो गया। वे आश्चर्य और कृतज्ञता के भाव में डूब गए थे और इसके बाद उन्होंने न्यूमैन का हाथ अपने दोनों हाथों की दस उंगलियों से दबाकर पकड़ लिया, और वे आंसूभरी आंखों से न्यूमैन की तरफ देखते रहे। "बिलकुल इतने ही सुन्दर चित्र ? वे चित्र हजार गुने खूबसूरत होंगे, बड़े ही अनोखे और शानदार होंगे। आह, अगर मैं भी चित्र-कारिता जानता होता, तो कितना अच्छा होता ! मैं भी अपनी पुत्री की सहायता

कर सकता था। मै आपको किस मुह से धन्यवाद दू !" और उन्होंने अपने माथे को दोनों हाथों से दबा लिया। ऐसा लगा कि वे कुछ सोच रहे हैं।

"ओह, आपने मेरे प्रति काफी कृतज्ञता प्रकट कर दी है," न्यूमैन ने कहा।

"मैं अपनी तरफ से यह कहना चाहता हूं," मो० नियोशे ने कहा, "मैं आपसे फ्रेंच सिखाने का कुछ भी नहीं लूंगा। मैं अपनी कृतज्ञता केवल इसी ढंग से प्रकट कर सकता हूं।"

"ओह, फ्रेंच की शिक्षा ? इसके बारे में तो मैं बिलकुल भूल ही गया था। आपकी तो अंग्रेज़ी सुनकर भी," न्यूमैन ने हंसते हुए कहा, "फ्रेंच की शिक्षा ही मिल जाती है।"

"आह, मैं निश्चय ही अंग्रेज़ी नहीं पढ़ाता," मो० नियोशे ने कहा, "लेकिन फ्रेंच पढ़ाने के लिए प्रस्तुत हूं।"

"चूंकि आप यहां इस वक्त मौजूद हैं," न्यूमैन ने कहा, "हम यह काम अभी ही शुरू कर देगें। यह मौका भी बड़ा अच्छा है। मैं कॉफी पीने जा रहा हूं; आप प्रतिदिन साढ़े नौ बजे सवेरे आ जाया करें और कॉफी मेरे साथ ही पिया करें।"

"मोंश्यू मुझे काफी भी पिलाएंगे ?" मो० नियोशे ने ज़ोर से कहा, "ऐसा लगता है कि मेरे अच्छे दिन अब सचमुच वापस लौट रहे हैं।"

"आइए," न्यूमैन ने कहा, "हम लोग शुरू कर दें। कॉफी भी खूब गरम है। फ्रेंच में आप यह बात किस तरह कहेंगे ?"

इसके बाद प्रतिदिन तीन सप्ताह तक मो० नियोशे फ्रेंच पढ़ाने न्यूमैन के पास आते रहे और अपने विशिष्ट ढंग से अभिवादन करते हुए माफी मांगते हुए ससम्मान न्यूमैन के साथ कॉफी पीते रहे। मैं नहीं जानता कि हमारे मित्र नें कितनी फ्रेंच सीखी, लेकिन जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा कि अगर इस प्रयत्न से उन्हें कुछ लाभ नहीं हुआ, तो कोई नुकसान भी नहीं हुआ। इससे उनका मनोरंजन होता था। न्यूमैन में एक विचित्र आदत यह थी कि वह व्याकरण-हीन अशुद्ध भाषा में होनेवाले वार्तालाप में बड़ा आनन्द लेता था। बहुधा सांझ के धुंधलके में पश्चिमी अमरीका के छोटे-छोटे कस्बों में रेल-लाइन के किनारे की बाड़ पर बैठकर वह इस तरह की भाषा में आवारा लड़कों और धन कमाने के लिए निकले अपरिचित अनजान लोगों से बातचीत किया करता था। वह जहां भी जाता, उस जगह के रहनेवालों से किस तरह बातचीत करनी चाहिए,

उसके बारे में उसके अपने अलग विचार थे। उसे अन्य लोगों ने सलाह दी थी और इस सलाह की उसके अनुभव ने पुष्टि की थी कि परदेस में घूमते समय ग्रामीण जीवन तथा वहां के लोगों के रहन-सहन को अच्छी तरह देखना चाहिए और यह बड़ी अच्छी बात है। मो० नियोशे में फ्रांसीसियों के सभी बुनियादी गुण थे। भले ही उनके जीवन में कोई जानने लायक विशेष बात न घटी हो, लेकिन वे पेरिस की सभ्यता के ज्वलन्त दृष्टांत थे। न्यूमैन बड़ी जिज्ञासु-वृत्ति का व्यावहारिक व्यक्ति था, इसलिए मो० नियोशे से बातचीत करके न्यूमैन का बड़ा मनोरंजन होता था और वह व्यावहारिक जीवन की अनेक समस्याओं के बारे में उनसे प्रश्न किया करता था। न्यूमैन को आंकड़े जानने का बड़ा शौक था। वह यह भी जानना चाहता था कि फ्रांस में व्यापारिक काम-काज किस तरह होता है। उसे यह जानकर सन्तोष होता था कि टैक्स किस तरह चुकाए जाते हैं ; मुनाफा किस तरह कमाया जाता है ; लोग व्यापार किस तरह करते हैं और जीवन का संग्राम किस तरह लड़ा जाता है। मो० नियोशे दिवालिया पूंजीपति थे, लेकिन उन्हें इन सबका ज्ञान था। वे इन सूचनाओं को एकत्रित करके लाते और बड़े गर्व से इन्हें न्यूमैन को बताया करते। यह ज्ञान देते समय वे शुद्धतम भाषा का प्रयोग करते और इस समय उनकी उंगली और अंगूठे के बीच सुंघनी हुआ करती। न्यूमैन धनवान था, लेकिन इसके अलावा मो० नियोशे फ्रांसीसी थे और उन्हें बातें करना बड़ा प्रिय था और वर्तमान गिरी हालत में भी उनकी इस आदत में कोई कमी नहीं हुई थी। एक फ्रांसीसी की हैसियत से वे हर चीज़ को स्पष्ट रूप से बता सकते थे और एक फ्रांसीसी की ही तरह जब किसी बात के उनके ज्ञान में कोई त्रुटि होती, तो वे बड़ी सरलता से उसकी जगह इधर-उधर की बातें बनाकर और चुटकुले सुनाकर पूरी कर देते। इस दिवालिया पूंजीपति से जब न्यूमैन प्रश्न पूछता, तो उसे बड़ी खुशी होती और मो० नियोशे इधर-उधर से जोड़-बटोरकर सूचनाएं संगृहीत करते, अपनी छोटी चिकनी पॉकेटबुक में उन्हें नोट कर लेते और साथ ही अपने उदार मित्र के मनोरजन के लिए सुनाने को तरह-तरह की अन्य घटनाएं भी लिख लेते। वे बुक-स्टालों पर जाते और वहां पुरानी जन्त्रियां देखते। इसके अलावा वे काफे जाते, जहां ज़्यादा संख्या में समाचारपत्र पढ़ने को मिल सकते। इसके साथ ही वे वहां भोजन के बाद उन

समाचारपत्रों को पढ़ते तथा इधर-उधर के चुटकुले लिख लेते। कोई असम्भव घटना होती, या विचित्र सयोग होता, तो उसकी कथा भी नोट कर लेते। दूसरे दिन सवेरे वे बड़ी गम्भीरता से न्यूमैन को सुनाते कि बोर्दो में अभी हाल ही में पांच वर्ष का एक बच्चा मरा है, जिसका मस्तिष्क साठ औंस का था, बिलकुल नैपोलियन या वाशिंगटन के मस्तिष्क के बराबर। या सुनाते कि रू द क्लिशी की एक सुअर का मांस बेचनेवाली मदाम पी को अपने पुराने पेटीकोट में तीन सौ साठ फ्रांक के नोट मिले, जिन्हे वह पांच वर्ष पहले रखकर भूल गई थी और समझ रही थी कि वह रकम खो गई। वे अपने हर शब्द को बहुत स्पष्ट रूप से उच्चारित करते और न्यूमैन बार-बार उनसे कहता कि अन्य लोगों के मुंह से निकली फ्रेंच उसकी समझ नहीं आती, लेकिन मो० नियोशे जो बोलते हैं, उसका उच्चारण बड़े उत्कृष्ट ढंग का होता है। इसके बाद मो० नियोशे का उच्चारण और चोखा हो उठता ; वे कहते कि मैं आपको 'लामार्तिन' से कुछ अंश पढ़कर सुनाता हूं और साथ ही यह भी सलाह देते कि मैं अपनी तुच्छ योग्यता के अनुसार आपको फ्रेंच भाषा सिखाने का यत्न कर रहा हू, लेकिन मोंश्यू अगर सचमुच फ्रेंच उच्चारण का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, तो उन्हें 'थियेटर फ्रेंकाई' जाना चाहिए।

न्यूमैन फ्रांसीसी किफायतशारी में काफी दिलचस्पी लेता था और पेरिस में लोगों की मितव्ययिता का प्रशसक था। हालांकि वह स्वयं बहुत अधिक बड़े सौदों के पक्ष में था और सुविधा के लिए उसे इस बात की आवश्यकता महसूस होती थी कि जो काम वह करे उसमें काफी बडी रकम का जोखिम हो और अगर वह काम हो जाए तो उसे काफी बड़ा मुनाफा हो। उसे इस बात में भी काफी आनन्द मिलता था कि बहुत जोड़-बाकी करके कमीशन के रूप में और श्रम तथा मुनाफे के सूक्ष्म उप-विभाजन द्वारा कितना बड़ा लाभ होता है। न्यूमैन मो० नियोशे से उनके जीवन के बारे मे प्रश्न करता और जब वे बताते कि वे किस तरह किफायतशारी से खर्च करते हैं, तो न्यूमैन का हृदय दया और उनके प्रति सहानुभूति से भर आता। वृद्ध फ्रांसीसी सज्जन न्यूमैन को बताते कि किस तरह इस समय उन्होंने अपना और अपनी पुत्री का पन्द्रह सू प्रतिदिन पर काम करके दो प्राणियों का पेट भरा था। अभी हाल ही की आय से उनका हाथ कुछ खुल गया है। लेकिन उन्हें अब भी अपनी जेब पर काफी नियंत्रण रखना पड़ता है। इसके बाद फिर वे गहरी सांस लेकर कहने कि मदामाजेल नोएमी किफायत से

खर्च करने में उनके साथ इतना सहयोग नहीं करती, जितना वांछनीय है।

"लेकिन आप क्या कीजिएगा ?" वृद्ध दार्शनिक ढंग से पूछता। "वह लड़की है, तरुणी है, सुन्दर है और उसे नये-नये कपड़ों, नये दस्तानों की जरूरत पड़ती है और लूव्र के वैभवपूर्ण वातावरण में वह गन्दे कपड़े पहन भी तो नहीं सकती।"

"लेकिन अब तो आपकी लड़की अपने वस्त्र खरीदने के लिए काफी कमा लेती है," न्यूमैन कहता।

मो० नियोशे उसकी तरफ कांपती और अनिश्चित दृष्टि से देखते। वे शायद यह कहना अधिक पसन्द करते कि इसमें शक नहीं कि मेरी पुत्री की प्रतिभा को लोग समझने लगे है और उसके बनाए टेड़े-सोधे चित्र बिकने लगे है। लेकिन किसी उदार अपरिचित व्यक्ति के विश्वास का इस तरह दुरुपयोग करना बहुत बुरा है। विशेष रूप से उस व्यक्ति के विश्वास का, जिसने बिना किसी सन्देह या शका के उसे अपने बराबर के सामाजिक अधिकार दे रखे हैं। लेकिन मो० नियोशे ने समझौता कर लिया था। वे कहते कि मदामाजेल नोएमी द्वारा की जानेवाली महान कलाकारो के चित्रों की प्रतिलिपिया बड़ी आकर्षक होती है, लेकिन इन प्रतिलिपियों के कलात्मक मूल्य की तुलना मे जो दाम उनकी पुत्री मांगती है, वह ग्राहकों को दूर भगा देते हैं। "बेचारी !" मो० नियोशे गहरी सांस लेकर कहते, "उसका काम इतना बढ़िया होता है कि देखकर दया आती है। यह बात उसके हित में होगी कि वह इतने अच्छे चित्र न बनाएं।"

"लेकिन मदामाजेल नोएमी अगर अपनी कला के प्रति इतनी निष्ठा रखती है, तो," एक बार न्यूमैन ने कहा, "तो आपको ऐसी आशंकाएं क्यों करनी चाहिए, जो आपने एक दिन प्रकट की थीं ?"

मो० नियोशे सोचते रहे। उनकी स्थिति में कुछ विरोधाभास था; इससे वे बेचैन हो उठते थे। हालाकि वे उस मुर्गी को नहीं मार डालना चाहते थे, जो सोने के अण्डे देती थी—लेकिन न्यूमैन के अपने ऊपर दयालुतापूर्ण विश्वास के कारण वे यह अनुभव करते कि अपनी सारी दिक्कतें और कठिनाइयां अपने मित्र को बता दें। "आह, वह एक बड़ी कलाकार है, इसमें सन्देह नहीं," वे कहते, "लेकिन आपको सच बात बतला दूं कि वह फ्रांसीसी युवती है। मुझे यह कहते खेद है," एक क्षण बाद अपना सिर हिलाते और अपने हृदय की हानिरहित कटुता प्रकट करते

हुए कहते, "कि वह अपनी मा की ही तरह है।"

"क्या आप अपनी पत्नी से प्रसन्न नहीं थे ?" न्यूमैन ने पूछा।

मो० नियोशे ने पीछे की तरफ अपने सिर को कोई आधी दर्जन बार झटका दिया। "वह मुझे पापमुक्त कराने आई थी, मोंश्यू।"

"क्या आपकी पत्नी ने आपको धोखा दिया ?"

"मेरे ही घर में मुझे ही निरन्तर वर्षों तक बेवकूफ बनाया जाता रहा था और मैं उसके प्रति बड़ा आसक्त था, लेकिन आखिरकार एक दिन मुझे सब कुछ पता चल गया। मैंने अपने जीवन में एक ही बार ऐसा रूप धारण किया जिसे देखकर मुझसे कोई डर सकता था। यह बस उसी समय हुआ था। जो भी हो, अब मैं उस बात को याद नहीं करना चाहता। मैं उससे प्रेम करता था···आपको नहीं बता सकता कितना, लेकिन वह बड़ी दुश्चरित्रा थी।"

"क्या वे ज़िन्दा नहीं हैं ?"

"उसने जैसा किया, वैसा भुगत लिया।"

"तो आपकी पुत्री पर उसकी मां का प्रभाव पड़ने की आशंका तो नहीं है?" न्यूमैन ने उत्साहित होकर कहा।

"वह अपनी जूतियों से ज्यादा अपनी पुत्री की चिन्ता नहीं करती थी। लेकिन नोएमी पर उसका बुरा असर पड़ने की सम्भावना भी नहीं थी। वह स्वयं काफी सशक्त है, वह मुझसे भी ज्यादा दृढ़निश्चयी है।"

"क्या, वह आपकी आज्ञा नहीं मानती क्या ?"

"उसके आज्ञा मानने का सवाल ही नहीं है, क्योंकि मैं उसे कोई आज्ञा ही नहीं देता। क्या फायदा ? ऐसा करने से वह झुंझलाएगी और मुझसे लड़ेगी, बकझक करेगी। वह बहुत चतुर है, अपनी मां की तरह ही। वह अपना समय व्यर्थ की बातों में बिलकुल नष्ट नही करेगी। जब वह छोटी थी, और मैं काफी कमाता था, तो वह सर्वोत्तम प्रोफेसरों से चित्रकला सीखती थी और उसके अध्यापकों ने मुझे विश्वास दिलाया था कि मेरी पुत्री में प्रतिभा है। मुझे उनकी बातें सुनकर बड़ी खुशी होती थी और जब मैं लोगों से मिलने जाता, तो अपनी लड़की के बनाए चित्र एक बैग में साथ रख ले जाता और उन्हें लोगों को दिखलाता। मुझे याद है कि एक बार किसी महिला ने समझ लिया था कि मैं इन चित्रों को बेचना चाहता हूं और इस बात का मैंने बहुत बुरा माना था। हम नहीं जानते थे कि हमें ऐसे दिन देखने

पड़ेंगे। और तब मेरा दुर्भाग्य आ टपका। मदाम नियोशे से झगड़ा हो गया। नोएमी को बीस फ्रांक प्रति पाठ की चित्रकला की शिक्षा दिलाना मेरे लिए सम्भव न रहा। लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता गया और वह बड़ी होती गई, त्यों-त्यों मैंने अनुभव किया कि यह ज़रूरी है कि वह कुछ ऐसा काम करे, जिससे हम दोनों का पेट भर सके। और तब उसने सोचा कि वह चित्र बनाएगी। हमारे पड़ोस के कुछ मित्रों ने इस विचार की खिल्ली उड़ाई ; उन्होंने सुझाव दिया कि मेरी पुत्री स्त्रियों की टोपियां बनाए, किसी दुकान में नौकरी कर ले और अगर वह और ज़्यादा महत्त्वाकांक्षी है, तो किसी बड़े घराने में वृद्ध महिला के साथ काम करने के लिए अखबारों में विज्ञापन निकलवा दे। उसने विज्ञापन भी निकलवाए और एक वृद्धा ने उसे पत्र लिखकर अपने पास मुलाकात के लिए बुलाया। वृद्धा ने उसे पसन्द किया और भोजन तथा वस्त्र और रहने की सुविधा के अलावा छः सौ फ्रांक प्रतिवर्ष देने का प्रस्ताव किया। लेकिन नोएमी ने वहां देखा कि वह वृद्धा अपना अधिकांश समय कुर्सी पर बैठे-बैठे बिताती है और उसके पास दो ही व्यक्ति आते हैं। एक तो पादरी और दूसरा उसका भतीजा। पादरी बहुत कठोर था तथा उस वृद्धा के भतीजे की आयु पचास वर्ष की थी। उसकी नाक टेढ़ी थी और वह किसी सरकारी दफ्तर में दो हज़ार फ्रांक का क्लर्क था। नोएमी ने वृद्धा की नौकरी छोड़ दी और रंगों का बक्सा, चित्र अंकित करने के लिए 'कैनवेस' और नये कपड़े खरीदे और लूव्र संग्रहालय में बैठने लगी। इस संग्रहालय में कभी किसी जगह, कभी किसी जगह बैठकर उसने दो वर्ष गुज़ार दिए हैं। यह तो मैं नहीं कह सकता कि वहां काम करने से हम लखपती हो गए हैं, लेकिन नोएमी मुझे समझाती है कि रोम एक दिन में बनकर तैयार नही हो गया था। वह कहती है कि मैं बहुत प्रगति कर रही हूं और अच्छा यही होगा कि उससे छेड़छाड़ न की जाए और वह जो कर रही है, उसे करने दूं। उसकी प्रतिभा के विषय में बिना कोई प्रतिकूल टीका किए तथ्य यह है कि वह अपने-आपको जिन्दा दफन नहीं कर देना चाहती है। उसे घूमने का शौक है, दुनिया देखने का शौक है और अपने रूप के प्रदर्शन का भी शौक है। वह अपने-आपसे कहती है कि मैं अंधेरे में काम नही कर सकती। वह देखने में जैसी लगती है, उसको दृष्टि में रखते हुए उसका यह सोचना स्वाभाविक है। केवल मै ही हूं, जो बिना चिन्ता किए नहीं रह पाता और हमेशा मन ही मन कांपता रहता हू। सोचता रहता हूं कि वह वहां दिन-दिन-भर अकेली रहती है, जहां सैकड़ों अजनबी आते-जाते रहते हैं। मै हर वक्त उसकी

बगल में बैठा नहीं रह सकता। मैं उसे सुबह जाकर छोड़ आता हूं और फिर शाम को उसे वापस ले आता हूं। लेकिन इस बीच वह मुझे एक क्षण भी अपने पास रहने नहीं देती। वह कहती है कि मेरी उपस्थिति उसके हाथ-पाव फुला देती है।-जैसे मैं उसके बिना दिन-भर इधर-उधर घूमता रहता हूं, तो मेरे हाथ-पांव नहीं फूलते। आह, अगर कहीं उसे कुछ हो गया, तो!" यह कहते हुए मो० नियोशे के दोनों हाथों की मुट्ठियां बंध जातीं और वे अपने सिर को पीछे की तरफ झटका देने लगते।

"ओह, मेरा ख्याल है कि कुछ नहीं होगा," न्यूमैन ने कहा।

"मेरा तो ख्याल है कि मुझे उसकी गोली मारकर हत्या कर देनी चाहिए।" वृद्ध ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

"ओह, हम उसका विवाह कर देंगे," न्यूमैन ने कहा, "चूंकि अब मैं जान गया हूं कि आप किस तरह काम चला रहे है, इसलिए मैं कल ही लूव्र जाऊंगा और नोएमी को बता दूंगा कि मैं किन-किन चित्रो की प्रतिलिपियां चाहता हू।"

मो० नियोशे न्यूमैन के नाम अपनी पुत्री का एक सन्देश लाए, जिसमें उसने चित्र बनाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था और कहा था कि मैं आपके आदेशों के पालन के लिए तत्पर हूं तथा इस बात का प्रयत्न करूंगी कि जो कुछ आपने कहा है, उसका भलीभांति पालन करूं। नोएमी ने इस बात पर भी खेद प्रकट किया था कि सामाजिक रीति-रिवाजों के कारण उसके लिए यह सम्भव नही है कि वह व्यक्तिगत रूप से आकर न्यूमैन को धन्यवाद दे सके। इस बातचीत के बाद दूसरे दिन सवेरे न्यूमैन ने मदामाजेल नोएमी से लूव्र में भेंट करने का फैसला किया। मो० नियोशे उस दिन बहुत चिंतित नज़र आ रहे थे और उन्होंने कोई चुटकुला नहीं सुनाया। वे बार-बार सुंघनी सूंघ रहे थे और अपने हृष्टपुष्ट शिष्य को अनुरोधभरी तिरछी दृष्टि से बार-बार देख रहे थे। आखिरकार जब वह चलने को हुआ तो वृद्ध एक क्षण के लिए उठकर खड़ा हो गया और तब उसने अपना हैट कैलिको के रूमाल से साफ किया और अपनी पीली और छोटी आंखों से अजीब ढग से न्यूमैन को देखने लगा।

"क्या बात है?" न्यूमैन ने पूछा।

"आप एक पिता के हृदय का ध्यान कर मुझे क्षमा करेंगे।" मो० नियोशे ने कहा, "आपपर मेरा अगाध विश्वास है, लेकिन फिर भी मैं आपको एक चेतावनी दिए बिना नहीं रह सकता। आखिर आप भी पुरुष हैं, युवा हैं और स्वतंत्र हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप अबोध मदामाजेल नियोशे के सम्मान की रक्षा कीजिएगा।"

न्यूमैन सोचने लगा कि अब यह वृद्ध क्या कहेगा, और उस बात की कल्पना कर वह ज़ोरों से हंस पड़ा। वह यह कहना चाहता था कि उसकी अपनी अबोधता ही ज्यादा प्रकट हो जाती है, लेकिन उसने केवल इतना ही कहा कि मैं आपकी पुत्री के सम्मान का पूरी तरह ध्यान रखूंगा। जब न्यूमैन लूव्र पहुचा, तो सालों कारे के कोच पर मदामाजेल नोएमी बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह रोज़ की तरह काम के वक्त पहने जानेवाले कपड़े नहीं पहने थी, बल्कि अपना बोनेट लगाए थी तथा दस्ताने और छाता हाथ में लिए थी। ये सभी चीज़ें उसकी सुरुचिसम्पन्नता की परिचायक थी, जिनसे नोएमी और अधिक सुन्दर, चुस्त प्रतीत होती थी। नोएमी ने न्यूमैन को बड़े सम्मान से अभिवादन किया और चुने हुए शब्दों में न्यूमैन को उसकी उदारता के लिए धन्यवाद दिया। एक आकर्षक तरुणी को वहां खड़े होकर उससे धन्यवाद ग्रहण करते हुए न्यूमैन को बड़ा अटपटा-सा लग रहा था और वह यह सोचकर बड़ी बेचैनी अनुभव कर रहा था कि यह सुन्दर युवती, जिसकी चाल-ढाल और व्यवहार इतना आकर्षक है, उसकी वेतनभोगी कर्मचारी है। न्यूमैन ने अपने फ्रेंच के ज्ञान के अनुसार नोएमी को आश्वस्त किया और कहा कि जो काम उसने दिया है, उसकी वह कोई चर्चा न करे। बल्कि वह नोएमी द्वारा की जानेवाली सेवाओं के लिए उसका बड़ा कृतज्ञ है।

"आपकी जब इच्छा हो, तब," मदामाजेल नोएमी ने कहा, "हम लोग वे चित्र देखने चल पड़ेंगे, जिनकी मुझे प्रति तैयार करनी है।"

वे धीरे-धीरे कक्ष में चारों तरफ घूमते रहे। इसके बाद आधे घण्टे तक अन्य कक्षों में घूमते रहे। मदामाजेल नोएमी को लग रहा था कि घूमने में बड़ा आनन्द आ रहा था और वह नहीं चाहती थी कि इतने अच्छे ग्राहक से उसकी मुलाकात जल्दी समाप्त हो जाए। न्यूमैन ने देखा कि अपनी खुशहाली पर नोएमी प्रसन्न है। पहली मुलाकात के दिन उसने अपने पतले होंठों से बड़ी बेपरवाही के साथ जिस तरह अपने पिता से बातचीत की थी, उसकी जगह बड़ी शिष्टता और स्नेह-भरे स्वर ने ले ली थी।

"आप किस तरह के चित्रों को पसन्द करेंगे ?" उसने पूछा। "पवित्र सन्तों के, या ऐसे जिनमें दावतें वगैरह अंकित हैं ?"

"ओह, हर तरह का एक-एक चित्र हो," न्यूमैन ने कहा। "लेकिन मैं ऐसे चित्र चाहता हूं, जो प्रसन्नतापूर्ण और आह्लादकारी हों।"

"आह्लादकारी हों ? लेकिन इस पुराने लूव्र कला-संग्रहालय में कुछ भी आह्लादकारी नहीं है। फिर भी चलिए, हम लोग देखते हैं कि यहां क्या हो सकता है। आज तो आप जादू जैसी फ्रेंच बोल रहे हैं। मेरे पिता ने वाक़ई कमाल कर दिखाया है।"

"ओह, मैं बड़ा अयोग्य शिष्य हूं," न्यूमैन ने कहा। "अब कोई नई भाषा सीखने के लिए बूढ़ा भी तो हो गया हूं।"

"बहुत बूढ़े हो गए हैं ? क्या बात कह रहे हैं !" मदामाजेल नोएमी ने तेज़ हंसी हंसते हुए कहा। "आप बिलकुल नवयुवक मालूम पड़ते हैं और हां, आपको मेरे पिता कैसे लगे ?"

"वे बड़े अच्छे वृद्ध सज्जन हैं। मेरी गलतियों पर कभी नहीं हंसते हैं।"

"मेरे पापा हमेशा गलतियां माफ कर देते हैं," मदामाजेल नोएमी ने कहा, "और वे बहुत ईमानदार हैं। उनकी ईमानदारी आदर्श है। आप उनका लाखों का विश्वास कर सकते हैं।"

"क्या तुम हमेशा उनकी आज्ञा मानती हो ?" न्यूमैन ने पूछा।

"उनकी आज्ञा मानती हूं ?"

"क्या तुम वही करती हो, जो वे तुमसे कहते हैं ?"

नोएमी रुक गई और न्यूमैन की तरफ देखने लगी। उसके दोनों गाल कुछ लाल हो गए और अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से देखते हुए कहा, जिनसे विशुद्ध फ्रांसीसी सौंदर्य झलका पड़ता था। उनमें कुछ शोखी भी थी। "आप मुझसे यह सवाल क्यों कर रहे हैं ?" उसने पूछा।

"क्योंकि मैं जानना चाहता हूं।"

"क्या आप मुझे बुरी लड़की समझते है ?" और फिर वह एक अनोखे ढंग से मुस्करा दी।

न्यूमैन एक क्षण तक उसकी ओर देखता रहा। उसने देखा कि वह काफी सुन्दर है, लेकिन उसके सौंदर्य से न्यूमैन की आंखें चौंधियां नही गईं। उसे याद आया कि मो० नियोशे ने अपनी पुत्री की अबोधता की बड़ी दुहाई दी थी और जब नोएमी और न्यूमैन की आंखें मिलीं, तो वह हंस दिया। नोएमी के चेहरे पर तरुणाई और वयस्कता का अनोखा मिश्रण था और उसकी बांकी भवों के नीचे जो मुस्कराहट थी, उसमें संदिग्ध इरादों की दुनिया छिपी हुई थी। वह काफी खूब-

सूरत थी, इसमें शक नहीं, और इससे उसके पिता के हाथ-पाव फूल जाते थे। लेकिन जहां तक मदामाजेल नोएमी की मासूमियत का सम्बन्ध था, न्यूमैन को लगा कि यह अबोधता नोएमी से कभी नहीं छूटी है। ज़ाहिर था कि उसका कभी किंसीसे कोई सम्बन्ध नहीं रहा था। वह दस वर्ष की उम्र से बाहर घूम-फिर रही थी और उसको शायद ही कोई व्यक्ति कोई गोपनीय बात बता सकता था। लूव्र में प्रभात के लम्बे कार्यकाल के दौरान उसने मैडोना और सेंट जॉन के चित्रों का अध्ययन किया था, इसके साथ ही उसने अपने आसपास घूमने-फिरनेवाले लोगों को देखा, सुना और समझा था और उनके बारे में निष्कर्ष निकाले थे। कुछ विशिष्ट अर्थों में न्यूमैन को ऐसा लगा कि मो० नियोशे को निश्चिन्त रहना चाहिए। उनकी पुत्री भले ही कोई दुस्साहसपूर्ण कार्य कर बैठे, लेकिन वह मूर्खतापूर्ण कार्य कभी नहीं करेगी। न्यूमैन आराम से मुस्कराता हुआ, धीरे-धीरे बोलता हुआ चल रहा था और सोच रहा था कि मदामाजेल नोएमी उसमें क्या देखने की कोशिश कर रही है। पता नहीं क्यों, उसे लग रहा था कि नोएमी चाहती है कि न्यूमैन यह कहे कि वह उसे बुरी लड़की समझता है।

"ओह, नहीं," अन्त में उसने कहा, "तुम्हें बुरी लड़की समझना मेरे लिए बड़ा अनुचित होगा। मैं तुम्हें जानता ही नहीं हूं।"

"लेकिन मेरे पिता ने आपसे मेरी शिकायत की है," मदामाजेल नोएमी ने कहा।

"वे कहते हैं कि तुम अभी तरुणी ही हो।"

"उन्हें किसी भी व्यक्ति से इस तरह की बातें नहीं करनी चाहिए। लेकिन आप तो उनकी बात का विश्वास नहीं करते ?"

"नहीं," न्यूमैन ने गम्भीरता से कहा, "मैं विश्वास नहीं करता।"

उसने फिर न्यूमैन की तरफ देखा, अपने कंधे थोड़े-से उचकाए और मुस्करा दी। इसके बाद उसने एक छोटे इटालवी चित्र की ओर उंगली उठाई। यह चित्र 'सेंट कैथेराइन' के विवाह का था। "आपको यह कैसा लगा ?" उसने पूछा।

"मुझे अच्छा नहीं लगा," न्यूमैन ने कहा, "इसमें पीले कपड़े पहने जो युवती बैठी है, वह सुन्दर नहीं है।"

"आह, आप तो बहुत बड़े कला-पारखी हैं," मदामाजेल नोएमी ने बुदबुदाकर कहा।

करेंगे ?"

"हां, मेरा इरादा सारे यूरोप की यात्रा करने का है," न्यूमैन ने कहा।

"चित्रों के आर्डर देते हुए, उन्हें खरीदते हुए, धन खर्च करते हुए ?"

"बेशक, मैं कुछ रकम तो ज़रूर खर्च करूंगा।"

"ऐसा करके तो आप बहुत खुश होंगे। और आप बिलकुल स्वतंत्र भी है ?"

"स्वतंत्र से क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"मेरा मतलब है कि आपको परेशान करनेवाला कोई नहीं है—कोई परिवार नहीं है, पत्नी नहीं है, प्रेयसी भी नहीं है ?"

"हां, मैं काफी स्वतंत्र हूं।"

"आप बहुत प्रसन्न हैं," मदामाजेल नोएमी ने गम्भीरता से कहा।

"मैं प्रसन्न ही रहने की आशा करता हूं।" न्यूमैन ने यह बात इस तरह कही, जैसे वह जितनी स्वीकार करता है, उससे कहीं अधिक फ्रेंच उसे आती है।

"और आप पेरिस में कितने दिन ठहरेंगे ?" नवयुवती ने पूछा।

"कुछ दिन और ठहरूंगा।"

"आप जा क्यों रहे हैं ?"

"यहां गर्मी पड़ने लगी है और मुझे स्विट्ज़रलैंड जाना चाहिए।"

"स्विट्ज़रलैंड ? वह तो बड़ा ही सुन्दर देश है। उसे देखने के लिए तो मैं अपना वह नया छाता भी दे सकती हूं। वहां झीलें और पर्वत हैं, सुन्दर घाटियां हैं और हिममंडित चोटियां हैं। ओह, मैं आपको बधाई देती हूं। इधर मैंसारी गर्मियों भर यहां बैठी-बैठी आपके लिए चित्र बनाऊंगी।"

"ओह, जल्दी करने की कोई ज़रूरत नहीं है। आराम से धीरे-धीरे बनाना," न्यूमैन ने कहा, "अपनी सुविधा से बनाना।"

वे कुछ और आगे चलते गए तथा उन्होंने लगभग एक दर्जन चित्र और देख डाले। न्यूमैन को जो चित्र पसन्द आया, वह उसकी तरफ इशारा करता गया और मदामाजेल नोएमी बहुत खुलकर उनकी समालोचना करती गई और कहती गई कि वह उनके बजाय कोई और चित्र बना देगी। इसके बाद अकस्मात् उसने बात पलट दी तथा अपने निजी मामले पर बातचीत शुरू कर दी।

"उस दिन सालों कारे में आपने किस भावना से प्रेरित होकर मुझसे बातचीत की थी ?" उसने अकस्मात् पूछा।

"मुझे आपका चित्र पसन्द आया था।"

"लेकिन पहले तो आप काफी देर झिझकते रहे।"

"ओह, मैं कभी भी कोई काम बिना समझे-बूझे झटपट नहीं कर डालता," न्यूमैन ने कहा।

"हां, मैंने आपको चित्र देखते हुए देखा था, लेकिन मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि आप मुझसे बात करेंगे। मैं यह सपने में भी नहीं सोच सकती थी कि आज आपके साथ इस तरह घूम सकूंगी। कैसा संयोग है !"

"यह तो बड़ी स्वाभाविक बात है," न्यूमैन ने कहा।

"ओह, मुझे क्षमा कीजिएगा, लेकिन मेरे लिए यह स्वाभाविक नहीं है। आप मुझे छोटी लड़की तो समझते ही हैं, मैं सार्वजनिक स्थानों में इससे पहले किसी सज्जन के साथ कभी नहीं घूमी। पता नहीं, क्या सोचकर मेरे पिता ने इस मुलाकात की अनुमति दे दी ?"

"वे अपने अकारण आरोपों पर पश्चात्ताप कर रहे थे," न्यूमैन ने उत्तर दिया।

मदामाजेल नोएमी मौन रही और अन्त में एक जगह बैठ गई। "तो फिर ठीक है, पांच चित्रों के विषय में तो निश्चित हो गया," उसने कहा, "मैं इन चित्रों की सुन्दरतम पांच प्रतियां तैयार करूंगी। अभी हमें एक चित्र और चुनना है। क्या आप नहीं चाहेंगे कि रूबेंस के एक महान चित्र की प्रति तैयार की जाए, जिसमें उन्होंने मैरी दि मैदिची का विवाह अंकित किया है ? उस चित्र की ओर देखिए, कितना प्यारा है वह !"

"ओह, हां; मैं उसकी भी प्रति लेना चाहूंगा," न्यूमैन ने कहा, "वह भी बना लीजिएगा।"

"ठीक है, यह अन्तिम चित्र रहेगा !" और वह हसने लगी। वह एक क्षण और बैठी रही और उसकी तरफ देखती रही, फिर अकस्मात् उठ खड़ी हुई तथा न्यूमैन के सामने आकर खड़ी हो गई। उसने दोनों हाथ बांधकर सामने की तरफ गिरा लिए थे। "आप मेरी समझ में बिलकुल नहीं आते हैं," उसने मुस्कराते हुए कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि एक आदमी इतना अज्ञानी किस तरह हो सकता है।"

"ओह, मैं अज्ञानी तो अवश्य हूं," न्यूमैन ने कहा और अपने हाथ जेबों में डाल लिए।

"बड़ा ही हास्यास्पद है यह ! मुझे चित्र बनाना नहीं आता है।"

"क्या तुम्हें चित्र बनाना नहीं आता ?"

"मैं बिलकुल अनाड़ी की तरह चित्र बनाती हूं; एक सीधी लाइन भी नहीं खींच सकती। आप पहले ग्राहक हैं, जिन्होंने उस दिन मेरा चित्र खरीदा। इसके पहले कभी किसीने मेरा बनाया कोई चित्र नही खरीदा था।" और यह आश्चर्य-जनक जानकारी देते हुए वह बराबर मुस्कराती रही।

न्यूमैन बड़े ज़ोरों से हंस पड़ा। "तुम मुझे ये सब बातें क्यों बता रही हो ?" उसने पूछा।

"क्योंकि आप जैसे चतुर व्यक्ति को इतनी बड़ी गलती करते देखकर मुझे कुछ झुंझलाहट हो रही है। मेरे चित्र बड़े ही भ्रष्ट होते हैं।"

"और जो मेरे पास है—"

"वह तो मेरे खराब चित्रों से भी ज़्यादा खराब है।"

"जो भी हो," न्यूमैन ने कहा, "मुझे वह पसन्द है।"

वह प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगी। "यह बात कहने में बड़ी प्रिय लगती है," उसने उत्तर दिया, "लेकिन मेरा यह कर्तव्य है कि मैं आपको चित्रों का आगे कोई आर्डर देने से पहले आगाह कर दूं। आप जानते हैं कि आपका यह आर्डर असम्भव है। आप मुझे क्या समझते है ? यह कम से कम दस आदमियों का काम है। आपने जो चित्र छांटे है, वह इस पूरे कला-संग्रहालय में सबसे कठिन चित्र हैं और आप समझते है कि मैं इन्हें बनाने में इस तरह जुट जाऊंगी जैसे मुझे एक दर्जन रूमाल काढ़ कर देने हैं। मैं देखना चाहती थी कि आप किस हद तक आगे बढ़ सकते हैं।"

न्यूमैन ने कुछ उलझन-भरी दृष्टि से नवयुवती की ओर देखा। उसपर एक बहुत बड़ी भूल करने का आरोप लगाया गया था, लेकिन वह बुद्धू नहीं था। न्यूमैन को सन्देह था कि मदामाजेल नोएमी की यह आकस्मिक स्पष्टवादिता ईमानदारी से प्रेरित नहीं है। ठीक उसी तरह, जिस तरह वह उसे भुलावे में रख सकती थी। वह चाल चल रही थी। नोएमी केवल न्यूमैन के सौन्दर्यबोध-सम्बन्धी अनुभव-हीनता पर ही तरस नहीं खा रही थी। वह क्या चाहती थी। दाव काफी बड़ा था और जोखिम भी कम न थी; इसलिए जो पुरस्कार मिलता, वह भी काफी बड़ा होता। लेकिन यह मान लेने पर भी कि पुरस्कार बहुत बड़ा होता, न्यूमैन के मन

में मदामाजेल नोएमी के प्रति उसकी निर्भयता के कारण सराहना का भाव उत्पन्न हो गया था। वह अपने मन मे कुछ भी सोच रही हो, लेकिन प्रकटत: वह एक बहुत बड़ी रकम को ठुकरा रही थी।

"क्या तुम हसी कर रही हो," न्यूमैन ने कहा, "या गम्भीरता से यह बात कह रही हो ?"

"ओह, बहुत गम्भीरता से कह रही हू।" मदामाजेल नोएमी ने उत्तर दिया, लेकिन उसके होंठो पर असाधारण मुस्कराहट थी।

"मैं चित्रों के बारे में या वे किस तरह बनाए जाते है, इस सबंध में लगभग कुछ नहीं जानता। अगर जो तुम ये चित्र नहीं बना सकतीं, तो बेशक तुममें इन्हें बनाने की क्षमता नहीं होगी। ऐसी हालत में तुम जो कुछ कर सकती हो, वही करो।"

"यह तो बहुत ही खराब होगा," मदामाजेल नोएमी ने कहा।

"ओह," न्यूमैन ने हसते हुए कहा, "अगर तुमने यही सोच रखा है कि तुम्हारे चित्र खराब होंगे, तो बेशक वे खराब ही बनेंगे। लेकिन तुम खराब चित्र क्यों बनाती हो ?"

"क्योंकि मैं और कुछ नही कर सकती; मुझमें प्रतिभा ही नहीं है।"

"तो तुम अपने पिता को धोखा दे रही हो।"

नवयुवती एक क्षण के लिए झिझकी। "यह बात वे अच्छी तरह जानते है !"

"नहीं," न्यूमैन ने कहा, "मेरा विश्वास है कि वे समझते हैं कि तुममें चित्रांकन की प्रतिभा है।"

"वे मुझसे डरते हैं। मैं बराबर खराब चित्र भी बनाए जाती हूं, जैसाकि आप कह रहे हैं, तो इसीलिए कि मैं सीखना चाहती हूं। कुछ भी हो, मुझे यह पसन्द है और मुझे यहां आना पसन्द है। कम से कम प्रतिदिन यहां आना भी तो एक काम है, जो अंधेरे, सील-भरे कमरे में बैठे रहने से या किसी और के यहां जाने से या बटन और व्हेल मछली की हड्डियों से बनी चीज़ों को किसी दुकान पर बेचने से बेहतर है।"

"बेशक इस काम में ज्यादा आनन्द तो है," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन क्या एक गरीब लड़की के लिए यह कुछ बड़ा खर्चीला मनोरंजन नहीं है ?"

"ओह, इसमें शक नहीं कि मेरा यह काम बड़ा गलत है," मदामाजेल नोएमी ने कहा, "लेकिन मैं और लड़कियों की तरह अंधेरे कमरों में बैठकर सीने-पिरोने

का काम नहीं कर सकती । इसके बजाय मैं सीन नदी में डूबकर मर जाना पसन्द करूंगी ।"

"ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "तुम्हारे पिता ने मेरा प्रस्ताव तुम्हें बता दिया होगा ?"

"आपका प्रस्ताव ?"

"वे तुम्हारी शादी करना चाहते हैं और मैंने उनसे कह दिया है कि मैं तुम्हें आवश्यक दहेज़ की रकम कमा लेने में सहायता करूंगा ।"

"उन्होंने मुझे इस बारे में सब कुछ बता दिया है और आपने देख लिया कि मैंने उस प्रस्ताव के बावजूद क्या कुछ किया है । आपको मेरे विवाह में इतनी रुचि क्यों है ?"

"मेरी रुचि तुम्हारे पिता में है । मेरा प्रस्ताव अभी भी है। तुम जो कर सकती हो करो, और जो चित्र बनाकर दोगी, मैं खरीद लूंगा ।"

वह कुछ देर सोचती हुई खड़ी रही । इस बीच उसकी निगाहे फर्श पर गड़ी रहीं । अन्त में उसने अपनी नज़र उठाई । "बारह हज़ार फ्रांक में किसीको किस तरह का पति प्राप्त हो सकता है ?" उसने पूछा ।

"तुम्हारे पिता ने मुझे बताया कि वे एक बहुत अच्छे युवक को जानते हैं ।"

"बनियों और कसाइयों और छोटे होटलों के मालिकों से विवाह करूं ? अगर मेरा विवाह किसी अच्छी जगह नहीं हो सकता, तो मैं शादी ही नहीं करूंगी ।"

"मेरी सलाह है कि तुम इस मामले में बहुत ज़्यादा बढ़-चढ़कर न सोचो । यही सलाह मैं तुम्हें दे सकता हूं ।"

"मैंने आपसे जो कुछ कहा है, उससे मैं बहुत परेशान हूं ।" नवयुवती ने कहा । "यह सब कहने से मुझे कोई लाभ नहीं हुआ । लेकिन मैं यह कहे बिना रह भी नहीं सकती थी ।"

"ये बातें कहने से तुम्हें क्या लाभ होने की आशा थी ?"

"मुझसे यह कहे बिना रहा न गया । बस ।"

न्यूमैन ने एक क्षण उसके चेहरे की तरफ देखा । "हो सकता है तुम्हारे बनाए चित्र खराब हों," उसने कहा, "लेकिन तुम मुझसे बहुत चतुर हो । मैं तुम्हें बिलकुल समझ नहीं सका । गुड बाई !" और उसने अपना हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ाया ।

मदामाजेल नोएमी ने कोई उत्तर नहीं दिया, और न विदा ही ली। वह मुड़कर एक बेंच के पास चली गई और वहां पीठ करके बैठ गई। उसने अपने हाथ पर अपना सिर झुका लिया और उस हाथ से चित्रों के सामने लगी रेलिंग का डंडा पकड़ लिया। न्यूमैन एक क्षण खड़ा रहा और फिर मुड़कर वापस चल दिया। सच तो यह है कि न्यूमैन ने जितना मुंह से नहीं कहा था, उससे कहीं अधिक मदामाजेल नोएमी को समझ लिया था। यह दृश्य विशेष रूप से मदामाजेल नोएमी के पिता के इस कथन का प्रत्यक्ष प्रमाण था कि उनकी पुत्री बड़ी स्पष्टवादी है।

पांच

जब न्यूमैन ने मिसेज़ ट्रिस्टरैम को मदाम द सांत्रे के यहां जाने और वहां से निराश वापस लौटने की घटना बताई, तो मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने न्यूमैन से कहा कि वह हतोत्साहित न हों। उन्होंने यह भी कहा कि न्यूमैन गर्मियों में यूरोप-भ्रमण कर आए और पतझड़ में पेरिस वापस लौट आए तथा जाड़ों-भर आराम से वहीं रहे। मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा कि, "मदाम द सांत्रे कुमारी ही रहेंगी। वे अगले दिन ही विवाह नहीं कर डालेंगी।" न्यूमैन ने स्पष्ट रूप से ऐसा कोई वचन नहीं दिया कि वह पेरिस वापस लौटेगा। उसने रोम और नील की चर्चा की; लेकिन मदाम द सांत्रे के वैधव्य में कोई विशेष रुचि नहीं दिखाई। यह न्यूमैन की स्वाभाविक स्पष्टवादिता की आदत के विरुद्ध था और शायद यह उन भावनाओं की विशेषता है, जो रहस्यमय बताई जाती है। सच तो यह है कि न्यूमैन को उन दो चमकती हुई और कोमल दृष्टि वाली आंखों की याद रह-रहकर आती थी, और वह सरलता से अपने मन को इस बात पर राज़ी कर लेने में असमर्थ पाता था कि उन आंखों को अब फिर नहीं देखेगा। उसने मिसेज़ ट्रिस्टरैम को अन्य कई बातें तो बताईं, जिन्हें आप अपनी दृष्टि से कम या ज्यादा महत्त्वपूर्ण समझ सकते हैं; लेकिन इस मामले में वह चुप ही रहा। उसने मो० नियोशे से विदाई लेते समय अपनी कृपा का आश्वासन देते हुए कहा कि जहां तक उनका सम्बन्ध है, वह पूरी सहायता करेगा। चलते वक्त न्यूमैन ने मो० नियोशे को काफी रकम भी दी। इसके बाद न्यूमैन यूरोप-भ्रमण

के लिए रवाना हो गया। उसके अपने व्यवहार में, आराम से घूम-घूमकर दर्शनीय स्थानों को देखने में तथा अन्य चाल-ढाल में कोई फर्क नहीं आया। वह उसी तरह सीधे-सादे ढंग से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहा। कोई भी व्यक्ति शायद ही इतने आराम से घूमता और भ्रमण करता होगा, जितने आराम से धीरे-धीरे न्यूमैन ने भ्रमण किया और शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने कम समय में इतने अधिक स्थान देख लिए हों, जितने न्यूमैन ने देखे। कुछ ऐसी बात थी, जो एक घुमक्कड़ के रूप में न्यूमैन की बड़ी सहायता करती थी। वह अपने-आप ही विदेशी शहरों में अपना रास्ता तलाश कर लेता था। उसकी स्मरणशक्ति बड़ी अच्छी थी, एक बार भी अगर वह ध्यान से किसी विदेशी भाषा के शब्दों को सुन और समझ लेता था, तो फिर उसे अपने मतलब की बात और तथ्यों को जानने में कोई कठिनाई अनुभव नहीं होती थी। तथ्यों के बारे में उसकी जिज्ञासा असीम थी और उसने अपनी नोटबुक में जो कुछ लिखा था, वह साधारण यात्री के लिए भले ही ज़्यादा मतलब का न हो, लेकिन अगर कोई ध्यान से उसे पढ़ता, तो वह जान जाता कि न्यूमैन की कल्पना-शक्ति कितनी प्रखर है। ब्रूसेल्स पहला शहर था, जहां पेरिस से रवाना होने के बाद वह रुका। उसने वहां की स्ट्रीट कारों के बारे में बहुत-से प्रश्न पूछे और अमरीकी सभ्यता के इस परिचित प्रतीक के दुबारा दिखलाई पडने पर उसे गहरा सन्तोष हुआ; लेकिन इसके साथ ही वह होटल द वील के सुन्दर खम्भों को देखकर बड़ा प्रभावित हुआ और सोचने लगा कि क्या इसी तरह के स्तम्भ सान्फ्रांसिस्को में नहीं बनाए जा सकते। वह इस इमारत के सामने भीड़भाड़ वाले चौक में कोई आधे घण्टे खड़ा रहा। हालांकि वहां से गाड़ियां बराबर गुज़र रही थीं और किसी दुर्घटना की भी बराबर सम्भावना थी। इस बीच वह अपने दन्तहीन बूढे गाइड से टूटी-फूटी अंग्रेजी में काउण्ट एगमान्त और हॉर्न की मर्मस्पर्शी ऐतिहासिक कथा सुनता रहा। यही नहीं, पता नहीं क्यों उसने अपने एक पुराने पत्र के पीछे इन काउण्टों के नाम भी लिख लिए।

आरम्भ में, पेरिस से रवाना होने के बाद उसे बहुत अधिक जिज्ञासा नहीं थी, कैम्प्स एलीसीज और थियेटरों में मनोरंजन करने के अलावा वह कुछ और अधिक पाने की आशा नहीं करता था। हालांकि उसने ट्रिस्टरैम से कहा था कि मैं रहस्यमय और सन्तोषदायी सर्वोत्तम स्थानों को देखूंगा, लेकिन उसे अपने इस महान भ्रमण का बोझ ज़रा भी अनुभव नहीं हो रहा था। वह अपने मनोरंजन के दौरान

किसी तरह की ऊहापोह मे नहीं पड़ा था। वह समझता था कि यूरोप उसके लिए है, वह यूरोप के लिए नहीं है। उसने कहा था कि मैं अपना मानसिक और बौद्धिक विकास करना चाहता हूं। लेकिन अगर वह बौद्धिक रूप से अपने-आपको दर्पण में देखता, तो उसे कुछ बड़ा अटपटा-सा लगता और शायद कुछ लज्जा भी आती ; भले ही वह लज्जा सर्वथा गलत न होती। लेकिन न तो इस अर्थ में न अन्य किसी दृष्टि से न्यूमैन के ऊपर किसी भारी उत्तरदायित्व का बोझ था ; उसका यह बुनियादी विश्वास था कि आदमी को आराम से जीवन बिताना चाहिए। उसका ख्याल था कि दुनिया एक बहुत बड़ा बाज़ार है जिसमें आदमी घूम-फिर सकता है और खूबसूरत चीज़ें खरीद सकता है। लेकिन वह व्यक्तिगत रूप से किसी भी ऐसे सामाजिक दबाव को मानने के लिए तैयार न था, जिसके अन्तर्गत उसे कोई चीज़ अनिवार्य रूप से खरीदनी ही पड़े। उसे असुविधाजनक विचारों से न केवल अरुचि थी, बल्कि उनके प्रति नैतिक अविश्वास भी था। और वह यह ठीक नहीं समझता था कि कोई व्यक्ति किसी निश्चित सामाजिक स्तर के वातावरण में रहने के लिए विवश ही किया जाए। वह तो आराम और सुविधापूर्ण जीवन बिताने में ही पूरी तरह विश्वास करता था। उसे रेल पकड़ने के लिए जल्दबाज़ी करना कभी नहीं भाया था, और फिर भी उसे हमेशा समय पर ट्रेन मिल जाती थी। और स्टेशनों पर जिस 'सभ्यता' का बड़े मूर्खतापूर्ण ढग से प्रदर्शन किया जाता था, और जो स्त्रियों, विदेशियों तथा अव्यावहारिक लोगों तक ही सीमित रहती थी ; उसके बारे में न्यूमैन ने कभी चिन्ता नही की। इसके बावजूद न्यूमैन ने अपनी यात्रा का पूरा आनन्द उठाया। लेकिन उसे यह आनन्द तब मिलना शुरू हुआ जब वह ललित कलाओं में शौकिया गहरी अभिरुचि लेने लगा। आखिर किसीके सिद्धान्त कोई खास मूल्य नहीं रखते। असल में आदमी का स्वभाव ही सबसे महत्त्वपूर्ण चीज है। हमारे मित्र बुद्धिमान थे और उन्होंने जो किया, उसके अलावा वे और कुछ कर भी नही सकते थे। न्यूमैन बेलजियम और हालैंड घूमा। इसके बाद राइनलैंड गया। वहां से उसने स्विट्ज़रलैंड और उत्तरी इटली की यात्रा की। उसने कोई योजना नहीं बनाई थी, लेकिन फिर भी हर चीज़ देख ली। स्थानीय गाइडों और परिचारकों ने अनुभव किया कि उन्हें बहुत अच्छा जजमान मिला है। उससे कोई भी मिल सकता था। वह पोर्टिको तथा ऐसे ही अन्य स्थानों में काफी समय तक खड़ा रहता था। आम तौर पर यूरोप में ऐसे लोगों को आसानी से एकान्तपूर्ण जगह मिल जाती

है, जिनकी गांठें पूरी होती हैं। लेकिन न्यूमैन ने इस सुविधा का लाभ नहीं उठाया। जब उससे कोई किसी चर्च, वीथि, किसी खण्डहर या ऐसे ही अन्य किसी दर्शनीय स्थल को चलकर देखने का प्रस्ताव करता, तो न्यूमैन आम तौर पर सबसे पहले प्रस्तावक को चुपचाप देखता सिर से पैर तक और फिर उसे लेकर एक मेज़ पर बैठ जाता। और इसके बाद कुछ पीने के लिए मंगाता। इस सारी प्रक्रिया के दौरान उसका गाइड दूर खड़ा रहता ; यदि वह ऐसा नहीं करता, तो मुझे इस बात का विश्वास नही है कि न्यूमैन उसको अपने पास बैठ जाने के लिए न कहता और उससे भी एक गिलास शराब पीने का प्रस्ताव न करता, और उससे यह न पूछता कि वह ईमानदारी से यह बता दे कि जिस चर्च या कलावीथि को दिखाने ले जा रहा है, वह किसी व्यक्ति के इतनी दूर जाकर देखने योग्य है या नहीं।

अन्ततः वह उठ खड़ा होता और अपने गाइड को इशारे से पास बुलाता, अपनी घड़ी देखता और फिर गाइड को देखता। "वह क्या चीज़ है ?" वह पूछता। "कितनी दूर है ?" और उत्तर चाहे कुछ भी होता, न्यूमैन कुछ देर सोचता भले ही लेकिन जाने से इन्कार कभी न करता। इसके बाद वे दोनों एक खुली गाड़ी में बैठ जाते। न्यूमैन अपने गाइड को अपनी बगल में बैठा लेता, जो उसके प्रश्नों के उत्तर देता चलता। वह गाड़ीवान से खूब तेज़ चलने के लिए कहता। (उसे गाड़ी में धीरे चलने से विशेष चिढ़ थी) और इस तरह वह तेज़ी से पीछे धूल उड़ाता हुआ दर्शनीय स्थल की ओर रवाना हो जाता। अगर वह स्थान देखकर उसे निराशा होती, चर्च मामूली-सा होता या इमारत मात्र खण्डहर होती, तो भी न्यूमैन न तो अपने गाइड को डांटता-फटकारता था और न ही उसके कार्य के प्रति विरोध प्रकट करता था। वह निष्पक्ष दृष्टि से बड़े और छोटे स्मारकों को देखता, अपने गाइड से वह सारी बातें सुनता; जो वह उसे सुनाता, बड़ी गम्भीरता से इस तरह सुनता जैसे कोई धार्मिक प्रवचन सुन रहा हो, फिर पूछता कि आसपास और भी कोई चीज़ देखने योग्य है ? इसके बाद ये लोग फिर तेज़ी से शहर वापस लौट आते। कुछ लोग यह आशंका कर सकते है कि न्यूमैन को अच्छी और खराब वास्तुकला के अन्तर का उतना ज्ञान नहीं था जितना होना चाहिए और कभी-कभी वह वास्तुकला के भद्दे नमूनों को भी बड़ी गम्भीरता से देखता दिखलाई पडता था। यूरोप के भोंडे चर्चों को देखने में भी उसने समय बिताया था। इसके साथ ही उसने अच्छे से अच्छे चर्च भी देखे थे। सच तो यह है कि उसका सारा भ्रमण मनोरंजन था। लेकिन कभी-

कभी उन लोगो की कल्पना से बढ़िया अन्य किसीकी कल्पना नही होती है, जिसके बारे में यह कहा जाता है कि उनमें कल्पना-शक्ति नहीं है। और न्यूमैन कभी-कभी गाइड को बिना साथ लिए अनजान शहर में अकेला घूमने निकल जाता था और किसी एकाकी चर्च को या किसीकी मूर्ति को खड़ा-खड़ा देखता रहता। जिस व्यक्ति की यह मूर्ति होती, उसने कभी अपने समय में उस नगर की बड़ी सेवा की होती। यह मूर्ति देखते-देखते अन्दर ही अन्दर न्यूमैन एक अनोखे ढंग के कम्पन से सिहर उठता। यह सिहरन किसी भय, आशंका या घबराहट के कारण नहीं होती थी ; वह तो उसके शान्त और अगाध विश्राम की भावना का प्रतीक थी।

हालैंड में संयोगवश उसकी मुलाकात एक अमरीकी युवक से हो गई, जिसके साथ उसने कुछ समय सहयोगी यात्री के रूप में कुछ देशों का भ्रमण किया। ये दोनों व्यक्ति बड़े भिन्न ढंग के थे, लेकिन इनमें से प्रत्येक अपने ढंग से बड़ा सज्जन था और कम से कम कुछ सप्ताहों तक इन दोनों को एक-दूसरे के साथ यात्रा करने में बड़ा आनन्द आया। न्यूमैन के सहयोगी का नाम बैबकॉक था। वह एक तरुण पादरी था ; नाटे कद का छरहरा और साफ-सुथरे कपड़े पहननेवाला व्यक्ति था। इस अमरीकी युवक का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली था। वह मैसाच्यूसेट्स राज्य के डॉरचेस्टर शहर का रहनेवाला था और न्यू इंगलैंड के एक उपनगर में एक छोटे-से चर्च का मुख्य पादरी था। उसका हाज़मा बड़ा कमज़ोर था और वह एक विशेष प्रकार की रोटी और मकई का दलिया ही खाता था। इन दोनों ही प्रकार के खाद्य पदार्थों पर उसका जीवन इतना ज़्यादा निर्भर था कि जब उसे पता लगा कि यूरोप में सामान्य आवास-व्यवस्था के स्थानों पर ये दोनों चीजें नहीं मिलती हैं, तो उसे लगा कि उसका यूरोप-भ्रमण न हो सकेगा। पेरिस में उसने एक अमरीकी दुकान से काफी परिमाण में मकई का दलिया खरीद लिया था। इस दुकान पर न्यूयार्क के समाचारपत्र भी मिलते थे। यह युवक अपने साथ मकई का दलिया रखता था और वह जहां भी ठहरता, अपने लिए यह विशेष दलिया तैयार करवाता। वह जब भी किसी होटल में पहुंचता, चाहे कुछ भी वक्त होता, दलिया अवश्य बनवाता। अपने काम के सिलसिले में एक बार न्यूमैन को एक प्रभात बैबकॉक के जन्म-स्थान वाले नगर में बिताना पड़ा था। वहां जाने का कारण बताना तो न्यूमैन के लिए सम्भव न था, लेकिन जब भी उसे उस नगर की याद आ जाती, तो हंसी आने लगती। हंसी का कारण बिना बताए ही न्यूमैन अपने मज़ाक को जारी रखता और

अपने साथी को उसके नाम से बुलाने की बजाय, 'डॉरचेस्टर' के नाम से पुकारता। दोनों ही सहयात्री जल्दी ही घनिष्ठ हो गए; हालांकि अगर ये दोनों व्यक्ति अमरीका में होते, तो इनका इतना घनिष्ठ सम्पर्क अपने व्यक्तित्वों की भिन्नता के कारण शायद ही हो पाता। इसमें सन्देह नहीं कि दोनों में ही बड़ी भिन्नता थी और स्वभाव में ज़मीन-आसमान का फर्क था। न्यूमैन हर स्थिति को बड़े शान्त भाव से स्वीकार कर उसे सहन कर लेता, लेकिन बैबकॉक हर परिस्थिति पर अकेले में बड़ी गम्भीरता से विचार करता; अक्सर वह जल्दी ही सोने चला जाता और अपने कमरे में निष्पक्ष भाव से उस दिन की परिस्थिति या देखे गए स्थानों पर विचार करता। उसे यह समझ में नहीं आता था कि न्यूमैन का साथ पकड़कर उसने भला काम किया है या नहीं, क्योंकि न्यूमैन का दृष्टिकोण बैबकॉक के जीवन के प्रति दर्शन से बिलकुल भिन्न था। न्यूमैन बड़ा ही सज्जन और उदार व्यक्ति था; मि० बैबकॉक कभी-कभी अपने-आपको यही समझाते भी थे कि न्यूमैन बड़ा भला आदमी है, और उसके साथ मित्रता बनाए रखना असम्भव नहीं है। लेकिन क्या यह वांछनीय न होगा कि उसको उपदेश देकर न्यूमैन के नैतिक जीवन को और कर्तव्य-पालन के भाव को और अधिक बढ़ावा दिया जाए? न्यूमैन हर चीज़ पसन्द करता था, हर चीज़ स्वीकार कर लेता था और हर स्थिति में अपना मनोरंजन कर लेता था। वह चीज़ों में भेदभाव नहीं करता था तथा उसकी मांग हमेशा उत्कृष्ट वस्तु के लिए ही नही होती थी। डॉरचेस्टर के इसी अमरीकी नवयुवक को न्यूमैन में एक बड़ा दोष नज़र आता था जिससे वह स्वयं यथाशक्ति बचता था; यह दोष था, 'नैतिक प्रतिक्रिया' का अभाव। बेचारे मि० बैबकॉक को चित्रों और चर्चों के देखने का बड़ा शौक था; और वे अपने बक्से में मिसेज़ जैमसन्स की पुस्तकें लादे फिरते थे। वे सौंदर्य-सम्बन्धी विश्लेषण करके बड़े प्रसन्न होते थे और भ्रमण के दौरान हर चीज़ को देखकर उनकी एक विशिष्ट धारणा बनती थी। लेकिन अन्दर ही अन्दर मि० बैबकॉक को यूरोप से अरुचि थी और जब वे न्यूमैन को बौद्धिक रूप से यूरोप की हर चीज़ पर खुशी जाहिर करते हुए देखते, तो झुंझलाकर अपना विरोध प्रकट करना चाहते थे। मि० बैबकॉक की यह नैतिक व्याधि, मुझे भय है, मेरी परिभाषा करने की शक्ति से कहीं अधिक गहरी है और इसे मैं ठीक-ठाक व्यक्त नही कर सकता। मि० बैबकॉक को यूरोपियनों का विश्वास नहीं था। उन्हें यूरोप की जलवायु दुखदायी लगती थी, यूरोप में रात का भोजन जिस वक्त

किया जाता है, वह समय उन्हे पसन्द न था। यूरोप का जीवन उन्हें अविवेकपूर्ण और अशुद्ध लगता । और फिर भी उन्हें सौंदर्य-दर्शन का अद्‌भूत ज्ञान था। और चूंकि सौंदर्य बहुधा अप्रिय स्थितियों से ही सम्बद्ध होता है और चूंकि वे निष्पक्ष ढंग से और न्यायपूर्ण दृष्टि से चीज़ों को देखना चाहते थे तथा 'संस्कृति' के बड़े भक्त थे, इसलिए वह यह भी फैसला नहीं कर पाते थे कि यूरोप बिलकुल खराब है और इसलिए त्याज्य है। लेकिन फिर भी वे यूरोप को खराब समझते थे और न्यूमैन के साथ उनके मतभेद का कारण ही यह था कि न्यूमैन को यूरोप पूरी तरह खराब नही जंच पाता था। बैबकॉक स्वयं शिशु की तरह अबोध था और उसे दुनिया की अच्छी-बुरी चीज़ों का अन्तर नहीं पता था। उसे सबसे बड़ी बुराई का ज्ञान यूरोप आने के बाद इस तरह हुआ था। बैबकॉक का एक सहपाठी था, जो वास्तुकला का पेरिस में अध्ययन कर रहा था। वह किसी नवयुवती से प्रेम करने लगा। यह नवयुवती बैबकॉक के मित्र से प्रेम करते हुए भी उससे विवाह करने की इच्छुक नहीं थी। न्यूमैन ने इस युवती के सम्बन्ध में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया, जो प्रशंसात्मक नहीं कहे जा सकते थे। दूसरे दिन बैबकॉक ने न्यूमैन से पूछा कि उसने जो शब्द उसके मित्र की प्रेमिका के लिए प्रयुक्त किए हैं, क्या वह समझता है कि वे बिलकुल उचित हैं? न्यूमैन बैबकॉक को देखने लगा और हंसने लगा।

"एक ही विचार को व्यक्त करने के लिए बहुत-से शब्द हो सकते हैं," उसने कहा, "शब्दों को आप चुन सकते हैं।"

"ओह, मेरा मतलब है," बैबकॉक ने कहा, "क्या आप उस नवयुवती के बारे में किसी और दूसरे ढंग से नहीं सोच सकते? क्या आपका यह ख्याल नहीं है कि वह नवयुवती वास्तव में यह चाहती है कि मेरा मित्र उससे शादी कर ले?"

"मेरा विश्वास है कि इस सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं कह सकता।" न्यूमैन ने कहा। "शायद वह सचमुच ऐसा ही चाहती हो; लेकिन इसमें शक नहीं कि वह लड़की बड़ी ज़ोरदार है।" और इसके बाद वह फिर हंसने लगा।

"इन दोनों में से मेरा कोई मतलब नहीं था," बैबकॉक ने कहा, "मुझे केवल यही आशंका थी कि कल शायद मुझे ठीक से याद नहीं रहा था या इस विषय में मैं सोच नहीं सका था; जो भी हो, मैं परसीवैल को इस सम्बन्ध में लिखूंगा।"

और फिर उसने परसीवैल को पत्र लिखा (और परसीवैल ने इस पत्र का बड़े ही अविवेकपूर्ण ढंग से उत्तर दिया), और बैबकॉक ने बहुत सोचने के बाद

यह परिणाम निकाला कि न्यूमैन ने बिना सोचे-विचारे ही पेरिस की इस युवती को 'ज़ोरदार' कह दिया था। जिस तरह सरसरी तौर पर न्यूमैन अपने फैसले कर लेता था, उससे बैबकॉक को बड़ा धक्का लगता था और झुंझलाहट होती थी। न्यूमैन बिना कोई बात सुने लोगों की निन्दा कर देता या कभी बड़ी असुविधापूर्ण स्थिति में भी कुछ लोगों को बड़ा अच्छा मित्र बता देता था। ऐसा करना बैबकॉक को बड़ा ही अनुचित लगता। फिर भी बिचारा बैबकॉक न्यूमैन को चाहता था और अपने मन में बराबर यह कहता कि भले ही कभी-कभी न्यूमैन की बातों से उलझन में पड़ जाना पड़ता है, कभी दु:ख भी होता है, पर इन बातों से ही घबराकर न्यूमैन का साथ छोड़ देना उचित नहीं है। गेटे ने कहा था कि मानव-स्वभाव के विविध पहलुओं को देखना चाहिए और इसलिए गेटे के प्रति बैबकॉक के मन में अगाध श्रद्धा थी। वे दोनो बहुधा कभी आधे-आधे घण्टे तक बातचीत करते। वह न्यूमैन को अपने आध्यात्मिक विचारो से प्रभावित करने की कोशिश करता था, लेकिन न्यूमैन का अपना स्वभाव इस तरह का था कि उसपर इन प्रवचनो का कोई असर नहीं होता था। वह सिद्धान्तों का बड़ा प्रशंसक था और इसलिए बैबकॉक की तारीफ करता था कि उसने इतनी-सी उमर में ही इतनी अधिक सिद्धान्तवादिता अपना ली है। बैबकॉक जो कुछ सख्त-सुस्त कहता, उसे भी न्यूमैन सहन कर लेता था। और उसकी कही बातों को दिमाग के किसी सुरक्षित कोने में जमा करता जाता था। लेकिन बैबकॉक के ये प्रवचन न्यूमैन के दैनिक जीवन को तनिक भी प्रभावित नहीं कर पाते थे।

दोनों साथ-साथ जर्मनी गए और फिर स्विट्ज़रलैंड, जहा तीन या चार सप्ताह वे विभिन्न पहाड़ी दर्रों में पैदल चले तथा नीली झीलों के किनारे उन्होंने विश्राम किया। अन्त में वे सिम्पलन दर्रा पार करके वेनिस पहुंचे। मि० बैबकॉक बड़े उदास नज़र आते थे और कभी-कभी झुंझला भी उठते थे। बात-बात पर उन्हें गुस्सा आ जाता, कभी वे सोचते नज़र आते और ऐसा लगता कि इनका दिमाग कहीं और है। उनकी सारी योजनाएं और कार्यक्रम उलझे-उलझे-से लगते। वे कोई बात कहते और दूसरे ही क्षण कुछ और कहने या करने लगते। न्यूमैन का जीवन बदस्तूर चल रहा था, वह नये-नये लोगों से परिचय करता, कलावीथियों और चर्चों को देखने जाता तथा पियाजा-सां मार्को में बहुत-सा समय घूमने में

व्यतीत करता। उसने बहुत सारे खराब चित्र खरीद डाले थे तथा एक पखवाड़े तक उसने वेनिस का खूब आनन्द लिया। एक दिन सन्ध्या को अपने डेरे पर वापस लौटने पर उसने देखा कि पास के उद्यान में बैबकॉक बैठा-बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। न्यूमैन को देखते ही उसका सहयात्री अमरीकी युवक उठकर उसके पास आया। उसके चेहरे से बड़ी उदासी झलक रही थी, उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और बड़ी गम्भीरता से कहा कि वह उससे विदा ले रहा है। न्यूमैन ने आश्चर्य और खेद प्रकट किया और पूछा कि आखिर हम लोगों का अलग-अलग हो जाना क्यों आवश्यक है ? उसने कहा, "आप यह न समझिएगा कि मैं आपसे ऊब गया हूं।"

"आप मुझसे ऊब नहीं गए हैं ?" बैबकॉक ने पूछा और वह एकटक अपनी सफेद आंखें न्यूमैन पर जमाए रहा।

"मैं भला आपसे क्यों ऊबता ? आप बहुत अच्छे आदमी हैं और दूसरे, मैं लोगों या चीज़ों से ऊबता नहीं हूं।"

"हम एक-दूसरे को समझने में बिलकुल असफल रहे है," युवक पादरी ने कहा।

"क्या मैं आपको नहीं समझा ?" न्यूमैन ने ज़रा ज़ोर से कहा। "क्यों, मेरा तो ख्याल है कि मैं आपको भली भाति जान गया हूं। लेकिन अगर मैं नहीं भी जान पाया, तो इसमें नुकसान क्या है ?"

"आपकी बातें मेरी समझ में बिलकुल नहीं आती हैं," बैबकॉक ने कहा और वह बैठ गया तथा उसने अपना सिर अपने हाथ पर रख लिया। और इसके बाद अपने ऐसे मित्र की ओर बड़े ही दुखित भाव से देखने लगा, जिसे वह समझ नहीं पाया था।

"हे भगवान ! लेकिन मैं तो इसकी कोई परवाह नहीं करता।" न्यूमैन बोला और हंस पड़ा।

"लेकिन मैं इससे बड़ा परेशान हूं, बड़ा बेचैन रहता हूं, झुंझला उठता हूं और कुछ भी निश्चय नहीं कर पाता। मेरा विचार है कि आपका साथ मेरे लिए लाभदायी नहीं है।"

"आप बेकार की चिन्ता करते हैं, यही आपकी सारी व्याधियों की जड़ है।" न्यूमैन ने कहा।

"बेशक, आपको ऐसा ही प्रतीत होना चाहिए। आपका ख्याल है कि मैं हर चीज़ को बड़ी गम्भीरता से लेता हूं और मेरा ख्याल है कि आप हर बात हंसी में उड़ा देते है। इसलिए हम कभी एक-दूसरे से सहमत नहीं हो सकते।"

"लेकिन अब तक तो हम बराबर सहमत होते आए है।"

"नहीं, मै कभी सहमत नहीं हुआ," बैबकॉक ने अपना सिर हिलाते हुए कहा। "मैं बड़ा बेचैन रहता हूं। सच तो यह है कि मुझे एक महीने पहले ही आपसे विदा ले लेनी चाहिए थी।"

"हे भगवान, मै आपकी कोई भी बात मानने के लिए तैयार हूं!" न्यूमैन ने कहा।

मि० बैबकॉक ने अपना सिर दोनों हथेलियों के बीच रख लिया। आखिर अपनी नज़र ऊपर उठाकर उसने कहा, "मेरा ख्याल है कि आप मेरी स्थिति भली भांति नहीं समझते है।" वह बोला, "मैं हर चीज को देखकर सत्य का पता लगाना चाहता हूं, लेकिन आप बहुत तेज़ी से आगे बढ़ जाते है। मेरे ख्याल से आपका हर काम बड़ी जल्दबाज़ी मे होता है। आप बहुत ज़्यादा खर्चीले है। मुझे ऐसा लगता है कि जिन-जिन स्थानों में हम दोनों घूमकर आए हैं, मै उन जगहों को देखने फिर दुबारा जाऊं और अकेला जाऊं। मुझे भय है कि मैंने कई गलतियां की हैं।"

"ओह, आपको इतने सारे कारण बताने की आवश्यकता नहीं है," न्यूमैन ने कहा, "लगता है कि आप मेरे साथ से ऊब गए हैं। आपको ऊबने का अधिकार है।"

"नहीं, नहीं, मैं ऊबा नहीं हूं!" तरुण और चिंतित पादरी ने कहा, "ऐसा करना बड़ा गलत होगा।"

"अच्छा जाने दीजिए," न्यूमैन हंस दिया। "लेकिन इसमें शक नहीं कि बराबर गलती करते रहना उचित न होगा। आप खुशी से अपने रास्ते जा सकते है। मुझे आपकी याद आएगी; लेकिन आपने देख ही लिया कि मै बड़ी सरलता से नये मित्र बना लेता हूं। आपको अपना एकाकीपन खलेगा; लेकिन अगर कभी भी आपको मेरी आवश्यकता पड़े, तो आप मुझे एक वाक्य लिख दीजिएगा और मैं किसी भी स्थान पर आपकी प्रतीक्षा करने के लिए तैयार रहूंगा।"

"मेरा ख्याल है कि मै मिलान वापस जाऊंगा, मुझे भय है कि मैंने लूनी

ठीक से नही देखा ।"

"बेचारा लूनी !" न्यूमैन ने कहा ।

"मेरा ख्याल है कि मैंने उसके बारे मे बहुत ऊंचे विचार स्थिर कर लिए है वह सबसे उच्चकोटि का चित्रकार नहीं है ।"

"लूनी ?" न्यूमैन ने आश्चर्य से कहा, "क्यों, वह तो बड़ा ही जादू कर देनेवाला चित्रकार है। बड़ा शानदार कलाकार है । उसकी प्रतिभा में कुछ ऐसी चीज़ है, जो किसी सुन्दर स्त्री में होती है। उसके बनाए चित्र देखकर मुझमें यही भावना उत्पन्न हुई ।"

मि० बैबकॉक कुछ भुन्नाए, कुछ झुंझलाए ।

यहां यह बता देना चाहिए कि न्यूमैन के लिए यह बड़ा ही असाधारण आध्यात्मिक अनुभव था ; लेकिन मिलान से गुजरते समय लूनी के सम्बन्ध में न्यूमैन ने बड़ा आकर्षण अनुभव किया था ।

"देखिए, फिर आपने वही बात की न !" मि० बैबकॉक ने कहा । "हा, हम लोगों को एक-दूसरे से अलग ही हो जाना चाहिए। यही हम दोनों के लिए अच्छा होगा ।" और इसके बाद इस महान लोम्बार्त कलाकार के विषय में अपने विचारों में सशोधन करने के लिए मि० बैबकॉक मिलान वापस चले गए ।

इसके कुछ दिन बाद न्यूमैन को अपने भूतपूर्व सहयात्री से एक पत्र मिला, जो इस प्रकार था :

प्रिय मि० न्यूमैन,—मुझे भय है कि वेनिस में एक सप्ताह पूर्व मेरा व्यवहार आपको अजीब लगा होगा और शायद यह भी प्रतीत हुआ हो कि मैं कृतघ्न हूं । लेकिन मैं अपनी स्थिति स्पष्ट कर देना चाहता हूं । अपनी स्थिति के बारे में मैंने पहले भी आपसे कहा है कि आप उसे ठीक-ठीक समझने में समर्थ नहीं रहे है। सबसे पहली बात तो यह है कि मैं अपने चर्च के खर्च पर यूरोप का भ्रमण कर रहा हूं। मेरे चर्च ने कृपा करके मुझे छुट्टी दी है और यह अवसर प्रदान किया है कि मैं पुराने संसार की प्राकृतिक सुषमा और कलात्मक स्थानों को देखकर अपना बौद्धिक विकास करूं। इसलिए मैं अनुभव करता हूं कि यह मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने समय का सर्वोत्तम उपयोग करूं । मुझमें उत्तरदायित्व की बड़ी गहरी भावना है । मुझे लगता है कि आप केवल क्षणिक आनन्द में विश्वास करते हैं

और इस आनन्द को प्राप्त करने में आप इस तरह डूब जाते हैं कि मैं अपने-आपको आपके आदर्श के अनुसार चला पाने में असमर्थ पाता हूं। मुझे लगता है कि हर चीज़ को देखने के बाद मुझे कुछ निष्कर्ष निकालना चाहिए, और कुछ विशिष्ट विषयों पर अपने विचार स्थिर करने चाहिए। कला और जीवन, मुझे बड़ी गम्भीर वस्तुएं प्रतीत होती हैं और यूरोप-भ्रमण के दौरान हमें कला की इस गुरु-गम्भीरता को विशेष रूप से याद रखना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि आपका विचार है कि अगर कोई चीज़ आपको एक क्षण भी आनन्द प्रदान कर देती है, तो उसका लक्ष्य और उद्देश्य पूरा हो गया। शायद आप इतना ही चाहते है और मनोरंजन करने की आपकी क्षमता मुझसे कहीं अधिक है। आपका आनन्द प्राप्त करने में अगाध विश्वास है, जो मैं यह मानता हूं कि मुझे, क्या मैं कह सकता हूं—कभी-कभी, बड़ा सनकीपन-सा लगा।—जो भी हो, आपका रास्ता मेरा रास्ता नहीं है और हम लोगों का साथ-साथ यात्रा करने का प्रयत्न बड़ा मूर्खता-पूर्ण होता। और फिर भी मुझे यह कह लेने दीजिए कि मैं जानता हूं कि आपके पक्ष में भी बहुत-सी बातें कही जा सकती हैं; मैंने आपके जीवन का आकर्षण अनुभव किया है। आपके साथ को कभी-कभी बड़ी गहराई से अनुभव किया है। लेकिन इसी कारण मुझे आपका साथ बहुत पहले ही छोड़ देना चाहिए था। लेकिन मैं बड़ी उलझन में था। मुझे आशा है कि मैंने कोई गलती नहीं की है। मै अनुभव करता हूं कि जो समय मैंने गंवा दिया है, उसके कार्य की पूर्ति के लिए मुझे काफी प्रयत्न करना पड़ेगा। मेरी प्रार्थना है कि आप मेरी बातों को उसी अर्थ में ग्रहण करें, जिस आशय से मैंने उन्हें लिखा है। ईश्वर ही जानता है कि ऐसा लिखने में मेरा कोई दुर्भाव नहीं रहा है। व्यक्तिगत रूप से मैं आपका बड़ा आदर करता हूं और आशा करता हूं कि किसी दिन जब मै अपना मानसिक संतुलन फिर प्राप्त कर लूगा, तब आपसे फिर भेंट होगी। मुझे आशा है कि आप अपना भ्रमण आनंदपूर्ण ढंग से जारी रखेंगे; केवल इतना ही याद रखिएगा कि जीवन और कला दोनों ही बड़े गम्भीर विषय है। विश्वास रखिए कि मै आपका विश्वस्त मित्र और शुभैषी हूं,

—बेंजामिन बैबकॉक

पुनश्च : लूनी के चित्र देखकर मै बड़ी उलझन मे पड़ गया हूं।

यह पत्र पढ़कर न्यूमैन को खुशी भी हुई और वह सिहर भी उठा। शुरू में

मि० बैबकॉक की कोमल अन्तरात्मा न्यूमैन को बहुत बड़ा मक्कड़-सा लगी और उसे लगा कि मिलान वापस लौटकर मि० बैबकॉक की जो उलझन बढ़ी है, वह न्यूमैन के सहयात्री की बहुत अधिक विद्वत्ता झाड़ने का हास्यास्पद किन्तु स्वाभाविक परिणाम है। फिर न्यूमैन ने सोचा कि यह सब बातें गहरे रहस्य की हैं; जो सम्भवतः स्वयं वह, सनकी होने के कारण, समझ नहीं सका और शायद उसका अपना कलात्मक वस्तुएं देखने का ढंग और जीवन का विलासितापूर्ण रहन-सहन बड़ा अनैतिक और छिछले स्तर का है। न्यूमैन अनैतिकता को बड़ी हेय दृष्टि से देखता था और उस दिन सध्या को वह लगभग आधे घण्टे तक एड्रियाटिक सागर के तट पर बैठा आसमान के झिलमिलाते तारों को देखता रहा। वह मन ही मन बड़ी झुंझलाहट अनुभव कर रहा था और कुछ दबा-दबा-सा महसूस कर रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह बैबकॉक के पत्र का क्या उत्तर दे। न्यूमैन का स्वभाव बड़ा अच्छा था और यह स्वभाव उसे युवक पादरी के उच्च आदर्शों के आधार पर की गई डांट-फटकार का विरोध करने से रोक रहा था और साथ ही न्यूमैन की स्वाभाविक कठोरता उसे यह भी सलाह दे रही थी कि वह अमरीकी पादरी युवक की बातों को गम्भीरता से ग्रहण न करे। न्यूमैन ने पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया। लेकिन एक या दो दिन बाद उसने पुरानी कला-वस्तुएं बेचनेवाली एक दुकान से १६वीं शताब्दी की बड़ी भद्दी-सी एक हाथीदांत की छोटी-सी मूर्ति खरीदकर बिना किसी पत्र के बैबकॉक को भेज दी। यह मूर्ति एक भिक्षु की थी, जो फटे कपड़े पहने था और हाथ बांधे झुका हुआ था। उसका भद्दा, लम्बा चेहरा आगे की तरफ निकला हुआ था। हाथीदांत पर बड़े ही नाज़ुक ढंग से यह मूर्ति बनाई गई थी और एक क्षण में ही कोई भी व्यक्ति यह देख सकता था कि उस भिक्षु की कमर में एक मोटी-सी थैली लटकी हुई है। न्यूमैन के भावलोक में यह मूर्ति किसका प्रतीक थी? क्या इसका मतलब यह था कि वह भी उस भिक्षु की तरह ही 'ऊंचा सोचता है' जैसाकि पहले-पहल मूर्ति को देखने पर लगता है, लेकिन बाद में उसे यह आशंका हुई कि वह भी कहीं पादरी की ही तरह असफल सिद्ध न हो? यह बात नहीं मानी जा सकती थी कि वह बैबकॉक के संन्यास पर व्यंग्य कस रहा था, क्योंकि ऐसा करना वास्तव में सनकीपन होता। जो भी हो, उसने अपने भूतपूर्व सहयात्री को एक बड़ी ही बहुमूल्य भेंट भेजी थी।

वेनिस से प्रस्थान करने के बाद न्यूमैन टेरोल से वियना तक गया और फिर

दक्षिण जर्मनी होता हुआ पच्छिम की ओर लौटा। पतझड़ के आरम्भ में वह बेडन-बेडन में था। यहां उसने कई सप्ताह बिताए। यह स्थान बड़ा ही आकर्षक था और उसे जाने की जल्दी नहीं थी। इसके अलावा वह यह भी सोच रहा था कि सर्दियों में कहां रहे। गर्मियों-भर वह काफी व्यस्त रहा था और बेडन में फूलों की क्यारियों के पास से जो नहर धीरे-धीरे गुज़रती है, उसके किनारे के वृक्षों के नीचे छाया में बैठकर गर्मियों में की गई यात्राओं के सम्बन्ध में सोच रहा था। उसने बहुत कुछ देख लिया था, यात्रा में आनन्द उठाया था और ऐसा लगता था कि उसके अनुभव का जगत् बड़ा व्यापक हो गया है जिससे वह कुछ वृद्ध हो गया है, लेकिन साथ ही उसे लगा कि उसमें कुछ तरुणाई भी आई है। उसे मि० बैबकॉक की याद आई और यह भी याद आया कि वह पादरी किस तरह निष्कर्ष निकालने के फेर में रहता था और न्यूमैन को यह भी ख्याल आया कि बैबकॉक के बार-बार समझाने पर भी वह अपने मित्र की सलाह पर नहीं चल सका था। क्या वह स्वयं सारभूत तत्त्व की बातें नहीं निकाल सकता ? बेडन-बेडन, अब तक जिन स्थानों को उसने देखा था, उनमें सबसे खूबसूरत स्थान था। वहां तारों-भरी रात में वाद्य वृंद संगीत उसे बड़ा ही शानदार लगता था। एक सार की बात तो यह थी। लेकिन उसने सोचा कि अपने कारोबार समेटकर अमरीका से घूमने के लिए बाहर निकलकर उसने बड़ा अच्छा काम किया है। दुनिया का भ्रमण करना बड़ा ही मनोरंजक होता है। उसने बहुत कुछ सीखा था ; वह एकदम यह तो नहीं बता सकता था कि क्या-क्या, लेकिन सारी बातों का उसके दिमाग पर काफी असर हुआ था। उसने जो चाहा, वह किया ; बड़ी-बड़ी प्रसिद्ध चीज़ें देखीं और उसने अपने-आपको मानसिक और बौद्धिक विकास का अवसर प्रदान किया। उसका विश्वास था कि यात्रा से उसका मानसिक विकास और उन्नति हुई है। हां, दुनिया का यह भ्रमण सचमुच बड़ा ही प्रिय सिद्ध हुआ है। और वह अभी कुछ और दिन घूमते रहने के लिए तैयार है। उसकी आयु छत्तीस वर्ष की थी और जीवन का काफी बड़ा भाग उसके सामने था और इसलिए उसे सप्ताह गिनने की ज़रूरत नहीं थी। अब वह कहां रहे ? मैं आपको बता चुका हूं कि उसे वे आखें अब भी याद थीं, जिन्हें उसने मिसेज़ ट्रिस्टरैम के ड्राइंगरूम में देखा था। चार महीने बीत चुके थे, लेकिन वह उन्हें भूला नहीं था। उसने अन्य बहुत-सी आंखों को देखा था, जान-बूझकर देखा था, लेकिन अब अगर उसे किसीकी आंखें याद

थीं, तो वे केवल मदाम द सांत्रे की थीं। अगर वह कुछ और दुनिया देखना चाहता है, तो क्या वह दुनिया मदाम द सांत्रे की आंखों में है ? इसमे शक नही कि उन आंखों मे वह जरूरी कुछ न कुछ पाता, चाहे वह चीज इस लोक की होती या परलोक की। इस नव चिन्तन के दौरान उसने अपने अतीत के जीवन के बारे में भी सोचा और अपने कार्यकारी वर्षो (जो बहुत पहले ही आरम्भ हो गए थे) मे उसके दिमाग मे सिवा उद्यम के और कोई बात नहीं थी। वे वर्ष अब बहुत अलग-थलग पड़ गए थे और इस समय वह छुट्टियां मना रहा था। उन वर्षो से उसका सम्बन्ध बिलकुल टूट गया। उसने ट्रिस्टरैम को बताया था कि जीवन-धारा फिर घड़ी के पेण्डुलम की तरह पीछे की तरफ लौट रही है और शायद अभी वह बिन्दु नहीं आया है, जहां पीछे लौटने का क्रम समाप्त हो जाएगा और वह फिर आगे की तरफ बढ़ने लगे। फिर भी जो उद्यम दूसरे चतुर्थांश में समाप्त हो गया था, उसके विभिन्न समयों पर विभिन्न पहलू दिमाग में आते थे। इस विचारधारा में हज़ारों ऐसी स्मृतियां आने लगीं, जिन्हे वह न जाने कब का भूल चुका था। कुछ स्मृतियों को वह सन्तोषपूर्वक याद करता रहा, जबकि कुछ घटनाओं को उसने याद आते ही भुला देने का यत्न किया। वे पुराने प्रयत्न थे, पुरानी सफलताएं थीं, जो उसके चातुर्य और बुद्धि-कौशल का दृष्टांत थीं। इनमें से कुछ की याद आने पर उसने गर्व का अनुभव किया और अपनी सराहना की जैसे वह किसी और व्यक्ति के सामने बैठा हुआ अपनी कहानी सुना रहा हो। और सच तो यह है कि इनमें जिन गुणों ने उसे महान कार्य करने में मदद की थी, वे गुण थे—फैसला करना, दृढ़ निश्चय से कार्य करना, हिम्मत और बुद्धि-विवेक का प्रयोग करना, चीज़ों और समस्याओं को स्पष्ट ढंग से समझना और मज़बूती से परिस्थितियों का सामना करना। अन्य कुछ उपलब्धियों के सम्बन्ध में यह कहना ज़रूरत से ज़्यादा होगा कि वह उनके कारण लज्जित था, क्योंकि न्यूमैन ने कभी कोई अनुचित काम नहीं किया था, बल्कि वह किसी भी गलत काम करने की क्षमता ही नहीं रखता था। अनुचित लोभ की प्रतिमा कितनी ही आकर्षक क्यों न हो; उसको वह बिना सोचे-विचारे एक ही प्रहार से नष्ट कर देता था। और इसमें शक नहीं कि अन्य किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा अगर न्यूमैन में ईमानदारी की भावना न होती, तो वह अक्षम्य बात होती। न्यूमैन जानता था कि कौन-सी बात टेढ़ी और कौन-सी सीधी है। वह हमेशा सीधे रास्ते का अनुकरण करता तथा बेईमानी और टेढ़े-मेढ़े रास्ते को हिकारत

की नज़र से देखता। लेकिन कुछ ऐसी स्मृतिया थीं, जिनमे गरिमा का अभाव था और उनसे शुष्कता और नीरसता प्रकट होती थी। हालांकि न्यूमैन को ख्याल आया कि उसने कोई भी भद्दा काम कभी नहीं किया था, लेकिन इसके साथ ही न्यूमैन को यह भी याद नहीं पड़ता था कि उसने कभी कोई बड़ा सुन्दर काम किया हो। उसने वर्षों हज़ारों-लाखो डालर कमाने में व्यतीत किए थे और अब वह कार्य-क्षेत्र से अलग खड़ा था तथा धन अर्जित करने का काम उसे बड़ा शुष्क और साधारण लगता था। एक बार धन अर्जित कर लेने के बाद अपनी जेब भरने के काम पर नाक-भौ चढ़ाई जा सकती है और यह कहा जा सकता है कि न्यूमैन ने ऐसा करना कुछ जल्दी ही शुरू कर दिया था। यह भी कहा जा सकता है कि न्यूमैन चाहता तो और ज्यादा धन कमा सकता था। हमें यह भी बता देना चाहिए कि उसने धन कमाने के बारे में नैतिकता झाड़नी शुरू नहीं कर दी थी। उसे बस इतना ही ख्याल आया था कि अब तक सारी गर्मियों-भर उसने बड़ा वैभवपूर्ण और सुन्दर संसार देखा है और वह ससार केवल तेज स्वभाव के रेलों के मालिकों और शेयरों के दलालों का ही नहीं है।

बेडन-बेडन में न्यूमैन को मिसेज़ ट्रिस्टरैम का एक पत्र मिला, जिसमे उन्होने इस बात के लिए डांट बताई थी कि भ्रमण पर निकलने के बाद न्यूमैन ने अपने बारे में बहुत कम सूचना भेजी है। पत्र में यह भी प्रार्थना की गई थी कि वह निश्चित रूप से यह खबर दे कि उसने सर्दियां पेरिस को छोड़कर किसी अन्य स्थान पर बिताने का फैसला नहीं किया है और वह पेरिस वापस आ रहा है। न्यूमैन ने इस पत्र का निम्नलिखित उत्तर दिया :

मेरा ख्याल है आप जानती हैं कि मै पत्र लिखने में कितना सुस्त हू और इसीलिए आपने मुझसे पत्र की आशा भी नहीं की होगी। अपने पूरे जीवन में विशुद्ध मित्रता की खातिर मैंने शायद बीस पत्र भी नहीं लिखे है। अमरीका में मेरा सारा कारबार तारों से ही होता था। यह पत्र विशुद्ध मित्रता का प्रतीक है। आप कुछ बात जानना चाहती हैं और मै आशा करता हूं कि मेरे इस पत्र की कद्र करेंगी। आप जानना चाहती है कि पिछले तीन महीनों में मैंने क्या कुछ किया और क्या कुछ देखा। इसके बताने का सबसे अच्छा तरीका तो यह होगा कि मैं आपको आधी दर्जन वे गाइड-बुक भेज दू, जिनके मार्जिन में मैंने पैसिल से निशान लगा रखे है। इनमें कहीं-कहीं मैंने लकीर खींची है, कहीं गुणा का निशान लगाया है या

किसी जगह 'सुन्दर' या 'बिलकुल सच' या 'बहुत हलका' लिख छोड़ा है। इससे आपको अन्दाजा हो जाएगा कि इन स्थानों को देखकर मेरे मन में क्या भावनाएं उत्पन्न हुई। आपको छोड़ने के बाद संक्षेप में यही मेरा अनुभव और इतिहास है। मैं बेल्जियम, हालैड, स्विट्ज़रलैंड और जर्मनी तथा इटली गया। इन यात्राओं से मुझे कोई क्षति नहीं हुई। मै अब चित्रों तथा चर्चो के बारे में कुछ अधिक जानने लगा हूं। मैंने बहुत-सी सुन्दर चीजे देखी है, जिनके बारे में शायद मैं इन सर्दियों में आतिशदान के समीप बैठकर आपसे बातचीत करूं। जैसाकि आप समझ ही गई होंगी कि मैं पेरिस आने के बिलकुल ही विरुद्ध नहीं हूं। मेरी यात्रा की अभी कई तरह की योजनाएं और कल्पनाएं थीं, लेकिन आपके पत्र के आने के बाद वे ताश के घर की तरह भरभराकर गिर पड़ी हैं। मुझे यह लग रहा है कि मैंने जितना भ्रमण किया है, उससे दुनिया देखने की मेरी लालसा और बढ़ गई है। चूंकि अब मैं स्वदेश छोड़कर निकल ही पड़ा हू, इसलिए पूरी दुनिया ही क्यों न घूम डालूं ? कभी-कभी मैं सुदूर पूर्व जाने की सोचता हूं और मेरी ज़बान पर पूर्व के शहरों के नाम आने लगते है : दमिश्क और बगदाद, मक्का और मदीना। पिछले महीने मैंने एक पादरी के साथ एक सप्ताह बिताया, जिसने मुझसे कहा कि मुझे इस बात पर लज्जा आनी चाहिए कि मैं सारा समय यूरोप के भ्रमण में ही खर्च कर रहा हूं, जब कि सुदूर पूर्व में भी देखने के बहुत-से स्थान हैं। मैं इनको भी देखना चाहता हूं, लेकिन मेरा ख्याल है कि रू द ला यूनिवर्सिते में भी जाकर कुछ देखना चाहिए। क्या आपको उन सुन्दर महिला के बारे में कोई समाचार मिला ? अगर आप उनसे यह वादा करा सकें कि अगली बार जब मैं जाऊंगा, तो वे घर पर मिलेंगी, तो मैं सीधा पेरिस आने के लिए तैयार हूं। उस दिन सांझ को जो बात मैंने आपसे की थी, वह बात कर डालने के लिए आज मै पहले से भी अधिक अनुकूल मानसिक स्थिति में हूं; मैं बहुत बढ़िया पत्नी चाहता हू। सारी गर्मियों-भर मैंने बराबर सुन्दर लड़कियों पर निगाह रखी, लेकिन अभी तक मुझे अपने लायक कोई भी नहीं जंची। और सच तो यह है कि उनमें से कोई मेरी कल्पना के पास तक नहीं पहुंचती। अगर मेरे मन की पत्नी मेरे साथ होती, तो शायद मैंने अपना यह यूरोप-भ्रमण हज़ार गुना आनन्ददायी पाया होता। मुझे साथ मिला तो एक बोस्टन के पादरी का, जो बहुत जल्दी ही मुझसे यह कहकर अलग हो गया कि मेरा और उसका स्वभाव नहीं मिलता है। उसने मुझसे कहा कि मैं बड़े छिछले मानसिक स्तर का अनैतिक व्यक्ति

हूं तथा 'कला कला के लिए है' के सिद्धान्त का माननेवाला हूं। इसका जो भी मतलब हो, लेकिन मुझे उसकी बातों से गहरी आन्तरिक पीड़ा हुई, क्योंकि मैं उसे बड़ा प्रेम करने लगा था। इसके कुछ दिन बाद मेरी मुलाकात एक अंग्रेज़ से हुई। आरम्भ में ऐसा लगा कि मेरी और उसकी अच्छी तरह निभ जाएगी। यह आदमी बड़ा प्रतिभा सम्पन्न था और लन्दन के अखबारों में लिखता रहता है। वह शायद ट्रिस्टरैम की तरह ही पेरिस से भली भांति परिचित है। हम लोग लगभग एक सप्ताह तक साथ-साथ इधर-उधर घूमते फिरे। लेकिन जल्दी ही उसने भी मेरा साथ छोड़ दिया। उसने कहा कि मैं बड़ा कठोर नैतिकतावादी हूं। उसने मित्रतापूर्ण ढंग से यह भी बताया कि मुझे हमेशा मेरी अन्तरात्मा कचोटती रहती है और मैं मैथिडिस्ट पादरियों की भांति चीज़ों को आंकने का प्रयत्न करता हूं तथा बुढ़िया औरतों की तरह बातचीत करता हूं। यह सुनकर मुझे बड़ी झुंझलाहट हुई। अपने दो आलोचकों में से किसका विश्वास करूं? मैंने इसके बारे में कोई चिन्ता नहीं की है और सोच लिया है कि वे दोनों ही बेवकूफ है। लेकिन एक बात ऐसी है, जिसके बारे में कोई भी यह कहने की धृष्टता न कर सकेगा कि मैं गलत हूं; और वह यह कि मैं आपका सच्चा मित्र हूं,

—सी० एन०

छः

न्यूमैन ने दमिश्क और बगदाद की यात्राएं जल्दी समाप्त कर दीं और पतझड़ खत्म होने के पहले ही पेरिस वापस लौट आया। टॉम ट्रिस्टरैम ने अपनी समझ से न्यूमैन की सामाजिक स्थिति के अनुसार कुछ कमरे किराये पर ले दिए थे। उन्हींमें न्यूमैन रहने लगा। जब न्यूमैन से कहा गया कि मकान लेने में उसकी सामाजिक स्थिति का भी ध्यान रखा गया है, तो उसने कहा कि मैं इस सामाजिक स्थिति-सम्बन्धी बातो के बारे में बिलकुल अनजान हूं, इसलिए वह इन चिन्ताओं से उसे मुक्त ही रहने दे। "मैं नहीं जानता कि मेरी कोई सामाजिक स्थिति है," उसने कहा, "और अगर कोई है तो मुझे उसका लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है। क्या सामाजिक स्थिति का मतलब

यही नहीं होता कि दो या तीन हजार आदमियों से परिचय हो और उनको आप डिनर पर बुलाए ? मै आपको और आपकी पत्नी को जानता हू और मेरा परिचय मि० नियोशे से भी है, जिन्होंने पिछले बसन्त में फ्रेंच सिखाई थी। क्या मै आप लोगों को एक-दूसरे से परिचित कराने के लिए डिनर पर निमत्रिन कर सकता हूं ? अगर हा, तो आप लोग कल आइए।"

"यह तो आपने मेरे प्रति कृतज्ञता नही प्रकट की है," मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा, "मैने पिछले वर्ष आपको हर उस आदमी से मिलाया था, जिसे मै जानती थी।"

"हा, आपने मिलाया तो था ; यह तो मै बिलकुल ही भूल गया। लेकिन मैंने सोचा था कि आप यह चाहती थी कि मिलने के बाद मैं उन लोगों को भूल जाऊं" न्यूमैन ने अपने साधारण स्वर में जमा-जमाकर यह बात कही। उसके बात कहने के ढंग की यह विशेषता बहुधा परिलक्षित हो जाती थी। उसके बात करने के ढंग से कोई भी प्रेक्षक यह नहीं कह सकता था कि न्यूमैन रहस्यमय ढंग से अपनी बात में जानकारी के हास्यास्पद अभाव का प्रदर्शन कर रहा है या किसी बात को जानने के लिए विनयशीलता दिखला रहा है। "आपने तो मुझसे कहा था कि आपको वे लोग पसन्द नहीं हैं।"

"आह, जिस तरह से आप मेरी कही हुई बातों को याद रखते हैं, उसे सुनकर मुझे बड़ी खुशी होती है। लेकिन भविष्य में," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "मेरी प्रार्थना है कि मेरी सारी दुष्ट बातों को भुलाकर केवल अच्छी बातें ही याद रखें। ऐसा आप आसानी से कर सकेंगे और इससे आपकी स्मरण-शक्ति पर बेकार का बोझा भी नहीं पड़ेगा। लेकिन मैं आपको पहले से ही आगाह कर देना चाहती हूं कि अगर आपने अपने लिए कमरे तलाश करने का काम मेरे पति के सुपुर्द किया, तो आपको बड़ी डरावनी जगह मिलेगी।"

"डरावनी, डार्लिंग ?" ट्रिस्टरैम ने चिल्लाकर कहा।

"आज मैं अपने मुंह से कोई भी दुष्ट बात नहीं कहना चाहती ; अन्यथा मुझे और भी कठोर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए था।"

"न्यूमैन, क्या ख्याल है ? यह क्या कहतीं ?" ट्रिस्टरैम ने पूछा। "अगर वे अब कोशिश करें, तो वे काफी ज़ोर-ज़ोर से अपनी नाराज़गी दो या तीन भाषाओं में प्रकट कर सकती है ; यही बौद्धिक जीव होने का लाभ है। इस कारण यह हमेशा मुझसे आगे रहती हैं और इधर मेरी यह हालत है कि अगर मुझे कोसना पड़ जाए,

तो मैं ऐसा केवल अंग्रेजी में ही कर सकता हूं। जब मैं गुस्से से पगला जाता हूं, तो मुझे अपनी मातृभाषा का सहारा लेना पड़ता है। सच है, अंग्रेज़ी का मुकाबला और कोई भाषा नहीं कर सकती।''

न्यूमैन ने कहा कि मैं मेज-कुर्सियों के बारे में कुछ नहीं जानता और रहने के लिए ट्रिस्टरैम जो कुछ व्यवस्था कर देगा, उसे मैं आंख मूंदकर स्वीकार कर लूंगा। न्यूमैन का यह कथन कुछ अंशो में उसकी वास्तविक भावनाएं प्रकट करता था और कुछ अंशो में उदारता। उसे पता था कि इधर-उधर घूमकर मकान देखते फिरना, लोगों से खिड़कियां खुलवाना और अपने हाथ की छड़ी से सोफासैटों को दबा-दबाकर देखना, मकान-मालकिनों से बातें करना और यह पूछना कि ऊपर की मंज़िल में कौन रहता है, नीचे कौन रहता है—यह मनोरंजन ट्रिस्टरैम को बड़ा पसन्द था, और वह यह मौका ट्रिस्टरैम को ही देना चाहता था। इसका एक कारण यह भी था कि पिछले दिनों उनकी पुरानी मित्रता में कुछ कमी आई थी। इसके अलावा सोफासैटो, परदों आदि का कैसा रग हो या वे किस तरह के हों, इस सम्बन्ध में न्यूमैन की कोई विशेष रुचि नहीं थी ; उसे अपने आराम या सुविधा के लिए कुछ चीज़े अनिवार्य प्रतीत होती हो, ऐसा भी नहीं था। वह यह पसन्द करता था कि विलासिता और शान-शौकत का वातावरण हो, लेकिन उसका यह शौक कुछ बाह्य आडम्बरों से ही पूरा हो जाता था। उसे यह भी नहीं पता था कि गद्देदार कुर्सी में और बिना गद्दे की कुर्सी में क्या अन्तर होता है। वह कहीं भी अपने पैर फैलाकर बैठ सकता था, चाहे उस कुर्सी पर बैठने से आराम मिलता हो या नहीं। बड़े-बड़े कमरों में रहना, बड़े-बड़े कई कमरे किराये पर ले लेना और उनमें कई ऐसे यांत्रिक उपकरण लगवा लेना, जिनमें से आधे कभी काम में भी न आएं, यही शानदार मकान के सम्बन्ध में उसकी कल्पना थी। वह चाहता था कि कमरों में खूब रोशनी हो, वे रगे-चुने और उनकी छतें ऊंची-ऊंची हों। उसने एक बार कहा था कि कमरे ऐसे होने चाहिए, जिनमें आदमी की यही इच्छा रहे कि वह अपनी टोपी लगाए रहे। बाकी के लिए वह किसी भी संभ्रान्त व्यक्ति की यह बात मानने को तैयार था कि मकान की हर चीज़ 'बड़ी सुन्दर' है। इसी हिसाब से ट्रिस्टरैम ने एक ऐसा मकान खोज लिया, जिसके लिए यह विशेषण उदारतापूर्वक प्रयुक्त किया जा सकता था। न्यूमैन का नया फ्लैट हासमान मार्ग स्थित एक मकान की पहली मंज़िल पर था और उसमें बहुत-से कमरे थे। फर्श से लेकर छत तक उसकी

दीवारों पर गहरा सुनहला रंग पुता था। दरवाजों पर तरह-तरह की हलके रंगों के साटन के परदे थे और जगह-जगह दर्पण और घड़िया लगी हुई थीं। न्यूमैन को यह फ्लैट बड़ा ही शानदार प्रतीत हुआ। उसने ट्रिस्टरैम को हृदय से धन्यवाद दिया, और तुरन्त फ्लैट में जाकर रहने लगा। इसके बाद लगभग तीन महीने तक उसका एक ट्रंक ड्राइगरूम में ही रखा रहा।

एक दिन मिसेज ट्रिस्टरैम ने उसे बताया कि मेरी सुन्दर महिला-मित्र, मदाम द सांत्रे, गांव से वापस लौट आई है; और उनसे तीन दिन पहले सेंट सलपीस के चर्च से बाहर आते समय मुलाकात हुई थी। मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने बताया कि मैं इस चर्च के पासवाले मोहल्ले में एक गोटा-किनारी का काम करनेवाले कारीगर की तलाश में गई थी, जिसकी कार्य-कुशलता के बारे में मैंने काफी तारीफ सुन रखी थी।

"और वे आंखें कैसी थीं?" न्यूमैन ने फिर कहा।

"अगर आप जानना ही चाहते है, तो मै बता दूं कि वे आखें रोने की वजह से लाल हो गई थीं।" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा। "वे अपने पादरी के पास गई थीं, 'कन्फेशन' के लिए।"

"यह बात कुछ समझ में नही आई, क्योंकि आपने एक ओर तो यह कह रखा है कि मदाम द सान्त्रे बड़ी मासूम है," न्यूमैन ने कहा, "और दूसरी ओर आप कहती हैं कि वे अपने पापों की स्वीकारोक्ति के लिए पादरी के पास 'कन्फेशन' करने गई थीं।"

"वे पाप नहीं थे; बल्कि उनके हृदय का दुःख था।"

"यह आप कैसे जानती है?"

"उन्होंने मुझसे कहा कि मै घर जाकर उनसे मिलूंगी और आज सुबह मै वहां गयी थी।"

"और उनको क्या दुःख है?"

"यह मैंने नही पूछा। उनके साथ बातचीत करने में पता नही क्यों कोई भी हो उसे बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। लेकिन उनके दुःख को मैंने आसानी से समझ लिया। वे अपनी दुष्ट बुढ़िया मां और अपने भाई की कठोरता से तंग हैं। वे उनके पीछे हाथ धोकर पड़े है। लेकिन मैं उनको क्षमा करने के लिए तैयार हूं, क्योंकि, जैसा मैं बता चुकी हूं, मदाम द सांत्रे पुण्यात्मा हैं और उनके सन्तों के गुण तभी

पुष्पित होंगे, जब उनपर ज़ुल्म ढाए जाएंगे। इन्हींसे वे पूर्णता प्राप्त करेंगी।"

"उनके बारे में यह आपने बड़ा सन्तोषजनक सिद्धान्त बता दिया। आशा है इसे आप बड़े-बूढ़ों को नहीं बताएंगी। लेकिन वे अपने भाई और मां को डांट-फटकार का अवसर क्यों देती हैं ? क्या वे खुद-मुख्तार नहीं हैं ?"

"कानूनी दृष्टि से मेरा ख्याल है कि वे स्वतंत्र हैं ; लेकिन नैतिक दृष्टि से नहीं। फ्रांस में आप अपनी मां से चाहे, वह जो भी कहे, किसी भी बात के लिए 'ना' नहीं कर सकते। फिर मां चाहे दुनिया की सबसे खूसट बुढ़िया ही क्यों न हो और वह चाहे आपके जीवन को नरकतुल्य ही क्यों न बना दे। आखिर वह पूज्या मां है और आपको उसकी निन्दा करने का अधिकार नहीं है। आपका कर्तव्य केवल उसकी आज्ञा का पालन करना है। इसका उज्ज्वल पक्ष भी है। मदाम द सांत्रे नतमस्तक अपनी मां की सारी इच्छाओं का पालन करती है।"

"क्या वे अपने भाई से भी पीछा नही छुड़ा सकतीं ?"

"उनका भाई घर का मुखिया है। वह घर का मालिक है। इन लोगों के यहां परिवार को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है ; हर काम अपनी खुशी या प्रसन्नता के लिए नही, बल्कि परिवार के हित के लिए किया जाता है।"

"मै सोचता हूं, पता नहीं, मेरा परिवार मुझसे क्या कराना पसन्द करेगा।" ट्रिस्टरैम ने ज़ोर से कहा।

"काश, तुम्हारे भी परिवार होता।" पत्नी ने उत्तर दिया।

"लेकिन वे उस बेचारी से चाहते क्या है ?" न्यूमैन ने पूछा।

"दूसरा विवाह। वे लोग ज़्यादा अमीर नही हैं और उनकी इच्छा है कि परिवार में कुछ और सम्पत्ति तथा धन आ जाए।"

"आपके लिए यह बड़ा अच्छा मौका है, दोस्त !" ट्रिस्टरैम ने कहा।

"और मदाम द सान्त्रे को आपत्ति है," न्यूमैन ने अपनी बात जारी रखी।

"उन्हें एक बार बेचा जा चुका है, इसलिए स्वाभाविक है कि वे दूसरी बार बेचे जाने पर आपत्ति करें। ऐसा लगता है कि पहली बार का सौदा लाभदायी साबित नही हुआ ; मो० द सान्त्रे बहुत कम जायदाद छोड़कर मरे।"

"और अब वे लोग उनकी किससे शादी करना चाहते है ?"

"मैने सोचा कि इस बारे में मैं उनसे कुछ न पूछूं, यही अच्छा है ; लेकिन आप विश्वास रखिए, ज़रूर ही कोई खूसट नवाब या सूखा-साखा कोई ड्यूक होगा।"

"यह है मिसेज़ ट्रिस्टरैम की होशियारी !" उनके पति ने ऊची आवाज़ में कहा, "ज़रा इनकी कल्पना का विराट रूप तो देखिए । इन्होंने उस बेचारी से एक सवाल नही पूछा है—क्योंकि कुछ पूछना भद्दा लगता—और फिर भी इन्हें सब कुछ पता है । इनकी अंगुलियो पर मदाम द सान्त्रे के विवाह का सारा इतिहास है । प्यारी क्लेयर की लटें खुली है, उसकी आंखों से आंसू बह रहे हैं और वह इनके घुटनों से लगी हुई है और उसके घरवाले हाथ में बल्लम और डण्डे तथा गरम की हुई लाल लोहे की सलाखें लिए खड़े हैं । जैसे ही वह ड्यूक से शादी करने से इंकार करेगी वे उसपर हमला बोल देंगे । जबकि शायद सचाई इतनी-सी हो कि मदाम द सांत्रे ने किसी दुकान से हैट खरीदे हों और उसके बिल चुकाने के विषय में कुछ कहासुनी हो गई हो या घरवालों ने ओपेरा न जाने दिया हो ।"

न्यूमैन ने ट्रिस्टरैम को देखा, फिर उसकी पत्नी पर नज़र डाली । दोनों ही बार उसकी नज़रों में दोनों पक्षों पर अविश्वास का भाव था । "क्या सचमुच आपका यह मतलब है," उसने मिसेज ट्रिस्टरैम से पूछा, "कि आपकी मित्र को ज़बर्दस्ती विवाह करने के लिए मजबूर किया जा रहा है ?"

"मेरा ख्याल है कि सम्भवतः यही बात है । वे लोग इस प्रकार की बात कर सकते है ।"

"यह तो एक नाटक की तरह लगता है," न्यूमैन ने कहा, "उनका जो काला-सा मकान है, उसे देखने से ही ऐसा लगता है कि इसमें पता नहीं क्या-क्या ज़ुल्म ढाए गए होंगे और आगे भी ढाए जा सकते है ।"

"गांव में उनका इससे भी अधिक डरावना मकान है । यह बात मुझे मदाम द सांत्रे ही ने बताई है । और मेरा ख्याल है कि अब की बार गर्मियों में गांव के ही मकान में दूसरी शादी करने की योजना बनाई गई होगी ।"

"बनाई गई होगी—इन शब्दों पर ज़रा ध्यान दीजिए ।" ट्रिस्टरैम ने कहा ।

"आखिर," न्यूमैन ने कुछ देर चुप रहने के बाद सुझाव दिया, "कि उनके दुःख का कुछ और भी कारण हो सकता है ।"

"अगर कोई दूसरा कारण है, तो फिर जो कारण मैंने बताया है, वह उससे भी भयंकर होगा," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने बड़ी दृढ़ता से कहा ।

न्यूमैन कुछ देर चुप रहा और ऐसा लगा कि वह अपने विचारों में ही खो

गया है। "क्या यह सम्भव है," अन्ततः उसने पूछा, "क्या लोग इस तरह की ज़्यादती भी करते हैं ? क्या अबलाओं को उन व्यक्तियों से विवाह करने के लिए विवश किया जाता है, जिनसे वे घृणा करती हों ?"

"दुनिया-भर में अबला स्त्रियों को कष्ट भोगने पड़ते हैं," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा। "हर जगह बहुत-से ज़ुल्म ढाए जाते हैं।"

"ऐसे बहुत-से काम न्यूयार्क में भी होते हैं," ट्रिस्टरैम ने कहा। "लड़कियों को तंग किया जाता है, डांटा-फटकारा जाता है, लालच दिया जाता है या फिर तीनों ही बातों से उन्हें ऐसे व्यक्तियों से शादी करने के लिए मजबूर किया जाता है, जो महादुष्ट होते हैं। फिफ्थ एवेन्यू में होनेवाली इस तरह की बातों का कोई अन्त ही नही है। इसके अलावा वहां और भी बहुत-सी बुरी बातें होती रहती है। बस, किसीकी इस तरह घटनाओं के भण्डाफोड़ करने की आवश्यकता है।"

"मै नही मानता !" न्यूमैन ने बड़ी गम्भीरता से खण्डन किया। "मैं नहीं मानता कि अमरीका में लड़कियों को इस तरह मजबूर किया जाता है। मैं यह भी मानने को तैयार नहीं हूं कि अमरीका के इतिहास में ऐसे एक दर्जन भी उदाहरण मिल सकेंगे, जहां स्त्रियों पर इस तरह ज़ुल्म किया गया हो।"

"सुनिए, इन गरुड़ देवता से शांति का सन्देश सुनिए !" ट्रिस्टरैम ने ऊंची आवाज़ में कहा।

"इन गरुड़ देवता को अपने पंख का उपयोग करने चाहिए," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "मदाम द सांत्रे को बचाने के लिए उड़कर वहां पहुंचना चाहिए !"

"बचाने के लिए ?"

"हां, झपट्टा मारकर नीचे जाइए और उसे अपने पंजों में दबाकर उठा लाइए। उससे विवाह कर लीजिए।"

कुछ क्षणों तक न्यूमैन ने कोई उत्तर नहीं दिया ; फिर बोला, "मेरा ख्याल है कि विवाह के बारे में घरवालों ने उनसे काफी कुछ कहा-सुना होगा," उसने कहा, "अब उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार करने का यही तरीका है कि उनके मुंह पर तारीफ की जाए, सराहा जाए और उनके सामने विवाह की बात भूलकर भी न की जाए। लेकिन जो व्यवहार उनके साथ इस वक्त किया जा रहा है, वह बड़ा ही गन्दा है," न्यूमैन कह रहा था, "मुझे यह सब सुनकर बड़ा क्रोध आ रहा है।"

लेकिन ये बातें न्यूमैन को एक से भी ज़्यादा बार सुननी पड़ीं। मिसेज़ ट्रिस्टरैम मदाम द सान्त्रे से फिर मिली और अपनी मुलाकात में उन्होंने अपनी मित्र को बड़ा दु:खी पाया। लेकिन इन मुलाकातों में मदाम द सान्त्रे की आंखों में आंसू नहीं थे, उनकी आंखें बिलकुल साफ थीं और उनसे शांति झलकती थी। मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "मदाम द सान्त्रे अत्यन्त उदासीन और 'निराश' हो गई है।" उन्होंने यह भी बताया कि यह कहने पर कि मेरे मित्र मि० न्यूमैन पेरिस वापस लौट आए है और मदाम द सान्त्रे से परिचय बढ़ाना चाहते हैं, उस सुन्दरी के निराश चेहरे पर मुस्कराहट आ गई और उसने कहा कि मुझे खेद है कि पिछले वसन्त में जब वे हमारे घर आए, तो मैं नहीं थी और उसने आशा प्रकट की कि इससे मि० न्यूमैन बिलकुल ही निराश न हो गए होंगे। मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा, "मैंने आपके बारे मे कुछ और बातें भी मदाम द सान्त्रे को बताई हैं।"

"यह आपने अच्छा किया," न्यूमैन ने शान्त भाव से कहा। "मैं चाहूंगा कि लोग मेरे बारे में जानें।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद एक दिन सांझ के धुंधलके में न्यूमैन फिर रू द ल यूनिवर्सिते गया। जब उसने होतेल द बेलगार्द के बाहर खड़े हृष्ट-पुष्ट दरबान को अपना कार्ड अन्दर देने के लिए कहा तो अंधेरा हो चुका था। उसे बताया गया कि मदाम द सान्त्रे घर में हैं और वह सामने का मैदान पार करके सुदूरवर्ती दरवाज़े से अन्दर घुसा। उसे एक लम्बे, अंधेरे और ठण्डे गलियारे से पत्थर की चौड़ी सीढ़ियों से ऊपर ले जाया गया। इन सीढ़ियों के किनारे लोहे की रेलिंग थी। सीढ़ियां चढ़कर वह दूसरी मंज़िल पर एक कमरे के पास पहुंचा। अन्दर खबर दी गई, कुछ ही देर बाद उसने अपने-आपको एक कक्ष में खड़ा पाया, जिसकी दीवारों पर लकड़ी चढ़ी हुई थी। कमरे में एक महिला और एक सज्जन आतिशदान के सामने बैठे थे। यह सज्जन सिगरेट पी रहे थे। कमरे में कुछ मोमबत्तियां जल रही थीं। इन मोमबत्तियों और आतिशदान में जलनेवाली आग की रोशनी के सिवा और कोई प्रकाश न था। दोनों ही व्यक्ति न्यूमैन का स्वागत करने के लिए उठ खड़े हुए, जिनमें से एक को आतिशदान की रोशनी मे न्यूमैन ने पहचान लिया—मदाम द सान्त्रे थीं। उन्होंने मुस्कराकर अपना हाथ न्यूमैन की तरफ बढ़ा दिया। उनकी हंसी से कमरा ज्योतित हो उठा। अपने साथ बैठे पुरुष की तरफ इशारा करते हुए मदाम द सान्त्रे ने अत्यन्त कोमल कण्ठ से कहा, "यह मेरे भाई हैं।" उन

सज्जन ने न्यूमैन का खुले हृदय और मित्रतापूर्ण ढंग से स्वागत किया और तब हमारे नायक को ख्याल आया कि यह वही युवक है, जिससे इस मकान के अहाते में पहली मुलाकात के समय बातचीत हुई थी और यह व्यक्ति उस समय भी उन्हें बड़ा सज्जन प्रतीत हुआ था।

"मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने आपके बारे में मुझे बहुत कुछ बताया है," मदाम द सान्त्रे ने हलके-से कहा और वे फिर अपनी कुर्सी पर बैठ गईं।

न्यूमैन मदाम द सान्त्रे के बैठने के बाद बैठा और सोचने लगा कि आखिर वह यहां किस काम से आया है। उसके हृदय में ऐसा असाधारण भाव उत्पन्न हो रहा था, जैसे वह दुनिया के एक बड़े अनोखे हिस्से में चला आया हो। आम तौर पर वह किसी भी प्रकार के खतरे की कल्पना नहीं करता था और न ही उसकी आदत किसी भयावह घटना की भविष्यवाणी करने की थी। इस अवसर पर वह इन लोगों के बीच घबरा भी नहीं रहा था। न वह डरपोक था और न धृष्ट। एक ओर वह अपने प्रति बड़ा सहानुभूति का रवैया अपनाए था और दूसरी ओर सारी दुनिया के प्रति वह अपने हसमुख और सहज व्यवहार से पेश आना चाहता था। लेकिन कभी-कभी उसकी अपनी कुशलता, उसके स्वभाव की सहजता को कम कर देती थी; और इस बात के बावजूद कि मैं हर स्थिति का अत्यन्त सहज ढंग से सामना करूंगा, न्यूमैन यह महसूस करने पर मजबूर हो जाता था कि कुछ बातें अन्य बातों की तरह सरल नहीं हुआ करतीं। उसे लग रहा था कि तेज़ी से सीढ़ियों पर ऊपर चढ़ते समय जिस तरह कोई बीच की एक सीढ़ी छोड़ दे और फिर अगली सीढ़ी के लिए पैर से टटोले, कुछ-कुछ इसी तरह की स्थिति उसकी हो रही थी। यह अजनबी सुन्दरी आतिशदान के सामने बैठी अपने भाई से बातें कर रही थी और बाहर से शुष्क दिखलाई पड़नेवाले इस घर की सफेद गहराइयों में डूबी हुई है—ऐसी महिला से उसे क्या कहना है। वह न्यूमैन को एक अजीब रहस्य में लिपटी-सी लग रही थी, उसने रहस्यआवृत इस सुन्दरी का परदा क्यों हटाया है? एक क्षण के लिए न्यूमैन को लगा कि वह ऐसी जगह आ गया है, जो एक गहरे समुद्र की तरह और इस समुद्र की गहराइयों में अपने-आपको डूबने से बचाने के लिए उसे तुरन्त पूरी शक्ति से प्रयत्न करना चाहिए। इस बीच वह मदाम द सान्त्रे की ओर देखता रहा और वे कुर्सी पर बैठने की प्रक्रिया में थीं। इसके बाद उन्होंने अपने लम्बे परिधान को बटोरकर कुर्सी की तरफ खींचा और

तब फिर न्यूमैन की ओर देखा। दोनों की आंखें मिलीं; एक क्षण बाद ही मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन पर से अपनी आंखें हटा लीं और अपने भाई को इशारा किया कि वह आग में एक बड़ी लकड़ी और डाल दे। लेकिन पहली ही नज़र के बाद न्यूमैन को अटपटेपन के जिस आवेग की अनुभूति हुई थी, वह समाप्त हो गई। यह आवेग पहला और अंतिम था। उसकी आदत थी कि वह बहुधा अपने पैर आगे की तरफ फैला लेता था। यह इस बात का चिह्न था कि मानसिक स्तर पर पूरे घटना-स्थल पर उसका काबू है और उसने यही किया। मदाम द सान्त्रे से पहली मुलाकात में उनके बारे में उसने जो धारणा बनाई थी, वह फिर वापस लौट आई। लेकिन इस बार वह पहले से अधिक गहरी थी। मदाम द सान्त्रे बड़ी अच्छी लग रही थीं, बड़ी प्रिय लग रही थीं; न्यूमैन ने उस सुन्दर पुस्तक के पहले अध्याय को खोल दिया था और वह प्रथम पंक्तियों को ध्यान से पढ़ रहा था।

मदाम द सान्त्रे ने कई प्रश्न [illegible] मिसेज़ ट्रिस्टरैम से इधर कब मुलाकात की, पेरिस आए कितने दिन हो गए, पेरिस में कितने दिन रहिएगा, यह शहर कैसा लगा? मदाम द सान्त्रे अंग्रेज़ी में बात कर रही थीं और उनका उच्चारण स्पष्टत: ब्रिटिश लग रहा था। न्यूमैन को यूरोप आने के बाद ऐसा लगा था कि अंग्रेज़ी यहां बिलकुल विदेशी भाषा है, लेकिन मदाम द सान्त्रे से बात करने के बाद न्यूमैन को अंग्रेज़ी और भी अच्छी लगने लगी। कभी-कभी मदाम द सान्त्रे के उच्चारण में कुछ अजनबीपन-सा लगता, लेकिन दस मिनट बाद न्यूमैन इस कोमल खुरदुरेपन का अभ्यस्त हो गया। वह बातचीत का आनन्द लेने लगा और वह इस बात पर आश्चर्य करने लगा कि एक भूल भी कितनी अच्छी साबित हुई है।

"आपका देश बड़ा सुन्दर है," मदाम द सान्त्रे ने कहा।

"ओह, बड़ा शानदार है!" न्यूमैन ने कहा। "आपको चाहिए कि वहां जाएं।"

"मैं कभी नहीं देख सकूंगी," मदाम द सान्त्रे ने मुस्कराते हुए कहा।

"क्यों नहीं?" न्यूमैन ने पूछा।

"क्योंकि मैं यात्रा नही करती; विशेष रूप से इतनी लम्बी।"

"लेकिन कभी-कभी तो बाहर जाती हैं; आप हमेशा तो यहां नहीं रहतीं?"

"हां, मैं गर्मियों में यहां से कुछ दूर देहात चली जाती हूं।"

न्यूमैन कुछ और पूछना चाहता था, कुछ निजी बात, लेकिन वह क्या पूछे,

यह नहीं समझ पा रहा था। "आपको यहां एकान्त नहीं लगता ?" उसने कहा, "यह जगह मुख्य सड़क से इतनी दूर है !" वह कहना चाहता था कि यह जगह 'विषादपूर्ण'-सी लगती है, लेकिन उसने सोचा कि ऐसा कहना अशिष्टता होगी।

"हां, यह जगह बड़ी शान्त है," मदाम द सान्त्रे ने कहा; "लेकिन हम यह जगह पसन्द करते हैं।"

"आह, आपको यह जगह पसन्द है," न्यूमैन ने धीरे से वे शब्द दोहराए।

"इसके अलावा मैं सारे जीवन यहां रही हूं।"

"आप सारे जीवन यहां रही हैं," न्यूमैन ने उसी ढंग से फिर कहा।

"मैं यहां पैदा हुई थी, मुझसे पहले यहां मेरे पिता पैदा हुए थे, उनसे भी पहले मेरे दादा का जन्म और मेरे बड़दादा का जन्म यहां हुआ था। क्यों वेलेन्तीन, है न ?" और मदाम द सान्त्रे ने अपने भाई से समर्थन करने का अनुरोध किया।

"हां, हमारी यह पारिवारिक परम्परा है। सब बच्चे इसी घर में जनमे हैं।" युवक ने हंसते हुए कहा और उसने उठकर सिगरेट का बचा हुआ हिस्सा आग में फेंक दिया। और चिमनी का सहारा लेकर खड़ा हो गया। अगर वहां कोई प्रेक्षक होता, तो वह देखता कि यह सज्जन न्यूमैन को और ज्यादा अच्छी तरह देखने का प्रयास कर रहे हैं। जिस समय न्यूमैन अपनी मूंछों पर थपकी दे रहा था, उस समय वे चुपचाप और लोगों की आंखें बचाकर उसे देख रहे थे।

"तो आपका मकान तो बड़ा प्राचीन है," न्यूमैन ने कहा।

"भाई, कितना पुराना होगा ?" मदाम द सान्त्रे ने पूछा।

युवक ने दो मोमबत्तियां 'मेंटलपीस' पर से उठा लीं और इनमें से प्रत्येक को अपने दोनों हाथों में लेकर ऊंचा किया तथा कमरे की 'कार्निश' के ऊपर, चिमनी से भी ऊपर देखने लगा। कमरे के ऊपर का हिस्सा सफेद संगमरमर का था। वह पुराने ढंग के नक्काशी के काम का था, जो पिछली शताब्दी में वास्तुकला का विशेष अंग थीं। लेकिन उसके ऊपर इससे भी पहले के समय का लकड़ी का काम था, जिसपर सफेद रंग से पुताई की गई थी। यह सफेद रंग कुछ-कुछ पीला हो चला था और उसके आसपास जो सुनहली रेखाएं थीं, वे भी उखड़-सी गई थीं। सबसे ऊपर कुछ अंक खुदे थे। यहीं कवच जैसी आकृति की पट्टी पर उभरे अक्षरों में लिखा था—१६२७। "देखिए यही तारीख है," युवक ने कहा। "आप अपने हिसाब से इसे प्राचीन या अर्वाचीन, जो चाहें कह सकते हैं।"

"यहां आकर," न्यूमैन ने कहा, "आदमी के दृष्टिकोण में काफी परिवर्तन हो जाता है।" और उसने अपना सिर ज़रा झटके के साथ पीछे किया और कमरे में चारों तरफ निगाह दौड़ाई। "आपके घर का वास्तु-शिल्प बड़ी अनोखी शैली का है," उसने कहा।

"क्या आप वास्तुकला में रुचि रखते हैं ?" चिमनी के पास खड़े युवक ने पूछा।

"इन गर्मियों में," न्यूमैन ने कहा, "जहां तक मैं गिन सकता हूं मैंने कोई चार सौ सत्तर चर्च देखे हैं। क्या आप वास्तुकला में इसे मेरी रुचि कहेंगे ?"

"सम्भवत: आप धर्मशास्त्र में रुचि रखते हैं," युवक ने कहा।

"विशेष नहीं। मदाम, आप रोमन कैथोलिक हैं ?" और वह मदाम द सान्त्रे की तरफ मुड़ गया।

"जी हां," युवती ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

मदाम द सान्त्रे के कण्ठ-स्वर की गम्भीरता की न्यूमैन पर यह प्रतिक्रिया हुई, जैसी किसीने उससे चुप रहने के लिए कहा हो, उसने फिर अपना सिर पीछे की तरफ झटकारा और चारों तरफ कमरे में देखने लगा। "आपने ऊपर की तारीख कभी नहीं देखी ?" उसने पूछा।

मदाम द सान्त्रे एक क्षण के लिए झिझकीं और फिर बोलीं, "जब छोटी थी, तब देखी थी।"

उनके भाई न्यूमैन का इधर-उधर नज़रें दौड़ाना देख रहे थे। "शायद आप हमारा घर घूम-फिरकर देखना चाहें," उन्होंने कहा।

न्यूमैन ने अपनी आंखें ऊपर से धीरे-धीरे नीचे लाते हुए युवक की ओर देखा; उसे लगा कि चिमनी के पास खड़ा युवक उसके ऊपर व्यंग्य कर रहा है। वह व्यक्ति बड़ा सुन्दर था, उसके चेहरे पर तिरछी मुस्कराहट थी और मूंछें घुमावदार थीं और आंखों में चमक थी। 'इस धृष्ट की ऐसी की तैसी,' न्यूमैन ने अपने मन में यह कहना चाहा। 'कम्बख्त यह किस बात पर हंस रहा है ?' उसने फिर मदाम द सान्त्रे को देखा; वे अपनी आंखें फर्श पर गड़ाए बैठी थीं। अब उन्होंने अपनी नज़र उठाई और दोनों की नजरें मिलीं। इसके बाद उन्होंने अपने भाई की ओर देखा। न्यूमैन फिर युवक की ओर देखने लगा। इस बार उसे लगा कि युवक का चेहरा अपनी बहिन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। यह बात युवक के पक्ष में थी। और इस तरह

हमारे नायक की काउण्ट वेलेन्तीन के सम्बन्ध में पहली धारणा अनुकूल बनी। अविश्वास की भावना लुप्त हो गई और न्यूमैन ने कहा "हां, मुझे घर को घूम-फ़िरकर देखने में प्रसन्नता होगी।"

युवक कहकहा लगाकर हंस पड़ा और उसने एक हाथ से मोमबत्ती उठा ली। "बहुत अच्छा रहेगा, बहुत ही अच्छा!" युवक ने ज़ोरों से कहा, "तो आइए, चलें।"

लेकिन मदाम द सान्त्रे जल्दी से उठ खड़ी हुई और उन्होंने अपने भाई की बांह पकड़ ली। "आह, वेलेन्तीन!" उन्होंने कहा। "तुम क्या करना चाहते हो?"

"मैं मि० न्यूमैन को अपना घर दिखलाना चाहता हूं, बड़ा आनन्द आएगा।"

मदाम द सान्त्रे अपना हाथ अपने भाई की बांह पर रखे रहीं और न्यूमैन की तरफ मुस्कराते हुए मुडकर बोली। "आप इसके साथ मत जाइए," उन्होंने कहा, "आपको तनिक भी आनन्द नहीं आएगा। अन्य मकानों की तरह यह मकान भी पुराना-धुराना और बदबूदार है।"

"इस मकान में बडी अनोखी-अनोखी चीजें हैं," काउण्ट ने अपनी बहिन का विरोध करते हुए कहा। "इसके अलावा मैं मकान दिखाना चाहता हूं; ऐसा मौका कब-कब मिलता है!"

"तुम बड़े दुष्ट हो," मदाम द सान्त्रे ने जवाब दिया।

"बिना हिम्मत किए कुछ नहीं हाथ आता।" युवक ने ज़रा ऊंचे कण्ठ से कहा। "क्या आप मेरे साथ चल रहे हैं?"

अब मदाम द सान्त्रे न्यूमैन की तरफ बढ़ आईं और अपने दोनों हाथ एक-दूसरे से पकड़कर उन्होंने अत्यन्त कोमल ढग से मुस्कराते हुए कहा, "क्या आप यहां मेरे पास आग के सामने बैठकर बातचीत करना पसन्द नहीं करेंगे? मेरे ख्याल से अंधेरी कोठरियों और बरामदों में मेरे भाई के साथ ठोकरें खाने की बजाय मुझसे बातचीत करना बेहतर होगा!"

"सैकड़ों गुना!" न्यूमैन ने कहा। "हम लोग मकान किसी और दिन देख लेंगे।"

युवक ने कृत्रिम गम्भीरता से मोमबत्ती यथास्थान रख दी और अपना सिर हिलाते हुए कहा, "आह, आपने एक बहुत बड़ी योजना विफल कर दी।"

'योजना? मैं नही समझा," न्यूमैन ने कहा।

"तब तो आप अपना पार्ट और भी बेहतर ढंग से अदा करते। सम्भवतः किसी

दिन मुझे अपनी बात स्पष्ट करने का मौका मिल सकेगा।"

"अच्छा, अब चुप रहो और चाय लाने के लिए घण्टी बजाओ।" मदाम द सान्त्रे ने आदेश दिया।

युवक ने आदेश का पालन किया और एक नौकर चाय ले आया और उसने ट्रे एक छोटी मेज पर रख दी। इसके बाद वह चला गया। मदाम द सान्त्रे चाय बनाने में व्यस्त हो गईं। अभी उन्होंने चाय डालनी शुरू ही की थी कि कमरे का दरवाज़ा खुला और एक महिला अन्दर घुस आई। उनके कपड़ों से सरसराहट की आवाज़ हो रही थी। उन्होंने न्यूमैन को घूरकर देखा और थोड़ा सिर झुका लिया तथा उनके मुंह से निकला, "मोंश्यू!" और इसके बाद वे शीघ्रता से मदाम द सान्त्रे के पास पहुंचीं और चुम्बन के लिए अपना माथा उनके आगे कर दिया। मदाम द सान्त्रे ने अभिवादन किया और चाय बनाना जारी रखा। नवागत महिला तरुणावस्था की सुन्दरी थी। वे बौनेट लगाए थीं और लबादा पहने थी। उनके पीछे काफी लम्बा शाही ढंग का पल्ला था। आते ही उन्होंने फ्रेंच में जल्दी-जल्दी बातें करना शुरू कर दिया। "ओह, रानी, ईश्वर के लिए मुझे जल्दी से चाय दो। मैं बुरी तरह थक गई हूं और मेरा दम निकला जा रहा है।"

न्यूमैन को उनकी बात समझने में कठिनाई अनुभव हो रही थी; वे मो० नियोशे की तुलना में बहुत अस्पष्ट ढंग से फ्रेंच बोल रही थीं।

"ये मेरी भाभी हैं," काउण्ट वेलेंतीन ने न्यूमैन की तरफ ज़रा झुककर कहा।

"बड़ी सुन्दर हैं," न्यूमैन ने कहा।

"अतीव सुन्दरी," युवक ने उत्तर दिया और इस बार न्यूमैन को फिर सन्देह हुआ कि वह व्यंग्य कर रहा है।

युवक की भाभी घूमकर आतिशदान के दूसरी तरफ वाले हिस्से में आ गईं। वे चाय का प्याला अपने हाथ में बड़ी दूर लिए हुए थीं, जिससे चाय गलती से उनके कपड़ों पर न गिर जाए और बार-बार संभलने के लिए चीख पड़ती थीं। उन्होंने चाय का प्याला 'मेंटलपीस' पर रख दिया और अपने सिर पर बंधा रूमाल खोलने लगीं। इसके बाद उन्होंने अपने दस्ताने उतारे। इस बीच वे बराबर न्यूमैन को देखती रहीं।

काउण्ट वेलेंतीन ने कुछ कृत्रिम स्नेह का प्रदर्शन करते हुए पूछा, "क्या मैं

आपकी कुछ सेवा कर सकता हूं ?"

"आपसे परिचय कराइए," युवक की भाभी ने कहा।

युवक ने उत्तर दिया, "यह मि० न्यूमैन हैं !"

"मोंश्यू, मुझे क्षमा कीजिएगा, मैं झुककर आपका अभिवादन नहीं कर सकती, क्योंकि अगर मैंने ऐसा किया, तो चाय फैल जाएगी।" महिला ने कहा। इसके बाद धीमे स्वर में अपने देवर से फ्रेंच में बोलीं, "तो क्लेयर अब इस तरह अजनबी लोगों से मिलने लगी है ?"

"जाहिर है !" युवक ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया। न्यूमैन क्षण-भर खड़ा रहा और फिर मदाम द सान्त्रे की ओर चला गया। मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन की तरफ इस तरह देखा जैसे वे कुछ कहने की सोच रही हों। लेकिन ऐसा लगा कि वे सोच नहीं पा रही है ; इसलिए वे केवल मुस्कुरा-भर दीं। न्यूमैन मदाम के पास ही बैठ गया और उन्होंने उसे चाय का प्याला पकड़ा दिया। कुछ देर वे लोग चाय के संबन्ध में बात करते रहे और इस बीच न्यूमैन उन्हें देखता रहा। उसे मिसेज ट्रिस्टरैम की मदाम द सान्त्रे के सम्बन्ध में कही गई 'पूर्णता' की बात याद थी। और इसके साथ ही उसे लगा कि उसने जितनी भी अच्छी बातें सोच रखी हैं, वे सब मदाम द सान्त्रे में हैं। इन सब कारणों से उसे न केवल मदाम के व्यक्तित्व पर पूर्ण विश्वास था, बल्कि उसे उनकी तरफ देखते समय किसी प्रकार की बेचैनी का भाव भी नहीं था। पहली बार जब न्यूमैन ने मदाम द सान्त्रे को देखा था, तब से ही उसपर उनका बड़ा अनुकूल असर पड़ा था। वे सुन्दर थीं, लेकिन ऐसी अतीव सुन्दरी नहीं कि आंखें चौंधिया जाएं और उनकी तरफ देखा न जा सके। मदाम द सान्त्रे लम्बी थी और उनका बदन छरहरा था। बाल घने थे। माथा चौड़ा और नाक-नक्श में नुकीलापन था। उनकी स्वच्छ-सफेद आंखें बड़ी ही भावपूर्ण थीं ; उनमें कोमलता और बुद्धिमत्ता दोनों ही बातें थीं और ये आंखें न्यूमैन को बड़ी प्रिय लगती थीं। लेकिन उन आंखों में शान-शौकत की गहराई नही थी—रंगीनियां नहीं थीं—जिनकी चमक अक्सर प्रसिद्ध और जो अतीव सुन्दर स्त्रियों की भवों पर दिखलाई पड़ती है। मदाम द सान्त्रे अपेक्षाकृत क्षीण थीं और वे अपनी उम्र से भी कम लगती थीं। उनके सारे व्यक्तित्व में तरुणाई और वयस्कता का मिश्रण झलकता था। छरहरापन था, लेकिन वह बुरा नहीं लगता था। गाम्भीर्य था, लेकिन बहुत अधिक शर्मीलापन नहीं था। चेहरे से अवयस्कता और अनुभवजन्य शांति का भाव झलकता था।

न्यूमैन से फिर बात करना शुरू कर दिया। अपनी बात फिर वहीं से शुरू करते हुए जहां से वह छूट गई थी, मदाम द सान्त्रे ने पूछा, "आप अपने देश में क्या बहुत व्यस्त रहते थे ?"

"मैं व्यापार करता था। पन्द्रह साल की उम्र से मैंने व्यापार करना शुरू कर दिया था।"

"आप कौन-सा व्यापार करते थे ?" मदाम द बेलगार्द ने पूछा।

मदाम द बेलगार्द निश्चय ही मदाम द सान्त्रे से ज्यादा सुन्दर नहीं थीं।

"मैंने सभी तरह का व्यापार किया है," न्यूमैन ने कहा। एक समय मैंने चमड़ा बेचने का काम किया था ; दूसरी बार मैंने कपड़े धोने के टबों के बनाने का काम किया था।"

मदाम द बेलगार्द ने अपना मुंह बिचका लिया। "चमड़ा ? यह मुझे पसन्द नहीं आया। हा, कपड़े धोने के टब बनाने का काम बेहतर है। मुझे साबुन की खुशबू अच्छी लगती है। मुझे आशा है कि आपने उनसे काफी धन कमाया होगा।" उन्होंने यह बात इस ढंग से कह डाली, जैसे वह कोई ऐसी स्त्री हों, जो किसी बात के दिमाग में आते ही, बिना और सोचे-समझे उसे तुरन्त कह डालती हों। उनकी भाषा में फ्रेंच उच्चारण का काफी असर था।

न्यूमैन गम्भीरता बनाए हुए भी प्रसन्न भाव से बात कर रहा था, लेकिन मदाम द बेलगार्द के स्वर ने उसे कुछ देर के लिए सोचने पर मजबूर कर दिया। थोड़ी देर बाद वह कुछ मज़ाक के स्वर में बोला, "नहीं, टबों के बनाने में मुझे नुक-सान उठाना पड़ा, लेकिन चमड़े के व्यापार में लाभ हुआ।"

"मैंने यह सोच लिया है," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "असल बात यह है—आप इसे क्या कहेंगे ?—कि धन किस तरह मिलता है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मेरी जेब खाली है ; इस बात से मैं इन्कार नहीं कर सकती। अगर आपके पास रकम है, तो मुझे कोई सवाल नहीं पूछना। इस मामले में मैं बिलकुल आप ही की तरह लोकतंत्रवादी हूं। मदाम द सान्त्रे बड़ी अभिमानी हैं, लेकिन मेरा ख्याल है कि हम लोग अपने इस दु:खी जीवन का ज़्यादा मंथन न करें, तो कहीं ज़्यादा सुखी रह सकते हैं।"

"हे भगवान, भाभी तुम भी कैसी बातें करती हो," वेलेंतीन ने धीमी आवाज़ में कहा।

"जिस आदमी से मेरी ननद घर पर मिलती है, उससे मेरा ख्याल है कि मैं कम से कम बात तो कर ही सकती हूं," महिला ने उत्तर दिया। "इसके अलावा ये मेरे अपने विचार है।"

"आह, इन्हे आप विचार कहती हैं," युवक ने बुदबुदाकर कहा।

"लेकिन मिसेज ट्रिस्टरैम ने तो मुझे बताया था कि आप फौज में थे—जिन दिनों आपके यहां लड़ाई हुई थी," मदाम द सान्त्रे ने कहा।

"हां, लेकिन वह व्यापार तो नही है!" न्यूमैन ने जवाब दिया।

"बहुत ठीक है!" मो० दि बेलगार्द ने उत्तर दिया। "अन्यथा शायद आज मैं भी निर्धन न होता।"

"क्या यह सच है," न्यूमैन ने पूछा, "कि आप बड़ी अभिमानी हैं? मैंने पहले ऐसा सुना था।"

मदाम द सान्त्रे मुस्करा दीं। "क्या आपको मै अभिमानी लगी?"

"ओह," न्यूमैन ने कहा, "मै इस बात का फैसला नहीं कर सकता। अगर आप मेरे साथ अभिमानपूर्ण व्यवहार भी करेंगी, तो आपको मुझे यह बात पहले ही बता देनी होगी। अन्यथा मुझे पता ही नही लगेगा।"

मदाम द सान्त्रे हंसने लगीं। "यह अभिमान तो बड़ी दुखद स्थिति का होगा।" उन्होंने कहा।

"कुछ-कुछ," न्यूमैन कह रहा था, "क्योंकि मैं इस बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहूंगा। मैं तो केवल इतना ही चाहता हूं कि आप मेरे साथ अच्छा व्यवहार करें।"

मदाम द सान्त्रे ने अपना हंसना बन्द कर दिया था और वे उसकी तरफ कुछ मुड़कर देखने लगीं, जैसे वे इस बात से सशंकित हों कि पता नहीं न्यूमैन क्या कह देगा।

"मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने आपको बिलकुल सही बात बताई है," वह कह रहा था, "मैं आपके बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानना चाहता हूं। मै केवल आज ही आपसे मिलने नहीं आया हूं; मैं इस आशा से आपके पास आया हूं कि आप मुझे आगे भी आने के लिए निमंत्रित करेंगी।"

"ओह, आपसे प्रार्थना है कि आप जब भी समय मिले, तो ज़रूर आए," मदाम द सान्त्रे ने कहा।

"लेकिन क्या आप घर पर मिलेंगी ?" न्यूमैन ने आग्रहपूर्वक पूछा। उसे स्वयं लग रहा था कि वह कुछ ज़बर्दस्ती आगे बढ़ रहा है। और सच यह था कि उसे कुछ उत्तेजना अनुभव हो रही थी।

"मुझे आशा है कि मैं आपको घर पर ही मिलूंगी !" मदाम द सान्त्रे ने कहा।

न्यूमैन उठ खड़ा हुआ। "अच्छा तो मैं देखूंगा," उसने कहा और अपने कोट के बांह वाले किनारे से हैट को साफ करने लगा।

"भाई," मदाम द सान्त्रे ने वेलेंतीन से कहा, "मि० न्यूमैन को दुबारा घर आने के लिए निमन्त्रित करो।"

काउण्ट वेलेन्तीन ने एक बार सिर से पैर तक अपनी विशिष्ट मुस्कराहट से हमारे नायक को देखा, जिसमें धृष्टता और सुसभ्यता बड़े ही जटिल ढंग से मिश्रित थी। "क्या आप बहादुर आदमी हैं ?" उसने न्यूमैन की आंखों में देखते हुए पूछा।

"मेरा ख्याल है कि मैं हूं," न्यूमैन ने कहा।

"मुझे भी यही संदेह था। अगर यह बात है, तो आप फिर जरूर आइएगा।"

"आह, निमंत्रण देने का क्या ढंग है।" मदाम द सान्त्रे मुस्कराईं, लेकिन उस मुस्कराहट में हलकी-सी वेदना थी। ये शब्द उन्होंने बहुत ही धीमे स्वर में कहे।

"ओह, मैं तो विशेष रूप से चाहता हूं कि मि० न्यूमैन आएं," युवक ने कहा। "मेरे लिए तो यह विशेष प्रसन्नता की बात होगी। अगर किसी दिन ये आए और मैं न मिल सका, तो मुझे बड़ा बुरा लगेगा। लेकिन मै यह कहूंगा कि ये बड़े बहादुर हैं। इनका दिल बड़ा मज़बूत है।" और युवक ने न्यूमैन से हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ा दिया।

"मैं आपसे मिलने नहीं, बल्कि मदाम द सान्त्रे से मिलने आऊंगा," न्यूमैन ने कहा।

"तब तो आपको और भी अधिक साहस की जरूरत पड़ेगी।"

"आह, वेलेंतीन !" मदाम द सान्त्रे ने बड़े ही विनय-भरे स्वर में कहा।

"निश्चय ही," मदाम द बेलगार्द ने ज़रा ज़ोर से कहा। "मैं ही यहां एक ऐसी हूं, जो शिष्टाचारपूर्ण ढंग से बात कर सकती हू। आप मुझसे मिलने आइए; आपको किसी प्रकार के साहस की ज़रूरत नहीं पड़ेगी," उन्होंने कहा।

न्यूमैन हंस दिया, लेकिन इस हंसी में स्वीकृति का लेशमात्र भी भाव नहीं था। इसके बाद वह विदा हो लिया। मदाम द सान्त्रे ने अपनी भाभी की बात की इज्ज़त बनाए रखने के लिए उनकी चुनौती के जवाब में कुछ नहीं कहा, लेकिन वे घर से जा रहे मेहमान की ओर बड़ी उलझन-भरी दृष्टि से देखती रहीं।

सात

मदाम द सान्त्रे के घर पर गए न्यूमैन को लगभग एक सप्ताह हो चुका था। एक दिन काफी रात गये नौकर ने न्यूमैन को एक कार्ड लाकर दिया। यह विज़िटिंग कार्ड युवक मो० द बेलगार्द का था। कुछ क्षणों बाद जब वह अपने मेहमान से मिलने बाहर कमरे में पहुंचा, तो उसने देखा कि वह युवक सुनहले कमरे में बीचोबीच खड़ा कालीन से कार्निश तक की सब चीज़ों को देख रहा था। मो० द बेलगार्द के चेहरे पर न्यूमैन को ऐसा लगा कि बड़े आनन्द का भाव है। 'अब यह कम्बख्त किस बात पर हंस रहा है?' हमारे नायक ने अपने-आपसे पूछा। लेकिन इस प्रश्न में कोई कटुता नहीं थी, क्योंकि न्यूमैन समझने लगा था कि मदाम द सान्त्रे का छोटा भाई सज्जन है और न्यूमैन को यह पूर्वाभास हो गया था कि इसी सज्जनता के आधार पर वे दोनों एक-दूसरे को भली भाति समझकर मित्र बन चुके हैं। वह केवल इतना जानना चाहता था कि अगर कमरे में किसी बात पर हंसा जा सकता है, तो वह बात उसे भी बता दी जाए।

"मैं आरम्भ में ही पूछ लूं," युवक ने हाथ बढ़ाते हुए कहा, "क्या मैं बहुत रात बीते तो नहीं आया हूं?"

"किस काम के लिए बहुत रात बीत गई है?" न्यूमैन ने प्रतिप्रश्न किया।

"आपके साथ बैठकर एक सिगार पीने के लिए।"

"इसके लिए तो आपको सचमुच देर हो गई," न्यूमैन ने कहा। "मैं धूम्रपान नहीं करता।"

"आह, आप बहुत ही दृढ़ इच्छावाले व्यक्ति हैं।"

"लेकिन मेरे घर में सिगार है," न्यूमैन ने कहा, "बैठिए।"

"निश्चय ही मैं यहां तो सिगार नहीं पी सकूंगा," मो० द बेलगार्द ने कहा।

"क्यों, क्या बात है ? क्या यह कमरा बहुत छोटा है ?"

"बहुत बड़ा है। ऐसा लगता है, जैसे मैं नाचघर या चर्च में बैठकर धूम्रपान कर रहा हूं।"

"तो क्या आप अभी कुछ देर पहले इसी बात पर हंस रहे थे ?" न्यूमैन ने पूछा, "मेरे कमरों का आकार-प्रकार देखकर ?"

"केवल आकार देखकर ही नहीं," मो० द बेलगार्द ने उत्तर दिया, "बल्कि यहां की शान-शौकत, रंगों का तालमेल, सौन्दर्य की अन्य ब्योरेवार बातें, यह मुस्कराहट इन सब बातों की सराहना की सूचक थी।"

न्यूमैन एक क्षण तक उसकी ओर देखता रहा, और फिर उसने पूछा, "तो यह सब बड़ा भोंडा है न ?"

"भोंडा, नहीं श्रीमान, यह सब बड़ा ही शानदार है।"

"मेरा ख्याल है कि एक ही बात है," न्यूमैन ने कहा, "आराम से बैठिए। आपका मुझसे मिलने आना मेरे प्रति मित्रता का परिचायक है। आप यहां आने के लिए बाध्य नहीं थे। इसलिए अगर यहां की किसी भी चीज़ से आप प्रसन्न होते हैं, तो यह बड़ी खुशी की बात है। आप जितनी ज़ोर से चाहें हंस सकते हैं; मैं अपने मेहमानों को प्रसन्न देखना चाहता हूं। मैं केवल इतना ही अनुरोध करना चाहूंगा कि जैसे ही आप हंसने के बाद बोल सकें, मुझे मज़ाक की बात विस्तार से समझा दें। मैं हंसी की कोई भी बात यूं ही नहीं छोड़ देना चाहता हूं।"

मो० द बेलगार्द कुछ देर एक ही जगह देखते रहे। उनकी आंखों में उलझन का भाव तो था, लेकिन विरोध का नहीं। उन्होंने अपना हाथ न्यूमैन की बांह पर रख लिया और ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे वह कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन उन्होंने अपने-आपको यकायक रोक लिया और कुर्सी पर पीछे की तरफ सरककर आराम से बैठ गए तथा सिगार पीने लगे। आखिर, उन्होंने मौन तोड़ा,—"निश्चय ही मैं मित्रता बढ़ाने के लिए ही आज आपसे मिलने आया हूं, लेकिन यह बात सही है कि मुझे यहां आने के लिए किसी हद तक बाध्य किया गया था। मेरी बहिन ने मुझसे कहा था कि मैं आपसे घर जाकर मिलूं और आप जानते हैं कि बहिन का अनुरोध मेरे लिए कानून है। मैं इस समय आपके घर के पास ही था और मैंने देखा कि कुछ कमरों में रोशनी हो रही है, जो मुझे आपके ही लगे। किसीके

घर मिलने जाने के लिए यह उचित समय नहीं है, लेकिन मुझे असमय आने का कोई खेद नही है, क्योंकि मै केवल रस्म पूरी करने के लिए आपके पास नहीं आना चाहता था।"

"लीजिए मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूं," न्यूमैन ने अपने पैर फैलाते हुए कहा।

"मैं नहीं जानता कि आपका इस बात से क्या मतलब है," युवक कह रहा था, "इस खुली छूट से कि मैं जितना चाहूं, हंस सकता हूं। इसमें शक नहीं कि मैं बहुत हंसोड़ हूं और मेरा विचार है कि बहुत कम हंसने के बजाय, ज्यादा हंसना बेहतर है। लेकिन यह कहना उचित नहीं होगा कि मैंने साथ मिलकर या अकेले हंसने के लिए आपसे मैत्री करने की ठानी है। धृष्टतापूर्ण स्पष्टवादिता के लिए मुझे क्षमा कीजिएगा, लेकिन आप मुझे बड़े दिलचस्प लगे हैं।" यह सारी बात मो० द बेलगार्द ने बड़े संयत और कोमल स्वर में अत्यन्त व्यवहारकुशल व्यक्ति की भांति बड़ी ही अच्छी तरह कही, हालांकि उसकी भाषा पर फ्रेंच का प्रभाव था। लेकिन न्यूमैन ने वहां बैठे ही बैठे मो० द बेलगार्द की बातें सुनकर न केवल शब्दों द्वारा प्रकट की गई मित्रता नोट की, बल्कि यह भी अनुभव किया कि जो बातें कही गई हैं, वे केवल औपचारिक नही हैं, बल्कि हृदय से प्रकट किए गए भाव हैं। निश्चय ही उनके मेहमान में कोई ऐसी बात ज़रूर थी, जिसे न्यूमैन ने बहुत पसंद किया था। मो० द बेलगार्द सिर से पैर तक विदेशी थे और अगर न्यूमैन की मुलाकात उनसे पश्चिमी अमरीका के किसी चरागाह में हुई होती, तो वह शायद 'मोंश्यू' कहकर उनसे अभिवादन करते और उनका हालचाल पूछते। लेकिन मो० द बेलगार्द के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी बात थी, जो दोनों की राष्ट्रीयताओं की विभिन्नता से उत्पन्न लम्बी-चौड़ी खाई को पाटने में काल्पनिक पुल का काम कर रही थी। मो० द बेलगार्द का कद मंझोले व्यक्तियों से भी कुछ कम था, लेकिन चेहरा रोबदार था और शरीर से चुस्ती टपकती थी। वेलेंतीन द बेलगार्द के बारे में यह बात न्यूमैन को बाद में पता लगी कि वे भारी-भरकमपने से अत्यधिक डरते थे। उन्हें हमेशा यह आशंका रहती थी कि कहीं वे बहुत अधिक स्थूल न हो जाएं; क्योंकि जैसाकि वे स्वयं कहते थे, मेरा कद इतना नाटा है कि मैं अपनी तोंद नहीं बढ़ने दे सकता। वे खूब घुड़सवारी और पटेबाज़ी करते तथा अन्य प्रकार के शारीरिक व्यायाम भी बड़े उत्साह से करते थे। अगर कोई उनसे मिलते ही यह कह दे कि आप बड़े स्वस्थ दीख रहे हैं, तो वे चौंक उठते थे और उनका चेहरा पीला पड़ जाता था।

मो० द बेलगार्द का सिर गोल था, कानों से ऊपर बाल बड़े घने और रेशम जैसे मुलायम थे। उनका माथा कुछ दबा हुआ, किन्तु प्रशस्त था। नाक छोटी थी। उससे उनके सचेत या हठवादी होने की बजाय जिज्ञासु और व्यंग्यात्मक स्वभाव का पता चलता था। मूंछें किसी प्रेमी युवक की तरह नाज़ुक थीं। उनका नाक-नक्श अपनी बहन से नहीं मिलता था, लेकिन उनकी आंखें बड़ी स्वच्छ, चमकीली और उनमें तथा उनकी मुस्कान में अन्तरावलोकन का बिलकुल अभाव रहता था। किन्तु आंखों की अभिव्यक्ति और मुस्कराहट, ये दोनों चीज़ें उनकी बहन से बहुत मिलती थीं। उनके चेहरे की विशेष बात यह थी कि उससे बड़ी सजीवता प्रकट होती थी—उससे स्पष्टवादिता, निष्ठा और बहादुरी टपकती थी। चेहरा देखते ही ऐसा लगता था कि वह एक प्रकार की घण्टी है, जो इस युवक की आत्मा से बजती है। उनकी अन्तरात्मा का ज़रा-सा भी स्पर्श कर दिया जाए, तो सारे भाव चेहरे से प्रकट हो उठते थे। उनकी चंचल हल्की भूरी आंखों में कुछ ऐसा भाव रहा करता था, जिससे पता लगता था कि उनमें चैतन्यता का अभाव नहीं है। वे शेष फर्नीचर को कमरे में अलग रखकर किसी कोने में नहीं रहते थे। वे कमरे के बीचोबीच रहते थे और अपना मकान खुला रखते थे। जब वे मुस्कराते थे, तो ऐसा लगता था कि उन्होंने भरा प्याला उलट दिया है। प्रतीत होता था कि उन्होंने आन्तरिक प्रसन्नता प्रकट कर दी है। न्यूमैन को याद था कि बचपन में जब उसका कोई साथी कोई अनोखा काम या बड़ी चतुराई दिखलाता था, जैसे दो हड्डियों के जोड़ को किसी स्थान पर 'ट्रिक-ट्रिक' करके बजा देना या मुह में विचित्र ढंग से सीटी बजा देना, तो न्यूमैन का हृदय अपने साथी के प्रति सराहना से भर उठता था। न्यूमैन का कुछ-कुछ ऐसा ही हाल मो० द बेलगार्द को देखकर हो रहा था।

"मेरी बहन ने मुझसे कहा है," मो० द बेलगार्द ने कहा, "कि मैं आपसे जाकर मिलूं और आपके इस भ्रम को दूर करूं कि कहीं पहली मुलाकात में आप मुझे पागल न समझ बैठे हों। क्या आपको भी ऐसा लगा था कि पहली बार आप जब मिलने गए, तो मेरा व्यवहार बड़ा विचित्र था?"

"हां, कुछ अजीब-सा तो लगा था," न्यूमैन ने कहा।

"यही बात मेरी बहन ने भी मुझे बताई।" और मो० द बेलगार्द अपने मेज़बान को एक क्षण के लिए सिगार के घुंघराले धुएं के क्षीण आवरण से देखते

रहे। "अगर यही बात है, तो अच्छा होगा कि हम इस बात को यहीं रहने दें। मैं यह नहीं चाहता था कि आप मुझे पागल समझें; इसके विपरीत मेरी तो यह इच्छा थी कि आप मेरे प्रति अनुकूल धारणा बनाएं। लेकिन अगर मैंने अपने-आपको मूर्ख सिद्ध कर दिया है, तो फिर ईश्वर की ऐसी ही मर्ज़ी रही होगी। अगर मैं इसका बहुत ज़्यादा विरोध करूंगा, तो इससे मुझे ही नुकसान होगा, क्योंकि इसका मतलब है कि मैं अपने-आपको ऐसा बुद्धिमान सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा हूं, जो अन्ततः यह सिद्ध न हो सकेगा कि मै सचमुच अक्लमन्द हूं। बेहतर होगा कि आप मुझे ऐसा पागल समझ लें, जो कभी-कभी स्वस्थ हो जाता है।"

"ओह, मेरा ख्याल है कि आप जानते है कि आप क्या कह रहे हैं," न्यूमैन ने कहा।

"जब मैं स्वस्थ होता हूं, तो मैं बहुत स्वस्थ होता हूं; यह बात मैं जानता हूं," मो० द बेलगार्द ने उत्तर दिया। "लेकिन मैं यहां अपने बारे में ही तो बातचीत करने नहीं आया हूं। मुझे आपसे कुछ बातें जाननी हैं। अगर आप इजाज़त दें, तो मैं सवाल करूं?"

"उदाहरण के तौर पर कोई सवाल पूछिए," न्यूमैन ने कहा।

"क्या आप यहां अकेले रहते हैं?"

"बिलकुल अकेला। और किसके साथ रहूं?"

"फिलहाल," मो० द बेलगार्द ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं प्रश्न पूछ रहा हूं, उत्तर नहीं दे रहा। आप पेरिस घूमने आए हैं?"

न्यूमैन कुछ देर के लिए चुप हो गया। फिर बोला, "सभी मुझसे यही पूछते हैं!" उसने बड़ी कोमलता से धीरे-धीरे कहा, "यह सवाल मुझे बड़ा ही मूर्खतापूर्ण लगता है।"

"लेकिन यहां आने का कोई कारण तो होगा।"

"ओह, मैं यहां मनोरंजन के लिए आया हूं!" न्यूमैन ने कहा, "हालांकि यह उत्तर कितना ही मूर्खतापूर्ण लगे, लेकिन सच बात यही है।"

"और आपको अपने भ्रमण का आनन्द मिल रहा है?"

एक अच्छे अमरीकी की तरह न्यूमैन ने यह ठीक ही सोचा कि अपने मन की बात किसी विदेशी को खुलकर बताना ठीक नहीं है। "ओह, ऐसे ही चल रहा है,"

उसने उत्तर दिया।

मो० द बेलगार्द फिर चुपचाप सिगार पीने लगे। "जहां तक मेरा सम्बन्ध है," उन्होंने अन्त में कहा, "मैं पूर्णतः आपकी सेवा के लिए प्रस्तुत हूं। कोई भी काम मैं कर सकूं तो आप मुझे बताइएगा, मुझे उसे करके बड़ी प्रसन्नता होगी। जब आपको सुविधा हो, आप मुझसे मिल सकते हैं। क्या आप यहां किसीसे मिलना चाहते हैं—कोई स्थान देखना चाहते हैं? यह बड़े ही दुःख की बात होगी अगर आपने पेरिस-प्रवास में पूरी तरह आनन्द न उठाया।"

"ओह, मैं आनन्द से हूं!" न्यूमैन ने बड़े भले ढंग से कहा, "मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूं।"

"ईमानदारी की बात तो यह है," मो० द बेलगार्द ने कहा, "मुझे ये सब प्रस्ताव करने स्वयं अजीब-से लग रहे हैं। इसमें शक नहीं कि वे मेरी सद्भावना के प्रतीक हैं, लेकिन इनके अतिरिक्त वे और किसी और बात को प्रकट नहीं करते। आप एक सफल व्यक्ति हैं और मैं असफल। और अगर मैं कहता हूं कि मैं आपकी सहायता करूंगा, तो उलटी बात होगी।"

"आप किस तरह असफल रहे हैं?" न्यूमैन ने पूछा।

"ओह, मेरी कोई इतनी दुखान्त असफलता नहीं है।" युवक ने हंसते हुए कहा। "मैं बहुत ऊपर नहीं पहुंच गया था, इसलिए मेरी विफलता का शोर भी किसीने नहीं सुना। ज़ाहिर है, आप बड़े सफल व्यक्ति हैं। आपने बहुत सारा धन कमाया है, भव्य जीवन का निर्माण किया है, आप बड़े व्यापारी और अमीर व्यक्ति हैं, आप सारी दुनिया में तब तक घूम सकते हैं जब तक आपको कोई अनुकूल विश्राम-स्थल न मिले, और जब वह मिल जाए, तो वहां आराम से रह सकते हैं। यह सोचकर कि आपको विश्राम करने का अधिकार है। क्या यह बात सच नहीं है? अच्छा, अब कल्पना कीजिए इससे ठीक उलटी स्थिति की, तो आप समझ जाएंगे कि मैं कहां हूं। मैंने कुछ नहीं किया—मैं कुछ कर भी नहीं सकता!"

"क्यों नहीं कर सकते?"

"यह एक लम्बी कहानी है। किसी दिन मैं आपको बताऊंगा। इस बीच आप विश्वास रखिए कि जो कुछ मैं आपसे कह रहा हूं, वह सही है न? आप सफल व्यक्ति हैं न? आपने बहुत-सा धन भी कमाया है न? हालांकि ये सब बातें करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है, लेकिन संक्षेप में आप बहुत धनी हैं न?"

"यह बात दूसरी है कि ऐसा कहना बड़ी बेवकूफी की बात है," न्यूमैन ने कहा, "छोड़िए भी, कोई भी आदमी धनी नहीं है।"

"मैंने दार्शनिकों की यह उक्ति सुनी थी," मो० द बेलगार्द ने हंसते हुए कहा, "कि कोई भी आदमी निर्धन नहीं है ; लेकिन आपकी सूक्ति मुझे उनकी उक्ति से भी अच्छी मालूम होती है। मैं मानता हूं कि आम तौर पर मुझे सफल व्यक्तियों का साथ अच्छा नहीं लगता। मैंने देखा है कि बहुत-सा धन कमा लेनेवाले चतुर व्यक्ति बड़े अशिष्ट लगते हैं। मुझे लगता है कि वे ज़रूरत से ज्यादा मेरे मामलो में हस्त-क्षेप करते हैं, और इस तरह मुझे बैचेन कर देते हैं। लेकिन जैसे ही आपसे पहली बार मुलाकात हुई, मैंने अपने-आप से कहा, 'आह, यह आदमी ऐसा है जिससे मेरी निभ जाएगी। इस व्यक्ति का सफलता के बावजूद बड़ा अच्छा स्वभाव है और कठोरता लेशमात्र भी नहीं है। इस व्यक्ति में झुंझला देनेवाली फ्रेंच लोगों की अभिमान-भावना भी नहीं है।' संक्षेप में मैं आपपर मुग्ध हो गया। हम लोग बिलकुल अलग-अलग हैं, यह मेरा पक्का विश्वास है कि शायद ही कोई ऐसा विषय हो, जिसपर हम लोगों के विचार समान हों। लेकिन फिर भी मेरा ख्याल है कि हम लोगों की निभ जाएगी, क्योंकि जब लोग बहुत भिन्न होते हैं, तो आप जानते हैं, वे आपस में नहीं लड़ते।"

"ओह, मैं कभी किसीसे नहीं लड़ता," न्यूमैन ने कहा।

"कभी नहीं ? कभी-कभी तो लड़ना ज़रूरी हो जाता है—या यूं कह लीजिए कि कभी आनन्द-प्राप्ति के लिए ही लड़ लेना चाहिए। ओह, मैंने अपने जीवन में दो-तीन बार बहुत कस के झगड़ा किया है!" और मो० द बेलगार्द की वही मोहक मुस्कान फिर चमक उठी और उन्हें अपनी उन लड़ाइयों का पूरी तरह स्मरण हो आया।

ऊपर जो कथोपकथन हमने दिया है, वह उस लम्बे सम्भाषण का एक अंश है, जो उस दिन की लम्बी बैठक में हुआ था। उस दिन रात को आतिश-दान की रोशनी में दोनों व्यक्तियों ने बड़े सवेरे तक बराबर बातचीत की। इसमें सभी तरह की दूर-दूर की गप्पें भी शामिल थीं। वेलेंतीन द बेलगार्द, जैसाकि उसने खुद ही कहा था, स्वयं बहुत बड़ा बैठकबाज़ था और उस दिन तो खास तौर पर उसकी डटकर बात करने की बड़ी इच्छा थी। यह उसकी परम्परागत विशेषता थी कि जब भी उसके घराने के लोग किसीके ऊपर कोई कृपा करते, तो हमेशा

मुस्कराकर करते थे और उनका उत्साह उतना ही दुर्लभ था जितनी कि उनकी शिष्टता की स्थिरता। उसे इसीलिए इस बात का ज़रा भी सन्देह नहीं था कि उसकी मित्रता को कभी ढीठता समझा जाएगा। वह एक बड़े पुराने घराने का वंशज था और उसके स्वभाव में संस्कार से ऐसी कठोरता नहीं थी, जिससे दूसरा व्यक्ति घबरा उठे। उसकी मिलनसारिता और सुसभ्यता एक-दूसरे में इसी तरह मिश्रित थीं, जिस तरह किसी वृद्धा सामन्त महिला के गोटे-किनारी के कपड़े और गले में मोतियों की माला। वेलेंतीन सम्भ्रान्त परिवार का था। उसका वंश शुद्धतम था और इतना तय था कि उसे घर में ही रहकर परम्परा और कामकाज की साज-संभाल करनी थी। लेकिन यह सब बातें उसके अपने आन्तरिक मानसिक गठन से सम्बद्ध थीं, केवल सैद्धांतिकता से नहीं। और उसके चरित्र में मधुर स्वभाव इतना बड़ा गुण बन गया था कि कुलीन घरों की कुछ क्षीणताओं और कटुताओं के बावजूद भी उसका साथ अत्यन्त स्पृहणीय था। अपनी युवावस्था में उसपर लोगों ने कुसंग का सन्देह किया था, और उसकी मां को यह बड़ी भारी आशंका थी कि कहीं वह फिसल न जाए और इस तरह घर की बदनामी न हो जाए। इसीलिए उसपर ज़रूरत से ज़्यादा नियंत्रण रखा गया, लेकिन इसके बावजूद वेलेन्तीन के शिक्षक उसके स्वभाव को बदल नहीं सके। वे उसकी उद्दाम और मानसिक स्वच्छता को सीमित नहीं कर सके और सच तो यह है कि वह अपनी असावधानियों के बावजूद तरुण सामंतों में बड़ा भाग्यशाली सिद्ध हुआ। युवावस्था में उसे इतनी कम स्वतंत्रता दी गई थी कि उसे पारिवारिक अनुशासन से बड़ी चिढ़ हो गई थी। घर में अकसर लोग उसके बारे में यह कहते थे कि भले ही वेलेंतीन बेफिक्र हो, लेकिन उसके हाथ में परिवार के कुछ अन्य सदस्यों की तुलना में घर का सम्मान कहीं अधिक सुरक्षित है और अगर कभी ऐसी ज़रूरत आ पड़ी, तो लोग देखेंगे कि वह परिवार के सम्मान की रक्षा के लिए क्या नहीं कर गुज़रता। अपने बारे में यह बात मो० द बेलगार्द ने भी सुन रखी थी।

उसकी बातों में बाल-सुलभ सरलता और अनुभवी व्यक्ति का विवेक और निस्पृहता लक्षित होती थी। न्यूमैन को ऐसा लगा कि फ्रांस के युवक बाद में अकसर न्यूमैन को बड़े ही दिलचस्प किशोर प्रतीत होते थे और कभी यही युवक इतने प्रौढ़ लगते थे कि आश्चर्य होने लगता था। न्यूमैन ने सोचा कि अमरीका में २५ और ३० वर्ष के युवक भी अनुभवी होते हैं, लेकिन उनका हृदय तरुण होता

है । या कम से कम उनकी नैतिकता बड़ी तरुण होती है ; यहां पर लोगों के दिमाग तरुण होते हैं, लेकिन दिल बूढ़े होते हैं तथा आदर्श बड़े सिकुड़े और पुराने होते हैं।

"मुझे आपकी स्वतंत्रता पर बड़ी ईर्ष्या होती है," मो० द बेलगार्द ने कहा, "आपका दृष्टिकोण बड़ा व्यापक होता है, आपको आने-जाने की स्वतंत्रता होती है, आपके आसपास बहुत-से ऐसे लोग नहीं होते, जो जीवन को बड़ी गम्भीरता से ग्रहण करते हों और हमेशा आपसे कोई न कोई आशा लगाए बैठे हों । एक मैं हूं," उसने गहरा निःश्वास छोड़ते हुए कहा, "जो अपनी सारी ज़िन्दगी पूज्यपाद माता की छत्रच्छाया में बिता रहा है ।"

"यह आपकी अपनी गलती है ; आपको बाहर आने-जाने और घूमने-फिरने से कौन रोक सकता है ?" न्यूमैन ने पूछा ।

"आपके इस कथन में कैसी निर्बोध और आकर्षक सरलता छिपी हुई है ! हर चीज़ मेरे मार्ग में बाधा है । सबसे पहले यही लीजिए, मेरी जेब में कानी कौड़ी भी नहीं है ।"

"जब मैं दुनिया में कमाने निकला था, तो मेरी जेब में भी कौड़ी नहीं थी ।"

"आह, लेकिन आपकी निर्धनता आपकी पूंजी थी । एक अमरीकी की हैसियत से यह असम्भव था कि आप जिस स्थिति में उत्पन्न हुए थे, उसीमें बने रहते और चूंकि आप निर्धन पैदा हुए थे—मैं ठीक कह रहा हूं न ?—इसलिए यह अनिवार्य था कि आप अमीर बन जाते । आप ऐसी स्थिति में थे, जिसकी कल्पना करके और लोगों के मुंह में पानी भर आएगा । होश संभालने पर आपने अपने चारों ओर देखा और पाया कि दुनिया में तमाम चीजें हैं । आपको केवल आगे बढ़ना है और उन्हें उठा लेना है। जब मैं २० साल का था, तो मैंने आंख खोलकर चारों तरफ देखा । मेरे ओर-पास की दुनिया में जितनी भी चीज़ें मुझे दिखलाई पड़ीं, उनसब पर लिखा था—'दूर रहो !' और कम्बख्त यह चेतावनी केवल मेरे ही लिए थी । मैं व्यापार नहीं कर सकता था, धन नहीं कमा सकता था, क्योंकि बेलगार्द खानदान में पैदा हुआ था । मैं राजनीति में नहीं जा सकता था, क्योंकि मैं बेलगार्द था । बेलगार्द परिवार के लोग धन को कोई महत्त्व नहीं देते । मैं साहित्यकार नहीं बन सकता था, क्योंकि निपट गधा था । मैं किसी अमीर लड़की से विवाह नहीं कर सकता था, क्योंकि इसके पहले किसी भी बेलगार्द ने किसी सामान्य परिवार की लड़की से कभी विवाह नहीं किया था, और इस सम्बन्ध में पहल करना मेरे लिए उचित न

होता। लेकिन अभी हम असल बात पर नहीं पहुंचे हैं। अमीर खानदानों की विवाह योग्य उत्तराधिकारिणी कन्याएं मुफ्त में नहीं मिलतीं। नाम के साथ नाम चाहिए और धन के लिए धन चाहिए। मैं केवल यही कर सकता था कि पोप के पक्ष में युद्ध करने को फौज में भरती हो जाता। यही मैंने किया और कैसिलफिदार्दो की लड़ाई में मुझे घाव लगा; लेकिन जहां तक मैं समझता हूं, इससे न मेरा कोई फायदा हुआ और न पोप का। बेशक, रोम बड़ी दिलचस्प जगह थी, लेकिन कैलीगुला के बाद से वहां भी हालत खराब हो गई है। मैंने सेंट एंजिलो के किले में तीन वर्ष बिताए और इसके बाद फिर सांसारिक जीवन में वापस लौट आया।"

"तो आप कोई व्यवसाय नहीं करते—कुछ नहीं करते," न्यूमैन ने कहा।

"मैं कुछ नहीं करता। समझा जाता है कि मैं अपना मन-बहलाव करूंगा और सच बात भी यह है कि मैंने काफी मन बहलाया है। कोई भी व्यक्ति अपना मन बहला सकता है, बशर्ते उसे पता हो कि यह कैसे किया जाए। लेकिन आप हमेशा ही ऐसा नहीं कर सकते हैं। मन बहलाने का यह कार्यक्रम अगले पांच वर्षों तक सम्भवतः और चल सके, लेकिन मैं कह सकता हूं कि इसके बाद फिर मुझे मनोरंजन का शौक नहीं रहेगा। तब मैं सोचता हूं कि कमर में रस्सी लपेटकर किसी मठ में चला जाऊंगा। यह पुराना रिवाज है और कुछ पुराने रिवाज वाकई बहुत अच्छे हैं। उन दिनों भी लोग जीवन को भलीभांति समझते थे, उतनी ही अच्छी तरह जितनी अच्छी तरह हम समझते हैं। जब तक वे सांसारिक कार्यों में लगे रह सकते थे, लगे रहते और इसके बाद फिर वैराग्य ले लेते।"

"क्या आप धार्मिक वृत्ति के हैं?" न्यूमैन ने पूछा। यह पूछते समय उसका कण्ठ-स्वर कुछ ऐसा हो गया, जो अजीब लग रहा था।

मो० द बेलगार्द को इस प्रश्न में निहित विनोद पसन्द आया, लेकिन एक क्षण तक वह न्यूमैन की तरफ बड़ी गम्भीरता से देखता रहा। "मैं बड़ा धर्मभीरु कैथोलिक हूं। चर्च की इज्ज़त करता हूं, कुमारी मेरी की पूजा करता हूं। शैतान से डरता हूं।"

"तो फिर," न्यूमैन ने कहा, "आपकी कोई समस्या ही नहीं है, आपका सब मामला तो पहले से ही तय है। वर्तमान काल में आप आनन्द कर रहे हैं और भविष्य में धर्म की शरण ले लेंगे; फिर शिकायत किस बात की?"

"शिकायत करते रहना भी आनन्द का ही एक अंश है। आपकी परिस्थितियों

में कुछ ऐसी बात है, जिससे मैं झुंझला उठता हूं। आप पहले ऐसे आदमी हैं जिनसे मुझे ईर्ष्या हुई है। मेरा परिचय बहुत-से लोगों से रहा है, जिनके पास धन भी था और बुद्धि भी, लेकिन उनके कृत्रिम श्रेष्ठतर स्थान के बावजूद उनकी वजह से मुझे कोई परेशानी नहीं महसूस हुई। यह धन की बात नहीं है और शायद इसका बुद्धि से भी सम्बन्ध नही है।—हालांकि इसमें शक नहीं कि आप बहुत बुद्धिमान हैं। मुझे आपकी छः फुट की ऊंचाई से भी ईर्ष्या नहीं है। हालांकि अच्छा होता, मैं कुछ इंच और कद में बड़ा होता। आपके व्यक्तित्व में कुछ ऐसी बात है, जिससे लगता है कि आपने अपने-आपको दुनिया के अनुकूल बना लिया है और आपका हर परिस्थिति का मुकाबला कर सकने में गहरा आत्मविश्वास है। जब मैं बालक था तो मेरे पिता ने मुझे बताया था कि यह आत्मविश्वास का भाव ही है, जिससे लोग बेलगार्द परिवार के लोगों को पहचानते हैं। उन्होंने व्यक्तित्व के इस गुण की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया था। उन्होंने मुझे यह सलाह नहीं दी थी कि मैं यह गुण प्राप्त करने के लिए कोई प्रयत्न करूं। उनका कहना था कि हम लोग ज्यों-ज्यों बड़े होते जाते हैं, आत्मविश्वास की यह भावना अपने-आप व्यक्तित्व में उभरती आती है। मेरा ख्याल है कि यह चीज़ मुझमें भी आ गई है, क्योंकि मुझमें यह आत्मविश्वास की भावना बराबर बनी रही है। जीवन में मेरी वर्तमान स्थिति पहले से ही निश्चित थी। ऐसी स्थिति को प्राप्त कर लेना सरल था। लेकिन आपने, जहां तक मैं समझता हूं, यह स्थान स्वयं बनाया है। और जैसाकि आपने उस दिन बताया था, आपने कपड़े धोने के टब बनाने का कारखाना खोला—आप मुझे एक ऐसे व्यक्ति की तरह लगते हैं, जो किसी बहुत ऊंची जगह बड़े आराम से खड़ा हुआ है। मैं कल्पना करता हूं कि दुनिया में आप एक ऐसे आदमी की तरह रेल-यात्रा कर रहे हैं, जिस रेल कम्पनी के अधिकांश शेयरों का वह खुद मालिक है। आपको देखकर मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैंने कोई चीज़ खो दी है। आखिर वह क्या चीज़ है?"

"वह चीज़ है, ईमानदारी से परिश्रम करने का अभिमान—जो कुछ कपड़े धोने के टब बना लेने से आता है," न्यूमैन ने कुछ परिहास और कुछ गम्भीरता से कहा।

"ओह, नहीं; मैंने ऐसे भी आदमी देखे हैं, जिन्होंने इससे कहीं ज्यादा काम किया है, जिन्होंने न केवल टब बनाए हैं, बल्कि साबुन भी बनाया है—तेज गंध

वाला पीला साबुन, बड़े-बड़े डण्डों के रूप में ; लेकिन उनकी वजह से मैं ज़रा भी अस्थिर नहीं हुआ।"

"तो फिर आपकी इस अस्थिरता का कारण मेरा अमरीकी नागरिक होना है," न्यूमैन ने कहा, "अमरीकी नागरिकता से आदमी को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।"

"शायद यही हो," मो० द बेलगार्द ने उत्तर दिया। "लेकिन मैं यह कहने के लिए विवश हूं कि मैंने बहुत-से अमरीकी नागरिक भी देखे हैं, जो मुझे जीवन में भलीभांति जमे हुए नज़र नहीं आए। या जो बड़े-बड़े 'प्रतिष्ठानों के शेयरों के स्वामी नहीं थे। लेकिन उनसे मुझे ईर्ष्या नहीं हुई, बल्कि मेरा तो यह ख्याल हुआ कि आपमें जो चीज़ है, वह आपकी-अपनी सफलता है।"

"ओह, अब छोड़िए भी," न्यूमैन ने कहा, "आप तो मुझे बड़ा गर्वीला बना देंगे।"

"नहीं, मैं आपको ऐसा नहीं बना सकता हूं। आपका अभिमान या विनम्रता से कोई सम्बन्ध नहीं है।—वह भावना तो आपके सामान्य रहन-सहन और व्यवहार का अंग है। लोग तभी अभिमान करते हैं, जब उनके पास कुछ खो देने के लिए होता है। और वे विनयशील तभी बनते हैं, जब उन्हें कुछ प्राप्त करना होता है।"

"मैं नहीं जानता कि मेरे पास ऐसा क्या है, जिसे मैं खो सकता हूं," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन हां, मुझे कुछ प्राप्त ज़रूर करना है।"

"क्या प्राप्त करना है ?" मेहमान ने पूछा।

न्यूमैन एक क्षण के लिए झिझका। "यह बात मैं आपको तब बताऊंगा जब हमारी मैत्री कुछ और घनिष्ठ हो जाएगी।"

"मुझे आशा है कि ऐसा जल्दी ही होगा। तब फिर मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूंगा, जिससे आपको इच्छित वस्तु मिल जाए। आपकी सहायता करके मुझे बड़ी खुशी होगी।"

"संभवत: आप मेरी सहायता कर सकें," न्यूमैन ने कहा।

"तो यह मत भूलिएगा कि मैं आपका दास हूं," मो० द बेलगार्द ने उत्तर दिया ; और इसके कुछ देर बाद उसने न्यूमैन से विदा ली।

अगले तीन सप्ताहों में न्यूमैन और बेलगार्द की कई बार मुलाकात हुई।

दोनों ने दोस्ती को शाश्वत बनाए रखने के लिए औपचारिक रूप से कोई शपथ नहीं ली, लेकिन फिर भी आपस की मित्रता काफी गहरी हो गई। न्यूमैन के लिए बेलगार्द आदर्श फ्रेंच युवक था, ऐसा फ्रेंच युवक, जो खानदानी और प्रेमी था। उसमें यह गुण उस हद तक था जिस हद तक हमारे नायक को इन रहस्यमय गुणों का ज्ञान था। वह बहादुर, व्यापक दृष्टिकोण वाला, प्रसन्नचित्त था और उसमें कुछ ऐसी विशेषता थी कि वह जिन लोगों को प्रसन्न करना चाहता था, उनको प्रसन्न करने के बाद (चाहे वे कितने ही प्रसन्न क्यों न हों) बेलगार्द स्वयं उनसे भी अधिक प्रसन्नता अनुभव करता था। वह शौकीन तबीयत का था और उसमें समाज में उठने-बैठने के सभी श्रेष्ठ गुण थे। वह किसी रहस्यमयी और पवित्र शक्ति का उपासक था, जिसकी वह कभी-कभी चर्चा करता था। वह सुन्दर स्त्रियों का तो प्रशंसक था ही, लेकिन इस शक्ति की सराहना करते समय वह भाव-विभोर हो उससे भी आगे बढ़ जाता, जिस भाषा में उसने किसी अतीव सुन्दरी की तारीफ़ की होती। यह शक्ति सुन्दरता और गरिमा की प्रतीक थी। बेलगार्द में अपनी बातों से मुग्ध कर लेने की अद्‌भुत क्षमता थी और इस क्षमता से वह एक ऐसी शक्ति का चित्र अंकित करता था, जिसके बारे में न्यूमैन यह सोचने लगता कि एक बार उस शक्ति के सम्पर्क में आ जाने के बाद वह उसके प्रति न्याय कर सकेगा। वह सोचता कि जो लोग आसपास हैं, उनके गुणों के मिश्रण से वह प्रतीक शक्ति संभव नहीं है और उसके लिए अपने-आप उसकी कल्पना कर सकना संभव न था।

न्यूमैन का ख्याल था कि फ्रेंच लोग ज्यादातर ऊपरी दिखावा करते हैं और उनमें चिन्तन की गहराई बहुत कम होती है। बेलगार्द से मिलने के बाद भी न्यूमैन को अपने इस विचार में परिवर्तन करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। उसने सोच लिया था कि हलकी चीज़ों को भी मिलाकर ऐसा आदमी हो सकता है, जो बड़ा ही अच्छा दोस्त बन सके। कोई भी दो मित्र शायद ही इतने विभिन्न व्यक्तित्व के रहे हों, लेकिन यह विभिन्नता ही इन दोनों मित्रों की विशिष्टता थी, जिससे दोनों का ही मनोरंजन होता था।

वेलेंतीन द बेलगार्द रू द एंजू सेंट आनरे में एक पुराने मकान के तल-घर में रहता था और उसका छोटा-सा फ्लैट मकान के अहाते और एक पुराने बाग के बीच में था। यह पुराना बाग बहुत बड़ा था। इसमें धूप नहीं आती थी, हर वक्त नमी बनी रहती थी और जिसे पेरिस में पीछे की खिड़कियों से बिना

किसी परिवर्तन की आशा के देखा जा सकता था। इस बात को देखकर अकसर आदमी यह सोचने के लिए मजबूर हो उठता था कि पेरिस की भीड़भाड़ देखते हुए इतने बड़े बाग के लिए जगह कैसे मिल गई थी। जब न्यूमैन बेलगार्द के घर गया, तो उसने अप्रत्यक्ष ढंग से कहा कि बेलगार्द का घर भी हंसने का उतना ही बड़ा माध्यम है, जितना कि उसका अपना घर। लेकिन हमारे नायक के सुनहले कमरों की तुलना में बेलगार्द के मकान की विचित्र चीज़ें बिलकुल भिन्न थीं। बेलगार्द के घर के कमरों की छत नीची थी। उसमें धूल थी और वे संकरे थे। इन कमरों में लोहे-लंगड़ का कबाड़ भरा हुआ था। बेलगार्द कुलीन था, लेकिन उसमें एक ऐसे संग्रहकर्ता की भूख थी, जो कभी शान्त नहीं होती थी। कमरों की दीवारों पर ज़ंग-लगे हथियार टंगे थे और काठियां तथा लकड़ी की तश्तरियां भी जगह-जगह लटकी थीं। दरवाज़ों पर टेपेस्ट्री के परदे थे, लेकिन इन परदों पर बने चित्रों के रंग उड़ गए थे। फर्श पर जगह-जगह जानवरों की खालें बिछी हुई थीं। कहीं-कहीं कुर्सियों आदि पर ऐसे खोल चढ़े थे, जिन्हें देखकर सुरुचि-सम्पन्नता की तारीफ की जा सकती थी, चाहे ऐसा करने में मन ही मन थोड़ी असुविधा क्यों न लगे। एक परदे के पीछे शीशा दिखलाई पड़ता था, जिसमें विभिन्न चीज़ों की छाया पड़ने के कारण आप कुछ नहीं देख सकते थे। एक बड़ा कोच था, जिसके ऊपर इतने कागज़ और पंख वगैरह पड़े थे कि आप उसपर बैठ नहीं सकते थे। आतिशदान की जगह थी, लेकिन उसमें गूदड़ ठुंसा हुआ था, इसलिए आग जलाने का तो सवाल ही नहीं था। इस युवक के घर का सारा सामान अव्यवस्था की जीती-जागती तस्वीर था और कमरों के वातावरण में सिगार की बू तथा कुछ अन्य सुगन्धें मिलकर इस तरह बस गई थीं कि उनको अलग-अलग पहचानना मुश्किल था। न्यूमैन को लगा कि इस घर में बड़ी सीलन है, अंधेरा है और इसका वातावरण बड़ा विषादपूर्ण है। न्यूमैन को फर्नीचर के टूटे-फूटे और जगह रोकनेवाले रूप को देखकर बड़ी उलझन हुई।

फ्रांस की प्रथा के अनुसार बेलगार्द ने खुलकर अपने बारे में बातचीत की तथा बिना किसी झिझक के अपने निजी जीवन के इतिहास और उसके रहस्यों का अनावरण किया। इसलिए स्वाभाविक था कि वह औरतों के बारे में भी कुछ कहता। बीच-बीच में उसने अपने आनन्द और खेद को प्रकट करने के लिए तरह-तरह के भावनात्मक तथा व्यंग्यात्मक उद्गार प्रकट किए। "ओह, यह औरतें, यह औरतें और

इनकी वजह से मुझे क्या नहीं करना पड़ा !" यह कहते हुए उसकी आंखों में वासना चमक उठती । "इन औरतों के लिए पता नहीं मैंने कितने मूर्खतापूर्ण और बेवकूफी-भरे काम किए होंगे !" इस विषय पर न्यूमैन अपनी आदत के अनुसार मौन रहा। पता नहीं क्यों, उसे इस विषय पर ज़्यादा बात करना ऐसा लगता था, जैसे वह कबूतरों की गुटुरगूं या बन्दरों की खौं-खौं सुन रहा है। बल्कि उसे तो यह भी लगता था कि औरतों के बारे में इतनी बात करना पूर्ण विकसित मानव-चरित्र के प्रतिकूल है, लेकिन बेलगार्द की आत्मकथा सुनकर उसका बड़ा मनोरंजन हुआ । इस दौरान शायद ही वह कहीं नाराज़ हुआ हो और इसमें तो शक नहीं कि वह उदार फ्रेंच युवक सनकी नहीं था । "मैं सचमुच यह सोचता हूं," बीच में उसने कहा, "मैं अपने अन्य समकालीन लोगों की तुलना में कलुषित नहीं हूं। वे लोग तो बड़े दुराचारी हैं, मेरे समकालीन लोग !" इसके बाद उसने अपनी महिला मित्रों के बारे में कई अनोखी और बढ़िया बातें बताई । बेलगार्द का जिन महिलाओं से परिचय था उनकी काफी संख्या थी और वे तरह-तरह की थीं। अन्त में उसने कहा था कि इन स्त्रियों में बुराई की बजाय अच्छाई ज़्यादा है। "लेकिन आप मेरी इस सलाह पर मत चलिएगा," उसने कहा, "किसी भी मामले पर आधिकारिक रूप से सलाह देने के लिए मैं बड़ा ही अनुपयुक्त व्यक्ति हूं। मैं औरतों का पक्ष ज़्यादा लेता हूं; मैं आदर्शवादी हू !" न्यूमैन उसकी बातें अपनी तटस्थ मुस्कराहट के साथ सुनता रहा और उसे इस बात की खुशी थी कि वह काफी प्रसन्नता अनुभव कर रहा था । लेकिन मानसिक रूप से उसने इस विचार का खण्डन किया था कि इस फ्रेंच युवक ने औरतों में कोई ऐसी विशेष खोज की थी, जिसका न्यूमैन को पता नहीं था। मो० द बेलगार्द का वार्तालाप आत्मकथा तक ही सीमित नहीं रहा; उसने हमारे नायक से उसके जीवन की घटनाओं के बारे में बहुत-से प्रश्न किए और न्यूमैन ने बेलगार्द को उन कहानियों से भी अच्छी कहानियां सुनाई, जो बेलगार्द ने कही थीं। न्यूमैन ने अपने जीवन के बारे में बताया। सच तो यह है कि उसने वह सारा किस्सा सुनाया कि वह किस-किस तरह विभिन्न परिस्थितियों से होकर गुज़रा और जब भी बेलगार्द के चेहरे से अविश्वास का कोई भाव प्रकट हुआ, तो न्यूमैन को घटना का और भी बढ़ा-चढ़ाकर और नमक-मिर्च लगाकर वर्णन करने में और भी ज़्यादा आनन्द आया। न्यूमैन पश्चिमी अमरीका के कहानी कहनेवालों के साथ रह चुका था। वह जानता था कि लोहे की अंगीठियों के पास बैठकर

किस तरह बड़ी कथाओं को और लम्बा किया जाता है, और किस तरह उनको इस प्रकार जमाया जाता है कि श्रोता उनपर अविश्वास न कर पाए। उसने स्वयं अपनी कल्पना से कहानी कहने का यह कौशल सीख लिया था, जिसका लोगों पर गहरा असर होता है। अन्त में बेलगार्द ने हसना शुरू कर दिया और हंसता ही रहा। वह अपनी यह भी प्रतिष्ठा बनाए रखना चाहता था कि मैं सब कुछ जानता हूं। इसके बाद वह हर बात पर अपना अविश्वास प्रकट करने लगा। नतीजा यह हुआ कि न्यूमैन द्वारा कही गई कुछ कालमान्य बातें भी बेलगार्द ने नहीं मानीं।

"लेकिन ब्योरे में जाने की जरूरत नहीं है," मो० द बेलगार्द ने कहा। "जाहिर है, आपको कुछ बड़े ही आश्चर्यजनक अनुभव हुए हैं। आपने भी जीवन के कुछ अनोखे पक्ष देखे है। आप एक पूरे महाद्वीप में इस तरह घूमे हैं, जैसे मैं सामने की सड़क पर टहलता हूं। आपने दुनिया में कुछ कर दिखाया है। आपने कुछ बड़े ही नीरस घण्टे बिताए है और आपको शायद कुछ ऐसे भी काम करने पड़े जिन्हें आप सामान्य रूप से करना पसन्द न करते। आपने रेता ढोया है, उस समय आप बच्चे थे और ऐसा करना पेट भरने के लिए जरूरी था। आपने स्वर्ण की तलाश में गए लोगों के कैम्प में कुत्ते का भुना मांस खाया है। एक-एक बार में आपने लगातार दस-दस घण्टे तक हिसाब का काम किया है और आप चर्च में दूसरी बैंच पर बैठी सुंदर लड़की को देखने के लिए प्रवचन के दौरान भी बैठे रहे हैं। यह सब बड़ा कठिन कार्य है। जो भी हो, आपने कुछ कर दिखाया है और अब आपकी अपनी स्वतंत्र स्थिति है; आपने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रयोग किया और बहुत बड़ी धनराशि कमा ली। आपने अपने-आपको विषयोपभोग और भ्रष्ट आचरण द्वारा नष्ट नहीं होने दिया और आपने अपने भाग्य को सामाजिक सुविधाओं का बन्दी नहीं बनाया। आप हर समस्या का सरलता से मुकाबला करते हैं और आपमें मुझसे भी कम पूर्वाग्रह हैं। हालांकि मैं समझता हूं कि मैं सारे निर्णय और फैसले विचारपूर्वक ही करता हूं, लेकिन मुझमें भी तीन-चार दोष हैं। आप स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, स्वतंत्र और सुखी व्यक्ति हैं। लेकिन," युवक ने अन्त में पूछा, "आप अपनी इस सुदृढ़ स्थिति का क्या लाभ उठाना चाहते हैं? सच यह है कि अगर आपको अपनी स्थिति का कुछ फायदा उठाना है, तो आपकी निजी दुनिया जो आज है, उससे बेहतर दुनिया चाहिए। इस समय आपके निजी जगत् का कोई मूल्य

नहीं।"

"ओह मेरा ख्याल है कि कुछ तो है ही," न्यूमैन ने कहा।

"वह क्या है ?"

न्यूमैन ने धीरे से कहा, "यह बात मैं आपको किसी और समय बताऊंगा !"

इस तरह न्यूमैन उस विषय को टालता रहा, जो उसके मन में सबसे अधिक घर किए था। उधर वह मदाम द सान्त्रे से बराबर अपनी घनिष्ठता बढ़ा रहा था। वास्तविकता यह थी कि वह उनसे तीन दफा मिलने जा चुका है। इनमें से केवल दो बार ही वे उनसे घर पर मिली थीं और हर बार उनके पास अन्य मेह-मान भी थे। मदाम द सान्त्रे से मिलने के लिए काफी लोग आते थे और वे बहुत बातें करते थे। इस तरह मदाम द सान्त्रे के समय का अधिकांश भाग अन्य लोगों की बातें सुनने में निकल जाता था। फिर भी वे कुछ न कुछ समय निकालकर न्यूमैन से अवश्य बातें करतीं और कभी-कभी बिना बात न्यूमैन की ओर देखकर मुस्करा देतीं। बिना बात की इस मुस्कराहट से भी न्यूमैन को बड़ी प्रसन्नता होती थी। जब वह बाद में इन मुस्कराहटों को याद करता, तो वह तरह-तरह के अर्थ लगाया करता था। उसे ऐसा लगता था कि वह कोई नाटक खेल रहा है जिसमें उसका बोलना बाधा डालेगा; कभी उसकी ऐसी इच्छा होती थी कि उसके पास कोई पुस्तक होती, जिससे वह कथोपकथन पढ़ता चलता ; कभी-कभी वह ऐसी स्त्री के आने की कल्पना करता, जिसके सिर पर सफेद टोपी लगी हुई है और गुलाबी रिबन है और जो उसे एक या दो फ्रांक देने के लिए हाथ बढ़ा रही है। मदाम द सान्त्रे के आसपास की कुछ महिलाएं न्यूमैन को बड़ी कठोरता से देखतीं—या बड़ी कोमलता से, आप जैसा चाहें समझ लें—और कुछ उसकी उपस्थिति के प्रति नितांत उदासीन रहतीं। पुरुष केवल मदाम द सान्त्रे की ओर ही देखते। ऐसा होना अनिवार्य था। चाहे कोई मदाम द सान्त्रे को सुन्दर मानता या न मानता, लेकिन मदाम द सान्त्रे अपने सामनेवाले आदमी की दृष्टि पर पूरी तरह छाई रहती थीं, ठीक उसी तरह जिस तरह कर्णप्रिय ध्वनि किसी भी व्यक्ति के कानों में छा जाती है। न्यूमैन की मदाम द सान्त्रे से जो सीधी बातचीत हुई थी, उसके शब्दों की संख्या बीस से अधिक नहीं थी। लेकिन न्यूमैन पर यह प्रभाव पड़ा था कि जैसे उसे कोई बहुत बड़ा वचन मिल गया हो और शायद वचन की भी इतनी कीमत न होती, जितनी उन शब्दों की थी। मदाम द सान्त्रे उस

नाटक की पात्र थीं, जो वह देख रहा था और साथ ही मदाम द सान्त्रे की अन्य महिला मित्र भी। लेकिन मदाम द सान्त्रे किस तरह सारे मंच पर छाई रहती थीं और वे अपना अभिनय कितने अच्छे ढंग से कर रही थीं, यही वह सोचता रहता। चाहे वे खड़ी होतीं या बैठी रहतीं ; चाहे वे अपने मित्रों को विदा देने दरवाज़े तक जातीं और उनके बाहर निकलते समय भारी परदों को ज़रा-सा हटा देतीं, और चाहे वे जाते हुए मित्रों को एक क्षण के लिए पीछे से देखती रहतीं या विदा देने के पहले अंतिम बार ज़रा-सा सिर हिलातीं ; या अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर सहारा लेकर बैठ जातीं और अपने हाथ एक-दूसरे पर रख लेतीं तथा आंखें बन्द कर लेतीं, बातें सुनती रहतीं और मुस्कराती रहतीं ; न्यूमैन को हमेशा यही लगता था कि अगर मदाम द सान्त्रे उसकी आंखों के सामने रहें, तो उसे बड़ा सुख मिलेगा। अगर वे उसके सामने ही घूमती रहें तो अच्छा है और अगर वे उसके किसी काम से घूमें-फिरें तो और भी अच्छा है। मदाम द सान्त्रे का कद काफी लम्बा था, लेकिन फिर भी वज़न ज़्यादा नहीं था; वे बड़ी चुस्त लगती थीं, फिर भी गम्भीरता की कमी नहीं थी; सुरुचि-सम्पन्नता थी लेकिन उसमें भी सरलता थी। वे स्पष्टवादी थीं, फिर भी उनकी बातें कितनी रहस्यमय होती थीं ! न्यूमैन को सबसे अधिक इसी रहस्य में—कि वे सामने से हटने के बाद क्या सोचती या क्या करती हैं, सबसे ज़्यादा रुचि थी। वह आपको यह नहीं बता सकता था कि इन बातों को जानने के लिए वह कितना आतुर है। अगर वह काव्य की भाषा में अपने भावों को व्यक्त कर सकता, तो शायद यह कहता कि मदाम द सान्त्रे के मुख के चारों ओर एक वैसा ही तेज-मण्डल है, जो कभी-कभी चन्द्रमा के चारों ओर दिखलाई पड़ता है। ऐसी बात नहीं थी कि मदाम द सान्त्रे बहुत चुप रहती हों, इसके विपरीत वे बहती नदी की तरह खुलकर बातचीत करती थीं। लेकिन न्यू-मैन का विश्वास था कि मदाम द सान्त्रे में कुछ ऐसे गुण हैं, जिनका पता स्वयं उनको भी नहीं है।

इनमें से बहुत-सी बातें कई कारणों से न्यूमैन ने बेलगार्द को नहीं बताई थीं। एक कारण यह था कि कोई बात शुरू करने से पहले न्यूमैन हमेशा चारों तरफ के वातावरण का अध्ययन करता था, कल्पना करता था और इसके बारे में खूब सोच-विचार करता था। उसमें जल्दबाज़ी बिलकुल नहीं थी। वह ऐसा व्यक्ति हो गया था जिसका विश्वास था कि जब वह किसी स्थान पर पहुचने का

निश्चय कर लेता, तो एक बार चल देने के बाद लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ वह गन्तव्य स्थल पर पहुंच जाएगा। ऐसे मौके पर उसे मौन रहना प्रिय था—ऐसा करने से वह मानसिक रूप से व्यस्त रहता और उसे हर्ष भी होता। लेकिन एक दिन बेलगार्द ने उसके साथ रात का भोजन किया। भोजन होटल में किया था। भोजन के बाद वे काफी देर तक बैठे रहे थे। वहां से उठने पर बेलगार्द ने प्रस्ताव रखा कि शेष संध्या बिताने के लिए वे लोग मदाम दांदेलार्द के यहां चलें। मदाम दांदेलार्द इतालियन महिला थीं, जिन्होंने एक फ्रेंच व्यक्ति से शादी की थी। यह व्यक्ति बाद में जीवन में बड़ा असफल रहा और इस महिला के साथ अत्यन्त पाशविक व्यवहार करता था। मदाम दांदेलार्द के पति ने उनका सारा धन खर्च कर डाला था। और चूंकि उसके पास अन्य किसी प्रकार के खर्चीले मनोरंजन के लिए कोई साधन नहीं था, इसलिए वह जब बहुत उकता जाता, तो मन-बहलाव के लिए अपनी पत्नी को पीटता था। मदाम दांदेलार्द के शरीर पर कहीं न कहीं नीले स्याह निशान ज़रूर होते थे, और जिन्हें वे अनेक व्यक्तियों को दिखाती थीं। इनमें बेलगार्द भी शामिल था। वे अपने पति से अलग रहती थीं और उनकी सम्पत्ति का जो कुछ बचा-खुचा अंश था (यह बहुत ही कम था), उसे बटोरकर वे पेरिस आ गई थीं। पेरिस में वे होटल गरनी में ठहरी हुई थीं। उन्हें हमेशा किसी फ्लैट की तलाश रहती और वे हमेशा दूसरे लोगों के फ्लैटों में जाती रहतीं और पूछ-ताछ करतीं। वे काफी सुन्दर थीं और उनमें बाल-सुलभ सरलता थी। कभी-कभी वे कोई असाधारण बात कह जाती थीं। बेलगार्द ने उनसे परिचय इसलिए किया था कि वह जानना चाहता था कि इस औरत का आगे क्या होगा। यह उसके अपने ही शब्द थे : "यह गरीब है, सुन्दर है, और बेवकूफ भी है," बेलगार्द ने कहा, "मेरा खयाल है कि उसके लिए एक ही रास्ता है। यह बड़े दुःख की बात है लेकिन और कुछ किया भी नहीं जा सकता। मैंने उसके लिए छः महीने की व्यवस्था कर दी है। उसे मुझसे किसी भी प्रकार डरने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं देख रहा हूं कि क्या होता है। मुझे इस बात की उत्सुकता है कि घटनाचक्र किस तरह करवट लेगा। हां, मैं जानता हूं कि आप क्या कहनेवाले हैं ; पेरिस बड़ा भयंकर नगर है और यहां रहकर लोगों का हृदय कठोर हो जाता है। लेकिन यहां पर लोगों की बुद्धि भी तेज़ी से चलने लगती है और लोगों के प्रेक्षण की शक्ति और अधिक तीव्र हो जाती है। अब इस स्त्री के जीवन के नाटक को देखना मेरे लिए एक बौद्धिक

आनन्द है।"

"लेकिन अगर वह आत्महत्या करे," न्यूमैन ने कहा, "तो आपको उसे ऐसा करने से रोकना चाहिए।"

"उसे रोकना चाहिए ? कैसे रोकना चाहिए ?"

"उससे बात करिए, उसे अच्छी सलाह दीजिए।"

बेलगार्द हंसने लगा। "हम दोनों का खुदा ही मालिक है ! ज़रा उस स्थिति की कल्पना तो कीजिए। आप ही क्यों नहीं सलाह देते ?" इसके बाद न्यूमैन बेलगार्द के साथ मदाम दांदेलार्द से मिलने गया। जब वे वापस लौटे, तो बेलगार्द ने न्यूमैन को डांटा। "जो सलाह देने का दम आप भर रहे थे, वह कहां गई ?" उसने पूछा, "उस सलाह का एक शब्द भी मुझे नहीं सुनाई पड़ा।"

"ओह, मैंने यही निश्चय किया कि सलाह न देना ही उचित है," न्यूमैन ने सीधे-सादे ढंग से कह दिया।

"तो आप भी मेरी ही तरह गए-बीते हैं !" बेलगार्द ने कहा।

"नहीं, क्योंकि मुझे इस महिला के भावी कार्यक्रमों से कोई बौद्धिक आनन्द ग्रहण नहीं करना है। मुझे उसे पतन के रास्ते पर जाते हुए नहीं देखना है। अगर वह गिर रही होगी, तो मैं अपनी नज़र दूसरी तरफ फिरा लूंगा। लेकिन," उसने एक क्षण बाद पूछा, "आप अपनी बहन से क्यों नहीं कहते कि वे इस स्त्री से मिलें ?"

बेलगार्द ने घूरकर देखा। "मदाम दांदेलार्द से मेरी बहन जाकर मिलें ?"

"वे मदाम दांदेलार्द को सलाह देने के लिए मिल सकती हैं।"

बेलगार्द ने बड़ी गम्भीरता से नकारात्मक ढंग से सिर हिलाया। "मेरी बहन इस तरह की स्त्री से कभी नहीं मिल सकतीं। मदाम दांदेलार्द की हैसियत कुछ भी नहीं है; वे दोनों कभी नहीं मिलेंगी।"

"मेरा ख्याल था," न्यूमैन ने कहा, "कि आपकी बहन जिससे चाहें, उससे मिल सकती हैं।" और उसने मन ही मन तय किया कि जब मदाम द सान्त्रे से उसका परिचय और भी प्रगाढ़ हो जाएगा, तो वह उनसे अनुरोध करेगा कि वे इस बेवकूफ इतालियन महिला से मिलकर उसे समझाने का यत्न करें।

एक बार डिनर के बाद फिर बेलगार्द ने न्यूमैन से यह प्रस्ताव किया कि हम दोनों मदाम दांदेलार्द के घर चलें और उनका दुःख-दर्द सुनें, लेकिन न्यूमैन ने

धीरे से यह प्रस्ताव टाल दिया।

"मेरे दिमाग में इससे कुछ बेहतर बात है," उसने कहा, "मेरे साथ घर चलिए, और बाकी संध्या का समय मेरे कमरे में आतिशदान के सामने बैठकर बिताइए।"

बेलगार्द को हमेशा ही लम्बी बैठकबाजी करके गप्प मारने की सुविधा से आनन्द मिलता था। और कुछ ही देर बाद ये दोनों व्यक्ति न्यूमैन के 'बॉल-रूम' में बैठे आग की लम्बी-लम्बी लपटों को देख रहे थे, जिसका प्रकाश कमरे की सजी दीवारों पर रह-रहकर पड़ रहा था।

आठ

"आज आप अपनी बहन के बारे में मुझे कुछ बताइए," न्यूमैन ने यकायक बात शुरू की।

बेलगार्द ने मुड़कर उसकी तरफ जल्दी से देखा। "अब चूंकि हम इस प्रश्न पर विचार कर रहे हैं, इसलिए मेरा ध्यान इस ओर गया है, इसके पहले तो आपने मुझसे मेरी बहन के बारे में कभी कुछ नहीं पूछा।"

"हां, यह बात मैं जानता हूं।"

"अगर इसका यह कारण था कि आप मेरा विश्वास नहीं करते थे, तो आपका ख्याल बिलकुल ठीक था," बेलगार्द ने कहा। "मैं कभी भी उनके बारे में बिलकुल बौद्धिक स्तर पर बात नहीं कर सकता। मैं उनसे बहुत स्नेह करता हूं।"

"आप उनके बारे में कुछ भी बात करिए," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "शुरू कीजिए।"

"पहली बात तो यह है कि हम दोनों बड़े अच्छे मित्र हैं। ऑरेस्टस तथा इलेक्ट्रा के बाद शायद ही हम दोनों जैसे बहन-भाई हुए हों, जिनमें इतना प्रेम हो। आप तो मेरी बहन से मिल ही चुके हैं; आप जानते हैं कि वे कैसी हैं। लम्बी, छरहरी, हलकी, प्रभावशाली व्यक्तित्व की, आधी नारी और आधी देवी, विनयशीलता और अभिमान का मधुर सम्मिश्रण, शांति का प्रतीक। वे बिलकुल एक ऐसी प्रतिमा की तरह लगती हैं, जो पाषाण बने रहने में असफल रही है और

अपने दोषों से लाचार होकर हाड़ और मांस की पुतली के रूप में प्रकट हो गई है। वह सफेद टोपी और लम्बे पल्लों की पोशाक पहनती हैं। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि उनके चेहरे, उनकी दृष्टि, उनकी मुस्कान, उनके कण्ठस्वर में वह सारी बातें हैं, जिनकी आशा आप उनसे करते हैं ; हां, यह कहना बहुत बड़ी बात है, मैं जानता हूं। आम तौर पर जब कोई स्त्री बड़ी आकर्षक लगती है, तो मैं कहता हूं, 'सावधान !' लेकिन जिस अनुपात में क्लेयर आकर्षक लगती है, उसे देखकर मैं यह कह सकता हूं कि आप अपने हाथ बांधकर बैठ जाएं और उसकी उपस्थिति के प्रवाह में अपने-आपको बहने दें ; आप बिलकुल सुरक्षित हैं। वे बहुत ही भली हैं। मैंने उनसे आधी भी अच्छी या पूर्ण स्त्री अन्य कोई नहीं देखी है। उनमें सब कुछ है ; मैं उनके बारे में इतना ही कह सकता हूं। संक्षेप में," बेलगार्द ने अपनी बात खत्म की, "मैं इतना ही आपसे कह सकता हूं।"

न्यूमैन कुछ देर चुप रहा, जैसे वह अपने मित्र के शब्दों पर विचार कर रहा हो। "वह बड़ी अच्छी हैं, क्यों ?" अन्त में उसने ये शब्द दोहराए।

"बहुत ही अच्छी।"

"अत्यन्त दयालु, उदार, सुकोमलहृदय ?"

"वे उदारता की प्रतीक है ; दयालुता की साक्षात् देवी !"

"क्या वे चतुर भी हैं ?"

"उन जैसी चतुर और बुद्धिमान स्त्री मैंने नहीं देखी। आप स्वयं किसी दिन किसी कठिन समस्या पर उनकी परीक्षा लें, स्वयं देख लीजिएगा।"

"क्या उन्हें अपनी प्रशंसा सुनने का शौक है ?"

"हे भगवान !" बेलगार्द ने जोर से कहा, "यह शौक किस स्त्री को नहीं होता !"

"आह, जब कोई स्त्री अपनी प्रशसा सुनने की बड़ी शौकीन होती है, तो वह उसे प्राप्त करने के लिए तरह-तरह की मूर्खताएं करती है।"

"मैंने यह तो नहीं कहा कि वे अपनी प्रशसा सुनने की शौकीन हैं !" बेलगार्द ने जवाब दिया। ईश्वर मुझसे इस तरह की कोई मूर्खतापूर्ण बात न कहलाए। उनमें किसी भी बात की 'अति' नहीं है। अगर मैं यह कहूं कि वे बदसूरत हैं, तो इसका यह मतलब नहीं है कि वे बहुत ही बदसूरत हैं। उन्हें दूसरों को प्रसन्न करने का चाव है और आपको वह प्रसन्न करने में समर्थ होती हैं, तो इसके लिए वे आपका आभार मानती हैं; और अगर आपको प्रसन्न नहीं कर सकीं, तो भी

वे खिन्न नहीं होतीं और अपने या आपके बारे में कोई बुरी धारणा नहीं बनातीं। मेरा ख्याल है कि उन्हें पता है कि स्वर्ग में संत होते हैं और मेरा विश्वास है कि वे दूसरों को प्रसन्न करने के लिए ऐसे किसी साधन का प्रयोग नहीं करेंगी, जिनका देवता विरोध करते हों।"

"क्या वे बहुत गम्भीर रहती हैं ? या उनकी आदत हमेशा प्रसन्न रहने की है ?" न्यूमैन ने पूछा।

"वे दोनों ही तरह रहती हैं ; ऐसा नहीं होता कि कभी वे प्रसन्न रहती हों और कभी दुखी, क्योंकि वे हमेशा एक जैसी ही रहती हैं। उनकी प्रसन्नता में भी गाम्भीर्य होता है और गाम्भीर्य में भी प्रसन्नता। लेकिन ऐसा कोई कारण नहीं है कि वे विशेष रूप से प्रसन्न रहें।"

"क्या वे दुखी रहती हैं ?"

"यह तो मैं नहीं कहूंगा, क्योंकि दुखी रहना इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति अपनी परिस्थितियों को किस प्रकार ग्रहण करता है। और क्लेयर सभी परिस्थितियों का कुमारी मेरी द्वारा दिए गए संदेशों के आधार पर सामना करती हैं। कुमारी मेरी उन्हें स्वप्न में दर्शन देती हैं। दुखी रहने का मतलब लोगों से नाराज़ रहना है, जिसका सवाल ही नहीं उठता। उन्होंने अपने-आपको परिस्थितियों के अनुरूप इस प्रकार ढाल लिया है कि वे प्रसन्न रहती हैं।"

"वे दार्शनिक हैं," न्यूमैन ने कहा।

"नहीं, वे केवल बहुत भले हृदय की स्त्री हैं।"

"कुछ भी हो, उन्हे बड़ी विषम स्थितियों का सामना करना पड़ा है ?"

बेलगार्द एक क्षण के लिए रुका—ऐसा वह बहुत ही कम करता था। "ओह, अगर मैंने अपने घर का इतिहास बताना शुरू कर दिया, तो आपको इतनी बातें बता जाऊंगा कि उन्हें सुनने के लिए आप तैयार न होंगे।"

"नहीं, बात ठीक इसके उलटी है। मैं सब कुछ सुनने के लिए तैयार हूं," न्यूमैन ने कहा।

"इसके लिए हमें विशेष बैठक करनी होगी, जो काफी जल्दी शुरू हो। अभी इतना ही कहना पर्याप्त है कि क्लेयर फूलों की सेज पर ही नहीं सोई। उसका विवाह १८ वर्ष की आयु में हुआ था और सोचा गया था कि वह बहुत सफल होगा। लेकिन वह अंधेरा चिराग साबित हुआ ; इस बूझे चिराग से

केवल धुआं और बदबू ही निकली। मो० द सान्त्रे ६० वर्ष के थे। बिलकुल वृद्ध। फिर वे विवाह के कुछ ही दिन बाद मर गए और उनका परिवार उनकी सम्पत्ति पर बुरी तरह टूट पड़ा। उन लोगों ने मेरी विधवा बहन के खिलाफ मुकदमा दायर कर दिया और बड़ी कठोरता का व्यवहार किया। उनका मुकदमा बड़ा मज़बूत था। मो० द सान्त्रे अपने कुछ रिश्तेदारों की सम्पत्ति के ट्रस्टी थे; और ऐसा लगा कि उन्होंने कई अनियमितताएं की थीं। मुकदमे के दौरान मो० द सान्त्रे के निजी जीवन के सम्बन्ध में भी कई बातें बताई गईं। ये बातें मेरी बहन को बहुत ही अप्रिय लगीं और उन्होंने अपनी तरफ से पैरवी करना बिलकुल बन्द कर दिया और सारी सम्पत्ति की ओर से मुंह मोड़ लिया। इसके लिए काफी साहस की ज़रूरत थी, क्योंकि उनके एक तरफ कुआं था और दूसरी तरफ खाई। ससुराल के लोग तो मेरी बहन की सम्पत्ति पर कब्ज़ा करने के अधिकार का विरोध कर रहे थे और हमारा अपना परिवार उन्हें मुकदमा लड़कर सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए विवश कर रहा था। मेरी मां और मेरे भाई चाहते थे कि क्लेयर अपने अधिकारों के लिए लड़े और उन्हें प्राप्त करे। किन्तु अपने परिवार के लोगों का क्लेयर ने दृढ़ता से प्रतिरोध किया और अन्ततः अपनी जान छुड़ा ही ली—उन्होंने मां की यह अनुमति प्राप्त कर ली कि वे मुकदमा न लड़ें। ऐसा करने के लिए उन्हें एक वादा करना पड़ा।"

"यह वादा क्या था ?"

"वे अगले दस वर्षों में मां की आज्ञा के अनुसार कुछ भी करेंगी ; केवल शादी नहीं करेंगी।"

"क्या उन्हें अपने पति से इतनी ज़्यादा चिढ़ थी ?"

"कोई नहीं जानता कि वे कितनी चिढ़ती थीं !"

"यह शादी आपके यहां की भयानक फ्रेंच परम्पराओं के अनुसार हुई थी," न्यूमैन ने अपना कथन जारी रखते हुए कहा, "इसे दोनों परिवारों ने मिलकर तय किया था और मदाम की सहमति नहीं ली गई थी ?"

"यह तो उपन्यास का एक अध्याय है। क्लेयर ने मो० द सान्त्रे को शादी से एक महीने पूर्व सबसे पहले देखा था। तब तक ब्योरे की हर चीज़ तय की जा चुकी थी। मो० द सान्त्रे को देखते ही क्लेयर का चेहरा एकदम सफेद पड़ गया और वह विवाह के दिन तक सफेद ही बना रहा। जिस दिन विवाह होनेवाला

था, उसके एक दिन पहले संध्या को वे अचेत हो गईं और उन्होंने सारी रात सिसकियां भरते हुए काटी। मेरी मां उनके दोनों हाथों पर हाथ रखे बैठी रहीं और मेरे भाई कमरे में रात-भर इधर से उधर घूमते रहे। मैंने कहा कि जो कुछ हो रहा है, मैं उसके खिलाफ विद्रोह करूंगा और मैंने सबके सामने अपनी बहन से कह दिया कि अगर वह विवाह करने से इनकार कर देगी, तो मैं उसका पूरी तरह समर्थन करूंगा। लेकिन मुझसे कह दिया गया कि मैं अपना रास्ता नापूं और क्लेयर काम्तेस द सान्त्रे बन गई।"

"आपके भाई," न्यूमैन ने विचारों में उलझे हुए कहा, "बड़े अच्छे युवक मालूम पड़ते हैं।"

"हां, वे अच्छे हैं, हालांकि युवक नहीं हैं। उनकी उम्र ५० से भी ऊपर है ; मुझसे वे १५ वर्ष बड़े हैं। हमारे लिए यानी मेरे और मेरी बहन के लिए वे पितातुल्य रहे हैं। उनकी कुछ विशेषताएं है ; फ्रांस-भर में उन जैसा शिष्ट व्यक्ति नहीं मिलेगा। वे बहुत चतुर हैं ; और बहुत विद्वान भी। वे एक इतिहास लिख रहे हैं, विषय है—'फ्रांस की वे राजकुमारियां, जिन्होंने कभी विवाह नहीं किया'।" यह बात बेलगार्द ने न्यूमैन की आंखों में आंखें डालकर एकदम सीधे देखते हुए बड़ी गम्भीरता से कही। बेलगार्द की दृष्टि में कुछ ऐसी बात थी, जिससे प्रकट होता था कि वह कोई भी बात छिपा नहीं रहा है या कम से कम उसने कोई भी बात मन में नहीं रखी थी।

शायद न्यूमैन ने यह समझ लिया था कि उसके इस कथन में क्या महत्त्वपूर्ण बात है, क्योंकि तुरन्त ही उसने कहा, "आप अपने भाई से स्नेह नहीं करते ?"

"मुझे क्षमा कीजिएगा, "बेलगार्द ने शिष्टाचार का प्रदर्शन करते हुए कहा, "भले घरों के लोग हमेशा अपने भाइयों से स्नेह करते हैं।"

"तो फिर मैं उनसे स्नेह नहीं करता !" न्यूमैन ने उत्तर दिया।

"पहले आप उनसे परिचित तो हो लें। इतनी देर प्रतीक्षा कर लीजिए !" बेलगार्द ने उत्तर दिया। इस बार वह मुस्करा रहा था।

"क्या आपकी मां में भी कोई बड़ी खास बात है ?" न्यूमैन ने कुछ देर ठहरकर पूछा।

"जहां तक मेरी मां का सम्बन्ध है," बेलगार्द ने बड़ी ही गम्भीर मुद्रा बनाकर कहा, "उनके प्रति मेरे हृदय में असीम आदर का भाव है। वे बड़ी ही असाधारण महिला हैं। उनकी इस असाधारणता को आप उनके पास जाते ही महसूस कर

लेंगे।"

"मैंने सुना है कि वे किसी अंग्रेज़ सामन्त की पुत्री हैं ?"

"अर्ल आफ सेंट डन्सटेन की।"

"क्या अर्ल आफ सेंट डन्सटेन का खानदान बड़ा प्राचीन है ?"

"ऐसा ही है। सोलहवीं शताब्दी से यह सामन्त परिवार चला आ रहा है। असल में मेरे पिता का परिवार बहुत पुराना है। परिवार-इतिहासज्ञ पुराने नाम गिनाना शुरू करते हैं, तो खुद उनका दम फूल जाता है। अन्त में वे लोग रुक जाते हैं, ज़ोर-जोर से हांफने लगते हैं और पंखा करने लगते हैं। यह स्थल नवीं शताब्दी में शार्लमैन के काल में आता है। हमारे परिवार का इतिहास यहीं से शुरू होता है।"

"इस बारे में कोई गलती तो नहीं है ?" न्यूमैन ने कहा।

"मेरा विश्वास है कि इस बारे में किसी गलती की आशंका नहीं है। कई शताब्दियों तक लोग हमारे परिवार के सम्बन्ध में भूल करते रहे थे।"

"और आप लोग हमेशा पुराने खानदानों में ही विवाह करते हैं ?"

"नियम तो यही है ; लेकिन इतने लम्बे अरसे में कुछ अपवाद ज़रूर हुए हैं। बेलगार्द परिवार के तीन-चार सदस्यों ने १७वीं और १८वीं शताब्दियों में सामन्त परिवारों के बाहर विवाह किए—उन्होंने वकीलों की लड़कियों से शादी कर ली थी।"

"वकील की लड़की से शादी ! यह तो बहुत खराब है, है न ?" न्यूमैन ने पूछा।

"भयंकर है ! हममें से एक ने मध्य युग में ज़्यादा अच्छी बात की थी। उसने एक भिखारिन युवती से शादी कर ली थी, जैसे सम्राट कोफेतुआ ने विवाह किया था। यह बात वाकई बहुत अच्छी थी। लगता था कि यह विवाह एक चिड़िया और एक बन्दर के बीच हुआ है। इसलिए लोगों को किसी भी तरफ का परिवार देखने की ज़रूरत नहीं थी। हमारे परिवार की महिलाएं हमेशा बड़ी सफल सिद्ध हुई हैं। वे कभी किसी नीचे खानदान में ब्याही नहीं गईं। मेरा ख्याल है कि उन्होंने कभी भी निश्चित मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया।"

न्यूमैन इस बात पर कुछ देर सोचता रहा, और तब फिर अन्त में बोला, "आपको याद है, जब आप पहली बार मुझसे मिलने आए थे, तो आपने कहा था

कि आप मेरी कोई भी सेवा करने के लिए प्रस्तुत हैं। उस समय मैंने उत्तर दिया था कि समय आने पर मैं आपको बताऊंगा कि आप मेरी क्या सहायता कर सकते हैं। यह बात आपको याद है ?"

"याद है ? मैं तो तब से अब तक हर मिनट गिन रहा हूं।"

"बहुत अच्छा ; अब अवसर आ गया। मैं चाहता हूं, आपकी बहन मेरे बारे में अच्छी धारणा बनाएं। इस धारणा को बनाने में आप जो कुछ भी सहायता हो सकती है, करें।"

बेलगार्द मुस्कराता हुआ देखता रहा। "क्यों, मेरा तो ख्याल है कि उनकी आपके बारे में यूं भी बड़ी अच्छी धारणा है।"

"मुझसे उनकी मुलाकात केवल तीन-चार बार हुई है और यह राय इन्हीं मुलाकातों पर आधारित है। उससे क्या ! यह बहुत कम है। मैं चाहता हूं कि बात कुछ और बने। मैं इस सम्बन्ध में काफी कुछ सोच चुका हूं और मैंने अपने मन की बात आपको बताने का फैसला किया है। मैं मदाम द सान्त्रे से विवाह करना चाहता हूं।"

बेलगार्द जिस समय बोल रहा था, उस समय किसी नई बात को सुनने के लिए बड़ी आशा से उसकी तरफ देख रहा था। जब न्यूमैन ने उससे अपना वचन पूरा करने की मांग की थी, उस समय भी न्यूमैन के कथन का उसने मुस्कराकर स्वागत किया था। न्यूमैन की अंतिम बात पर वह एक तरफ ही देखता रहा। लेकिन उसकी मुस्कराहट ने दो-तीन बार बड़े विचित्र ढंग से रंग बदले। ऐसा लग रहा था कि उसकी इच्छा हो रही है कि वह ज़ोर से खुलकर मुस्कराए; लेकिन उसने तत्काल अपने-आपको ऐसा करने से रोक लिया। इसके बाद ऐसा लगा कि बेलगार्द मन ही मन कुछ सोच रहा है, विचार कर रहा है और अन्त में उसने मन की बात प्रकट न करना ही उचित समझा। धीरे-धीरे उसके होंठों की मुस्कान लुप्त हो गई और चेहरे पर ऐसी गम्भीरता हो गई, जिससे प्रकट होता था कि वह अशिष्ट नहीं होना चाहता। काउण्ट वेलेंतीन के मुंह पर अत्यन्त आश्चर्य का भाव था ; लेकिन फिर उसने सोचा कि आश्चर्यपूर्ण मुद्रा रखना शिष्ट न होगा। पर वह क्या करे ? बेलगार्द अपनी परेशानी में उठ खड़ा हुआ और चिमनी के पास चला गया। लेकिन वह बराबर न्यूमैन को देख रहा था। उसे बोलने में किसी भी व्यक्ति की कल्पना से अधिक समय लग रहा था।

"अगर आप मेरी यह सहायता नहीं कर सकते हैं, जिसका कि मैंने अनुरोध किया है," न्यूमैन ने कहा, "तो मना कर दीजिए !"

"आपने जो कुछ कहा है, उसे ज़रा फिर से दोहरा दीजिए, साफ-साफ," बैल-गार्द ने कहा, "यह बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है, आप समझते हैं न। मैं अपनी बहन से आपके बारे में अनुकूल बातें कहूं, क्योंकि आप—आप उनसे विवाह करना चाहते हैं ? यही बात है न ?"

"ओह, मेरा यह मतलब नहीं है कि आप उनको मुझसे शादी करने के लिए सहमत करें; यह काम तो मैं स्वयं ही करूंगा। लेकिन मैं चाहता हूं कि कभी-कभी आप मेरी तारीफ में एकाध शब्द इस तरह कह दिया करें कि मेरे बारे में आपकी राय अच्छी है।"

इसपर बेलगार्द कुछ हंस दिया।

"मैं यह चाहता हूं," न्यूमैन कह रहा था, "कि आपको यह पता चल जाए कि मेरे दिमाग में क्या बात है। मेरा ख्याल है कि इसकी आप आशा भी कर रहे थे, है न ? मैं यहां के रिवाज के अनुसार ही काम करूंगा। अगर मुझे कोई विशेष बात करनी हो, तो वह भी बता दीजिए, मै उसे भी करने को तैयार हूं। मैं मदाम द सान्त्रे के पास कायदे से ही विवाह का अनुरोध करने जाना चाहता हूं। अगर मुझे आपकी मां के पास जाना चाहिए और उन्हें यह बात बता देनी चाहिए, तो मैं उनसे जाकर भी कहने को तैयार हूं। मै आपके भाई से मिलने को और उनसे भी यह बात कहने के लिए प्रस्तुत हूं। बहरहाल आप जिससे भी कहेंगे, उससे मैं विवाह के बारे में बात कर सकता हूं। चूंकि मैं और किसीको नहीं जानता, इसलिए मैंने यह बात आपको बताई है। लेकिन अगर अन्य किसीको भी सामाजिक रीति-रिवाजों के अनुसार बतानी ज़रूरी हो, तो उससे यह बात कहने में भी मुझे आनन्द ही होगा।"

"हां, मैं समझ गया—मैं समझ गया," बेलगार्द ने अपनी ठोड़ी पर उंगलियों से थपकी देते हुए कहा। "आपको यह सोचने का अधिकार है और मुझे खुशी है कि आपने सबसे पहले यह बात मुझे बताई।" कुछ देर के लिए वह चुप हो गया, कुछ झिझकता हुआ सा और फिर मुड़कर कमरे में टहलता हुआ दूसरी तरफ चला गया। न्यूमैन भी उठकर खड़ा हो गया और मेंटलपीस का सहारा लेकर खड़ा हो गया। उसने अपने दोनों हाथ जेबों में डाल लिए थे और बेलगार्द को देख रहा था। फ्रेंच युवक उसकी तरफ वापस आ गया और सामने आकर खड़ा हो गया। "मैं

अपने मन की बात कह देना चाहता हूं," उसने कहा, "मैं यह प्रकट करने की कोशिश नहीं करूंगा कि मुझे आपकी बात से आश्चर्य नहीं हुआ है। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ है ! ओफ, यह कहकर मुझे कितनी राहत मिली है !"

"इस तरह की बात से हमेशा आश्चर्य होता है," न्यूनमैन ने कहा, "चाहे आपने कुछ भी किया हो, इस खबर को सुनने के लिए लोग तैयार नहीं होते। लेकिन अगर आपको आश्चर्य भी हुआ है, तो मुझे आशा है, कुछ खुशी भी हुई होगी।"

"तो लीजिए, सुन लीजिए !" बेलगार्द ने कहा, "मैं आपसे बहुत स्पष्ट ढंग से बात करूंगा। मैं नहीं जानता कि मुझे खुशी हुई है या मैं आपकी बात सुनकर डर गया हूं।"

"अगर आप खुश हुए हैं, तो मैं भी खुश हूं," न्यूमैन ने कहा, "और आपके प्रसन्न होने से मुझे प्रोत्साहन मिलेगा। लेकिन अगर आप डर गए हैं, सशंकित हो उठे हैं, तो मुझे खेद होगा, लेकिन मैं इस बात से अनुत्साहित नहीं हो सकूंगा। आपको इस स्थिति का ज़्यादा से ज़्यादा अनुकूल लाभ उठाने की चेष्टा करनी चाहिए।"

"यह बिलकुल ठीक है—आपका रवैया भी यही होना चाहिए। आप इस मामले में बिलकुल गम्भीर हैं न ?"

"क्या मैं भी कोई ऐसा फ्रेंच युवक हूं, जो इस मामले में गम्भीर नहीं होता ?" न्यूमैन ने पूछा, "लेकिन ऐसी क्या बात है, जो आप धीरे-धीरे इतने आशंकित होते जा रहे हैं ?"

बेलगार्द ने अपना हाथ अपने सिर के पीछे रख लिया और इसके बाद वह जल्दी-जल्दी सिर खुजलाने लगा। और साथ ही उसने ऐसा करते हुए अपनी जीभ का थोड़ा-सा अगला भाग बाहर निकाल लिया। "उदाहरण के लिए आप किसी सामन्त परिवार के नहीं हैं," उसने कहा।

"हां, सो तो मैं नहीं हूं !" न्यूमैन ने कहा।

"ओह," बेलगार्द ने कुछ और गम्भीर होकर कहा, "मुझे यह भी नहीं पता कि आपको कोई पदवी प्राप्त है।"

"पदवी ? इससे आपका क्या मतलब है ?" न्यूमैन ने पूछा। "काउण्ट, ड्यूक या मारक्विस ? इनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। मैं यह भी नहीं जानता कि कौन क्या होता है और क्या नहीं होता। लेकिन मैं इतना कह सकता हूं कि मैं

सज्जन हूं, मैं यह नहीं जानता कि आपने 'नोबुल' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया है। लेकिन यह एक बड़ा अच्छा शब्द है और इससे एक बड़ा अच्छा विचार उत्पन्न होता है ; और मैं उस विचार के अनुकूल होने का दावा करता हूं।"

"लेकिन मेरे दोस्त, तुम और लोगों को क्या दिखाओगे ? तुम्हारे पास 'नोबुल' होने के क्या प्रमाण हैं ?

"मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूं। लेकिन आप यह न सोच बैठिएगा कि मैं यह भी साबित करने के लिए भी तैयार हूं कि मैं 'नोबुल' (सज्जन) हूं। अगर मैं ऐसा नहीं हूं, तो उसके विपरीत सिद्ध करना आपका काम है।"

"यह बहुत आसान है। आपने टब बनाए हैं।"

न्यूमैन एक क्षण तक घूरता रहा। "तो इसीलिए मैं सज्जन नहीं रहा ? यह बात मेरी समझ में नहीं आई। कोई ऐसी बात बताइए, जो मैंने न की हो—या जिसे मैं न कर सकने की स्थिति में हूं।"

"लेकिन मदाम द सान्त्रे जैसी स्त्री से आपका विवाह इस तरह तो नहीं हो सकता कि आपने प्रस्ताव किया और शादी हो गई।"

"मेरा ख्याल है, शायद आपका मतलब है," न्यूमैन ने धीरे-धीरे कहा, "कि मै उपयुक्त व्यक्ति नहीं हूं ?"

"मुंहफट तरीके से कहा जाए तो— हां !"

बेलगार्द एक क्षण के लिए झिझका और जिस समय वह कुछ सोचता रहा था, न्यूमैन बड़ी उत्सुकता से उसकी तरफ देख रहा था। बेलगार्द के अन्तिम शब्दों के उत्तर में न्यूमैन ने तुरन्त कुछ नहीं कहा। उसका मुंह सुर्ख हो गया। इसके बाद उसने छत की तरफ देखा और वहां जो गुलाबी फूल-पत्तियां कढ़ी हुई थीं, उनकी ओर खड़े होकर देखते हुए वह बोला, "इसमें शक नहीं कि मैं यह नहीं समझता कि कहने-मात्र से ही मेरा विवाह किसीसे हो जाएगा।" आखिर उसने कहा, "सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि वे मुझे स्वीकार करें। मदाम द सान्त्रे मुझे पसन्द करें, यह पहली बात है। लेकिन मैं इस काबिल भी नहीं हूं कि मेरे संबंध में विचार किया जा सके, यह जानकर मुझे कुछ आश्चर्य हुआ।"

बेलगार्द के मुह पर उलझन, सहानुभूति और कुछ विनोद के मिश्रित भाव परिलक्षित हो रहे थे। "तो फिर आपको झिझकना नहीं चाहिए। आप कल ही चले जाएं और किसी भी डचेस से शादी करने का प्रस्ताव कर दें।"

"अगर मैं यह समझूंगा कि वह स्त्री मेरे विवाह करने योग्य है, तो मैं सच-मुच ही नहीं झिझकूंगा। लेकिन इस मामले में मैं बड़ा तुनकमिज़ाज हूं, और जिस स्त्री से मैं शादी करने का प्रस्ताव करूं, अगर वह मुझे पसन्द ही न हो तो ?"

बेलगार्द के चेहरे पर विनोद का भाव और फैल गया। "और अगर जो वह स्त्री आपको अस्वीकार कर दे, तो आपको बड़ा आश्चर्य होगा ?"

न्यूमैन रुककर सोचने लगा। "अगर मैं हां कहता हूं, तो इससे अभिमान प्रकट होगा, लेकिन सच बात यही है कि अगर मुझे अस्वीकार किया जाता है, तो आश्चर्य होगा। इसका कारण यह है कि मेरा प्रस्ताव बड़ा बहुमूल्य होगा।"

"वह प्रस्ताव क्या है ?"

"कुछ भी, जो वह चाहेंगी। अगर मुझे ऐसी स्त्री मिल जाती है, जो मेरे आदर्शों और कल्पना के अनुकूल है, तो उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा। सच बात यह है कि मुझे बहुत दिनों से अच्छी लड़की की तलाश थी और मैंने यह देखा कि अच्छी स्त्रियां आम तौर पर नहीं मिलतीं। जिन गुणों को मैं किसी स्त्री में चाहता हूं, उन सबका एक में मिलना बड़ा कठिन है, लेकिन जब एक बार कठिनाई दूर हो जाती है और मुझे मेरे मन की स्त्री मिल जाती है, तो उसके लिए कुछ भी करना कोई बड़ी बात नहीं है। मेरी पत्नी की बहुत ही ऊंची सामाजिक स्थिति होगी और मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि मैं उसके लिए बड़ा अच्छा पति साबित होऊंगा।"

"और वे कौन-से गुण हैं, जिनकी आपको तलाश है ?"

"सज्जनता, सुन्दरता, बुद्धिमत्ता, अच्छी शिक्षा, सुरुचि-सम्पन्नता—वह सभी कुछ जिनसे कोई भी स्त्री महान और शानदार कहला सकती है।"

"और ज़ाहिर है कि साथ ही उसका घराना भी अच्छा होना चाहिए," बेल-गार्द ने कहा।

"ओह, अगर अच्छा घराना हो, तो ठीक है। जितनी अधिक अच्छी बातें होंगी, उतना अच्छा फल भी होगा !"

"और क्या आपको लगता है कि मेरी बहन में ये सारे गुण हैं ?"

"वे बिलकुल वैसी ही हैं, जैसी मैंने अपनी पत्नी की कल्पना कर रखी है। वे मेरे स्वप्न का मूर्तरूप हैं।"

"और आप पति के रूप में उनके लिए अच्छे साबित होंगे ?"

"यही बात है, जो मैं आप द्वारा उनसे कहलाना चाहता हूं।"

बेलगार्द ने अपने मित्र की बांह पर एक क्षण के लिए अपना हाथ रख दिया और उनकी तरफ अपना सिर करके उन्हें फिर सिर से पैर तक देखा और तब फिर वह बड़ी ज़ोर से हंस पड़ा। उसने दूसरा हाथ अधर में उठाकर हिलाया और फिर नीचे गिरा लिया। वह कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चला गया और वापस आकर न्यूमैन के सामने खड़ा हो गया। "यह सब बात बड़ी ही अनोखी और विनोदपूर्ण लग रही है। अभी तक मैंने जो कुछ आपसे कहा, वह मैंने अपनी ओर से नहीं कहा था, बल्कि मैं अपने घर की परम्परा, इतिहास और रीति-रिवाजों की ओर से कह रहा था। जहां तक मेरा सम्बन्ध है कि मैं आपके प्रस्ताव से खुश हुआ हूं। पहले जब आपने अपनी बात कही, तो मैं चौंका था, लेकिन ज्यों-ज्यो मै आपकी बात पर सोच-विचार करता हूं, त्यों-त्यों मुझे वह ज्यांदा सार्थक दीखती है। इस समय इसकी व्याख्या करने से कोई लाभ नहीं होगा; आप मुझे या मेरी बात नहीं समझ पाएगे। आखिरकार मेरी समझ में नहीं आता कि मुझे अपने मन की यह बात आपको बताने की ज़रूरत भी क्या है; न बताने से आपका कोई बड़ा नुकसान नहीं होगा।"

"ओह, अगर कोई ऐसी बात है, जो आप मुझे समझाना चाहते हैं, तो समझाइए न! मैं अपनी आंखें खोलकर चलना चाहता हूं। मै आपकी बात समझने का भरसक प्रयत्न करूंगा।"

"नहीं," बेलगार्द ने कहा, "मुझे इस समय व्याख्या करना पसंद नहीं आ रहा, इसलिए मैं यह प्रयत्न नहीं करूगा। पहले दिन से ही जब मैंने आपको देखा था, मैं आपको चाहने लगा हूं और अब भी आप मुझे पसन्द हैं और आगे भी रहेंगे। मेरे लिए यह उचित नहीं होगा कि मै आपको बड़ों की तरह उपदेश देने लगूं। मै आपसे पहले ही कह चुका हू कि मुझे आपसे ईर्ष्या है। पाच मिनट पहले तक मै आपके बारे मे बहुत अधिक नहीं जानता था, इसलिए फिलहाल यूं ही चलने दीजिए और मैं आपसे ऐसी कोई बात नहीं कहूगा, जो आप अगर मेरी स्थिति में होते, तो मुझसे न कहते।"

मुझे नहीं पता कि जिस रहस्यमय बात कहने के अवसर को त्यागने की बात बेलगार्द ने कही थी, उसे न कहकर बेलगार्द अपने-आपको बड़ा उदार समझ रहा था या नहीं। अगर वह अपने को उदार समझ रहा था, तो उसे इसका कोई

पुरस्कार नहीं मिला; क्योंकि उसकी उदारता न्यूमैन की समझ में नहीं आई। न्यूमैन फ्रेंच युवक की उसकी चोट पहुंचाने की शक्ति से बिलकुल ही अपरिचित रहा और न्यूमैन की समझ में यह नहीं आया कि वह बेलगार्द से कितनी सरलता से बच निकला है। उसने अपने साथी को कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से देखते हुए धन्यवाद नहीं दिया। "मेरी आंखें खुली हैं, मै चौकन्ना हूं, हालांकि," उसने कहा, "आपने जो कुछ मुझे बताया है, उससे मैं यह समझ गया हूं कि मेरे प्रस्ताव पर आपके परिवार के लोग और मित्र नाक-भौं चढ़ाएंगे। मैं अभी तक उन कारणों को नहीं समझ पाया हूं, जिनके आधार पर लोग अन्य लोगों की बातों पर नाक-भौं सिकोड़ते हैं। इसलिए मैं इस सवाल का फैसला यहीं का यहीं कर दूंगा। इस दृष्टि से सोचने पर मेरी समझ में कुछ नहीं आता है। मैं सोचता हूं कि अगर आप यह जानना चाहते हैं कि मैं सर्वोत्तम पात्र हूं या नहीं, तो यह स्वाभाविक है। कौन लोग सर्वोत्तम हैं, यह मैं नहीं बता सकता और मैंने इसके बारे में ज्यादा कुछ सोचा भी नहीं है। सच यह है कि अपने बारे में मेरी राय हमेशा बहुत अच्छी रही है; जो आदमी सफल हुआ हो, वह इसके अलावा और कुछ सोच भी नहीं सकता। लेकिन मैं यह मानता हू कि मुझमें कुछ अहंकार है। मै जिस बात के लिए 'हां' नहीं कहता, वह यह है कि इस मामले में मुझपर विचार न किया जाए। मैं समझता हूं कि मेरे प्रस्ताव पर किसी भी अन्य उम्मीदवार की तरह ही विचार किया जा सकता है। मैं यह बात न सोचता, अगर जो आपने स्वयं ही इस ओर इशारा न किया होता। मैं कभी अपनी पैरवी करने की बात भी ध्यान में न लाता। यह मुझे ख्याल भी न आता कि मुझे अपना या अपने पक्ष का औचित्य सिद्ध करना है। लेकिन अगर लोग चाहेंगे, तो मै यह करूंगा।"

"लेकिन अभी कुछ देर पहले तो आपने यह कहा था कि आप मेरी मां और मेरे भाई को भी राजी करेंगे।"

"लेकिन," न्यूमैन ने जोर से कहा, "मैं उनके सामने इसके लिए नाक नहीं रगड़ूंगा और हाथ बांधकर नहीं खड़ा होऊंगा।"

"वाह !" बेलगार्द ने उत्तर दिया, "इससे तो बड़ी मदद मिलेगी और काफी मनोरंजन भी होगा। मुझे इस तरह बात करने के लिए क्षमा कीजिएगा, लेकिन वह कैसा बढ़िया दृश्य होगा ! मुझे तो अभी से बड़ी गुदगुदी-सी हो रही है। लेकिन जो भी हो, मेरी सहानुभूति आपके साथ है। मैं आपकी मदद भी करूंगा

यानी इस नाटक का एक अभिनेता भी बनूंगा और दर्शक भी। निश्चय ही आप बहुत बड़े आदमी हैं; मेरा आपमें पूरा विश्वास है और मैं आपका समर्थन करूंगा। आपने मेरी बहन को पसन्द किया है, यह तथ्य ही इस बात का प्रमाण है, जो मैं आपसे पूछ रहा था। सभी पुरुष, विशेष रूप से सुरुचि-सम्पन्न पुरुष समान होते हैं।"

"आपका क्या ख्याल है," न्यूमैन ने पूछा, "कि क्या मदाम द सान्त्रे ने विवाह न करने का निश्चय कर रखा है ?"

"हां, ऐसी मेरी धारणा है। लेकिन इससे आपकी स्थिति पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता; आप उनके निश्चय को बदल सकते हैं।"

"मुझे आशंका है कि यह कार्य बड़ा कठिन होगा," न्यूमैन ने गम्भीर होकर कहा।

"हां, मेरा भी ख्याल है कि ऐसा करना सरल नहीं होगा। आम तौर पर मेरी यह समझ मे नहीं आता कि कोई विधवा दुबारा विवाह क्यों करे ? विवाह से दो लाभ होते हैं—स्वतंत्रता मिलती है और दूसरे लोग इज़्ज़त करते हैं—और विधवा होने पर विवाह की जो त्रुटियां है या बन्धन हैं, उनसे मुक्ति मिल जाती है। इसके बाद फिर कोई विधवा क्यों दूसरा फंदा अपने गले में डाले ? स्त्री का सामान्य तौर पर लक्ष्य अपनी महत्त्वाकाक्षा प्राप्त करना होता है; अगर कोई पुरुष उसे बड़ी ऊंची स्थिति प्रदान करने का वादा करता है, उसे रानी बना देता है या राजदूत की पत्नी का दर्जा हासिल होता है, तो वह दुबारा विवाह करने की बात सोच सकती है।"

"और—क्या मदाम द सान्त्रे की भी कुछ ऐसी ही महत्त्वाकांक्षा है ?"

"कौन जानता है ?" बेलगार्द ने अपने कंधों को उचकाते हुए कहा। "मैं यह तो दावा नहीं कर सकता कि वे जो कुछ हैं या वे जो कुछ नहीं हैं, यह सब मैं आपको बता दूंगा। मेरा ख्याल है कि किसी बहुत बड़े आदमी की पत्नी बनने का मौका अगर उनको मिलेगा, तो उस प्रस्ताव का उनपर अवश्य ही असर पड़ेगा। लेकिन इतना निश्चित है कि वे जो भी करेंगी, वह बड़ी असम्भव-सी ही बात होगी। आप पहले से बहुत ज्यादा आशा न करिएगा, लेकिन बहुत ज्यादा सन्देह करने की भी ज़रूरत नहीं है। अगर आप उनके ख्याल से असाधारण और मौलिक व्यक्ति साबित हुए, तो आपकी सफलता के अधिक अवसर हैं। आप कभी किसी-की नकल करने की कोशिश न करिएगा। जैसे आप हैं, वैसे ही रहिएगा। अगर

कि आप हमेशा बड़े अच्छे मित्र रहेंगे, लेकिन आप कभी कृतज्ञ नहीं होंगे। लेकिन इससे कुछ नहीं होता। क्योंकि मैं जो कुछ करूंगा, उससे मेरा अपना मनोरंजन काफी हो जाएगा।" और वह कहकहा लगाकर हंस पड़ा। "आप काफी परेशान दिखलाई पड़ रहे हैं," उसने कहा, "ऐसा लगता है, जैसे आप बहुत डर गए हों।"

"यह बड़े दुःख की बात है," न्यूमैन ने कहा, "कि मैं आपको समझ नहीं पाया। इस वजह से कई अच्छे मज़ाक मेरे हाथ से निकल जाएंगे और मैं उनका आनन्द न ले सकूंगा।"

"आपको याद होगा मैंने एक बार आपसे कहा था कि हम लोग बड़े अजीब हैं," बेलगार्द कह रहा था, "मैं फिर आपको आगाह करता हूं। हम लोग, मेरी मां बड़ी अजीब हैं, मेरा भाई बहुत अजीब है और मैं तो यह समझता हूं कि मैं उन दोनों से ज़्यादा अजीब हूं। मेरी बहन भी आपको कुछ विचित्र लगेंगी। पुराने वृक्षों की शाखाएं कुछ टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं, पुराने मकानों में विचित्र दरारें होती हैं और पुरानी जातियों के कुछ विचित्र रहस्य होते हैं। याद रखिएगा कि हमारा घराना आठ सौ साल पुराना है।"

"बहुत अच्छा," न्यूमैन ने कहा, "मैं इसीके लिए यूरोप आया था, आप मेरे कार्यक्रम में शामिल हैं।"

"तो आइए, हाथ मिला लें," बेलगार्द ने अपना हाथ बाहर निकालते हुए कहा, "तो यह तय रहा कि मैंने आपको स्वीकार कर लिया है और मैं आपकी मदद करूंगा। ऐसा मैं इसलिए करूंगा कि मैं आपको अपना बड़ा घनिष्ठ मित्र समझता हूं; लेकिन इसका केवल इतना ही कारण नहीं है!" और वह वहां न्यूमैन का हाथ पकड़े हुए खड़ा था तथा उसकी तरफ प्रश्नसूचक दृष्टि से देख रहा था।"

"और दूसरा कारण क्या है?"

"मैं विरोधी पक्ष में हूं। मैं किसी अन्य व्यक्ति को नापसन्द करता हूं।"

"अपने भाई को?" न्यूमैन ने अपने कण्ठ-स्वर को बिना कम किए हुए पूछा।

बेलगार्द ने अपनी तर्जनी होंठों पर रखकर 'खुश' कहा। "पुराने घरानों के के अजब-अजब रहस्य होते हैं!" उसने कहा, "आप काम शुरू कीजिए, घर आइए, मेरी बहन से मिलिए, और विश्वास रखिए कि मेरी सहानुभूति आपके

साथ है !'' और यह कहकर उसने न्यूमैन से विदा ली।

न्यूमैन आग के सामने वाली कुर्सी पर लस्त होकर गिर पड़ा और बड़ी देर तक आग की लपटों को देखता रहा।

नौ

अगले दिन जब वह मदाम द सान्त्रे से मिलने गया, तो नौकर ने आकर सूचना दी कि मदाम घर में हैं। हमेशा की तरह वह लम्बे, ठण्डे जीने से होता हुआ लम्बी-चौड़ी गैलरी के रास्ते ऊपर पहुचा, जहां पर दीवारो में दरवाज़ो की पक्ति थी और उन-पर जो सुनहला काम था, वह कुछ उड़-सा गया था। इतना चलने के बाद वह उस कमरे में पहुचा, जिसमें वह पहले भी मदाम द सान्त्रे से मिल चुका था। कमरा खाली था, और नौकर ने बताया कि मदाम थोड़ी देर में आती हैं। जितनी देर वह प्रतीक्षा करता रहा, उतनी देर वह यह सोच रहा था कि बेलगार्द से कल संध्या को जो बातचीत हुई है, उसके बारे में पता नही उसने अपनी बहन को कुछ बताया है या नहीं। अगर उसने सब कुछ बता दिया है और फिर भी मदाम द सान्त्रे उससे मिल रही हैं, तो यह बड़े उत्साह की बात है। ज्यों-ज्यों न्यूमैन ने यह सोचा कि मदाम द सान्त्रे अपने भाई से उसके हृदय की बात सुनने के बाद मिलने के लिए कमरे में आनेवाली हैं, त्यों-त्यो उसका हृदय शंका और चिन्ता से प्रकम्पित होने लगा। फिर भी उसे अपने इस भाव से कोई विशेष चिन्ता नहीं हो रही थी। उसे विश्वास था कि मदाम द सान्त्रे के चेहरे पर ऐसा कोई भाव नहीं होगा, जिससे उनकी सुन्दरता में कोई कमी आए और वह यह भी समझता था कि उसके प्रस्ताव का कुछ भी परिणाम हो, लेकिन न तो प्रस्ताव का अपमान किया जाएगा और न उस-पर कोई व्यंग्य कसा जाएगा। उसकी केवल यही इच्छा थी कि अगर मदाम द सान्त्रे किसी तरह उसकी भावनाओ को भली भांति समझ लें, और यह जान लें कि उसके हृदय में उनके प्रति कितना सद्भाव है, तो वे बड़ी ही दयालुता दिख-लाएंगी।

आखिर वे आईं। आने में इतना समय लग गया कि न्यूमैन सोचने लगा कि

कहीं वे मुझसे मिलने में संकोच तो नहीं कर रही हैं। आते ही वे हमेशा की तरह खुलकर मुस्कराईं और उन्होंने अपना हाथ न्यूमैन की तरफ बढ़ा दिया। वे बराबर अपनी सीधी निगाहों से, कोमल और चमकती हुई आंखों से उसकी तरफ देखती रहीं और कम्पनहीन कण्ठ से बोलीं कि मुझे आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है। आशा है आप स्वस्थ होंगे। न्यूमैन को इस बार भी, जैसाकि हमेशा लगा करता था, लगा कि संकोच की क्षीण सुगंध बाहरी दुनिया में आ जाने से उड़ गई है। लेकिन यह सुगंध ज्यों-ज्यों वह उनके निकट पहुचता था, त्यों-त्यों उसे और स्पष्ट रूप से अनुभव हो रही थी। यह अशेष अविश्वास मदाम द सान्त्रे के सुनिश्चित और आश्वस्त करनेवाले व्यवहार को एक विशिष्ट स्थान देता प्रतीत होता था ; यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि-सा लगता था और लगता था जैसे मदाम में बड़ी सुन्दर प्रतिभा समाविष्ट है। इस व्यवहार-विशेषता की तुलना किसी पियानोवादक के अद्‌भुत स्पर्श से ही की जा सकती थी। सच तो यह है कि मदाम द सान्त्रे की उपस्थिति ही न्यूमैन को बड़ी आनन्ददायी और आकर्षक लगती थी; वह उनके पास से हमेशा यह सोचता हुआ लौटता था कि जब वह विवाह के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा, तो वह चाहेगा कि उसकी पत्नी उसे भी यही गुण सिखा दे, जिससे दुनिया में लोगों को उसकी उपस्थिति भी वैसी आकर्षक लगे। इस मामले में यही कठिनाई थी कि जब माध्यम इतना पूर्ण होता है, तो लगता है कि आपमें, और जो प्रतिभा उस माध्यम का उपयोग करती है, उसमें बहुत अन्तर है। मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन पर यह प्रभाव डाला था कि वह बड़ी ही प्रशिक्षित युवती हैं और उन्हें अपनी युवावस्था में तरह-तरह के महत्त्वपूर्ण समारोहों का अनुभव है। इस अनुभव से उन्होंने अपने-आपको सभी सामाजिक आवश्यकताओं के अनुकूल ढाल लिया है। यह सब कुछ जैसाकि मैं पहले कह चुका हूं, मदाम द सान्त्रे को बड़ी ही दुर्लभ और बहुमूल्य नारी बना देता था। न्यूमैन ऐसी स्त्री को बड़ा व्ययसाध्य बताता और ऐसी स्त्री से विवाह करने की महत्त्वाकांक्षा पूरी करने के लिए वह शायद सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाता। लेकिन व्यक्तिगत सुविधा की दृष्टि से न्यूमैन सोचता था कि मदाम द सान्त्रे के इस अनोखे सौंदर्य में प्रकृति और कला की विभाजन-रेखा किस स्थल पर है ? किस जगह शिष्टाचार है और किस जगह वे विशेष उद्देश्य से व्यवहार करती हैं ? वह कौन-सा स्थल है, जहां बाह्य सौम्यता, सभ्यता और शिष्टाचार समाप्त हो जाता है और किस जगह से हृदय की बात प्रकट होनी शुरू

होती है ? न्यूमैन ने अपने-आपसे यह प्रश्न उस समय पूछे, जब वह वहां खड़ा मदाम द सान्त्रे के स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत था; उसे लग रहा था जैसे यह सारे प्रश्न वह बड़े आराम से बिना किसी चिन्ता के बाद में भी कर सकता है, और मदाम पर रूप की पहेली के बाद में भी विचार कर सकता था।

"आपको अकेला पाकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है," उसने कहा, "आपको तो पता ही है कि ऐसा सौभाग्य मुझे पहले कभी नहीं मिला।"

"लेकिन ऐसा लगता था कि आप अपने पहले के भाग्य से काफी संतुष्ट थे," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "आप बैठे-बैठे मेरे मेहमानों को बड़े शान्त और विनोदपूर्ण ढंग से देखते रहते थे। आपने उनके बारे में क्या सोचा ?"

"ओह, मेरा ख्याल है कि आपकी महिला मित्र अत्यन्त सुरुचि-सम्पन्न और शिष्ट हैं तथा वे बड़ी हाज़िरजवाब भी हैं। लेकिन उन सबकी वजह से मेरे ऊपर जो असर हुआ, वह यह कि मैं आपकी और भी सराहना करने लगा।" न्यूमैन ने यह बात कहकर कोई बहुत बहादुरी नहीं दिखाई थी—लेकिन यह एक ऐसी कला ज़रूर थी, जिसका कि न्यूमैन अपने-आपको माहिर नहीं समझता था। उसने जो बात कही थी, वह उस जैसा व्यावहारिक व्यक्ति सामान्य रूप से मन में आ जाने पर कह देता है। विशेष रूप से उस समय, जब उसने अपने विचार स्थिर कर लिए हों और वह उन्हें व्यक्त करना चाहता हो। न्यूमैन को जो करना था, वह उसने तय कर लिया था। और अब वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तेज़ी से कदम उठा रहा था।

मदाम द सान्त्रे ज़रा-सा चौंक गईं, और उन्होंने अपनी 'भवें उठाईं। उन्हें अपनी प्रशंसा की इतनी आशा नहीं थी। "ओह, तो फिर," उन्होंने हंसते हुए कहा, "मेरा एकान्त में मिलना मेरे लिए सौभाग्य का विषय नहीं है। मुझे आशा करनी चाहिए, जल्दी ही कोई न कोई आ जाएगा।"

"मैं आशा करता हूं कि" न्यूमैन ने कहा, "कोई नहीं आएगा। आज मुझे आपसे कुछ खास बात करनी है। क्या आपसे आपके भाई मिल चुके हैं ?"

"हां ; कोई एक घण्टा हुआ।"

"क्या उन्होंने यह बताया कि वे कल रात मुझसे मिले थे ?"

"जी हां, उन्होंने यह भी बताया था।"

"और क्या उन्होंने यह भी बताया कि हमारी क्या बातचीत हुई थी ?"

मदाम द सान्त्रे झिझककर एक क्षण के लिए रुक गईं। जब न्यूमैन अपने प्रश्न कर रहा था, तो उनके चेहरे पर कुछ पीलापन-सा आ गया था, ऐसा लगता था जैसे वार्ता का जो क्रम चल रहा था, वह आवश्यक तो था, लेकिन उन्हें प्रिय नहीं लग रहा था। "क्या आपने मेरे लिए उन्हें कोई सन्देश दिया था ?" मदाम द सान्त्रे ने पूछा।

"जो कुछ मैंने कहा था वह वास्तव में संदेश तो नहीं था—लेकिन मैंने उनसे कुछ सहायता ज़रूर मांगी थी।"

"यह सहायता मेरे सामने आपकी प्रशंसा करनी थी न ?" और मदाम द सान्त्रे ने यह सवाल कुछ मुस्कराते हुए इस तरह से किया, जैसे वे उसे साधारण-सी बात समझ रही हों।

"हां, दरअसल उसका अर्थ तो यही था," न्यूमैन ने कहा, "क्या उन्होंने मेरी प्रशंसा के बहुत गीत गाए ?"

"उन्होंने आपकी बड़ी तारीफ की, लेकिन जब मुझे यह मालूम हो गया कि वे आपके विशेष अनुरोध पर ऐसा कर रहे थे, तो बेशक ही मुझे अब उन्होंने जो बातें कही थीं, उनपर अपने विवेक से विचार करना होगा।"

"ओह, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता," न्यूमैन ने कहा, "आपके भाई मेरे बारे में उस समय तक अच्छी बातें नहीं कह सकते थे, जब तक उनको यह विश्वास न हो जाता कि जो कुछ वे कह रहे हैं वह सही है। इस मामले में वे बहुत ईमानदार हैं।"

"क्या, जो कुछ आप कह रहे हैं, उसे आप बिलकुल सही समझते हैं ?" मदाम द सान्त्रे ने कहा, "या आप मेरे भाई की तारीफ करके मुझे प्रसन्न करने की कोशिश कर रहे हैं ? मैं मानती हूं कि यह तरीका बड़ा अच्छा है।"

"जहां तक मेरा सम्बन्ध है, कोई भी ऐसा तरीका अच्छा है, जिससे मुझे सफलता मिलती है। अगर इस बात से मुझे मेरे कार्य में सहायता मिलती है, तो मैं दिन-भर आपके भाई के ही गुण गाता रहूंगा। वे बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं। उन्होंने मुझे यह विश्वास दिलाकर कि वे मेरी सहायता के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं, यह विश्वास दिला दिया है कि मैं उनपर निर्भर कर सकता हूं।"

"आप उनकी इन सब बातों का ज्यादा भरोसा न करिए," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "उनकी सहायता का कोई ज़्यादा मतलब नहीं है।"

"बेशक अपना काम मुझे खुद करना होगा, यह बात तो मैं अच्छी तरह जानता हूं। मैं तो केवल एक अवसर चाहता हूं। आपके भाई ने आपको जो कुछ बताया है, उसके बाद मुझे मिलने की अनुमति देकर आपने मुझे लगभग अवसर देने का निश्चय कर ही लिया है।"

"मैं आपसे इसलिए मिली हूं," मदाम द सान्त्रे ने धीरे-धीरे और गम्भीरता से कहा, "क्योंकि मैने आपने भाई से वादा किया था कि मैं आपसे मिलूंगी।"

"मैं आपके भाई को हृदय से आशीष देता हूं!" न्यूमैन ने कहा, "मैंने कल शाम को उनसे जो बात कही थी, वह यह है : मैंने अब तक जितनी स्त्रियों को देखा है, उनमें मैं आपसे सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ हूं और आपका प्रशंसक हूं; और मेरी यह बड़ी इच्छा है कि आप मेरी पत्नी बनें।" उसने यह बात बहुत ही सीधे ढंग से और दृढ़ता से कही तथा यह कहने में वह ज़रा भी नहीं लड़खड़ाया। उसके मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे, जिनपर उसने पूरी तरह काबू पा लिया था और ऐसा लगता था कि वह मदाम द सान्त्रे को सुरुचि-सम्पन्नता की साक्षात् देवी के रूप में देखता है। सम्भवत: यह विशिष्ट कण्ठ-स्वर और लहजा सर्वोत्तम था, जिसमें उसने अपनी बात कही थी। लेकिन मदाम द सान्त्रे के मुंह पर जो मुस्कराहट की ज्योति थी, वह शीघ्र ही लुप्त हो गई और वे बैठी-बैठी अधखुले मुंह से उसकी ओर देखने लगीं। उनके मुंह से गहरी पीड़ा प्रकट हो रही थी। ज़ाहिर था कि इस पूरे प्रसंग में ज़रूर ऐसी कोई बात हुई, जो मदाम द सान्त्रे के लिए बड़ी दुखदायी थी। लेकिन फिर भी उन्हें अपनी अधीरता या रोष प्रकट करने के लिए जैसे शब्द नहीं मिल रहे थे। न्यूमैन सोचने लगा कि कहीं मैंने अपनी बात से मदाम द सान्त्रे को चोट तो नही पहुंचाई है ; उसकी समझ में नहीं आया कि मैंने बड़ी उदारता से जो प्रेम-भाव व्यक्त किया है, वह किसीको इस कदर अप्रिय क्यों हो सकता है? वह उठ खड़ा हुआ और अपना एक हाथ जमीन पर रखकर उसके सहारे खड़ा हो गया। "मैं जानता हूं कि मेरी और आपकी मुलाकात यह बात कह सकने के ख्याल से बहुत कम है," उसने कहा, "हमारा परिचय इतना क्षीण है कि मेरा यह प्रस्ताव अनादरसूचक लग सकता है। यह मेरा दुर्भाग्य है! शायद मैं यह बात, जिस दिन मैंने आपको पहली बार देखा था, उस दिन भी कह सकता था। दरअसल बात यह है कि मैंने आपको पहले भी देखा है; मैंने आपको अपनी कल्पना में देखा है; ऐसा लगा जैसे आप मेरी बहुत पुरानी मित्र हैं; इसलिए मैं जो कुछ कहता हूं, वह कोई

बड़ी बहादुरी की बात नहीं है और न केवल मुंहदेखी तारीफ है। वह ऐसी बात भी नहीं है जिसका कोई अर्थ न हो—सच तो यह है कि मैं इस ढंग से बात ही नहीं कर सकता। मैं जानता ही नहीं कि यह बात किस तरह करनी चाहिए; और अगर मैं सही ढंग से बात कर सकता, तो शायद इस तरह न कहता, जिस तरह मैंने अपनी बात कही है। शब्दों से जितनी गंभीरता प्रकट हो सकती है, उतनी ही गम्भीरता से मैं यह बात कह रहा हूं। मैं महसूस करता हूं कि जैसे मैं आपको खूब अच्छी तरह जानता हूं और यह भी जानता हूं कि आप कितनी सुन्दर और सराहने योग्य स्त्री हैं। शायद मैं आपको और अच्छी तरह जान सकूं और यह दिन मुझे लगता है, जरूर आएगा। आप ठीक वही हैं, जैसी स्त्री की मैंने कल्पना कर रखी थी और जिसकी मुझे तलाश थी। आपमें और मेरी कल्पना में यही अन्तर है कि आप मेरी नारी की कल्पना से भी अधिक पूर्ण हैं। मैं जानता हूं कि मेरे लिए यह सब कहना बड़ी जल्दबाजी का काम है और इसका बुरा भी माना जा सकता है। लेकिन अगर मिल सके तो और समय क्यों न लिया जाए ? और अगर आप मेरे प्रस्ताव पर विचार करने के लिए समय चाहें, तो जितना समय चाहें, ले लें।—निस्संदेह यह काम आप जितनी जल्दी शुरू करेंगी, मेरे लिए बेहतर होगा। मैं नहीं जानता कि आपका मेरे बारे में क्या विचार है; लेकिन मेरे विषय में कोई रहस्यभरी या दबी-छिपी बात नहीं है। आप देख ही रही हैं कि मैं क्या हूं। आपके भाई ने मुझसे कहा कि मेरा जीवन-इतिहास और व्यवसाय मेरे उद्देश्य की पूर्ति में सहायक नहीं हो सकते ; आपका परिवार भी मेरे मार्ग में बाधा डालेगा, क्योंकि उसका दर्जा मेरे स्तर से ऊंचा है। यह एक ऐसी बात है, जो बेशक मेरी समझ में नहीं आती और मैं इसे नहीं मानता। लेकिन इस सम्बन्ध में आप कोई फिक्र न करें। मैं आपको भरोसा दिलाता हूं कि मैं पूरी तरह विश्वसनीय हूं और अगर मैंने इस ओर ध्यान दिया, तो कुछ ही वर्षों में मैं ऐसी व्यवस्था कर सकूंगा कि मुझे यह स्पष्ट करने में अधिक समय नहीं लगेगा कि मैं कौन हूं, क्या हूं। आपको स्वयं यह फैसला करना पड़ेगा कि आप मुझे पसन्द करती हैं या नहीं। जो कुछ है, वह सब आपके सामने है। मैं ईमानदारी से विश्वास करता हूं कि मुझमें न तो कोई छिपा दोष है और न कोई अन्य दुर्गुण। मैं बड़ी दयालु प्रकृति का हूं। ऐसी सब चीजें, जो कोई एक पुरुष स्त्री को दे सकता है, वह सब कुछ मैं आपको दूंगा। मेरे पास अगाध सम्पत्ति है, इतनी सम्पत्ति जिसका वारापार नहीं है। और किसी अन्य

दिन, जब आप मुझे अनुमति देंगी, तो मैं इसका ब्योरा भी बताऊंगा। अगर आप शान-शौकत पसन्द करती है, तो धन से जो कुछ खरीदा जा सकता है, वह सब आपको प्राप्त होगा, और जहां तक किसी अन्य चीज़ का सम्बन्ध है, आप विश्वास रखिए, वह इच्छा करते ही आपकी सेवा में प्रस्तुत की जाएगी। यह बात आप मुझपर छोड़ दें; मैं आपकी पूरी तरह देखरेख करूंगा। मैं जानूंगा कि आपको किस चीज की आवश्यकता है। आदमी अपने प्रयत्न और बुद्धि से हर चीज जुटा सकता है। मैं स्वस्थ व्यक्ति हूं! मुझे जो कुछ कहना था और जो कुछ मेरे मन में था, वह मैंने आपसे कह दिया! यह कह देना मेरे लिए बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि इससे मेरा भार हलका हो गया। अगर मेरी बातें आपको अप्रिय लगी हों, तो मुझे सचमुच इसका बड़ा दु.ख है; लेकिन कल्पना कीजिए कि इस तरह चीज़ों को स्पष्ट कर दिए जाने से मन कितना हलका हो जाता है। अगर आपकी इच्छा ऐसा करने की न हो, तो आप मेरी बात का उत्तर अभी न दें। आप इस इस बारे में सोच लीजिए; और यह बात सोचने में जितना समय लेना चाहें, उतना लीजिए। निस्संदेह मैंने जो कुछ कहा है, और जो कुछ मेरे हृदय में था, वह उसका आधा हिस्सा भी नहीं है। विशेष रूप से मेरे कथन का वह अश, जिसमें मैंने आपके प्रति अपने भाव प्रकट किए हैं। लेकिन आप मेरे विषय में अनुकूलता से विचार करें; यह न्यायोचित होगा।"

न्यूमैन ने अपने जीवन में शायद ही पहले कभी एक सांस में इतनी बातें एकसाथ कही हों। जब तक न्यूमैन बोलता रहा, मदाम द सान्त्रे बराबर टकटकी लगाकर उसकी तरफ देखती रहीं और बाद में उनकी दृष्टि में कुछ आकर्षण-सा आ गया था। जब न्यूमैन ने अपनी बात खत्म कर ली, तो मदाम द सान्त्रे ने अपनी आंखें झुका लीं और कुछ देर निगाह नीचे करके ज़मीन की ओर देखती रहीं। इसके बाद वे धीरे से उठकर खड़ी हो गईं और अगर कोई उनको ध्यान से देख रहा होता, तो वह तुरन्त जान लेता कि उनके पैर कुछ कांप रहे हैं। उनके चेहरे पर गम्भीरता छाई थी। "आपने मुझसे जो प्रस्ताव किया है, उसके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूं," उन्होंने कहा, "प्रस्ताव बहुत ही अजीब-सा लगता है, लेकिन मुझे इस बात की खुशी है कि आपने बिना अधिक प्रतीक्षा किए अपने मन की बात ज़ाहिर कर दी। अच्छा हो कि इस विषय पर इस समय चर्चा बंद कर दी जाए। आपने जो कुछ कहा है, मैं उसकी कद्र करती हूं; आपने मुझे बहुत बड़ा सम्मान

दिया है। लेकिन मैं फैसला कर चुकी हूं कि मैं विवाह नही करूंगी।"

"ओह, ऐसा तो मत कहिए!" न्यूमैन ने कहा। उसके स्वर से बड़ा ही अनुरोध और आग्रह प्रकट हो रहा था। वे मुड़ गईं और अपनी पीठ करके खड़ी हो गईं। "आप इस बात पर पुनः विचार करें। आपकी आयु अभी बहुत कम है, आप अत्यन्त सुन्दर हैं और आपको जीवन में बड़ी खुशियां देखनी हैं तथा दूसरों को प्रसन्न करना है। अगर आपको यह भय हो कि आपकी स्वतंत्रता जाती रहेगी, तो मैं आपको यह बतला देना चाहता हूं कि इस घर में आपको स्वतंत्रता प्राप्त है और जिस जीवन का प्रस्ताव मैं आपसे कर रहा हूं, उसकी तुलना में वर्तमान स्थिति नीरस बन्धन के अतिरिक्त कुछ नहीं है। आप अपने जीवन में वह-वह कार्य करेंगी, जो मेरे ख्याल से आपने सोचे भी न होंगे। मैं आपको दुनिया के किसी भी हिस्से में रहने के लिए ले चलूंगा। आपको केवल उस स्थान का नाम-भर बताने की ज़रूरत है। क्या आप अप्रसन्न हैं? आप ज़रा संकेत-भर कर दें। आपको दुखी रहने का कोई अधिकार नहीं है और न किसीको आपको अप्रसन्न करने का अधिकार है। आप मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लें और मुझे इस विषम स्थिति को समाप्त करने की अनुमति दें।"

मदाम द सान्त्रे कुछ देर और खड़ी रहीं और न्यूमैन को देखने की बजाय दूसरी ओर देखती रहीं। अगर न्यूमैन की बातों ने उनके मर्म को स्पर्श कर लिया था, तो यह बात अब साफ तौर पर देखी जा सकती थी। न्यूमैन का स्वर हमेशा बड़ा कोमल, जिज्ञासापूर्ण होता था; लेकिन अब वह धीरे-धीरे और भी कोमल हो गया था और उसमें हलके-हलके तर्क देने की शक्ति आ गई थी। ऐसा लगता था कि जैसे वह किसी ऐसे बच्चे से बात कर रहा हो जिससे वह अतिशय प्रेम करता हो। वह मदाम द सान्त्रे को खड़े-खड़े देखता रहा। मदाम एक बार फिर मुड़ीं, लेकिन इस बार उन्होंने न्यूमैन को नहीं देखा। बड़ी कठिनाई से उन्होंने धीरे-धीरे अपनी बात कही:

"ऐसे बहुत-से कारण है, जिनकी वजह से मुझे विवाह नहीं करना चाहिए," उन्होंने कहा, "इन सारे कारणों को मैं आपको नहीं बता सकती। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं बहुत प्रसन्न हूं। आपका प्रस्ताव अजीब-सा लगता है। इसके भी कई कारण हैं, जो सभी मैं बता नहीं सकती। निस्संदेह आपको यह प्रस्ताव करने का पूरा अधिकार है, लेकिन मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकती —मेरे लिए ऐसा करना

असम्भव है। कृपा कर इस विषय में भविष्य में कभी बात न करें। अगर आप ऐसा वचन न दे सकें, तो मुझे आपसे कहना पड़ेगा कि आप भविष्य में यहां न आएं।"

"यह असम्भव क्यों है ?" न्यूमैन ने पूछा, "आप इसपर पहले इस तरह विचार करें जैसे यथार्थ में यह प्रस्ताव नहीं किया गया है। मैं यह उम्मीद नहीं करता था कि आप मेरे प्रस्ताव से प्रसन्न होंगी, लेकिन मेरा यह विश्वास ज़रूर है कि अगर आपने इसपर काफी समय तक सोच-विचार किया, तो आप सन्तुष्ट हो जाएंगी।

"मैं आपको भली प्रकार नहीं जानती," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "जरा सोचिए तो, मेरा-आपका परिचय कितना छोटा-सा है।"

"निस्संदेह बहुत ही कम दिनों का है और इसलिए मै इसी क्षण अपने प्रस्ताव का कोई उत्तर भी नहीं चाहता। मेरी आपसे इतनी ही प्रार्थना है कि आप मेरे प्रस्ताव को ठुकराएं नहीं और मुझे थोड़ी आशा बंधाएं। आप जितनी देर चाहेंगी, मैं प्रतीक्षा करने को तैयार हूं। इस बीच आप मुझे देख सकती हैं, मेरे बारे में और अधिक जानकारी हासिल कर सकती हैं, मुझे बेहतर ढंग से जान सकती हैं, मेरे सम्बन्ध में भावी पति के रूप में विचार कर सकती हैं—एक उम्मीदवार के रूप में ; और फिर जो चाहें निश्चय कर सकती हैं।"

इस बीच मदाम द सान्त्रे के मन में भी भावनाओं का ज्वार उठ रहा था, वे इस सवाल पर न्यूमैन के सामने विचार कर रही थीं और कुछ इस बारे में फैसला कर रही थीं। "मैं इस समय आपसे सम्मानपूर्वक यह विनय नहीं कर रही हूं कि आप मेरे घर से चले जाएं और फिर न आएं," उन्होंने कहा, "मैंने आपकी बात सुन ली है और आप यह मान सकते हैं कि मैं आपको आशा बंधा रही हूं। अपने विवेक के विरुद्ध मैंने आपकी पूरी बात सुनी है। इसका कारण यह है कि आपने बड़े अच्छे ढंग से अपनी बात कह दी है। अगर आज सवेरे मुझसे कोई यह बात कहता कि मै आपके सम्बन्ध में भावी पति के रूप में विचार करूं, तो शायद उस व्यक्ति को मैं पागल समझती। लेकिन देखिए, मैं इस समय आपकी पूरी बात सुन रही हूं!" और उन्होंने अपने दोनों हाथ इस तरह सामने की ओर कर लिए और गिरा लिए, जिनसे मदाम द सान्त्रे की अपनी दुर्बलता प्रकट होती थी।

"ठीक है, मैंने जैसीकि कहावत है, अपनी सारी बात कह दी है," न्यूमैन ने कहा, "मेरा आपमें पूरा विश्वास है और जितना भी कोई व्यक्ति किसीके लिए

हित की बात सोच सकता है, वह सब कुछ मैं आपके लिए सोच रहा हूं। मेरा पक्का विश्वास है कि मुझसे विवाह करने में आप बिलकुल सुरक्षित हैं। जैसाकि मैंने अभी कहा," न्यूमैन ने मुस्कराते हुए अपनी बात जारी रखी, "मुझमें कोई दुर्गुण नहीं है और मैं आपके लिए बहुत कुछ कर सकता हूं। अगर आपको यह आशंका हो कि मैं उन व्यक्तियों की तरह नहीं हूं जिनके साथ रहने का आपको अभ्यास है, उतना परिष्कृत नहीं हूं, उतनी नाजुक आदतों वाला नहीं हूं, तो आप विश्वास रखिए कि मुझमें वे सारे गुण हैं। आप अनुभव से स्वयं देख लेंगी।"

मदाम द सान्त्रे कुछ दूर आगे बढ़ गईं और सामने रखे गमले में लगे पौधे के सामने जाकर रुक गईं। यह गमला सफेद चीनी मिट्टी का था और उनके कमरे की खिड़की में रखा था। उन्होंने पौधे में लगे फूलों में से एक फूल तोड़ लिया और उसे अपनी अंगुलियों से मसलते हुए वापस लौट आईं। इसके बाद वे चुपचाप बैठ गईं। उनके रुख से ऐसा लगता था कि न्यूमैन कुछ और कहे।

"आप यह क्यों कहती हैं कि मुझसे विवाह करना असम्भव है?" न्यूमैन पूछ रहा था, "विवाह न कर सकना एक ही स्थिति में सम्भव था और वह तब जब आपका विवाह पहले ही हो चुका होता। क्या आप इसलिए शादी नहीं करना चाहती हैं कि आपको पहले विवाह से दुःख हुआ था? तब तो यह एक और कारण है, जिसकी वजह से आपको दूसरा विवाह करना चाहिए! क्या आप इसलिए विवाह नहीं करना चाहतीं कि आपके परिवार के लोग आपपर अनुचित दबाव डालते है, आपकी बातों में हस्तक्षेप करते हैं, आपको रुष्ट कर देते हैं? लेकिन अगर ऐसा है, तो आपके विवाह करने के पक्ष में यह एक और कारण है। आपको पूरी स्वतत्रता मिलनी चाहिए और शादी करने से आप स्वतंत्र हो सकेंगी। लेकिन आप यह बात समझ लीजिए कि मैं आपके परिवार के विरुद्ध कुछ नहीं कह रहा हूं!" न्यूमैन ने अंतिम बात बड़ी जल्दी इस प्रकार कही, जिसे सुनकर कोई भी विवेकशील प्रेक्षक मुस्करा देता। "आप जैसा चाहें, उनके बारे में वैसा सोच सकती हैं और वही उचित होगा। इस सम्बन्ध में अपने-आपको उनका प्रिय बनाने के लिए आप जो भी इच्छा प्रकट करेंगी, मैं उसी तरह व्यवहार करने का पूरा यत्न करूंगा। इस बात का आप भरोसा रखें।"

मदाम द सान्त्रे उठ खड़ी हुईं और आतिशदान के सामने आ गईं, जहां न्यूमैन खड़ा था। उनके चेहरे पर पीड़ा या अटपटेपन का भाव नहीं था और एक ऐसी

चमक थी, जिसे देखकर इस बार न्यूमैन कम से कम कह सकता था कि वह आभा न तो किसी आदर के कारण या न इरादे से जान-बूझकर लाई गई थी। मदाम द सान्त्रे के चेहरे के उस भाव में न तो कृत्रिमता थी और न वह आभा स्वाभाविक थी। उनके चेहरे पर एक ऐसी स्त्री का भाव था, जिसने मित्रता की सीमा पार कर ली है और जो अपने चारों तरफ नजर दौड़ाने पर देखती है कि जिस क्षेत्र में वह आ गई है, वह बड़ा व्यापक और लम्बा-चौड़ा है। उनकी आंखों की चमक से यह प्रकट होता था कि उनको बड़ी खुशी हो रही है और अपने हर्षातिरेक को उन्होंने नियंत्रित कर रखा है। "मैं आपसे दुबारा मिलने से इंकार नहीं करूंगी," उन्होंने कहा, "आपने जितनी भी बातें कहीं, उनमें से अधिकांश से मुझे प्रसन्नता हुई है। लेकिन मैं आपसे इसी शर्त पर मिलूंगी कि आप काफी समय तक इस बात की कोई चर्चा न करें।"

"कितने समय तक ?"

"कम से कम छः महीने तक। इसका आपको पक्का वचन देना होगा।"

"ठीक है, मैं आपको वचन देता हूं।"

"अच्छा तो, नमस्कार !" उन्होंने अपना हाथ मिला लेने के लिए बढ़ा दिया। वह कुछ देर रुका रहा और सोचता रहा कि शायद मदाम द सान्त्रे कुछ और कहें। लेकिन वह केवल उनकी ओर देखता ही रहा और वे अन्दर चली गईं।

उस सन्ध्या को वेलेंतीन द बेलगार्द से वह मिला। परस्पर अभिवादन करने के बाद न्यूमैन ने उसे बताया कि वह कुछ घण्टे पहले मदाम द सान्त्रे से मिला था।

"मैं जानता हूं," बेलगार्द ने कहा, "मैंने रू द ल यूनिवर्सिते में ही भोजन किया था।" और इसके बाद कुछ क्षणों तक दोनों व्यक्ति चुपचाप बैठे रहे। न्यूमैन बेलगार्द से पूछना चाहता था कि मेरी मुलाकात का जाहिरा तौर पर क्या असर उसे दिखलाई पड़ा। और काउण्ट वेलेंतीन के अपने मन में कुछ अन्य जिज्ञासाएं थीं। बेलगार्द पहले बोला।

"मुझे पूछना तो नहीं चाहिए, लेकिन आखिर तुमने मेरी बहन से क्या बात कह दी ?"

"मैं आपको बताने के लिए तैयार हूं," न्यूमैन ने कहा, "मैंने उनसे विवाह का प्रस्ताव किया है।"

"प्रस्ताव कर दिया !" और युवक सीटी बजाने लगा। 'समय ही धन है !'

अमरीका में यही कहावत है न ? और मदाम द सान्त्रे···?" उसने अपना वाक्य बिना पूरा किए हुए यह पूछा कि उनपर इसकी क्या प्रतिक्रिया हुई।

"उन्होंने मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया।"

"यह तो आप जानते ही हैं कि वे इस तरह प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकतीं।"

"लेकिन मैं उनसे फिर मिलूंगा," न्यूमैन ने कहा।

"ओह, स्त्रियां भी कैसी अजीब होती हैं !" बेलगार्द ने कहा। इसके बाद वह रुक गया और उसने न्यूमैन को अपने हाथ से पकड़कर अपने सामने की ओर कुछ दूर करके देखा। "मैं आपके प्रति बड़े सम्मान का भाव रखता हूं !" उसने ज़ोर से कहा, "आपको ज़बर्दस्त व्यक्तिगत सफलता प्राप्त हुई है। और अब मुझे चाहिए कि मैं जल्दी ही आपको अपने भाई से मिलवाऊं।"

"जब आपकी मर्ज़ी हो !" न्यूमैन ने कहा।

दस

न्यूमैन अपने मित्र-परिवार ट्रिस्टरैम के यहां काफी आता-जाता रहता और उन लोगों से मिलता रहता। लेकिन अगर आप मिसेज़ ट्रिस्टरैम की बातें सुनते, तो ऐसा लगता कि जैसे न्यूमैन ने बड़े लोगों से मुलाकात होने के बाद गरीब दोस्तों से मिलना ही छोड़ दिया है। "जब तक हमारा कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था, तब तक हम बहुत अच्छे थे। लेकिन जब से आप यहां के समाज में लोकप्रिय हो गए हैं, और आपके पास दिन में तीन-तीन डिनर के निमंत्रण पहुंचने लगे हैं, तब से हमारी बिलकुल उपेक्षा की जा रही है। अगर आप महीने में एक बार भी आकर हमसे मिल जाते हैं, तो हमें आपका बड़ा आभारी होना चाहिए। मैं तो सोचती हूं कि कहीं आप हमें अपने कार्ड लिफाफे में भेजना शुरू न कर दें। लेकिन जब आप ऐसा करें, तो आपसे प्रार्थना है कि आप काली किनारी वाले लिफाफों में उन्हें भेजिएगा, क्योंकि वह लिफाफे मेरे सारे सपनों की मौत का प्रतीक होंगे।" मिसेज़ ट्रिस्टरैम इन तीखे शब्दों में न्यूमैन की तथाकथित उपेक्षा पर वाक्‌बाणों से प्रहार किया

करती थीं। इस कार्यक्रम में कभी फर्क नहीं पड़ा करता था। बेशक वे मज़ाक करती थीं, लेकिन उनके विनोद में भी व्यंग्य मिश्रित होता था। ठीक उसी तरह, जिस तरह उनकी गम्भीरता में भी विनोद का भाव रहता था।

"आपके साथ मेरा व्यवहार बहुत ही अच्छा है। मेरे पास इससे बढ़कर कोई और प्रमाण नहीं है," न्यूमैन जवाब देता, "कि आप मेरा इतना मज़ाक उड़ा लेती हैं। असल बात यह है कि बहुत आने-जाने से लोग अवज्ञा करने लगते हैं। मैंने अपने-आपको आपकी नज़रों में बहुत सस्ता बना लिया है। अगर मुझमें थोड़ा अभिमान होता, तो मैं कुछ दिन यहां न आता और जब आप मुझसे डिनर पर आने के लिए कहतीं, तो मैं उसका जवाब देता कि मैं राजकुमारी बोरेलासका के यहां निमंत्रित हूं। लेकिन मैं अपने आनन्द के क्षेत्र में अभिमान को नहीं घुसने देता और आपको खुश करने के लिए बराबर यहां आता हूं।—लेकिन आप जब भी मुझसे मिलती हैं, हमेशा मुझे कोसती हैं। तो लीजिए, आप जो भी कहेंगी, मान लूगा। लीजिए मैं पेरिस-भर में सबसे असभ्य व्यक्ति हूं।" तथ्य यह था कि न्यूमैन ने राजकुमारी बोरेलासका का व्यक्तिगत निमंत्रण अस्वीकार कर दिया था। राजकुमारी बोरेलासका पोलिश महिला थीं। इनसे प्राप्त डिनर का निमंत्रण अस्वीकार करते हुए न्यूमैन ने कहा था कि मैं उस विशिष्ट दिन हमेशा मिसेज़ ट्रिस्टरैम के यहां भोजन करता हूं। इसलिए मिसेज़ ट्रिस्टरैम का यह कहना कि वह अपने पुराने मित्रों को भूला जा रहा है, केवल उनके कोमल प्रेम को प्रकट करने का उलटा ढग था। अक्सर मिसेज़ ट्रिस्टरैम को एक प्रकार की झुंझलाहट अनुभव होती थी और इसका यह स्पष्टीकरण कुछ संतोषजनक नहीं लगता था किन्तु मुझसे अधिक बड़ा विश्लेषक ही इस रोष का सही कारण बता सकता था। मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने हमारे नायक को एक धारा में धकेल दिया था। इस धारा में जिस वेग से वह बहा जा रहा था, उसकी तीव्रता से मिसेज़ ट्रिस्टरैम प्रसन्न नहीं थीं। वह अपने कार्य में बहुत अधिक सफल हो गई थीं; उन्होंने अपनी चाल बड़ी चतुराई से चली थी और अब उनकी यह इच्छा थी कि जो कुछ हुआ है, वह सब गड़बड़ हो जाए। न्यूमैन ने उनसे कह दिया था कि मदाम द सान्त्रे 'सन्तोषजनक' हैं। यह विशेषण कोई बहुत रोमांटिक नहीं था, लेकिन मिसेज़ ट्रिस्टरैम को इस शब्द में निहित भावना के समझने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई। सच तो यह है कि जिस तरह अत्यन्त कोमलता से संक्षेप में यह शब्द कहा गया था और इसके कहते समय आंखों में जो

"लेकिन आखिर," न्यूमैन ने कहा, "ऐसी कोई बात नहीं हुई है, जिसपर मुझे बधाई दी जा सके। इसमें मेरी कोई जीत नहीं हुई है।"

"मुझे क्षमा कीजिएगा," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "यह आपकी बहुत बड़ी विजय है। आपकी जीत इस बात में हुई है कि क्लेयर ने आपको पहला शब्द सुनते ही चुप नहीं किया और न आपसे यह कहा कि भविष्य में कभी आप उससे बात न करें।"

"यह बात मेरी समझ में नहीं आई," न्यूमैन ने कहा।

"बेशक आप की समझ में नहीं आई; ईश्वर न करे आपको यह समझने की ज़रूरत भी पड़े! जब मैंने आपसे यह कहा था कि आप अपने ढंग से और अपने स्वभाव के अनुसार व्यवहार करें, तो मुझे इस बात की कल्पना भी नहीं थी कि आप इतनी तेज़ी से आगे बढ़ जाएंगे। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि पांच या छः बार मुलाकातें करने के बाद आप शादी का प्रस्ताव कर डालेंगे। और अभी तक आपने ऐसा क्या काम किया है, जिसकी वजह से वह आपको चाहने लगे? आप केवल उसके सामने बैठे रहे हैं—वह भी सीधे-सादे ढंग से नहीं—बल्कि बैठे-बैठे उसकी ओर घूरते रहे हैं। लेकिन जो भी हो, वह आपको पसन्द करने लगी है।"

"यह तो आगे पता चलेगा।"

"नहीं, यह तो साबित हो चुका। लेकिन इसका परिणाम क्या होगा, अब यह देखना है। आप बिना किसी तरह का तूल किए, सीधे-सादे ढंग से शादी का प्रस्ताव कर डालेंगे—यह बात उसके दिमाग में भी नहीं आ सकती थी। आप शायद यह बिलकुल नहीं सोच पाएंगे कि जिस वक्त आप अपनी बात कह रहे होंगे, उस समय वह क्या सोच रही होगी; अगर उसने, सचमुच उसने आपसे विवाह कर लिया, तो यह घटना स्त्रियों के प्रति सभी मानवीय चीज़ों के सामान्य न्यायपूर्ण दृष्टिकोण का सबसे बड़ा उदाहरण होगी। आप सोचेंगे कि आप उसके प्रति उदारता दिखला रहे हैं; लेकिन आपको यह शायद कभी पता नहीं चलेगा कि आपको पति के रूप में स्वीकार करने के पूर्व उसके मन में कितना ज़बर्दस्त द्वंद्व हुआ होगा। जिस समय आपने यह प्रस्ताव किया था, उसी समय वह विचारों में डूब गई। उसने प्रश्न किया, 'क्यों नहीं?' यही बात अगर उससे कुछ घण्टे पहले कही जाती, तो शायद वह अपनी इस प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में कल्पना भी नहीं कर सकती थी। उसने हज़ारों बातें सोची होंगी और परम्परा तथा उसके संस्कारों

की धुरी पर यह सब विचार घूम गए होंगे और उसने एक ऐसे विकल्प के बारे में भी सोचा होगा, जो उसके मन में कभी नहीं था। जब मैं यह बात सोचती हूं— जब मैं क्लेयर, द सान्त्रे और उन सब चीज़ों को, जिनका वह प्रतिनिधित्व करती है, एकसाथ रखकर विचार करती हूं, तो मुझे ऐसा लगता है कि कोई बड़ी अच्छी बात हुई है। जब मैंने आपसे यह कहा था कि आप उससे विवाह के लिए प्रयत्न करें, तब निस्सन्देह मैं आपको सत्पात्र समझती थी। और आपने जो कुछ किया उसके बावजूद आज भी मैं आपको बड़ा सज्जन मानती हूं। लेकिन मैं यह कहने पर मजबूर हूं कि मेरी खुद समझ में नहीं आया है कि आप क्या हैं और आप क्या कर आए हैं, जिससे प्रभावित होकर क्लेयर जैसी लड़की आपसे विवाह करने के प्रस्ताव पर विचार करने को राज़ी हो गई है।"

"ओह, सचमुच ही कोई बड़ी अच्छी बात हुई है!" न्यूमैन ने हंसते हुए मिसेज़ ट्रेस्टरैम के शब्द दोहरा दिए। उसे इस बात को सुनकर अतीव सन्तोष हुआ था कि कोई अच्छी बात हुई है। उसे स्वयं इस बात में कोई सन्देह नहीं था, लेकिन दुनिया जिस तरह मदाम द सान्त्रे की सराहना करती थी, उससे क्लेयर का सम्मान उसकी दृष्टि में बढ़ गया था और उसे लग रहा था कि भविष्य में जो नारी उसकी स्त्री बननेवाली है, वह कितनी बहुमूल्य है।

इस घटना के बाद ही वेलेंतीन द बेलगार्द अपने मित्र के घर आया और उसे द ल यूनिवर्सिते ले जाना चाहा। वह वहां न्यूमैन को परिवार के अन्य सदस्यों मिलाना चाहता था। "वैसे तो आपका परिचय सबको मिल गया है," उसने कहा, "और आपके बारे में बातचीत भी होने लगी है। मेरी बहन ने मेरी मां से आपके मिलने आने की बात कह दी है और यह संयोग की ही बात है कि जब-जब गए, तब-तब किसी भी मुलाकात के समय वे उपस्थित नहीं थीं। मैंने कह दिया है कि आप बड़े धनी अमरीकी हैं और आपसे अच्छा और सज्जन आदमी दुनिया में मिलना कठिन है। आपको बड़े ही उत्कृष्ट ढंग की पत्नी की तलाश है।"

"आपका क्या ख्याल है," न्यूमैन ने पूछा, "क्या मदाम द सान्त्रे ने पिछली मेरी उनसे जो बातचीत हुई थी, उसके विषय में आपकी मां को बता दिया ?"

"मेरा निश्चित विश्वास है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया है; अभी वे यह बात अपने तक ही रखेंगी। इस बीच आपको चाहिए कि आप हमारे परिवार में अनेप

लिए स्थान बना ले। अभी भी आपके बारे मे लोग काफी कुछ जान गए हैं : आपने व्यापार में बड़ा धन कमाया है, आप कुछ सनकी हैं, और आप हमारी प्रिय बहन क्लेयर के प्रशंसक हैं। मेरी भाभी जिनको आपने, आपको याद होगा, मदाम द सान्त्रे के कमरे में देखा था, ऐसा लगता है, आपसे बड़ी खुश हो गई हैं। वे आपको सर्वोत्तम व्यक्ति बताती हैं। इसलिए मेरी मां आपसे मिलने के लिए बड़ी उत्सुक हैं।"

"ओह, वे मुझे देखकर हंसने की सोच रही हैं, क्यों ? न्यूमैन ने पूछा।

"वे कभी नहीं हंसतीं। अगर वे आपको पसन्द नहीं करेंगी, तो आप हंसोड़ बनकर उनके कृपापात्र न बन सकेंगे। मेरी यह बात अच्छी तरह समझ लीजिए !"

यह बातचीत शाम को हुई और उसके आधे घण्टे के बाद वेलेंतीन न्यूमैन को साथ लेकर रू द ल यूनिवर्सिते के उस कक्ष में प्रविष्ट हुआ, जिसमें न्यूमैन पहले कभी नहीं गया था। यह कक्ष डोवागर मारक्वीज द बेलगार्द का था। यह कमरा बड़ा लम्बा-चौड़ा था। इसकी छत काफी ऊची थी और उसमें जगह-जगह बड़े-बड़े और गहरे कंगूरे-से बने थे। कमरे में सिलेटी रंग की सफेदी थी। दीवारों के ऊपरी हिस्से में और छत पर सिलेटी रंग की सफेदी थी। जगह-जगह टेपेस्ट्री के परदे टंगे थे, जिनके रंग पुराने होने के कारण उड़ गए थे, लेकिन उनकी जहां-जहां वे फटे थे, बड़ी अच्छी तरह मरम्मत की गई थी। इसी तरह कुर्सियो के पिछले हिस्सों पर भी खोल चढ़े थे। हलके रंग का तुरकी का कालीन बिछा था, जो उस समय भी मुलायम और गुदगुदा था, हालांकि बहुत पुराना हो गया था। एक जगह दीवार पर लाल रेशमी परदा टंगा था, जिसकी पृष्ठभूमि मे मदाम द बेलगार्द के हर बच्चे का एक-एक चित्र लगा था। ये सारे चित्र उस समय के थे, जब बचचों की आयु दस वर्ष की थी। कमरे में लगभग आधे दर्जन मोमबत्तियां प्रकाश के लिए रखी गई थीं, जो बातचीत के लिए पर्याप्त था। मोमबत्तिया एक-दूसरे से दूर कोनों में रखी थीं। एक बड़ी गद्देदार कुर्सी पर आग के पास काले परिधान में एक वृद्धा बैठी थीं; कमरे के दूसरे कोने में कोई पियानो पर बैठा बड़ी ही मधुर वाल्ट्ज की धुन बजा रहा था। वादक को न्यूमैन ने तुरन्त पहचान लिया। वे वेलेंतीन की भाभी थीं।

वेलेंतीन ने अपने मित्र का परिचय कराया और न्यूमैन ने आग के पास बैठी महिला के पास जाकर उनसे हाथ मिलाया। उस समय इस महिला को देखकर जो तात्कालिक तस्वीर न्यूमैन के दिमाग में आई, वह यह थी : उसे वे गोरे रंग की, नाजुक और अधिक उम्र वाली महिला लगीं, जिनका माथा काफी चौड़ा था, मुंह

छोटा और ठण्डी नीली आंखों में तरुणाई की ताज़गी बाकी थी। वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने कठोर दृष्टि से न्यूमैन को देखा और जिस तरह हाथ मिलाया, उससे न्यूमैन को यह प्रकट हो गया कि वृद्धा अर्ल आफ सेंट डन्सटेन की पुत्री हैं। उनकी पुत्र-वधू ने पियानो बजाना बन्द कर दिया और मुस्कराकर न्यूमैन का स्वागत किया। न्यूमैन बैठ गया और अपने चारों ओर देखने लगा। इस बीच वेलेंतीन ने भाभी के पास जाकर उनके हाथ का चुम्बन लिया।

"मुझे आपसे पहले ही मिलना चाहिए था," वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने कहा, "आप मेरी पुत्री से मिलने तो कई बार आ चुके है।"

"जी हां," न्यूमैन ने कुछ मुस्कराते हुए कहा, "मदाम द सान्त्रे और मैं काफी घनिष्ठ मित्र हो गए हैं।"

"आपने बड़ी तेज़ी से प्रगति की," मदाम द बेलगार्द ने कहा।

"उतनी तेज़ी तो नहीं, जितनी मैं चाहता था," न्यूमैन ने बहादुरी से जवाब दिया।

"ओह, आप तो बहुत महत्त्वाकांक्षी हैं," वृद्धा ने उत्तर दिया।

"जी हां, मैं यह बात मानता हूं," न्यूमैन ने मुस्कराते हुए कहा।

मदाम द बेलगार्द ने अपनी ठण्डी बड़ी-बड़ी आंखों से न्यूमैन की तरफ देखा और न्यूमैन ने भी उनसे आंखें मिलाईं। वह सोच रहा था कि संभवतः मुझे इस वृद्धा से टक्कर लेनी पड़ेगी। यह अपनी नज़रों से वृद्धा के प्रतिरोध को आंकने का यत्न कर रहा था। दोनों एक-दूसरे को कुछ क्षणों तक आंखों ही आंखों में देखते रहे और फिर मदाम द बेलगार्द ने दूसरी ओर देखना शुरू कर दिया। वे मुस्कुराईं नहीं। बोलीं, "मैं भी बहुत महत्त्वाकांक्षी हूं।"

न्यूमैन ने महसूस किया कि वृद्धा की शक्ति को आंकना सरल नहीं है। वे बड़ी कठोर और ऐसी महिला हैं, जिनके भावों को जान पाना सरल नहीं है वे अपनी पुत्री से काफी मिलती थीं, लेकिन फिर भी दोनों में ज़मीन-आसमान का फर्क था। मदाम द सान्त्रे और वृद्धा मदाम द बेलगार्द का वर्ण एक-सा ही था, भवें भी वैसी ही नाजुक थीं। नाक भी एक-दूसरे से मिलती थी। लेकिन मदाम द बेलगार्द का चेहरा अपेक्षाकृत अधिक बड़ा था, उनके होंठ मोटे और भिंचे हुए थे और जिन्हें बन्द कर लेने पर ऐसा लगता था कि उनके होंठों से मुंह में केवल झरबेरी बेर के अतिरिक्त और कुछ नहीं जा सकेगा और या फिर उनके मुंह से 'ओ, डियर, नहीं'

ये शब्द ही निकल सकेंगे। इस तरह यह चेहरा उन दिनों के पुरातनपंथियों के सौंदर्य की कल्पना से भिन्न था, जिसके बारे में चालीस वर्ष पूर्व सौंदर्य-सम्बन्धी पुस्तकों में लेडी एमेलिन एथेंलिंग को प्रतिनिधि बताया गया था। न्यूमैन के विचार से मदाम द सान्त्रे का चेहरा पश्चिमी अमरीका के फैले हुए लम्बे-चौड़े मैदानों के आसमान की तरह था, जिसपर दूर-दूर तक हलके-हलके बादल इधर-उधर दिखलाई पड़ते थे, जो हवा में उड़े चले जा रहे होते तथा बहुत ही आकर्षक लगते। लेकिन मदाम द सान्त्रे की मां का सफेद, गम्भीर चेहरा और उनकी अत्यन्त सम्मानीय मुख-मुद्रा, जिसमें आंखों से औपचारिकता प्रकट होती थी, तथा जिसकी मर्यादा सीमित मुस्कराहट से प्रकट होती थी, यह धारणा उत्पन्न करता था कि वे कोई ऐसा दस्तावेज़ हैं, जिसे दस्तखत करने के बाद सील मोहर बन्द कर दिया गया है। 'उनकी दुनिया ऐसी चीजों की थी, जिसमें हर वस्तु अपरिवर्तनीय है। लेकिन वे इस दुनिया में किस तरह आराम से जीवन बिता रही थीं और वहां उन्हें क्या सुख मिल रहा था! वे अपनी दुनिया में इस तरह घूमती थीं, जैसे किसी फूलों के उद्यान में घूम रही हों, 'गार्डन ऑफ ईडन' में हों। और जब वे किसी पत्थर पर यह लिखा देखती हैं, 'यह बड़ा सुशील है, या यह बड़ा असभ्य है,' तो वे वहां रुककर बड़ी उत्सुकता से उसे देखती हैं। ऐसा लगता है, जैसे वे किसी कोयल की आवाज़ सुन रही हों या किसी गुलाब को सूंघ रही हों।' वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने अपनी ठोढ़ी के नीचे काले बैंगनी रंग के हुड के फीते को बांध रखा था और एक पुराना, काला कश्मीरी शाल ओढ़े थीं।"

"तो आप अमरीकी हैं?" वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने बातचीत शुरू करने के ख्याल से प्रश्न किया। "मैं कई अमरीकी सज्जनों से मिल चुकी हूं।"

"पेरिस में अनेक होंगे," न्यूमैन ने प्रसन्न भाव से उत्तर दिया।

"ओह, सचमुच?" मदाम द बेलगार्द ने कहा, "इंगलैंड में मैं कई अमरीकी सज्जनों से मिली थी या शायद कहीं और भी मिली हूं, लेकिन पेरिस में नहीं। कई वर्ष पहले पेरेनीज़ पर एक अमरीकी से मुलाकात हुई थी। मुझे लोगों ने बताया है कि अमरीकी महिलाएं बड़ी सुन्दर होती हैं। कम से कम एक तो बड़ी ही सुन्दर थी! उसका वर्ण कितना गौर था! उन्होंने मुझे किन्हीं परिचित सज्जन का एक परिचय-पत्र लाकर दिया था—मुझे यह याद नहीं रहा कि वे सज्जन कौन थे—लेकिन उन महिला ने अपने पत्र के साथ वह परिचय-पत्र मेरे पास भेजा था।

मैंने वह पत्र काफी समय तक रख छोड़ा था, वह बड़े ही अनोखे ढंग से लिखा हुआ था। उसके बहुत-से वाक्य तो मुझे कण्ठस्थ हो गए थे। लेकिन अब इस समय वे मुझे याद नहीं हैं, क्योंकि कई वर्ष बीत गए। उसके बाद से अमरीकियों से मेरी भेंट ही नहीं हुई। मेरा ख्याल है कि मेरी पुत्र-वधू कई अमरीकियों को जानती होगी ; वह काफी घूमती-फिरती है और लोगों से मिलती-जुलती है।" यह सुन-कर वह तरुण महिला आगे बढ़ आई। उनके कपड़े सरसराहट की आवाज़ कर रहे थे। कमर पर वे कपड़े काफी कसे हुए थीं, जिससे उनकी कमर का पतलापन प्रकट हो रहा था। वे बार-बार अपने वस्त्रों के अगले हिस्से पर नज़र डालती जाती थीं। यह उनकी नृत्य की पोशाक थी। उन्हें देखने से ऐसा लगता था कि वे सुन्दर भी हैं और असुन्दर भी। उनकी आंखें कुछ बाहर निकली-सी मालूम होती थीं तथा होंठ अजीब ढंग से लाल थे। उनको देखकर न्यूमैन को मदामाजेल नियोशे की याद आ जाती थी। शायद मदामाजेल नियोशे की यह आकांक्षा थी कि वे वेलेंतीन की भाभी जैसी स्त्री बन सकें। वेलेंतीन द बेलगार्द कुछ दूरी पर उनके पीछे-पीछे चलता हुआ आया और वह अपनी भाभी के पिछले हिस्से के परिधान पर अपना पैर पड़ने से बचाने के लिए बार-बार कूदकर अलग छिटक रहा था।

"आपके कंधे पीछे की तरफ से और ज़्यादा दिखाई पड़ने चाहिए," उसने बड़ी गम्भीरता से कहा।

तरुण महिला ने अपनी पीठ चिमनी के पास लगे शीशे की तरफ कर ली और पीछे की तरफ देखने की कोशिश करने लगीं, जिससे उनके देवर वेलेंतीन ने जो बात कही थी, उसकी सचाई जान सकें। शीशा नीचे की तरफ झुक गया था, लेकिन फिर भी उसमें केवल पीठ का वही भाग दिखलाई पड़ रहा था, जिस-पर कोई वस्त्र नहीं था। तरुण महिला ने अपने दोनों हाथ पीछे कर लिए और कमर से नीचे के वस्त्र को नीचे की तरफ खींचा। "इस तरह, आपका मतलब है इस तरह ?" उसने पूछा।

"हां, यह कुछ बेहतर है," बेलगार्द ने उसी स्वर में उत्तर दिया, "हालांकि अभी भी यह मेरी मर्ज़ी जैसा नहीं है।"

"ओह, मुझे 'अति' पसन्द नहीं है," वेलेंतीन की भाभी ने उत्तर दिया। और इसके बाद मुड़कर अपनी सास मदाम द बेलगार्द से बोलीं, "आप अभी मेरे बारे में

कुछ कह रही थीं ?"

"मैने कहा था कि तुम काफी घूमती-फिरती हो," वृद्धा ने कहा, "लेकिन मैं इसके अलावा भी कुछ कह सकती हूं।"

"बहुत घूमती-फिरती हूं ? घुमक्कड़ी हूं ? कैसा भद्दा शब्द है ! इसका क्या मतलब है ?"

"इसका अर्थ है बहुत ही सुन्दर महिला," न्यूमैन ने फ्रेंच का प्रयोग होते देखकर मतलब बताने की कोशिश की।

"मेरी तारीफ तो बहुत अच्छे ढंग से की गई है, लेकिन यह बड़ा खराब अनुवाद है," तरुणी ने कहा। और फिर न्यूमैन की तरफ एक क्षण देखकर उन्होंने पूछा, "क्या आप नाचना जानते हैं ?"

"बिलकुल नहीं।"

"यह बड़ी गलत बात है," उसने सीधे ही कह दिया। और इसके बाद अपनी पीठ की तरफ शीशे में निगाह डालते हुए मुड़ गईं।

"आपको पेरिस पसन्द आया ?" वृद्धा ने पूछा। जाहिर था, वे सोच रही थीं कि अमरीकी अभ्यागत से बातचीत करने का क्या उचित ढंग होगा।

"हां, पसन्द तो है," न्यूमैन ने कहा और इसके बाद मधुर कण्ठ से पूछा, "क्या आपको पसन्द नहीं ?"

"मैं नहीं कह सकती कि मैं इस बारे में कुछ जानती हूं। मैं अपना घर जानती हूं—अपने मित्रों को जानती हूं—लेकिन पेरिस के बारे में नहीं जानती।"

"ओह, तो आप अपना बड़ा नुकसान कर रही हैं," न्यूमैन ने सहानुभूतिपूर्वक कहा।

वृद्धा मदाम द बेलगार्द एकटक देखती रहीं ; शायद जिन्दगी में पहली बार किसीने उनकी इस क्षति पर दुःख प्रकट किया था।

"मेरे पास जो कुछ है, मैं उसीसे सन्तुष्ट रहती हूं," मदाम द बेलगार्द ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप कहा।

न्यूमैन अपनी आंखें कमरे में चारों तरफ दौड़ा रहा था। उसे कमरा कुछ विषादपूर्ण और भद्दा-सा लग रहा था। वह ऊंची-ऊंची दीवारों को देख रहा था, जिनमें छोटे-छोटे फ्रेमजड़े चित्र लगे थे और कुछ में दो या तीन सूखे रंगों वाले पिछली शताब्दी के चित्र थे। ये चित्र खिड़कियों के बीच में थे। उसे समझ लेना

चाहिए था कि उसके मेज़बान का सन्तोष स्वाभाविक था—क्योंकि उनके पास काफी कुछ था, लेकिन इस बीच जब दोनों चुप थे तब यह विचार न्यूमैन के दिमाग में नहीं आया।

"तो, मां," वेलेंतीन ने कहा और यह कहते-कहते वह पास आकर चिमनी के सहारे खड़ा हो गया, "तो आपका मेरे मित्र न्यूमैन के बारे में क्या विचार है ? क्या यह बहुत ही सज्जन व्यक्ति नहीं हैं ?"

"अभी मैं मिस्टर न्यूमैन से ज्यादा परिचित नहीं हो पाई हूं," वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने कहा, "मैं अभी केवल उनकी विनयशीलता से ही प्रभावित हूं।"

"मेरी मां लोगों को पहचानने में बड़ी चतुर हैं," वेलेंतीन ने न्यूमैन से कहा। "अगर आपने इन्हें सन्तुष्ट कर दिया, तो समझ लीजिए, आप जीत गए।"

"मुझे आशा है कि मैं किसी न किसी दिन आपको सन्तुष्ट कर दूंगा," न्यूमैन ने वृद्धा की ओर देखते हुए कहा, "मैंने अभी तक कुछ किया भी तो नहीं है।"

"आप मेरे पुत्र की बातों पर ध्यान न दीजिए ; यह आपको किसी मुसीबत में डाल देगा। यह तो आधा पगला है।"

"ओह, मैं तो इसे चाहता हूं—मैं इसे बहुत चाहता हूं।" न्यूमैन ने प्रसन्न भाव से कहा।

"यह आपका बड़ा मनोरंजन करता है, क्यों ?"

"जी हां।"

"वेलेंतीन, क्या तुम सुन रहे हो ?" मदाम द बेलगार्द ने कहा, "तुम मि० न्यूमैन का काफी मनोरजन करते हो।"

"शायद हम सबको यही करना पड़े !" वेलेंतीन ने जवाब दिया।

"आपको मेरे दूसरे पुत्र से भी मिलना चाहिए," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "वह मेरे इस पुत्र से कहीं अच्छा है, लेकिन वह आपका मनोरंजन न कर सकेगा।"

"मैं नहीं जानता—मैं नहीं जानता !" वेलेंतीन ने कुछ सोचते हुए बुदबुदाकर कहा, "लेकिन इसका पता जल्दी ही चल जाएगा। लीजिए आ गए हमारे बड़े भाई साहब।" दरवाज़ा जरा-सा खुला और एक सज्जन अन्दर घुस आए। इनका चेहरा न्यूमैन को देखते ही याद आ गया। जब पहली दफा वह मदाम द सान्त्रे से मिलने आया था तो न्यूमैन को इन सज्जन के कारण काफी असुविधा का

सामना करना पड़ा था। वेलेंतीन द बेलगार्द ने आगे बढ़कर अपने भाई का स्वागत किया, उनकी तरफ एक क्षण देखा और फिर उनकी बांहों में अपना हाथ डालकर उन्हें न्यूमैन के पास ले आया।

"ये मेरे सर्वोत्तम मित्र मि० न्यूमैन हैं," उसने कहा, "आपका भी इनसे अवश्य परिचय होना चाहिए।"

"मुझे मि० न्यूमैन का परिचय पाकर बड़ी प्रसन्नता है," मारक्विस ने ज़रा-सा झुकते हुए कहा, लेकिन अपना हाथ मिलाने के लिए आगे नहीं बढ़ाया।"

'यह आदमी सेकेण्डहैण्ड बुढ़िया औरत की तरह है,' न्यूमैन ने मो० द बेलगार्द के अभिवादन का उत्तर देते हुए मन ही मन कहा। और यहीं से न्यूमैन के मन में तरह-तरह की कल्पनाएं शुरू हो गईं। उसे लगा कि मारक्विस एक सज्जन विदेशी है, जो जीवन आराम से बिताने में विश्वास रखता है और यह विश्वास करना कठिन था कि वह आग के पास कुछ झुककर बैठी युवती का पति है और इन दोनों का आपस में पति-पत्नी जितना गहरा सम्बन्ध है। लेकिन अगर उसे अपनी पत्नी के सहवास में आराम नहीं मिलता था, तो उसे कम से कम अपने दो बच्चों के साथ रहकर बड़ा सुख मिलता था। वे दोनों उसे बहुत ही प्यारे थे। इस बीच मदाम द बेलगार्द बराबर अपने पुत्र को देख रही थीं।

"मेरे भाई ने मुझे आपके बारे में बताया था," मो० द बेलगार्द ने कहा, "और चूंकि आप मेरी बहन से भी परिचित हैं, इसलिए यह ज़रूरी था कि हम लोग आपस में एक-दूसरे को जान लेते।" वे अपनी मां की ओर मुड़ गए और झुककर बड़ी तत्परता से उनके हाथों को अपने होंठों से चूम लिया। इसके बाद चिमनी के पास जाकर खड़े हो गए। उनका चेहरा लम्बा और दुबला था, नाक काफी ऊंची और छोटी थी, आंखों में धुंधलापन था और वे बहुत कुछ अंग्रेज़ों से मिलती थीं। उनके गलमुच्छे चिकने और काफी घने थे, और बड़ी ठोड़ी के बीचोबीच एक मस्सा था, जो निश्चय ही उनके ब्रिटिश उद्‌गम का प्रमाण था। वे सिर से लेकर पैर तक जंच रहे थे और उनके सीधे और तने व्यक्तित्व की एक भी गतिविधि ऐसी नहीं थी, जिसे शानदार न कहा जा सके। अपने-आपको गम्भीरता से पेश करने की कला में इतने माहिर व्यक्ति से न्यूमैन का पहले कभी पाला नहीं पड़ा था। उसकी यह इच्छा हो रही थी कि वह कुछ कदम पीछे हटकर उन्हें देखे। ठीक उसी तरह से, जैसे किसी राजप्रासाद के बाह्य भाग को भली भांति देखने के लिए लोग कुछ कदम

पीछे हट जाते हैं और तब उसे देखते हैं।

"अरबेन," मदाम द बेलगार्द ने, जो ज़ाहिर था अपने पति के साथ बाल (नृत्य) में जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं, कहा, "मैं आपका ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट कराना चाहती हूं कि मैं तैयार बैठी हूं।"

"यह बहुत बढ़िया बात रही," वेलेंतीन ने बुदबुदाकर कहा।

"मैं आपकी सेवा के लिए प्रस्तुत हूं, मेरे मित्र," मो० द बेलगार्द ने कहा। "केवल मुझे मि० न्यूमैन से बातें करने का आनन्द लेने के लिए कुछ मिनट दे दीजिए!"

"ओह, अगर आप किसी पार्टी में जा रहे हैं, तो मैं आपको नहीं रोकना चाहता," न्यूमैन ने आपत्ति करते हुए कहा, "मुझे विश्वास है कि हम लोग फिर मिलेंगे। अगर आप मुझसे बातचीत करना चाहते हैं, तो हम लोग कोई और समय तय कर लें।" न्यूमैन इस बात के लिए उत्सुक था कि मो० द बेलगार्द को पता चल जाए कि मैं किन्हीं भी प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रस्तुत हूं और उनकी सभी मागें पूरी करने के लिए तैयार हूं।

मो० द बेलगार्द आग के सामने बड़े सन्तुलित ढंग से खड़े हुए थे और अपने गलमुच्छों में से एक पर अपना गोरा हाथ फेर रहे थे। न्यूमैन की ओर देखते हुए उन्होंने कुछ-कुछ प्रश्नभरी दृष्टि से देखा और निरर्थक ढंग से मुस्कराए। "यह प्रस्ताव कर आपने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की है," उन्होंने कहा, "अगर मैं भूल नहीं करता, तो आप काफी व्यस्त रहते हैं और आपका समय बड़ा बहुमूल्य है। आप शायद···शायद व्यापार करते हैं।"

"आपका मतलब है, व्यापार में? ओह, नहीं, मैंने फिलहाल व्यापार से छुट्टी ले रखी है। मैं आजकल घूम-फिर रहा हूं। सारा समय मेरा अपना है।"

"आह, आप छुट्टियां मना रहे हैं," मो० द बेलगार्द ने उत्तर दिया, "अच्छा आप घूम-फिर रहे हैं।"

"मि० न्यूमैन अमरीकी हैं," मदाम द बेलगार्द ने कहा।

"मेरे भाई बहुत बड़े नृवंश-शास्त्री हैं," वेलेंतीन ने कहा।

"नृवंश-शास्त्री हैं?" न्यूमैन ने कहा, "आह, आप नीग्रो लोगों की खोपड़ियां और ऐसी ही चीज़ें इकट्ठी करते हैं!"

मारक्विस ने अपने छोटे भाई की तरफ बड़ी कठोरता से देखा और फिर अप नें

गलमुच्छों पर हाथ फेरने लगे। इसके बाद बड़ी सभ्यता से न्यूमैन की तरफ मुड़कर उन्होंने पूछा, "तो आप दुनिया देखने और आनन्द के लिए घूम-फिर रहे हैं ?"

"ओह, मैं इधर-उधर चीज़ें देखने के लिए घूम-फिर रहा हूं। बेशक इसमें मुझे काफी आनन्द भी मिलता है।"

"आपकी दिलचस्पी विशेष रूप से किस चीज़ में है ?" मारक्विस ने पूछा।

"वैसे तो मेरी दिलचस्पी हर चीज़ में है," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "मैं किसी खास चीज़ को देखने नहीं आया, लेकिन कारखानों आदि में मेरी ज़्यादा दिलचस्पी है।"

"अच्छा, तो इनमें आपकी यही विशेष रुचि रही है ?"

"मैं यह तो नहीं कह सकता कि मेरी कोई विशेष रुचि है। सच पूछा जाए तो मेरी विशेष रुचि कम से कम समय में अधिक से अधिक धन कमाना रही है।" न्यूमैन ने आखिरी बात जान-बूझकर कही, जिसका मतलब यह था कि वह अपनी साधन-सम्पन्नता के विषय में प्रामाणिक बयान देने के लिए तैयार है।

मो० द बेलगार्द प्रसन्न-भाव से हंसने लगे। "मुझे आशा है कि आप सफल रहे होंगे," उन्होंने कहा।

"हां, मैंने काफी धन कमा लिया है। मेरी उम्र उतनी नहीं है जितनी देखने में शायद आपको लगती हो।"

"अपना धन खर्च करने के लिए पेरिस बहुत अच्छी जगह है। मुझे आशा है कि आपको यहां काफी आनन्द प्राप्त होगा।" और मो० द बेलगार्द ने अपने दस्ताने निकालकर उन्हें पहनना शुरू कर दिया।

न्यूमैन कुछ क्षण उन्हें अपने गोरे हाथ सफेद दस्तानों में डालते देखता रहा और जब वह ऐसा कर रहा था, तभी उसके मन में एक नया भाव आया। मो० द बेलगार्द की शुभकामनाएं, उसे ऐसा लगा कि, उसपर उनकी विराट गम्भीरता से हलके हिम की तरह बरस रही हैं। लेकिन इससे न्यूमैन को कोई झुंझलाहट नहीं हुई। उसे यह भी नहीं लगा कि कोई उसे दुलरा रहा है। उसकी यह इच्छा भी नहीं रही कि वह इतने सज्जन व्यक्ति से अकारण ही लड़ बैठे। उसे यकायक यही महसूस हुआ कि वह ऐसे लोगों के सम्पर्क में आ गया है, जिनके बारे में उसके मित्र वेलेंतीन ने पहले ही बता दिया था कि उसे उन व्यक्तियों के साथ मिलना होगा और उन्हें सन्तुष्ट करना होगा। और यह सोचकर वह उनकी उपस्थिति के विषय में और सतर्क हो

गया। वह कुछ ऐसी बातें कहना चाहता था, जिससे उसके बारे में उन्हें पूरी तरह पता चल जाए और कोई भ्रम न रहे। लेकिन यहां यह कह देना आवश्यक है कि अगर उसका यह भाव किसी भी तरह दुर्भावनायुक्त नहीं था, फिर भी उसमें विनोद और परिहास का काफी अंश था। न्यूमैन मुस्कराने के लिए तैयार था। बशर्ते उसकी बातें सुनकर उसके मेज़बान लोगों को कुछ आघात लगता। उसका ऐसा आघात पहुंचाने जैसा कोई इरादा नहीं था।

"पेरिस बेकार लोगों के लिए अच्छी जगह है," उसने कहा, "या फिर उन लोगों के लिए बहुत अच्छी जगह है, जो सपरिवार काफी दिनों से यहां बस गए हों; और आपका काफी लोगों से परिचय हो तथा आपके रिश्तेदार आसपास यहीं रहते हों; या फिर आपके पास इस घर जितना बहुत बड़ा घर हो, पत्नी हो, बच्चे हों, मां और बहन हों और हर चीज़ आरामदेह हो। मुझे ऐसे कमरों में अच्छा नहीं लगता, जिनके बगल में दूसरे कमरों में और लोग रहते हों। लेकिन मैं बिलकुल छुट्टियां बिताने ही नहीं आया हूं। मैं आराम करने की कोशिश करता हूं, लेकिन कर नहीं पाता; यह मेरे स्वभाव के विरुद्ध है। व्यापार में रहकर कुछ ऐसी आदतें पड़ गई हैं, जो छुड़ाए नहीं छूटतीं। और फिर मेरा कोई घर भी नहीं है, जिसे मैं अपना कह सकूं या यूं कह लीजिए कि मेरा परिवार ही नहीं है। मेरी बहनें पांच हज़ार मील दूर हैं, मेरी मां तभी मर गई थीं जब मैं बहुत छोटा था और पत्नी मेरे है नहीं; अच्छा होता, मैंने शादी कर ली होती! इसीलिए आप समझ सकते हैं कि मुझे वस्तुतः यह पता ही नहीं चलता कि मैं क्या करूं। मैं आपकी तरह पुस्तकों का शौकीन भी नहीं हूं और बाहर होटलों में डिनर खाते-खाते तथा ओपेरा जाते-जाते ऊब जाता हूं। तब मुझे अपने व्यापार और काम की याद आती है। शायद आपको पता नहीं है कि मैं जब बहुत छोटा था, तभी से मैंने कमाना शुरू कर दिया था और अभी कुछ महीने पहले मैंने इस ओर से मुंह मोड़ा है। देखिए न, अच्छी तरह छुट्टियां बिताना भी कितना कठिन काम है!"

न्यूमैन के इतना कहने के बाद कुछ देर तक गम्भीर मौन का वातावरण रहा। सभी लोग चुप रहे। वेलेंतीन एकटक उसकी ओर देखता रहा, उसके दोनों हाथ जेबों में थे और इसके बाद वह धीरे-धीरे कुछ एक तरफ झुकता हुआ कमरे से बाहर चला गया। मारक्विस अपने दस्ताने चढ़ाने में व्यस्त रहे और अत्यन्त विनम्रतापूर्वक मुस्कराते रहे।

"आप जब बहुत छोटे थे, तभी से आपने धनोर्जन काम का शुरू कर दिया था ?" मारक्विस ने पूछा।

"हां, बिलकुल बच्चा ही था।"

"आप कहते हैं कि आप पुस्तकों के शौकीन नहीं हैं," मो० द बेलगार्द ने कहा, "लेकिन आपको यह तो याद रखना ही चाहिए कि आप बचपन में जितना चाहिए था उतना नहीं लिख-पढ़ सके थे।"

"यह सच है ; जब मैं दस साल का हुआ, तो मेरा स्कूल जाना बन्द हो गया, लेकिन बाद में मैंने स्वयं पढ़ा-लिखा।" न्यूमैन ने आश्वस्त करने के स्वर में कहा।

"आपकी कितनी बहनें हैं ?" वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने पूछा।

"दो बहनें हैं। वे दोनों ही बड़ी अच्छी हैं !"

"मुझे आशा है कि उन्हें जीवन में आरम्भ में ही बहुत कठिनाइयों का सामना न करना पड़ा होगा।"

"उनके विवाह जल्दी हो गए थे। आप चाहें तो इसे कठिनाई कह सकती हैं, लेकिन हमारे यहां पश्चिमी अमरीका में लड़कियों के विवाह जल्दी ही हो जाते हैं। मेरी एक बहन का विवाह ऐसे व्यक्ति से हुआ है, जो पश्चिमी अमरीका के सबसे बड़े इण्डिया-रबर हाउस का मालिक है।"

"आह, क्या आपके यहां इंडिया-रबर के मकान बनाए जाते हैं ?" मारक्विस ने पूछा।

"और क्या, जिससे आपका परिवार ज्यों-ज्यों बढ़ता जाए, आप उन मकानों को खींचकर बड़ा कर दें।" मो० द बेलगार्द की युवती पत्नी ने अपने शरीर को बड़े सफेद शाल से ढकते हुए कहा।

इस बार न्यूमैन ने ज़ोरों का कहकहा लगाया और बतलाया कि उनके बहनोई जिस मकान में रहते हैं, वह लकड़ी का है, लेकिन वे रबड़ का व्यापार करते हैं और उसे बनाते तथा बेचते हैं।

"हां, मेरे बच्चे बरसात के दिनों में बाग में खेलने जाते वक्त रबर के जूते पहन जाते हैं," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "मुझे पता नहीं कि यह रबर आप ही के बहनोई की बनाई हुई होती है या नहीं।"

"बहुत सम्भव है, उन्हींके कारखाने में बनी हो," न्यूमैन ने कहा, "अगर यह रबर उनके कारखाने की बनी हुई है, तो समझ लीजिए कि वह बहुत

च्छी है।"

"जो हो, आपको इससे हतोत्साहित नहीं होना चाहिए," मो०द बेलगार्द ने नेरर्थक विनयशीलता दिखाते हुए कहा।

"ओह, मैं हतोत्साहित नहीं होना चाहता। मेरी अपनी एक योजना है, जिसके में मैं बराबर सोचता रहता हूं, और यह स्वयं अपने-आप में बहुत बड़ा काम" और न्यूमैन एक क्षरण के लिए चुप हो गया, वह कुछ संकोच कर रहा था, लेकिन उसका सोचना जारी था ; वह अपनी बात कहना चाहता था, लेकिन फिर भी उसे यह सारा काम इस तरह करना पड़ रहा था, जो ढंग उसे बहुत प्रिय नहीं पर उसने अपनी बात जारी रखी और वृद्धा मदाम द बेलगार्द से कहा, "मैं अपनी इस योजना के बारे में आपको बताऊंगा ; शायद आप मेरी सहायता कर सकें। मैं अपना विवाह करना चाहता हूं।"

"योजना तो बहुत अच्छी है, लेकिन मैं विवाह नहीं कराती फिरती," वृद्धा कहा।

न्यूमैन ने एक क्षरण उनकी तरफ देखा और फिर बड़ी गम्भीरता से कहा, "मैं सोच रहा था कि आप शायद ऐसा करती हैं।"

"मदाम द बेलगार्द को लगा कि न्यूमैन शायद बहुत ही गम्भीरता से बात कर रहा है। उन्होंने तीखे स्वर से फ्रेंच में कुछ कहा और अपनी आखें अपने पुत्र पर स्थिर कर लीं। तभी कमरे का दरवाज़ा खुला और वेलेंतीन तेज़ी से कमरे में घुसा।

"आपके लिए एक सन्देश है," उसने अपनी भाभी से कहा, "क्लेयर ने मुझसे कहा है कि आप अभी ही नृत्य-पार्टी के लिए रवाना न हो जाएं। वे भी आपके साथ चलेंगी।"

"क्लेयर हमारे साथ जाएगी!" बेलगार्द की भाभी ने ज़ोर से कहा, "यह क्या अनहोनी है!"

"उन्होंने अब अपना विचार बदल दिया है ; अभी आधे घण्टे पहले उन्होंने तय किया और अब वे अपने बालों में आखिरी हीरे का पिन लगा रही हैं," वेलेंतीन ने कहा।

"मेरी बेटी को क्या हो गया है?" मदाम द बेलगार्द ने कठोरता से प्रश्न किया, "पिछले तीन वर्षों से वह कभी भी बाहर नहीं आ-जा रही। उसने बाहर जाने का

फैसला अभी आधे घण्टे पहले किया है और वह भी मुझसे बिना पूछे ?"

"मां, उसने मुझसे पांच मिनट पहले सलाह की थी," वेलेंतीन ने कहा, "और मैंने उससे कहा कि तुम जैसी सुन्दर स्त्री को, आप देखेंगी कि वह कितनी सुन्दर है, इस बात का कोई अधिकार नहीं है कि वह अपने-आपको ज़िन्दा दफन कर ले।"

"तुम्हें क्लेयर को अपनी मां के पास भेज देना चाहिए था, मेरे भाई," मो॰ द बेलगार्द ने फ्रेंच में कहा, "यह बड़ी ही अजीब बात है।"

"मैंने तो उससे कहा कि तुम सब लोगों से मिल लो !" वेलेंतीन ने कहा। "लो देखो, वह आ गई !" और वह आगे बढ़कर दरवाज़ा खोलने चला गया। देहलीज़ पर ही उसे मदाम द सान्त्रे मिल गईं और उसने अपनी बहन का हाथ पकड़ लिया और हाथ पकड़े-पकड़े कमरे में ले आया। मदाम द सान्त्रे ने श्वेत परिधान धारण किया था, लेकिन उनका लबादा काफी लम्बा और नीला था। यह लबादा उनके पैरों के पास तक आ रहा था। कन्धों के पास वह एक रुपहली पट्टी से बंधा था, लेकिन इस लबादे को उसने पीछे की तरफ डाल रखा था और मदाम द सान्त्रे की लम्बी गोरी बांहें वस्त्रहीन थीं। उनकी घनी के केशराशि में लगभग एक दर्जन हीरे झिलमिला रहे थे। न्यूमैन को लगा कि मदाम द सान्त्रे गम्भीर हैं और उनके मुखमण्डल पर कुछ पीलापन भी है। मदाम द सान्त्रे ने चारों ओर दृष्टि डाली और जब न्यूमैन को देखा, तो वह मुस्करा दी और उन्होंने अपना हाथ न्यूमैन की तरफ मिलाने के लिए बढ़ा दिया। न्यूमैन को वे बड़ी ही सुन्दर लगीं। उसे उनका पूरा मुंह देखने का मौका मिला, क्योंकि मदाम द सान्त्रे कमरे के बीचो-बीच में खड़ी हो गई थीं। वे बिना आंखें मिलाए, ज़ाहिर था, वहां खडी-खड़ी यह सोच रही थीं कि क्या करना चाहिए। इसके बाद वे अपनी मां के पास गईं, जो अपनी गद्देदार कुर्सी पर आग के सामने बैठी मदाम द सान्त्रे को बड़े क्रोध से देख रही थीं। अन्य लोगों की तरफ पीठ करके मदाम द सान्त्रे ने अपना लबादा हटा लिया और अपने वस्त्र मां को दिखलाए।

"आप मेरे बारे में क्या सोच रही हैं ?" उसने पूछा।

"मेरा ख्याल है कि तुम बड़ी उद्दंड हो," मां ने कहा, "अभी तीन दिन पहले जब मैंने तुमसे बहुत ही घिघियाकर यह कहा था कि तुम डचेस द लुस्सीनान के यहां चली जाओ, तो तुमने मना कर दिया था और यह कहा था कि मनुष्य को अपने व्यवहार में कुछ स्थिरता रखनी चाहिए। क्या यही तुम्हारी व्यावहारिक

स्थिरता है ? तुम मदाम रोबिनो के साथ पक्षपात क्यों कर रही हो ? आज रात तुम्हें किसको प्रसन्न करना है ?"

"प्यारी मां, मैं अपने-आपको प्रसन्न करना चाहती हूं," मदाम द सान्त्रे ने कहा और उन्होंने झुककर वृद्धा को चूम लिया।

"मुझे इस तरह की बातें पसंद नहीं हैं, मेरी बहन" अरबेन द बेलगार्द ने कहा, "विशेष रूप से उस समय, जब कोई कहीं बाहर जा रहा हो।"

न्यूमैन इस स्थल पर कुछ बोलना चाहता था। "ओह, अगर आप मदाम द सान्त्रे के साथ किसी जगह जा रहे हों, तो आपको इस बात की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि लोग आपकी तरफ देखेंगे !"

मो० द बेलगार्द अपनी बहन की तरफ देखने लगे। उनके होंठो पर मुस्कान जरूर थी, लेकिन उसमें बड़ी कठोरता थी और उसे देखकर कोई सहज नहीं हो सकता था। "मुझे आशा है कि तुम्हें अपनी यह तारीफ पसन्द आएगी, जो तुम्हारे भाई का उपहास करके की गई है," उन्होंने कहा, "आओ, आओ मदाम।" और मदाम द सान्त्रे की बांहों में अपना हाथ डालकर वे उन्हें कमरे से ले गए। वेलेंतीन इसी तरह अपनी भाभी को बाहर ले गया। वे, स्पष्ट था, यह सोच रही थीं कि उनकी अपनी नृत्य की पोशाक ननद के कपड़ों से कहीं ज्यादा सुन्दर है; लेकिन इससे उन्हें चैन नहीं मिल रहा था। अमरीकी अभ्यागत के प्रति विदाई की मुस्कान होंठो पर लाते हुए जो भाव उसने अतिथि के मुख पर देखा, उससे यह संभव नहीं था कि वेलेंतीन की भाभी को कुछ राहत मिलती।

अब न्यूमैन वृद्धा मदाम द बेलगार्द के साथ अकेला रह गया था। कुछ क्षणों तक वह मौन खड़ा रहा। "आपकी पुत्री सचमुच बड़ी सुन्दर हैं।" आखिर उसने कहा।

"बड़ी अजीब लड़की है।" मदाम द बेलगार्द ने कहा।

"यह बात सुनकर मुझे खुशी हुई," न्यूमैन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "इससे मुझे आशा बंधती है।"

"क्या आशा बंधती है ?"

"यही कि एक दिन वे मुझसे विवाह करने पर राजी हो जाएंगी।"

वृद्धा धीरे-धीरे उठकर खड़ी हो गईं। "तो क्या सचमुच आपकी यही योजना है ?"

"हां, लेकिन क्या आप इसे पसन्द करेंगी ?"

"पसन्द करूंगी ?" मदाम द बेलगार्द एक क्षण के लिए न्यूमैन की तरफ देखती रहीं और फिर उन्होंने सिर हिलाया। "नहीं !" उन्होंने धीरे से कहा।

"तो फिर, क्या आप यह विवाह अपनी इच्छा के विरुद्ध होने देंगी ? क्या आप मेरे विवाह को अनदेखा कर देंगी ?"

"आपको पता नहीं है कि आप क्या पूछ रहे हैं। मैं बहुत ही अभिमानी और हठी औरत हूं।"

"जो हो, मैं बहुत अमीर हूं," न्यूमैन ने कहा।

मदाम द बेलगार्द फर्श की ओर आंखें गड़ाए देखती रहीं और न्यूमैन ने सोचा कि शायद वे उसकी कठोर बात के पक्ष में तर्क खोज रही हैं, जो उन्होंने अभी कही है, लेकिन अंत में नजर उठाकर उन्होंने केवल इतना ही पूछा, "कितने अमीर हैं ?"

न्यूमैन ने अपनी आमदनी मोटे तौर पर बता दी, फ्रांकों में एक बहुत बड़ी रकम होती थी। उन्होंने यह भी बताया कि उनकी आमदनी का स्थायित्व कितना है और अपनी आय के साधनों का प्रभावकारी ब्योरा दिया।

वृद्धा मदाम द बेलगार्द चुपचाप सुनती रहीं। "आप बड़े स्पष्टवादी हैं," वृद्धा ने अन्त में कहा, "मैं भी स्पष्टवादिता से ही काम लूंगी। आपका विरोध करके कष्ट भुगतने की बजाय मैं कुल मिलाकर आपका समर्थन करूंगी। ऐसा करने से मुझे ज़्यादा खुशी होगी।"

"मैं आपकी किन्हीं भी शर्तों पर राज़ी हो जाने के लिए आभार प्रकट करूंगा," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन इस समय आपने मेरे लिए काफी कष्ट उठा लिया है। गुड नाइट !" और वह विदा लेकर रवाना हो गया।

ग्यारह

पेरिस लौटने के बाद न्यूमैन ने मो० नियोशे के साथ फ्रेंच में बातचीत करके इस भाषा का अपना अध्ययन फिर से शुरू नहीं किया था। उसे लौटने के बाद यह लग रहा था कि उसे कई कामों में लगा रहना पड़ता है, जिसकी वजह से समय नहीं

मिल पाता है। लेकिन मो० नियोशे को पता नहीं किस तरह यह खबर लग गई थी कि न्यूमैन वापस लौट आया है, हालांकि न्यूमैन को यह पता नहीं लग सका कि उसके आने की खबर मो० नियोशे को किस तरह लगी। इसके बाद मो० नियोशे तुरन्त ही उससे मिलने आए। एक बार नहीं, कई बार। उन्होंने न्यूमैन से यह प्रकट किया कि उसे न्यूमैन से बहुत बड़ी रकम बिना कोई विशेष काम किए मिल गई है और इससे वह अपने-आपको बड़ा अपराधी अनुभव करता है। इस धनराशि को वह फ्रेंच भाषा का कुछ व्याकरण पढ़ाकर तथा छोटी-मोटी व्यापार-सम्बन्धी सूचनाएं देकर किस्तों में चुकाना चाहता है। उनके चेहरे पर वही उदासी और विषाद का भाव था, जो कुछ महीने पहले न्यूमैन ने देखा था; कुछ महीनों के ब्रश के कारण उनके कोट या हैट में विशेष चमक नहीं आई थी, लेकिन वृद्ध बेचारे को चिन्ताओं ने पहले से अधिक जर्जर बना दिया था। ऐसा लगता था कि गर्मियों में मो० नियोशे को कुछ और कटु अनुभव हुए थे। न्यूमैन ने मदामाजेल नोएमी के बारे में बड़ी दिलचस्पी से कुछ प्रश्न किए। इसके जवाब में वृद्ध ने अपनी आंखों में आंसू भर लिए और कुछ नहीं कहा।

"मुझसे कुछ मत पूछिए, श्रीमान्," आखिर में उन्होने कहा, "मैं चुपचाप बैठा-बैठा अपनी पुत्री को देखता रहता हूं, लेकिन कुछ नहीं कर सकता।"

"आपका मतलब है कि वह आपकी उपेक्षा करती है ?"

"मैं नहीं जानता, मुझे पता नहीं। मेरी समझ में उसकी कोई बात नहीं आती। पता नहीं उसके दिमाग में क्या है; मैं नहीं जानता कि वह क्या चाहती है। उसे समझ पाना मेरे बूते का रोग नहीं है।"

"क्या वह अब भी लूव्र जाती है ? क्या उसने मेरे लिए चित्रों की प्रतियां तैयार कीं ?"

"वह लूव्र तो जाती है, लेकिन चित्र की प्रतियां नहीं दिखाई देतीं। वह हमेशा कुछ न कुछ बनाती रहती है। शायद वही चित्र हो जिनके आर्डर आपने दिए थे। आपने जो आर्डर उदारतापूर्वक दिया था, उसके कारण उसे बड़ी खुशी से जल्दी-जल्दी अपना काम पूरा करना चाहिए था, लेकिन उसमें कोई उत्साह ही नहीं दीखता है। मैं उससे कुछ नहीं कह पाता; मैं उससे डरता हूं। पिछली गर्मियों में एक दिन संध्या को जब मैं उसे कैम्प्स एलिसीज़ घुमाने ले गया था, तो उसने कुछ ऐसी बातें कहीं, जिन्हें सुनकर मैं बड़ा भयभीत हो गया।"

"वे क्या थीं ?"

"एक दु:खी पिता को यह सब बातें कहने के लिए क्षमा कीजिएगा !" मो० नियोशे ने कैलिको का रूमाल खोलते हुए कहा।

न्यूमैन ने वादा किया कि मैं मदामाजेल नोएमी से लूव्र जाकर फिर मिलूंगा। वह जानना चाहता था कि जिन चित्रों की प्रतियां बनाने के लिए उसने कहा था, उनका क्या हुआ। लेकिन यहां यह बता देना ज़रूरी है कि इससे भी ज़्यादा न्यूमैन को मदामाजेल नोएमी की अपनी प्रगति के बारे में जानने की अधिक जिज्ञासा थी। एक दिन तीसरे पहर वह लूव्र कला-संग्रहालय गया और मदामाजेल नोएमी की तलाश में उसने कई कक्ष खोज डाले। वह जब इटालियन चित्रकारों वाले कक्ष में घूम रहा था, तभी यकायक उसे वेलेंतीन द बेलगार्द मिल गया। इस फ्रेंच युवक ने बड़े उत्साह से न्यूमैन का स्वागत किया और उसे विश्वास दिलाया कि उसका मिल जाना बड़ा अच्छा हुआ। उसने कहा कि मैं बड़ा परेशान था और चाहता था कि किसी तरह मेरी उकताहट कम हो।

"इतने सुन्दर चित्रों के बीच आप परेशान हैं ?" न्यूमैन ने कहा, "मेरा ख्याल था कि आपको चित्रों का बड़ा शौक है, विशेष रूप से पुराने चित्रों को देखने का। यहां दो-तीन चित्र तो ऐसे हैं ही, जिन्हें देखकर आप प्रसन्नता अनुभव कर सकते हैं।"

"ओह, आज," वेलेंतीन ने जवाब दिया, "मुझे चित्रों को देखने की ज़रा भी इच्छा नहीं है; और जितने ही वे सुन्दर हैं, उतना ही वे मुझे अप्रिय लग रहे हैं। ऐसा लगता है कि वे एकटक घूर रहे हैं और उनकी यह निश्चिन्तता मुझमें झुंझलाहट उत्पन्न कर रही है। मुझे ऐसा लगता है, जैसे मैं एक बहुत बड़ी पार्टी में हूं, जो मुझे पसन्द नहीं आ रही। मैं एक बहुत बड़े कमरे में हूं, जिसमें बहुत लोग हैं, लेकिन मैं किसीसे बात नहीं करना चाहता। ऐसी हालत मे मै उनकी सुन्दरता के प्रति क्या आकृष्ट हो सकता हूं ? मैं बड़ी ऊब अनुभव कर रहा हूं और साथ ही मुझे यह भी लग रहा है कि मैं अपने-आपको धिक्कार रहा हू। मुझे बड़ी उकताहट हो रही है और गुस्सा आ रहा है।"

"अगर लूव्र आकर आप इतने परेशान हो जाते हैं, तो फिर आप यहां आए ही क्यों ?" न्यूमैन ने पूछा।

"यह भी मेरी एक परेशानी है। यहां मैं अपनी एक ममेरी बहन से मिलने

आया था—मेरी यह ममेरी बहन अंग्रेज़ हैं, यह मेरी मां के परिवार की हैं—वे एक सप्ताह के लिए अपने पति के साथ पेरिस आई हैं और चाहती हैं कि मैं उन्हें दर्शनीय स्थल दिखाऊं। एक ऐसी स्त्री की कल्पना कीजिए, जो दिसम्बर में भी हरे क्रेप का बोनेट पहनती हैं और जिनके जूतों के फीते टखनों के बाहर निकले रहते हैं। मेरी मां ने मुझसे कहा था कि मैं इन लोगों को घुमा दूं। मैंने आज तीसरे पहर गाइड का काम करना स्वीकार कर लिया। उन लोगों को यहां दिन में दो बजे पहुंचना था और मैं पिछले बीस मिनट से उनकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। पता नहीं, वे क्यों नहीं आईं? कम से कम चलने के लिए दो पैर तो उनके पास हैं ही। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ जो इस तरह मज़ाक किया गया है, उसपर मैं क्रोध प्रकट करूं या इस बात पर प्रसन्नता प्रकट करूं कि मेरी जान छूटी।"

"मेरा ख्याल है कि जो अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो बहुत क्रुद्ध होता," न्यूमैन ने कहा, "क्योंकि वे लोग अब भी आ सकते हैं और तब आप अपना क्रोध प्रकट कर सकेंगे। इसके विपरीत अगर आप यह सोचकर खुश हो लिए कि अच्छा हुआ उनसे जान छूटी, तो वे लोग बाद में आ सकते हैं और फिर आपकी समझ में नहीं आएगा कि आप इतने खुश क्यों हुए थे।"

"आपने मुझे बहुत अच्छी सलाह दी है और अब मैं पहले से बेहतर हूं। मैं उनपर अपनी नाराज़ी ज़ाहिर करूंगा; वे लोग भाड़ में जाएं और मैं आपके साथ चल दूंगा—हां, आपको कोई और काम तो नहीं है?"

"कोई विशेष काम तो नहीं है," न्यूमैन ने कहा। "लेकिन सच बात यह है कि मैं यहां चित्र देखने नहीं, बल्कि एक से मिलने आया हूं।"

"क्या वह कोई स्त्री है?"

"एक नवयुवती है।"

"जो हो," वेलेंतीन ने कहा, "कम से कम आपको यह तो आशा नहीं है कि वह हरी ट्विल के कपड़े पहने होगी और उसके पैर भी बहुत इधर-उधर ढंग से न पड़ते होंगे।"

"मैं उनके पैरों के बारे में ज्यादा नहीं जानता, लेकिन उसके हाथ वाकई बहुत सुन्दर हैं।"

वेलेंतीन ने गहरा निःश्वास छोड़ा। "और यह बात सुनकर क्या मैं आपके

पास से चल दूं ?"

"मुझे इस बात का भरोसा नहीं है कि वह नवयुवती मुझे मिल जाएगी," न्यूमैन ने कहा, "और इधर वह मुझे मिले नहीं और उधर मैं आपसे भी हाथ धोऊं, इसके लिए मै तैयार नहीं हूं। यह उचित न होगा कि मैं उस युवती की भेंट आपसे कराऊं, फिर भी मैं यह चाहूंगा कि आप उस युवती के बारे में मुझे अपनी राय दें।"

"क्या वह बहुत सुन्दर है ?"

"मेरा ख्याल है कि देखने के बाद आप भी उसे सुन्दर ही कहेंगे।"

बेलगार्द ने अपना हाथ अपने दोस्त की बांहों में डाल दिया। "तो फिर मुझे तुरन्त उसके पास ले चलिए। मुझे यह जानकर बड़ी लज्जा होगी कि एक सुन्दर स्त्री मेरी राय के लिए प्रतीक्षा करे।"

न्यूमैन धीरे-धीरे उसी दिशा में आगे बढ़ने लगा, जिस तरफ वह पहले चल रहा था। लेकिन उसके कदम तेज़ी से नहीं पड़ रहे थे। वह मन ही मन कुछ सोच रहा था। दोनों व्यक्ति इटालियन चित्रकारों के चित्रों की लम्बी वीथि से होते हुए बाईं तरफ एक छोटे कमरे में मुड़ गए, जिसमें कुछ और इटालियन चित्र थे। वीथि से चलते हुए न्यूमैन ने चित्रों को देखना जारी रखा था। जब वे दोनों छोटे कमरे में पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि वहां बहुत कम लोग हैं, लेकिन सामने के कोने में मदामाजेल नियोशे बैठी चित्र बना रही हैं। उस समय वे कुछ काम नहीं कर रही थीं; उनकी रंगों की प्लेट और ब्रश बगल में रखे हुए थे और उन्होंने दोनों हाथ बांधकर अपने सामने रख लिए थे और वे कुर्सी पर पीछे की ओर सहारा लेकर बैठी थीं। मदामाजेल नियोशे हॉल के दूसरी तरफ खड़ी दो महिलाओं को देख रही थीं, जिनकी वहां से केवल पीठें ही दिखाई पड़ रही थीं। वे दोनों महिलाएं एक चित्र को देख रही थीं। उनको देखने से ऐसा लगता था कि वे बड़ी फैशनेबल हैं। उनके कपड़े बड़े शानदार थे और उनके परिधान के लम्बे रेशमी हिस्से कमरों के चमकते हुए फर्श पर नीचे की तरफ गिर रहे थे। मदामाजेल नोएमी इन औरतों के कपड़ों को देख रही थीं, हालांकि मैं यह कहने में असमर्थ हूं कि वे क्या सोच रही थीं। मेरा अनुमान है कि वे यह सोच रही थीं कि चमकते हुए फर्श पर इतने बढ़िया कपड़े पहनने की सुविधा किसी भी मूल्य पर प्राप्त करनी चाहिए। कुछ भी हो, उनके विचारों मे न्यूमैन तथा वेलेन्तीन के आने

से बाधा पड़ी। मदामाजेल नोएमी ने जल्दी से उन लोगों की तरफ देखा और फिर उनका चेहरा कुछ गुलाबी हो गया। वे तुरन्त अपने चित्र के सामने उठकर खड़ी हो गईं।

"मैं यहां विशेष उद्देश्य से आपसे मिलने आया हूं," न्यूमैन ने टूटी-फूटी फ्रेंच में कहा और मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। और इसके बाद एक भले अमरीकी की तरह उसने औपचारिक रूप से वेलेंतीन का परिचय कराया। "मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं आपका काप्त वेलेंतीन द बेलगार्द से परिचय करा दूं।"

वेलेंतीन ने मदामाजेल नोएमी को जिस तरह झुककर अभिवादन किया, उससे उसे पता चल गया होगा कि जो शिष्टाचार बेलगार्द ने दिखाया है, वह उनकी प्रभावित करनेवाली उपाधि के अनुकूल ही है, लेकिन मदामाजेल ने जिस तरह से उसका संक्षिप्त उत्तर दिया, उससे यह छिपा न रहा कि वे काफी आश्चर्यान्वित है। वे मुड़ीं और उन्होंने अपने रूखे नाज़ुक बालों पर हाथ फेरा। इसके बाद तेज़ी से अपने चित्र की ओर पलटकर उसे 'ईजल' पर उलट दिया। "आप मुझे भूले नहीं?" उन्होंने पूछा।

"मैं आपको कभी नहीं भूलूंगा," न्यूमैन ने कहा, "इसका आप विश्वास रखिए।"

"ओह," नवयुवती ने कहा, "आदमी को याद करने के बहुत-से ढंग हैं।" और उन्होंने वेलेंतीन द बेलगार्द को देखा। बेलगार्द स्वयं मदामाजेल नोएमी को एक ऐसे व्यक्ति की तरह देख रहा था, जिसे किसीके बारे में राय देने के लिए कहा गया हो।

"क्या आपने मेरे लिए कोई चित्र बनाया?" न्यूमैन ने पूछा, "क्या आपने इधर काफी काम किया है?"

"नहीं, मैंने कुछ नहीं किया।" और उसने अपनी रंग की प्लेट उठाकर बिना कुछ सोचे-समझे अंदाज़ से रंग मिलाने शुरू कर दिए।

"लेकिन आपके पिता ने तो मुझे बतलाया कि आप यहां नियमित रूप से आती रही हैं।"

"मैं और कहीं जा ही नहीं सकती थी! कम से कम सारी गर्मियों-भर इस जगह ठण्डक तो थी।"

उसने इधर-उधर रंग-लगे 'कैनवेस' को रख दिया और अपने मुंह से 'किट्' की की आवाज़ करते हुए भौंहें कुछ ऊपर चढ़ा लीं तथा न्यूमैन की ओर देखा।

"आपने अपने पिछले कुछ महीने किन-किन स्थानों में बिताए ?" मदामाजेल नोएमी ने हमारे नायक से पूछा, "आपने खूब यात्राएं कीं और यात्राओं में खूब आनन्द प्राप्त किया न ?"

"ओह, हां," न्यूमैन ने कहा, "मुझे काफी आनन्द मिला।"

"मुझे बड़ी खुशी है।" मदामाजेल नोएमी ने अत्यंत शिष्टता से कहा, और फिर रंग मिलाने शुरू कर दिए। उसके चेहरे से गहरी सहानुभूति प्रकट हो रही थी और इस कारण वह बड़ी सुन्दर लग रही थी।

वेलेंतीन ने नोएमी की निगाहों के नीचे रहने का फायदा उठाते हुए अपने साथी की ओर आंख से फिर कुछ संकेत किया। इसके साथ ही हवा में अपनी उंगलियां घुमाते हुए जल्दी-जल्दी कुछ इशारा भी किया। ज़ाहिर था, मदामाजेल नोएमी उसे बड़ी दिलचस्प लग रही थीं; नीले वस्त्र पहने जो महिलाएं सामने खड़ी थीं, वे अब तक जा चुकी थीं और सामने का हिस्सा बिलकुल साफ था।

"आप अपनी यात्राओ के अनुभव बताइए।" नवयुवती ने धीरे से पूछा।

"ओह, मैं स्विट्ज़रलैंड गया—वहां से जिनेवा, जरमाट और ज्यूरिख तथा अन्य बहुत-से नगरों में गया, जिनके नाम आपने सुन रखे होंगे ; इसके बाद वेनिस गया और वहां से जर्मनी पहुंचा और सारा देश देखा। और फिर राइन नदी के साथ-साथ यात्रा करता हुआ हालैंड और बेल्जियम गया और इस तरह पूरा चक्कर लगाया। पूरे चक्कर को आप फ्रेंच में क्या कहते हैं ?" न्यूमैन ने वेलेंतीन से पूछा।

मदामाजेल नोएमी ने एक क्षण के लिए बेलगार्द की ओर देखा और फिर कुछ मुस्कराकर कहा, "मै मोंश्यू की बात समझ नहीं पाई हूं," उसने कहा, "खास तौर से जब वे इतनी सारी बातें एकसाथ कह गए है। क्या आप कृपा करके उनकी बातों का अनुवाद कर देंगे ?"

"इसके बजाय तो मै अपने मन से ही आपसे बातें करना शुरू कर दूंगा।" वेलेंतीन ने एलान किया।

"नहीं," न्यूमैन ने गम्भीरता से अपनी टूटी-फूटी फ्रेंच मे कहा, "आपको मदामाजेल नोएमी से बात नहीं करनी चाहिए, क्योकि आप उन्हें निरुत्साहित

करते हैं। आपको उन्हें यह बताना चाहिए कि वे काम करें—दृढ़ता से प्रयत्न करें।"

"और देखिए मदामाजेल, हम फ्रेंच लोगों को," वेलेंतीन ने कहा, "फिर भी झूठी तारीफ करने का दोषी ठहराया जाता है।"

"मैं किसी तरह की खुशामद नहीं चाहती, मैं केवल सचाई जानना चाहती हूं। लेकिन मैं खुद भी सचाई जानती हूं।"

"मैं केवल इतना ही कहता हूं कि मुझे सन्देह है कि आप चित्रकारिता की बजाय इससे कुछ अधिक अच्छा काम कर सकती है," वेलेंतीन ने कहा।

"मैं सचाई जानती हूं—मैं सचाई जानती हूं," मदामाजेल नोएमी ने अपनी बात दोहराई। और फिर लाल रंग में अपना ब्रश डुबोकर उन्होंने उसे अपूर्ण चित्र के एक कोने से दूसरे कोने तक फेर दिया।

"यह क्या है?" न्यूमैन ने पूछा।

बिना जवाब दिए मदामाजेल नोएमी ने इसके बाद फिर लाल रंग का ब्रश दूसरे कोने से चित्र के बीच के हिस्से तक फेर दिया और इस तरह एक क्षण के अन्दर क्रॉस का निशान बना दिया। "यह सत्य का चिह्न है," अन्त में वे बोलीं।

दोनों व्यक्तियों ने एक-दूसरे की ओर देखा और आंखों ही आंखों में वेलेंतीन ने अपनी बातें कह दीं। "आपने चित्र खराब कर दिया," न्यूमैन ने कहा।

"यह मैं अच्छी तरह जानती हूं। मुझे ऐसा ही करना चाहिए था। मैं सारे दिन इसको बिना छुए इसी तरह देखती रही थी और मुझे इससे चिढ़ हो चली थी। मुझे लग रहा था कि कुछ होनेवाला है।"

"मुझे यह चित्र अब पहले से कहीं ज़्यादा अच्छा लग रहा है," वेलेंतीन ने कहा, "अब यह ज़्यादा दिलचस्प हो गया है। ऐसा लग रहा है, कि यह चित्र कोई कहानी कह रहा है। आप इसे बेचेंगी।"

"मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब बेचने के लिए है," मदामाजेल नोएमी ने कहा।

"इसका क्या लीजिएगा?"

"दस हज़ार फ्रांक," नवयुवती ने बिना मुस्कराए कहा।

"इस समय जो कुछ भी मदामाजेल नोएमी बना रही हैं, वह पहले से ही मेरी

सम्पत्ति है," न्यूमैन ने कहा, "यह सब कुछ मेरे उस आर्डर का अंश है, जो मैंने कुछ महीने पहले दिया था। इसलिए आप इसे नहीं खरीद सकते।"

"मोंश्यू का इससे कोई नुकसान नहीं होगा," नवयुवती ने वेलेंतीन की ओर देखते हुए कहा। और उसने ब्रश आदि एकत्रित करने शुरू कर दिए।

"मुझे एक बड़ा आकर्षक स्मृति का चिह्न मिल जाता," वेलेंतीन ने कहा, "क्या आप जा रही हैं? दिन का काम खत्म हो गया?"

"मेरे पिता मुझे लेने आ रहे हैं," मदामाजेल नोएमी ने कहा।

अभी मदामाजेल नोएमी ने अपनी बात खत्म भी नहीं की थी कि उनके पीछे के दरवाज़े से मो० नियोशे घुसते दिखलाई पड़ने लगे। यह दरवाज़ा लूव्र संग्रहालय की सफेद बड़ी सीढ़ियों की तरफ खुलता था। मो० नियोशे हमेशा की तरह धीरे-धीरे चले आ रहे थे और उन्होंने देखते ही दोनों व्यक्तियों को झुककर अभिवादन किया, जो उनकी पुत्री के चित्र के सामने खड़े थे। न्यूमैन ने मैत्रीभाव से हाथ मिलाया और वेलेंतीन ने भी अभिवादन का उत्तर बड़े आदर से दिया। वृद्ध महाशय खड़े-खड़े इस बात का इंतज़ार करने लगे कि नोएमी अपना सामान इकट्ठा कर ले और बांध ले। इस बीच उन्होंने कुछ बचाकर हलकी-सी नज़र बेलगार्द पर डाली, जो मदामाजेल नोएमी को बोनेट लगाते और लबादा पहनते देख रहा था। वेलेंतीन यह छिपा नहीं रहा था कि उसकी निगाह बराबर नोएमी पर है। वह इस सुन्दर लड़की को ठीक उसी तरह देख रहा था, जिस तरह किसी प्रिय संगीत का रिकार्ड बड़े ध्यान से सुनता। हर दशा में पूरा ध्यान देना अच्छे शिष्टाचार का तकाज़ा था। अन्ततः मो० नियोशे ने एक हाथ में अपनी पुत्री का पेंट बाक्स उठा लिया और दूसरे हाथ में गम्भीरता तथा कुछ उलझन भरी नज़रों से कटे हुए चित्र को उठा लिया। इसके बाद वे दरवाज़े की ओर बढ़ गए। मदामाजेल नोएमी ने डचेस की तरह दोनों युवकों का अभिवादन किया और अपने पिता के पीछे-पीछे चली गईं।

"तो कहिए जनाब," न्यूमैन ने पूछा, "क्या ख्याल है आपका इनके बारे में?"

"बड़ी विलक्षण लड़की है। बहुत ही विलक्षण!" मो० द बेलगार्द ने सोचते हुए कहा, "वाकई बहुत विलक्षण लड़की है।"

"मुझे भय है कि यह बड़ी दुखी और दुस्साहसी युवती है," न्यूमैन ने कहा।

"इसे आप मामूली लड़की न समझिएगा—यह बड़ी विलक्षण लड़की है।

भगवान ने इसे वैसे ही गुण भी दिए हैं ।" और वेलेंतीन ने धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू कर दिया। वह निरर्थक दृष्टि से दीवार पर लगे चित्रों को देख रहा था, लेकिन उसकी आंखों में चिन्तन की झलक थी। वह सोच रहा था कि मदामाजेल नोएमी में जितने गुण हैं, उनको देखते हुए भविष्य में उसे कैसे-कैसे अनुभव होंगे। वेलेंतीन के लिए यह कुछ कम दिलचस्पी की बात न थी। वह कह रहा था, "यह लड़की बहुत विलक्षण है और बहुत सुन्दर भी है।"

"सुन्दर भी ? क्या मतलब है तुम्हारा ?" न्यूमैन ने पूछा।

"मेरा मतलब कलात्मक दृष्टि से। वह स्वयं कलापूर्ण है—इसलिए नहीं कि वह चित्र बनाती है। चित्र तो उसके बड़े घिनौने होते हैं।"

"लेकिन वह सुन्दर तो नहीं है। मुझे तो वह बहुत अच्छी भी नहीं लगती।"

"अपने उद्देश्यों की दृष्टि से वह काफी अच्छी है और उसके चेहरे तथा आकृति पर सब बात निर्भर करती है। अगर वह और ज़्यादा सुन्दर होती, तो अब की अपेक्षा कम बुद्धिमान होती और उसकी बुद्धिमत्ता ही उसका आधा आकर्षण है।"

"किस तरह ?" न्यूमैन ने पूछा, जो मदामाजेल नोएमी के बारे में अपने साथी द्वारा दार्शनिक ढंग से व्यक्त किए जानेवाले विचारों में रुचि लेने लगा था। "क्या वह तुम्हें बड़ी बुद्धिमती लग रही है ?"

"उसने अपने जीवन के उद्देश्य को समझ लिया है और यह तय कर लिया है कि वह कुछ बनेगी—वह किसी भी मूल्य पर सफलता प्राप्त करेगी। निस्सन्देह चित्रकारिता तो उसने समय काटने के लिए अपना ली है। वह अपने लिए अवसर की प्रतीक्षा कर रही है। मौका देखते ही वह उसका फायदा उठाएगी और उसने फायदा उठाने का पूरा फैसला कर रखा है। वह अपने नगर पेरिस को भली भांति जानती है। जहां तक महत्त्वाकांक्षा का सम्बन्ध है, आपको पचास हज़ार महत्त्वाकांक्षी लड़कियां पेरिस में मिल जाएंगी और नोएमी भी उनमें से एक है; लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि उस जैसी दृढ़ निश्चयी और क्षमता वाली लड़की मुश्किल से ही मिलेगी। उसमें एक और गुण है—और यह गुण है पूर्ण हृदय-हीनता। मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि इसमें उसे कोई हरा नहीं सकता। सहृदयता जैसी कोई चीज़ लेशमात्र भी उसमें नहीं है। यह बड़ा ज़बर्दस्त गुण है। हां, निश्चय ही यह लड़की भविष्य में बहुत बड़ी बनेगी।"

"ईश्वर ख़ैर करे !" न्यूमैन ने कहा, "यह कलात्मक दृष्टिकोण भी आदमी को

कहां से कहां ले जा सकता है ! लेकिन इस मामले में मेरा आपसे अनुरोध है कि आप बहुत ज़्यादा आगे न बढ़िएगा। आपने पन्द्रह मिनट के अन्दर ही मदामाजेल नोएमी के बारे में बहुत सारी सूचना इकट्ठी कर ली है। इतनी ही काफी है ; अपने अनु-सन्धान-कार्य को आगे जारी रखने की ज़रूरत नहीं है।"

"मेरे प्यारे भाई," बेलगार्द ने मित्रता के उत्साह के ज़ोर में कहा, "मुझमें भी कुछ शिष्टता है, मैं दूसरों के मामले में दखलन्दाज़ी नहीं करता।"

"आप कोई दखलन्दाज़ी नहीं कर रहे हैं। जहां तक इस लड़की का सम्बन्ध है, मेरा इससे कोई सम्बन्ध नही है। सच तो यह है कि मैं इससे खुश नहीं हूं। लेकिन मुझे इसके बूढ़े पिता पर बड़ा तरस आता है और उन्हीकी खातिर मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप अपने सिद्धान्तों को और अधिक लागू करने की कोशिश न करें।"

"क्या उन बूढे महाशय के लिए, जो उसे लेने आए थे ?" वेलेंतीन प्रश्न करते-करते चुप हो गया। और न्यूमैन के 'हां' कहने पर उसने कहा, "आह, नहीं," और वह मुस्कराता हुआ बोला, "तो आप बिलकुल गलत हैं भाई जान ; आप उनके बारे में कोई फिक्र न करें।"

"अब मेरा पक्का विश्वास हो गया है कि शायद अब आप उन बूढ़े सज्जन पर यह आरोप लगानेवाले हैं कि वे अपनी पुत्री की इज़्ज़त लुटाकर प्रसन्न होंगे।"

"अधम," वेलेंतीन ने कहा, "कौन है वह ? क्या है वह ?"

"वह वही हैं, जो देखने में लगते हैं। गरीब हैं, लेकिन बड़े सुसंस्कृत।"

"बिलकुल ठीक, मैंने उनको बिलकुल ठीक समझा है ; आप विश्वास रखिए मैं उनके बारे में बिलकुल न्याय करूंगा। उन्होंने व्यापार में नुकसान उठाया है। वे काफी निराश हैं और यह लड़की उनके लिए बहुत बड़ी समस्या है। इज़्ज़त और मान-सम्मान के लिए जान देते हैं, और पिछले साठ वर्षो से ईमानदार रहने का ढोल पीटते रहे हैं। यह सब मैं खूब अच्छी तरह समझ सकता हूं। लेकिन मैं अपने साथी पेरिसवासी नागरिकों से खूब अच्छी तरह परिचित हूं और मैं आपसे शर्त लगाने को तैयार हूं।"

न्यूमैन वेलेंतीन की बात सुनने के लिए तैयार हो गया और वेलेंतीन ने अपना कहना जारी रखा, "इसमें शक नहीं कि वह अपनी पुत्री को दुश्चरित्रा की बजाय सच्चरित्रा देखना पसन्द करेगा, लेकिन अगर दुर्भाग्यवश, जैसा वह चाहता है, वैसा

न हो सके, तो यह वृद्ध वह नहीं करेगा, जो वर्जीनस ने किया था। सफलता मिले तो कुछ भी बुरा नहीं है। अगर मदामाजेल नोएमी बहुत बड़ी स्त्री बन जाती है, तो उनके पिता महसूस करेंगे—मेरा ख्याल है वे राहत महसूस करेंगे। और नोएमी बहुत बड़ी और प्रसिद्ध स्त्री बनेगी। वृद्ध महाशय का भविष्य सुरक्षित है।"

"मैं नहीं जानता कि वर्जीनस ने क्या किया था, लेकिन इतना तय है कि मो० नियोशे अपनी पुत्री नोएमी को गोली मार देंगे," न्यूमैन ने कहा, "और इसके बाद मेरा ख्याल है कि उनका भावी जीवन जेल में बीतेगा।"

"मैं सनकी नहीं हूं ; मैं तो केवल प्रेक्षक हू," वेलेंतीन ने जवाब दिया, "मदामाजेल नोएमी मुझे दिलचस्प लगीं ; यह लड़की विलक्षण है। अगर किसी कारणवश उसे सम्मान या शिष्टता के नाते मुझे उसे बिलकुल भुला देना पड़ा, तो मैं इसके लिए बिलकुल तैयार हूं और जब तक यह बात गलत साबित नहीं होती, तब तक आपका उनके पिता के प्रति जो सम्मान का भाव है, उसे देखते हुए मैं इस बारे में कुछ नहीं सोचूंगा। मैं आपसे वादा करता हूं कि जब तक आप मुझे यह न बताएंगे कि आपकी राय नोएमी के पिता के बारे में बदल गई है, तब तक मै इस लड़की से दुबारा नहीं मिलूंगा। लेकिन जब वे आपको अपने दार्शनिक होने का पूरा प्रमाण दे दें, तो आप अपनी रोक मुझपर से उठा लीजिए। बोलिए राज़ी हैं इसपर?"

"तो क्या आप उन्हें रिश्वत देंगे?"

"ओह, तो आप यह स्वीकार करते है कि उन्हें रिश्वत दी जा सकती है? नहीं, वे बहुत ज्यादा मांगेंगे और वह मांग उचित नहीं होगी। मैं केवल प्रतीक्षा करूंगा। मेरा ख्याल है कि इस बीच आप तो इन दोनों से मिलते ही रहेंगे और आपसे इन दिलचस्प लोगों की खबर मुझे मिलती ही रहेगी।"

"जो हो," न्यूमैन ने कहा, "अगर वृद्ध महाशय बिलकुल बेकार आदमी साबित हुए, तो आपकी जो मर्ज़ी आए कीजिएगा। मैं फिर कुछ न बोलूंगा। जहां तक लड़की का सवाल है, आप निश्चिन्त रहिए। मुझे पता नहीं कि वह मेरा क्या नुकसान कर सकती है, लेकिन इतना तय है कि मैं उसका कोई नुकसान नहीं करूंगा। मुझे लगता है," न्यूमैन ने कहा, "कि आप दोनों ठीक रहेंगे। दोनों ही बड़े कठिन व्यक्ति हैं और मैं तथा मो० नियोशे, मेरा ख्याल है, दो ही ऐसे आदमी हैं, जिन्हें पेरिस-भर में सज्जन कहा जा सकता है।"

इसके कुछ ही देर बाद मो० द बेलगार्द को अपने इस पाप के बदले किसीने

पीछे से एक छड़ी-सी जोर से चुभाई। उन्होंने जल्दी से मुड़कर पीछे देखा तो पता लगा कि यह छड़ी हरा बोनेट पहने एक महिला के छाते का निचला हिस्सा था। वेलेंतीन की अंग्रेज़ ममेरी बहन बिना गाइड के इधर-उधर चक्कर लगा रही थीं और स्वाभाविक था कि वे शिकायत करतीं। न्यूमैन वेलेंतीन को उनकी दया पर छोड़कर, इस विश्वास के साथ कि वेलेंतीन अपनी पैरवी बड़ी मज़बूती से कर लेगा, रवाना हो गया।

बारह

मदाम द सान्त्रे के परिवार के लोगो से परिचय होने के तीन दिन बाद एक दिन घर वापस लौटने पर शाम को अपनी मेज़ पर न्यूमैन को मारक्विस द बेलगार्द का कार्ड मिला। इसके दूसरे दिन उसे एक पत्र मिला, जिसमें मारक्विस द बेलगार्द ने यह लिखा था कि अगर न्यूमैन उनके घर डिनर पर आएं, तो वे अपने-आपको बड़ा सम्मानित अनुभव करेंगे।

न्यूमैन, निस्संदेह, उनके यहां गया लेकिन उसे ऐसा करने के लिए अपने पूर्व-निश्चित एक कार्यक्रम को रद्द करना पड़ा। उसे सीधे उस कक्ष में ले जाया गया, जिसमें मदाम द बेलगार्द पहले मिल चुकी थी और यहां उसने देखा कि वृद्धा मेज़बान अपने सारे परिवार से घिरी बैठी हुई हैं। कमरे में केवल आतिशदान में जल रही आग की ही रोशनी थी। इस रोशनी में एक महिला के गुलाबी स्लीपर चमक रहे थे और यह महिला एक छोटी-सी कुर्सी पर आग की तरफ अपने पैर किए बैठी थीं। यह महिला वेलेंतीन की भाभी थी। मदाम द सान्त्रे कमरे के दूसरे कोने में एक छोटी-सी बच्ची को अपने घुटनों के सहारे पकड़े बैठी थी। यह उनकी भतीजी तथा बड़े भाई अरबेन की लड़की थी। स्पष्ट था कि वे उसे कोई बड़ी दिलचस्प और आश्चर्यजनक कहानी सुना रही थी। वेलेंतीन एक गद्देदार स्टूल पर अपनी भाभी के पास बैठा था और उनसे हसी-मज़ाक कर रहा था। मारक्विस स्वयं आतिशदान के सामने खड़े थे। उनका सिर सीधा और तना हुआ था तथा हाथ पीछे थे, और वे इस तरह खड़े थे, जैसे किसी औपचारिक घटना की प्रतीक्षा कर रहे हों।

वृद्धा मदाम द बेलगार्द न्यूमैन का स्वागत करने के लिए उठ खड़ी हुईं। लेकिन उन्होंने यह काम इस तरह किया, जिससे प्रकट होता था कि उनके अभिमान में कोई कमी नहीं आई थी। "आप देख ही रहे हैं कि आज हम लोग बिलकुल अकेले है, और किसीको हमने निमन्त्रित नहीं किया।" उन्होंने कुछ रूखेपन से कहा।

"मुझे बड़ी खुशी है कि आपने और किसीको निमन्त्रित नहीं किया ; अब हम लोग और ज़्यादा अच्छी तरह मिल-जुल सकेंगे, बातचीत कर सकेंगे," न्यूमैन ने उत्तर दिया। "गुड इवनिंग सर !" और उसने मारक्विस से हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ा दिया।

मो० द बेलगार्द बाह्य रूप से सौजन्य प्रकट कर रहे थे, परन्तु अपनी इस गरिमा के बावजूद मन ही मन बड़े बेचैन थे। उन्होंने कमरे में इधर से उधर घूमना शुरू कर दिया। कभी वे बड़ी-बड़ी खिड़कियों के बाहर देखते, तो कभी वे किताबें उठाकर फिर उन्हें यथास्थान रख देते। वेलेंतीन की भाभी ने न्यूमैन को अपना हाथ, बिना हिले और बिना उनको देखे, दे दिया।

"शायद आपको लगे कि यह आपका स्वागत नहीं कर रही हैं," वेलेंतीन ने स्पष्ट किया, "लेकिन ऐसा नहीं है। यह इनकी सहृदयता है। इससे प्रकट होता है कि वे आपको घनिष्ठ व्यक्ति मानती है। हालांकि अब देख लीजिए, ये मुझसे घृणा करती हैं, लेकिन आप पाएंगे कि हमेशा मुझे ही देखती रहती हैं।"

"कोई आश्चर्य नहीं है कि आपको न चाहते हुए भी मैं हमेशा देखती रहती हूं !" महिला ने कहा, "अगर मि० न्यूमैन को मुझसे हाथ मिलाने का यह ढंग पसन्द न आया होगा, तो मैं उनसे फिर हाथ मिला लूंगी।"

लेकिन यह आकर्षक प्रस्ताव व्यर्थ सिद्ध हुआ, क्योंकि हमारे नायक कमरे के दूसरे कोने में बैठे हुए मदाम द सान्त्रे की ओर चल दिए थे। उन्होंने हाथ मिलाते हुए न्यूमैन की तरफ देखा, लेकिन वह कहानी कहना जारी रखा, जिसे वे अपनी छोटी-सी भतीजी को सुना रही थीं। उन्हें केवल दो या तीन वाक्य और कहने थे, लेकिन ज़ाहिर था कि वे बड़े महत्त्व के थे। उन्होंने अपनी आवाज़ को और गहरा कर लिया, वात कहते-कहते मुस्कराने लगीं और छोटी लड़की अपनी गोलमटोल आंखों से बुआ की तरफ देखती रही।

"लेकिन अन्त में राजकुमार ने सुन्दरी फ्लोराबेला से विवाह कर लिया,"

मदाम द सान्त्रे ने कहा, "और उसे लेकर वह गुलाबी आसमान के देश में रहने चला गया। नये देश में आकर वह इतनी खुश हुई कि अपनी सारी तकलीफों को भूल गई और हर रोज़ हाथीदांत की गाड़ी में बैठकर, जिसे पांच सौ सफेद चूहे खींचते थे, सैर करने जाने लगी। बेचारी फ्लोराबेला ने," उन्होंने न्यूमैन को बताया, "बड़े कष्ट झेले थे।"

"उसने छः महीने तक कुछ नहीं खाया था," नन्ही ब्लैंश ने कहा।

"हां, लेकिन जब छः महीने पूरे हो गए, तो उसे खाने के लिए खूब बड़ा-सा केक, कोच जितना बड़ा केक मिला था।" मदाम द सान्त्रे ने कहा।

यह खाकर वह फिर ठीकठाक हो गई।"

"क्या शानदार जीवन था!" न्यूमैन ने कहा, "क्या आपको बच्चे बहुत प्रिय हैं?" उसे पता था कि मदाम द सान्त्रे को बच्चों से बड़ा प्रेम है फिर भी न्यूमैन चाहता था कि यह बात वे अपने मुंह से स्वयं कहें।

"मुझे उनसे बातें करना बड़ा अच्छा लगता है," मदाम द सान्त्रे ने जवाब दिया," हम लोग बड़े लोगों की बजाय बच्चों से कही अधिक गम्भीरता से बातें कर सकते हैं। जो कहानी ब्लैश को मैंने अभी सुनाई, वह भले ही निरर्थक हो, लेकिन जो बातें हम लोग सामाजिक बैठकों मे करते है उनसे यह कहीं अधिक गम्भीर है।"

"तो मैं यह चाहूंगा कि आप मुझसे उसी तरह बात करें जैसे ब्लैंश की आयु जितनी ही मेरी आयु है," न्यूमैन ने हंसते हुए कहा, "अच्छा उस दिन आप 'बॉल' में खूब खुश तो रहीं न?"

"बहुत खुश रही!"

"अब आप मुझसे उसी तरह की बेकार की बात कर रही हैं, जैसी लोग सामाजिक बैठकों में करते हैं," न्यूमैन ने कहा, "मैं विश्वास नहीं करता कि आप वहां जाकर बहुत खुश हुईं।"

"अगर मैं वहां जाकर खुश नहीं हुई तो यह मेरी अपनी गलती थी। बॉल बड़ा सुन्दर था और हर व्यक्ति बड़ा मधुर।"

"आपका दिल तो घर पर चलने के वक्त से ही भारी था," न्यूमैन ने कहा, "इस बात से कि आपने अपनी मां और भाई को नाराज़ कर दिया।"

मदाम द सान्त्रे ने बिना कुछ जवाब दिए एक क्षण के लिए न्यूमैन की तरफ देखा। "यह सच है," अन्त में मदाम ने उत्तर दिया, "ने अपने सिर ज़रूरत से ज्यादा

बोझा ले लिया था, मैं इसे संभाल नहीं सकती थी। मुझमें हिम्मत नाम की चीज़ बहुत कम है ; मैं 'हीरोइन' नहीं हूं।" यह बात मदाम ने कोमलता से लेकिन जोर देकर कही। लेकिन तभी उन्होंने अपना स्वर बदल दिया, "सुन्दरी फ्लोराबेला ने जो तकलीफें उठाई वे कष्ट मैं कभी नहीं झेल सकती," उन्होंने कहा, "उन शुभ परिणामों के लिए भी नहीं जो अन्त में हुए।"

डिनर लग जाने का एलान हुआ और न्यूमैन वृद्धा मदाम द बेलगार्द की बगल में जा बैठा। डाइनिंग रूम ठण्डे बरामदे के अन्त में था। यह बहुत बड़ा और भव्य कक्ष था। डिनर सादा था,लेकिन हर चीज़ बड़ी स्वादिष्ट थी। न्यूमैन सोच रहा था कि इन चीज़ों के बनाए जाने के सम्बन्ध में मदाम द सान्त्रे का कुछ हाथ भी ज़रूर होगा और उन्हें बड़ी आशा थी कि अन्त में यही बात निकलेगी। एक बार मेज़ पर बैठ जाने के बाद न्यूमैन ने देखा कि वह इस प्राचीन परिवार के सदस्यों के बीच बैठा हुआ है और वह मन ही मन अपनी स्थिति के बारे में प्रश्न करने लगा। क्या वृद्धा यह चाह रही हैं कि मैं मदाम द सान्त्रे से और मिलूं-जुलूं? यह तथ्य कि मैं यहां एकमात्र मेहमान हूं, मेरी विशेष स्थिति का द्योतक है या इससे मेरा सम्मान कम हुआ है ? क्या ये लोग मुझे अन्य व्यक्तियों से मिलाने में लज्जा अनुभव करते हैं या वे यह दिखाना चाहते हैं कि मुझे परिवार के सदस्य के रूप में ग्रहण कर लिया है ? न्यूमैन बराबर सावधान था। वह हर चीज़ पर निगाह रखे था और सोचता भी जा रहा था ; लेकिन साथ ही वह उदासीनता भी दिखला रहा था। चाहे अब ये लोग मुझे स्वतंत्रता दें या न दें, मैं परिवार में हूं और मदाम द सान्त्रे ठीक उसके सामने बैठी हैं। उनके दोनों ओर एक-एक बड़ी मोमबत्ती रखी थी ; और अब वे एक घण्टे तक मेरे सामने बैठेंगी, इतना काफी है। डिनर बड़ी गम्भीरता से और नपे-तुले ढंग से हुआ। वह सोचने लगा कि क्या 'पुराने ढंग के परिवारों' में हमेशा ऐसा ही होता है ? वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने काफी शान से अपना सिर ऊंचा कर रखा था और उनकी आंखें बराबर एक जगह टिकी हुई थीं। इनसे उनके छोटे-से हलके झुर्रियों वाले सफेद चेहरे पर विशिष्ट ढंग की तेज़ी-सी थी। वे बराबर यह देख रही थीं कि मेज़ पर खाने की चीज़ें किस तरह आ रही हैं। मारक्विस ने, ऐसा लगता है कि यह तय कर लिया था कि ललित-कलाओ के बारे में बात-चीत करना सबसे ज्यादा सुरक्षित होगा, क्योंकि इनमें किसी ऐसी व्यक्तिगत बात के खुलने की सम्भावना नहीं है, जिससे लोग चौंक उठें। कभी-कभी न्यूमैन से

यह जानकर कि वह यूरोप के सभी कला-संग्रहालयों को देख चुका है, वे कोई अत्यन्त परिष्कृत सूत्र कह देते, जिसका सम्बन्ध रूबां के रंगों या सांसोवीनो की (कलात्मक) सुरुचि से होता था। उनकी बातों से यह प्रकट होता था कि अगर बहुत ही परिष्कृत और श्रेष्ठ ढंग की बातचीत न की गई, तो कोई अप्रिय घटना हो जाएगी। 'इस आदमी को दुनिया की किस बात से भय लग रहा है ?' न्यूमैन ने मन ही मन जिज्ञासा की। 'क्या यह आदमी यह सोच रहा है कि मैं इससे चाकू फेंकने की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कहूंगा ?' इस बात से आंखें नहीं मूंदी जा सकती थीं कि मारक्विस न्यूमैन के प्रति अत्यन्त अप्रिय ढंग से व्यवहार कर रहा था। न्यूमैन को कभी किसी व्यक्ति से चिढ़ नहीं रही थी और उसका स्वभाव कभी भी अपने पड़ोसियों के रहस्यमय गुणों की दया पर निर्भर नहीं रहा था। लेकिन पता नही क्यों मारक्विस की उपस्थिति से उसे बड़ी बेचैनी अनुभव हो रही थी। इस आदमी की हर बात कृत्रिम थी। रूप, वार्तालाप, मुद्राएं, सभी कुछ। ऐसा लगता था कि यह कभी भी अशिष्टता कर सकता है और कहीं भी धोखा दे सकता है। मो० द बेलगार्द को देखकर न्यूमैन को ऐसा महसूस हो रहा था कि वह स्वयं संगमरमर के फर्श पर नंगे पैरों खड़ा है और चूंकि उसे अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त करनी है, इसलिए उसे इस तरह खड़े होने में भी कोई कठिनाई नहीं हो रही। वह सोचने लगा कि अगर उसे स्वीकार कर लिया गया है, तो उसके बारे में मदाम द सान्त्रे क्या सोच रही होंगी ? उनके चेहरे से कुछ भी पता नहीं चलता था ; उनके व्यवहार से केवल इतना ही कृपामय भाव प्रकट हो रहा था जिसकी ओर लोगों का बहुत अधिक ध्यान न जाता। मारक्विस की पत्नी मदाम द बेलगार्द हमेशा की तरह व्यवहार कर रही थीं। उनको देखने से ऐसा लगता था कि वे किसी सोच-विचार में पड़ी हैं, उनका दिमाग कहीं और है। वे हर बात सुन रही हैं, लेकिन वस्तुत: उन्हें कुछ नहीं सुनाई पड़ रहा। वे कभी अपने वस्त्र देखती थीं, तो कभी अपनी अंगूठियां, कभी उंगलियों के नाखून और ऐसा लगता था कि जैसे वे बड़ी ऊब-सी रही हैं और उन्हें देखकर आप इस उलझन में पड़ जाते कि आखिर इनकी सामाजिक मनोरंजन की क्या कल्पना है। न्यूमैन को इस बारे में बाद में पता चला। वेलेंतीन भी ऐसा लगता था कि हमेशा की तरह बातें नहीं कर पा रहा था ; उसे भी बातचीत के उत्साह का ज्वार-सा आता था और यह भी ऐसा लगता था कि वह कुछ विवश होकर बोल रहा है,

लेकिन न्यूमैन ने देखा कि बातचीत बन्द हो जाने पर वह काफी उत्तेजित-सा प्रतीत होता था। उसकी ग्रांखों में गहरी चमक थी। इस सबका परिणाम यह हुआ कि न्यूमैन को अपने जीवन में पहली बार यह महसूस हुआ कि वह अपना आपा खोए दे रहा है। वह हर कदम संभाल-संभालकर उठा रहा था, शब्द गिन-गिनकर बोल रहा था, और उसने निश्चय कर लिया था कि अगर कोई अप्रिय बात हो गई, तथा समय ने तकाजा किया, तो वह उस अप्रिय बात को ज़हर के घूंट की तरह पी जाएगा। किसी भी संकट का सामना कर लेगा।

डिनर के बाद मो० द बेलगार्द ने अपने मेहमान से प्रस्ताव किया कि हम लोग धूम्रपान करने एक दूसरे कक्ष में चलें और इसके बाद वे उसे एक कमरे की तरफ ले चले। यह कमरा कुछ-कुछ दुर्गंधयुक्त था। इसकी दीवारों पर चमड़े की ट्रॉफियां और कुछ जंग-खाए अस्त्र-शस्त्र टंगे थे। न्यूमैन ने सिगार अस्वीकार कर दिया, लेकिन वह एक बड़े दीवान पर बैठ गया। मारक्विस ने आग के सामने बैठ कर सिगार पीना शुरू कर दिया और वेलेंतीन सिगरेट का धुआं छोड़ने लगा। इस धुएं मे से दोनों भाई एक-दूसरे को देख रहे थे।

"मैं अब और अधिक चुप नही रह सकता," आखिर वेलेंतीन ने कहा। "मुझे आपको यह खबर देनी है और बधाई देनी है। ऐसा लगता है कि मेरे भाई असल बात कह नहीं पा रहे हैं; वे उसके चारों तरफ इस तरह घूम रहे हैं, जिस तरह पादरी वेदी के चारों ओर घूमता है। आपको हमारी बहन के लिए उम्मीदवार के रूप में स्वीकार कर लिया गया है।"

"वेलेंतीन, ज़रा तो संभलकर ठीक ढंग से बात करो!" मारक्विस ने बुदबुदाते हुए कहा। उनकी आखों में बड़ी ही नाज़ुक किस्म की झूंझल थी और उन्होंने अपनी नाक कुछ सिकोड़ ली थी।

"घर में इस बारे में विचार-विमर्श हुआ।" वेलेंतीन कह रहा था, "पहले मेरी मां और अरबेन ने आपस में बातचीत की और इसमें मेरी राय भी सुनी गई। मेरी मां और बड़े भाई हरे कपड़े वाली मेज पर बैठे; मेरी भाभी और मैं दीवार के साथ लगी एक बेंच पर थे। ऐसा लग रहा था जैसे विधानमण्डल की किसी समिति में विचार-विमर्श हो रहा हो। हम लोगों को एक-एक करके गवाही देने के लिए बुलाया गया। हम दोनों ने ही आपकी खूब तारीफ की। मेरी भाभी मदाम द बेलगार्द ने कहा कि अगर उन्हें पहले ही नहीं बता दिया गया होता, तो

ायद वे यह समझतीं कि आप कोई ड्यूक हैं—अमरीकी ड्यूक ऑफ कैलि-
ोनिया। मैंने कहा कि आप स्वभाव से अत्यन्त विनम्र, सुशील और सरल हैं। मुझे
श्वास है कि आप हमेशा अपने स्थान का ध्यान रखेंगे और कभी भी इस बात
ा मौका नहीं देंगे कि हम आपको यह याद दिलाएं कि आपमें और परिवार में
छ मौलिक अन्तर है। आखिर अगर आप ड्यूक नहीं हुए, तो इसमें आपका क्या
ष है। आपके देश में ड्यूक होते ही नहीं ; लेकिन अगर अमरीका में भी ड्यूक
ते, तो इसमें शक नहीं, कि जितने चुस्त और सक्रिय आप हैं, उसको देखते हुए
ब आपको कोई न कोई बहुत ही उत्तम उपाधि मिल चुकी होती। इस स्थल
ट मुझे आदेश दिया गया कि मैं चुप होकर बैठ जाऊं, लेकिन फिर भी मेरा
ाल है कि मैने आपके पक्ष को दृढ़ किया है।"

मो० द बेलगार्द ने अपने भाई की तरफ बड़ी ही खूंखार नज़र से देखा और
कू की धार की तरह पतली मुस्कराहट होंठों पर चमक गई। इसके बाद उन्होंने
ने कोट की बाह पर गिरी सिगार की राख को झाड़ते हुए अपनी नज़र कमरे
कार्निश पर जमा दी। अन्त में उन्होंने अपना एक हाथ जाकेट के अन्दर छाती
रख लिया। "मेरे भाई ने अभी जो खेदजनक बाते आपसे कहीं हैं, उनके लिए
आपसे क्षमा मांगता हूं," उन्होंने कहा, "और मैं आपको बता दूं कि शायद यह
तम बार नहीं है, जब आपको इसकी इस तरह की बातों से बड़ा ही अटपटापन
सूस होगा।"

"नहीं, मैं यह मानता हूं कि मुझमें बात कहने की वह कुशलता नहीं है,"
ंतीन ने कहा, "न्यूमैन, क्या आपको वाकई बड़ा अटपटा-सा लग रहा है?
र ऐसा है तो मारक्विस आपको अपनी बातों से स्वस्थ कर देंगे, क्योंकि उनका
र्श बड़ा नाज़ुक होता है।"

"वेलेंतीन ने, मुझे बड़े खेद से कहना पड़ता है," मारक्विस ने अपना कथन
ी रखा, "कभी भी वह व्यवहार, बातचीत का वह ढंग नहीं सीखा, जो इनकी
ाजिक स्थिति वाले युवक का होना चाहिए। इस कारण इनकी मां को बड़ी
मनोव्यथा रही है, जिन्हें प्राचीन परम्पराओं का बड़ा ध्यान है। लेकिन आप
ा यह याद रखिएगा कि इनकी बातें सिवाय इनके और किसीके मत का प्रति-
ात्व नहीं करतीं।"

"ओह, मैं इनकी बातों की परवाह नहीं करता," न्यूमैन ने अपने भले स्वभाव

के अनुसार कहा, "मैं जानता हूं कि इन बातों का क्या मतलब है।"

"पुराने ज़माने में," वेलेंतीन ने कहा, "मारक्विस और काउंतों के यहां विदूषक हुआ करते थे, जो हंसी-मज़ाक करते थे। आजकल के बड़े-बड़े लोकतंत्र-वादी, काउंतों को अपने यहां विदूषक का काम करने के लिए रखते हैं। यह बड़ी मज़ेदार स्थिति है। लेकिन मैं क्या करूं। इस मामले में मैं बड़ा ही पतित हूं।"

मो० द बेलगार्द कुछ देर तक अपनी नज़र फर्श पर गड़ाए रहे। "मेरी मां ने मुझे वह बात बता दी है," उन्होंने कहा, "जो आपने उस दिन संध्या को उनसे कही थी।"

"मैंने यही कहा था कि मैं आपकी बहन से विवाह करने का इच्छुक हूं।" न्यूमैन ने कहा।

"कि आपकी इच्छा है कि आप शादी करें," मारक्विस ने धीरे-धीरे कहा, "और यह शादी मेरी बहन काउंतेस द सान्त्रे से हो। यह प्रस्ताव बड़ा गम्भीर था और मेरी मां ने इसपर बहुत सावधानी से विचार किया। यह स्वाभाविक था कि वे इस सम्बन्ध में मुझसे भी सलाह लेतीं। मैंने भी इस विषय पर पूरी तरह चिन्तन किया। इस मामले में काफी कुछ सोच-विचार करना था; शायद इतनी बातों पर, जिन सबकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। हमने इस सवाल पर हर पहलू से गौर किया। सभी बातों को नापा-तोला और देखा। हम इस निश्चय पर पहुंचे कि हम आपको प्रेम प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। मेरी मां ने यह इच्छा प्रकट की है कि मैं आपको इस निश्चय की सूचना दे दूं। इस मामले में वे स्वयं भी आपसे कुछ शब्द कहेंगी। इस बीच परिवार के पुरुष मुखिया के रूप में हम दोनों आपको स्वीकार करते हैं।"

न्यूमैन उठ खड़ा हुआ और मारक्विस के कुछ और पास आ गया। "आप मेरे मार्ग में कोई बाधा नहीं डालेंगे, यही आपकी सबसे बड़ी सहायता हो सकती है, क्या?"

"मैं अपनी बहन से आपकी सिफारिश करूंगा कि वे आपको स्वीकार कर लें।"

न्यूमैन ने अपने चेहरे पर अपना हाथ फेरा और हाथ से एक क्षण के लिए आंखों को दबा लिया। इन शब्दों का बड़ा महत्त्व था, लेकिन इनका आनन्द इस-लिए कम हो गया था कि यह शब्द मो० द बेलगार्द के मुंह से निकले थे। इस व्यक्ति के न्यूमैन के प्रेम-सम्बन्धों के बीच में आ जाने से उसे बड़ा अप्रिय

ाग रहा था। लेकिन न्यूमैन ने निश्चय कर लिया था कि वह अपनी वांछित च्छा की प्राप्ति के लिए हर प्रकार के कष्ट का सामना करेगा, इसलिए जब यह वक्र चलना आरम्भ हुआ, तो उसने कोई चीख-पुकार नहीं मचाई। वह कुछ देर चुप रहा और फिर उसने कहा, "मैं आपका आभारी हूं।" यह बात न्यूमैन ने बड़े शुष्क ढंग से कही और बाद में वेलेंतीन ने उसे बताया कि यह वाक्य कहते समय उसने बड़ी शान जताई।

"जो वादा आपसे किया गया है, मैंने उसे सुन लिया है," वेलेंतीन ने कहा, "और मैं भी इस वचन का भागीदार हूं।"

मो० द बेलगार्द की नजर फिर कार्निश पर टिक गई ; जाहिर था कि वे कुछ और कहना चाहते थे। "अपनी मां की ओर से मै यह कह दू कि उनके लिए यह फैसला करना कोई आसान बात न थी, मारक्विस ने फिर कहा, "और मेरे लिए भी इस निश्चय पर पहुंचना बड़ा कठिन था। इस तरह के विवाह-सम्बन्ध आम तौर पर होने की आशा नहीं की जाती। हमारी बहन किसी व्यापारी सज्जन से विवाह करे, यह बड़ी ही नई बात है।"

"यह बात तो मै आपको पहले ही बता चुका हूं," वेलेंतीन ने उंगली उठाकर न्यूमैन से कहा।

"अभी भी इसका नयापन समाप्त नहीं हुआ है, मैं यह मानता हूं," मारक्विस कह रहे थे, "शायद पूरी तरह यह अनोखापन कभी भी खत्म नही होगा। लेकिन अन्ततः इसपर किसीको भी दुःख नहीं होगा," और इसके बाद हलकी-सी मुस्कराहट उनके होंठो पर फिर दौड़ गई, "हो सकता है कि हमें यह नई बात करने के लिए कुछ समझौता करना पड़े। वर्षों से हमारे घराने में इस तरह की चीज नहीं हुई है। मैने यह बात अपनी मां को बतला दी थी और उन्होने यह कहा कि इसपर विचार करना आवश्यक है।"

"मेरे प्यारे भाई," वेलेंतीन ने बात काटते हुए कहा, "क्या यहां आपकी स्मृति आपको धोखा नहीं दे रही है ? हमारी मां, क्या मैं कह सकता हूं कि इस तरह के काल्पनिक तर्कों को कोई महत्त्व नही देती हैं ? क्या आपको याद है कि उन्होंने आपकी बात का ठीक उसी तरह से उत्तर दिया था, जिस तरह आपने अभी उसके बारे में बताया है ? आप जानते हैं कि कभी-कभी वे कितना तीखा व्यंग्य करती हैं। क्या उन्होंने यह कहा था कि आपकी बात बेकार की है ! और

इस विवाह-सम्बन्ध के पक्ष में कुछ और ज़्यादा दृढ़ कारण हैं ?"

"हां, अन्य कारणों पर भी विचार हुआ था," मारक्विस ने कहा, लेकिन उन्होंने वेलेंतीन की ओर देखा नहीं। उनका स्वर कुछ भर्राया हुआ था, "कुछ कारण सम्भवतः बेहतर थे। हम लोग बड़े पुराने ख्यालात के लोग है, लेकिन मि० न्यूमैन, हम लोग हठी नहीं हैं। हम लोगों ने इस प्रश्न पर उदारता से विचार किया। इसमें सन्देह नहीं कि प्रत्येक बात आसानी से तय हो जाएगी।"

न्यूमैन हाथ बांधे खड़ा-खड़ा ये बातें सुनता रहा और मो० द बेलगार्द को एकटक देखता रहा। "आसानी से ?" उसने कहा उसके स्वर में उदासीनता थी। "हम लोगों के आराम से न रहने का कोई कारण नही है ? अगर आप आराम से न रह सकें, तो यह आपकी गलती होगी। मेरे पास आराम से जीवन बिताने के सभी साधन हैं।"

"मेरे भाई का मतलब यह है कि कालान्तर में आप भी इस परिवर्तन के अभ्यस्त हो जाएंगे—" और यह कहते-कहते दूसरा सिगरेट जलाने के लिए वेलेंतीन रुक गया।

"कैसा परिवर्तन ?" न्यूमैन ने उसी स्वर में पूछा।

"अरबेन," वेलेंतीन ने गम्भीरता से कहा, "मुझे भय है कि मि० न्यूमैन परिवर्तन की बात को अभी पूरी तरह महसूस नहीं कर पा रहे हैं। हमें यह बात अच्छी तरह समझा देनी चाहिए।"

"मेरे भाई को तिल का ताड़ बनाने की आदत है," मो० द बेलगार्द ने कहा, "अब फिर इनमें वही दोष आ गया। मेरी मां की यह इच्छा है और मेरी भी कि इस तरह की कोई बात आपसे न कही जाए। आपसे प्रार्थना है कि आप भी स्वयं ऐसी कोई बात न कहें। हम यह मान लेना अधिक उचित समझते हैं कि जिस व्यक्ति को हमने अपनी बहन से विवाह के उपयुक्त समझा है, वह हममें से ही एक है और इस बारे में उसे किसी सफाई के देने की जरूरत नहीं है। अगर दोनों ही ओर से थोड़ी समझदारी दिखाई गई, तो मेरा ख्याल है कि हर चीज़ आसानी से सुलझ जाएगी। मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि हम जानते हैं कि हमने क्या करने का फैसला किया है, और आप यह विश्वास रखिए कि हम अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे।"

वेलेंतीन ने हवा में अपने हाथ हिलाए और फिर दोनों हाथों से अपना मुंह

छिपा लिया। "इसमें सन्देह नहीं कि मुझमें बातचीत करने की वह चतुराई नहीं है जो होनी चाहिए, लेकिन ओह, मेरे भाई, काश आप यह जानते कि आप क्या कह रहे हैं !" और वह जोर-जोर से हंसने लगा।

मो० द बेलगार्द का चेहरा कुछ लाल हो गया, लेकिन उनका सिर सीधा तना रहा, इसमें कोई फर्क नहीं आया। ऐसा लगता था, जैसे वह इस प्रकार के हंसने को बिलकुल गलत समझ रहे है। "मुझे विश्वास है कि आपने मेरी बात समझ ली होगी," उन्होंने न्यूमैन से कहा।

"ओह, नहीं, मुझे आपकी बात बिलकुल समझ में नहीं आई," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन आप इसकी चिन्ता न करिए। मुझे भी कोई परवाह नहीं है। सच तो यह है कि मेरे ख्याल से ज्यादा अच्छा यही होगा कि मैं आपकी बात न समझ पाऊं। हो सकता है वह मुझे पसन्द न आए। ऐसी हालत में मुझे वह प्रिय न होगी, यह तो आप समझते ही है। मैं आपकी बहन से बिवाह करना चाहता हूं, मेरा बस इतना ही उद्देश्य है; और यह विवाह मैं जल्दी से जल्दी करना चाहूंगा और इस मामले में मैं किसी प्रकार की त्रुटि न होने देना चाहूंगा। मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि विवाह किस तरह होता है। आप जानते ही हैं कि मुझे आपसे विवाह नही करना है। मुझे आप लोगों की अनुमति मिल गई, और बस मैं इतना ही चाहता था।"

"ज्यादा अच्छा हो कि इस बारे में आप मेरी मां की अनुमति भी प्राप्त कर लें," मारक्विस ने कहा।

"बहुत ठीक है। मैं उनके पास जाकर उनसे भी अनुमति ले लूगा," न्यूमैन ने कहा और वह ड्राइगरूम की ओर जाने की तैयारी करने लगा।

मो० द बेलगार्द ने न्यूमैन को आगे जाने का इशारा दिया और जब न्यूमैन दरवाज़े से बाहर निकल गया, तो उन्होने वेलेंतीन से बात करने के लिए कमरा अन्दर से बन्द कर लिया। न्यूमैन छोटे भाई की व्यंग्योक्तियों से कुछ परेशान-सा हो गया था और उसे मो० द बेलगार्द की कृपाओं की ओर सकेत के लिए इन व्यंग्योक्तियों की सहायता की आवश्यकता नही थी। उसमें इतनी बुद्धि थी कि वह उन अशिष्टताओं को समझ ले, जिनकी ओर बड़े सभ्य तरीके से उसका ध्यान आकृष्ट किया जा रहा था। लेकिन अपने भाई के प्रति अश्रद्धा प्रकट करके भी वेलेंतीन ने उसके प्रति जो कोमल सहानुभूति की भावना दिखलाई थी, उससे न्यूमैन

को बड़ा सहारा मिला और वह यह नहीं चाहता था कि इस कारण उसके मित्र को डांट-फटकार खानी पड़े। वह बरामदे में कुछ कदम चलने के बाद ठहर गया। उसे उम्मीद थी कि वहां से वह मो० द बेलगार्द के चीखने-पुकारने की आवाज़ सुन सकेगा। लेकिन कमरे में अन्दर बिलकुल शान्ति थी। यह शान्ति स्वयं बड़ी अशुभ-सी लग रही थी; लेकिन फिर उसने सोचा कि उसे इस तरह खड़े होकर अन्दर की बातें सुनने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए वह उस कमरे मे वापस चला गया, जिससे वे लोग पहले आए थे। न्यूमैन की अनुपस्थिति में कमरे में अन्य कई लोग आ चुके थे। वे सब इधर-उधर दो-दो, तीन-तीन के गुटों में खड़े होकर बातचीत कर रहे थे। इनमें से दो-तीन लोग छोटे कक्षों में जाकर बैठ गए थे। यह कक्ष ड्राइंगरूम की बगल में ही था। ड्राइंगरूम अब खोल दिया गया था और उसमें रोशनी कर दी गई थी। वृद्धा मदाम द बेलगार्द आग के सामने अपनी कुर्सी पर बैठी थीं और एक वृद्ध सज्जन से बातचीत कर रही थी। वह वृद्ध सज्जन नकली केश लगाए थे और सन् १८२० के फैशन का एक सफेद बड़ा-सा नैपकिन उनके गले में बंधा था। मदाम द सान्त्रे झुककर एक वृद्धा की गुप्त ऐतिहासिक बातों को सुन रही थीं। यह महिला सम्भवतः गले में नैपकिन बांधे जो वृद्ध सज्जन बैठे थे, उनकी पत्नी थी। वे स्वयं लाल साटन के कपड़े पहने थीं और खाल का 'कैप' ओढ़े थीं और उनके माथे पर एक पट्टी बंधी थी, जिसमें एक पुखराज लगा था। मारक्विस की पत्नी मदाम द बेलगार्द न्यूमैन के ड्राइगरूम में आने पर जिन लोगों के बीच बैठी हुई थीं, उन्हें छोड़कर उठ आई और उसी स्थान पर जा बैठी जहां वे डिनर के पहले बैठी हुई थीं। इसके बाद उन्होंने गद्दीलगे एक स्टूल को खींचकर अपने पास रख लिया और न्यूमैन पर निगाह डालते हुए इशारा किया कि वह स्टूल उनके लिए है। न्यूमैन वहां जाकर बैठ गया। मारक्विस की पत्नी काफी दिलचस्प थीं और उनकी बातें सुनकर कभी-कभी वह काफी उलझन में पड़ जाता था।

"मुझे आपका रहस्य मालूम हो गया है," उन्होने टूटी-फूटी किन्तु आकर्षक अंग्रेज़ी में कहा, "अब उसे छिपाने की आवश्यकता नहीं है। आप मेरी ननद से विवाह करना चाहते हैं। आपने बहुत बढ़िया चुनाव किया है। आप जैसे व्यक्ति को लम्बी और दुबली-पतली स्त्री से विवाह करना चाहिए। आपको पता होगा कि मैंने आपकी ज़ोरदार सिफारिश की है। अब आप मुझे इनाम दीजिए!"

"आपने मदाम द सान्त्रे से बातचीत की है?" न्यूमैन ने पूछा।

"ओह, नहीं, इस बारे में उनसे मेरी कोई बात नहीं हुई । शायद आपको अजीब लगे, लेकिन मैं और मेरी ननद दोनों इतने घनिष्ठ नहीं हैं। मैंने अपने पति और अपनी सास से बातचीत की थी । मैंने कहा था कि हम आपसे जैसा चाहें वैसा व्यवहार कर सकते हैं।"

"मैं आपका बड़ा आभारी हूं," न्यूमैन ने हंसते हुए कहा, "लेकिन आप तो मेरे साथ मनचाहा व्यवहार नहीं कर सकतीं।"

"मैं यह बात अच्छी तरह से जानती हूं। मैंने इसके शब्द पर भी विश्वास नहीं किया है, लेकिन मैं चाहती थी कि आप इस घर में आएं ; मेरा ख्याल है कि हम लोगों को एक-दूसरे का मित्र होना चाहिए।"

"मेरा भी यही ख्याल है," न्यूमैन ने कहा।

"लेकिन इसका बहुत ज़्यादा भरोसा न कीजिए। अगर आप मदाम द सान्त्रे को बहुत ज़्यादा पसन्द करते हैं, तो शायद आप मुझे नहीं चाह सकेंगे। हम लोगों में ज़मीन-आसमान का फर्क है, लेकिन मुझमें और आपमें कुछ बातें एक-सी हैं जैसे—मै इस परिवार में विवाहित होकर आई, उसी तरह आप भी इसमें प्रवेश करना चाहते है।"

"ओह, नहीं, मै ऐसा प्रवेश नही चाहता!" न्यूमैन ने बात काटी।

"मैं केवल मदाम द सान्त्रे को इस घर से ले जाना चाहता हूं।"

"ठीक है, लेकिन अपना जाल डालने के लिए भी आपको पानी में जाना पड़ेगा। हम दोनों की स्थिति एक-सी ही है ; हम लोग एक-दूसरे को सलाह दे सकते हैं। अच्छा, आपका मेरे पति के बारे में क्या ख्याल है? यह कुछ अजीब सा सवाल है, है न? लेकिन मैं आपसे अभी कुछ और भी अजीब सवाल करूंगी।"

"शायद इससे अजीब सवाल का जवाब देना अपेक्षाकृत आसान होगा," न्यूमैन ने कहा, "आप कोशिश कर देखिए।"

"ओह, आप तो बड़ी चतुराई से बच निकले। वृद्ध कॉम्त द ला रोशफीदेल भी इतनी अच्छी तरह नही बच सकते थे। मैंने उन लोगों से कह दिया था कि अगर हमने आपको अवसर दिया, तो आप बहुत सफल होंगे। मुझे पुरुषों के बारे में कुछ ज्ञान है। इसके अलावा मैं और आप एक ही शिविर के हैं। मैं भी पक्की लोकतंत्र-वादी हूं। मेरा जन्म विलेरोश में हुआ है ; मेरे परिवार का इतिहास काफी कुछ फ्रांस का इतिहास है! बेशक, आपने इस बारे में कुछ न सुना होगा। यही तो हमारे

परिवार के बारे में शान की बात है। हम लोग किसी भी दशा में बेलगार्दो से कहीं अधिक अच्छे हैं। लेकिन मैं अपने घराने आदि की ज़रा भी परवाह नहीं करती ; मैं तो अपने युग में रहना चाहती हूं। मैं क्रान्तिकारी विचारधारा में विश्वास करती हूं, परिवर्तनवादी हूं और समय के अनुसार चलना चाहती हूं ! मुझे पक्का विश्वास है कि मैं इस मामले में आपसे भी आगे हूं। मुझे चतुर व्यक्ति पसंद हैं, चाहे वे कहीं के भी हों। मैं, जिस जगह भी मिलता है वहीं, अपना मनोरंजन करती हूं। मैं साम्राज्य पर मुंह नहीं बिचकाती ; जैसाकि सारी दुनिया करती है। बेशक मुझे इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि मैं क्या कहती हूं, लेकिन मुझे आशा है कि मैं आपसे अपना बदला ले सकूंगी।' मदाम द बेलगार्द कुछ देर और इसी सहानुभूति-पूर्ण स्वर में बात करती रहीं। उनकी बात से ऐसा लगता था कि उन्हें इस तरह खुलकर बात करने के मौके कम ही हासिल होते थे। उन्होने आशा प्रकट की कि न्यूमैन कभी भी उनसे डरेगा नहीं। वे अन्य लोगों के साथ चाहे जैसा व्यवहार करें, लेकिन उसे डरने की ज़रूरत नहीं है। 'तगड़े व्यक्ति' उनकी राय में हमेशा सारी दुनिया में समान होते हैं। न्यूमैन उनकी बातों को काफी ध्यान से सुन रहा था, लेकिन उनसे वह कुछ फेर में पड़ गया था और उसे झुंझलाहट भी हो रही थी। वह सोच रहा था कि आखिर यह कम्बख्त क्या कहना चाह रही है। उसने आशा प्रकट की है कि मैं इससे डरूंगा नहीं और वह अन्य लोगों के साथ समानता का विरोध कर रही है। जहां वह इस स्त्री का दृष्टिकोण समझ पाया था, उसे वह बड़ा गलत मालूम पड़ा। एक बेवकूफ बकवास करनेवाली औरत निश्चय ही एक ऐसे विवेकशील व्यक्ति के समान नहीं हो सकती, जो इस समय अपने विवाह की महत्त्वाकांक्षा के काम को पूरा करने में लगा है। अनायास मदाम द बेलगार्द बात करते-करते रुक गईं और अपने पंखे से हवा करते हुए उन्होंने तेज नज़रों से न्यूमैन को देखा। "मैं देख रही हूं कि आप मेरी बात का विश्वास नहीं करते," उन्होंने कहा, "आप बड़े सावधान नज़र आ रहे हैं। आप किसी भी तरह का गुट नहीं बनाना चाहते, चाहे अपनी चीज़ प्राप्त करने के लिए या बचने के लिए। यह आप बड़ी गलती कर रहे हैं ; मैं वाकई आपकी सहायता कर सकती हूं।"

न्यूमैन ने तुरन्त उत्तर दिया, "मैं इसके लिए आपका बड़ा आभारी हूं और अवश्य ही इस मामले में आपकी सहायता चाहूंगा। लेकिन सबसे पहले," उसने कहा, "मुझे अपनी सहायता आप करनी चाहिए।" और यह कहकर वह मदाम

द सान्त्रे के पास चला गया ।

"मैं मदाम द ला रोशफीदेल को बता रही थी कि आप अमरीकी हैं।" उन्होंने न्यूमैन के पास आते ही कहा, "इससे इनकी दिलचस्पी बहुत बढ़ गई है। इनके पिता फ्रेंच सैनिकों के साथ आपकी सहायता के लिए पिछली शताब्दी में अमरीका लडने गए थे और तब से ही हमेशा ये किसी भी अमरीकी से मिलने के लिए बड़ी उत्सुक थीं, लेकिन आज के पहले इन्हें अपने कार्य में सफलता नहीं मिली। इनका ख्याल है कि आप पहले अमरीकी हैं, जिनको इन्होंने देखा है।"

मदाम द ला रोशफीदेल का चेहरा मुरदों के समान पीला था, नीचे का जबड़ा कुछ झुका होने के कारण उनके होंठ आपस में मिल नहीं पाते थे, और जो शब्द निकलते थे, वे स्पष्ट नहीं सुनाई पड़ते थे। उन्होंने एक पुराना चश्मा निकालकर आंखों पर चढ़ा लिया। चश्मा चांदी के फ्रेम में था। इसके बाद उन्होंने न्यूमैन को सिर से पैर तक खूब गौर से देखा। फिर वे बोलीं। उनकी बात बड़े आदर-भाव से न्यूमैन ने सुनीं, लेकिन एक अक्षर भी उसकी समझ में नहीं आया।

"मदाम द ला रोशफीदेल कह रही हैं कि उन्हें विश्वास है कि उन्होंने पहले भी जरूर अमरीकी देखे होंगे, लेकिन वे उन्हें पहचान नहीं पाई होंगी," मदाम द सान्त्रे ने उनकी बात समझाई। न्यूमैन ने सोचा कि शायद यह वृद्ध महिला बिना पहचाने ही और भी बहुत-सी चीज़ें देख चुकी होंगी। और उन वृद्ध महिला ने फिर कुछ कहना शुरू किया। मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन को समझाया कि ये कह रही हैं कि अच्छा होता, मैं देखते ही अमरीकनों को पहचान लेती।

तभी वृद्ध सज्जन, जो मदाम द बेलगार्द से बात कर रहे थे, निकट आ गए। उनके साथ वृद्धा मदाम द बेलगार्द भी बांहों का सहारा लिए चली आईं। उनकी पत्नी ने न्यूमैन की तरफ इशारा किया और बताया कि न्यूमैन का उद्गम कितना महत्त्वपूर्ण है। मो० द ला रोशफीदेल जो अपनी वृद्धावस्था के बावजूद लाल रखे थे, बहुत साफ ढंग से बोले। उनका उच्चारण न्यूमैन को उतना ही स्पष्ट लगा, जितना मो० नियोशे का होता था। जब उन्हें भी पता लग गया, तो वे न्यूमैन की तरफ अपना बड़प्पन दिखाते हुए मुड़े।

"मोंश्यू पहले अमरीकी नहीं हैं। मैं पहले भी अन्य अमरीकियों से मिल चुका हूं," उन्होंने कहा, "मैंने जो पहला व्यक्ति देखा था, वह अमरीकी ही था।"

"एं ?" न्यूमैन ने सहानुभूति से कहा।

"यह डाक्टर फ्रेंकलिन थे," मो० द ला रोशफीदेल ने कहा, "बेशक उस समय मैं बहुत छोटा था। लेकिन उनका हमारे यहां बड़ा अच्छा स्वागत किया गया था।"

"लेकिन न्यूमैन से ज़्यादा अच्छा स्वागत नहीं किया गया होगा," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "मैं उनसे अनुरोध करूंगी कि वे मुझे पकड़कर दूसरे कमरे में ले चलें। इससे अधिक इज्ज़त मैं डाक्टर फ्रेंकलिन को भी नहीं दे सकती थी।"

न्यूमैन ने वृद्धा मदाम द बेलगार्द का अनुरोध मान लिया। उसने देखा कि मदाम के दोनों पुत्र ड्राइंगरूम में वापस आ गए हैं। उसने दोनों के चेहरों पर एक क्षण के लिए नजर डाली, जिससे उसके चले आने के बाद जो कुछ बीता था, उसका कोई चिह्न दिखलाई पड़ सके। लेकिन मारक्विस पहले की ही तरह कठोर थे और उनके चेहरे से रोब टपक रहा था। वेलेंतीन महिलाओं के हाथ घूमता फिर रहा था। मदाम द बेलगार्द ने अपने बड़े पुत्र पर एक दृष्टि डाली और इसके पहले कि मां कमरे का दरवाज़ा पार करतीं, वह उनकी बगल में आ खड़ा हुआ। यह कमरा अब खाली हो गया था और उसमे निजी बातचीत की जा सकती थी। वृद्ध महिला ने न्यूमैन के हाथ का सहारा छोड़ दिया और उन्होंने अपना हाथ अपने बड़े पुत्र की बांह पर रख लिया था; और वे कुछ देर इसी तरह खड़ी रहीं। उनका सिर एकदम सीधा और तना था और वे अपने छोटे निचले होंठ को काट रही थी। लेकिन मुझे भय है कि इसका न्यूमैन पर कोई असर नही हुआ। हालांकि मदाम द बेलगार्द का यह चित्र वाकई गरिमा का मूर्तरूप था और उससे यह पता चलता था कि इतना समय बीत जाने के बाद भी वृद्धा निर्विवाद रूप से अपने घर की पुरखा थी।

"जैसीकि मैंने इच्छा प्रकट की थी, मेरे पुत्र ने आपसे बातचीत की," वृद्धा कहा, "और आप यह समझ गए है कि हम लोग आपके मार्ग में बाधा नहीं डालेंगे। आगे की बातें आपको खुद तय करनी है।"

"मो० द बेलगार्द ने मुझसे बहुत-सी बातें कही, जो मेरी समझ में नहीं आई," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन जो बात आप कह रही है, वह बात मैंने उनकी बातों से समझ ली। आप मुझे पूरा मौका देंगी। इसके लिए मैं बहुत आभारी हूं।"

"मैं एक बात और कहना चाहूंगी, जो शायद मेरे पुत्र ने आपसे न कही हो," वृद्धा ने उत्तर दिया, "यह बात मैं अपनी मानसिक शान्ति के लिए कहना चाहती । मैं यह बात कुछ बढ़ा रही हूं, लेकिन यह बता दूं कि हम आपके ऊपर एक

बहुत बड़ी कृपा कर रहे हैं।"

"ओह, आपके पुत्र ने यह बात बहुत स्पष्ट ढंग से कह दी थी; क्यों ?" न्यू-मैन ने कहा।

"नहीं, उतनी अच्छी तरह नहीं, जितनी अच्छी तरह मेरी मा ने कही है," मारक्विस ने कहा।

"मैं केवल यही फिर कह सकता हू कि मैं आपका बड़ा आभारी हूं।"

"मेरा यह भी बता देना उचित है," वृद्धा मदाम द बेलगार्द कह रही थीं, "कि मैं बहुत घमण्डी हूं और मेरा सिर शान से हमेशा से ऊंचा रहा है। हो सकता है कि मैं गलत हूं, लेकिन मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूं कि बदल नही सकती। कम से कम यह बात मै जानती हूं और मैं और किसी बात का बहाना नहीं करती। आप यह मत समझिएगा कि मेरी पुत्री घमण्डी नहीं है। वह भी अपने ढंग से घमण्ड करती है—हालाकि उसके घमण्ड का ढंग मेरे घमण्ड के ढंग से भिन्न है। आपको उसकी इस भावना से समझौता करना होगा। वेलेंतीन भी अपने ढंग से घमण्डी है, बशर्ते कोई उसके मर्मस्थल को छू दे। अरबेन को भी बड़ा अभिमान है, जैसाकि आपने देख ही लिया होगा। कभी-कभी मुझे लगता है कि वह ज़रूरत से ज़्यादा घमण्डी है; लेकिन मैं उसमें यह परिवर्तन नहीं कर सकूंगी। वह मेरे बच्चों में सर्वोत्तम है, उसने अपनी मां की परम्परा निभाई है। लेकिन मैंने आपको काफी अच्छी तरह बता दिया है कि हम सब लोग मिलकर बड़े अभिमानी हैं। यह ज़रूरी था कि आप जान जाते कि आप किन लोगों के बीच आए हैं।"

"इस बात के उत्तर में, "न्यूमैन ने कहा," मैं इतना ही कह सकता हूं कि मैं घमण्डी नहीं हूं; मैं आपकी बातों का बुरा नहीं मानूंगा! लेकिन आपकी बातों से ऐसा लगता है, जैसे आप लोग बड़े अप्रिय होना चाहते हैं।"

"मेरी पुत्री का विवाह आपसे हो, इस बात पर मैं खुश नहीं हो सकूंगी, और न मैं बाह्य रूप से प्रकट करूंगी कि मैं खुश हूं। अगर आपको इस बात की कोई चिन्ता नहीं है, तो और भी अच्छा है।"

"अगर आप अपनी बात पर दृढ़ रहें, तो हमारा कोई झगड़ा नहीं होगा; मैं आपसे केवल इतना ही चाहता हूं कि आपने जो बात कही है, उसपर बनी रहें," न्यूमैन ने कहा, "आप तटस्थ रहें और कोई हस्तक्षेप न करें, तथा मुझे पूरा मौका दें। मैं विवाह के लिए बहुत उत्सुक हूं; किसी भी बात से मेरे

निरुत्साहित होने की कोई सम्भावना नही है, और न मैं अपनी बात से फिरूंगा। मैं बराबर आपकी आंखों के सामने रहूंगा ; अगर जो आपको यह पसन्द न हो, तो मुझे खेद होगा। अगर आपकी पुत्री मुझसे विवाह करने को सहमत हो जाती है, तो मैं उसके लिए वह सब कुछ करूंगा जो एक पुरुष अपनी पत्नी के लिए कर सकता है। यह बात मैं प्रतिज्ञा के रूप में आपके सामने कह रहा हूं और यह प्रतिज्ञा करने की मुझे खुशी है। मैं समझता हूं कि जहा तक आपका सम्बन्ध है, आप भी प्रतिज्ञा ही कर रही है। आप अपनी बात से हटेंगी नहीं, क्या ?"

"आप कह रहे हैं कि हम अपनी 'बात से फिरें नही'। मेरी समझ में नहीं आता कि इस बात से आपका क्या मतलब है," वृद्धा ने कहा, "आपकी बात से कुछ ऐसी ध्वनि निकलती है, जिसका अभी तक कोई भी बेलगार्द परिवार का सदस्य कभी दोषी सिद्ध नही हुआ।"

"हमने जो बात कह दी, वह कह दी," अरबेन ने कहा।

"जो हो, अब," न्यूमैन ने कहा, "मुझे आपके घमण्डी होने की बड़ी प्रसन्नता है। मुझे विश्वास हो गया है कि आप अपनी बात रखेंगे।"

वृद्धा एक क्षण तक चुप रहीं और फ़िर यकायक बोली, "मैं आपसे हमेशा शिष्ट व्यवहार करूंगी," उन्होंने कहा, "लेकिन मिस्टर न्यूमैन, मैं कभी भी आपको पसन्द नहीं करूंगी।"

"इस मामले में आप इतना विश्वास प्रकट न करें," न्यूमैन ने हंसते हुए कहा।

"मैं जो बात कह रही हूं उसका मुझे पक्का भरोसा है। मै आपसे अनुरोध करूंगी कि आप मुझे मेरी कुर्सी तक सहारा देकर ले चलें, लेकिन आपकी इस सेवा के कारण आपके प्रति मेरी भावनाओं में तनिक भी परिवर्तन होने की संभावना नहीं है।" और मदाम द बेलगार्द न्यूमैन का सहारा लेकर अपने कक्ष में वापस लौट आईं तथा अपनी कुर्सी पर जा विराजीं।

मो० द ला रोशफीदेल और उनकी पत्नी अब विदा लेने की तैयारी कर रहे थे और मदाम द सान्त्रे तथा उस कुनमुनाती वृद्धा की बातचीत समाप्त होनेवाली थी। वे अपने चारों ओर देख रही थीं और मन ही मन सोच रही थीं कि अब वे किससे बातचीत करें, तभी न्यूमैन मदाम द सान्त्रे के पास पहुंच गया।

"आपकी मां ने मुझे पूर्ण गम्भीरता से यहां अक्सर आने की अनुमति दे दी है, "उसने कहा। "और मैं यहां बराबर आते रहने की सोचता हूं।"

"मुझे आपसे मिलकर बड़ी खुशी होगी," मदाम द सान्त्रे ने सादगी से उत्तर दिया। ौर इसके एक क्षण बाद ही कहा, "शायद आप सोच रहे होंगे कि आपके आने के बारे इस प्रकार की गम्भीरता के साथ अनुमति दिया जाना बड़ी अजीब-सी बात है।"

"जी हां, लग तो ऐसा ही रहा है।"

"आपको याद होगा कि जब आप पहली बार मुझसे मिलने आए थे, तो मेरे ाई वेलेंतीन ने आपसे कहा था कि हम लोगों का परिवार बड़ा विचित्र है ?"

"पहली बार नहीं, बल्कि मैं दूसरी बार आया था," न्यूमैन ने कहा।

"बहुत ठीक, उस समय वेलेंतीन की बात से मुझे बड़ा गुस्सा आया था ; लेकिन ाब आपसे मेरा परिचय कुछ और अधिक हो गया है, और मैं आपसे कह सकती ' कि उसने सही बात कही थी। अब आप यहां अक्सर आया करेंगे तो खुद ही देख ांगे !" और मदाम द सान्त्रे मुड़ गई।

न्यूमैन कुछ देर उन्हे देखता रहा, अन्य लोगों से बातें करता रहा और इसके ाद विदा होकर घर वापस आ गया। सबसे अन्त में उसने वेलेंतीन द बेलगार्द से ाथ मिलाया। वह न्यूमैन को पहुचाने सीढ़ियों तक आया था। "अब आपको ारमिट' मिल गया है," वेलेंतीन ने कहा, "मुझे आशा है कि आपको यह प्रक्रिया सन्द आई होगी।"

"मैं आपकी बहन को पहले से भी अधिक चाहने लगा हूं। लेकिन अब आप ारे लिए अपने भाई को तंग मत कीजिएगा," न्यूमैन ने कहा, "मुझे उनकी तनिक ी परवाह नही। मेरा ख्याल है कि धूम्रपान-कक्ष से मेरे निकल आने के बाद ाम्भवत: अकेले में वे आपपर बहुत नाराज हुए होंगे।"

"जब भी मेरे भाई मुझपर नाराज होते हैं," वेलेंतीन ने कहा, "तो उन्हें ुंह की खानी पड़ती है। मैं एक खास अन्दाज़ से उनकी डांट का जवाब देता ू।" वेलेंतीन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मुझे इस बात की खुशी है के इन लोगों ने मतलब की बात मेरी आशा के विपरीत जल्दी ही कह डाली। ारी समझ में यह बात नहीं आई। उन्होंने अपने ऊपर काफी श्रम से काबू पाया ़ोगा। इसका श्रेय आपके लाखों-करोड़ों डालरो को है।"

"जो भी हो, उन्हें बड़ा दुर्लभ व्यक्ति मिला है," न्यूमैन ने कहा।

वह मुड़ चुका था, जब वेलेंतीन ने उसे रोका। न्यूमैन की ओर अपनी चमक-भरी कोमल लेकिन कुछ सनकियों जैसी दृष्टि डालते हुए वेलेंतीन ने पूछा, "मैं

यह जानना चाहता हूं कि पिछले कुछ दिनों में क्या आपकी मुलाकात श्रद्धेय मित्र मो० नियोशे से हुई है ?"

"वे कल मेरे घर पर मिलने आए थे," न्यूमैन ने जवाब दिया ।

"उन्होंने आपको क्या बताया ?"

"कोई खास बात तो नहीं बताई ।"

"आपने उनकी जेब से बाहर झांकती हुई पिस्तौल की नली नहीं देखी ?"

"क्या कहना चाहते है आप ?" "न्यूमैन ने पूछा, मुझे तो ऐसा लगा कि वे काफी प्रसन्न हैं ।"

अब वेलेंतीन बड़े ज़ोरों से हंस पड़ा । "मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई । मैं अपनी शर्त जीत गया । मदामाजेल नोएमी घर छोड़कर चली गई हैं । वे अपने पिता के साथ नहीं रहतीं । उन्होंने जीवन में प्रवेश कर लिया है ! और मो० नियोशे प्रसन्न नज़र आते हैं ! अब आप रैड इंडियनों वाला फरसा मुझे दिखाने की कोशिश न कीजिएगा ; लूव्र के कला-संग्रहालय में उस दिन मिलने के बाद न तो मैं उन देवीजी से दुबारा मिला हूं और न मैंने उन्हें कोई सन्देश ही भेजा है । एन्ड्रोमीदा ने मुझे तो नहीं, लेकिन कोई और पर्सीयस ढूंढ़ लिया है । मेरी सूचना बिलकुल सत्य है; जैसीकि इन मामलों में हमेशा हुआ करती है । मेरा ख्याल है अब आप मुझपर से वह रोक हटा लेंगे, जो आपने लगाई थी ।"

"मेरी रोक की ऐसी की तैसी !" न्यूमैन ने बड़ी ही अरुचिपूर्वक बुदबुदाकर ये शब्द कहे ।

लेकिन वेलेंतीन ने अपनी मां के कक्ष में लौटने के लिए दरवाज़े पर हाथ रखे-रखे चिल्लाकर जो बात कही, उसमें इस अरुचि की कोई भी प्रतिध्वनि नहीं थी, "लेकिन अब मैं उससे मिलूंगा । वह वाकई बड़ी विलक्षण लड़की है—बड़ी ही विलक्षण लड़की है !"

तेरह

न्यूमैन ने रू द ल यूनिवर्सिते बहुधा जाने का अपना वादा या कह लीजिए धमकी

पूरी तरह निभाई। बाद के छः हफ्तों में वह इतनी अधिक बार मदाम द सान्त्रे से मिलने गया, कि उसे मुलाकातों की ठीक-ठीक संख्या भी याद नहीं थी। न्यूमैन तो यह सोच-सोचकर मन ही मन खुश होता था कि वह मदाम द सान्त्रे से प्रेम नहीं करता है, लेकिन इस मामले मे उसकी जीवनी का यह लेखक उससे कहीं अधिक जानता है। लेकिन जो हो, उसे रोमांस के मार्ग में आनेवाली किसी भी कठिनाई से छुटकारा नहीं मिला और साथ ही प्रेम से होनेवाला कोई लाभ भी वह प्राप्त न कर सका। वह सोचने लगा था कि प्रेम लोगों को बेवकूफ बनाता है और उसकी वर्तमान प्रेम-भावना मूर्खतापूर्ण नहीं, बल्कि बुद्धिमत्तायुक्त है। उसके मन में बड़ी उदात्त और कोमल स्नेहपूर्ण भावनाएं उभर रही थी और उन सबका लक्ष्य एक असाधारण सुन्दर नारी थी।—वही नारी, जो सीन नदी के बायें किनारे पर स्थित सिलेटी रंग की कोठी में रहती थी। कभी-कभी उसकी ये कोमल भावनाएं गहरी मनोव्यथा में बदल जाती थीं; इससे न्यूमैन को समझ लेना चाहिए था कि वह नारी-प्रेम का शिकार हो रहा है। जब किसीके हृदय पर भारी बोझ होता है, तो वह बोझ चाहे सोने का हो या सीसे का, कोई खास मतलब नहीं रखता, क्योंकि बोझ तो बोझ ही होता है। और जब खुशी दर्द बन जाती है, तो आदमी को यह सोचने पर विवश कर देती है कि अब वह अस्थायी तौर पर ही सही, बुद्धि-विवेक से काम लेने में असमर्थ है। न्यूमैन मदाम द सान्त्रे को इतना अधिक चाहने लगा था कि वह उनके लिए भविष्य में न जाने कौन-से आसमान के तारे तोड़कर न ला देगा या कोई ऐसी ही बात न करेगा। उसे मदाम द सान्त्रे प्रकृति की अनुपम देन प्रतीत होती थीं और वह भविष्य की बातें सोचते-सोचते कभी-कभी कल्पित आशंकाओं से भयभीत हो यह सोचने लगता था कि कहीं उसका सुन्दर स्वप्न भंग न हो जाए। इन्हीं भावी आशंकाओं और भय को मैंने न्यूमैन की कोमल कल्पनाए बताया है। उसे मदाम द सान्त्रे इतनी अच्छी लगती थीं कि वह उनके और जीवन के द्वन्द्वों और चिन्ताओं के बीच इस प्रकार रक्षा के लिए खड़ा हो जाना चाहता था, जिस तरह कोई नई मां अपने पहले बच्चे की नीद में उसकी रक्षा करने के लिए कटिबद्ध रहती है। न्यूमैन मदाम द सान्त्रे के रूप के जादू में खो गया था और यह रूप उसे एक ऐसे सगीत-बक्स की तरह लगता था, जिसका जमीन पर रखते ही बजना बन्द हो जाएगा। हर व्यक्ति के स्वभाव में विलास की सुषुप्त कामना रहती है और वह किसी दैवी संयोग

की प्रतीक्षा करती रहती है, जिसके मिलते ही वह प्रकट हो सके। न्यूमैन की वर्तमान स्थिति से बढ़कर इस बात का कोई और अधिक बड़ा प्रमाण नहीं हो सकता। आखिर न्यूमैन भी इस भावना का शिकार हो गया था और अब प्रेम के इस वातावरण का वह खुलकर पूरी तरह आनन्द ले रहा था। उसके दिल और दिमाग पर मदाम द सान्त्रे की चमकीली आखो की मधुरता, चेहरे के नाजुक भाव और कण्ठ की तरल मृदुलता पूरी तरह घर कर गई थी। वह गुलाब का ताज पहने ऐसा प्राचीन कालीन यूनानी बन गया था, जो किसी देवी की संगमरमर की सौंदर्य-प्रतिमा को देखने में अपना आपा खो बैठा था।

न्यूमैन ने मदाम द सान्त्रे के प्रति प्रकट रूप से कोई भावुकतापूर्ण उद्गार प्रकट नहीं किए थे। उसने कभी कोई ऐसी बात नहीं कही थी जिसके लिए उसपर रोक लगाई गई थी। लेकिन इतने पर भी न्यूमैन को इस बात से बड़ी शान्ति मिलती थी कि मदाम द सान्त्रे को प्रतिदिन यह ज्ञात होता रहता है कि वह उनका कितना प्रशसक है। आम तौर पर उसे ज्यादा बातें करने की आदत नहीं थी। फिर भी वह काफी बातें करने लगा था। कई बातों पर उसे अपने विचार प्रकट करने में पूरी सफलता प्राप्त हुई थी। अब उसे इस बात का भय नहीं था कि मदाम द सान्त्रे उसकी बातों से या उसके मौन से ऊब जाएंगी। यह तो नहीं कहा जा सकता कि न्यूमैन से मदाम द सान्त्रे कभी-कभी ऊब जाती थीं या नहीं, लेकिन इतना सम्भव है कि वे न्यूमैन को खुलकर बातें करने की वजह से पहले से अधिक चाहने लगी थीं। मदाम द सान्त्रे के मेहमान बहुधा न्यूमैन के सामने आते थे। वे देखते कि एक लम्बा, छरहरा व्यक्ति कुछ तिरछे ढंग से कुर्सी पर बैठा हुआ है और कभी-कभी वह ऐसी बातों पर हंस देता है, जिनमें हसने की कोई बात नही होती और कभी अत्यधिक विनोदपूर्ण बातों पर भी उसे हंसी नहीं आती, जिससे ऐसा लगता है कि उसमें सूझबूझ के विनोद और परिहास को समझने की क्षमता ही नहीं है।

यह बात स्वीकार करनी ही होगी कि ऐसे विषयों की संख्या बहुत अधिक थी, जिनके बारे में न्यूमैन को कुछ भी पता नहीं था और यह भी मानना होगा कि जिन विषयों पर उसे कुछ पता नहीं था, उनके बारे में उसकी कोई राय भी नहीं थी। वह बहुत कम बातें करता था और उसके पास बातचीत करने के तैयार फार्मूले या कण्ठाग्र किए हुए मुहावरे भी नहीं थे। इसके प्रतिकूल उसका

अधिकतर ध्यान अन्य लोगों की बातों पर जमा रहता था और वह किसी भी विषय का महत्त्व इस बात से निर्धारित नहीं करता था कि उस विषय के सम्बन्ध में वह स्वयं कितनी बातें चतुराई से कह सकता है। वह स्वयं कभी नही ऊबता था और उसके मौन का यह अर्थ लगाना बिलकुल गलत होता कि न्यूमैन नाराज है। लेकिन मुझे भी यह बात कहनी होगी कि घण्टों तक चुपचाप बैठे रहने के दौरान उसका मन किस तरह लगता था, यह नहीं समझाया जा सकता। मोटे तौर पर हमें मालूम है कि बहुत-सी बड़ी-बड़ी बातें, जो अन्य बहुत-से लोगों के लिए पुरानी पड़ चुकी है, न्यूमैन के लिए अनोखी और नई थीं। अगर यह सूची तैयार की जाए कि न्यूमैन ने क्या-क्या नई बातें सुनीं और क्या-क्या नई धारणाए बनाईं, तो वह सूची देखकर हम लोगों को कई बार आश्चर्य से दांतों तले उंगली दबानी पड़ेगी। मदाम द सान्त्रे को उसने सैकड़ों चुटकुले और कहानियां सुनाई थीं; बातचीत के दौरान उसने उन्हें बताया था कि अमरीका में विभिन्न स्थानीय सस्थाए और व्यापारिक कम्पनियां किसी तरह काम करती है। इन बातों के सम्बन्ध में मदाम द सान्त्रे की रुचि का पता बाद में लगता था, बात सुनने के पहले कोई यह नही कह सकता था कि मदाम को ये बातें सुननी प्रिय होंगी या नहीं। जहां तक मदाम द सान्त्रे का सम्बन्ध था, न्यूमैन को पक्का विश्वास था कि उससे बातें करने में उन्हें आनन्द आता है; मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने मदाम द सान्त्रे का जो चित्र प्रस्तुत किया था, उसमें इस धारणा के कारण कुछ तबदीली करनी पड़ी थी। न्यूमैन को यह अनुभव हुआ था कि मदाम द सान्त्रे काफी प्रसन्नचित्त महिला है। आरम्भ में उसने जो यह धारण बनाई थी कि मदाम द सान्त्रे शर्मीली हैं, वह सही थी। उनका यह शर्मीलापन उनके सौंदर्य में चार चांद लगा देता था। न्यूमैन के सामने भी मदाम द सान्त्रे का शर्मीलापन कुछ समय तक बना रहा और जब यह छूट गया, तब भी काफी समय तक संकोच का कुछ अश निरन्तर बना रहा। क्या वह अश्रुपूरित रहस्य जिसकी कि झलक मिसेज़ ट्रिस्टरैम को मिली थी और जिसके आधार पर उन्होंने अपनी सहेली को उच्च वंश-परम्परा, गम्भीरता का जो चित्र उन्होंने खीचा था, क्या वह बहुत विषादपूर्ण नही था? कम से कम न्यूमैन का तो यही ख्याल था, लेकिन धीरे-धीरे उसका यह सोचना बहुत कम हो गया था कि मदाम द सान्त्रे का वह रहस्य क्या है, जिसके कारण वे पहले इतनी दुखी रहती थी और उसे

इस बात का अधिकाधिक विश्वास होने लगा था कि मदाम द सान्त्रे के दुःख का कारण वे बातें हैं, जो उनके घर में होती हैं और जो उन्हें पसन्द नहीं हैं। न्यूमैन का ख्याल था कि मदाम द सान्त्रे खुश रहने के लिए पैदा हुई हैं, दुखी रहने के लिए नहीं। उदासीनता तथा रहस्यमय विशाद के वातावरण में रहने के बजाय उन्हें खुला, प्रसन्नतापूर्ण, निर्द्वन्द्वता का वातावरण चाहिए, जिसमें वे चाहें तो थोड़ा-बहुत चिन्तन भी कर सकें; लेकिन इससे अधिक कुछ नहीं। किसी हद तक न्यूमैन के साथ वे खुशी अनुभव करने लगी थीं। न्यूमैन को यह विश्वास हो गया था कि जो बातें मदाम द सान्त्रे को दुखी करती हैं, उसकी उपस्थिति से वे उन बातों को भूल जाती हैं। और न्यूमैन ने उन्हें इस दुखपूर्ण वातावरण से बचाने के लिए तथा खुश रखने के लिए काफी प्रयत्न किया था।

न्यूमैन अकसर संध्या को मदाम द सान्त्रे के यहां पहले से समय निश्चित करके पहुंच जाता था। जब बाहर ठण्ड पड़ रही होती, तो वह आग के सामने वृद्धा मदाम द बेलगार्द के पास बैठा-बैठा कमरे के दूसरी तरफ देखता रहता और कभी-कभी तिरछी निगाहों से मदाम द सान्त्रे को देखकर सन्तोष कर लेता; क्योंकि मदाम द सान्त्रे ने यह नियम बना रखा था कि वे अपने परिवार के सदस्यों के सामने न्यूमैन को छोड़कर किसी अन्य व्यक्ति से बातें करती रहती थीं। मदाम द बेलगार्द आग के पास कुर्सी पर बैठी-बैठी, जो भी व्यक्ति उनके पास आता, उससे उदासीन भाव से बातचीत करतीं और अपनी चंचल दृष्टि से धीरे-धीरे कमरे की हर चीज़ को देखती रहतीं। न्यूमैन को ऐसा महसूस होता कि मदाम द बेलगार्द की दृष्टि पड़ते ही खुशी गायब हो गई है। वह जब भी उनसे हाथ मिलाता, तो हंसकर यह अवश्य पूछता कि क्या मदाम द बेलगार्द एक और संध्या को अपने घर में उसकी उपस्थिति बर्दाश्त कर लेंगी? और वे बिना हसे उत्तर देतीं कि ईश्वर को धन्यवाद है, मैं अपने कर्तव्य-पालन में सदा समर्थ रही हूं। वृद्धा के बारे में एक बार मिसेज़ ट्रिस्टरैम से बातचीत करते हुए न्यूमैन ने कहा था कि मेरा ख्याल है कि कोई भी व्यक्ति बड़ी सरलता से उनके साथ अपना निर्वाह कर सकता है, क्योंकि जो व्यक्ति अत्यन्त दुष्ट हो, उसके साथ हमेशा ही आसानी से काम चलाया जा सकता है।

"और क्या आप इसी सुरुचिपूर्ण शब्द से," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने पूछा, "वृद्धा मदाम द बेलगार्द का स्मरण करते है?"

"क्या वे," न्यूमैन ने कहा, "दुष्ट हैं और बड़ी पापिनी हैं।"

"आखिर उनका अपराध क्या है?" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने पूछा।

"अगर मुझे यह पता चले कि उन्होने किसीकी हत्या कर दी है, तो भी मुझे आश्चर्य नहीं होगा—हां, यह हत्या जरूर ही उन्होंने अपने कर्तव्य-पालन के लिए की होगी।"

"आप ऐसी भयानक बातें कैसे कह देते हैं ?" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने आह भरते हुए कहा।

"मैं भयानक बातें नही कर रहा, मैं तो उनकी तारीफ कर रहा हूं।"

"तो ज़रा यह बताने की कृपा कीजिएगा कि जब आप उनकी आलोचना पर उतारू होगे, तो क्या कहेगे ?"

"मैं अपनी कठोरता किसी अन्य व्यक्ति के लिए सुरक्षित रखूगा—उनके बड़े पुत्र मारक्विस के लिए। यह ऐसा आदमी है, जो मुझे फूटी आंखों नही सुहाता।"

"और उन्होने क्या किया ?"

"यह तो मै नहीं कह सकता ; लेकिन पता नहीं क्यों ऐसा लगता है कि यह आदमी बड़ा भयानक बदमाश है। अत्यन्त नीच और अधम है तथा उसमें उद्दण्डता का भी अभाव नही है। उसका आचरण उसकी मां से भी गया-बीता है। अगर इस व्यक्ति ने किसीकी हत्या न भी की हो, तो कम से कम इतना तो ज़रूरी ही किया है कि जब इसने किसीकी हत्या होते देखी है, तो अपनी पीठ मोड़कर चुपचाप खड़ा हो गया है।"

इस प्रकार की व्यक्तिगत कपोलकल्पनाओं को छोड़, जिन्हे अमरीकी विनोद का उदाहरण माना जा सकता है, न्यूमैन ने मो० द बेलगार्द के साथ मित्रता का भाव बनाए रखने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया। न्यूमैन जब तक ऐसे लोगों के सम्पर्क में रहता था, जिन्हे वह बिलकुल पसन्द नहीं करता था, उन लोगों के किसी भी अपराध को क्षमा कर देता था और अपने मन में (अपनी निजी सुविधा के लिए) यह मान लेता था कि वे बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। उसने मारक्विस के साथ बराबर अपना अच्छा व्यवहार बनाए रखा और यह दिखलाया कि जितने बड़े बेवकूफ वे है, वह उनको उतना मूर्ख नहीं समझता। न्यूमैन के व्यवहार से कभी भी कोई कृत्रिमता प्रकट नहीं हो सकती थी। इसका कारण यह था कि मानवमात्र की समानता में उसका जो मौलिक विश्वास था, वह केवल ज़बर्दस्ती प्राप्त

की गई रुचि या सौंदर्य-सिद्धान्त का प्रकटरूप नहीं था, बल्कि यह भाव उसके स्वभाव का अंग था । और चूंकि उसने हर व्यक्ति को समान समझने में कभी भी कोई कृपणता नहीं दिखलाई थी, इसलिए उसके व्यवहार में किसी प्रकार की अमर्यादित उत्सुकता नही प्रकट होती थी । सम्भवतः सामाजिक क्षेत्र में न्यूमैन को अपनी स्थिति के विषय में जो आत्मविश्वास था, उससे मो० द बेलगार्द को कुछ परेशानी होती थी और उन्हें ऐसा लगता था कि उनके भावी बहनोई में परिष्कार और सुसंस्कृति का अभाव है, जिसका असर उनपर अनुकूल नहीं पड़ता। यह बात वे एक क्षण के लिए भी नहीं भूलते थे और जब भी न्यूमैन उनकी तरफ मित्रता का हाथ बढ़ाता था, तो वे उसका उत्तर औपचारिक शिष्टाचार से ही देते थे । न्यूमैन अकसर अपनी स्थिति भूल जाता था और बहुत-से अनुत्तरदायित्व-पूर्ण प्रश्न करने लगता था तथा कपोलकल्पनाएं करने लगता था, जिससे उसके मेजबान के होंठों पर व्यंग्य की मुस्कराहट खेल उठती थी । लेकिन न्यूमैन की समझ में नहीं आता था कि मो० द बेलगार्द आखिर किसलिए हस रहे हैं। मो० द बेलगार्द की यह मुस्कराहट उसके अपने लिए तथा उनकी भावनाओं के बीच एक समझौते का काम करती थी । मो० द बेलगार्द जब तक मुस्कराते थे, तब तक वे शिष्ट रहते थे और उनकी यह शिष्टता उचित थी । दूसरे, मुस्कराने से केवल शिष्टाचार ही प्रकट होता था और किसी बात के कहने की कोई बाध्यता भी नहीं रहती थी । यह शिष्टता बड़े अनुकूल ढंग से निरर्थक बनी रहती थी । मुस्कराहट का अर्थ असहमति भी नहीं होता है जिससे किसी गम्भीर परिणाम का खतरा नहीं था। मुस्कराहट से सहमति भी नहीं प्रकट होती थी, इसलिए सहमतिजन्य किसी भी भावी कठिनाई की कोई सम्भावना नहीं थी । और फिर मुस्कराने से अपनी निजी मर्यादा भी ढकी-मुंदी रहती थी'। और जिसे वे वर्तमान संकटपूर्ण स्थिति में निरन्तर बनाए रखने के लिए कृत-निश्चय थे । इतना ही काफी था कि उनके घर की आन, बान, शान को ग्रहण लग गया था । न्यूमैन और मो० द बेलगार्द के बीच का व्यवहार ऐसा था, जिससे यह साफ-साफ प्रकट हो जाता था कि दोनों में किसी भी प्रकार के विचार-विनिमय की कोई सम्भावना नहीं है। मार-क्विस न्यूमैन के आते ही अपनी सांस रोक लेते थे, जिससे लोकतंत्र की बू कहीं उनकी नाक में न चढ़ जाए । न्यूमैन को यूरोप की राजनीति का अत्यल्प ज्ञान था, लेकिन वे मोटे तौर पर यह जानना चाहते थे कि आसपास क्या हो रहा है और

इसीलिए उन्होंने राजनीति के विषय में मो० द बेलगार्द से कई बार प्रश्न किए थे। इसके उत्तर में मो० द बेलगार्द ने प्रच्छन्न रूप से यह उत्तर दिया था कि वे राजनीतिज्ञों को बहुत बुरा समझते हैं, क्योंकि उनका दिन-प्रतिदिन पतन होता जा रहा है और यह अर्ध:पतन का काल है। यह बात सुनकर न्यूमैन के हृदय में एक क्षण के लिए मारक्विस के प्रति बड़ी दया का भाव उपज आता, न्यूमैन को ऐसे व्यक्ति पर तरस आने लगता, जो दुनिया को अपने रहने योग्य नही समझता। इसके बाद जब वह दूसरी बार मो० द बेलगार्द से मिलते, तो उन घटनाओं की चर्चा करते, जिनसे कुछ आशा बंधती थी। इसके उत्तर में मारक्विस यह कहते कि उनका एकमात्र राजनीतिक विश्वास यह है, और जो उनके लिए पर्याप्त है, कि वे हेनरी बूरबॉन को फ्रांस के राजसिंहासन का दैवी उत्तराधिकारी मानते हैं। न्यूमैन उनकी तरफ घूरने लगता और फिर मो० द बेलगार्द से राजनीति पर बात करना बन्द कर देता। उनकी इस बात से न्यूमैन न तो भयभीत होता और न उन्हें बुरा समझता, उसे हसी भी नही आती, बल्कि उसे ऐसा लगता जैसे उसने मो० द बेलगार्द के खाने की आदतों के विषय में कोई नई बात जान ली है। उदाहरण के लिए जैसे उसे यह पता लगा है कि मो० द बेलगार्द को मछलियों के कांटे या अखरोट, मूंगफली जैसी चीज के छिलके खाने का शौक है। ऐसी अवस्था में निस्संदेह वह खाने-पीने के मामले में उनसे कोई भी बात करना पसन्द न करता।

एक दिन तीसरे पहर जब न्यूमैन मदाम द सान्त्रे से मिलने उनके घर गया, तो नौकर ने आकर सूचना दी कि आप कुछ देर प्रतीक्षा करिए, क्योंकि मालकिन अभी खाली नहीं हैं। न्यूमैन कुछ देर कमरे में इधर-उधर घूमता रहा, कभी उनकी पुस्तकें उलट-पुलटकर देखता, तो कभी कमरे में रखे फूलों को सूंघता तथा उनके फोटोग्राफ देखता (जिन्हे वह बहुत ही सुन्दर समझता था), और आखिर उसने अपनी पीठ के पीछे किसी दरवाजे के खुलने की आहट सुनी। न्यूमैन ने मुड़कर देखा, तो देहलीज पर एक वृद्धा खड़ी थी। न्यूमैन को याद आया कि वह उसे घर में आते-जाते कई बार देख चुका है। यह औरत लम्बी और एकदम तनी थी तथा काले कपड़े पहने हुए थी। उसने एक टोपी लगा रखी थी। अगर इन बातों का न्यूमैन को पता होता, तो वह टोपी की बनावट से जान लेता कि वह वृद्धा फ्रेंच नहीं है, बल्कि अंग्रेज़ है। उसका चेहरा पीला था। शकल से

शिष्टता प्रकट होती थी। लेकिन उसपर विषाद की रेखाए थी। आंखों का रंग स्पष्ट था। उनसे उदासीनता प्रकट होती थी। वृद्धा की आखें उसके अंग्रेज़ होने का एक और प्रमाण थीं। उसने न्यूमैन को एक क्षण बड़े ध्यान से और डरते हुए देखा। इसके बाद वह ब्रिटिश शिष्टाचार के अनुसार जरा-सा झुक गई और अभिवादन किया।

"मदाम द सान्त्रे ने आपसे थोड़ी देर और प्रतीक्षा करने का अनुरोध किया है," उसने कहा, "वे अभी आई है और जल्दी ही कपड़े बदलकर आपसे मिलने आएंगी।"

"ओह, मैं, जितनी देर वे चाहेगी, उतनी देर प्रतीक्षा कर लूंगा," न्यूमैन ने कहा, "मेरी ओर से उनसे कह दीजिए कि जल्दी की कोई जरूरत नहीं है।"

"धन्यवाद श्रीमन्," वृद्धा ने धीरे से कहा ; और फिर न्यूमैन का संदेश ले जाने की बजाय वह दरवाज़े की देहलीज़ से कमरे में और अन्दर आ गई। एक क्षण के लिए उसने कमरे में चारो तरफ देखा और फिर एक मेज पर चली गई। वहां जाकर कुछ किताबों तथा अन्य सामान को व्यवस्थित ढंग से रखने लगी। न्यूमैन उसके अत्यन्त शिष्ट व्यवहार और उसके मर्यादायुक्त व्यक्तित्व से बड़ा प्रभावित हुआ। उसे इस महिला को नौकर के रूप में सम्बोधित करने में संकोच लग रहा था। कुछ देर वह महिला मेज़ को व्यवस्थित करने और पर्दो को ठीक-ठाक करने में व्यस्त रही, इस बीच वह कमरे में धीरे-धीरे इधर-उधर टहलता रहा। अन्त में न्यूमैन ने शीशे में यह देखा कि जब वह गुज़र रहा था, तो वह वृद्धा चुपचाप खड़ी उसकी ओर बड़े ध्यान से देख रही थी। स्पष्ट था कि वह कुछ कहना चाहती थी। यह सोचकर न्यूमैन ने उसे बोलने के लिए उत्साहित किया।

"आप अंग्रेज़ है ?" उसने पूछा।

"जी हां," वृद्धा ने जल्दी से धीरे उत्तर दिया, "मैं विल्टशायर में पैदा हुई थी।"

"और पेरिस के बारे में आपका क्या ख्याल है ?"

"ओह, मैं पेरिस के बारे में कोई राय नहीं रखती हूं, श्रीमन्," उसने फिर धीरे से कहा, "मैं यहां बहुत दिन से हूं।"

"आह, आप बहुत दिनों से यहां हैं ?"

"जी हां, श्रीमन्, मुझे यहां चालीस वर्ष से भी अधिक हो गए। मैं लेडी एमेलिन के साथ आई थी।"

"आपका मतलब है, वृद्धा मदाम द बेलगार्द के साथ ?"

"जी हां। मैं उनके साथ तब आई थी, जब उनका विवाह हुआ था। मैं उनकी दासी थी।"

"और आप तब से ही उनके साथ हैं ?"

"जी हां, मैं तब से ही इस घर में हू। मेरी मालकिन मुझसे उम्र में छोटी थीं। आप देख ही रहे हैं कि मैं बहुत बूढी हो गई हूं। अब मैं कोई काम नियमित रूप से तो नहीं कर पाती, लेकिन घर में बनी रहती हूं।"

"लेकिन आप तो बहुत स्वस्थ प्रतीत होती हैं," न्यूमैन ने वृद्धा के सीधे और तने हुए शरीर को देखते हुए कहा। न्यूमैन ने यह भी देखा कि बूढ़ी नौकरानी के गालों पर गुलाबीपन है।

"ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं अस्वस्थ नहीं हू। घर-भर में हांफते हुए और खांसते हुए घूम-घूमकर काम करना ठीक नहीं, लेकिन श्रीमन्, मैं वृद्धा हूं और इसी हैसियत से मैं आपसे कुछ बात कहना चाहती हूं।"

"ओह, कहिए, कहिए," न्यूमैन ने उत्सुकता से कहा, "आपको मुझसे डरने की ज़रूरत नहीं है।"

"जी श्रीमन्! मेरा ख्याल है कि आप बड़े दयालु है। मैंने आपको पहले भी देखा है।"

"आपका मतलब है, ज़ीने पर उतरते-चढ़ते ?"

"जी हां, जब आप काउंटेस से मिलने आते हैं। मैंने देखा है कि आप अकसर उनसे मिलने आते हैं।"

"हां, मैं अकसर उनसे मिलने आता हूं," न्यूमैन ने हंसते हुए कहा, "लेकिन इसमें आपके बहुत अधिक चौकन्ने होने की ज़रूरत नहीं है।"

"नहीं श्रीमन्, मुझे आपको आते देखकर बडी खुशी हुई है," हारी-थकी वृद्धा नौकरानी ने गम्भीरता से कहा। और वह न्यूमैन की ओर एक विचित्र भाव से देखने लगी। अब भी उसके चेहरे पर आदर और विनय का भाव था; उससे यह भी प्रकट होता था कि वृद्धा में अहंकार की भावना नहीं है और न ही वह यह समझती है कि मैं भी कुछ हूं। लेकिन उसमें एक प्रकार का हलका-सा

दुस्साहस था, जो शायद इसलिए उत्पन्न हो गया था कि वह पहले-पहल न्यूमैन के इतने निकट आकर बात करने का मौका निकाल सकी थी। इसके अलावा शायद एक बात यह भी थी कि जैसे उसने शिष्टाचार-सम्बन्धी पुरानी परम्पराओं को छोड़ दिया था। वृद्धा मदाम द बेलगार्द की निजी दासी ने शायद यह सोचा था कि मेरी मालकिन ने कोई नया व्यक्ति चुन लिया है, जिससे स्वयं उसके मन में कुछ घृणा का भाव पैदा हो रहा था।

"आप पारिवारिक मामलों में बहुत रुचि रखती हैं ?" न्यूमैन ने कहा।

"जी हां, मुझे गहरी रुचि है। विशेष रूप से काउंटेस में।"

"मुझे यह सुनकर खुशी हुई," न्यूमैन ने कहा। और इसके बाद ही वह मुस्कराते हुए फिर बोला, "मुझे भी रुचि है।"

"मैंने भी यही सोचा था। घर में ये सब बातें होते देखकर उनकी तरफ कोई ध्यान न देना बहुत कठिन है। देखने पर कुछ न कुछ अपना भी विचार बन ही जाता है। क्या ऐसा न होना सम्भव है श्रीमन् ?"

"आपका मतलब है एक नौकर की हैसियत से ?" न्यूमैन ने कहा।

"आह, यह बात आपने ठीक कही। मुझे भय है कि जब मैं इन सब बातों को सोचने लगती हूं, तो मुझे यह ध्यान नहीं रहता कि मैं नौकर हूं। लेकिन मैं क्या बताऊं। काउंटेस को मैं बहुत अधिक चाहती हूं ; अगर वह मेरी बच्ची होतीं, तो शायद मैं उनको और अधिक प्यार कर पाती। इसी वजह से मैंने इतना साहस किया है। श्रीमन्, लोग कहते हैं कि आप काउंटेस से विवाह करना चाहते हैं ?"

न्यूमैन ने नौकरानी की ओर देखा और फिर यह समझ लेने के बाद कि वह गप्पी नहीं है, बल्कि जो बात कह रही है, वह उसके हृदय से निकल रही है, उसकी आंखों में चिन्ता, आग्रह और विवेक का भाव झलक रहा है। "यह सच है," उसने कहा, "मैं मदाम द सान्त्रे से विवाह करना चाहता हूं।"

"और आप उन्हें अमरीका ले जाएंगे ?"

"वे जहां चाहेंगी, वहां उनको ले जाऊंगा।"

"जितनी दूर ले जाएंगे, उतना ही अच्छा है।" वृद्धा नौकरानी ने यकायक ज़ोर से कहा। लेकिन जल्दी ही उसने अपने-आपपर काबू कर लिया और एक रंगीन पेपरवेट लेकर उसे अपने काले एपरन से साफ करने लगी। "मैं इस घर या

परिवार के विरुद्ध कुछ नहीं कहना चाहती, श्रीमन् । लेकिन मेरा ख्याल है कि स्थान-परिवर्तन से बिचारी काउंटेस को लाभ होगा । यहां का वातावरण बड़ा विषादपूर्ण है ।"

"हां, यहां के वातावरण में उत्साह तो नहीं है," न्यूमैन ने कहा । "लेकिन मदाम द सान्त्रे स्वयं तो काफी प्रसन्न रहती हैं ।"

"वे तो सद्‌गुणों की साक्षात् देवी हैं । शायद आपको यह सुनकर आश्चर्य न हो कि पिछले कुछ महीनों से वे काफी खुश नजर आती है, जैसाकि पहले नहीं था ।"

न्यूमैन को इस कथन में शुभ आशा की झलक दिखाई दी, लेकिन उसने अपने हर्ष की तीव्र प्रतिक्रिया को प्रकट नहीं होने दिया । "क्या मदाम द सान्त्रे कुछ महीने पहले बहुत दुःखी रहती थीं ?" उसने पूछा ।

"बेचारी काउटेस, उनके दुःखी रहने का कारण था । मो० द सान्त्रे हमारी मधुर और प्यारी बच्ची के लिए अनुकूल पति नहीं थे, और फिर जैसाकि मैंने आपको बताया, इस घर का वातावरण बड़ा विषादपूर्ण है । मेरी तुच्छ राय में यह ज्यादा अच्छा होगा कि मदाम द सान्त्रे इस स्थान से हट जाएं, इसलिए आप मुझे ऐसा कहने के लिए क्षमा कीजिएगा, मुझे आशा है वे आपसे विवाह करने पर सहमत हो जाएंगी ।"

"मुझे भी यही आशा है कि वे मुझसे शादी करने के लिए राजी हो जाएंगी !" न्यूमैन ने कहा ।

"लेकिन अगर वे तुरन्त विवाह को राज़ी न हों, तो भी श्रीमन्, आप हिम्मत न छोड़िएगा । मैं आपसे यही प्रार्थना करना चाहती हूं । आप निराश न होइएगा । अगर मैं आपसे यह कहूं, तो आप बुरा न मानिएगा कि विवाह हमेशा किसी भी महिला के लिए किसी भी समय काफी खतरनाक होता है ; और यह निश्चय करना उस समय तो और भी कठिन है, जबकि अभी कुछ दिन पहले ही ऐसे पति से मुक्ति मिली हो, जो उन्हें बिलकुल ही पसन्द न था । लेकिन अगर वे किसी सज्जन, दयालु और सम्भ्रान्त व्यक्ति से विवाह कर सकें, तो मेरे ख्याल से उन्हें विवाह करने का निश्चय कर लेना चाहिए । श्रीमन्, घर में सब लोग आपकी बड़ी तारीफ करते हैं और अगर आप मुझे यह कहने की अनुमति दें, तो मैं भी यह कहना चाहती हूं कि आप बड़े सुन्दर हैं । आपकी शक्ल-सूरत में और स्वर्गीय

कि वह चली जाना चाहती है। लेकिन वह फिर भी खड़ी रही और डरती हुई-सी हर्षहीन मुस्कराहट के साथ उसकी ओर देखने लगी। न्यूमैन को कुछ निराशा-सी हुई और उसने अपनी उंगलियां कुछ संकोच, कुछ झुंझलाहट के साथ जाकेट की जेबों में डाल लीं। नौकरानी ने यह बात देख ली। "ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं फ्रेंच नहीं हूं," उसने कहा, "अगर मैं फ्रेंच नौकरानी होती, तो शायद मैं आपसे कहती कि बूढ़ी तो मैं ज़रूर हूं, लेकिन फिर भी मैने आपको जो सूचना दी है, उसके लिए मुझे कुछ इनाम मिलना चाहिए। लेकिन मैं अपना इनाम अंग्रेज़ी शिष्टाचार के तरीके से मांगूंगी। मैने जो कुछ आपसे कहा है, उसका मूल्य है और मुझे उसके बदले कुछ मिलना चाहिए।"

"कृपा कर बताइए कि कितना ?" न्यूमैन ने कहा।

"केवल इतना : आप वादा करें कि मैने आपसे जो बातें कही हैं, उनका कोई भी सकेत आप काउंटेस को नहीं देंगे।"

"अगर आप इतना ही चाहती है, तो मै यह वचन आपको देता हूं," न्यूमैन ने कहा।

"बस इतना ही श्रीमन्। धन्यवाद श्रीमन्। गुड-डे," और इसके बाद ज़रा-सा झुककर नौकरानी ने फिर अभिवादन किया और वह वृद्धा वहां से चली गई। उसी क्षण मदाम द सान्त्रे ने सामने वाले दरवाजे से कमरे में प्रवेश किया। उन्होंने नौकरानी को जाते हुए देख लिया और न्यूमैन से पूछा कि उनसे कौन बात कर रहा था।

"वही आपकी अंग्रेज नौकरानी !" न्यूमैन ने कहा, "वही वृद्धा जो काले कपड़े पहने थी और एक टोपी लगाए थी, और जो इधर-उधर घूमती रहती है और हमेशा ही बड़े शिष्ट ढंग से पेश आती है।"

"वृद्धा जो इधर-उधर घूमती रहती है और बड़े शिष्ट ढंग से पेश आती है ?······आह, आपका मतलब बेचारी मिसेज़ ब्रैंड से है। ओह, मुझे लगता है कि आपने उसका हृदय जीत लिया है !"

"उनका नाम तो मिसेज केक होना चाहिए," न्यूमैन ने कहा, "वृद्धा बड़े ही मधुर स्वभाव की है, बड़ी अच्छी तरह वोलती है।"

मदाम द सान्त्रे ने एक क्षण के लिए न्यूमैन की ओर देखा। "आपसे उसने ऐसी क्या बात कह दी ? वह वहुत अच्छी है, लेकिन हम लोगों का ख्याल है कि

बड़ी शुष्क है।"

"मेरा भी यही ख्याल है," न्यूमैन ने [illegible] उत्तर देकर अपनी जान छुड़ाई, "मैं तो उसे इसलिए चाहता हू कि वह इतने दिन से आपके साथ रही है। उसने मुझे बताया है कि जब आप पैदा हुई थीं, तब से वह इस घर में है।"

"जी हां," मदाम द सान्त्रे ने सरलता से उत्तर दिया, "बडी ही भरोसे की नौकरानी है। मेरा उसपर पूरा विश्वास है।"

न्यूमैन ने मदाम द सान्त्रे से उनकी मां या भाई अरबेन के बारे में अपने विचार कभी नहीं प्रकट किए थे; और न कभी यही संकेत किया था कि उन दोनों व्यक्तियों ने न्यूमैन पर क्या असर डाला है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन के विचारों को किसी तरह से पढ़ लिया था, इसीलिए वे इस बात की बड़ी सावधानी वरतती थीं कि ऐसा कोई मौका न आए, जब इन दोनों के बारे में कोई बातचीत छिड़ जाए। मदाम द सान्त्रे स्वयं कभी भी अपनी मां के घरेलू आदेशो के बारे में कोई चर्चा न करतीं; और न कभी अपने भाई के किसी विचार को न्यूमैन के सामने प्रकट करतीं। लेकिन उन्होंने वेलेंतीन के बारे में बातचीत की थी और मदाम द सान्त्रे ने यह बात नहीं छिपाई थी कि वे अपने छोटे भाई को बहुत चाहती हैं। न्यूमैन उन बातों को बड़े चाव से सुनता था; और कभी-कभी उसकी इच्छा यह होती थी कि जितने प्रेम और स्नेह से मदाम अपने छोटे भाई वेलेंतीन की चर्चा करती हैं; काश वे उन्हीं शब्दों में न्यूमैन के अपने बारे में भी प्रेमभरे उद्गार व्यक्त करें। एक बार मदाम द सान्त्रे ने बड़े गर्व से वेलेंतीन का कुछ करतब बताया था, जिसपर वे बड़ी खुश थीं। परिवार के कोई बड़े पुराने मित्र थे, जिनकी वेलेंतीन ने कोई सेवा की थी। यह कुछ ऐसी गम्भीर किस्म का काम था, जिनके बारे में समझा जाता था कि उसे करने की क्षमता वेलेंतीन में नहीं है। न्यूमैन ने कहा कि यह बात सुनकर मुझे खुशी हुई है और इसके बाद उसने कुछ ऐसी बातें शुरू कर दीं, जो वह बहुत दिनों से कहना चाहता था। मदाम द सान्त्रे उसकी बातें सुनती रहीं, लेकिन कुछ देर बाद उन्होंने कहा, "आप मेरे भाई वेलेंतीन के बारे में जिस तरह बातचीत करते हैं, वह ढंग मुझे पसन्द नहीं है।" इससे न्यूमैन को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने कहा, "मैंने तो वेलेंतीन के विरुद्ध कभी कोई बात नहीं कही। जब भी मैं बोला हूं, मैने हमेशा उनकी सराहना ही की है।"

"बहुत अधिक सराहना हो गई," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "सराहना करने में कुछ खर्च नहीं होता ; इस तरह की तारीफ तो बच्चों की ली जाती है । ऐसा लगता है कि आप उनका सम्मान नही करते ।"

"उनका सम्मान ? क्यों, मेरा तो ख्याल है कि मैं उनका बहुत सम्मान करता हू ।"

"आपका ख्याल है ? अगर आपको यह विश्वास ही नही है कि आप उनका सम्मान करते है, तो इसका मतलब है कि आप सम्मान नही करते ।"

'आप उनका सम्मान करती है ?" न्यूमैन ने कहा, "अगर आप करती हैं, तो मै उनका सम्मान करता हूं ।"

"अगर कोई व्यक्ति किसीसे प्रेम करता है, तो यह ऐसा सवाल है जिसका जवाब देने के लिए उसे बाध्य नहीं किया जा सकता," मदाम द सान्त्रे ने कहा ।

"अगर ऐसी बात है, तो आपको भी मुझसे यह सवाल नही करना चाहिए था । मैं आपके भाई को बहुत चाहता हूं ।"

"वह आपका मनबहलाव करता है । लेकिन आप उस जैसा बनना पसन्द नहीं करेंगे ।"

"मैं किसीकी भी तरह बनना पसन्द नहीं करूगा । इतना ही काफी है कि कोई अपनी ही तरह बन ले, क्योंकि यही काफी कठिन है ।"

"इसका क्या मतलब हुआ," मदाम द सान्त्रे ने पूछा, "कि कोई अपनी तरह ही बन ले ?"

"क्यों, यही मतलब हुआ कि वह उन कार्यो को कर सके, जिनकी उससे आशा की जाती है । अपने कर्तव्य का पालन करे ।"

"लेकिन ऐसा तो केवल तभी हो सकता है, जब कोई बहुत अच्छा हो ।"

"हां, बहुत-से लोग अच्छे होते हैं," न्यूमैन ने कहा, "वेलेंतीन मेरी दृष्टि से काफी अच्छे हैं ।"

मदाम द सान्त्रे कुछ देर चुप रहीं । "वह मेरी दृष्टि से अच्छा नही है," आखिर उन्होंने कहा, "मेरी इच्छा है कि वह कुछ करे ।"

"वे क्या कर सकते है ?" न्यूमैन ने पूछा ।

"कुछ नही । लेकिन फिर भी वह बहुत चतुर है ।"

"यही तो उनकी चतुराई का प्रमाण है," न्यूमैन ने कहा, "कि वे बिना कुछ

किए हुए भी प्रसन्न है।"

"मैं नहीं समझती कि वेलेंतीन सचमुच प्रसन्न है। वह चतुर है, उदार है, वीर है, लेकिन इस सबका क्या उपयोग है ? मेरा ख्याल है कि उसके जीवन में कोई बड़ा दुःख है और कभी-कभी उसके विषय में सोचते हुए मुझे बड़ी आशंकाएं होने लगती है। मैं नहीं जानती क्यों, लेकिन मैं सोचने लगती हूं कि उसे किसी बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ेगा—शायद मेरे भाई का अन्त दुःखद हो।"

"ओह, उन्हे मेरे भरोसे छोड़ दीजिए," न्यूमैन ने विनोदपूर्वक कहा, "मैं उनका ध्यान रखूंगा और उनपर कोई भी मुसीबत न आने दूंगा।"

एक दिन संध्या को मदाम द बेलगार्द के कमरे में बड़े ढग से बातचीत का क्रम चल रहा था। मारक्विस चुपचाप इधर से उधर घूम रहे थे, ठीक उसी तरह से जैसे शिष्टाचार के चिकने चिट्टे किसी महल के सामने कोई सन्तरी पहरा दे रहा हो। उनकी मां बैठी-बैठी आग की तरफ देख रही थी ; पुत्र-वधू एक बहुत बड़ी टेपेस्ट्री की पट्टी के सामने बैठी काम कर रही थीं। आम तौर पर इस समय घर में तीन या चार मेहमान आए होते थे, लेकिन उस दिन बाहर इतना तेज़ आंधी-तूफान था कि रोज़ के आनेवाले लोग भी नहीं पहुंच सके थे। बीच-बीच में बातें करते-करते ये लोग काफी चुप हो जाते थे। उस समय तेज हवा के चलने की आवाज़ और बरसात के पानी के गिरने की ध्वनि स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ने लगती थी। न्यूमैन चुपचाप मौन बैठा था और घड़ी देख रहा था। उसने तय कर रखा था कि वह ठीक ग्यारह बजे तक रुकेगा और इसके बाद एक क्षण भी नहीं ठहरेगा। मदाम द सान्त्रे लोगों के बीच से उठकर चली गई थीं और खिड़की पर उठे हुए परदे के पास खड़ी-खड़ी बाहर की तरफ देख रही थीं। उनका माथा खिड़की के कांच से छू रहा था और उनकी दृष्टि अंधेरे में हो रही बरसात पर थी। यकायक वे अपनी भाभी के पास आईं।

"ईश्वर के लिए," उन्होंने विशेष प्रकार की उत्सुकता प्रकट करते हुए कहा, "पियानो पर चलिए और कुछ बजाइए।"

उनकी भाभी ने टेपेस्ट्री का कुछ हिस्सा उठा लिया और उसमें एक छोटे-से सफेद फूल की तरफ इशारा किया। "इस समय मुझसे इसे छोड़ने के लिए न कहो, बहुत ही बढ़िया फूल काढ़ रही हूं। मेरे इस फूल की सुगन्ध अत्यन्त मधुर होगी ; और यह सुगन्ध मैं सुनहले रंग के रेशम से निकाल रही हूं। इस समय मैं सांस साधे

हुए हू ; इसे छोड़कर नहा उठ सकतो। तुम्हीं कुछ क्यों नही बजा लेतीं।"

"आपके रहते हुए मैं पियानो बजाऊं ! यह तो बड़ी वाहियात बात है भाभी," मदाम द सान्त्रे ने कहा। लेकिन दूसरे ही क्षण वे पियानो पर जा बैठीं और उन्होंने काफी तेज़ी से उसे बजाना शुरू कर दिया। वे कुछ देर बहुत अच्छे ढंग से तेज़ी के साथ पियानो बजाती रहीं ; जब वे रुक गईं, तो न्यूमैन पियानो के पास गया और उसने अनुरोध किया कि वे फिर पियानो बजाएं। मदाम द सान्त्रे ने अपना सिर हिला दिया और जब और ज्यादा जोर दिया, तो उन्होंने कहा, "मैं पियानो आपके मनोरंजन के लिए नही बजा रही थी ; वह तो मैं अपने लिए बजा रही थी।" वे फिर खिड़की के पास चली गईं और बाहर देखने लगीं। और इसके कुछ देर बाद वे कमरे से चली गईं। जब न्यूमैन रवाना हुआ, तो अरबेन द बेलगार्द उनके साथ हमेशा की तरह बाहर आए और तीन सीढ़ियां नीचे उतरे। जीने के नीचे एक नौकर न्यूमैन का ओवरकोट लिए खड़ा था। न्यूमैन ने ओवरकोट पहना ही था कि उसने देखा कि गलियारे की दूसरी तरफ से मदाम द सान्त्रे उसकी तरफ आ रही हैं।

"क्या आप शुक्रवार को घर पर रहेंगी ?" न्यूमैन ने पूछा।

उन्होंने एक क्षण के लिए उत्तर देने के पहले न्यूमैन के चेहरे की तरफ देखा। "आपको मेरी मां और भाई पसन्द नहीं हैं," उन्होने कहा।

वह एक क्षण के लिए झिझका और फिर उसने धीरे से कहा, "नहीं।"

मदाम ने अपना हाथ ज़ीने की रेलिंग में लगे डण्डों पर रख लिया और ज़ीने पर ऊपर चढ़ने की तैयारी करने लगी। उनकी आखें ज़ीने की पहली सीढ़ी पर टिकी थीं।

"जी हां, मैं शुक्रवार को घर पर ही रहूंगी," और इसके बाद वे धुंधले-से प्रकाश में ज़ीने के ऊपर चली गईं।

शुक्रवार को जैसे ही वह आया, मदाम ने उससे पूछा कि क्या वह यह बताएगा कि उसे उनका परिवार पसन्द क्यों नहीं है।

"आपका परिवार पसन्द नहीं है ?" उसने आश्चर्य से प्रश्न किया। "यह सुनने में बड़ा भयंकर लगता है। मैंने तो ऐसी कोई बात नहीं कहीं। क्या कुछ ऐसा मैंने कहा है ? अगर मैंने कहा भी है, तो मेरा यह मतलब नहीं था।"

"मेरी इच्छा है कि आप मुझे बताएं कि उन लोगों के बारे में आपकी क्या

राय है," मदाम द सान्त्रे कहा।

"मैं आपको छोड़कर और किसीके बारे में नहीं सोचता हूं।"

"इसका कारण यह है कि आपको वे लोग पसन्द नहीं है। सच-सच बताइए, मैं आपकी बात का ज़रा भी बुरा न मानूंगी।"

"बात यह है कि मुझे आपके बड़े भाई से प्रेम नहीं है," न्यूमैन ने कहा, "मुझे अब यह बात याद आती है। लेकिन मेरे यह कहने का लाभ क्या है ? मैं तो इसे भूल चुका था।"

"आपका स्वभाव बड़ा ही अच्छा है," मदाम द सान्त्रे ने गम्भीरता से कहा। और फिर जैसे वे यह न चाहती हों कि बड़े भाई के विरुद्ध न्यूमैन कोई बात कहे, मदाम मुड़ गईं और उन्होने न्यूमैन को बैठ जाने का इशारा किया।

लेकिन न्यूमैन उनके सामने खड़ा रहा और बोला, "इससे भी ज़्यादा बड़ी बात यह है कि वे लोग स्वयं मुझे पसन्द नहीं करते।"

"नहीं—वे पसन्द नहीं करते," मदाम ने कहा।

"और क्या आपका यह ख्याल नही है कि वे गलत हैं ?" न्यूमैन ने पूछा, "मैं नहीं समझता कि मैं कोई ऐसा आदमी हूं, जिसे लोग पसन्द न करें।"

"मेरा ख्याल है कि जिन लोगों को पसन्द किया जा सकता है, उन्हें कभी-कभी नापसन्द भी किया जा सकता है। और मेरे भाई—मेरी मां," मदाम ने आगे कहा, "इन दोनों ने आपको रुष्ट तो नही किया ?"

"हां, कभी-कभी किया है।"

"लेकिन आपने यह बात कभी प्रकट नहीं की।"

"यह तो अच्छा ही हुआ।"

"हां, यह तो अच्छा ही हुआ। उन लोगों का ख्याल है कि उन्होने आपके साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया है।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे मेरे साथ और भी अधिक अशिष्टतापूर्ण व्यवहार कर सकते थे," न्यूमैन ने कहा, "मैं सच कहता हूं कि इसके लिए मैं उनका बड़ा आभारी हूं कि उन्होंने मेरे साथ कठोर व्यवहार नहीं किया।"

"आप बहुत उदार हैं," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "लेकिन यह बड़ी अप्रिय स्थिति है।"

"आपका मतलब यह है उन लोगों के लिए। मेरे लिए नहीं।"

"मेरे लिए," मदाम द सान्त्रे ने कहा।

"ऐमी हालत में नहीं, जबकि मैंने उनकी बुरी लगनेवाली सारी बातों को क्षमा कर दिया हो," न्यूमैन ने कहा, "वे यह तो नही समझते कि मैं भी उन्हींकी तरह अच्छा हूं। लेकिन मैं ऐसा समझता हूं। लेकिन इस बारे में हम लोग झगड़ेंगे नहीं।"

"मैं आपसे सहमत नहीं हो सकती, जब तक कि मैं कुछ अप्रिय लगनेवाली बात न कह लूं। मेरा मत आपके विरुद्ध है। मैं समझती हूं कि आप उन लोगों को ठीक से नहीं समझ पाए।"

न्यूमैन बैठ गया और वह कुछ देर तक मदाम को देखता रहा। "मै भी यह नही समझता कि मै वस्तुत: उन लोगों को जान गया हूं। लेकिन जब आप कहती हैं, तो मै आपकी बात को माने लेता हूं।"

"यह तो कोई दृढ़ कारण नहीं है," मदाम द सान्त्रे ने मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं, यह बहुत दृढ़ कारण है। आप बड़ी उत्साही हैं और आपका स्तर भी बहुत ऊंचा है; लेकिन यह सब आपमें स्वाभाविक और अकृत्रिम लगता है; ऐसा नहीं प्रतीत होता है कि आपने जबर्दस्ती इस चीज को अपनाया है, न ही ऐसा लगता है कि आप बहुत बन-संवरकर बढ़िया-सा चित्र खिचाने के लिए बैठी हैं। आप यह सोचती हैं कि मैं एक ऐसा आदमी हूं, जिसको जीवन के बारे में सिवाय धन कमाने के और सौदे करने के बारे में कुछ भी नहीं पता है। यह ख्याल काफी हद तक ठीक है, लेकिन यह मेरा पूरा चित्र नहीं है। हर आदमी को कुछ और चीज़ भी प्राप्त करनी होती है, हालांकि मैं यह नहीं जानता कि वह क्या चीज़ है। मैं शुरू से धन कमाने की चिन्ता में रहा, लेकिन मैंने धन की कोई विशेष रूप से चिन्ता की हो, यह बात नहीं है। मेरे पास और कुछ करने को था ही नहीं, और यह असम्भव था कि मैं हाथ पर हाथ रखकर चुपचाप बैठा रहता। हमेशा अपने साथ और अन्य लोगों के साथ मेरा व्यवहार बड़ा सरल रहा है। मैने दूसरे लोगों के अनुरोध पर—नीच और दुर्जनों को छोड़ दीजिए, जो कुछ अन्य लोगों ने मुझसे कहा है, वह कर दिया है। जहां तक आपके भाई और आपकी मां का सम्बन्ध है," न्यूमैन ने कहा, "केवल एक ऐसी बात है, जिस-पर मेरी उनसे लड़ाई हो सकती है। मैं उनसे यह नहीं कहता कि वे आपके सामने मेरी तारीफों के पुल बांधें, लेकिन मैं उनसे यह ज़रूर कहता हूं कि वे आपसे

मेरे विषय में कुछ न कहें। अगर मुझे यह पता लगा कि उन्होंने आपसे मेरी बुराई की है, तो उनसे मेरा झगड़ा हो जाएगा।"

"उन्होंने आपके बारे में मुझसे कोई बात नहीं कही। उन्होंने आपकी कोई बुराई मुझसे नहीं की।"

"ऐसी हालत में," न्यूमैन ने कहा, "मैं कहूंगा कि वे इस दुनिया के लिए बेकार हैं!"

मदाम द सान्त्रे को उसकी आवाज में कुछ चौंका देनेवाली बात नजर आई। वे सम्भवतः इस बात का कुछ उत्तर देतीं, लेकिन तभी कमरे का दरवाजा खुल गया और अरबेन द बेलगार्द ने अन्दर प्रवेश किया। वहां न्यूमैन को पाकर उसे कुछ आश्चर्य-सा हुआ। लेकिन आश्चर्य का यह भाव उसके प्रसन्न चेहरे पर केवल एक क्षण के लिए ही दिखलाई पड़ा। न्यूमैन ने मारक्विस को इतना हर्षित कभी नहीं देखा था। उनका पीला और बुझा-सा चेहरा कुछ बदल-सा गया था। उन्होंने दरवाजे को खोले रखा, जिससे कोई अन्य व्यक्ति भी अन्दर कमरे में आ सके। अगले ही क्षण वृद्धा मदाम द बेलगार्द एक ऐसे सज्जन के सहारे से कमरे में आई, जिन्हें न्यूमैन ने पहले कभी नहीं देखा था। वह तो पहले ही उठ खड़ा हुआ था। अब मदाम द सान्त्रे भी उठ खड़ी हुई, जैसा कि वे अपनी मां के आने पर हमेशा किया करती थीं। अरबेन ने न्यूमैन का हंसते हुए स्वागत किया था। अब वह कुछ दूरी पर अलग खड़ा था और धीरे-धीरे अपना एक हाथ दूसरे हाथ से रगड़ रहा था। उनकी मां अपने साथ वाले सज्जन के साथ आगे आ गई। उन्होंने बड़ी शान से सिर झुकाकर न्यूमैन का अभिवादन स्वीकार किया और इसके बाद उन अजनबी सज्जन को अपने हाथ से मुक्त कर दिया, जिससे वे उसकी पुत्री के सामने झुककर अभिवादन कर सकें।

"मेरी पुत्री," उन्होंने कहा, "मैं एक अपरिचित रिश्तेदार लार्ड डीपमेयर को तुमसे मिलाने लाई हूं, ये हमारे चचेरे भाई हैं, लेकिन जो काम उन्हें बहुत पहले करना चाहिए था, वह काम ये आज करने आए हैं।—यानी आज पहली बार यह हमसे मिलने आए हैं।"

मदाम द सान्त्रे मुस्करा दीं और उन्होंने लार्ड डीपमेयर से हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। "यह बड़ी असाधारण बात है," लार्ड डीपमेयर ने कहा, "लेकिन यह सच है कि मैं पहली बार पेरिस में तीन या चार

सप्ताह से अधिक ठहरा हूं।"

"और आप यहां कब से आए हुए हैं ?" मदाम द सान्त्रे ने पूछा।

"ओह, पिछले दो महीने से यहां हूं," लार्ड डीपमेयर ने कहा।

ये दोनों बातें बड़ी अशिष्ट थी, लेकिन लार्ड डीपमेयर के चेहरे को एक बार देख लेने के बाद आप सन्तुष्ट हो जाते, जैसे मदाम द सान्त्रे सन्तुष्ट हो गई, कि इन बातों से लार्ड डीपमेयर की मूर्खता ही प्रकट हुई थी। जब सब लोग बैठ गए तो न्यूमैन भी, जो बातचीत में शामिल नही था, एक कुर्सी पर बैठ गया और अभ्यागत को देखने लगा। जहां तक लार्ड डीपमेयर के हुलिये के बारे में किसी विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं थी, वे छोटे कद के दुबले-पतले व्यक्ति थे। उनकी आयु लगभग तैंतीस वर्ष की होगी। वे गंजे थे और उनकी नाक छोटी थी। ऊपर वाले जबड़े में आगे की तरफ कोई दांत नहीं था। उनकी आंखें गोल, सजीव और नीली थी तथा ठोढ़ी पर कई मुंहासे थे। ज़ाहिर था, वे बड़े सकोची थे और काफी हसोड़ भी। बीच में जब वे सांस लेते, तो कुछ ऐसी आवाज़ होती, जिससे आदमी चौक पड़ता था। वैसे उनका शरीर साधारण था, उससे एक प्रकार की क्रूरता प्रकट होती थी और ऐसा लगता था कि उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के जो अवसर मिले थे, उनका उन्होने पूरा-पूरा लाभ नही उठाया। उन्होने कहा कि पेरिस बड़े मजे की जगह है, लेकिन अगर कोई वास्तव में मनोरजन करना चाहता है, तो डबलिन से अच्छा स्थान कोई नही है। उन्होने कहा कि मुझे तो डबलिन लंदन से भी ज्यादा अच्छा लगता है। क्या मदाम द सान्त्रे डबलिन कभी नही गई ? किसी दिन आप सब लोग वहां आइए, तो मैं आपको कुछ आयरिश खेल दिखलाने ले चलूगा। उन्होने बताया कि मैं तो हमेशा मछली के शिकार के लिए आयरलैड जाता हूं और पेरिस तो मैं कुछ नया सामान लेने आया था। वैसे तो ये चीज़ें डबलिन में भी आती हैं, लेकिन मै प्रतीक्षा नहीं कर सकता था। पेरिस में मै नौ बार 'ला पोमे द पेरिस' सुन आया हूं। मदाम द सान्त्रे ने अपने दोनों हाथ बांध लिए और कुर्सी से अपनी पीठ टिका ली तथा बड़ी उलझनभरी दृष्टि से लार्ड डीपमेयर को देखती रहीं। इस तरह का उलझन का भाव समाज में बातचीत करते समय मदाम द सान्त्रे के चेहरे पर दिखलाई पड़ना असाधारण बात थी। वृद्धा मदाम द बेलगार्द इसके विपरीत केवल मुस्करा-भर रही थीं। उनके पुत्र मारक्विस ने कहा कि हलके ओपेरा संगीत में उनका सबसे प्रिय

ओपेरा गाजा लाद्रा है। इसके बाद मारक्विस ने ड्यूक और कार्डिनल, वृद्धा काउंटेस और लेडी बारबेरा के बारे में पूछना शुरू कर दिया। लार्ड डीपमेयर ने इन बातों के उत्तर कोई बहुत उत्साह से नहीं दिए। इस तरह कोई पन्द्रह मिनट बिताने के बाद न्यूमैन चलने के लिए उठ खड़ा हुआ। मारक्विस उनको छोड़ने तीन कदम हाल में आए।

"क्या यह सज्जन आयरिश हैं?" न्यूमैन ने नवागन्तुक की दिशा में आंख से इशारा करते हुए पूछा।

"इनकी मां लार्ड फाइनकेन की पुत्री थीं," मारक्विस ने कहा, "आयरलैंड में इनके पास बहुत बड़ी जायदाद है। लेडी ब्रिजेट के कोई ऐसा दूर या पास का पुरुष उत्तराधिकारी नहीं था, जो जायदाद पा सकता। यह बड़ी असाधारण स्थिति थी। इसलिए संयोग से उनकी सारी सम्पत्ति भी इन्हींको मिली। लेकिन लार्ड डीपमेयर की उपाधि अंग्रेज़ सरकार की है और इंग्लैण्ड में भी इनके पास असीम सम्पत्ति है। इनका व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक है।"

न्यूमैन ने कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन मारक्विस जैसे ही शिष्टाचारपूर्वक पीछे जाने के लिए मुड़े कि उन्हें न्यूमैन ने रोक लिया। "यह अच्छा मौका है कि मै आपको धन्यवाद दे दूं," उन्होंने कहा, "कि आप लोगों ने अपनी बहन के मामले में मुझे सहायता देने के वादे पर इतनी दृढ़ता से अमल किया।"

मारक्विस एकटक देखते रहे। "सच, मैंने तो ऐसा कुछ भी नहीं किया, जिसकी मै डींग हांक सकूं," उन्होंने कहा।

"ओह, इतनी विनय मत दिखाइए," न्यूमैन ने हंसते हुए उत्तर दिया। "म यह विश्वास नहीं कर सकता कि अपने काम में मुझे केवल अपनी वजह से ही इतनी सफलता मिल रही है, और मेरी ओर से अपनी मां को भी धन्यवाद दे दीजिएगा!" और इसके बाद न्यूमैन मो० द बेलगार्द को वहीं खड़ा छोड़कर रवाना हो गया।

चौदह

अगली बार जब न्यूमैन रू द ल यूनिवर्सिते गया, तो संयोगवश उसे मदाम द सान्त्रे अकेली मिल गईं। इस बार वह निश्चित इरादे से आया था और अपनी बात कहने में उसने जरा भी समय नहीं लगाया। इसके अलावा मदाम द सान्त्रे के चेहरे से भी यह प्रकट हो रहा था कि वे कुछ इसी तरह की बात की आशा कर रही थीं।

"आपके पास आते हुए मुझे अब छः महीने पूरे हो गए हैं," उसने कहा, "और मैंने आपसे दूसरी बार विवाह की चर्चा नहीं की। यही आपने मुझसे कहा था; मैंने उसका पालन किया। मेरी स्थिति में कोई भी और व्यक्ति क्या इससे अच्छा आचरण कर सकता था ?"

"आपने बड़ी शालीनता का परिचय दिया," मदाम द सान्त्रे ने धीरे से कहा।

"तो लीजिए, मैं अब बदल रहा हूं," न्यूमैन ने कहा, "मेरा यह मतलब नहीं है कि मैं अब शालीन नहीं रहूंगा, बल्कि मै अब फिर उसी स्थल से बात शुरू करूंगा, जहां से वह आरम्भ हुई थी। मैंने अपना वादा पूरा कर दिया है। मैं अपनी उस स्थति से बिलकुल ही नहीं हटा हूं। जो मैं उस समय चाहता था, वह आज भी चाहता हूं। अब मुझे अपनी इच्छा पूरी होने का पहले से अधिक विश्वास हो गया है। मुझे अपने ऊपर भी विश्वास हो गया है और मैं आपपर भी पहले से अधिक विश्वास करने लगा हूं। मैं अब आपको अधिक अच्छी तरह जानता हूं, हालांकि मुझे ऐसी कोई बात नहीं मालूम हुई, जिसका मुझे तीन महीने पहले विश्वास नहीं था। आप सब कुछ हैं—आप मुझसे बढकर हैं—उन सब चीजों से या लोगों से, जिनकी मैं कल्पना कर सकता हू या जिनकी कामना कर सकता हूं। आप भी मुझे अब जान गई हैं ; आपको मुझे जानना ही चाहिए। मैं यह तो नहीं कहूंगा कि आपने मेरा सर्वोत्तम रूप देख लिया है—लेकिन इतना सही है कि आपने मेरा सबसे खराब रूप अवश्य देख लिया है। मुझे आशा है कि आप भी इस बीच मेरे प्रश्न पर विचार करती रही होंगी। आपने देखा होगा कि मैं केवल प्रतीक्षा कर रहा था ; यह तो आप कल्पना नहीं कर सकतीं कि मैं बदल रहा था। अब आप मुझसे क्या कहेंगी ? आप कह दीजिए कि सब ठीक है, उचित है, और मैंने बड़े धैर्य का परिचय दिया है और इसका मुझे पुरस्कार मिलना

चाहिए। और इसके बाद आप मुझसे विवाह करने के लिए सहमत हो जाइए। मदाम द सान्त्रे, आप यह कह दीजिए। कह दीजिए।"

"मैं जानती थी कि आप केवल प्रतीक्षा कर रहे हैं," मदाम द सान्त्रे ने कहा, और मुझे यह पक्का विश्वास था कि आज का दिन जरूर आएगा। मैंने इस बारे में काफी कुछ सोचा है। पहले मुझे इस विषय में कुछ-कुछ डर था। लेकिन अब मुझे डर नहीं लगता।" वे एक क्षरण के लिए रुकीं और इसके बाद उन्होंने फिर कहा, "इससे कितनी राहत मिली है।"

मदाम द सान्त्रे एक छोटी कुर्सी पर बैठी थीं और न्यूमैन उनके पास एक सोफे पर बैठा था। वह थोड़ा झुक गया और उसने उनका हाथ अपने हाथ में ले लिया। एक क्षरण तक मदाम द सान्त्रे ने अपना हाथ न्यूमैन के हाथ में ही रहने दिया। "इसका मतलब है कि मैंने इतने दिन जो प्रतीक्षा की, वह व्यर्थ ही नहीं की," उसने कहा। उन्होने एक क्षरण न्यूमैन की तरफ देखा और फिर उनकी आंखों में आंसू भर आए। "मेरे साथ," न्यूमैन ने कहा, "आप बिलकुल सुरक्षित रहेंगी—उतनी ही सुरक्षित,"—और फिर वह अपने उत्साह में जो उपमा देने-वाला था, उसपर रुककर कुछ विचार करने लगा—"उतनी ही सुरक्षित," उसने सरल गम्भीरता से कहा, "जितनी कि अपने पिता के सरक्षरण में।"

लेकिन मदाम द सान्त्रे उसकी तरफ देखती रहीं और उनकी आंखों से झरने-वाले आंसू और बढ़ गए। इसके बाद अकस्मात् उन्होंने अपना चेहरा सोफे के हत्थे पर रखकर छिपा लिया, जो उसकी कुर्सी के बगल में ही था तथा बिना आवाज़ किए सिसकने लगीं। "मैं कमज़ोर हूं—मैं कमज़ोर हूं," न्यूमैन ने मदाम के मुंह से ये शब्द निकलते सुने।

"इसीलिए तो यह और भी ज़रूरी है कि आप अपने-आपको मेरे हवाले कर दें," उसने उत्तर दिया। "आपको फिक्र क्या है? यहां तो ऐसी कोई बात नहीं है, जिसकी चिन्ता आपको हो। मैं आपको खुश रखने का वादा करता हूं। क्या इसपर विश्वास करना बहुत कठिन काम है?"

"आपको हर बात बड़ी साधारण लगती है," उन्होंने अपना सिर उठाते हुए कहा, "लेकिन वस्तुतः ऐसा नहीं है। मैं आपको बहुत चाहती हूं। मैं आपको छः महीने पहले भी पसन्द करती थी और अब तो मुझे अपने प्रेम पर पूरा भरोसा हो गया है और आप तो मुझे चाहते ही हैं। लेकिन यह इतना सरल नहीं

है कि मैं आपसे विवाह करने का फैसला कर लू। और भी बहुत-सी बातें हैं, जिनके सम्बन्ध में सोचना है।"

"एक ही ऐसी बात है, जिसके बारे में विचार किया जाना चाहिए—और वह यह कि हम एक-दूसरे को प्यार करते है," न्यूमैन ने कहा, और चूंकि मदाम द सान्त्रे चुप थी, उसने यह भी कहा, "अगर आप मुझसे शादी नहीं करना चाहतीं, तो ठीक है। मुझसे कुछ भी न कहिए।"

"अगर मैं कुछ और न सोच पाती, तो बहुत खुश होती," अन्त में मदाम द सान्त्रे ने कहा, "कुछ भी न सोचती, अपनी दोनों आंखें बन्द कर लेती और अपने-आपको आपके हवाले कर देती। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं क्षीण हूं, मुझमें साहस नहीं है, मेरी उम्र ज़्यादा हो गई है, मैं कायर हूं और मुझे यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि मै दुबारा शादी करूं और सच पूछिए तो मुझे यही बड़ा अजीब-सा लगता है कि मैंने शादी के बारे में आपकी बात सुनी ही क्यों। जब मैं लड़की थी, तो सोचा करती थी कि अगर मैं शादी करने के लिए स्वतन्त्र हुई और मुझे अपनी मर्ज़ी की शादी करने का अवसर मिला, तो जिस आदमी की मैंने कल्पना की थी, वह आपसे बहुत भिन्न था।"

"यह बात मेरे खिलाफ तो नहीं है," न्यूमैन ने खिलखिलाकर कहा, "तब आपकी रुचि स्थिर नहीं हो पाई थी।"

न्यूमैन को हंसते देखकर मदाम द सान्त्रे भी मुस्करा दी। "क्या आपकी रुचि स्थिर हो गई है?" उन्होंने पूछा और फिर मदाम ने कुछ बदले हुए स्वर में कहा, "आप कहां रहना चाहेंगे?"

"दुनिया में किसी भी जगह, जहां आप रहना पसन्द करें। इस बारे में हम लोग आसानी से फैसला कर सकते हैं।"

"मैं नहीं जानती कि मै आपसे यह प्रश्न क्यों कर रहीं हूं," मदाम ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "रहने के स्थान के विषय में मुझे कोई ज़्यादा फिक्र नहीं है। मेरा तो ख्याल है कि अगर मैं आपसे शादी कर लूं, तो मै दुनिया की किसी भी जगह रह सकती हूं। आपको मेरे बारे में कई गलतफहमियां हैं; आप समझते हैं कि मुझे बहुत-सी चीज़ों की ज़रूरत पड़ेगी—और यह कि मेरे लिए बड़ी शान-शौकत और बड़े वैभवशाली जीवन बिताने का प्रबन्ध करना होगा। मुझे यह भी भरोसा है कि आप ये सब चीज़ें जुटाने में काफी परिश्रम करने और

कष्ट उठाने के लिए भी तैयार हैं। लेकिन यह सब एकतरफा बात है; मैंने तो कभी यह सिद्ध करने की कोशिश नहीं की कि मुझे ये सब चीजें चाहिए।" मदाम कुछ देर के लिए रुक गई और उसकी तरफ देखने लगीं। उनकी वाणी और मौन, दोनों न्यूमैन को इतने मधुर लग रहे थे कि उसने जरा भी जल्दबाज़ी नहीं दिखलाई। ठीक उसी तरह, जिस तरह कोई स्वर्णिम सूर्योदय को जल्दी देखने के लिए जल्दबाज़ी नही दिखलाता। "आप इतने भिन्न प्रकार के थे कि पहले मुझे बड़ी कठिनाई महसूस होती थी, लेकिन वही कठिनाई बाद में बड़े आनन्द का विषय बन गई। मुझे खुशी हुई कि आप मेरी कल्पना से भिन्न हैं। लेकिन अगर मैंने यह बात कही होती, तो शायद किसीने इसे न समझा होता। मेरा मतलब केवल अपने परिवार के लोगों से ही नहीं है।"

"उन लोगों ने कहा होता कि मैं एक बड़ा ही अजीब किस्म का जानवर हूं, एह ?" न्यूमैन ने कहा।

"वे लोग कहते कि मै आपके साथ कभी खुश नहीं रह सकती—आप इतने भिन्न किस्म के व्यक्ति हैं। और मैं यह कहती कि चूंकि आप इतने भिन्न हैं, इसी-लिए मैं बहुत सुखी हो सकती हूं, लेकिन वे लोग मुझसे कहीं अधिक अच्छे कारण बता देते। लेकिन मै केवल एक ही कारण,"— और वे फिर रुक गई।

लेकिन इस बार स्वर्णिम सूर्योदय के बीच एक गुलाबी बादल-सा आ गया था, जिसे न्यूमैन की इच्छा हुई कि वह थाम ले। "आप शायद एक ही कारण बतातीं और वह यह कि आप मुझसे प्रेम करती हैं।" न्यूमैन ने धीरे से कहा और चूंकि मदाम द सान्त्रे के पास अन्य कोई बेहतर वजह नहीं थी, इसलिए उन्होंने न्यूमैन की ही बात मान ली।

न्यूमैन फिर दूसरे दिन आया और जैसे ही वह घर में घुसा, गलियारे में उसे उसकी मित्र मिसेज़ ब्रैड मिल गईं। वे यूंही घूम-फिर रही थी और जैसे ही उन्होंने न्यूमैन को देखा, झुककर अभिवादन किया। इसके बाद उस नौकर की ओर मुड़कर, जिसने न्यूमैन के लिए दरवाज़ा खोला था, उसकी तरफ बड़ी शान से घूमकर परिष्कृत अंग्रेज़ी में उन्होंने कहा, "आप जा सकते हैं। मैं स्वयं मोंश्यू को ले जाने में अपने-आपको गौरवान्वित अनुभव करूंगी।" हालांकि यह शब्द काफी दृढ़ता और शान से कहे गए थे, लेकिन न्यूमैन को ऐसा लगा कि उनका कण्ठ कुछ प्रकम्पित-सा था। जैसे मिसेज़ ब्रैड को इस तरह के आदेश देने का अभ्यास न

हो। नौकर ने कुछ अशिष्ट ढंग से घूरकर मिसेज़ ब्रैंड को देखा, लेकिन वह धीरे से वहां से खिसक गया और मिसेज ब्रैंड न्यूमैन को ज़ीने के रास्ते ऊपर ले गईं। आधा ज़ीना पार करने पर सीढ़ियां कुछ घूमती थीं, जहां एक सीढ़ी काफी बड़ी थी। वहीं मोड़ पर दीवार में १८वीं शताब्दी की एक अप्सरा की मूर्ति रखी थी, जो मटमैले रंग की थी और कहीं-कहीं से फट भी गई थी। यहां मिसेज ब्रैंड रुक गईं और करुणापूर्ण दृष्टि से न्यूमैन को देखने लगीं।

"मुझे शुभ समाचार का पता चल गया है श्रीमन्," उन्होंने धीरे से कहा।

"आपको इस बात का हक है कि यह समाचार आपको सबसे पहले पता चलता," न्यूमैन ने कहा, "आपने हमेशा से इस घटना में मित्रतापूर्ण रुचि रखी है।"

मिसेज़ ब्रैंड मुड़ गईं और उस मूर्ति पर जमी धूल फूंक मारकर साफ करने लगीं, हालाकि सफाई का वे केवल बहाना कर रही थीं।

"मेरा ख्याल है कि आप मुझे बधाई देना चाहती हैं," न्यूमैन ने कहा। "इसके लिए मैं आपका बड़ा आभारी हूं," और फिर उसने कहा, "उस दिन आपसे बातें करके मुझे बड़ा सुख मिला था।"

वे फिर मुड़ गईं। जाहिर था कि सन्तुष्ट थीं। "आप यह मत सोचिएगा कि मुझे किसीने कोई बात बताई है," मिसेज़ ब्रैंड ने कहा, "मैंने तो केवल अनुमान लगाया था, लेकिन जब आप अन्दर आए और जैसे ही मैंने आपको देखा, तो मैंने सोचा कि मेरा अनुमान बिलकुल ठीक है।"

"आप बहुत चतुर है," न्यूमैन ने कहा, "मेरा तो पक्का विश्वास है कि आप चुपके से ही हर बात देख और समझ लेती हैं।"

"श्रीमन्, मैं बेवकूफ नहीं हूं, ईश्वर को धन्यवाद है। मैंने कुछ और भी सोचा है," मिसेज़ ब्रैंड ने कहा।

"वह क्या है ?"

"श्रीमन् मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है ; और मैं नहीं समझती कि आप इसका विश्वास करेंगे। जो भी हो, कम से कम उस बात को जानकर आप खुश नहीं होंगे।"

"ओह, तो आप ऐसी कोई बात न बताइए जिससे मुझे खुशी न हो," न्यूमैन हंस पड़ा। "लेकिन आपने बात तो इसी ढंग से शुरू की थी।"

"मेरा ख्याल है श्रीमन्, अगर आपसे मैं यह कहूं तो आप चिन्तित न होंगे

कि जितनी जल्दी सारा काम हो जाए, उतना ही अच्छा है।"

"जितनी जल्दी विवाह हो जाए ? इसमें तो कोई शक ही नहीं कि यह मेरे लिए बहुत अच्छा होगा।"

"सबके लिए बेहतर होगा।"

"शायद आपके लिए भी अच्छा हो। यह तो आप जानती ही हैं कि आप हम लोगो के साथ रहेगी," न्यूमैन ने कहा।

"श्रीमन्, मैं इसके लिए आपकी बहुत कृतज्ञ हूं। लेकिन मैं अपने लिए नहीं सोच रही। मैं केवल इतना ही चाहती थी कि मैं आपसे यह कह सकू कि आप अब समय न गंवाएं।"

"लेकिन आपको किसका डर है ?"

मिसेज़ ब्रैड ने सीढ़ियो से ऊपर देखा और फिर नीचे देखा और इसके बाद पास में रखी धूलभरी गन्दी मूर्ति को देखा, जैसे उस मूर्ति के भी कान है, जो उसकी बात सुन रहे है। "मुझे सबसे डर है," मिसेज़ ब्रैड ने कहा।

"यह तो बड़ी चिन्ताजनक मानसिक स्थिति है," न्यूमैन ने कहा। "क्या 'हर कोई' हम लोगों की शादी में बाधा डालना चाहता है ?"

"मुझे भय है कि मैंने पहले ही आपको ज़रूरत से ज्यादा बता दिया है," मिसेज ब्रैड ने उत्तर दिया, "जो कुछ मैंने कह दिया है, वह मै वापस नहीं लूंगी, लेकिन और आगे कुछ नही बताऊंगी।" और वे सीढ़ियों के ऊपर आगे की तरफ बढ़ गई तथा न्यूमैन को मदाम द सान्त्रे के कमरे में ले गई।

मदाम द सान्त्रे अकेली नहीं थीं, इसलिए न्यूमैन कुछ क्षणों तक अपने ही विचारों में डूब गया। मदाम द सान्त्रे के साथ उनकी मां बैठी हुई थीं और कमरे के बीचोबीच मदाम की भाभी खड़ी थीं। वे अपना बोनेट लगाए थीं और लबादा पहने थीं। वृद्धा अपनी कुर्सी पर पीठ के सहारे कुर्सी के दोनों हत्थे पकड़े बैठी एकटक देख रही थीं। वे ज़रा भी हिल-जुल नहीं रही थीं। न्यूमैन ने अभिवादन किया, लेकिन शायद उन्हें इसका पता नही चला ; ऐसा लगा कि वे किसी सोच में डूबी हुई हैं। न्यूमैन ने अपने मन में सोचा कि शायद पुत्री ने अपने सम्बन्ध की बात उन्हें बताई है और यह बात वृद्धा के गले आसानी से नीचे नहीं उतर रही है। लेकिन मदाम द सान्त्रे ने जब अपना हाथ उनकी तरफ बढ़ाया, तो इस दृष्टि से देखा जिसका कुछ अर्थ था। यह दृष्टि द्वारा चेतावनी दी गई थी, या

कोई अनुरोध किया गया था ? उससे बोलने के लिए कहा गया या चुप रहने के लिए ? वह बड़ी उलझन में पड़ गया और मदाम द सान्त्रे की भाभी की हंसी से कोई नई बात पता नहीं चली ।

"मैंने अपनी मां को नहीं बताया है," उसकी ओर देखते हुए मदाम द सान्त्रे ने यकायक कहा ।

"मुझे क्या बताया ?" वृद्धा ने पूछा, "तुम मुझे बहुत कम बताती हो; तुम्हें मुझे हर बात बतानी चाहिए ।"

"यह तो मै करती हूं," मदाम द अरबेन ने थोड़ा-सा हंसते हुए कहा ।

"मुझे मां को यह बात बता देने दीजिए," न्यूमैन ने कहा ।

वृद्धा कुछ देर एकटक न्यूमैन की ओर देखती रहीं और फिर अपनी पुत्री की ओर देखकर बोलीं, "क्या तुम इनसे विवाह कर रही हो ?" उन्होने धीरे से पूछा।

"हां, मां !" मदाम द सान्त्रे ने कहा ।

"आपकी पुत्री ने मुझसे विवाह करने के लिए सहमति प्रकट कर दी है । यह मेरे लिए बड़ी प्रसन्नता की बात है," "न्यूमैन ने कहा ।

"और यह बातचीत कब हो गई है," मदाम द बेलगार्द ने प्रश्न किया, "ऐसा लग रहा है कि मुझे तो यह खबर संयोगवश ही पता लग गई ।"

"मेरा भी संशय कल ही मिटा है," न्यूमैन ने कहा ।

"और मेरा संशय कब तक जारी रहने को था ?" वृद्धा ने अपनी पुत्री से पूछा। वृद्धा के स्वर में झुंझलाहट नहीं थी ; लेकिन उसमें एक प्रकार की उदासीनता और बड़ों जैसी नाराज़गी थी ।

मदाम द सान्त्रे मौन खड़ी रहीं और ज़मीन की ओर देखती रही । "अब यह बात हो चुकी है," उन्होंने कहा ।

"मेरा पुत्र कहां है—अरबेन कहां है," वृद्धा ने पूछा । "अपने भाई को बुलाओ और उनको भी इसकी सूचना दे दो ।"

वृद्धा की पुत्र-वधू ने घण्टी बजाने की डोरी पर हाथ रखा । "वे मेरे साथ कहीं जानेवाले थे और मुझे उनके अध्ययन-कक्ष में बहुत धीरे-धीरे खटखटाना था। लेकिन वे मेरे पास आ सकते हैं !" और उन्होंने घण्टी बजा दी । कुछ ही क्षणों बाद मिसेज़ ब्रैंड अन्दर आईं । उनके चेहरे पर जिज्ञासा का भाव था ।

"अपने भाई को बुलवाओ," वृद्धा ने कहा ।

लेकिन न्यूमैन बोलना चाहता था और अपने-आपको रोक नहीं पा रहा था। वह एक विशेष ढंग से कोई बात कहना चाहता था। "मारक्विस से कहिए कि हम उनसे मिलना चाहते है।" न्यूमैन ने मिसेज़ ब्रैंड से कहा। वे चुपचाप कमरे से बाहर चली गई।

मदाम द सान्त्रे की भाभी मदाम द बेलगार्द अपनी ननद के पास पहुंचीं और उन्हें अपने गले से लगा लिया। इसके बाद वे न्यूमैन की तरफ मुड़ी, और अर्थ-भरी मुस्कराहट से उनकी तरफ देखने लगीं। "मेरी ननद बड़ी सुन्दर हैं। मैं आपको बधाई देती हूं।"

"मैं भी आपको बधाई देती हूं," वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने अत्यन्त गम्भीरता से कहा, "मेरी पुत्री असाधारण सुन्दरी और भली स्त्री है। इसमे कुछ खराबियां हो सकती हैं, लेकिन मुझे उनका कोई पता नहीं है।"

"मेरी मां ज़्यादातर मज़ाक करने की आदी नहीं है," मदाम द सान्त्रे ने कहा; "लेकिन जब वे विनोद करती हैं, तो वे बड़े भयंकर होते हैं।"

"वे आनन्द ले रही है," मारक्विस अरबेन ने फिर कहा और अपनी ननद को देखते हुए अपना सिर एक तरफ करके उन्होंने कहा, "हां, मैं आपको भी बधाई देती हूं।"

मदाम द सान्त्रे मुड़ गईं और टैपेस्ट्री का एक टुकड़ा लेकर उसे काढ़ने लगीं। सब लोग मौन रहे और कुछ मिनट इसी तरह गुज़र गए। यह मौन मो० द बेलगार्द के आने से भंग हुआ। वे जब कमरे में आए, तो उनके हाथ में उनकी टोपी थी, दस्ताने थे और उनके साथ छोटा भाई वेलेंतीन था। ऐसा लगता था कि जैसे वह अभी-अभी घर आया था। मो० द बेलगार्द ने चारों तरफ सब लोगों को देखा और न्यूमैन का बड़ी ही शिष्टता से हमेशा की तरह अभिवादन किया। वेलेंतीन ने अपनी मां, बहन और भाभी को अभिवादन किया और न्यूमैन से हाथ मिलाया। हाथ मिलाते हुए उसने आंखों ही आंखों में न्यूमैन से प्रश्न किया कि मामला क्या है।

"आइए, देवर महाशय!" अरबेन की पत्नी ने ज़ोर से कहा, "हमें आपको बहुत बड़ी खबर सुनानी है।"

"बेटी, अपने भाई को बता दो।" वृद्धा ने कहा।

मदाम द सान्त्रे अभी तक टैपेस्ट्री पर अपनी आंखें झुकाए थीं। उन्होंने अपनी आंखें उठाकर अपने भाई को देखा। "मैंने मिस्टर न्यूमैन को स्वीकार कर लिया है।"

"आपकी बहन ने मुझसे विवाह करना स्वीकार कर लिया है," न्यूमैन ने कहा, "देखिए, आखिर मुझे पता था न कि मैं क्या चाहता हूं।"

"मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई!" मो० द बेलगार्द ने बड़ों की तरह अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा।

"मैं भी बहुत खुश हुआ हूं," वेलेंतीन ने न्यूमैन से कहा, "मैं और मेरे बड़े भाई दोनों बहुत ही खुश हुए हैं। मैं तो शादी नहीं कर सका, लेकिन मैं इस खुशी को अनुभव कर सकता हूं। मैं अपने सिर के बल नहीं खड़ा हो सकता, लेकिन अगर कोई चतुराई से इस व्यायाम का प्रदर्शन करे, तो मैं तालियां ज़रूर पीट सकता हूं। मेरी प्यारी बहन, मैं तुम्हारे इस मिलन के प्रति अपनी शुभकामनाएं प्रकट करता हूं।"

मारक्विस कुछ देर अपनी टोपी के ऊपर के हिस्से को देखते रहे। "हम लोग इसके लिए तैयार थे," अन्ततः उन्होंने कहा, "लेकिन यह स्वाभाविक है कि जब ऐसी घटना हो, तो लोगों को प्रसन्नता अनुभव हो।" और वे इस तरह मुस्कराए, जिससे हर्ष प्रकट नहीं होता था।

"हालांकि मैं इसके लिए बिलकुल तैयार नहीं थी, फिर भी मुझे कोई हर्ष नहीं हो रहा है," वृद्धा ने कहा।

"अपने विषय में मैं यह बात नहीं कह सकता," न्यूमैन ने मुस्कराते हुए कहा। इसकी मुस्कराहट मारक्विस की मुस्कराहट से भिन्न थी, क्योंकि न्यूमैन की मुस्कराहट में खुशी झलक रही थी। "मैं जितनी आशा नहीं करता था, उससे भी ज़्यादा प्रसन्न हुआ हूं। मेरा ख्याल है कि यह आपकी खुशियों की शुरूआत है।"

"बहुत ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर बातें न कहिए," मदाम द बेलगार्द ने उठते हुए कहा और अपना हाथ अपनी पुत्री की बाहों पर रख दिया। "आप एक ईमानदार वृद्धा से यह आशा न करिए कि वह आपको अपनी सुन्दर इकलौती पुत्री को घर से ले जाने के लिए धन्यवाद देगी।"

"आप मुझे भूल गईं, प्यारी मदाम," वृद्धा की पुत्र-वधू ने कहा।

"हां, वह भी काफी खूबसूरत है।" न्यूमैन ने कहा।

"और यह बतलाने की कृपा कीजिए कि विवाह कब होगा?" मदाम द सान्त्रे की भाभी मदाम द बेलगार्द ने पूछा, "मुझे विवाह के वस्त्रों के बारे में सोचने के लिए कम से कम एक महीने का समय चाहिए।"

"हां, इस बात पर अवश्य विचार-विमर्श हो जाना चाहिए," मो० द बेल-गार्द ने कहा।

"ओह, हम इसपर विचार कर लेंगे, और आपको बता देंगे !" न्यूमैन ने उत्तर दिया।

"मुझे इसमें सन्देह नहीं कि तिथि के बारे में हम लोग सहमत हो जाएंगे," अरबेन ने कहा।

"अगर आप मदाम द सान्त्रे से सहमत नहीं हुए, तो यह बात बड़ी अनुचित होगी।"

"अच्छा अरबेन सुनो," उनकी पत्नी मदाम द बेलगार्द ने कहा, "मुझे अपने दर्जी के यहां तुरन्त जाना चाहिए।"

वृद्धा अपना हाथ अपनी पुत्री के कन्धे पर रखे अब भी खड़ी थी और बराबर उसे देख रही थीं। उन्होंने निःश्वास छोड़ी और फिर कहा, "नहीं, मुझे इसकी आशा नहीं थी ! आप बड़े भाग्यवान पुरुष हैं," वृद्धा ने न्यूमैन की ओर देखते हुए भावपूर्ण ढंग से सिर हिलाते हुए कहा।

"ओह, यह मुझे पता है !" उन्होने उत्तर दिया, "मुझे बड़ा ही गर्व हो रहा है। मुझे ऐसा लगता है कि मैं दौड़कर छत पर चढ़ जाऊं और वहां से चिल्लाऊं —ऐसी तबियत हो रही है कि सड़क पर चलनेवाले हर व्यक्ति को रोककर यह बात बता दूं।"

मदाम द बेलगार्द ने अपने होंठ बिचका लिए। "मेरी प्रार्थना है कि ऐसा न करिएगा," उन्होंने कहा।

"जितने ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को मालूम हो, उतना ही अच्छा है," न्यूमैन ने कहा, 'मैंने यहां पर इसकी घोषणा नहीं की थी, लेकिन मैंने आज सवेरे अमरीका तार भेज दिए हैं।"

"अमरीका तार भेज दिए हैं ?" वृद्धा ने धीरे से पूछा।

"न्यूयार्क को, सेंटलुई को और सान फ्रांसिस्को को; यही तीन मुख्य स्थान हैं। कल मैं यह खबर पेरिस में अपने मित्रों को दूंगा।"

"क्या आपके बहुत-से मित्र हैं ?" मदाम द बेलगार्द ने ऐसे स्वर से यह बात पूछी, जिसके बारे में मुझे भय है कि न्यूमैन को बुरा लगा।

"हां, यहां काफी मित्र है, जो मुझसे हाथ मिलाने और मुझे बधाई देने आएंगे,

मैं उन लोगों की बात नहीं करता," एक क्षण रुकने के बाद न्यूमैन ने कहा, "जो आपके मित्र की हैसियत से मुझे बधाई देंगे।"

"वे लोग तार से बधाई नहीं देंगे," मारक्विस ने चलते-चलते यह बात कही।

मो० द बेलगार्द की पत्नी ने चलने के पहले न्यूमैन से हाथ मिलाया। उनके रेशमी कपड़े हवा में उड़ रहे थे। ठीक इसी तरह से उनकी कल्पना भी नये-नये वस्त्र बनवाने के लिए उडान भर रही थी और वे दर्ज़ी के यहां पहुंचने के लिए बहुत उत्सुक थीं। हाथ मिलाने के साथ ही मो० द बेलगार्द की पत्नी ने न्यूमैन से साग्रह कहा, "आप मेरी सहायता का पूरा-पूरा विश्वास कर सकते हैं।" इसके बाद मदाम द बेलगार्द और मो० द बेलगार्द चले गए।

वेलेंतीन कभी अपनी बहन को और कभी हमारे नायक को देखता था। "मुझे आशा है कि आप दोनों ने इस प्रश्न पर काफी गम्भीरता से विचार कर लिया होगा," उसने कहा।

मदाम द सान्त्रे मुस्करा दीं। "हम लोगों के पास न तो आप जैसी विचार करने की शक्ति है और न आप जितनी गम्भीरता की गहराई। लेकिन फिर भी हमने यथाशक्ति विचार कर लिया है।"

"जो हो, आप दोनों के लिए मेरे हृदय में बड़ा सम्मान है," वेलेंतीन ने अपना कथन जारी रखा, "आप दोनों ही बड़े आकर्षक हैं। लेकिन कुल मिलाकर मैं सन्तुष्ट नहीं हू, क्योंकि आप दोनों एक ऐसे छोटे-से और श्रेष्ठ वर्ग के व्यक्ति हैं, जहां लोग इस योग्य होते हैं कि वे अविवाहित ही रहें। लेकिन ऐसे व्यक्ति बड़े दुर्लभ होते हैं ; दाल में नमक के बराबर। लेकिन मैं किसी प्रकार की आलोचना नहीं करना चाहता ; विवाहित लोग भी बहुत अच्छे होते है।"

"वेलेंतीन का मत है कि औरतों को तो शादी करनी चाहिए, लेकिन पुरुषों को नहीं," मदास द सान्त्रे ने कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि वे इन विचारों का तारतम्य कैसे बैठाते हैं।"

"मेरी प्यारी बहन, मैं इन विचारों का तारतम्य आपको अत्यधिक स्नेह करके बैठाता हूं," वेलेंतीन ने बड़े उत्साह से कहा, "गुड-बाई !"

"किसी ऐसी लड़की को प्यार करो, जिससे विवाह कर सको," न्यूमैन ने कहा, "मुझे आशा है कि एक दिन ऐसा आएगा, जब मैं तुम्हारे विवाह का भी प्रबन्ध कर सकूंगा। मुझे ऐसा लगता है कि यह सब काम मुझे ही करना होगा।"

वेलेंतीन देहलीज़ पर खड़ा था ; उसने मुड़कर देखा। उसका चेहरा बड़ा गम्भीर हो गया था। "मैं किसी ऐसी लड़की को प्यार करता हूं, जिससे विवाह नहीं कर सकता," उसने कहा। इसके बाद उसने परदा गिरा दिया और चला गया।

"वे पसन्द नहीं करते," न्यूमैन ने कहा। न्यूमैन उस समय अकेला मदाम द सान्त्रे के सामने खड़ा था।

"नहीं," मदाम ने एक क्षण बाद कहा, "वे पसन्द नहीं करते।"

"आपका क्या ख्याल है—क्या आप इनकी चिन्ता करती है ?" न्यूमैन ने पूछा।

"हां !" मदाम ने कुछ क्षण बाद कहा।

"यह गलती है।"

"लेकिन मैं कुछ नही कर सकती। मेरी इच्छा थी कि मेरी मां को प्रसन्न होना चाहिए था।"

"क्यों, वे क्यों प्रसन्न नही है," न्यूमैन ने प्रश्न किया, "उन्होंने तो मुझे आपसे विवाह करने की अनुमति दी थी।"

"यह सच है ; मेरी समझ में खुद नहीं आता और फिर भी पता नहीं क्यों मुझे बड़ी चिन्ता हो रही है। आप चाहे इसे मेरा मूढ़ाग्रह ही क्यों न कहे।"

"यह तो इस बात पर निर्भर करेगा कि आप इस बात की कितनी चिन्ता करती है। मैं इसे बेकार की उबा देनेवाली चिन्ता कहूगा।"

"मैं यह बात अपने तक ही सीमित रखूगी," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "इससे मैं आपको परेशान नहीं होने दूगी।" और इसके बाद वे लोग अपनी शादी के दिन की बातचीत करने लगे। मदाम द सान्त्रे ने बिना किसी हिचक के न्यूमैन की यह इच्छा मान ली कि शादी की तारीख जल्दी से जल्दी निश्चित की जानी चाहिए।

न्यूमैन ने जो तार दिए थे, उनका उत्तर लोगों ने बड़ी दिलचस्पी दिखलाते हुए तुरन्त दिया। न्यूमैन ने केवल तीन छोटे-छोटे तार भेजे थे, लेकिन उनके जवाब में आठ खूब बड़े-बड़े तार आए। इन तारों को उसने अपनी पाकेट-बुक में सभाल-कर रख लिया, और जब वह अगली बार मदाम द बेलगार्द से मिला, तो उसने वे तार उन्हें दिखाए। यह बात माननी होगी कि न्यूमैन की इस कार्रवाई में थोड़ी-सी दुर्भावना की गन्ध थी। लेकिन इसका फैसला तो पाठक ही करेंगे कि इस बात

ों कितनी बुराई थी । न्यूमैन को पता था कि वृद्धा को तार पसन्द नहीं हैं। हालांकि इस बात का कारण न्यूमैन की समझ में पूरी तरह नहीं आया था । उधर, मदाम द सान्त्रे ने तार देखकर बड़ी खुशी ज़ाहिर की । इनमें से अधिकांश में विनोदपूर्ण बातें थीं और मदाम द सान्त्रे और न्यूमैन दोनों उन बातों को पढ़कर खूब हंसे थे । मदाम द सान्त्रे ने तार भेजनेवालों के बारे में तरह-तरह के प्रश्न भी किए थे । न्यूमैन चाहता था कि उसकी विजय का पता सबको चल जाए, क्योंकि उसने जो चाहा था, वह प्राप्त कर लिया था । न्यूमैन को यह शक भी होने लगा था कि बेलगार्द परिवार इस मामले में अभी चुपचाप है और विवाह का समाचार बहुत सीमित क्षेत्र में लोगों को बताया जा रहा है । उधर न्यूमैन की इच्छा थी कि यह खबर ढोल पीट-पीटकर सबको बता दी जाए । कोई भी व्यक्ति यह पसन्द नहीं करता कि उसकी बात का खण्डन किया जाए, लेकिन न्यूमैन अगर इस बात से बहुत ज्यादा खुश नही हो रहा था, तो नाराज़ भी नहीं था । उसके पास विवाह की खबर प्रचारित करने के लिए कोई अच्छा साधन नहीं था; भावनाओं का ज्वार दूसरी बात थी । वह चाहता था कि कम से कम एक बार तो बेलगार्द परिवार के लोग उसकी भावनाओं को समझें ; उसे पता नहीं था कि उसे फिर कब दूसरा मौका मिलेगा। पिछले छः महीने से उसे ऐसा लग रहा था कि एक वृद्धा और उसका पुत्र उसके सिर के ऊपर खड़े-खड़े उसकी निजी बातों में दखल दे रहे थे । और अब वह यह चाहता था कि वे लोग वह करें, जो न्यूमैन उन्हें करने को कहे ।

"ऐसा लग रहा है कि मैं किसी ऐसी बोतल को खाली होते हुए देख रहा हूं, जिसमें से बहुत धीरे-धीरे शराब ढाली जा रही है," उसने मिसेज़ ट्रिस्टरैम से कहा, "वे लोग चाहते है कि मैं उनको कोहनियों पर धक्का दूं और उन्हें शराब डाल देने के लिए बल का प्रयोग करूं ।"

इसके उत्तर में मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा कि इस समय चुप रहना ही उचित होगा और इस मामले में हस्तक्षेप करना ठीक नहीं है । "आपको उन्हें कुछ छूट देनी चाहिए ।" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, यह स्वभाविक है कि उन्हें भी आपके धैर्य की बहुत ज्यादा परीक्षा नहीं लेनी चाहिए । उन लोगों का विचार है कि उन्होंने, जब आपने विवाह की इच्छा प्रकट की थी, तभी आपको स्वीकार कर लिया था ; लेकिन इन लोगों में कल्पना का अभाव है, वे भविष्य को नहीं देख

सकते और इसलिए उन्हें अपनी बातों पर फिर विचार करना पड़ रहा है। लेकिन वे लोग सम्भ्रान्त परिवार के है, और इसलिए जो उचित होगा, वही करेंगे।"

न्यूमैन ने अपनी आंखें बन्द कर ली और कुछ क्षण सोचता रहा। "मैं उनके साथ कठोरता का व्यवहार नही करना चाहता," उसने कहा, "और यह सिद्ध करने के लिए मैं उन्हें एक उत्सव में आमंत्रित करूगा।"

"उत्सव में ?"

"इन पूरे जाड़ों-भर आप मेरे बड़े-बड़े सुनहले कमरों को देखकर हंसती रही है ; अब मैं आपको दिखलाऊंगा कि इन कमरों का भी कुछ उपयोग है। मैं एक पार्टी दूगा। पेरिस में पार्टी देने के लिए सबसे बढ़िया इंतजाम क्या हो सकता है ? मैं पेरिस में जितने ओपेरा हैं, उन सबके गायकों को अपने यहां बुलाऊंगा और उन्हें पैसा दूंगा। थियेटर फ्रेंकाय के सारे लोगों को बुलाऊंगा और बहुत बढ़िया मनोरंजन का प्रबन्ध करूंगा।"

"और आप किन-किन लोगों को निमंत्रित करेंगे ?"

"सबसे पहले आपको। और इसके बाद उस बुढ़िया और उसके पुत्र को और तब उनके हरेक मित्र को, जिन-जिनसे मैंने उनके घर पर या अन्यत्र कहीं मुलाकात की है। ऐसे हर व्यक्ति को निमंत्रित करूंगा, जिसने मेरे साथ न्यूनतम शिष्टता भी दिखाई है। हर परिचित ड्यूक और उनकी पत्नियों को बुलाऊंगा। अपने प्रत्येक मित्र को बुलाऊंगा, कोई भी नहीं छूटेगा : मिस किटी अपजॉन, मिस डोरा फिंश, जनरल पैकर्ड, सी० पी० हैज, और बाकी सबको। हरेक को यह पता चल जाएगा कि पार्टी क्यों दी जा रही है : पार्टी इसलिए दी जा रही है कि मेरी सगाई काउंटेस द सान्त्रे के साथ हो गई है। आपका क्या ख्याल है ?"

"मुझे इसमें कुछ दुर्भावना की गन्ध आ रही है!" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा। और फिर एक क्षण बाद ही कहा, "मेरा ख्याल है यह बड़ा अच्छा विचार है, बड़ा आनन्द आएगा !"

दूसरे दिन शाम को मदाम द बेलगार्द के कमरे में न्यूमैन ने जब वृद्धा को अपने बच्चों से घिरा पाया, तो उन्हें एक पखवाड़े बाद एक विशेष दिन संध्या को अपने यहां आने का निमंत्रण देते हुए कहा कि मुझे आशा है कि आप मेरी कुटिया पर पधारकर मुझे सम्मानित करेंगी।

वृद्धा एक क्षण तक न्यूमैन की ओर देखती रह गईं। "श्रीमन्," उन्होंने ज़ोर

से कहा, "आप मुझे बुलाकर क्या करेंगे ?"

"पहले मैं आपका कुछ लोगों से परिचय कराऊंगा और फिर एक बड़ी आराम-कुर्सी पर बैठाकर आपसे अनुरोध करूंगा कि आप मदाम फ्रेजोलिनी का गायन सुनें।"

"क्या आप किसी सगीत-सभा का आयोजन कर रहे हैं ?'

"हां, कुछ-कुछ ऐसी ही बात है।"

"और वहा क्या आप बहुत-से लोगों को निमंत्रित करेंगे ?"

"मैं अपने सब मित्रों को बुला रहा हूं और आशा करता हूं कि कुछ आपके और आपकी पुत्री के परिचित तथा दोस्त भी वहां आएंगे। मैं अपनी सगाई के उपलक्ष्य में यह समारोह करना चाहता हूं।"

न्यूमैन को ऐसा लगा कि वृद्धा मदाम द बेलगार्द का चेहरा पीला पड़ गया। उन्होंने अपना पंखा खोल लिया। यह पंखा पिछली शताब्दी का था और बड़े ही खूबसूरत ढग से रंगा हुआ था। इसके बाद वे एक चित्र देखने लगीं, जिसमें एक स्त्री हार पहने हुए हरमीज के चारों तरफ नर्तकों के एक दल के साथ गिटार बजाती हुई गाना गा रही थी।

"हम लोग बहुत कम बाहर जाते है," अरबेन ने कुनमुनाकर कहा, "खास तौर से उस समय से, जब से हमारे पिता मरे है।"

"लेकिन मेरे प्यारे पिता तो अभी जीवित है, मेरे मित्र," अरबेन की पत्नी ने कहा, "मैं तो केवल आपके निमत्रण की प्रतीक्षा कर रही हूं, जैसे ही मिलेगा, मैं तुरन्त स्वीकार कर लूगी," और उसने मैत्रीपूर्ण विश्वास के साथ न्यूमैन की ओर देखा। "यह समारोह बहुत ही शानदार होगा ; मुझे इसका पूरा विश्वास है।"

मुझे खेद है कि न्यूमैनने अपनी बहादुरी का परिचय नहीं दिया और उसने मदाम द वेलगार्द को वहीं तुरन्त निमंत्रण नहीं दिया। वह सारा ध्यान वृद्धा के ऊपर केन्द्रित किए था। आखिर वृद्धा ने ऊपर की तरफ देखा और मुस्कराते हुए कहा, "मै यह सोच भी नहीं सकती कि आप मेरे [illegible] करेंगे," उन्होने कहा, "विशेष रूप से उस समय, जब तक कि मैं स्वयं आपका स्वागत न कर लू। हम लोग आपका अपने मित्रों से परिचय कराना चाहते हैं ; हम अपने सारे मित्रों को बुलाएगे। हमारे मन की यह बहुत बड़ी साध है। लेकिन हमें सारा काम व्यवस्थित ढंग से करना है। मुझसे २५ तारीख के आसपास मिलिए ;

मैं आपको निश्चित तिथि तुरन्त बता दूंगी । हम लोग मदाम फ्रेजोलिनी जैसी किसी बढ़िया गायिका को तो नहीं बुला सकेंगे, लेकिन हमारे यहां भी कुछ बहुत ही अच्छे लोग आएंगे । इसके बाद आप अपने घर पर उत्सव का आयोजन कर सकते हैं ।" वृद्धा ने यह बात बड़ी उत्सुकतापूर्वक जल्दी-जल्दी कही और ज्यों-ज्यों अपनी बात वे पूरी करती जाती थीं, त्यों-त्यों बड़े ही स्नेहपूर्ण ढग से मुस्कराती जा रही थीं ।

न्यूमैन को यह प्रस्ताव बड़ा पसन्द आया और चूंकि न्यूमैन स्वयं बड़े अच्छे स्वभाव का था, इसलिए सद्भावपूर्वक कही गई बात तुरन्त उसके मर्म को स्पर्श करती थी । उसने मदाम द बेलगार्द से कहा कि वह २५ तारीख को या और किसी भी दिन बड़ी प्रसन्नता से आएगा और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं आपके मित्रों से अपने घर पर मिलता हूं या आपके घर पर । मैं कह चुका हूं कि न्यूमैन हर व्यक्ति पर बड़ा ध्यान रखता था, लेकिन यह बात माननी होगी कि इस मौके पर वह चूक गया और उसने यह नहीं देखा कि अरबेन और उनकी पत्नी के बीच आंखों ही आंखों में कुछ बातचीत हो गई है और जिसके बारे में हम यह कल्पना कर सकते हैं कि वह न्यूमैन की अबोधता पर टिप्पणी थी, जो न्यूमैन के कथन से प्रकट हुई थी ।

वेलेंतीन द बेलगार्द उस दिन संध्या को न्यूमैन के साथ टहलता हुआ चला आया और जब वे रू द ल यूनिवर्सिते छोड़कर कुछ आगे बढ़ गए, तब उसने सोचते हुए कहा, "मेरी मां अत्यन्त कठोर हैं—बड़ी कठोर है ।" इसके बाद न्यूमैन के चेहरे पर आए जिज्ञासु भाव का उत्तर देते हुए उसने कहा, "वह बिलकुल घिर गई थीं, लेकिन इस बात की आप कल्पना भी नहीं कर सकते । २५ तारीख के समारोह की बात उन्होंने बिलकुल उसी समय सोच डाली थी । उन्हें इस बात का कुछ पता नहीं है कि यह समारोह क्या होगा, किस प्रकार होगा, लेकिन जैसे ही आपने अपने यहां आने का निमन्त्रण दिया, वैसे ही उन्होंने सूत्र पकड़ लिया और ज़रा भी कमज़ोरी ज़ाहिर न करते हुए उन्होंने अपनी बात कह डाली । वाकई वे बड़ी दिलेर हैं ।"

"हे भगवान," न्यूमैन ने कहा । उसके स्वर में कुछ आनन्द था, तो कुछ करुणा का भाव भी था । "मैं उनके समारोह की तनिक भी परवाह नहीं करता ; मैं तो उनकी इच्छा को ही उनका कार्य मान लेता हूं ।"

"नहीं, नहीं," वेलेंतीन ने निरर्थक पारिवारिक अभिमान प्रकट करते हुए कहा, "अब तो यह समारोह होगा और बहुत अच्छी तरह होगा।"

पन्द्रह

मदामाजेल नोएमी के अपने पिता के घर को छोड़ जाने के बारे में वेलेंतीन द बेलगार्द की सूचना और इतनी गम्भीर संकट की स्थिति में चिंतित पिता के रवैये के बारे में उसकी अनादरपूर्ण टिप्पणी के औचित्य का प्रमाण इस बात से मिल गया कि मो० नियोशे ने अपने नये शिष्य से मिलने में काफी ढील डाल दी। न्यूमैन ने वेलेंतीन की वृद्ध के दर्शन की सनकीपने की व्याख्या कुछ बेमन से लाचार होकर स्वीकार की थी। हालांकि परिस्थितियों से ऐसा लग रहा था कि मो० नियोशे ने निराश होकर वह कार्य नहीं किए थे, जो किसी सज्जन से करने की अपेक्षा की जाती है, फिर भी न्यूमैन को लगा कि सम्भवत: मो० नियोशे जितना प्रतीत नहीं होता, उससे ज़्यादा मानसिक प्रताड्ना के शिकार हो गए हैं। मो० नियोशे दो या तीन सप्ताह में एक बार, चाहे कुछ ही देर के लिए सही, न्यूमैन के प्रति सम्मान प्रकट करने, उसके पास ज़रूर आते थे। उनकी अनुपस्थिति के दो कारण हो सकते थे। एक तो यह कि वे अपनी निराशा और दु:ख को छिपाना चाहते हैं और शायद दूसरा कारण यह हो सकता था कि वे अपनी वह सफलता नहीं बताना चाहते, जो उन्होंने इस दु:ख को छिपा लेने में प्राप्त की थी। न्यूमैन को वेलेंतीन द्वारा दिए गए ब्योरे से मदामाजेल नोएमी के घर से जाने के बारे में ब्योरे की कई बातें ज्ञात हो चुकी थीं।

"मैंने आपसे कहा था कि वह लड़की बड़ी विलक्षण है," वेलेंतीन ने दिलचस्पी लेनेवाले प्रेक्षक की तरह कहा, "और जिस तरह से उसने यह काम किया है, उससे इसकी विलक्षणता सिद्ध हो गई है। उसे कुछ अन्य अवसर भी मिले थे, लेकिन वह सर्वोत्तम अवसर का लाभ उठाना चाहती थी। जब आप उससे मिले थे, तो उसने आपको यह सम्मान दिया था कि सम्भवत: आप ही उसके जीवन के सुनहले अवसर साबित होंगे। लेकिन आपके बारे में ऐसा नहीं हुआ;

इसलिए उसने धीरज धारण करके कुछ समय और प्रतीक्षा करने का फैसला किया। आखिर उसे मौका मिल ही गया और उसने आख-कान खोलकर पूरी सावधानी से संयोग का लाभ उठाया। मुझे पक्का विश्वास है कि वह निर्बोध नहीं थी, लेकिन उसने अपना ऊपरी मान-सम्मान बनाए रखा था। आप सोचते थे कि यह लड़की ज़रा-सी है और संशय में पड़ी हुई है। उसने अपना यह रूप अन्त तक बनाए रखा ; उसके विरुद्ध कुछ भी प्रमाणित नहीं किया जा सकता। उसने यह तय कर रखा था कि जब तक उसे अपने अनुकूल अवसर नही मिलेगा, वह अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखेगी। अपने पति के सम्बन्ध में भी उसकी बड़ी ऊंची कल्पनाएं थीं। जाहिर है कि उसकी कल्पना के अनुकूल व्यक्ति मिल गया। इस व्यक्ति की आयु पचास वर्ष की है, वह गंजा है, बहरा है, लेकिन उसके पास खूब धन है।"

"और यह तो बताओ," न्यूमैन ने पूछा, "आखिर यह सब बहुमूल्य सूचना तुम्हें मिली कहां से ?"

"बातचीत से। आप मेरी हल्की-फुल्की बातें करने की आदत तो जानते ही हैं। रू सेंट रॉश में एक औरत रहती है, वह दस्ताने धोने का काम करती है। उसकी एक छोटी-सी दुकान है। इस औरत से बातचीत करके ही मुझे यह सब पता लगा है। मो० नियोशे इसी दुकान के ऊपर कमरे में रहते हैं। उनके यहा जाने के लिए सीढ़ियां चढ़कर कुछ चलना पडता है। इस औरत की दुकान के सामने से, जहां अक्सर झाड़ू भी नहीं लगती, कुमारी नोएमी पिछले पांच वर्षों से लगातार गुज़रती रही हैं। दस्ताने धोनेवाली इस औरत का परिचय मेरे एक पुराने मित्र से था ; दरअसल वह मेरे एक मित्र की दोस्त थी जिसने बाद में विवाह कर लिया और इस तरह की मित्रताओं को छोड़ दिया। मुझे यह स्त्री अकसर इधर-उधर दिखलाई पड़ जाती थी। इसलिए जैसे ही मैंने उसे खिड़की के कांच में से झांकते देखा, मैंने उसे तुरन्त पहचान लिया। मेरे हाथ में साफ, धुले हुए दस्ताने थे, लेकिन फिर भी मैं अन्दर चला गया और मैंने हाथ उठाकर उससे पूछा, 'प्रिय मदामाजेल, क्या आप बताएंगी कि दस्ताने के इस जोड़े को धोने का आप क्या लेंगी ?' 'प्रिय काउंट,' उसने तुरन्त जवाब दिया, 'मैं इनको बिना कुछ लिए ही साफ कर दूंगी।' उसने भी मुझे तुरन्त पहचान लिया था। और फिर मुझे उसके छः साल का इतिहास सुनना पड़ा। लेकिन इसके बाद मैंने

उससे उसके पड़ोसियों की बात शुरू कर दी । वह नोएमी को जानती है और उसकी प्रशंसक है । उसीने मुझे ये सब बातें बताईं, जो मैंने अभी आपसे कहीं।"

एक महीना गुज़र गया और मो० नियोशे के दर्शन नहीं हुए और न्यूमैन हर रोज़ दैनिक 'फिगारो' में दो या तीन आत्महत्याओं के समाचार पढ़ता । उसे यह सन्देह होने लगा कि कहीं लज्जा के मारे मानसिक यंत्रणा से पीड़ित इस बुड्ढे ने अपने अपमान को धोने के लिए सीन नदी में जल-समाधि तो नही ले ली । न्यूमैन के पास अपनी पाकेट-बुक में मो० नियोशे के घर का पता लिखा था और एक दिन अपने-आपको मो० नियोशे के घर के पास के मुहल्ले में पाकर न्यूमैन ने सोचा कि क्यो न वह मो० नियोशे के निवासस्थान पर जाकर अपने सदेहों का निवारण कर ले । वह रू सेंट रॉश में उस मकान पर पहुंचा, जिसपर नोटबुक में लिखा नम्बर पड़ा था और उसने देखा कि पड़ोस में नीचे की दुकान पर साफ, धुले हुए दस्तानो की एक कतार रस्सी पर पड़ी-पड़ी सूख रही है । यह बेलगार्द को सूचना देनेवाली औरत की दुकान का पक्का निशान था ।—वह औरत हलके सांवले रग की थी और ड्रेसिग गाउन पहने थी—वह बार-बार सड़क पर झाककर इस तरह देख रही थी, जैसे वेलेंतीन फिर वहां से गुजरने वाला है । लेकिन न्यूमैन इसके पास नहीं गया ; वह सीधे घर की नौकरानी के पास गया और उसने पूछा कि क्या मो० नियोशे अपने घर में है । इसके जवाब में नौकरानी ने बताया, जैसाकि वे हमेशा बताती है, कि घर मे रहनेवाला अभी तीन मिनट पहले कहीं बाहर गया है । लेकिन अपने कमरे की खिड़की के चौखुटे छेद से न्यूमैन की अमीरी के बारे में कल्पना करके, पता नही कैसे, उसने यह भी कहा कि मो० नियोशे मुश्किल से कॉफे द ला पैत्री तक पहुचे होंगे । यह रेस्तरां बाईं तरफ दूसरे मोड़ पर है । उसने यह भी बताया कि वे तीसरे पहर अकसर वहीं चले जाते है । न्यूमैन ने इस सूचना के लिए धन्यवाद दिया और वह सड़क के बाईं तरफ के दूसरे मोड़ पर जा पहुचा । कुछ दूर चलकर वह कॉफे द ला पैत्री पहुंच गया । एक क्षण के लिए होटल के सामने पहुंचकर वह ठिठका । उसने सोचा कि क्या इसका अर्थ मो० नियोशे के पीछे पड़ जाना नहीं है ? लेकिन तभी उसके सामने परेशान सत्तर वर्षीय बूढ़े का चित्र आ गया, जो पानी में चीनी मिला-मिलाकर पी रहा होगा और यह सोच रहा होगा कि इस मिठास से भी उसके एकाकीपन की कड़वाहट कम नहीं हो रही है । न्यूमैन ने रेस्तरां का दर-

वाज़ा खोला और अन्दर घुसा। पहले उसे कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ा, क्योंकि अन्दर चारों तरफ तम्बाकू के धुएं का गहरा आवरण-सा पड़ा था। खैर, उसे पार करके जब वह आगे बढ़ा, तो उसने देखा कि एक कोने में मो० नियोशे जैसा आकृति का कोई आदमी बैठा है और वह अपने बड़े से गिलास के तरल पदार्थ को हिला रहा है। उसके सामने कोई महिला बैठी थी। इस महिला की पीठ न्यूमैन की तरफ थी, लेकिन मो० नियोशे ने बहुत जल्दी ही न्यूमैन को देख लिया और अभ्यागत को पहचान लिया। न्यूमैन आगे बढ़कर उसके पास पहुंचा। वृद्ध धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ और उसकी ओर पहले से भी अधिक बुझी-बुझी आंखों से देखने लगा।

"यदि आप कोई गर्म चीज़ पी रहे है," न्यूमैन ने कहा, "तो मेरा ख्याल है कि कम से कम आप मरे तो नहीं हैं, बिलकुल ठीक है। रहने दीजिए, उठिए मत।"

मो० नियोशे खड़े-खड़े एकटक देखते रहे, उनका मुंह लटका हुआ था और यह हिम्मत नहीं हो रही थी कि हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाएं। जो महिला मो० नियोशे के सामने बैठी थीं, वे अब अपनी ही जगह पर बैठी-बैठी मुड़ीं और उन्होंने अपने सिर को झटका देकर ऊपर की तरफ देखा। तब पता चला कि यह वृद्ध की सुन्दर पुत्री नोएमी थीं। मदामाजेल नोएमी ने न्यूमैन की तरफ तेज़ निगाह डाली और यह जानने की कोशिश की कि वह उनकी तरफ किस दृष्टि से देख रहा है। और तब—मैं नहीं जानता नोएमी ने क्या समझा—उसने बड़े शिष्ट और विनयपूर्ण ढग में कहा, "कैसे हैं मोंश्यू ? आइए, हमारे पास बैठिए न !"

"क्या आप—क्या आप मेरे बारे में पता लगाने आए थे ?" मो० नियोशे ने बहुत धीरे से पूछा।

"मैं आपके मकान पर यह देखने गया था कि आपका क्या हुआ। मुझे भय था कि आप कहीं बीमार न हों।" न्यूमैन ने कहा।

"हमेशा की तरह ही आपने इस बार भी बड़ी दया की," वृद्ध ने कहा। "नहीं, मैं स्वस्थ नही हूं। हां, मैं बीमार हूं।"

"मोंश्यू से कहिए कि वे बैठें," मदामाजेल नोएमी ने कहा, "लड़के, कुर्सी लाओ।"

"क्या आप हमारे साथ बैठने की कृपा करेंगे ?" मो० नियोशे ने डरते-

डरते कहा। उनके उच्चारण से विदेशीपन टपक रहा था।

न्यूमैन ने मन ही मन कहा कि यह अच्छा मौका है कि सारी बातें मैं स्वयं ही जान लूं। और वह एक कुर्सी खींचकर मेज़ के कोने पर बैठ गया। मदामाजेल नोएमी उसके बाईं तरफ और पिता सामने की तरफ बैठे थे। "आप कुछ तो अवश्य ही लेंगे," कुमारी नोएमी ने पूछा, जो स्वयं मैंदीरा के गिलास से चुसकियां ले रही थीं। न्यूमैन ने कहा कि मुझे कुछ नहीं चाहिए और फिर वह उसके पिता की ओर मुस्कराते हुए देखने लगा। "हमारे लिए यह कितने सम्मान की बात है, है न ? ये सिर्फ हमारी खातिर यहां आए हैं।" और मो० नियोशे ने तीखे तरल पदार्थ का गिलास एक ही सांस में खाली कर दिया। पेय से मो० नियोशे की आंखों में पानी भर आया था और वे जलपूरित नेत्रों से न्यूमैन की ओर देख रहे थे। "लेकिन आप मेरे लिए तो नहीं आए थे, एं ?" मदामाजेल नोएमी ने कहा, "आपको यह आशा तो न रही होगी कि मैं आपको यहां मिलूंगी ?"

न्यूमैन ने देखा कि मदामाजेल नोएमी का हुलिया काफी बदल गया है। वे देखने में अत्यन्त सुरुचिसम्पन्न और पहले से कहीं अधिक अच्छी लग रही थीं; ऐसा भी लगता था कि उनकी आयु एक या दो साल ज्यादा हो गई है। वेशभूषा से यह प्रतीत होता था कि वे किसी भले घर की स्त्री हैं। बिलकुल सम्भ्रान्त महिला जैसी लगती थीं। जो कपड़े मदामाजेल नोएमी ने पहन रखे थे, उनके रंग शोख नहीं थे और वस्त्र अत्यन्त बहुमूल्य थे। इन वस्त्रों के पहनने से यह पता नहीं लगता था कि मदामाजेल नोएमी को उन्हें पहनने का अभ्यास नहीं। उलटे ऐसा लगता था कि जैसे नोएमी इन कपड़ों को वर्षों से पहनती आ रही हैं। मदामाजेल नोएमी का यह रूप और वेशभूषा न्यूमैन को बहुत बुरी लगी, और न्यूमैन सोचने लगा कि वेलेंतीन ने ठीक ही कहा था कि यह लड़की बड़ी विलक्षण है। "नहीं, सच बात यही है कि मैं आपसे मिलने नहीं आया," न्यूमैन ने नोएमी से कहा, "और मुझे आशा भी नहीं थी कि आप यहां मुझे मिलेंगी। मुझे तो बताया गया था कि आप अपने पिता को छोड़कर चली गई हैं।"

"हे भगवान !" मदामाजेल नोएमी ने मुस्कराकर कहा, "क्या कोई अपने पिता को छोड़कर चला जाता है ? अब तो आपको, जो बात आपने सुनी थी, उसके विरुद्ध प्रमाण मिल गया।"

"जी हां, बिलकुल सन्तोषप्रद प्रमाण मिल गया," न्यूमैन ने मो० नियोशे पर हलकी-सी नजर डालते हुए कहा। वृद्ध ने भी देख लिया कि न्यूमैन ने उसकी तरफ निगाह डाली है। लेकिन इसके बाद उसने खाली गिलास उठा लिया और उसमें से कुछ पीने का बहाना करने लगा।

"आपसे मेरे चले जाने की बात किसने कही ?" नोएमी ने पूछा। "मै अच्छी तरह जानती हू। अवश्य ही यह खबर आपको मो० द बेलगार्द ने दी होगी। आप यह बात बताते क्यो नहीं है ? यह बात उचित नही है।"

"मुझे कुछ बड़ा अटपटा-सा लग रहा है," न्यूमैन ने कहा।

"लेकिन मैंने आपके सामने ज्यादा अच्छा दृष्टात रखा है। मैं जानती हूं कि ये बातें आपको मो० द बेलगार्द ने बताई होंगी। वे मेरे बारे मे बहुत काफी जानते हैं—या कम से कम उनका यह ख्याल है कि वे जानते हैं। उन्होने इस बात का पता लगाने के लिए काफी प्रयत्न किया है, लेकिन जो बातें उन्होने सुनी हैं, उसकी आधी भी सच नही है। सबसे पहली बात तो यह है कि मैंने पिता का घर नही छोड़ा है; मैं उनसे बड़ा प्रेम करती हू। है कि नही पापा ? मो० द बेलगार्द बड़े अच्छे व्यक्ति है; उनसे अधिक चतुर होना असम्भव है। मैं भी उनके बारे में काफी कुछ जानती हू। जब आप अगली बार मिले, तो मेरी ओर से यह बात कह दीजिएगा।"

"नहीं," न्यूमैन ने हंसते हुए दृढ़ता से कहा, "मैं आपका कोई संदेश उनको नहीं दूगा।"

"आपकी मर्जी," मदामाजेल नोएमी ने कहा, "न मैं आपपर निर्भर करती हूं और न मो० द बेलगार्द पर। उन्हें मुझमें बड़ी दिलचस्पी है। वह अपनी उत्सुकता मिटाने के लिए जो चाहें, सो करें। लेकिन वे आपसे बिलकुल भिन्न व्यक्ति हैं।"

"ओह, मुझे इसमें कोई सन्देह नही है कि वे मुझसे भिन्न व्यक्ति हैं," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन मुझे यह ठीक-ठीक समझ में नहीं आया कि आपका मतलब क्या है।"

"मेरा मतलब यह है कि सबसे पहले तो उन्होंने मुझे कोई मदद नही की, न ही उन्होंने मुझे पति की तलाश करने में मदद की।" और मदामाजेल नोएमी कुछ देर के लिए ठहर गई। वे इस बीच मुस्कराती रहीं। "मैं यह नही कहूंगी

कि यह बात उनके पक्ष में है, ख्श हूं कि आपने अपनी लड़की को गोली नहीं चाहती हूं । लेकिन क्या मैं पूछ सक‹था कि कहीं आप स्वयं गोली मारकर किया था, उसका क्या कारण था ? यह देखने आया था ।" और न्यूमैन ने रुचि नहीं थी ।"

"ओह, हां, प्रस्ताव मैने किया था," न्यूमैन ने को ने कहा, "आप मुझसे

"क्यों ?" मै रहा था

"अगर किसी सम्भ्रान्त युवक से आपका विवाह हो जाता, तो मुझे ५ बड़ी खुशी होती ।"

"जिसकी आमदनी छः हजार फ्राक हो !" मदामाजेल नोएमी ने ज़रा जोर से कहा, "क्या इसीको आप हितैषिता कहते हैं ? मुझे भय है कि आप औरतों के बारे में कुछ नहीं जानते । आप साहसी नहीं हैं ; आप वह नही हैं जो आप हो सकते थे ।"

न्यूमैन का चेहरा लाल हो उठा । "अच्छा छोड़िए !" न्यूमैन ने ज़रा ऊंची आवाज़ में कहा, "आपने कुछ सख्त बात कह दी है । मुझे इस बात का ध्यान भी नहीं था कि आपकी मेरे बारे में ऐसी बुरी धारणा है ।"

मदामाजेल नोएमी दस्ताने उठाते हुए मुस्करा दीं । "आखिर कुछ बात तो होगी ही, जिससे आप नाराज़ हो गए ।"

नोएमी के पिता ने मेज़ पर दोनों कोहनियां रख लीं और अपने दोनों हाथों पर सिर रख लिया, वे हाथों की उंगलियों से अपने कानों को दबाए थे । इसी मुद्रा में वे खाली गिलास के तल को एकटक देखे जा रहे थे। और न्यूमैन को लगा कि वे कुछ सुन नहीं रहे हैं। मदामाजेल नोएमी ने रोएंदार जैकेट के बटनों को बन्द किया, अपनी कुर्सी को पीछे को हटाया और फिर बड़ी शान से अपने कपड़ों को देखा और फिर न्यूमैन को ।

"ज़्यादा अच्छा होता कि आप एक ईमानदार लड़की बनी रहतीं," न्यूमैन ने धीरे से कहा ।

मो० नियोशे गिलास के तल की ओर एकटक देखते रहे और उनकी पुत्री फिर भी बहादुरी से मुस्कराती हुई उठकर खड़ी हो गई । "आपका मतलब है कि मै बड़ी ईमानदार-सी लगती हूं ? आजकल तो अधिकांश औरतें ऐसी नहीं हैं । अभी मेरे बारे में फैसला न कीजिए," उसने कहा । "मैं सफलता प्राप्त करना

"जी हां, बिलकुल सन्तोषप्रद प्रमाण मिल चलती हूं। इसका एक कारण पर हलकी-सी नज़र डालते हुए कहा। वृद्ध ने इस तरह के कॉफे में देखें। मेरी तरफ निगाह डाली है। लेकिन इसके ब पिता से क्या चाहते है ; वे अब काफी उसमें से कुछ पीने का बहाना क इ गलती नहीं है। अच्छा पापा, नमस्कार ।'

"आपसे मेरे चले ज अपने दस्ताने से थपथपाकर चलने के लिए तैयार हो अच्छी तरह बाद ो एक मिनट के लिए रुकी और उसने न्यूमैन की तरफ देखा। आप० द बेलगर्द से कहिएगा कि जब भी वह मेरे बारे में कुछ जानना चाहें, तो वह मेरे पास आएं, मै उन्हें अपने बारे में सारे समाचार दे दूगी !" और यह कहने के बाद वह मुड़ी और चल दी। सफेद वर्दीधारी वेटर झुका हुआ कॉफे का दरवाज़ा खोले हुए उसीके लिए खड़ा था।

मो० नियोशे कुछ देर बिना हिले-डुले बैठे रहे। और न्यूमैन की समझ में नहीं आया कि वह उनसे क्या कहे। वृद्ध बड़ा दु:खी लग रहा था। आखिर बात चलाने के लिए न्यूमैन ने कहा, "तो फिर आपने अन्ततः यह निश्चय कर ही लिया कि आप अपनी पुत्री को गोली नहीं मारेंगे।"

मो० नियोशे ने बिना हिले-डुले अपनी नज़र उठाई और उसकी तरफ अजीब ढंग से देखने लगे। उस नज़र में उन्होंने अपने सारे अपराधों को मान लेने का भाव दर्शाया था, फिर भी किसी प्रकार का अनुरोध, बहाना या उनपर तरस खाने का आग्रह नहीं था। इसके प्रतिकूल वे यह प्रकट करना चाहते थे कि मैं इन सबके बिना अपना काम चला सकता हूं। जिस तरह एक छोटा-सा महत्त्व-हीन बेमानी कीड़ा सोचता है कि वह इतना छोटा और गिरा हुआ है कि उसे अपने शरीर पर पड़ते हुए जूते के तले से भी डर नहीं लगता, क्योंकि वह समझता है कि वह उसके नीचे आकर भी दब नहीं सकेगा। मो० नियोशे की दृष्टि से यह भाव प्रकट हो रहा था कि उन्होंने नैतिकता को बिलकुल तिलांजलि दे दी है। "आप तो मुझसे बहुत घृणा कर रहे होंगे," उन्होंने कहा। यह कहते समय उनका स्वर बड़ा ही क्षीण था।

"ओह, नहीं," न्यूमैन ने कहा, "मैं ऐसा कुछ नहीं कर रहा। विपत्ति का शांतिपूर्वक सामना करना भी अच्छा ही है।"

"आपके सामने मैंने बढ़-बढ़कर बातें कही थीं," मो० नियोशे ने क "लेकिन उस समय जो कुछ मैंने कहा था, वह हृदय से कहा था।"

"मेरा विश्वास है, मैं बहुत खुश हूं कि आपने अपनी लड़की को गोली नहीं दी," न्यूमैन ने कहा, "मुझे भय था कि कहीं आप स्वयं गोली मारकर त्महत्या न कर लें। इसीलिए मैं आपको देखने आया था।" और न्यूमैन ने पने कोट के बटन लगाने शुरू कर दिए।

"नहीं इनमें से कोई बात मैंने नही की," मो० नियोशे ने कहा, "आप मुझसे णा करते होंगे। मै इसकी कोई सफाई नहीं दे सकता। मैं सोच रहा था शायद अब आपसे भेंट ही न हो।"

"क्यों, यह तो बड़ा खराब लगता," न्यूमैन ने कहा, "आपको अपने दोस्तों इस तरह झटकार नहीं देना चाहिए। इसके अलावा जब पिछली बार आप ले थे, तो काफी खुश नज़र आ रहे थे।"

"हां, मुझे याद है," मो० नियोशे ने सोचते हुए कहा, "तब मुझे एक प्रकार ज्वर था। मुझे पता नहीं कि मैंने क्या कहा और क्या किया। मै सन्निपात बोल रहा था।"

"आह, अब तो आप पहले से ठीक हैं।"

मो० नियोशे एक क्षण चुप रहे, फिर धीरे से बोले, "बिलकुल शांत, जैसे ब्र में दफन की गई लाश।"

"क्या आप बहुत दुःखी हैं?" न्यूमैन ने पूछा।

मो० नियोशे ने धीरे-धीरे अपना माथा रगड़ा, थोड़ा-सा 'विग' भी हटा दिया ार अपने खाली गिलास की तरफ जिज्ञासु भाव से देखने लगे। "जी हां— । हां। लेकिन अब वह एक पुरानी बात है। मैं हमेशा से ही दुःखी रहा हूं। री पुत्री जैसा चाहती है, मेरे साथ व्यवहार करती है। मेरे साथ वह बुरा या ला, जैसा भी व्यवहार वह करती है, मै सह लेता हूं। मुझमें तो जैसे जान ही ीं है और जब यह स्थिति हो, तो चुप रहना ही ठीक होता है। अब मै आपको ार अधिक कष्ट नही दूंगा।"

"ठीक है," न्यूमैन को वृद्ध का यह दर्शनशास्त्र और उसपर आचरण बड़ा रुचिकर लगा, "आप जैसा चाहें।"

मो० नियोशे ऐसा लगता था कि इस बात के लिए तैयार हो गए थे कि लोग ासे घृणा करें, लेकिन फिर भी उन्होने न्यूमैन से कुछ सहारा पाने की कोशिश

"कुछ भी हो," उन्होंने कहा, "आखिर वह मेरी लड़की है और मैं अब भी

उसकी देखभाल कर सकता हूं । अगर वह कोई गलती करेगी, और करेगी ही, तो कम से कम मै उसकी मदद कर सकूंगा । लेकिन बहुत-से रास्ते हैं । ये सारे रास्ते अलग-अलग हैं । इनके अपने-अपने कोण हैं । मैं अब भी उसे—अब भी उसे कुछ लाभ—" और मो० नियोशे न्यूमैन की ओर निरर्थक दृष्टि से एकटक देखते हुए कुछ देर के लिए रुक गए और न्यूमैन को ऐसा लगा कि मो० नियोशे का दिमाग कुछ खराब हो गया है—"अपने अनुभव का कुछ लाभ उसे दे सकता हूं," मो० नियोशे ने कहा ।

"आपका अनुभव ?" न्यूमैन ने पूछा । उसको हंसी भी आ रही थी और आश्चर्य भी हो रहा था ।

"हां, व्यापार का मेरा अनुभव," मो० नियोशे ने गम्भीरता से कहा ।

"हां-हां," न्यूमैन ने हंसते हुए कहा, "इसका तो आपकी पुत्री को अवश्य ही बड़ा लाभ होगा !" और इसके बाद विदा लेने के लिए न्यूमैन ने उस बेचारे पागल बूढ़े के साथ हाथ मिलाने को अपना हाथ बढ़ा दिया ।

मो० नियोशे ने हाथ मिलाया और वह दीवार के सहारे से खड़ा हो गया । वह एक क्षण हाथ को पकड़े रहा, फिर नज़र उठाकर बोला, "मेरा ख्याल है कि आप सोच रहे हैं कि मैं पागल हुआ जा-रहा हूं," उसने कहा, "शायद यही बातहो; मेरे सिर में हमेशा दर्द रहता है । यही वजह है कि मैं आपके सामने कोई सफाई नहीं दे सकता, कोई बात नहीं कह सकता । और वह लड़की इतनी दृढ़निश्चयी है कि वह मुझे जैसा नचाना चाहती है, वैसा नचाती है ! लेकिन बात यह है—बात यह है ।" और वह रुक गया । अब भी मो० नियोशे न्यूमैन की ओर देखे जा रहा था । वृद्ध की छोटी-छोटी सफेद आंखें पूरी तरह खुल गई थीं और उनमें वैसी ही चमक आ गई थी, जैसी अंधेरे में बिल्ली की आंखों में आ जाती है । "ऐसा नहीं है, जैसा आपको लग रहा है । मैंने उसे माफ नहीं किया है । ओह, नहीं !"

"बिलकुल ठीक किया है; आप माफ मत कीजिए", न्यूमैन ने कहा । "यह लड़की ठीक नहीं है ।"

"बड़े ही अफसोस की बात है, बड़े ही दुःख की बात है," मो० नियोशे ने कहा, "लेकिन क्या आप सच्ची बात जानना चाहते हैं ? मैं उससे घृणा करता हूं । यह बात ज़रूर है कि वह जो कुछ मुझे देती है, वह मैं ले लेता हूं, लेकिन मैं उसे पहले से भी अधिक घृणा करने लगता हूं । आज भी वह मुझे तीन सौ फ्रांक

दे गई है; यह रकम मेरी जाकेट की जेब में है। अब मैं उसे बड़ी निर्ममता से, क्रूरतापूर्वक घृणा करने लगा हूं। नहीं, मैंने उसे क्षमा नहीं किया है।"

"लेकिन आपने उससे यह रकम ली क्यों ?" न्यूमैन ने पूछा।

"अगर मैं ऐसा न करता," मो० नियोशे ने कहा, "तो मैं शायद उसे और अधिक घृणा करने लगता। यही तो दुःख है। नहीं, मैंने उसे माफ नहीं किया है।"

"अच्छा, इस बात का ध्यान रखिएगा कि आप उसे कोई चोट न पहुंचाएं," न्यूमैन ने फिर हंसते हुए कहा। और यह कहकर वह वहां से रवाना हो गया। जब वह कॉफे के सामने से गुज़र रहा था, तो उसने सड़क पर से देखा कि वृद्ध इशारे से वेटर को बुला रहा है और बड़े ही दुखित भाव से अपने गिलास को दुबारा भरने के लिए कह रहा है।

कॉफे द ला पैत्री में जाने के सप्ताह-भर बाद एक दिन न्यूमैन वेलेंतीन द बेलगार्द के घर गया और संयोग की बात कि वेलेंतीन उसे घर पर मिल भी गया। न्यूमैन ने वेलेंतीन को मो० नियोशे की बातचीत और भेंट के बारे में बताया और यह भी कहा कि मो० नियोशे के साथ उसकी पुत्री भी मिली थी। न्यूमैन ने कहा कि मुझे भय है कि आपने वृद्ध के सम्बन्ध में अपना जो मत प्रकट किया था, वह सही था। मैंने देखा कि पिता-पुत्री दोनों बड़े प्रेम से बातचीत कर रहे थे। वृद्ध सज्जन जो कठोरता प्रकट कर रहे थे, वह कोरी सैद्धान्तिक थी। न्यूमैन ने यह बात भी स्वीकार की कि वृद्ध की वर्तमान मनोदशा देखकर मुझे निराशा हुई है; अच्छा होता, मो० नियोशे ने नैतिक आदर्शों का कुछ अधिक दृढ़ता से पालन किया होता।

"मेरे प्यारे दोस्त, ऊंचे आदर्श," वेलेंतीन ने हंसते हुए कहा, "मो० नियोशे के लिए कोई ऊंचे आदर्श नहीं हैं। जहां सब लोग ऐसे ही हों, वहां किसी प्रकार के ऊंचे आदर्शों का निर्वाह हो भी कैसे सकता है !"

"वृद्ध ने मुझसे यह जरूर कहा कि उसने अपनी पुत्री को क्षमा नहीं किया है," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन उसकी पुत्री को शायद यह कभी पता नहीं चलेगा कि उसके पिता ने उसे क्षमा नहीं किया है।"

"लेकिन हमें यह श्रेय तो वृद्ध को देना ही होगा कि उसे अपनी पुत्री की ये बातें पसन्द नहीं हैं," वेलेंतीन ने उत्तर दिया। "मदामाजेल नोएमी उन महान

है, वह तारीफ के काबिल है," वेलेंतीन ने कहा, "पिछले पांच दिनों में मैं नोएमी से तीन बार मिल आया हूं। बड़ी ही आकर्षक मेज़बान है वह। हम लोगों ने शेक्सपियर और संगीत के बारे में बातचीत की। वह बहुत ही चतुर है और बड़े ही अजीब तरह की लड़की है। उसमें रूखापन बिलकुल नहीं है और न ही वह रूखी होना चाहती है। उसने इस बात का पक्का निश्चय कर रखा है। उसने यह भी तय कर रखा है कि वह सफलता प्राप्त करेगी। वह सब दृष्टियों से पूर्ण है। किसी पुराने संगतराश की मूर्ति की भांति वह जलपरी जैसी सुन्दर है और स्पष्ट तथा कठोर भी। हृदय नाम की कोई चीज़ उसमें बिलकुल नही है। ठीक उसी तरह, जिस तरह नीलम से बनाई गई किसी मूर्ति में दिल जैसी कोई चीज़ नहीं होती। आप उसे हीरे से भी नहीं काट सकते। वह देखने में बहुत सुन्दर है—सच, खास तौर से उस समय जब आप उसे पहचान गए हों, वह बड़ी ही सुन्दर लगती है—बुद्धिमती, दृढनिश्चयी, महत्त्वाकांक्षी, लक्ष्य प्राप्त करने में साधनों की परवाह न करनेवाली और बड़ी ही क्रूर, इतनी क्रूर कि अगर आप उसके सामने किसी आदमी का गला भी घोंट दें, तो उसके चेहरे का रंग भी नहीं बद-लेगा और मैं आपसे सच कहता हूं कि वह बड़ी ही 'दिलचस्प' है।"

"वाह, आपने उसके आकर्षणों की खूब बढ़िया सूची तैयार की है," न्यूमैन ने कहा, "इस सूची को सुन ऐसा लगता है, जैसे उसे किसी पुलिस के जासूस ने अपने पुराने अपराधी के बारे में तैयार किया है। मैं उसे दिलचस्प कहने के बजाय कुछ और कहूंगा।"

"क्यों, यही तो शब्द ठीक है। मैंने यह तो नहीं कहा कि वह प्रशंसा योग्य है या प्रेम करने योग्य है। मैं उसे अपनी पत्नी या बहन के रूप में कभी पसन्द नहीं करूंगा, लेकिन वह बड़ी ही अजीबो-गरीब मशीन है। मैं देखना चाहूंगा कि वह कैसे चलती है।"

"ठीक है, लेकिन मैंने इससे भी अजीबो-गरीब मशीनें देखी हैं," न्यूमैन ने कहा, "एक बार एक स्त्री के कारखाने में मैंने एक साहब को एक ऐसी ही मशीन के ज्यादा पास जाते देखा था, उन सज्जन को इस मशीन ने इस तरह से अपने जाल में फंसाया, जैसे मकड़ी मक्खी को फंसाती है और फिर उसे निगल जाती है।"

एक दिन शाम को देर से जब न्यूमैन अपने घर पहुंचा, तो उसे एक कार्ड

मिला, जो काफी लम्बा-चौड़ा था और जिसपर यह निमन्त्रण छपा हुआ था कि मदाम द बेलगार्द इस महीने की २७ तारीख को 'एट होम' दे रही है। पार्टी रात १० बजे से शुरू होगी। निमन्त्रण मदाम द बेलगार्द से पार्टी की बातचीत होने के तीन दिन बाद उसके पास आ गया था। इसी पार्टी में वे न्यूमैन को अपने मित्र-जगत् में परिचित कराना चाहती थीं। न्यूमैन ने निमंत्रण-पत्र को अपने शीशे के फ्रेम में लगा लिया और उसे बड़े सन्तोष के साथ जब-तब देख लेता था। यह निमंत्रण-पत्र उसकी विजय का प्रसन्नतादायी प्रतीक था और इस बात का प्रमाण था कि उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। कुर्सी पर आराम से बैठा जब वह बड़े प्रेम से उस निमंत्रण को देख रहा था, तभी बेलगार्द उसके कमरे में आ गया। वेलेंतीन ने भी उस ओर देखा, जिस तरफ न्यूमैन देख रहा था और तब उसने नोट किया कि न्यूमैन उसकी मां द्वारा भेजे गए निमंत्रण-पत्र पर निगाहें गड़ाए है।

"और उस कोने में तुमने क्या लगा रखा है ?" वेलेंतीन ने पूछा। "न तो यह किसी संगीत, न नृत्य और न अन्य किसी सजीव व्यक्ति का चित्र है। और कुछ नहीं था, तो एक अमरीकन का ही चित्र लगाया जा सकता था।"

"ओह, हम जैसे बहुत हैं," न्यूमैन ने कहा, "मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने आज मुझे बताया कि उन्हें भी निमंत्रण मिल गया है और उन्होंने पार्टी में आने के लिए अपनी स्वीकृति भेज दी है।"

"आह, तो फिर आपको मिसेज़ ट्रिस्टरैम और उनके पति का समर्थन मिलेगा। मेरी मां को चाहिए था कि वे अपने कार्ड पर 'तीन अमरीकन' यह शब्द भी लिखवा देंती। लेकिन मेरा ख्याल है कि आपके मन-बहलाव के लिए कमी नहीं रहेगी। फ्रांस के सर्वोत्तम लोग आपको वहां मिलेंगे। मेरा मतलब है कि काफी पुराने घरानों के लोग और ऊंची नाकवाले लोग। इनमें से कुछ तो बड़े ही बेवकूफ हैं; उनसे जरा आप सावधान रहिएगा।"

"ओह, मेरा ख्याल है कि मैं उन्हें पसन्द करूंगा," न्यूमैन ने कहा, "आज-कल मैं हरेक को पसन्द करने के लिए तैयार हूं; हरेक चीज़ को पसन्द करने के लिए तैयार हूं; मैं बहुत खुश हूं।" वेलेंतीन ने एक क्षण के लिए चुपचाप उसकी तरफ देखा और इसके बाद वह क्लान्त भाव से कुर्सी पर निढाल होकर गिर गया।

"आप बहुत ही सौभाग्यशाली हैं !" उसने एक आह भरकर कहा, "लेकिन इस बात का ध्यान रखिएगा कि आप किसीको नाराज़ न करें।"

"अगर कोई नाराज़ ही होना चाहे, तो वह हो जाए। कम से कम मेरा दिल तो साफ है," न्यूमैन ने कहा।

"तो फिर आप सचमुच मेरी बहन के प्रेम में पूरी तरह बंध गए हैं ?"

"जी हां !" न्यूमैन ने कुछ रुककर कहा।

"और वह भी ?"

"मेरा ख्याल है कि वे भी मुझे पसन्द करती हैं," न्यूमैन ने कहा।

"आपने कौनसा जादू उनपर इस्तेमाल किया हैं ?" वेलेंतीन ने पूछा, "आप कैसे प्रेम करते है ?"

"ओह, आम तौर पर मेरे कोई नियम नहीं हैं," न्यूमैन ने कहा, "मैं किसी भी तरह, जो उनको स्वीकार हो, उस तरह से प्रेम प्रकट करता हूं।"

"मेरा ख्याल है कि सब लोग यह बात नहीं जानते," वेलेंतीन ने हंसते हुए कहा। "आप बड़े ज़बर्दस्त ग्राहक हैं। आप अपना काम बड़ी तेज़ी से करते हैं।"

"आज रात ज़रूर कोई खास बात है," न्यूमैन ने इसके उत्तर में कहा, "आप लगातार अपने विषैले वाक्-वाण मुझपर छोड़े जा रहे हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि जब तक मेरा विवाह नहीं हो जाता, तब तक आप लड़ाई की कोई बातचीत मुझसे न करें। और इसके बाद जब मैं जम जाऊं, तो कठिनाइयों का भली भांति सामना कर सकूंगा।"

"और आपका विवाह कब हो रहा है ?"

"लगभग छः सप्ताह बाद।"

वेलेंतीन कुछ देर चुप रहा और फिर बोला, "और आपका भविष्य के प्रति पूरा विश्वास है ?"

"पूरा विश्वास है। मैं जानता था कि मुझे क्या चाहिए और मैं यह भी जानता हूं कि मुझे क्या मिला है।"

"और क्या आप यह समझते हैं कि आप भविष्य में सुखी रहेंगे ?"

"सुखी रहूंगा ?" न्यूमैन ने कहा, "जिस तरह का मूर्खतापूर्ण प्रश्न यह है, उसी तरह का मूर्खतापूर्ण जवाब भी दूंगा—'हां।' "

"आपको किसी बात का डर नहीं है ?"

"मैं किस बात के लिए डरूं ? आप मुझे तब तक नुकसान नहीं पहुंचा सकते, जब तक आप किसी हिंसात्मक साधन का प्रयोग कर मुझे मार न डालें। यह सचमुच ही बहुत बड़ी घटना होगी। मैं जीना चाहता हूं और जिऊंगा। बीमारी से मैं नहीं मर सकता, क्योंकि मैं खूब स्वस्थ हूं ; और वृद्धावस्था से मरने का वक्त आने में समय लगेगा। मैं अपनी पत्नी से हाथ नहीं धो सकता, मैं उनकी पूरी तरह परिचर्या और देखभाल करूंगा। हो सकता है कि मेरा धन खर्च हो जाए, या शायद उसका अधिकांश भाग व्यय हो जाए; लेकिन इसकी कोई चिन्ता नहीं है, क्योंकि मैं उससे दुगुना धन फिर कमा लूंगा। इसलिए डरने की क्या ज़रूरत है ?"

"क्या आपको यह भय नहीं लगता कि किसी अमरीकी व्यापारी का फ्रेंच काउंटेस से शादी करना गलती है ?"

"सम्भवतः काउंटेस के लिए ऐसा करना गलती हो, लेकिन अमरीकी व्यापारी के लिए नहीं, अगर आपका मतलब मुझसे है ! लेकिन मेरी काउंटेस को भी कोई निराशा नहीं होगी। उनको खुश रखने की जिम्मेदारी मैं लेता हूं !" और जैसे उसे यह अनुभव हुआ हो कि अपनी खुशी को आतिशदान में जलनेवाली आग को और तेज़ करके वह मना सकता है, न्यूमैन उठा और उसने कुछ और लकड़ियां पहले से ही जल रही आग में डाल दीं। वेलेंतीन कुछ क्षण देखता रहा कि आग और तेज़ हो गई है और फिर उसने अपने हाथों पर अपना सिर रख लिया और एक दुःखभरी आह भरी। "क्या सिर में दर्द हो रहा है ?" न्यूमैन ने पूछा।

"मैं दुखी हूं," वेलेंतीन ने बड़ी सरलता से उत्तर दिया।

"ओह, आप दुखी हैं ? क्या उस महिला के लिए, जिसके बारे में आपने कहा था कि आप उसे चाहते हैं लेकिन उससे विवाह नहीं कर सकते ?"

"क्या मैंने सचमुच ऐसा कहा था ? बाद में मुझे लगा कि ऐसी ही कोई बात मेरे मुंह से निकल गई है। क्लेयर के सामने इस तरह का आचरण मेरी कुरुचि का द्योतक है। लेकिन जब मैंने यह बात कही थी, तब मैं दुखी था और अब भी मैं दुखी हूं। आखिर आपने मेरा उस लड़की से परिचय ही क्यों कराया ?"

"ओह, क्या नोएमी के बारे में कह रहे हो ? क्या नोएमी ही वह लड़की है ? तब तो भगवान का ही आसरा है ! तुम्हारा यह तो मतलब नहीं है कि तुम

उसपर आसक्त हो गए हो ?"

"आसक्त, नहीं ; ऐसी प्रेमासक्ति जैसी कोई बात नहीं है। लेकिन वह चुड़ैल भुतनी की तरह मेरे ख्यालों में घुसी हुई है, उसने मुझे अपने छोटे-छोटे दांतों से बुरी तरह कुतर लिया है ; मुझे ऐसा लगता है कि मैं पागल हो जाऊंगा। यह बहुत बुरी बात है, बहुत ही घिनौनी। वह यूरोप की भाड़े पर चलनेवाली लड़कियों की तरह सजती है, फिर भी उसने मेरी मानसिक शान्ति हर ली है ; बराबर वही मेरे दिमाग में चक्कर काटा करती है। आपके प्रति जो मेरी रुचि है, वह आपके गुणों के कारण है, लेकिन उसके प्रति आकर्षण ठीक आपके प्रति आकर्षण के विपरीत है। यह कितने खेद की बात है कि अपनी इस उम्र में मैं एक ऐसी लड़की की ओर इतना अधिक आकर्षित हो गया हूं। मैं भी आखिर एक सुन्दर युवक हूं, मैं अपने भविष्य के बारे में इतना आश्वस्त नहीं हूं, जितने आप।"

"इस लड़की को छोड़ो," न्यूमैन ने कहा, "उसके पास भी मत जाना और तुम्हारा भविष्य सुरक्षित है। अमरीका चले चलो, वहां मैं तुम्हें किसी बैंक में करा दूंगा।"

"यह कहना आसान है कि उस लड़की का ख्याल छोड़ दो," वेलेंतीन ने हलके से हंसते हुए कहा, "आप किसी भी सुन्दर लड़की को इस तरह नहीं भुला सकते हैं। नोएमी के साथ भी आदमी को सभ्य व्यवहार करना पड़ता है। और दूसरे मैं उसके मन में यह बात पैदा नहीं होने देना चाहता कि मैं उससे डरता हूं।"

"तो इस प्रकार सभ्यता और अहंकार के चक्कर में आप इस दलदल में और गहरे फंस जाना चाहते हैं ? कृपया अपने अहंकार और सभ्य तथा विनयशीलता के व्यवहार को किसी अन्य अच्छे पात्र के लिए सुरक्षित रखिए। आपको याद है कि मैं कभी भी नहीं चाहता था कि उस लड़की से आपका परिचय कराया जाए ; इसके लिए आपने ही आग्रह किया था। मुझे पहले से ही इस बारे में कुछ आशंका थी।"

"ओह, इसके लिए मैं आपको नहीं कोसता," वेलेंतीन ने कहा, "ईश्वर न करे, अगर कहीं उससे मेरा परिचय ही न होता, तो मैंने एक बहुत बड़ी चीज़ खो दी होती। वह सचमुच असाधारण है। जिस तरह से उसने अपने पंख फैलाए हैं, वह बड़ा ही आश्चर्यजनक है। मुझे याद नहीं पड़ता कि पहले कभी किसी अन्य

स्त्री ने मेरा इस तरह मनोरंजन किया हो। लेकिन मुझे माफ कीजिएगा," उसने एक क्षण में ही कह डाला, "ऐसा लगता है कि आपका उससे कोई मनोरंजन नहीं होता। आपको वह लड़की अच्छी नहीं लगती, गन्दी मालूम होती है। जाने दीजिए, हम किसी और विषय में बात करेंगे।" वेलेंतीन ने दूसरी बात शुरू की, लेकिन पांच मिनट के अन्दर ही न्यूमैन ने देखा कि वेलेंतीन घूम-फिरकर फिर से मदामाजेल नोएमी के बारे में बात करने लगा है और वह उसके हाव-भाव, कार्य-व्यवहार तथा उसकी बातों को याद कर-करके सुना रहा है। नोएमी की बातें बड़ी हाज़िरजवाबी से भरी थीं। वेलेंतीन ने कहा, उस लड़की के मुंह से इन बातों का निकलना कुछ चौंका देनेवाली सनक-सी मालूम पड़ती थी, जो अभी छः महीने पहले बिलकुल कलाहीन चित्र बनाया करती थी। लेकिन आखिरकार वह यकायक रुक गया और कुछ सोचने लगा। काफी देर तक वह कुछ भी नहीं बोला। इसके बाद जब वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ, तो ज़ाहिर था कि उसे उस समय भी मदामाजेल नोएमी की याद आ रही थी। "हां, हां, वह बड़ी भयानक राक्षसी है !" उसने कहा।

सोलह

अगले दस दिन न्यूमैन के जीवन के सबसे सुखद बीतें। वह प्रतिदिन मदाम द सान्त्रे से मिला और इस बीच एक बार भी न तो वृद्धा मदाम द बेलगार्द के दर्शन हुए और न उसके दोनों भावी सालों में से ही कोई मिला। आखिर मदाम द सान्त्रे ने इस बात के लिए न्यूमैन से कुछ क्षमायाचना-सी की कि वह जब भी आता है, तो इनमें से कोई भी व्यक्ति उसे घर पर नहीं मिलता। "वे सब लोग बहुत व्यस्त है," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "आजकल वे लार्ड डीपमेयर को पेरिस घुमाने में लगे हैं।" यह बताते हुए मदाम द सान्त्रे के गम्भीर मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई और मुस्कराहट उस समय और भी ज़्यादा फैल गई, जब मदाम ने यह कहा, "वे हमारे ममेरे भाई हैं, यह तो आपको मालूम ही है कि खून पानी से अधिक गाढ़ा होता है। और फिर वे बड़े दिलचस्प भी हैं !" यह

कहकर वे ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगीं।

न्यूमैन मदाम द सान्त्रे की भाभी मदाम द बेलगार्द से दो या तीन बार ही मिला था। वे हमेशा बड़ी शान से, लेकिन अकारण इधर-उधर घूमा करती थीं। ऐसा लगता था कि उन्हें मन-बहलाव की कोई ऐसी चीज़ चाहिए, जो उपलब्ध नहीं हो सकती। न्यूमैन जब भी उन्हें देखता, उसे लगता कि मदाम द बेलगार्द किसी इत्र की ऐसी रंगी-चुनी शीशी हैं, जिसमें बाल आ गया है; लेकिन न्यूमैन के मन में उनके प्रति कुछ दया का भाव भी था और इसका कारण यह था कि वे अरबेन द बेलगार्द की पत्नी थीं। वह मो० द बेलगार्द की पत्नी पर बहुत तरस खाता था, विशेष रूप से इसलिए कि वे कुछ निर्बुद्धि-सी थीं और यह श्यामवर्णा स्त्री हमेशा किसी प्यासे व्यक्ति की तरह मुस्कराती रहती थीं, जिससे ऐसा लगता था कि उनका अपने दिल पर काबू नहीं है। कभी-कभी मदाम द बेलगार्द उसकी तरफ इस तरह नज़र गाड़कर देखतीं कि वह अबोध दृष्टि नहीं कही जा सकती थी, क्योंकि स्त्रियों के हाव-भाव और कटाक्ष भी उसमें कहीं ज़्यादा परिष्कृत होते हैं। ऐसा लगता था कि जैसे वे कुछ कहना चाहती है या उससे कुछ जानना चाहती हैं। न्यूमैन मन ही मन सोचता था कि वह क्या बात हो सकती है। लेकिन उसे मदाम द बेलगार्द को बात करने का कोई भी अवसर देने में डर-सा लगता था, क्योंकि अगर वह अपने दाम्पत्य-जीवन की नीरसता के बारे में बातचीत शुरू कर देतीं तो न्यूमैन के लिए यह कठिन हो जाता कि वह इस मामले में क्या कर सकता था। लेकिन उसे बराबर यह डर बना हुआ था कि मदाम द बेलगार्द किसी न किसी दिन उसे धर दबोचेंगी (और इसके बाद अपने पीछे देखते हुए) वे तेज़ी से बहुत ही धीरे-धीरे कहेंगी, मैं जानती हूं कि आपको मेरे पति से चिढ़ है; लेकिन आपको बताते हुए मुझे खुशी है कि आपका मत सही है। जरा उस बेचारी स्त्री पर भी तरस खाइए, जिसका विवाह घड़ी की तरह चलनेवाले एक कागज़ के पुतले से हो गया है। चूंकि न्यूमैन में कुछ शिष्टाचार की भावना भी थी, और कुछ कार्यों को वह 'नीचतापूर्ण' समझता था, इसलिए उसने यह तय कर रखा था कि मेरी जैसी स्थिति के व्यक्ति को हमेशा सावधान रहना चाहिए। वह नहीं चाहता था कि उसके बारे में लोग यह कहें कि उसने उनके घर में कोई अप्रिय बात की। बहरहाल मदाम द बेलगार्द उसे अकसर अपने उन वस्त्रों के बारे में दाकदा बताती रहती थीं, जो वे उसकी शादी के अवसर पर पहनने के लिए

बनवा रही थीं। हालांकि वे कई बार दर्ज़ी के यहां हो आई थीं, फिर भी अपने वस्त्रों के सम्बन्ध में वे पूरी-पूरी कल्पना नहीं कर सकती थीं। "मैंने तुमसे कहा था कि बांहों में कोहनियों पर नीले बो लगाओ," वे दर्ज़ी से कहतीं। "लेकिन मैं आज देख रही हूं कि नीले बो तुमने लगाए ही नहीं हैं। उनकी जगह गुलाबी—हलके गुलाबी रंग के बो लगे हुए हैं।" और इसके बाद वे कहतीं, "मुझे लगता है कि गुलाबी या नीले रग से काम नहीं चलेगा। हालांकि मैं बो ज़रूर लगवाना चाहती हूं।"

यह सुनकर न्यूमैन कहता, "हरे या पीले लगवा लीजिए।"

"ओह, यह तो बड़ा ही अपशकुन होगा!" छोटी मदाम द बेलगार्द कहतीं, "अगर मैंने हरे बो लगवाए, तो आपका विवाह-सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाएगा—आपके बच्चे नाजायज़ होंगे!"

मदाम द सान्त्रे ऊपर से बिलकुल शान्त थीं और न्यूमैन यह देख-देखकर खुश होता था कि वे उनके सामने जब और लोग उपस्थित न होते, तो अपनी प्रसन्नता खुलकर प्रकट करती थीं। वे तरह-तरह की प्रेमभरी बातें कहतीं। "मुझे आपके साथ कुछ भी आनन्द नहीं मिलता; आप कभी मुझे इस बात का मौका ही नहीं देते कि मैं आपको डांटू, फटकारूं या आपकी किसी बात को सुधारूं। मुझे आपको अपने नियंत्रण में भी तो रखना है। मै सोच रही थी कि शादी के बाद मुझे यह काम भी करना होगा और सचमुच ऐसा करके मुझे बड़ा आनन्द मिलता। लेकिन आप कोई ऐसी बात ही नहीं करते, जिससे मुझे नाराज़ होने का मौका मिले। मुझे अपनी श्रेष्ठता दिखाने का मौका नहीं मिलता। इससे तो अच्छा होता कि मै किसी और से ही शादी कर लेती।"

"मुझे भय है कि मै इससे और अधिक खराब ढंग व्यवहार नहीं कर सकता," न्यूमैन इन बातों के उत्तर में कहता, "दया करके मेरी इन त्रुटियों पर ध्यान न दीजिए।" उसने मदाम द सान्त्रे को आश्वासन दिया, "कम से कम मैं तो आपको कभी नहीं डांटूं-फटकारूंगा; आप मेरे लिए पूर्णरूप से सन्तोषप्रद हैं।"

"काश, आप कल्पना कर सकतीं," वह कहता, "कि आप मेरी कल्पना की मूर्ति से कितनी अधिक मिलती-जुलती हैं! और अब मेरी समझ में आ गया है कि मैं ऐसी प्रेममयी मूर्ति को क्यों प्राप्त करना चाहता था। इसके मिल जाने से मुझे अपने जीवन में हुए अन्तर का पता चला है। शायद ही कोई व्यक्ति कभी

अपने सौभाग्य से इतना प्रसन्न हुआ होगा, जितना मैं हूं। आप पिछले एक सप्ताह से अपना सिर इतनी शान से उठाकर चलती हैं जैसाकि मै चाहता कि मेरी पत्नी करे। आप ठीक वे ही बातें कहती हैं, जिन्हें मै चाहता था कि मेरी पत्नी कहे। आप कमरे में ठीक उसी तरह चलती हैं, जैसा मै चाहता हूं कि आप चलें। कपड़ों के बारे में आपकी पसन्द ठीक वैसी ही है, जैसी मैं चाहता था। संक्षेप में आपने मेरी कल्पना के आदर्श को पा लिया है। और मैं आपसे कह सकता हूं कि मेरा आदर्श काफी ऊंचा था।"

मदाम द सान्त्रे को ये बातें गम्भीर प्रतीत होतीं। आखिर उन्होंने कहा, "मेरी यह बात अच्छी तरह समझ लीजिए कि मै आपकी आदर्श पत्नी की तरह नही हूं। आपका आदर्श बहुत ऊचा है। आपने जो कल्पना कर रखी है, मै उससे बिलकुल भिन्न हूं ; मैं उसकी तुलना में बहुत छोटी हूं। आपकी कल्पना की नारी बड़ी शानदार है। कृपा करके यह तो बताइए कि आपने इतनी आदर्श नारी के बारे में ऐसी अच्छी कल्पना कैसे कर डाली ?"

"वह पहले इसके सिवा कुछ नहीं थी, " न्यूमैन ने कहा।

"मेरा तो सचमुच यह विश्वास है" मदाम द सान्त्रे ने कहा, "कि आपकी कल्पना की नारी तो मुझसे भी बेहतर है। आपको पता है कि यह कितनी बड़ी प्रशसा है ? जी श्रीमन्, मै इस आदर्श को स्वयं अपना लूंगी।"

मिसेज ट्रिस्टरैम, न्यूमैन द्वारा सगाई की घोषणा के बाद, अपनी प्यारी क्लेयर से मिलने आई और उन्होंने दूसरे दिन हमारे नायक को बताया कि उनका सौभाग्य कोई खास मानी नहीं रखता ; बिलकुल बेकार है। "इसका परिहासपूर्ण अंश यह है कि आप विवाह के बाद उतने ही सुखी होंगे, जितने कुमारी स्मिथ या कुमारी टॉमसन से विवाह करके खुश होते। मै आपके जोड़े को बड़ा अच्छा समझती हूं, लेकिन आपको इतनी अच्छी पत्नी बिना कुछ त्याग किए ही मिल गई है। बहुधा इन बातों में समझौता करना पड़ता है, लेकिन यहां आपको हर चीज मिल गई और कुछ भी छोड़ना नहीं पड़ा। आप विवाह के बाद भी इसी तरह सुखी रहेंगे।" न्यूमैन ने मिसेज़ ट्रिस्टरैम को प्रिय और उत्साहित करनेवाली बातों के लिए धन्यवाद दिया ; कोई भी स्त्री इतनी अच्छी तरह न तो उत्साहित कर सकती थी और न निरुत्साहित। ट्रिस्टरैम के बात कहने का ढंग कुछ भिन्न था। वह भी अपनी पत्नी के साथ मदाम

द सान्त्रे से मिलने गए थे। इस मुलाकात का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया।

"आप मुझे टोकिएगा मत, अगर मैं आपकी काउंटेस के बारे में इस बार अपनी राय दे दूं," ट्रिस्टरैम ने कहा, "मैंने जल्दी में यह गलती कर दी। मेरा ऐसा कहना उचित नहीं है, विशेष रूप से उस समय, जबकि आप जैसा दोस्त उस लड़की से विवाह करने जा रहा हो। आपको जो लड़की मिल रही है, आप सर्वथा उसके योग्य है। आप उससे मिलने जाते हैं और इसके बाद जैसे ही मिलते हैं, शादी करने की इच्छा प्रकट कर देते है और वह तरस खाकर राजी हो जाती है। मैं आपके प्रति न्याय करने के लिए यह कहना पसन्द करूंगा कि आपने मदाम द सान्त्रे से शादी का प्रस्ताव किया ही नहीं ; और अगर किया भी है, तो वे असाधारण रूप से उदार हैं। मदाम द सान्त्रे बहुत अच्छी हैं और अत्यन्त शिष्ट। वे और लिजी सोफे पर बैठी हुई और एक-दूसरे का हाथ अपने हाथों में लेकर यह कह रही थीं कि वे एक-दूसरे को बहुत ही प्यारी लग रही हैं और मदाम द सान्त्रे हर तीसरे शब्द के बाद मेरी ओर देखकर मुस्करा देती थीं, जैसे मुझे बार-बार यह बता रही हों कि मैं भी बहुत सुन्दर व्यक्ति हूं। उन्होंने पहले जो मेरे प्रति उदासीनता बरती थी, उसका पूरा मुआवजा चुका दिया, मैं आपसे कहता हूं कि मदाम द् सान्त्रे बहुत ही सुन्दर और मिलनसार हैं। पता नहीं किस कुघड़ी में उन्हें अपनी मां का ध्यान हो आया—और तभी उन्होंने कहा कि उनकी मां आपके मित्रों से मिलना चाहती है। मैं उनकी मां से मिलने के लिए ज़रा भी उत्सुक नहीं था और मैं लिजी से यह कहने ही वाला था कि वह अकेली जाकर मिल आएं, मैं बाहर प्रतीक्षा कर रहा हूं; लेकिन लिजी, जैसीकि उसकी आदत है, पहले ही यह जान गई और उसने मुझे तेज़ और जलती हुई निगाहों से देखकर खड़े होने के लिए विवश कर दिया। इस तरह आगे-आगे हाथ में हाथ लिए लिजी और मदाम द सान्त्रे चले और पीछे-पीछे मैं। जब हम वृद्धा के कमरे में पहुंचे, तो वे हत्थे वाली कुर्सी पर बैठी हुई अपने अंगूठे चटका रही थीं। उन्होंने लिजी को सिर से पैर तक देखा। लेकिन लिजी भी उनसे कम न थी। मेरी पत्नी ने बतलाया कि हम दोनों मि० न्यूमैन के बड़े गहरे मित्रों में हैं। वृद्धा एक क्षण तक हमें घूरती रहीं और फिर बोलीं, 'ओह, मि० न्यूमैन ! हां, मेरी पुत्री ने कोई मिस्टर न्यूमैन है, उनसे विवाह करने का फैसला किया है।' इसके बाद मदाम द सान्त्रे फिर लिजी को दुलारने लगीं

और बोलीं कि यही वे मेरी सहेली हैं, जिन्होंने मिस्टर न्यूमैन से मुझे मिलाया था और सबसे पहले यह सोचा था कि हम दोनों का विवाह हो सकता है। 'ओह, तो आप हैं जिनको मुझे अपने अमरीकन दामाद के लिए धन्यवाद देना चाहिए,' वृद्धा ने मिसेज़ ट्रिस्टरैम से कहा, 'यह आपका बड़ा चतुराईभरा विचार था, इसके लिए हम आपके बड़े कृतज्ञ हैं।' और फिर वे मुझे देखने लगीं और बोलीं. 'कहिए, क्या आप भी कोई उद्योगपति हैं ?' मैं कहना चाहता था कि मैं ऐसी झाड़ू बनाता हूं, जिनसे बुढ़िया चुड़ैलें उड़ाई जा सकती हैं, लेकिन लिजी मुझसे पहले ही बोल पड़ी, 'मदाम द मारक्विस, मेरे पति,' उसने कहा, 'ऐसे अभागे वर्ग के लोगों में है, जो कोई व्यवसाय नहीं करते और न किसी व्यापार में है। उनके अस्तित्व से दुनिया को कोई लाभ नहीं है।" वृद्धा को जवाब देने के चक्कर में मेरी पत्नी को इस बात की परवाह नहीं थी कि मेरा क्या हाल होगा और मैं कहां गिरूंगा। 'ओह,' वृद्धा ने कहा, 'हम सबके अपने-अपने कर्तव्य हैं।' 'मुझे खेद है कि मेरा कर्तव्य बाध्य कर रहा है कि मैं आपसे विदा ले लूं,' लिजी ने कहा और इसके बाद हम सब वृद्धा के कमरे से बाहर आ गए। लेकिन कुछ भी हो, आपको सास ज़ोरदार मिली है।"

"ओह," न्यूमैन ने कहा, "मेरी सास मुझसे ज़रा भी छेड़छाड़ नहीं करती है।"

२७ तारीख की संध्या आई। उस दिन न्यूमैन मदाम द बेलगार्द की पार्टी में पहुंचा। रू द ला यूनिवर्सिते-स्थित वह पुरानी कोठी नई दुल्हन की तरह चमक रही थी। बाहर दरवाज़े पर रोशनी की व्यवस्था थी और आगे की तरफ बहुत से लोग खड़े गाड़ियों को अन्दर जाते देख रहे थे। अहाते में भी खूब रोशनी की गई थी और पोर्टिको में गहरे लाल रंग का कालीन बिछा था। जब न्यूमैन वहां पहुंचा, तो कुछ ही लोग पहले आ चुके थे। वृद्धा, उनकी पुत्री और पुत्र-वधू, दोनों ज़ीने के ऊपर उस जगह खड़ी थीं, जहां एक आले में एक पौधे के नीचे काले रंग की सुन्दरी की मूर्ति झांकती-सी नज़र आ रही थी। मदाम द बेलगार्द बैंगनी रंग की सुनहले तार से कढ़ी पोशाक पहने थीं और ऐसा लगता था कि वे वानडाइक के चित्र में अंकित कोई वृद्ध महिला हैं। मदाम द सान्त्रे श्वेत परिधान में थीं। वृद्धा ने न्यूमैन का शानदार औपचारिकता से स्वागत किया और इसके बाद अपने चारों ओर देखते हुए उन सब लोगों को बुला लिया, जो उनके

पास खड़े थे। ये सभी व्यक्ति काफी आयु के थे और जिनको बेलेंतीन द बेलगार्द ने ऊंची नाक वाले वर्ग के लोग बताया था। इनमें से दो या तीन व्यक्ति सैनिक पोशाकों में थे। वे लोग बड़े नपे-तुले कदमों से पास आए और वृद्धा ने उनसे कहा कि मैं आप लोगों का परिचय मिस्टर न्यूमैन से कराना चाहती हूं, जो मेरी पुत्री से विवाह कर रहे हैं। इसके बाद उन्होंने एक-एककरके तीन ड्यूकों, तीन काउंटों और एक बैरन से परिचय कराया। इनमें से हर व्यक्ति बड़ी नम्रता से झुका और उसने मुस्कराकर अभिवादन किया। न्यूमैन ने बगैर किसी पक्षपात के सभी लोगों से हाथ मिलाया और हरेक से कहा, "आपसे परिचय प्राप्त करके मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है।" उसने मदाम द सान्त्रे की तरफ देखा, लेकिन वे उसकी तरफ नहीं देख रही थीं। अगर न्यूमैन यह चाहता था कि वह अपनी व्यक्तिगत होशियारी के प्रमाण के लिए किसी आलोचक के सामने अपना व्यवहार करे, और यह जानना चाहे कि समाज में वह किस तरह आचरण कर रहा है, तो उसे यह जानकर प्रसन्नता हुई होगी कि मदाम द सान्त्रे को उसपर इतना विश्वास था कि उन्होंने कभी भी यह नहीं देखा कि न्यूमैन किस तरह लोगों से बातचीत कर रहा है और कैसा व्यवहार कर रहा है। न्यूमैन ने शायद यह बात न सोची हो, लेकिन हम यह कह सकते है कि इस स्थिति के बावजूद मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन की हर छोटी से छोटी गतिविधि को देखा था। मदाम द सान्त्रे की भाभी मदाम द बेलगार्द बड़े ही शोख रंग का गहरे लाल रंग वाला परिधान धारण किए थीं। इसपर जगह-जगह चन्द्राकार गोले बने हुए थे, कहीं पूरे तो कहीं अधूरे।

"आपने मेरे कपड़ों के बारे में कुछ नहीं कहा," उन्होंने न्यूमैन से कहा।

"मैं महसूस करता हूं," न्यूमैन ने जवाब दिया," जैसे मैं आपको किसी दूरबीन से देख रहा हूं। बड़ी अनोखी पोशाक है आपकी।"

"अगर यह अनोखी पोशाक है, तो अवसर के बिलकुल अनुकूल ही है। लेकिन मैं कोई आसमान में चमकनेवाला सितारा नहीं हूं।"

"मैंने आधी रात में आसमान में इस ढंग के रंग का सितारा कभी नहीं देखा," न्यूमैन ने कहा।

"यही तो मेरी मौलिकता है; नीला रंग तो कोई भी छांट लेता। मेरी ननद होती, तो वह बड़े ही प्यारे ढंग का कोई नीला रंग चुनती, जिसमें लगभग

एक दर्जन छोटे-छोटे चांद बने होते, लेकिन मेरा ख्याल है कि गहरा लाल रंग ज्यादा दिलचस्प है। और बीच की सफेदी चांदनी का प्रतीक है।"

"वाह, चांदनी और रक्तपात," न्यूमैन ने कहा।

"चांदनी में हत्या," मदाम द बेलगार्द हंस पड़ी। "क्या खूबसूरत ख्याल है! इसको पूरा करने के लिए मैंने अपने बालों में एक चांदी की छुरी भी लगा रखी है। और लीजिए, ये आ रहे हैं लार्ड डीपमेयर," एक क्षण में ही मदाम द बेल-गार्द ने कहा, "मुझे इनसे भी पता लगाना चाहिए कि मेरी पोशाक के बारे में इनकी क्या राय है।" लार्ड डीपमेयर जब पास आ गए, तो उनका चेहरा सुर्ख था और वे हस रहे थे। "लार्ड डीपमेयर यह फैसला नही कर पा रहे हैं कि वे मुझे पसन्द करते है या मेरी ननद को।" मदाम द बेलगार्द ने कहा, "वे क्लेयर को इसलिए चाहते हैं कि वह इनकी रिश्तेदार है और मुझे इसलिए कि मैं इनकी रिश्तेदार नहीं हूं। लेकिन इनको क्लेयर से प्रेम करने का कोई अधिकार नहीं है, जबकि मैं इस कार्य के लिए उपलब्ध हूं। एक ऐसी स्त्री से प्रेम करना जिसकी सगाई हो गई हो, बड़ी गलत बात है, लेकिन जिस स्त्री का विवाह हो गया हो उससे प्रेम न करना बहुत ही गलत बात है।"

"ओह, विवाहित स्त्री से प्रेम करने में बड़ा मजा आता है," लार्ड डीपमेयर ने कहा, "क्योंकि वे आपसे शादी करने का प्रस्ताव नहीं कर सकतीं।"

"क्या अविवाहित लड़कियाँ विवाह के प्रस्ताव करती रहती हैं?" न्यूमैन ने पूछा।

"ओह डीयर, हां," लार्ड डीपमेयर ने कहा, "इंगलैंड में बहुत-सी लड़कियां एक ही व्यक्ति से शादी करने का प्रस्ताव कर देती है।"

"और वह व्यक्ति बड़े ही नृशंस ढंग से सभी प्रस्ताव अस्वीकार कर देता है," मदाम द बेलगार्द बोलीं।

"क्यों, सच, आप नहीं जानतीं कि एक व्यक्ति किसी भी ऐसी लड़की से विवाह नहीं कर सकता, जो उससे शादी करना चाहे," लार्ड डीपमेयर ने कहा।

"आपकी रिश्तेदार मदाम द सान्त्रे तो आपसे शादी करने के लिए कहने से रहीं। वे मिस्टर न्यूमैन से विवाह करने जा रही हैं।"

"ओह, यह दूसरी बात है!" लार्ड डीपमेयर हंस पड़े।

"शायद, आप उनसे विवाह करना तो स्वीकार कर लेते। इससे मुझे यह

आशा बंधती है कि अब आप मुझे ज़्यादा पसन्द करेंगे।"

"ओह, जब सभी चीजें अच्छी होती हैं, तो मैं कभी भी एक चीज को दूसरी से ज़्यादा पसन्द नहीं करता," अंग्रेज़ युवक ने कहा। "मै सभीको स्वीकार कर लेता हूं।"

"आह, क्या मुसीबत है ! मै यह स्थिति स्वीकार नहीं करूंगी ; मुझे तो स्वतंत्र रूप से ही मान्यता देनी होगी," मदाम द बेलगार्द ने चिल्लाकर कहा। "मिस्टर न्यूमैन आपसे कहीं ज़्यादा अच्छे हैं ; इनको चयन करना आता है। ओह, यह चुनाव इस तरह करते हैं, जैसे किसी सुई में धागा डाल रहे हों। वे मदाम द सान्त्रे को अन्य किसी भी व्यक्ति या चीज़ की तुलना में सबसे ज्यादा पसन्द करते है।"

"जो हो, आप क्या कर सकते हैं, आखिर मदाम द सान्त्रे रिश्ते में मेरी बहन तो लगती ही है," लार्ड डीपमेयर ने कहकहा लगाते हुए न्यूमैन से कहा।

"ओह नहीं, मैं कुछ नहीं कर सकता," न्यूमैन ने हंसते हुए जवाब दिया। "और वे भी कुछ नहीं कर सकतीं !"

"अगर मैं उनके साथ नाचूं, तो भी आप कुछ नहीं कर सकते," लार्ड डीपमेयर ने सरलता से कहा।

"मैं आपको नाचने से तभी रोक सकता था, जब मैं स्वयं उनके साथ नाचना शुरू कर देता," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन दुर्भाग्यवश मुझे नाचना नहीं आता।"

"ओह, आप बिना जाने भी नाच सकते हैं ; क्या कोई बिना जाने नहीं नाच सकता मी' लार्ड ?" मदाम द बेलगार्द ने पूछा। लेकिन इसके उत्तर में लार्ड डीपमेयर ने कहा कि अगर कोई आदमी अपने-आपको नितांत मूर्ख सिद्ध नहीं करना चाहता, तो उसे बिना सीखे नाचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। और तभी अरबेन द बेलगार्द वहां आ गए। वे अपने दोनों हाथ पीछे बांधे थे तथा धीरे-धीरे चल रहे थे।

"बड़ा ही शानदार समारोह है," न्यूमैन ने अत्यन्त हर्षपूर्वक कहा, "यह प्राचीन मकान खूब जगमगा रहा है।"

"अगर आप खुश हैं, तो हमें सन्तोष है," मारक्विस ने अपने कंधे उठाकर उन्हें आगे झुकाते हुए कहा।

"ओह मेरा तो ख्याल है कि हर व्यक्ति खुश है," न्यूमैन ने कहा, "और लोग

अ-१७

खुश कैसे न हों, जबकि उनको आते ही सामने देवी जैसी सुन्दरी आपकी बहन के दर्शन हो जाते हैं !"

"जी हां, वे बहुत सुन्दर हैं," मारक्विस ने गम्भीरता से उत्तर दिया, "लेकिन उन्हें देखकर यह स्वाभाविक है कि और लोगों को उतनी खुशी नहीं होगी जितनी आपको।"

"हां, मैं खुश हू, सन्तुष्ट हूं, बहुत सन्तुष्ट हूं," न्यूमैन ने कहा। और वह बोला, "और मुझे यह तो बताइए, कि आपके यहां कौन-कौन मित्र आए हुए हैं।"

मो० द बेलगार्द ने बिना कुछ कहे, अपने चारों तरफ देखा। उनका सिर झुका हुआ था और हाथ निचले होंठ पर रखा था, जिसे वे धीरे-धीरे रगड़ रहे थे। जिस कमरे में न्यूमैन अपने मेजबान के साथ खड़ा था, उसमें लोगों के आने का तांता लगा हुआ था, सभी कमरे मेहमानों से भरे जा रहे थे और समां बंध गया था। इस जगमगाते वातावरण में चमकीली पोशाक वाली और गहनों से लकदक स्त्रियां चार चांद लगा रही थीं। वर्दीधारी सैनिक अधिकारियों की संख्या बहुत कम थी, क्योंकि मदाम द बेलगार्द ने अपने दरवाज़े उन लोगों के लिए बन्द कर दिए थे, जो सयोग से उस समय फ्रांस पर शासन कर रहे थे। जो लोग वहां मुस्कराते हुए बातचीत कर रहे थे, उनमें कदम-कदम पर आपको खूबसूरत चेहरे नहीं दिखलाई पड़ते थे। फिर भी यह खेद की बात थी कि न्यूमैन सौंदर्य-विशेषज्ञ नहीं था, क्योंकि अधिकांश लोगों के चेहरे न तो सुन्दर थे, न भावपूर्ण और न प्रतीकात्मक। अगर और कोई अवसर होता, तो शायद इन लोगों को देखकर वह खुश न होता ; उसे औरतें सम्भवतः ज्यादा सुन्दर न लगतीं और पुरुष शायद मूर्खों की तरह हंसते हुए प्रतीत होते ; लेकिन इस समय वह प्रसन्न मुद्रा में था और सबके बारे में केवल प्रिय धारणाएं ही बनाना चाहता था। उसे केवल इतना ही दिखलाई पड़ता था कि हर व्यक्ति बड़ा शानदार है। और उसे यह महसूस करके खुशी होती थी कि यह शान-शौकत उसीकी शान-शौकत का एक अंश है। "मैं आपको कुछ लोगों से मिलाना चाहता हूं," मो० द बेलगार्द ने कुछ देर बाद कहा, "मै यह कार्य विशेष रूप से करूगा। आशा है आपको कोई आपत्ति न होगी !"

"ओह, मैं किसीसे भी, जिससे आप चाहेंगे, हाथ मिलाने के लिए तैयार हू," न्यूमैन ने कहा, "आपकी मां ने मुझे कोई आधा दर्जन वृद्ध सज्जनों से मिलाया

है। ज़रा देख लीजिएगा कि आप दुबारा उन्हीं लोगों में से किसीसे मेरा परिचय न करा बैठें।"

"वे कौन-कौन-से लोग थे, जिनसे मेरी मां आपका परिचय करा चुकी हैं?"

"हे भगवान, मैं तो उन्हें भूल गया," न्यूमैन ने हसते हुए कहा, "यहा तो ज्यादातर लोग एक-से ही दिखाई पड़ रहे हैं।"

"मेरा ख्याल है कि कम से कम वे लोग तो आपको नहीं भूले होंगे," मारक्विस ने कहा। और इसके बाद वे लोग एक के बाद दूसरे कमरे से होते हुए आगे बढ़ने लगे। न्यूमैन मारक्विस के साथ रहना चाहता था, इसलिए उसने उसके हाथों में अपना हाथ डाल लिया। कुछ देर तक मारक्विस चुपचाप आगे बढ़ते रहे। आखिरकार वे स्वागत-कक्षों के सबसे आखिर वाले कमरे में पहुचे। वहां न्यूमैन ने देखा कि एक बड़ी ही भारी-भरकम महिला लम्बी-चौड़ी कुर्सी पर डटी हुई हैं और उनके ओर-पास अर्ध-वृत्ताकार ढंग से बहुत-से लोग खड़े हुए हैं। लोगों का यह दल तुरन्त ही बंट गया, जैसे ही उसने मारक्विस को आते देखा। मो० द बेलगार्द आगे बढ़े और एक क्षण तक चुपचाप खड़े रहे। वे बड़े औपचारिक ढग से अपने हैट को होंठों तक ले गए। न्यूमैन ने लोगों को ऐसा करते चर्चों में देखा था। वह महिला किसी मन्दिर में विराजित प्रतिमा जैसी लगती थीं, जिनकी कि पूजा की जाती हो। वे बड़ी हट्टी-कट्टी थी और देखने में अत्यन्त गम्भीर। न्यूमैन को उनकी तरफ देखना भी मुश्किल हो रहा था। वह उन महिला की तीन परतों वाली मांसल ठोड़ी से परेशान था। उनकी आंखें छोटी-छोटी, लेकिन मर्म को भेदनेवाली थीं। वक्षस्थल काफी लम्बा-चौड़ा और खुला हुआ था। वे कानों में, गले में तथा हाथो आदि मे चमकते हुए जेवर पहने थीं और जब वे ज़रा-सा सिर हिलाती थीं तो ये सारे गहने झिलमिला उठते थे। उनके साटन के पेटीकोट का घेरा भी बड़ा विशाल था। इन अद्भुत महिला के आसपास जो लोग खड़े थे, उनको देखकर न्यूमैन को मेले की मोटी महिला की याद आ गई। वे बिना पलक झपकाए नवागतों को एकटक देखे जा रही थीं।

"प्रिय डचेस," मारक्विस ने कहा, "आप मुझे नये मित्र मि० न्यूमैन का परिचय कराने की अनुमति दीजिए। इनके बारे में हम लोगो ने आपसे पहले ही काफी कुछ बता दिया है। अब चूंकि हम लोग मि० न्यूमैन का अन्य लोगों से परिचय कराने जा रहे थे, इसलिए मैंने यह सोचा कि सबसे पहले परिचय की

शुरूआत आपसे ही की जाए।"

"मैं बहुत खुश हुई प्रिय मित्र, मैं बहुत खुश हुई मोंश्यू," डचेस ने अपनी महीन और कुछ तेज़ आवाज़ में कहा, जो अप्रिय नहीं थी। इस बीच न्यूमैन ने झुककर अभिवादन किया। "मै यहां मोंश्यू से ही मिलने आई थी। मुझे आशा है कि वे मेरी इस प्रशंसा को पसन्द करेंगे। ऐसा करने के लिए श्रीमन् आपको मेरी तरफ केवल एक बार देखना होगा," वे अपनी बात तेज निगाहों से न्यूमैन को सिर से पैर तक देखती हुई कहती रहीं। न्यूमैन बड़ी मुश्किल में था, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। हालांकि उसे ऐसा लगा कि जो डचेस अपने मोटापे के बारे में हंसी-मज़ाक कर सकती है, उससे कोई भी खुलकर बातें कर सकता है। यह जान लेने पर डचेस उससे ही मिलने आई थीं, जो लोग उनके आसपास खड़े थे, वे मुड़कर न्यूमैन की ओर बड़ी सहानुभूतिपूर्ण उत्सुकता से देखने लगे। मारक्विस ने अलौकिक गम्भीरता का प्रदर्शन करते हुए उनमें से हर व्यक्ति का नाम बताया और हरेक ने अपना नाम लिए जाने पर झुककर अभिवादन किया। ये लोग फ्रांस के गण्यमान्य लोगों में से थे। "मै आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक थी," डचेस कह रही थीं, "इसमें जरा भी शक नहीं है। पहली बात तो यह है कि जिस लड़की से आप विवाह करने जा रहे हैं, उसे मैं बहुत प्यार करती हूं ; वह फ्रांस-भर में सबसे ज़्यादा खूबसूरत लड़की है। आप इस बात का ध्यान रखिएगा कि उसके साथ बड़ा अच्छा व्यवहार करें, नहीं तो समझ लीजिए, मै आपकी अच्छी तरह खबर लूंगी। लेकिन देखने में तो आप बड़े भले लग रहे हैं। मुझसे लोगों ने कहा है कि आप बड़े अद्भुत व्यक्ति है। मैंने तरह-तरह की असाधारण बातें आपके बारे में सुनी हैं। क्या वे सब सच हैं ?"

"मुझे पता नहीं कि आपने मेरे बारे में क्या-क्या सुन रखा है," न्यूमैन ने कहा।

"ओह, आपके बारे में बड़ी-बड़ी कहानियां हैं। मैंने सुना है कि आपका व्यावसायिक जीवन अत्यन्त चमत्कारपूर्ण रहा है और यशस्वी भी। किसीने मुझे बताया है कि दस साल पहले आपने पश्चिम अमरीका में एक शहर बसाया था, जिसमें लगभग पांच लाख आदमी रहते है ? क्यों मोंश्यू, पाच लाख आदमी रहते हैं न ? और आप उस समृद्ध शहर के एकमात्र स्वामी हैं, फलत: आप बहुत धनी हैं और शायद आप और भी धनी होते, अगर आपने लोगों को मुफ्त ज़मीन

और मकान न दे डाले होते । मैंने सुना है कि आप उन सब लोगों को बिना लगान या किराया लिए ज़मीन और मकान दे डालते हैं, जो यह वादा करते हैं कि वे सिगार नहीं पिएंगे । हमने सुना है कि आप तीन वर्ष के अन्दर अमरीका के प्रेसीडेंट होनेवाले हैं ।"

डचेस ने यह सारी 'आश्चर्यजनक कथा' बड़ी सरलता से सुना डाली । न्यूमैन को ऐसा लगा कि जैसे वह किसी नाटक में बड़ी अनुभवी विदूषिका अभिनेत्री का संवाद सुन रहा है । इसके पहले कि उनकी बात समाप्त होती, न्यूमैन अपनी हसी रोक न सका और कहकहा लगाकर हंस पड़ा । "प्रिय डचेस, प्रिय डचेस," मारक्विस धीरे-धीरे यह शब्द कहकर उन्हें चुप करने की कोशिश करने लगा । दो-तीन व्यक्ति कमरे के दरवाज़े पर आकर झांकने लगे कि वह कौन व्यक्ति है, जो डचेस पर हंस रहा है । लेकिन डचेस ने अपनी बात कहना धीरे-धीरे जारी रखा, जैसे उन्हें इस बात का पक्का विश्वास हो कि उनकी बात अवश्य ही सुनी जाएगी । और उनपर दर्शकों की प्रतिक्रिया का कोई असर नहीं होता है । "लेकिन मुझे पता है कि आप बड़े विलक्षण व्यक्ति हैं । यह बात अवश्य ही सच होगी क्योंकि मारक्विस और उनकी मां का प्रेम आपने प्राप्त कर लिया है । वे अपनी कृपा और प्रेम सारी दुनिया पर लुटाते नहीं फिरते हैं । उनके स्तर बहुत ऊचे हैं । मैं स्वयं अपने बारे में यह नहीं जानती कि मुझे उनका सम्मान प्राप्त है या नही । एं बेलगार्द ? मुझे ऐसा लगता है कि आपको खुश करने के लिए अमरीकन करोड़पति होना ज़रूरी है । लेकिन श्रीमन्, आपकी सबसे बड़ी जीत यह है कि आपके काउटेस को खुश कर लिया । उनको खुश करना परियों की कहानी की राजकुमारी को खुश करने की तरह कठिन है । आपकी सफलता बहुत बड़ा चमत्कार है । इसका क्या रहस्य है ? यह बात मैं इन सब लोगों के सामने आपसे नहीं पूछूंगी, लेकिन किसी दिन आप मुझसे मिलने घर पर आइए और यह रहस्य बताइए ।"

"इसका असली रहस्य तो मदाम द सान्त्रे के पास है," न्यूमैन ने कहा, "रहस्य आप उन्हींसे पूछिए । सबसे बड़ी बात यह है कि वे बहुत उदार है ।"

"वाह, क्या सुन्दर बात कही है !" डचेस ने कहा, "आपने अपनी योग्यता का बड़ा सुन्दर उदाहरण दिया है । अरे यह क्या बेलगार्द, आप क्या मोंश्यू को ले जा रहे हैं ?"

"प्रिय मित्र, मुझे अपने एक कर्तव्य का पालन करना है, "मारक्विस ने अन्य

लोगों की तरफ इशारा करते हुए कहा ।

"आह, मैं जानती हूं कि आपके लिए इसका क्या अर्थ है । अच्छा, मोंश्यू से मेरी मुलाकात हो गई; वही मैं चाहती थी । मैं तो इनसे बड़ी प्रभावित हुई हूं, ये सचमुच ही बहुत चतुर हैं । अच्छा विदा ।"

जब न्यूमैन अपने मेज़बान के साथ आगे बढ़ गया, तो उसने पूछा, "यह डचेस कौन हैं ?" "फ्रांस की सबसे महान महिला," मारक्विस ने कहा । इसके बाद मो० द बेलगार्द ने अपने भावी बहनोई को लगभग बीस स्त्री-पुरुषों से मिलाया, जो अपने-अपने क्षेत्र में अपनी विशेष स्थिति के कारण प्रसिद्ध थे । कभी-कभी तो ऐसा लगता था कि जिस व्यक्ति से परिचय कराया जा रहा है, उसका परिचय माथे पर ही लिखा हुआ है । अन्य लोगो के बारे में जब न्यूमैन को मो० द बेलगार्द ने परिचय तथा अन्य ब्योरे की बातें बताई, तो उसके लिए उसने कृतज्ञता प्रकट की । तरह-तरह के लोग थे; कुछ खूब लम्बे-चौड़े स्थूलकाय और कुछ छोटे कद के ; कुछ बहुत ज़्यादा चुहलबाजी करनेवाले, पीली किनारी और रंग-बिरगे जवाहरातो के गहने पहने बदसूरत महिलाएं भी थीं और सुन्दर तरुणियां भी, जिनके गोरे कन्धों पर न कोई जवाहरात था और न कोई वस्त्र । हर व्यक्ति ने न्यूमैन को पूरा सम्मान दिया । हर व्यक्ति मुस्करा रहा था और न्यूमैन से परिचय प्राप्त करके अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहा था । हर व्यक्ति उसकी ओर अच्छे समाज की कोमल कठोरता से देख रहा था, जहा आदमी हाथ मिलाने के लिए तो आगे बढ़ आता है, लेकिन अपनी जेब को उंगलियों से दबाए रखता है, जिससे कही पैसा न निकालना पड़ जाए । मारक्विस भालू नेता की तरह आगे चल रहे थे और अगर पशु और सुन्दरी की कथा का कोई निकटतम उदाहरण मिल सकता था, तो आम तौर पर लोगों की धारणा यही थी कि भालू आदमी से काफी मिलता-जुलता है । न्यूमैन को मारक्विस की मित्र-मण्डली में अपना स्वागत बड़ा 'प्रिय' प्रतीत हुआ; लेकिन वह यह आनन्द और अधिक नहीं प्राप्त करना चाहता था । इसमें सन्देह नहीं कि बड़े ही कोमल विनयपूर्ण शब्दो में अपना स्वागत किए जाते देखकर प्रसन्नता होती है, शिष्टाचारपूर्ण वाक्य भी सुनने में अच्छे लगते हैं, विशेषरूप से ऐसे शब्द, जिनमें हाजिरजवाबी हो और जो बड़े श्रम से बनाई गई मूंछों के नीचे से कहे गए हों । फ्रेंच स्त्रियों को देखना भी अच्छा लगता था—वे सबकी सब बहुत चतुर लगती थीं—वे अपने साथ के लोगों की ओर पीठ करके

उस अनोखे अमरीकी को आंख भरकर देखना चाहती थीं, जिससे क्लेयर द सान्त्रे विवाह करनेवाली थीं और न्यूमैन को देखकर बड़े आकर्षक ढंग से मुस्कराती थीं। आखिर मुस्कराहटों और इसी तरह की अन्य बातों से उसका किसी तरह पीछा छूटा। न्यूमैन ने देखा कि मारक्विस उसकी ओर तीखी निगाहों से देख रहे हैं। वह कुछ कहना ही चाहता था, लेकिन उसने अपने-आपको रोक दिया। 'क्या मैं बेवकूफों की तरह आचरण कर रहा हूं ?' उसने अपने आपसे पूछा, 'क्या मैं कुत्ते की तरह उसके पीछे-पीछे चल रहा हूं ?' तभी न्यूमैन ने मिसेज ट्रिस्ट-रैम को देखा। वे कमरे की दूसरी ओर खड़ी हुई थीं। तुरन्त ही न्यूमैन ने जरा-सा हाथ हिलाकर मो० द बेलगार्द से विदा ली और मिसेज़ ट्रिस्टरैम की तरफ़ बढ़ गया।

"क्या मै बहुत अभिमानी लग रहा हूं ?" उसने पूछा, 'क्या ऐसा लग रहा है कि मेरा मुह किसीने रस्सी बांधकर ऊचा कर दिया है ?"

"आप ठीक वैसे ही लग रहे हैं, जैसेकि खुश व्यक्ति लगा करते है," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा। "बिलकुल सामान्य बात है, न इसमें कोई बुराई है न अच्छाई। मैं आपको पिछले दस मिनट से देख रही हूं और मैं मो० द बेलगार्द को भी देख रही हूं। उन्हे आप पसन्द नहीं हैं।"

"इसका भी श्रेय उन्हींको है," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "लेकिन मै उदारता से काम लूंगा। अब मैं उन्हे और तंग नहीं करूगा। लेकिन मैं बहुत खुश हूं। यहां चुपचाप खड़ा नहीं रह सकता। कृपया मेरे हाथ में अपना हाथ डाल ले और हम लोग इधर-उधर घूमेंगे।"

वह मिसेज़ ट्रिस्टरैम को लिए सारे कमरों में घूम आया। बहुत सारे कमरे थे, जिनको इस अवसर के लिए सजाया गया था। इन कमरों में राजसी ठाट-बाट में लोग घूम रहे थे। उनके ठाट-बाट में इधर अन्तर पड़ गया था, लेकिन पुरानी चमक-दमक फिर भी बनी हुई थी। मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने अपने चारों ओर देखकर मेहमानों के बारे में बीच-बीच में कई बार तीखी टीका-टिप्पणी भी की। इन सबका उत्तर न्यूमैन ने यों ही दे दिया। उसने मुश्किल से उनकी कोई बात सुनी होगी; वह कुछ और ही सोच रहा था। न्यूमैन असल में अपनी विजय के हर्ष में डूबा हुआ था। उसे सफलता मिली थी और यह उसकी जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। उसे कुछ देर पहले जो यह चिन्ता हुई थी कि वह बेवकूफ-सा लग

रहा है, वह समाप्त हो गई। अब वह पूर्णतः सन्तुष्ट था; वह जो चाहता था, उसे मिल गया था। सफलता का सलोना स्वाद उसे अत्यन्त प्रिय लगा था और जीवनमें उसे अनेक बार सफलताएं प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, लेकिन पहले कभी भी सफलता इतनी मधुर नहीं प्रतीत हुई। उस सफलता में उल्लसित करने की वह क्षमता नहीं थी, जो इस सफलता में थी। तरह-तरह की रोशनियां, पुष्प, संगीत, लोगों की भीड़-भाड़, शान-शौकत वाली सुन्दरियां, हीरे-जवाहरात, एक विदेशी भाषा की चारों तरफ से उठनेवाली अनोखी ध्वनि, ये सब इस बात के ज्वलत प्रतीक थे कि उसने अपनी इच्छित और लक्षित वस्तु प्राप्त कर ली है, और वह कठिन मार्ग द्वारा निश्चित स्थान पर पहुच गया है। अगर न्यूमैन की मुस्कराहट पहले से ज्यादा थी, तो इसका कारण यह नही था कि उसमें अभिमान आ गया था। उसकी यह जरा भी इच्छा नहीं थी कि लोग उसे अपनी उंगली उठा-उठाकर दिखाए कि यह वह व्यक्ति है, जिसने बहुत बड़ी व्यक्तिगत सफलता प्राप्त की है। अगर वह इस पूरे दृश्य को किसी छत पर बैठकर एक छोटे-से छेद से स्वय अदृश्य रहकर देख पाता, तो भी उसे इतनी ही प्रसन्नता होती, जितनी लोगों के बीच घूमकर हुई थी, क्योंकि ये दृश्य इस बात के प्रमाण होते कि उसका भविष्य सुखमय होगा जिस सुखमय भविष्य के लिए उसने अपने सारे जीवन के अनुभवों का प्रयोग किया था। ऐसा लग रहा था कि जीवन के सुख की प्याली लबालब भर गई है।

"पार्टी बडी अच्छी रही," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा। उस समय तक वे लोग कुछ देर घूम चुके थे। "पूरी पार्टी-भर मे मैने कोई भी आपत्तिजनक बात नहीं देखी, सिवाय इसके कि मेरा पति एक दीवार के सहारे खड़ा हुआ एक ऐसे व्यक्ति से बात कर रहा था, जिसे वह तो ड्यूक समझ रहा था, लेकिन मुझे लगता है कि वह व्यक्ति रोशनी जलानेवाला नौकर है। आपका क्या ख्याल है, आप उन दोनो को अलग कर सकते हैं ? क्यों न एक मोमबत्ती वाले पात्र को लात मार दी जाए और गिरा दिया जाए !"

मुझे इस बात में सन्देह है कि न्यूमैन को इस बात का बुरा लगा होगा या नहीं कि ट्रिस्टरैम किसी चतुर मेकेनिक से बात कर रहा है, और वह मिसेज़ ट्रिस्टरैम का यह अनुरोध मानता; लेकिन तभी उसने देखा कि वेलेंतीन द बेलगार्द उसकी तरफ चला आ रहा है। न्यूमैन ने कुछ सप्ताह पहले ही मदाम द सान्त्रे

के छोटे भाई से मिसेज़ ट्रिस्टरैम का परिचय कराया था। वेलेंतीन मिसेज़ ट्रिस्ट-रैम के गुणों का कायल हो गया था और उसने कई बार घर जाकर उनसे भेंट की थी।

"क्या आपने कीट्स की 'बैले दैम सांस मर्सी' नाम की कविता पढ़ी है ?" मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने पूछा, "मुझे आपको देखकर उसके नायक की याद आ जाती है :

'ओह सरदार आपको क्या दुःख है ?
जो आप इस तरह पीला चेहरा किए घूम रहे हैं।' "

"अगर मैं अकेला हूं, तो इसका कारण यह है कि आप मेरे साथ नहीं हैं," वेलेंतीन ने कहा, "इसके अलावा शिष्टाचार का यह तकाज़ा है कि न्यूमैन को छोड़कर और कोई भी व्यक्ति खुश नज़र न आए। यह सब उन्हींके लिए तो हो रहा है। हमें और आपको तो नायक की तरह मंच पर आना ही नहीं है।"

"आपने पिछले वसन्त में मुझसे वादा किया था," न्यूमैन ने मिसेज ट्रिस्ट-रैम से कहा, "कि छः महीने के अन्दर एक ऐसा अवसर आएगा, जब मैं किसी बात पर बहुत बुरी तरह बिगड़ूंगा। मेरा ख्याल है कि अब वह योग आ गया है और मैं ज़्यादा से ज़्यादा यही अशिष्टता कर सकता हूं कि आपको 'काफे ग्लासे' दूं।"

"मैंने आपसे कह दिया था कि हम जो भी समारोह करेंगे, वह शानदार होगा," वेलेंतीन ने कहा, "मैं यहां काफे ग्लासे की चर्चा नहीं कर रहा। लेकिन आज यहां सब लोग इकट्ठे हैं और मेरी बहन ने अभी मुझे बताया है कि अरबेन बहुत ही अच्छे लग रहे थे।"

"वे बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं, बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं," न्यूमैन ने कहा, "मैं उन्हें भाई की तरह प्यार करता हूं। इसी बात पर मुझे याद आया कि मुझे आपकी मां के पास जाना चाहिए और उनसे भी इस पार्टी के आयोजन की प्रशंसा करनी चाहिए।"

"यह बात आप बड़ी शिष्टता से कहिएगा," वेलेंतीन ने कहा, "क्योंकि इस प्रकार की प्रशंसा करने का आपके लिए यह मौका अंतिम होगा।"

न्यूमैन चल दिया। उस समय उसकी जो मनोस्थिति थी उसमें जाकर वह करीब-करीब वृद्धा मदाम द बेलगार्द की कमर में हाथ डालकर उनसे लिपट जाना

चाहता था। उसने कई कक्ष पार किए तब जाकर कहीं उसे वृद्धा के दर्शन हुए। वे पहले कमरे में सोफे पर अपने निकट के रिश्तेदार लार्ड डीपमेयर के साथ बैठी हुई थीं। अंग्रेज़ युवक के चेहरे को देखने से लगता था कि वह कुछ ऊब-सा गया है; उसने अपने हाथ जेबों में डाल रखे थे और उसकी निगाहें अपने जूतों के पंजों पर टिकी हुई थीं, क्योंकि उसने अपने पैरों को सामने की ओर फैला रखा था। मदाम द बेलगार्द, ऐसा लगता था, उससे कुछ रोषपूर्ण ढग से बात कर रही थीं और इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि वह कोई उत्तर उन्हें दे। या उनकी बात की क्या प्रतिक्रिया हुई है, यह उन्हे पता लगे। वे अपने दोनों हाथ सामने की ओर बाधे थी और लार्ड डीपमेयर को दमन किए हुए रोष की शिष्टाचारपूर्ण दृष्टि से देख रही थीं।

लार्ड डीपमेयर ने न्यूमैन को आता देखकर अपना सिर उठाया, उन दोनों की आखें मिली और साथ ही अंग्रेज़ युवक की जान में जान आई।

"मुझे भय है कि मैं एक दिलचस्प बातचीत में बाधा डाल रहा हूं," न्यूमैन ने कहा।

वृद्धा मदाम द बेलगार्द उठ खड़ी हुई। साथ ही लार्ड डीपमेयर भी उठ खड़े हुए। वृद्धा ने अपना हाथ अपने रिश्तेदार की बांह पर रख लिया। एक क्षण तक वे कुछ नही बोलीं और फिर चूकि लार्ड डीपमेयर भी चुप थे, वृद्धा ने मुस्कराते हुए कहा, "शिष्टाचार का यह तकाजा है कि लार्ड डीपमेयर कहें कि हमारी बातचीत बड़ी दिलचस्प थी।"

"ओह, मै इतना सुसभ्य नहीं हूं!" लार्ड डीपमेयर ने ज़ोरों से कहा, "लेकिन फिर भी बातचीत दिलचस्प ज़रूर थी।"

"लगता है कि मदाम द बेलगार्द आपको कुछ अच्छी सीख दे रही थीं, क्यों?" न्यूमैन ने कहा, "शायद आपको दबकर चलने के लिए कह रही हों!"

"हां, मै इन्हें कुछ अच्छी सीख दे रही थी," वृद्धा ने हमारे नायक पर अपनी ठण्डी दृष्टि गड़ाते हुए कहा। "यह इनकी मर्ज़ी है कि मेरी बात मानें न मानें।"

"मान लीजिए श्रीमन्—मान लीजिए," न्यूमैन ने तेज़ी से कहा, "आज रात मदाम जो भी सलाह आपको देंगी, वह अच्छी सीख होगी, क्योंकि आज रात को वे बड़ी ही प्रसन्न हैं। उनकी आत्मा बहुत सन्तुष्ट है और इसीलिए वे आपको सीख दे रही हैं। आप नही देख रहे कि आपके चारों कितनी बढ़िया और

सफल पार्टी हो रही है। वाकई, आपकी पार्टी बड़ी शानदार रही है; आपने बड़ा अच्छा आयोजन किया। इसके मुकाबले मेरा समारोह तो कुछ भी न होता।"

"अगर आप खुश हैं, तो मै सन्तुष्ट हूं," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "मेरी तो इच्छा आपको प्रसन्न देखने की थी।"

"क्या आप मुझे थोड़ा और प्रसन्न करना चाहेंगी ?" न्यूमैन ने कहा। "तो कृपा कर लार्ड डीपमेयर को थोड़ी देर के लिए अकेला छोड़ दीजिए; मैं समझता हूं कि वे भी इधर-उधर घूमकर जरा अपनी ऊब मिटाना चाहते हैं। तो आइए, मेरी बांह में अपना हाथ डाल दीजिए और हम लोग कमरों में इधर-उधर घूमें।"

"मेरी इच्छा आपको खुश करने की है," वृद्धा ने फिर दोहराया। और उन्होंने लार्ड डीपमेयर को मुक्ति प्रदान की। न्यूमैन लार्ड की इस परवशता पर आश्चर्य कर रहा था। "अगर इस युवक में कुछ भी अक्ल है," वृद्धा ने कहा, "तो यह मेरी पुत्री के पास जाएगा और उससे अपने साथ नाचने का अनुरोध करेगा।"

मैं आपकी राय का समर्थन करता हूं," न्यूमैन ने उनपर झुकते हुए और हंसते हुए कहा, "मुझे लगता है कि यह बात मुझे बर्दाश्त ही करनी होगी।"

लार्ड डीपमेयर ने अपना माथा पोंछा और वहां से चल दिए। मदाम द बेलगार्द ने न्यूमैन की बांह में बांह पकड़ी। "जी हां, आज की यह पार्टी बड़ी ही रोचक और दिलचस्प रही," न्यूमैन ने फिर कहा। वे लोग अब इधर-उधर घूम रहे थे। "ऐसा लगता है कि हर व्यक्ति हर व्यक्ति को जानता है और उससे मिलकर प्रसन्न है। अरबेन ने मेरा परिचय बहुत-से लोगों से कराया। मुझे महसूस हो रहा है कि मैं भी परिवार का एक सदस्य हूं। यह बड़ा ही सुखद अवसर है," न्यूमैन अपनी बात कहे जा रहा था और चाहता था कि कुछ और ऐसी बातें कहे, जिनसे उसके मन की करुणा और प्रसन्नता व्यक्त हो सके। "यह ऐसा अवसर है, जिसे मैं हमेशा याद रखूंगा और इसकी सुखद स्मृति संजोकर रखूंगा।"

"मेरा भी ख्याल है कि यह पार्टी हममें से कोई नहीं भूलेगा," वृद्धा ने बड़े स्पष्ट शब्दों में मधुर ढंग से कहा।

मदाम द बेलगार्द जैसे ही कही पहुंचतीं, लोग उनके जाने के लिए रास्ता दे देते। कुछ अन्य लोग पीछे मुड़कर उनकी तरफ देखते। बहुत-से लोगों ने उनका अभिवादन किया और हार्दिक ढग से हाथ मिलाया। इन सबको वृद्धा ने बड़े ही

सुसभ्य और सम्मानपूर्ण ढंग से स्वीकार किया। वे उस समय तक कुछ नहीं बोलीं, जब तक कि अन्तिम कमरे में नहीं पहुंच गईं, जहां उन्होंने अपने सबसे बड़े पुत्र को देखा। उन्होंने कहा, "इतना काफी है श्रीमन्," और फिर मारक्विस की ओर मुड़ गईं। उन्होंने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ा लिए और उनके पुत्र ने अपने दोनों हाथों से उनके दोनों हाथों को पकड़ लिया और उन्हें बड़े ही श्रद्धापूर्वक बैठाने के लिए कुर्सी पर ले गए। बड़ा ही मैत्रीपूर्ण पारिवारिक वातावरण था और सब घर के ही लोग वहां थे। न्यूमैन ने विवेक से काम लिया और वह वहां से हट आया। वह कुछ देर और कमरों में इधर-उधर घूमता रहा, मुक्त रूप से। उसका कद काफी ऊंचा था, इसलिए वह सब लोगों में बड़ा लग रहा था। उसने उन लोगों से दुबारा बातचीत की, जिनसे कुछ देर पहले अरबेन द बेलगार्द ने परिचय कराया था और अपने मधुर स्वभाव का बड़ी ही उदारता से बातचीत द्वारा परिचय दिया। उसे यह सब बड़ा ही अच्छा लग रहा था, लेकिन प्रिय से प्रिय चीज़ का भी अन्त होता है और यह पार्टी भी अब समाप्त होनेवाली थी। लोग वृद्धा मदाम द बेलगार्द को खोज रहे थे जिससे कि उनसे विदा ले सकें। लेकिन उनको खोज पाने में कठिनाई हो रही थी, तभी न्यूमैन ने सुना कि कोई कह रहा है कि वे पार्टी से चली गई थी, क्योंकि उन्हें कुछ बेहोशी-सी आ रही थी। "आज शाम उनपर बहुत अधिक श्रम पड़ा," एक महिला को उसने यह कहते सुना। "बेचारी प्रिय मदाम! मैं कल्पना कर सकती हूं कि आज इतने लोगों से मिलने का कितना श्रम उनपर पड़ा होगा!" लेकिन तभी उसे यह पता लगा कि वृद्धा पुनः स्वस्थ हो गई हैं और बाहर के दरवाज़े पर रास्ते में कुर्सी डालकर बैठी हुई है। जो लोग जा रहे हैं, वे और विशेष रूप से बड़ी-बूढ़ी औरतें उनसे यह अनुरोध कर रही हैं कि वे उठें नहीं, अपनी जगह पर बैठी रहें। न्यूमैन स्वयं मदाम द सान्त्रे को खोजने निकल पड़ा। उसने कई बार मदाम द सान्त्रे को नाचते हुए देखा था। लेकिन मदाम ने उससे कह रखा था कि पार्टी के आरम्भ होने के बाद न्यूमैन किसीके सामने उससे न बोले। सारा घर खुला पड़ा था, इसलिए बाग के सामने वाले कमरे भी खोल दिए गए थे। वहां भी कुछ लोग पहुंच गए थे। न्यूमैन इन कमरों से होता हुआ इधर-उधर खड़े हुए कुछ जोड़ों को देखता हुआ एक छोटे-से बरामदे में पहुचा, जो बाग की तरफ खुलता था। इस बरामदे के सामने वाला हिस्सा कांच की तरह साफ-

सुथरा था और उसपर कोई भी पौधा नहीं था । वहां शरद्‌कालीन तारों का प्रकाश बिलकुल सीधा आ रहा था और वहां खड़े व्यक्ति को ऐसा प्रतीत होता था कि वह एकदम खुले मैदान में आ गया है । इस स्थान पर दो व्यक्ति खड़े थे, एक महिला और एक पुरुष । महिला को न्यूमैन ने कमरे में से ही पहचान लिया, हालाकि उनकी पीठ न्यूमैन की ओर थी। यह मदाम द सान्त्रे थी। वह कुछ झिझका और सोचने लगा कि आगे जाए या नहीं, लेकिन जैसे ही वह ठिठका, मदाम द सान्त्रे ने घूमकर उसकी तरफ देखा और उन्होंने यह जान लिया कि वह वहा है । एक क्षण के लिए मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन को निगाह भरकर देखा और फिर अपने पास खड़े पुरुष को देखने लगीं ।

"यह बड़े खेद की बात है कि मि० न्यूमैन को यह बात न बताई जाए," उन्होंने धीरे से कहा, लेकिन उनका स्वर इतना स्पष्ट था कि न्यूमैन सुन सकता था । "आप चाहें तो उनसे कह सकती है !" पुरुष ने उत्तर दिया । यह लार्ड डीपमेयर की आवाज़ थी ।

"ओह, ज़रूर बताइए, मुझे जरूर बताइए !" न्यूमैन ने आगे बढ़ते हुए कहा ।

उसने देखा कि लार्ड डीपमेयर का चेहरा सुर्ख़ था और उन्होंने अपने दस्ताने इतने मरोड़ डाले थे कि वे एक रस्सी की तरह बन गए थे। ऐसा लगता था कि वे अपने दस्तानों को निचोड़ रहे हो । यह शायद भावनात्मक ज्वर के सकेत थे। और न्यूमैन को ऐसा प्रतीत हुआ कि मदाम द सान्त्रे के चेहरे पर भी कुछ रोष के भाव हैं । दोनों व्यक्ति काफी तेज़ी से बातें कर रहे थे । "मैं आपसे जो कुछ बताऊंगी, वह लार्ड डीपमेयर के बारे मे ही होगा," मदाम द सान्त्रे ने मुस्कराते हुए कहा ।

"लेकिन इस बात से न्यूमैन को कोई और अधिक प्रसन्नता नहीं होनेवाली है," लार्ड डीपमेयर ने बड़े अटपटे ढंग से हंसते हुए कहा ।

"बताओ भी, पहेलियां न बुझाओ, बात क्या है ?" न्यूमैन ने पूछा । "मुझे इस तरह पहेलियां बुझाना अच्छा नहीं लगता ।"

"हम लोगों को कभी-कभी ऐसी बातें भी बर्दाश्त करनी पड़ती हैं, जो हमें पसन्द न हों और कभी-कभी ऐसी बातें छिपानी पड़ती हैं, जो प्रिय होती हैं," लार्ड डीपमेयर ने, जिनका चेहरा अब लाल पड़ा हुआ था, हंसते हुए कहा ।

"यह लार्ड डीपमेयर की बात है, लेकिन इसका सम्बन्ध हरेक व्यक्ति से नहीं है," मदाम द सान्त्रे ने कहा। "इसलिए मै इस बारे में कुछ नहीं कहूंगी। आप निश्चिन्त रहिए।" मदाम ने आगे कहा, और उन्होंने अपना हाथ अंग्रेज़ युवक से मिलाने के लिए बढ़ा दिया।

कुछ शरमाते हुए और कुछ अधीरता से लार्ड डीपमेयर ने हाथ मिला लिया। इसके बाद मदाम द सान्त्रे ने कहा, "और अब आप जाइए, नाचिए !"

"हां, जी हां, मैं नाचने के लिए बहुत उत्सुक हू !" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं जाता हूं और टिपसी के साथ नाचूंगा।" और वे कुछ विषादयुक्त चेहरा लिए वहां से चले गए।

"आप दोनों के बीच क्या बातचीत हुई ?" न्यूमैन ने पूछा।

"मैं आपको अभी यह नहीं बता सकती," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ है, जिससे आप नाराज़ हों।"

"क्या यह अग्रेज युवक तुम्हारे सामने अपना प्रेम-प्रदर्शन कर रहा था ?"

वे कुछ झिझकीं और फिर उन्होने गम्भीरता से कहा, "नहीं ! यह अंग्रेज़ युवक बड़ा ईमानदार है।"

"लेकिन आप कुछ रुष्ट दिखलाई पड़ रही हैं। कुछ बात तो ज़रूर है।"

"नहीं, मैं फिर कहती हूं कि ऐसी कोई बात नही है, जिससे आप नाराज़ हों। मेरा रोष भी समाप्त हो गया है। मैं किसी और दिन बताऊंगी कि क्या बात थी, अभी नहीं बताऊंगी, इस समय नहीं बता सकती।"

"ठीक है, मै यह मानता हू," न्यूमैन ने कहा, "कि मैं इस समय कोई भी अप्रिय बात सुनने के लिए तैयार नही हूं। मैं हर चीज़ से सन्तुष्ट हू—और सबसे ज़्यादा आपसे सन्तुष्ट हूं। मैने सारी महिलाओं को देखा है और उनमे से बहुत-सी सुन्दरियों से बातचीत भी की; लेकिन मै आपसे पूरी तरह सन्तुष्ट हू।" मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन की तरफ अपनी कोमल निगाह से आखे भरकर देखा और इसके बाद वे फिर तारोंभरे आसमान की तरफ देखने लगीं। इस तरह वे लोग कुछ क्षण एक-दूसरे के पास-पास चुपचाप खड़े रहे। "आप भी कहिए कि आप मुझसे सन्तुष्ट है," न्यूमैन ने कहा।

न्यूमैन को कुछ देर उत्तर के लिए रुकना पड़ा, लेकिन उसे उत्तर मिला—धीमी आवाज़ में, लेकिन स्पष्ट रूप से: "मैं बहुत खुश हूं।"

इसके बाद ही किसी दूसरे व्यक्ति की आवाज़ सुनाई पड़ी, जिसकी वजह से दोनों ने मुड़कर उस तरफ देखा। "मुझे बड़ा भय है कि कहीं मदाम द सान्त्रे को ठण्ड न लग जाए, यह सोचकर मैं शॉल ले आई हूं।" कुछ दूर मिसेज़ ब्रैंड अपने हाथ में सफेद शॉल लिए खड़ी थी।

"धन्यवाद," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "इन ठण्डे तारों को देखकर ऐसा प्रतीत होता कि जैसे हमारी कुलफी जम जाएगी। मुझे शॉल नहीं चाहिए, लेकिन हम लोग घर में अन्दर जा रहे हैं।"

मदाम घर के अन्दर चली गई और न्यूमैन उनके पीछे-पीछे आ गया। मिसेज़ ब्रैंड उनको रास्ता देने के लिए एक ओर झुककर सम्मानपूर्वक खड़ी हो गईं। न्यूमैन एक क्षण के लिए बुढ़िया नौकरानी के सामने रुका और नौकरानी ने न्यूमैन की ओर आंख उठाकर देखा और उसका मौन अभिवादन किया। "ओह, हां," उसने कहा, "आपको हमारे साथ चलना है और हमारे साथ ही रहना है।"

"तो फिर ठीक है श्रीमन्, अगर आपकी यही इच्छा है," नौकरानी ने उत्तर दिया, "तो आप मुझे आज अंतिम बार नहीं देख रहे है!"

सत्तरह

न्यूमैन को संगीत सुनने का शौक़ था और वह अकसर ऑपेरा जाता रहता था। मदाम द बेलगार्द के यहां पार्टी में जाने के कुछ दिन बाद वह 'डान जियोवानी' सुनने गया। उसने अभी तक यह संगीत नाटिका पहले कभी नहीं देखी-सुनी थी। एक दिन वह परदा उठने के पहले ही वाद्य-वृन्द के समीप वाली कुर्सी पर जा बैठा। वह अकसर ऑपेरा में संगीत के लिए एक बड़े 'बाक्स' को सुरक्षित करा लेता था और अपने साथ अन्य अमरीकनो को भी बुला लेता था। मन-बहलाव का यह ढंग उसे बड़ा पसंद था। वह अपने दोस्तों के दल को लेकर थियेटर भी जाता था। और कभी-कभी उनके साथ शहर से काफी दूर जाकर पिकनिक मनाता या दूर के किसी रेस्तरां में डिनर का आयोजन करता। उसे ऐसे समारोह या आयोजन करने बड़े अच्छे लगते थे, जिनका सारा खर्च वह स्वयं उठाए; सच बात यह थी

कि उसे अन्य लोगों का 'सत्कार' करने में आनन्द आता था। इसका कारण यह नहीं था कि उसे अपने धनी होने का घमण्ड था; क्योंकि लोगों के सामने रुपये-पैसे का हिसाब करना या उसे गिनना न्यूमैन को बहुत ही अप्रिय लगता था। इस मामले में उसे इतना ही संकोच था, जितना किसीको लोगो के सामने स्नान करने में हो सकता है। जिस तरह उसे सुन्दर-सुन्दर कपड़े पहनने अच्छे लगते थे, उसी तरह (प्रच्छन्न रूप से) दूसरे लोगों पर खर्च करके उनका सत्कार करने और मनोरंजन करने में उसे आनन्द आता था। वह बहुत-से मित्रों को इकट्ठा करता और फिर उन्हें कहीं दूर ले जाता, परिवहन की विशेष व्यवस्था करता, विशेष रेल-डिब्बे रिज़र्व करा लेता या स्टीमरों पर जगह सुरक्षित करा लेता। यह सब करके उसे लोगों की मेहमाननवाज़ी में विशेष आनन्द आता था। जिस अवसर की मैं चर्चा कर रहा हूं, उसके कुछ दिन पहले उसने बहुत-सी महिलाओं और पुरुषों को मदाम एलबोनी को सुनने के लिए ऑपेरा में निमन्त्रित किया था। इस दल में कुमारी डोरा फ़िश भी निमन्त्रित थीं। ऐसा हुआ कि डोरा फ़िश बॉक्स में न्यूमैन के पास बैठी थी और उनसे बड़ी अच्छी तरह बातचीत कर रही थी। उनकी बातचीत का यह क्रम न केवल दृश्यों के बीच मध्यान्तर मे जारी रहा, बल्कि जिस समय संगीत के बड़े अच्छे अंश चल रहे थे, उस समय भी वे बातें करने में जुटी रहीं। इसका परिणाम यह हुआ कि जब न्यूमैन घर लौटा, तो उसे काफी झुंझलाहट थी। संगीत सुनने के बाद उसकी यह धारणा बनी थी कि मदाम एलबोनी की आवाज़ बड़ी महीन और तीखी है और उनका संगीत भी हसी जैसा है। इसके बाद न्यूमैन ने निश्चय किया कि वह कुछ दिनों तक अकेला ही ऑपेरा जाएगा।

जब पहले दृश्य के बाद परदा गिरा, तो उसने मुड़कर देखा कि और कौन-कौन लोग आए है। एक बाक्स में उसकी नज़र अरबेन द बेलगार्द और उसकी पत्नी पर पड़ी। अरबेन द बेलगार्द की पत्नी भी दूरबीन से हॉल में बैठे सभी लोगों को देख रही थीं और न्यूमैन को ऐसा लगा कि शायद मदाम द बेलगार्द ने उसे देख लिया है। इसलिए न्यूमैन ने सोचा कि वह बेलगार्द के बॉक्स में जाकर उनका अभिवादन कर आए। मो० द बेलगार्द एक खम्भे के सहारे बिना हिले-डुले अपने सामने सीधे देख रहे थे। उनका एक हाथ सफेद जाकेट के ऊपर छाती पर रखा था और दूसरा जांघ के ऊपर रखे हैट पर था। न्यूमैन अपनी जगह से उठने ही वाला था कि जब उसने यह देखा कि एक छोटे बॉक्स में जिन्हें फ्रांस में, 'नहाने-

वाले टब' कहा जाता है, कोई बैठा है। रोशनी काफी मन्दी थी और यह स्थान काफी दूर भी था, इसलिए वह चेहरा साफ-साफ नहीं देख सका। लेकिन इतना स्पष्ट हो गया कि वह चेहरा किसी युवती, सुन्दर स्त्री का है और जो गुलाबी रंग के परिधान और हीरों से सुसज्जित है। यह युवती भी हॉल मे चारो तरफ देख रही थी और उसका पखा बड़े अभ्यस्त ढग से आगे-पीछे आ-जाकर हवा कर रहा था। जब उसने पखा नीचे किया, तो न्यूमैन ने देखा कि गोरे रंग के कधे दिखलाई पड़ रहे हैं और साथ ही गुलाबी परिधान का थोडा-सा ऊपर का अश भी दिखलाई दे रहा है। इस युवती की बगल में कंधों के काफी समीप एक पुरुष बैठा बातचीत कर रहा था। ऐसा लगता था कि वह काफी जल्दी-जल्दी बोल रहा है। लेकिन युवती की मुद्रा से यह प्रतीत होता था कि वह इस बात से खुश है कि वह उस पुरुष की बातों पर ध्यान नहीं दे रही है। युवक का चेहरा लाल था और वह छोटे कॉलर वाली कमीज़ पहने था। देखने के एक क्षण बाद ही न्यूमैन को ज़रा भी संदेह नहीं रहा कि यह सुन्दरी और कोई नहीं, बल्कि नोएमी नियोशे है। इसके बाद उसने बॉक्स के अन्दर देखने की बहुत कोशिश की कि शायद उसके साथ नोएमी के पिता भी आए हों, लेकिन सिवा उस बोलते हुए युवक के और कोई नहीं दिखाई पड़ा। आखिर न्यूमैन उठ खड़ा हुआ और बाहर आया। इसके लिए उसे मदामाजेल नोएमी के बॉक्स के सामने नीचे की तरफ से गुज़रना पड़ा। न्यूमैन को सामने से आते देखकर नोएमी ने अपना सिर ज़रा-सा झुकाकर और मुस्कराकर अभिवादन किया, जिसमें यह आश्वासन भी निहित था कि संसार में अपने ईर्ष्यापूर्ण उत्कर्ष के बावजूद भी उसके मधुर स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आया है। न्यूमैन गलियारे से निकलकर बाहर आया। यकायक उसने देखा कि सामने दीवार पर कोई आदमी बैठा है। इस आदमी की कोहनियां उसके घुटनों पर टिकी है। वह सामने की ओर नज़रें नीची करके देख रहा था। जाहिर था कि वह अपने विचारों में डूबा हुआ है और कुछ दुःखी और निराश है। सिर झुका होने के बावजूद न्यूमैन ने उसे पहचान लिया और एक क्षण बाद ही वह उस आदमी की बगल में जाकर बैठ गया। न्यूमैन के बैठ जाने पर उस आदमी ने अपना सिर उठाया, यह वेलेंतीन द बेलगार्द था।

"विचारों में डूबे हुए इतना क्या सोच रहे हैं ?" न्यूमैन ने पूछा।

"एक ऐसे विषय पर सोच रहा हू, जिसपर गम्भीर मनन करके ही कोई

फैसला किया जा सकता है," वेलेंतीन ने कहा, "मेरी महान मूर्खता।"

"अब क्या बात है ?"

"बात यह है कि मैं फिर आदमी हो गया हूं और हमेशा की तरह बेवकूफ नहीं हू। लेकिन मैंने करीब-करीब उस लड़की को अपनी बांहों में ले ही लिया था।"

"क्या आपका मतलब उस तरुण युवती से है, जो सीढ़ियों के नीचे वाले बॉक्स में गुलाबी परिधान में बैठी है ?" न्यूमैन ने कहा।

"क्या आपने यह देखा कि वह गुलाबी रंग कितना चमकदार है ?" वेलेंतीन ने उत्तर के रूप में जिज्ञासा की। "ऐसा लगता है कि वह दूध की तरह श्वेत है।"

"सफेद या काली, आप जो मर्जी हो वह समझ लें, लेकिन आपने तो उसके पास मिलने के लिए जाना बन्द कर दिया था।"

"नहीं, मैं मिलना क्यों बन्द कर देता ? मैं बदल गया हू, लेकिन वह नहीं बदली है।" वेलेंतीन ने कहा, "मैं तो अब यह समझ गया हूं कि अब वह बड़ी ही साधारण किस्म की छिछोरी लड़की है। लेकिन हमेशा की तरह अब भी दिलचस्प है और उससे किसीको भी अपना मन-बहलाव करना ही चाहिए।"

"मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि वह अब आपको इतनी बुरी लगने लगी है," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "मेरा ख्याल है कि अब आप उन सब शब्दों को भूल गए होंगे, जो आपने उस दिन रात को उसकी प्रशंसा में मेरे सामने कहे थे। तब आपने कहा था कि वह एक नीलम है या पुखराज है या फिरोजा है, इसी तरह की कुछ उपमा आपने दी थी; वह क्या थी ?"

"मुझे अब याद नहीं," वेलेंतीन ने कहा, "शायद मैंने यह कहा था कि वह नासूर है ! लेकिन अब वह मुझे और अधिक बेवकूफ नहीं बना सकेगी। बात यह है कि उसमें वस्तुतः कोई आकर्षण नहीं है। इस तरह की गलती इतनी छिछोरी ढंग की लड़की के बारे में करना बड़ा ही अधम कार्य है।"

"मैं आपको बधाई देता हूं," न्यूमैन ने कहा, "कि आपकी आंखों के सामने से अब परदा हट गया है। यह एक बहुत बड़ी विजय है, इससे आपको खुश होना चाहिए।"

"हां, अपनी जीत पर कुछ खुशी मुझे भी हो रही है !" वेलेंतीन ने प्रसन्नता का भाव प्रकट करते हुए कहा। इसके बाद उसने अपने-आपको रोकते हुए न्यूमैन की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। "मुझे ऐसा लगता है कि आप मेरे ऊपर हस

रहे हैं। अगर आप परिवार के ही सदस्य न होते, तो मैं आपसे लड़ पड़ता।"

"नहीं, मैं हंस नहीं रहा हू। इसलिए भी नहीं हस रहा कि मैं आपके ही परिवार का एक सदस्य हूं, लेकिन मुझे आपपर बहुत दु:ख हो रहा है। आप इतने चतुर है, आपका हृदय इतना अच्छा है और फिर भी आप अपना समय ऐसी खराब लड़कियों के चक्कर मे बरबाद करते है। छी...छी...ज़रा सोचिए तो कुमारी नियोशे के बारे मे इतन विचार-मन्थन की क्या आवश्यकता है ! मुझे यह बात बड़ी बेवकूफी की मालूम होती है। आप कह रहे है कि आपने अब गम्भीरता से उसकी ओर ध्यान देना छाड़ दिया, लेकिन जब तक आप उसके बारे मे कुछ भी विचार करेंगे, यह विचार हमेशा गम्भीर ही होगा।"

वेलेंतीन अपनी जगह पर घूम गया और कुछ देर न्यूमैन की ओर देखता रहा। उसके माथे पर गाठे पड़ गई थीं और वह अपने घुटने रगड़ रहा था। "लेकिन मैं आपसे कह सकता हू कि उसकी बाहे बहुत ही सुन्दर है। आप मेरा विश्वास करिएगा, अगर मैं यह कहूं कि आज शाम तक मैं यह बात नही जानता था।"

"लेकिन याद रखिए कि वह बड़ी ही छिछोरी और बेकार किस्म की लडकी है," न्यूमैन ने कहा।

"हां, अभी उस दिन उसने अपने पिता को बुरी तरह गालियां देकर अपनी कुरुचि का प्रदर्शन किया था। मेरे सामने उनके मुह पर इस लड़की ने गालियां सुनाईं। मुझे उससे ऐसी आशा नहीं थी। यह सब देखकर बड़ी निराशा हुई !"

"क्यों, ऐसा क्यों न करती, वह अपने कमरे के सामने पड़े हुए पायदान से ज्यादा वह अपने बाप की इज्ज़त नहीं करती," न्यूमैन ने कहा, "यह बात तो मैंने जब उसे सबसे पहली बार देखा था, तभी जान ली थी।"

"यह दूसरी बात है। वह उस बेचारे गरीब भिखारी के बारे में जो चाहे सोचे, लेकिन उसे गालियां देना बड़ा ही नीचतापूर्ण कार्य था। मुझे तो इस बात का बहुत ही बुरा लगा। यह सारा झगड़ा किस बात पर हुआ। बात इतनी-सी थी कि उसके बाप को धोबिन के यहां से पेटीकोट लाना था और वह उसे लाना भूल गया था। इस अपराध में नोएमी ने करीब-करीब उसके कानों पर ज़ोर का घूंसा ही जमा दिया। बुड्ढा बेचारा उसकी तरफ एकटक देखता रहा। उसकी आंखों में कोई विरोधी भाव न था। वह अपने पुराने हैट को कोट के निचले हिस्से से पोंछता रहा। अन्त में वह मुड़ गया और बिना एक भी शब्द कहे बाहर चला गया। इसके

बाद मैंने नोएमी से कहा कि किसी भी व्यक्ति के लिए अपने पिता के साथ इस तरह का व्यवहार करना बड़ी खराब बात है। उसने मुझे इस बात के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि भविष्य में अगर कोई इसी तरह का दुर्व्यवहार वह करे, तो उसे अवश्य बता दिया जाए, जिसके लिए वह मेरी बड़ी आभारी होगी। उसे मेरे ऊपर बड़ा विश्वास है। मैंने उससे कह दिया कि मैं उसको शिष्टाचार की शिक्षा नहीं दे सकता। उसके बारे में मेरे निश्चित विचार थे और वे अच्छे थे। लेकिन उसका व्यवहार देखकर मुझे बड़ी निराशा हुई। लेकिन मैं जल्दी ही इन बातों को भूल जाऊंगा," वेलेंतीन ने प्रसन्न भाव से कहा।

"समय बहुत बड़ा मरहम है!" न्यूमैन ने विनोदपूर्ण गम्भीरता से उत्तर दिया। इसके बाद वह कुछ देर चुप रहा, फिर उसने बदले हुए स्वर में कहा, "मेरी इच्छा है कि आपसे कुछ दिन पहले मैंने जो बात कही थी, उसपर विचार करें। हमारे साथ अमरीका चलें और मैं आपको किसी तरह के व्यापार में लगा दूंगा। आप बहुत बुद्धिमान हैं, बशर्ते अपनी प्रतिभा का उपयोग करें।"

वेलेंतीन ने हंसकर मुंह बिचका लिया। "अपनी बुद्धिमानी की तारीफ के लिए मैं आपका आभारी हूं। क्या आप मुझे किसी बैंक मे नौकरी दिलाना चाहते हैं?"

"बहुत-सी जगहें हैं, लेकिन मेरा ख्याल है कि आपको बैंक का काम ज़्यादा पसन्द आएगा।"

वेलेंतीन ज़ोर से हस पड़ा। "रात को सभी बिल्लियां सफेद होती हैं! एक दफा जब कोई नीचे गिर गया, फिर कितना गिरता है, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता।"

न्यूमैन ने एक मिनट तक कोई उत्तर नहीं दिया। फिर बोला, "मेरा ख्याल है कि आपको वहां जाकर पता लगेगा कि सफलता भी कई तरह की होती है।" उसने यह बात कुछ रूखेपन से कही।

वेलेंतीन कुछ आगे की तरफ झुक आया। उसकी कोहनियां अब भी घुटनों पर रखी हुई थीं और वह फर्श को अपनी छड़ी से खुरच रहा था। अन्त में उसने अपनी आखें ऊपर उठाई और बोला, "क्या आप सचमुच सोचते हैं कि मुझे कुछ करना चाहिए?"

न्यूमैन ने अपने साथी की बांह पर अपना हाथ रख दिया और एक क्षण तक

अपनी अधमुंदी आंखों से उसकी तरफ देखता रहा। "कोशिश करके देखिए। आप व्यवसाय के लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं हैं, लेकिन हम लोग प्रयत्न तो कर ही सकते हैं।"

"क्या सचमुच आपका यह विचार है कि मैं धन कमा सकता हूं ? मैं यह देखना चाहता हूं कि किसीके पास धन आ जाने से उसे कैसा लगता है।"

"जैसा मैं कहूं, वैसा करिए और आप अमीर हो जाएंगे," न्यूमैन ने कहा। "सोच लीजिए।" और उसने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए मदाम द बेलगार्द के बॉक्स की ओर जाने की तैयारी शुरू कर दी।

"मैं इस बारे में अवश्य सोचूंगा," वेलेंतीन ने कहा, "मैं अन्दर जाता हूं और आधे घण्टे मोजार्त सुनूंगा—संगीत सुनते हुए मैं ज़्यादा अच्छी तरह सोच सकता हूं और किसी भी बात पर गम्भीरता से विचार कर सकता हूं।"

जब न्यूमैन बॉक्स में अन्दर घुसा तो मारक्विस अपनी पत्नी के साथ वहां थे। वे हमेशा की तरह विनम्र, मौन थे और बिलकुल नपा-तुला शिष्टाचारपूर्ण व्यवहार कर रहे थे ; बल्कि न्यूमैन को ऐसा लगा कि उनका व्यवहार और दिनों से अधिक नपा-तुला है।

"ओपेरा कैसा है ?" हमारे नायक ने पूछा, "डॉन के बारे में आपका क्या ख्याल है ?"

"हम लोग मोजार्त के बारे में तो जानते ही हैं।" मारक्विस ने कहा, "उसके संगीत के बारे में आज शाम से तो हमारी कोई नई धारणा नहीं बनी है। मोजार्त का संगीत यौवन, ताज़गी, आभा और सहजता का प्रतीक है।—शायद उसमें सहजता अधिक है, लेकिन जिस तरह इसे बजाया जा रहा है, वह बड़ा ही खेदजनक है।"

"मैं यह जानने के लिए बहुत उत्सुक हूं कि वे इसे समाप्त किस तरह करते हैं," न्यूमैन ने कहा।

"आप तो इस तरह बात कर रहे हैं, जैसे 'फिगारो' के समीक्षक हों," मारक्विस ने कहा, "आपने ऑपेरा तो पहले भी देखा होगा ?"

"कभी नही," न्यूमैन ने कहा। "अगर मैने देखा होता, तो मुझे जरूर याद होता। डोना एलबिरा को देखकर मुझे मदाम द सान्त्रे की याद आती है ; मेरा मतलब उसकी परिस्थितियों से नही है, लेकिन वह जिस ढग से गा रही है।"

"आपने बहुत अच्छे ढंग से अन्तर बतलाया है," मारक्विस ने हलके-हलके हसते हुए कहा। "मेरा ख्याल है कि मदाम द सान्त्रे के इस तरह परित्यक्त किए जाने की कोई सम्भावना नहीं है।"

"नही," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन डॉन का क्या होगा ?"

"शैतान आकर उसे उठा ले जाएगा," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "मेरा ख्याल है कि जैरलीना को देखकर आपको मेरी याद आती हो।"

'मै कुछ देर के लिए बाहर जाता हूं," मारक्विस ने कहा, "और आपको यह कहने का अवसर दूगा कि वह पाषाणहृदय कमाण्डर मुझ जैसा है।" और वे उठकर बॉक्स से बाहर चले गए।

मदाम द बेलगार्द कुछ देर बालकनी में बिछे मखमली फर्श को देखती रहीं और फिर बोली, "पाषाण नहीं बल्कि लकड़ी का आदमी है।" न्यूमैन उनके पति की खाली कुर्सी पर बैठ गया। इसका उन्होंने कोई विरोध नहीं किया। वे अकस्मात् मुड़ी और उन्होंने अपना बन्द पंखा न्यूमैन की बांह पर रख दिया। "मुझे बड़ी खुशी है कि आप यहां आ गए," उन्होंने कहा, "मैं आपसे एक भीख चाहती हूं। मै यह बात, पिछले बृहस्पतिवार को मेरी सास ने जो पार्टी दी थी, उसमें कहना चाहती थी, लेकिन आपने मुझे अवसर ही नही दिया। आप उस दिन बहुत खुश थे, इसलिए मैंने सोचा था कि शायद आप कृपा कर मेरी बात मान लें। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि आज आप कुछ अप्रसन्न हैं। लेकिन आपको वादा करना होगा कि आप मेरी बात मानेगे। यही मौका है जब आप मेरा काम कर सकते हैं। शादी के बाद आप किसी काम के नहीं रहेंगे। वादा करिए कि आप मेरा काम करेंगे।"

"मैं जब तक बात समझ न लू तब तक कोई वादा नहीं करता," न्यूमैन ने कहा। "पहले मुझे अपना क़ागज़ दिखाइए।"

"नहीं, पहले आप वादा कीजिए ; मैं आपका हाथ पकड़े हूं। इसके पहले कि आप अपनी गर्दन फन्दे में फंसा लें, मैं चाहती हूं कि आप मेरी बात सुन लें। आपको मेरा इसके लिए आभारी होना चाहिए कि मैं आपको मन बहलाने का एक अच्छा अवसर प्रदान कर रही हूं।"

"अगर यह बात इतनी दिलचस्प है," न्यूमैन ने कहा, "तो विवाह के बाद वह और भी अच्छी लगेगी।"

"दूसरे शब्दों में," मदाम द बेलगार्द ने ज़रा तेजी से कहा, "इसका अर्थ है कि मैं जो कहूंगी, वह आप नही करेंगे। उस समय आप अपनी पत्नी से डरेंगे।"

"अगर आपकी बात मौलिक रूप से ही अनुचित है," न्यूमैन ने कहा, "तो मैं उसे नही करूंगा। अगर उचित है, तो मैं अपने विवाह के बाद, आप जो कहेंगी, वह कर दूगा।"

"आप तो इस तरह बात कर रहे हैं, जिस तरह आपने तर्कशास्त्र रट रखा हो और बातचीत में अंग्रेज़ों जैसे तर्कों का प्रयोग कर रहे हैं!" मदाम द बेलगार्द ने कहा, "अच्छा तो वादा कीजिए कि विवाह के बाद मेरे मन का काम कर देंगे। जो भी हो, आपकी उपस्थिति से ज़्यादा आनन्द रहेगा।"

"ठीक है, मैं विवाह के बाद आपकी बात सुनूंगा," न्यूमैन ने गंभीरता से कहा।

एक क्षण तक मदाम द बेलगार्द कुछ सोचती रहीं और उसकी ओर देखती रहीं। न्यूमैन ने सोचा कि अब ये क्या कहनेवाली हैं। "मेरा ख्याल है कि आप यह जानते हैं कि मेरा जीवन किस तरह का है," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "मुझे कोई सुख नही है, मैं कुछ देख नही सकती, न कुछ कर सकती हूं। मैं पेरिस में उसी तरह रहती हूं, जिस तरह कोई किसी दूर के गांव में रहता हो। मेरी सास ने मुझे एक उपाधि दे रखी है—वह सुन्दर उपाधि क्या है?—घुमक्कड़ी! वे मुझपर हमेशा यह दोषारोपण करती रहती हैं कि मैं ऐसी जगहों पर घूमने जाती हूं, जिनके नाम भी किसीने नहीं सुने हैं और सोचती है कि घर में बैठे रहने में ही मुझे आनन्द मिलना चाहिए। वे चाहती हैं कि मैं बैठी-बैठी उंगलियों पर अपने पूर्वजों को गिना करूं। लेकिन आप ही बताइए, मैं अपने पूर्वजों के बारे में क्यों चिन्ता करूं? मुझे पक्का विश्वास है कि उन्होंने तो कभी मेरी कोई फिक्र न की होगी। मैं आंखों पर हरा चश्मा चढ़ाकर जीना नही चाहती। मैं चीज़ों को ठीक उसी तरह देखना चाहती हूं, जिस तरह की वे है। मेरे पति, आप जानते ही हैं, बड़े सिद्धान्तवादी व्यक्ति हैं। और उनकी सूची में पहली बात यह है कि त्यूलेरीज़ (शाहीमहल जहां अदालतें लगती हैं) अत्यन्त खराब होती हैं। अगर वे खराब होती हैं, तो अरबेन के सिद्धान्तों की बातें सुनकर भी थकावट होती है। जिस तरह से वे सिद्धान्तवादी हैं, मैं भी सिद्धान्तवादी बन सकती हूं। अगर वे किसी परिवार में पैदा होते हैं, तो मैं उन्हें गिराने के लिए किसी भी वंश-वृक्ष को ज़ोरों से हिलाने के लिए तैयार हूं। जो भी हो, मुझे बेवकूफ बूरबों

की जगह चतुर बोनापार्ट ज्यादा पसन्द हैं ।"

"अब मेरी समझ में आया, आप कचहरी की शरण लेना चाहती है," न्यूमैन ने, मोटे तौर पर अनुमान लगाया कि शायद मदाम द बेलगार्द यह चाहती हैं कि मै अमरीकी दूतावास से अपील करके उनके कचहरी जाने का रास्ता साफ करवा दू ।

मदाम द बेलगार्द कुछ हंस पड़ीं । "आप मेरी बात बिलकुल नहीं समझे । त्यूलेरीज जाने का प्रबन्ध मै स्वयं कर लूंगी। जिस दिन मैं वहां जाने का फैसला करूगी, उस दिन मेरी ससुराल वाले बड़े खुश होंगे । देर या सबेर मुझे वहां जाना ही होगा । मै जानती हूं कि आप क्या कहनेवाले हैं : 'आपकी हिम्मत कैसे होगी ?' लेकिन मुझमें यह हिम्मत है । मैं अपने पति से डरती हूं, वे बहुत कोमल, स्निग्ध और ऐसे व्यक्ति हैं, जिनको डांटा-फटकारा नहीं जा सकता । लेकिन फिर भी मै उनसे डरती हूं—बहुत ज्यादा डरती हूं । जो हो, एक दिन मुझे त्यूलेरीज जाना ही होगा । लेकिन यह कार्य इन जाड़ों में नहीं होगा और शायद अगले जाडों में भी नहीं और इस बीच मुझे जीवित रहना है । इस समय मैं कहीं और जाना चाहती हूं ; यह मेरा स्वप्न है । मै 'बॉल बुलियर' जाना चाहती हूं ।"

"बॉल बुलियर ?" न्यूमैन ने शब्दों को दोहराया, क्योंकि पहली बार में उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया था ।

"पेरिस के मुहल्ले में यह एक नाचघर है, यहां विद्यार्थी अपनी प्रेमिकाओं के साथ नाचने आते है । अब आप यह मत कहिएगा कि आपने यह नाम ही नहीं सुना है ।"

"हां," न्यूमैन ने कहा, "मैंने इसका नाम तो ज़रूर सुना है ; अब मुझे याद आया, मै वहा जा भी चुका हू । और वहां आप जाना चाहती हैं ?"

"यह बड़ी बेवकूफी की बात है, बडा ही निम्नकोटि का कार्य है, आपकी जो मर्ज़ी आए, कह लीजिए, लेकिन मै वहां जाना चाहती हू । मेरे कुछ मित्र वहां गए हैं और उन्होंने बताया कि यह नाच बडा मनोरंजक होता है । मेरे मित्र तो हर जगह जाते हैं, मै ही हूं, जो घर मे बैठी बिसूरती रहती हू ।"

"मुझे तो ऐसा लगता है कि इस समय आप घर में नही है," न्यूमैन ने कहा, "और न आप रोती-बिसूरती लग रही हैं ।"

"घर में बैठे-बैठे मेरी जान निकली जाती है । पिछले आठ वर्षों से मैं प्रति

उसमे जब वेलेंतीन से न्यूमैन की भेंट हुई, तो उसने पूछा कि क्या उसने अमरीका जाने के प्रश्न पर विचार किया। उसने कहा, "अगर आप सचमुच मेरी बात पर विचार करना चाहते थे, तो आपको चाहिए था कि आप अपने बैठने के लिए कोई ज़्यादा अच्छा स्थान चुनते।"

"नहीं, वह जगह इतनी खराब नहीं है," वेलेंतीन ने कहा, "मैं उस लड़की के बारे में ज़रा भी नहीं सोच रहा था। मैं नाटक या रंगमच की ओर बिना देखे केवल संगीत सुन रहा था और आपके प्रस्ताव पर विचार कर रहा था। शुरू में यह प्रस्ताव मुझे बड़ा ही अजीब-सा लगा और फिर संगीत में बांसुरी की धुन के साथ ही मैंने यह सोचना शुरू किया, 'क्यों नहीं, क्यों नहीं?' और फिर इसके साथ ही जब बहुत सारी बांसुरियां बजनी शुरू हो गई, तो 'क्यों नही, क्यो नहीं' के स्थान पर मैने सोचा कि मैं क्यों न अमरीका जाऊं, मैं क्यों न वहां जाकर कुछ काम करूं। मुझे यह विचार बहुत अच्छा लगा है और इसके बाद मै अमरीका से बक्स भरकर डालर लेकर लौटूंगा। इसके अलावा यह भी सम्भव है कि मुझे वहां का काम पसन्द आ जाए। यहां लोग मुझे आवारा कहते हैं; लेकिन क्या पता कि वहां मुझे दुकान चलाने में ही बड़ा आनन्द आने लगे? यह मेरे जीवन का बड़ा सुन्दर प्रकरण होगा। ऐसा लगेगा कि मैं बहुत बढ़िया प्रथम कोटि का व्यक्ति हू। ऐसा पुरुष, जो परिस्थितियों पर शासन करता है।"

"इस बात की परवाह न करिए कि क्या कैसा लगेगा," न्यूमैन ने कहा, "अगर किसीके पास पांच लाख डालर हों, तो यह बात हमेशा ही अच्छी लगेगी। कोई कारण नही है कि यह रकम आप न कमा सकें, बशर्ते आप मेरी बात सुनें और इसकी चर्चा किसी भी और से न करें।" उसने अपना हाथ अपने साथी के हाथ में डाल दिया, और दोनों कुछ देर एकांत गलियारों में घूमते रहे। न्यूमैन यह सोचने लगा कि वह इस प्रतिभा-सम्पन्न लेकिन अव्यावहारिक मित्र को किस तरह बहुत बढ़िया व्यापारी बना देगा। वह ऐसा करने के लिए यकायक बहुत उत्सुक हो उठा था। कभी-कभी उत्साह के कारण ही आदमी को बेचैनी-सी होने लगती है, ठीक उसी तरह, जिस तरह किसीके पास पूजी हो और जो किसी व्यापार में न लगी हुई हो। बेलगार्द बड़ा बुद्धि-सम्पन्न व्यक्ति था और इसका अच्छा उपयोग होना ही चाहिए। न्यूमैन के लिए प्रतिभा का सबसे अच्छा उपयोग यही हो सकता था कि कोई व्यक्ति रेलवे के शेयर खरीदे-बेचे। न्यूमैन का उत्साह कुछ इसलिए भी बढ़ गया था

कि वेलेंतीन के प्रति उसका हृदय करुणा से भर उठा था। उसे वेलेंतीन को देखकर बड़ा तरस आता था। हालांकि न्यूमैन यह अनुभव करता था कि इस प्रकार का तरस कान्त द बेलगार्द को समझा पाना बड़ा मुश्किल है। वह कभी भी यह नहीं समझ पाया था कि वेलेंतीन ने अपने जीवन का अधिकांश भाग पालिश किए हुए जूते पहने रू द एंजो और रू द ल यूनिवर्सिते के बीच घूमने में बिता दिया था। इन दोनों स्थानों के बीच आते-जाते समय वह कभी-कभी 'बुलवर्द दैस इतालियन्स' होता हुआ भी जाता था। जबकि अमरीका में घूमने के लिए पूरा महाद्वीप पड़ा था। और सड़क के नाम पर न्यूयार्क और सानफ्रासिस्को का पूरा रास्ता था। वह यह सोच-सोचकर और भी दुखी होता था कि वेलेंतीन के पास पैसा नहीं है। यह बात कुछ बहुत ही भद्दी लगती थी। उसे लगता था कि वेलेंतीन नासमझ है। इसके अलावा उसमें और कोई दुर्गुण नहीं है। अगर उसकी यह नासमझी दूर कर दी जाए, तो समस्या सुलझ जाती है। इस मामले में वह कुछ साधारण बातें बतला सकता था। उदाहरण के लिए अगर कोई आदमी दुनिया में आराम से रहना चाहता है, तो उसके पास धन भी सहज भाव से आता रहना चाहिए। न्यूमैन ने अपना बहुत-सा रुपया रेल-कम्पनियों में लगा रखा था, जो कभी-कभी न्यूमैन को बड़ा अजीब-सा लगता था। न्यूमैन को यह बड़ा अजीब-सा लगता था कि कोई बड़े अधिकारों के दावे तो करे, लेकिन रेल-कम्पनी में उसका एक भी शेयर न हो, हालांकि मैं यह कह सकता हूं कि वह शायद स्वयं यह बात मानने को प्रस्तुत न होता कि किसी व्यक्ति को केवल इसी आधार पर अधिकार मिल जाने चाहिए कि रेल-कम्पनी के उसने बहुत-से शेयर खरीद रखे हैं।

"मैं आपसे कुछ व्यापार कराऊंगा," उसने वेलेंतीन से कहा, "और इस व्यापार में आपको सफलता दिलाऊंगा। कम से कम इस प्रकार के छः कार्य हैं, जिनमें आप कार्य कर सकते हैं। आप स्वयं देखिएगा कि काम कितना रोचक है। व्यावसायिक जीवन का अभ्यस्त होने में कुछ समय तो लगेगा, लेकिन बहुत जल्दी ही आप काम करने लग जाएंगे और छः महीने बीतते न बीतते एक या दो सौदों में सफलता के बाद आपको खुद ही काम पसन्द आने लगेगा और उस समय यह जानकर आपको खुशी होगी कि आपकी बहन भी वहां है। उधर, आपकी बहन भी आपको पास देखकर खुश होंगी। हां, वेलेंतीन," न्यूमैन ने कहा और उसने प्रसन्नता प्रकट करते हुए अपने मित्र की बांह को थोड़ा-सा दबा दिया, "मैं साफ देख रहा हूं कि आप

कौन-सा काम करेंगे। आप बिलकुल चुपचाप रहिए और मैं आपको ठीक स्थान पर काम में लगा दूंगा।"

न्यूमैन कुछ देर इसी विषय पर और बातें करता रहा। दोनों व्यक्ति लगभग पन्द्रह मिनट टहलते रहे। वेलेंतीन ने न्यूमैन की सारी बातें सुनीं, फिर सवाल किए। इनमें से बहुत-से सवाल ऐसे थे, जिन्हें सुनकर वह वेलेंतीन की अज्ञानता पर ज़ोरों से हंस पड़ा; इसके बाद भी वह कभी-कभी मुस्करा उठता था, जिससे कभी जिज्ञासा और कभी विडम्बना का भाव प्रकट होता था। लेकिन फिर भी वह बहुत गम्भीर था। वेलेंतीन को न्यूमैन की सीधी-सादी बातचीत बड़ी आकर्षक लग रही थी। उसने सीधी-सादी भाषा में स्वर्गलोक की (एलदोरेदो) कहानी उसके सामने उपस्थित कर दी थी। तथापि यह सच था कि किसी अमरीकी व्यापारिक कम्पनी में काम करने का प्रस्ताव नया, मौलिक और साहसपूर्ण था और अच्छा भी लगता था, लेकिन वह अपने-आपको काम में लगा देखने की कल्पना नहीं कर सकता था। इसलिए जब उसने मध्यान्तर-समाप्ति की घण्टी सुनी, तो उसकी इस बात में कुछ वीरता-सी थी, जो उसने मुस्कराते हुए कही थी, "अच्छा तो ठीक है, आप मुझे ले चलिए, व्यापार में लगा दीजिए! मैं अपने-आपको आपके हवाले करता हूं। मुझे (व्यापार-रूपी) पात्र में डुबाकर सोने का बना दीजिए।"

वे उस गलियारे से पहुंच गए थे, जो छोटे बॉक्सों के पास से चक्कर खाता हुआ जाता था। वेलेंतीन एक छोटे-से बॉक्स के सामने रुक गया, जिसमें मदामाज़ेल नियोशे बैठी थीं। जैसे ही उसका हाथ दरवाज़ा खोलने के हत्थे पर पड़ा, न्यूमैन ने वेलेंतीन से पूछा, "ओह हमारे साथ आइए न, वहां वापस क्यों जा रहे हैं?"

"हे भगवान, हां," वेलेंतीन ने कहा।

"क्या किसी और जगह आपकी सीट नहीं है?"

"हां है, स्टाल्स में मेरी एक सीट है।"

"तो फिर यही ठीक होगा कि आप उसी सीट पर जाकर बैठें।"

"मैं वहां अपनी सीट से भी उसे बहुत अच्छी तरह देख सकता हूं।" वेलेंतीन ने गम्भीरता से कहा, "और आज रात वह देखने योग्य है।" लेकिन, एक क्षण बाद उसने कहा, "इस वक्त उसके पास जाकर बैठने का एक विशेष कारण है।"

"ओह, मैं कुछ न कहूंगा," न्यूमैन ने कहा, "आप तो बिलकुल उसके पीछे

बावले है।"

"नहीं, बात केवल इतनी-सी है। बॉक्स में एक युवक है और जिसे मेरे अंदर जाने से झुंझलाहट होगी और मैं केवल उसे नाराज़ करना चाहता हूं।"

"मुझे यह सुनकर बहुत खेद हुआ," न्यूमैन ने कहा, "क्या तुम उस बिचारे की जान नही छोड़ सकते ?"

"नहीं, उसने मुझे बेकार ही नाराज़ किया है। यह बॉक्स उसका नहीं है। नोएमी इस बॉक्स में अकेली आई थी और वह इसमें ज़बर्दस्ती घुस गया है। मैं उसके पास अन्दर गया और बातचीत की। और कुछ ही क्षणों के बाद नोएमी ने मुझसे कहा कि मै बाहर जाकर उसके लबादे में से पंखा निकाल लाऊं। मेरी अनुपस्थिति में यह महाशय अन्दर आ धमके और नोएमी की बगल मे जा विराजे, उसी कुर्सी पर जिसपर मैं बैठा था। मेरे दुबारा लौटने पर उस युवक को बड़ी परेशानी हुई और यही नही, उसने मुझसे असभ्य ढंग से व्यवहार भी किया। मैं नहीं जानता कि वह कौन है। ज़रूर ही कोई लुच्चा-लफंगा होगा। मुझे पता नहीं कि यह नोएमी भी कहा से ऐसे लफंगों से दोस्ती करती फिरती है। वह पी भी रहा था, लेकिन उसे पता है कि मैं कौन हूं। अभी दूसरे दृश्य के दौरान उसने फिर कुछ बदतमीज़ी की थी। मैं फिर वहां जा रहा हूं, केवल दस मिनट के लिए—इतना समय दुबारा अशिष्टता दिखाने के लिए काफी है। मै इस जंगली को यह सोचने का मौका रहीं दूंगा कि उसने मुझे बॉक्स से भगा दिया है।"

"मेरे प्यारे भाई," न्यूमैन ने डांटते हुए कहा, "यह क्या बच्चों जैसा खिलवाड़ है ! आप उस लड़की के बारे मे तो झगड़ा करने नहीं जा रहे ?"

"नहीं, उस लड़की से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। मेरा भी इरादा झगड़ा मोल लेने का नहीं है। न मै दूसरों को कोई तकलीफ देना चाहता हूं और न कोई जादूगरी दिखाना चाहता हूं। मैं तो एक बात साफ करना चाहता हू जिसे हर भले आदमी को करना चाहिए।"

"ओह, भाड़ में जाए आपकी यह बात !" न्यूमैन ने कहा। "आप फ्रेंच लोगों के साथ यही तो कठिनाई है; आप हमेशा ही किसी न किसी बात के पीछे पड़े रहते हैं। अच्छा," उसने कहा, "संक्षेप में बात कहिएगा। लेकिन अगर आप इस तरह के झगड़ों में पड़ेंगे, तो मुझे आपको और पहले अमरीका भेज देना होगा।"

"बहुत अच्छा," वेलेंतीन ने जवाब दिया, "आपकी जब इच्छा हो, मुझे भेज

दीजिएगा, लेकिन अगर मैं अमरीका जाऊंगा, तो भी इस आदमी को सोचने का अवसर नहीं दूंगा कि मैं इससे डरकर अमरीका भागा हूं।"

और फिर दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए। दृश्य समाप्त होने पर न्यूमैन ने देखा कि वेलेंतीन अभी भी नोएमी वाले बॉक्स में बैठा है। न्यूमैन फिर टहलता हुआ गलियारे में आ गया, उसे उम्मीद थी कि वेलेंतीन से मुलाकात हो जाएगी। अभी वह मदामाजेल नोएमी के बॉक्स से कुछ ही गज़ दूर था कि उसने देखा, वेलेंतीन बॉक्स से बाहर निकलकर आगे की तरफ चला गया है और उसके साथ वह युवक भी है, जो नोएमी के पास बैठा हुआ था। दोनों ही आदमी तेज़ी से कदम बढ़ाते हुए बरामदे में कुछ दूर आगे चले गए, जहां न्यूमैन ने देखा कि वे खड़े हो गए हैं और आपस में बातचीत कर रहे हैं। दोनों व्यक्तियों का बातचीत करने का ढंग शांत था लेकिन अजनबी युवक का चेहरा लाल हो गया था और वह अपने चेहरे को जेब से रूमाल निकालकर बार-बार पोंछ रहा था। इस बीच न्यूमैन बॉक्स के सामने आ गया, उसका दरवाज़ा खुला था और अन्दर से गुलाबी पोशाक दिखाई पड़ रही थी। वह तुरन्त बॉक्स में चला गया। उसके घुसते ही मदामाजेल नोएमी मुड़ीं और उन्होंने मुस्कराकर न्यूमैन का अभिवादन किया।

"आप, आखिर आप मुझसे मिलने चले ही आए?" नोएमी ने कहा, "रहने दीजिए, कोई बहाना न बनाइए। इस समय मैं बहुत खुश हूं। आइए बैठिए।" उसके गालों पर हलकी-सी सुर्खी थी, जो अच्छी लग रही थी और आंखों में भी चमक थी। उसे देखकर ऐसा लगता था कि नोएमी को कोई बहुत अच्छी खबर सुनने को मिली है।

"यहां पर कुछ हुआ है!" न्यूमैन ने बैठे बिना कहा।

"इस समय मैं बहुत खुश हूं," उसने दोहराया, "दो सज्जन, जिनमें से एक मो० द बेलगार्द हैं, जिनका परिचय आपने कराया था—अभी आपस में आपकी इस दासी को लेकर लड़ पड़े हैं। दोनों में खूब कहा-सुनी हुई है। अब वे बिना द्वंद्व युद्ध की चुनौती दिए वापस नहीं आएंगे। द्वंद्व होगा—इससे मेरा नाम होगा, मैं आगे बढ़ सकूंगी!" मदामाजेल नोएमी ने तालियां बजाते हुए कहा। "यह होती है किसी स्त्री की अदा।"

"तुम्हारा यह तो मतलब नहीं है कि बेलगार्द तुम्हें लेकर द्वंद्व युद्ध करेगा?" न्यूमैन ने खिन्नता प्रकट करते हुए ज़ोर से कहा।

"बात तो यही है ।" और उसने बड़ी कठोर मुस्कराहट से न्यूमैन की तरफ देखा । "नहीं, नहीं, आप बहादुर नही है ! और अगर आपने इस द्वंद्व को रोका तो मैं आपसे रुष्ट हो जाऊंगी और फिर आपको इसकी कीमत चुकानी होगी !"

न्यूमैन के मुंह से नोएमी की इस बात पर एक छोटी-सी गाली निकल गई; जिसके पहले उसने 'ओह' कहा था। इन चार अक्षरों की गाली को, बेहतर यही होगा कि यहा न लिखा जाए। बिना और कोई औपचारिकता बरते न्यूमैन ने नोएमी की तरफ से अपनी पीठ मोड़ ली और बॉक्स से बाहर आ गया। गलियारे मे उसने देखा कि वेलेंतीन और उसका साथी दोनों उसकी ही तरफ बढ़े आ रहे है। वेलेंतीन के साथ चलनेवाले युवक को न्यूमैन ने अपनी जाकेट की जेब में एक कार्ड रखते हुए देखा। मदामाजेल नोएमी का यह ईर्ष्यालु मजनूं कद में लम्बा और देखने में हृष्ट-पुष्ट था, उसकी नाक मोटी-सी थी, आंखें बड़ी-बड़ी और नीली थीं। वह देखने से जर्मन मालूम पड़ता था। उसकी जाकेट में एक बड़ी-सी घड़ी की चेन पड़ी थी। जब वे बॉक्स के पास पहुचे, तो वेलेंतीन ने बहुत झुककर अपने साथ के युवक के लिए अदर जाने का रास्ता दे दिया। न्यूमैन ने वेलेंतीन की बांह पर ज़रा-सा हाथ रखा, जो इस बात का सकेत था कि वह उससे बात करना चाहता है। बेलगार्द ने उत्तर दिया कि वह एक मिनट में उसके पास आया। वेलेंतीन उस जर्मन युवक के अन्दर जाने के बाद खुद भी बॉक्स में गया, लेकिन कुछ ही मिनट बाद वापस लौट आया। वह बड़ा मुस्करा रहा था।

"वह बड़ी खुश है," वेलेंतीन ने कहा, "वह कहती है कि हम दोनों उसको बड़ा अमीर बना देंगे। मैं अकारण ही बेवकूफ नहीं बनना चाहता, लेकिन मेरा ख्याल है कि बहुत सम्भव है कि ऐसा ही हो।"

"तो आप द्वंद्व करेगे ?" न्यूमैन ने कहा।

"मेरे भाई, आप इतने अधिक नाराज़ क्यों हो रहे हैं ? यह सब कुछ मैंने अपनी तबियत से थोड़े ही किया है। अब तो सब बात तय हो गई है।"

"मैंने आपसे पहले ही कहा था !" न्यूमैन ने कराहते हुए कहा।

"मैंने भी उससे यही कहा है," वेलेंतीन ने मुस्कराते हुए कहा।

"उसने आपसे क्या हरकत की थी ?"

"मेरे दोस्त, कोई हरकत की हो या न की हो, इससे कोई मतलब नहीं।

उसने एक अपशब्द का प्रयोग किया—बस मैने पकड़ लिया।"

"लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि वह क्या था ? क्या आपके बड़े भाई की हैसियत से मै आपको इस तरह के बेकार के झमेलों में पड़ने से रोक नहीं सकता ?"

"मै आपका बड़ा आभारी हू," वेलेंतीन ने कहा, "मुझे कुछ भी छिपाना नहीं है, लेकिन मै सारा ब्यौरा इसी जगह और अभी नही बता सकता।"

"ठीक है, हम लोग यहा से बाहर चले चलते हैं। आप मुझे सारी बात वहां बता सकते है।"

"ओह नही, मै अभी यहां से नहीं जा सकता। मै इस तरह जल्दी में मैदान छोड़कर क्यो भागू ? मै बॉक्स स बाहर आरकेस्ट्रा स्टाल में अपनी सीट पर जाऊंगा और वहा बैठकर नाटक देखूगा।"

"आप इसका आनन्द न ले सकेंगे ; आपका दिमाग विचारों में उलझा रहेगा।"

वेलेतीन एक क्षण उसकी ओर देखता रहा। उसका चेहरा कुछ लाल हो गया था, वह मुस्करा रहा था। उसने न्यूमैन को थपथपाया। "आप बहुत ही सरल हैं ! इस तरह की घटना हो जाने पर आदमी को एकदम शान्त और गम्भीर रहना चाहिए। इस समय सबसे शातिपूर्ण बात मै यही कर सकता हू कि सीधे अपनी सीट पर जाकर बैठ जाऊ।"

"आह," न्यूमैन ने कहा, "आप चाहते है कि नोएमी आपको बॉक्स से बराबर देखती रहे—आपको और आपकी शान्ति को। मैं इतना सरल नहीं हूं। यह सब बहुत गड़बड़ है।"

वेलेतीन और बाकी दोनों व्यक्ति अपने-अपने स्थानो पर, जितनी देर नाटक चलता रहा, बैठे रहे। मदामाजेल नोएमी और उनके ऊधमी प्रेमी ने भी नाटक का आनन्द लिया। आपेरा समाप्त होने पर न्यूमैन वेलेंतीन के पास फिर आया और वे दोनों फिर सड़क पर साथ-साथ गए। न्यूमैन ने वेलेंतीन से कहा कि वह उसकी गाड़ी में साथ चले। लेकिन वेलेंतीन ने सिर हिलाकर मना कर दिया और फुटपाथ पर ही रुक गया। "मुझे अकेले ही जाना चाहिए," उसने कहा, "मुझे तुरन्त ही कुछ मित्रों से जाकर मिलना चाहिए, जो इस मामले को तय करने के लिए आवश्यक प्रबंध करने का भार संभाल लें।"

"मैं सारा भार संभाल लूंगा," न्यूमैन ने कहा। "इसकी सारी व्यवस्था आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिए।"

"आपकी बड़ी दया है, लेकिन यह बहुत कठिन है। पहली बात यह है कि आप, जैसाकि आपने अभी कहा, मेरे भाई की तरह है; आप मेरी बहन से विवाह करनेवाले हैं। यह तथ्य ही इस बात के लिए काफी है कि इस मामले में किसी भी चीज की व्यवस्था का भार संभालने के अयोग्य हैं। इससे लोग आपकी निष्पक्षता में सदेह करेंगे। और अगर आप ऐसा नहीं भी करें, तो भी मुझे इस बात का सन्देह है कि आप द्वंद्व को उचित नहीं समझते हैं। आप इस बात की कोशिश करेंगे कि हम लोग न लड़ें।"

"बेशक, मुझे यही करना चाहिए।" न्यूमैन ने कहा, "जो भी आपके मित्र होंगे, मुझे आशा है, वे सब यही चाहेंगे।"

"यह तो निर्विवाद है कि वे मुझे लड़ने से रोकने के लिए पूरा प्रयत्न करेंगे। वे कहेंगे कि कोई बात बना दी जाए। ऐसा बहाना जो ठीक प्रतीत हो, लेकिन आप इतने अच्छे स्वभाव के हैं कि ऐसा भी नहीं कर सकेंगे।"

न्यूमैन एक क्षण चुपरहा। वह मन ही मन बड़ा नाराज़ था, लेकिन उसने देखा कि इस वक्त बात बढ़ाने से कोई फायदा नहीं है। तो यह द्वंद्व युद्ध कब होगा?" उसने पूछा।

"जितनी जल्दी हो जाए, उतना ही अच्छा है," वेलेंतीन ने कहा, "मेरा ख्याल है परसों होगा।"

"ठीक है," न्यूमैन ने कहा, "इस घटना की वास्तविक बातें जानने का हक मुझको भी है, मैं इस तरफ से अपनी आंखें बिलकुल ही बन्द नहीं कर सकता।"

"मैं बड़ी खुशी से आपको सारी बातें बतला दूगा," वेलेंतीन ने कहा, "ये सारी बातें बहुत साधारण-सी हैं और हर बात बहुत जल्दी ही हो जाएगी, लेकिन अब सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि मैं जल्दी से जल्दी अपने दोस्तों से जाकर मिलू। मैं तुरन्त ही टैक्सी लेता हूं। इस बीच आप मेरे कमरे पर चलिए और मेरी प्रतीक्षा कीजिए। मैं कोई एक घण्टे में वहां पहुंच जाऊंगा।"

न्यूमैन ने वेलेंतीन को चले जाने दिया, लेकिन उसका विरोध छिपा न रहा। इसके बाद वह रू द एंजो में वेलेंतीन के घर की ओर चल दिया। एक घण्टे से ज्यादा समय बीत जाने पर वेलेंतीन वापस लौटा। लौटने पर उसने बताया कि

मुझे जिन दोस्तों से मिलना था, उनमें से एक ही व्यक्ति मिल पाया है और उस मित्र ने यह वादा किया है कि वह दूसरा साथी भी ढूढ़ लेगा। न्यूमैन वेलेंतीन के कमरे में बिना रोशनी जलाए बैठा था। आग भी बुझ-सी गई थी। वेलेंतीन ने आते ही आग को तेज़ करने के लिए लकड़ियां डाल दीं।

आग की लपटें फर्नीचर से भरे उस बैठकखाने में प्रकाश करने लगीं और उसकी छाया से तरह-तरह की भयानक आकृतियां दीवारों पर इधर-उधर दिखलाई पड़ने लगीं। न्यूमैन चुपचाप उस बातचीत का ब्योरा सुनता रहा, जो वेलेंतीन और उस जर्मन युवक के बीच हुई थी और जिसका कार्ड वेलेंतीन की जेब में था। इस कार्ड पर मो० स्टानीस्लास काप, स्ट्रासबर्ग मुद्रित था। नोएमी ने इस जर्मन युवक से, जो उनके घर के सामने रहता था, ताकझाक करके दोस्ती कर ली थी। नोएमी ने उससे कहा था कि युवक में इतनी भी सभ्यता नहीं है कि वह पहले उसके घर आकर मिलता। "ओह, छोड़िए भी!" मो० स्टानीस्लास काप ने यह बात सुनकर कहा था, "बॉक्स में पहले से ही काफी लोग मौजूद हैं।" और वह मो० द बेलगार्द को आखें गड़ागड़ाकर देखता जा रहा था। वेलेंतीन ने तुरन्त उसको यह जवाब दिया कि मो० काप के लिए बॉक्स में बैठे लोगों की संख्या घटा देना बड़ा आसान है। "मैं बड़ी प्रसन्नता से आपके बाहर जाने के लिए बॉक्स का दरवाजा खोल दूगा!" मो० काप ने चिल्लाकर कहा, "मुझे आपको उठाकर गड्ढे में फेंक देने में बड़ी ही प्रसन्नता होगी।" वेलेंतीन ने उत्तर दिया, "ओह, आप लोग आपस में ज़रूर लड़िए और इसकी खबर अखबारों में छपनी चाहिए!" कुमारी नोएमी ने अपना हर्ष प्रकट करते हुए हाथ नचाकर कहा, "मो० काप, आप इनको निकाल दीजिए या मो० द बेलगार्द आप इन्हें उठाकर गड्ढे में फेंक दीजिए, चाहे वाद्य-वृन्द पर धक्का देकर गिरा दीजिए—कहीं भी धकेल दीजिए। मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि कौन क्या करता है, बस आप दोनों में खूब लड़ाई होनी चाहिए!" वेलेंतीन ने उत्तर दिया कि हम यहां नहीं लड़ेंगे, लेकिन क्या यह सज्जन बॉक्स के बाहर गलियारे में उनके साथ चलेंगे। गलियारे मे कुछ देर बातचीत होने के बाद दोनों ने एक-दूसरे को अपने कार्ड दे दिए। मो० स्टानीस्लास काप ने बड़ी कठोरता प्रदर्शित की। ज़ाहिर था कि यह युवक लड़ने पर आमादा था।

"इसमें शक नही कि यह आदमी बड़ा धृष्ट है," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन

अगर आप दुबारा बॉक्स में लौटकर न गए होते, तो यह झगड़ा ही न होता।"

"क्यों, आप यह क्यों नही देखते," वेलेंतीन ने उत्तर दिया, "कि बाद में जो घटनाएं हुई, उनको देखते हुए मेरा बॉक्स में जाना बहुत ज़रूरी था ? मो० काप मुझे चुनौती देना चाहते थे; वे अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। ऐसे मामले में अर्थात् जब उन्होंने मुझे चुनौती देने के लिए सूचित कर दिया हो, तो आदमी को ललकार का जवाब देने के लिए वहां रहना ही चाहिए। अगर मैं वहां न जाता, तो मेरा न जाना यह कहने के बराबर था, 'ओह, अगर आप नाराज़ हो रहे हैं, तो—' "

"तो आप लड़िए ; मै इस मामले में आपकी कोई मदद नहीं करूंगा।—यह बात कहना बिलकुल उचित होता। ऐसा लगता है कि आप मो० काप की उद्दंडता को देखने ही वहां गए थे," न्यूमैन ने कहा, "लेकिन आपने तो मुझसे यह कहा था कि मैं उस लड़की की वजह से वहां नही जा रहा हूं।"

"ओह, उस लड़की की चर्चा भी न कीजिए," वेलेंतीन ने धीरे से बुदबुदाकर कहा, "वह बड़ी बोर है।"

"मैं आपका हृदय से समर्थन करता हूं। लेकिन अगर आपकी यही भावना उसके बारे में है, तो आप उसे भुला क्यों नहीं देते ?"

वेलेंतीन ने अपना सिर हिलाया, वह मुस्करा रहा था। "मैं नहीं समझता कि आपने पूरी बात समझी है और मेरा ख्याल है कि मैं आपको समझा भी नही सकता। उस लड़की ने पूरी स्थिति समझ ली थी; वह जानती थी कि क्या होने-वाला है; वह हम लोगों को देख रही थी।"

"एक बिल्ली बादशाह को देखती रहे ! इससे क्या फर्क पड़ता है ?"

"क्यों कोई भी पुरुष स्त्री के सामने कायरता का प्रदर्शन नही कर सकता।"

"मैं उसे स्त्री नहीं मानता। आपने पहले मुझसे नहीं कहा था कि वह पत्थर है ?" न्यूमैन ने चिल्लाते हुए कहा।

"ठीक है," वेलेंतीन ने उत्तर दिया, "रुचि के बारे में तो कोई झगड़ा नहीं है। यह तो भावना की बात है; इसको किसी भी व्यक्ति के अपने आत्माभिमान के पैमाने से ही मापा जा सकता है।"

"भाड़ में जाए आपके सम्मान की यह धारणा !" न्यूमैन ने कहा।

"अब बातें करना बेकार है," वेलेंतीन ने कहा, "बातों का समय नही रहा है, द्वंद्व युद्ध का फैसला हो चुका।"

न्यूमैन मुड़ गया और उसने अपना हैट उठा लिया। दरवाज़े पर अपना हाथ रखकर वह कुछ ठहर गया। "आप कौन-से हथियार का इस्तेमाल करेंगे ?" उसने छा।

"इसका फैसला तो मो० स्टानीस्लास काप को करना है, क्योंकि उनको नौती दी गई है। मैं तो यह चाहूंगा कि छोटी और हलकी तलवार का प्रयोग किया ाए। मैं उसे भलीभाति चला सकता हूं। गोली चलाने का मुझे अभ्यास नहीं है।"

न्यूमैन ने अपना हैट सिर पर रख लिया था; हैट पीछे की तरफ हटाकर उसने ाथा खुजाना शुरू कर दिया। "मेरा विचार था कि पिस्तौल ठीक रहती," न्यूमैन कहा, "मै आपको बता देता कि गोली कैसे मारनी चाहिए !"

न्यूमैन ज़ोरों से हंस पड़ा। "किसी अंग्रेज़ कवि ने स्थिरता के बारे में क्या कहा ? वह एक फूल या एक तारा या एक हीरा है। आपमें इन तीनों की ही विशेष-ाएं हैं !" लेकिन वेलेंतीन इस बात पर राज़ी हो गया कि मो० स्टानीस्लास काप साथ द्वंद्व युद्ध की सारी व्यवस्था के हो जाने के बाद कल फिर न्यूमैन से मिलेगा।

दूसरे दिन न्यूमैन को तीन पक्तियों का वेलेंतीन का यह संदेश मिला। यह ैसला हुआ है कि दोनों व्यक्ति सीमा पार करके एक स्थान पर पहुंचें। वह रात की जेनेवा एक्सप्रेस ट्रेन से रवाना होगा। लेकिन उसके पास इतना समय बच जाएगा वह न्यूमैन के साथ आकर रात का भोजन कर सके। तीसरे पहर न्यूमैन द सान्त्रे से मिलने गया, लेकिन जल्दी ही वापस लौट आया। इस मुला-के दौरान भी मदाम द सान्त्रे उसे बड़ी संयत लगीं और उनके चेहरे से मेशा की तरह सहानुभूति छलक रही थी। लेकिन वे दुःखी थीं और उन्होंने ह स्वीकार किया। न्यूमैन ने मदाम द सान्त्रे की लाल आखें देखकर पूछा था कि या वे रो रही थीं। तब उन्होंने स्वीकारात्मक उत्तर दिया। कुछ ही घण्टे पहले लेंतीन वहां आया था। इस मुलाकात की दुःखद याद बनी हुई थी। वह खूब रहा था और गप्पें हांक रहा था। उसने कोई बुरी खबर नहीं दी थी। और दिनों की बजाय उसने साधारण से अधिक स्नेह प्रकट किया था। भातृप्रेम की अभिव्यक्ति ने मदाम द सान्त्रे के मर्म को स्पर्श किया था और जब वेलेंतीन ाने लगा, तो उनकी आंखों से आंसू बह निकले थे। उन्हें लगा कि कोई बहुत अनहोनी और दुखदायी घटना होनेवाली है। मदाम द सान्त्रे ने यह प्रयत्न किया कि वे इस कल्पनात्मक अनहोनी घटना को अपने विवेक द्वारा दूर हटा दें,

लेकिन इस कोशिश में उनके सिर में दर्द हो गया था। न्यूमैन वेलेंतीन के द्वंद्व युद्ध के बारे में स्वभावतः कुछ भी न कहने के लिए लाचार था और उसमें ऐसी नाटकीय प्रतिभा नहीं थी कि वह मदाम द सान्त्रे को जिस अशुभ घटना का पहले से ही आभास होने लगा था, वह उसको व्यंग्य और विनोदों की बातों द्वारा उड़ा देता। जाने के पहले न्यूमैन ने मदाम द सान्त्रे से पूछा कि क्या वेलेंतीन अपनी मां से भी मिला था।

"हां," मदाम द सान्त्रे ने जवाब दिया, "लेकिन वे तो नहीं रोईं।"

न्यूमैन के घर पर वेलेंतीन ने रात को भोजन किया। जिस वक्त वेलेंतीन न्यूमैन के घर पर आया, वह अपना छोटा चमड़े का बॉक्स साथ ले आया था, जिससे भोजन के बाद वह सीधा रेलवे स्टेशन चला जाए। मो० स्टानीस्लास काप ने द्वंद्व युद्ध को टालने के लिए किसी भी प्रकार का बहाना करने से साफ इन्कार कर दिया था। वेलेंतीन ने कहा कि मेरे पास बहाना करने का कोई कारण नहीं था। वेलेंतीन ने यह भी पता लगा लिया था कि यह युवक कौन है। मो० स्टानीस्लास काप स्ट्रासबर्ग के एक शराब बनानेवाले अमीर आदमी का पुत्र और उसकी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी था। यह युवक स्वभाव से ही बड़ा क्रोधी और क्रूर था। वह अपने बाप की शराब बनाने की भट्टी से होनेवाली आमदनी के सहारे तितलैया खेलता फिरता था। आम तौर पर लोग उसे अच्छा आदमी कहते थे, लेकिन वह रात के भोजन के बाद अकसर लोगों से लड़ पड़ता था। वेलेंतीन ने कहा, "जिस आदमी ने ज़िन्दगी-भर बियर पी हो, वह शैम्पेन पीकर अपने-आपपर काबू नहीं रख सकता।" मो० काप ने लड़ने के लिए पिस्तौल के इस्तेमाल का फैसला किया था। वेलेंतीन को खूब भूख लगी थी और उसने डटकर भोजन किया। चूंकि उसे लम्बी यात्रा करनी थी, इसलिए वेलेंतीन ने और दिन से कुछ ज़्यादा ही खाया था। उसने भोजन के दौरान न्यूमैन को एक प्रकार की मछली की विशेष चटनी के बारे में कुछ सुझाव भी दिया था। उसका ख्याल था कि चटनी को किस ढंग से बनाया जाए, यह बात बावर्ची को बता देनी चाहिए। लेकिन न्यूमैन का ध्यान मछली की चटनी पर नहीं था; वह बड़ा चिन्तित था। न्यूमैन वहां बैठा हुआ अपने मधुरभाषी और चतुर दोस्त को देख रहा था, जो खाने में लगा था। वेलेंतीन को खाने-पीने की चीज़ों में यह रुचि अपने पूर्वजों से संस्कार के रूप में मिली थी। इतना आकर्षक और प्रिय मित्र मो० स्टानी-

स्लास और मदामाजेल नोएमी के लिए अपने जीवन को खतरे में डालने इतनी दूर यात्रा करके जा रहा है, इस बात को सोच-सोचकर न्यूमैन मन ही मन बड़ा परेशान था और कभी-कभी उसे अपनी बेचैनी असह्य लगने लगती थी। न्यूमैन वेलेंतीन से प्रेम करने लगा था और उसे अब यह महसूस हो रहा था कि वह वेलेंतीन से कितना अधिक स्नेह करता है, लेकिन न्यूमैन अपने-आपको बिलकुल ही असहाय अनुभव कर रहा था और असहाय होने की इस भावना से और भी अधिक क्रोध आ रहा था।

"हो सकता है कि द्वंद्व युद्ध करना बिलकुल ठीक हो," अन्त में उसने चिल्लाकर कहा, "लेकिन मुझे इसकी कोई उपयोगिता समझ में नहीं आती। मैं शायद आपको रोक नही सकता हूं, लेकिन मैं विरोध जरूर कर सकता हूं और मैं इसका विरोध करता हूं, पूरे ज़ोरों के साथ विरोध करता हूं।"

"मेरे प्यारे भाई, अब झगड़ा मत करो," वेलेंतीन ने कहा, "ऐसे मौकों पर झगड़ा करना बुरी बात समझी जाती है।"

"आपका यह द्वद्व युद्ध क्या है, यह भी तो झगड़ा ही है," न्यूमैन ने कहा, "यह क्या सड़ियल नाटक है। ऐसा क्यों नही करते कि अपने साथ सगीत के लिए एक बैंड भी ले जाइए ? यह बड़ा ही बर्बरतापूर्ण और खराब ढग है।"

"मैं इस समय तो द्वंद्व युद्ध के सिद्धान्त के औचित्य को सिद्ध करने के लिए व्याख्यान देना शुरू नहीं कर सकता," वेलेंतीन ने कहा। "यह हमारी परम्परा है और मैं समझता हूं कि बिलकुल ठीक है। जिस बात के लिए द्वंद्व युद्ध किया जाता है, उसको छोड़ दिया जाए, तो भी द्वद्व युद्ध में अपना एक अनोखा आकर्षण होता है, जो इस नीरस युग में मैं बनाए रखने के पक्ष में हूं। यह हमारे वीरता के युग की यादगार है और इसे बनाए ही रखना चाहिए। द्वंद्व युद्ध कभी भी अनुचित नहीं होता।"

"मैं नहीं जानता कि वीरता के युग से आपका क्या आशय है," न्यूमैन ने कहा। "क्योंकि आपके बड़दादा गधे थे, इसलिए क्या यह जरूरी है कि आप भी गधापन करें ? जहा तक मेरा सम्बन्ध है, हमें वीरता के पीछे इस तरह लट्ठ लेकर नहीं पड़ जाना चाहिए। वीरता अपनी फिक्र आप कर लेगी। मुझे दब जाने में कोई डर नहीं लगता है। अगर आपके बड़दादा मुझसे कोई अप्रिय बात करते, तो मेरा ख्याल है कि मैं परिस्थिति को अपने अनुकूल ढंग से संभाल लेता।"

"मेरे प्यारे दोस्त," वेलेंतीन ने मुस्कराते हुए कहा, "आप ऐसी किसी भी चीज़ का आविष्कार नहीं कर सकते, जिससे अपमान होने पर आप चुप होकर बैठ जाएं और सन्तोष का अनुभव कर सकें। अपमान का बदला लेने के लिए द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारना और उसकी चुनौती स्वीकार करना, ये दोनों ही बातें बहुत अच्छी हैं।"

"क्या आप इस तरह के युद्ध को सन्तोषजनक बताते है ?" न्यूमैन ने पूछा, "क्या आपको उस स्थूलकाय युवक की लाश उपहार में पाकर सन्तोष होगा ? क्या आपको अपनी लाश उसे उपहार में देकर बड़ी प्रसन्नता होगी ? अगर कोई आदमी आपको मारता है, तो आप भी उसे मारिए; लेकिन अगर कोई आपका कुछ कहकर अपमान करता है, तो आप उसे अदालत में ले जाइए, मुकदमा चलाइए।"

"मुकदमा चलाइए, अदालत में जाइए ? यह तो बड़ी निर्लज्जतापूर्ण बात है !" वेलेंतीन ने कहा।

"यह उस आदमी की निर्लज्जता है—आपकी नहीं। और अगर देखा जाए, तो आप जो कुछ कर रहे है, वह भी कोई खास अच्छी बात नहीं है। आप इस तरह के द्वंद्व युद्धों के लिए नहीं बनाए गए हैं। मैं यह नही कहता कि आप संसार के लिए सबसे ज़्यादा उपयोगी व्यक्ति हैं या संसार के सबसे चतुर व्यक्ति है या सबसे अधिक मिलनसार व्यक्ति हैं, लेकिन इतना जरूर कह सकता हूं कि आप इसलिए नहीं पैदा हुए हैं कि एक वेश्या के लिए जाकर अपना गला कटा दें।"

वेलेंतीन का चेहरा कुछ सुर्ख हो गया, लेकिन वह हंसता रहा। "अगर मेरा बस चलेगा, तो मैं अपना गला नही कटने दूंगा। और दूसरी बात यह हैं कि आत्मसम्मान की बाबत दो मानदण्ड नहीं हो सकते। अगर किसीके सम्मान को धक्का लगता है, तो वह यह नहीं पूछता है कि कब, कहां और कैसे अपमान हुआ।"

"यह और भी बड़ी बेवकूफी है !" न्यूमैन ने कहा।

वेलेंतीन का हंसना बन्द हो गया था। वह गम्भीर दिखलाई पड़ रहा था। "मेरी आपसे विनय है कि अब आप और कुछ न कहें," उसने कहा, "अगर आपने और कुछ कहा तो मैं समझूंगा कि आप इस बारे में मेरी भावनाओं की कोई परवाह नहीं करते हैं कि—कि—" और वह रुक गया।

"कि—कि, क्या ?"

"यही कि—आत्मसम्मान क्या होता है।"

"आप जो चाहें सोचिए," न्यूमैन ने कहा, "आप जब वहां लड़ें, तो यह ध्यान रखिएगा कि मुझे आपसे स्नेह है—हालांकि आप इस काबिल नहीं हैं। लेकिन बिना अपने को कोई नुकसान पहुचाए जल्दी वापस लौटिएगा," न्यूमैन ने एक क्षण बाद ही कहा, "और मैं आपको लौटने पर क्षमा कर दूगा।" और फिर वेलेंतीन के जाते-जाते न्यूमैन कह रहा था, "लौटते ही मैं आपको तुरन्त जहाज़ में सवार कराके अमरीका रवाना कर दूगा।"

"ठीक है," वेलेंतीन ने उत्तर दिया, "अगर मेरे जीवन का एक नया अध्याय शुरू होना है, तो यह द्वन्द्व युद्ध पुराने जीवन की समाप्ति का प्रतीक होगा।" और इसके बाद उसने एक दूसरा सिगार जलाया और चल दिया।

"भाड़ में जाए यह लड़की !" न्यूमैन ने वेलेंतीन के जाने के बाद दरवाज़ा बन्द करते हुए कहा।

अठारह

दूसरे दिन सवेरे न्यूमैन मदाम द सान्त्रे से मिलने गया। वह जब पहुंचा तब दोपहर का भोजन किया जा चुका था। कोठी के अहाते में, पोर्टिको के सामने, मदाम द बेलगार्द की पुरानी बक्सनुमा गाड़ी खड़ी हुई थी। जिस नौकर ने दरवाज़ा खोला, उसने न्यूमैन के प्रश्न का कुछ अटपटे ढंग से झिझकते हुए कुनमुनाकर उत्तर दिया और तभी पीछे मिसेज ब्रैंड आती हुई दिखलाई पड़ीं। वे बड़ा काला बोनेट लगाए थी और शाल ओढ़े थीं।

"क्या मामला है ?" न्यूमैन ने पूछा, "क्या मदाम ला काउंतेस घर पर नहीं हैं ?"

मिसेज ब्रैंड आगे बढ़ आईं। वे न्यूमैन को एकटक देख रही थीं। न्यूमैन ने देखा कि उनके हाथ में एक सीलबन्द मोहर-पत्र है। "काउंतेस ने आपके लिए यह पत्र लिखा है। वे इसे दे गई हैं," मिसेज़ ब्रैंड ने लिफाफे को उनकी ओर

बढ़ाते हुए कहा, जिसे न्यूमैन ने ले लिया।

"यह पत्र दे गई है ? क्या वे कहीं बाहर गई हैं ? क्या वे चली गई हैं ?"

"वे जा रही है, वे शहर से बाहर जा रही है," मिसेज ब्रैंड ने कहा।

"शहर से बाहर जा रही है !" न्यूमैन ने जोर से कहा। "क्या हुआ ?"

"यह तो मैं नही बता सकती," मिसेज़ ब्रैंड ने जमीन की ओर देखते हुए कहा। "लेकिन मेरा ख्याल था कि कुछ बात होगी।"

"कृपा कर बताइए कि क्या बात होगी ?" न्यूमैन ने पूछा। उसने लिफाफे की सील तोड़ डाली थी, लेकिन प्रश्न किए जा रहा था। "क्या वे घर में हैं ? क्या वे मिल सकती हैं ?"

"मेरा ख्याल है कि आज सुबह उन्हें आपके आने की आशा नहीं थी," वृद्धा नौकरानी ने उत्तर दिया, "वे तुरन्त शहर छोड़कर जा रही है।"

"कहां जा रही है ?"

"फ्लूरीयर्स।

"फ्लूरीयर्स ? लेकिन मै उनसे मिल तो ज़रूर सकता हूं ?"

मिसेज़ ब्रैंड एक क्षण के लिए झिझकीं और फिर उन्होंने अपने दोनों हाथ बांध लिए। "मैं आपको ले चलूंगी !" उन्होंने कहा। और इसके बाद वे न्यूमैन को ऊपर ले चली। सीढ़ियों के ऊपर पहुचकर वे कुछ देर के लिए ठहरीं और उन्होंने अपनी शुष्क लेकिन दु:खभरी दृष्टि न्यूमैन पर डाली। "आप उनके साथ कोई कठोर व्यवहार न कीजिएगा," मिसेज़ ब्रैंड ने कहा, "मदाम द सान्त्रे बहुत ही दु.खी हैं !" और इसके बाद वे न्यूमैन को मदाम द सान्त्रे के कमरे की ओर ले चलीं। न्यूमैन बड़ी उलझन में पड़ गया था और बहुत ही घबरा गया था। वह तेजी से पीछे-पीछे चला जा रहा था। मिसेज़ ब्रैंड ने कमरे का दरवाजा खोल दिया, और न्यूमैन ने सामने पड़े परदे को हटा दिया। कमरे के बीचोबीच मदाम द सान्त्रे खड़ी हुई थीं, उनका चेहरा पीला पड़ा हुआ था और वे यात्रा के लिए तैयार थीं। उनके पीछे आतिशदान के सामने अरबेन द बेलगार्द खड़े थे और वे अपनी उंगलियों के नाखून देख रहे थे। उन्हीके पास उनकी मां एक कुर्सी पर निढाल पड़ी थीं। न्यूमैन के सामने आते ही वृद्धा ने उसको एकटक देखना शुरू कर दिया। कमरे में घुसते ही न्यूमैन को लगा कि कोई

बहुत ही अशुभ घटना हो गई है। वह चौंक गया था और अशुभ घटना की कल्पना-मात्र से उसे अत्यन्त मानसिक पीड़ा हो रही थी। ठीक उसी तरह की जैसी रात के अंधेरे में किसीके रोने की आवाज सुनकर होती है। वह सीधा मदाम द सान्त्रे के पास गया और उसने उनका हाथ पकड़ लिया।

"मामला क्या है ?" उसने अधिकारपूर्वक पूछा, "यह क्या हो रहा है ?"

"अरबेन द बेलगार्द एकटक देख रहे थे। वे अब अपनी जगह छोड़कर आगे आ गए और अपनी मां की कुर्सी पर पीछे की तरफ जाकर सामने को झुक गए। न्यूमैन के अकस्मात् आ जाने से मां और पुत्र दोनों ही उलझन में पड़ गए थे। मदाम द सान्त्रे चुपचाप खड़ी थी और उन्होंने अपनी आंखें न्यूमैन पर गड़ा रखी थीं। मदाम द सान्त्रे ने अकसर बड़ी गहराई से न्यूमैन को देखा था, लेकिन उनकी इस दृष्टि की गहराई अथाह मालूम पड़ती थी। वे अत्यन्त विचलित थी। न्यूमैन को यह दृश्य देखकर ज़बर्दस्त आघात लगा। ऐसी घटना उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसका कलेजा मुह को आने लगा। और वह अरबेन द बेलगार्द और वृद्धा की तरफ मुड़कर उन्हें जोर से डांटने ही वाला था कि मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन के उस हाथ को दबाया, जिससे वह मदाम द सान्त्रे को पकड़े था।

"बहुत ही गम्भीर घटना हो गई है," मदाम ने कहा। "मैं आपसे विवाह नहीं कर सकती।"

न्यूमैन ने मदाम द सान्त्रे का हाथ छोड़ दिया और पहले उनको और फिर बाद में अन्य लोगों को देखने लगा। "क्यों नहीं ?" उसने पूछा। यह प्रश्न पूछते समय वह अपना स्वर जितना संयत रख सकता था, उतना रखे था।

मदाम द सान्त्रे करीब-करीब मुस्करा दीं, लेकिन उनका यह प्रयत्न अजीब-सा लगा। "यह बात आप मेरी मां से पूछिए, मेरे भाई से पूछिए।"

"ये मुझसे शादी क्यों नहीं कर सकतीं ?" न्यूमैन ने उन लोगो की तरफ देखते हुए कहा।

मदाम द बेलगार्द अपने स्थान से ज़रा भी नही हिली, लेकिन उनका चेहरा भी पुत्री की तरह ही पीला पड़ा हुआ था। मारक्विस ने अपनी मां की ओर देखा। कुछ क्षण तक वृद्धा कुछ न बोलीं, लेकिन वे साहसपूर्वक निरन्तर न्यूमैन को देखती रहीं। मारक्विस ने अन्त में छत की ओर देखते हुए धीरे से कहा, "यह

विवाह असम्भव है !"

"यह विवाह करना अनुचित होगा," वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने कहा।

न्यूमैन हंसने लगा। "ओह, आप लोग मुझे बेवकूफ बना रहे हैं !" उसने ज़ोर से कहा।

"बहन, तुम्हारे पास वक्त बिलकुल नहीं है ; तुम्हारी ट्रेन छूट जाएगी।" मारक्विस ने कहा।

"मुझे बताओ, क्या ये पागल हो गए हैं ?" न्यूमैन ने पूछा।

"नहीं ; मेरा ख्याल है, पागल नहीं हैं," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "लेकिन मैं जा रही हूं।"

"आप कहां जा रही हैं ?"

"गांव जा रही हू, फ्लूरीयर्स जा रही हूं ; जिससे वहां एकान्त में रह सकूं।"

"मुझे छोड़कर ?" न्यूमैन ने धीरे से कहा।

"मैं अब आपसे नहीं मिल सकती," मदाम द सान्त्रे ने कहा।

"अब—क्यों नहीं ?"

"मैं लज्जित हूं," मदाम द सान्त्रे ने सीधे-सादे ढंग से कह दिया।

न्यूमैन अब मारक्विस की ओर मुड़ा। "आपने क्या कहा है—क्या किया है—इस सबका क्या मतलब है ?" न्यूमैन ने संयत रहने का प्रयत्न करते हुए ये प्रश्न किए। न्यूमैन ने हर परिस्थिति में अपना स्वभाव शान्त रखने का जो अभ्यास किया था, संयत स्वर उसीका परिणाम था। वह बहुत उत्तेजित था, लेकिन यह उत्तेजना गम्भीर प्रयत्न द्वारा ही प्रकट हो सकती थी। ऐसा लग रहा था, जैसे कोई तैरने की तैयारी में कपड़े उतारकर खड़ा हो।

"इसका मतलब यह है कि मैंने आपसे विवाह करने का इरादा छोड़ दिया," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "इसका यही मतलब है।"

मदाम द सान्त्रे के चेहरे से दुःख का भाव इतना ज़्यादा प्रकट हो रहा था कि वह इन शब्दों की गम्भीरता से मेल नहीं खाता था। न्यूमैन को गहरा आघात लगा था, लेकिन फिर भी मदाम के प्रति उसके हृदय में किसी प्रकार का रोष उत्पन्न नहीं हुआ। वह आश्चर्यचकित था, स्तब्ध था और वहां वृद्धा तथा उसके पुत्र की उपस्थिति उसकी आंखों में ठीक उसी तरह खटक रही थी, जिस तरह रात के अंधेरे में चौकीदार की लालटेन की तेज़ रोशनी। "क्या मैं आपसे अकेले में दो बातें नहीं

कर सकता ?" उसने पूछा।

"क्या फायदा, वह और भी दुखदायी होगा। मैं आशा कर रही थी कि अब आपसे मुलाकात नहीं होगी—मैं आपके सामने पड़ने से बच निकलूंगी। मैंने आपको पत्र लिख दिया था। गुड-बाई।" और उसने हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

न्यूमैन ने अपने दोनों हाथ जेब में डाल लिए। "मै आपके साथ चलूंगा," उसने कहा।

मदाम द सान्त्रे ने अपने दोनों हाथ न्यूमैन की बांह पर रख दिए। "क्या आप मेरा अन्तिम अनुरोध स्वीकार करेंगे ?" और यह कहते हुए जब मदाम द सान्त्रे न्यूमैन की तरफ देख रही थीं, तो उनकी आंखें भर आईं। "मुझे अकेला ही चला जाने दीजिए—मुझे शान्ति से जाने दीजिए। मैं इसे शान्ति तो नहीं कह सकती—यह मृत्यु है। लेकिन मुझे अपने-आपको जीवित ही दफन हो जाने दीजिए। अच्छा—अलविदा।"

न्यूमैन अपना हाथ अपने बालों पर फेरने लगा और वहां खड़ा धीरे-धीरे सिर मलने लगा। उसकी आंखें कुछ मुंद-सी गई थीं और वह अपने सामने खड़े तीनों व्यक्तियों को एक-एक करके देख रहा था। उसने अपने होंठ जोरों से दबा लिए थे, उसके मुह पर होंठों की दोनों तरफ जो दो रेखाएं बन गई थीं, उनको देखकर पहली बार नज़र डालने पर ऐसा लगता था कि वह मुस्करा रहा है। मैं कह चुका हूं कि उत्तेजना प्रकट करने के लिए न्यूमैन को विशेष प्रयत्न करना पड़ता था, और अब वह बहुत ही कठोर दिखलाई पड़ रहा था। "मुझे ऐसा लगता है, मार-क्विस, कि आपने बहुत ज़्यादा हस्तक्षेप किया है," न्यूमैन ने धीरे-धीरे कहा। "मेरा ख्याल था कि आपने मुझसे वादा किया था कि आप इस मामले में दखल नहीं देंगे। मै जानता हूं कि आप मुझे पसन्द नहीं करते ; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरा विचार था कि आप वादा कर चुके है कि आप इस मामले में बिलकुल बाधा नहीं डालेंगे। मेरा यह भी ख्याल था कि यह वादा आपने अपने सम्मान की शपथ लेकर किया था। यह सब आपको याद नहीं है क्या ?"

मारक्विस ने अपनी भौहें चढ़ा लीं ; लेकिन ऐसा लगा कि उन्होंने पहले से ही और भी अधिक सुसभ्यता से उत्तर देने का दृढ़ निश्चय कर रखा था। उन्होंने अपने दोनों हाथ अपनी मां की कुर्सी के पीले वाले हिस्से पर रख लिए और आगे झुक

गए, ठीक उसी तरह, जिस तरह कोई पादरी या व्याख्याता अपने सामने रखी ऊंची मेज़ पर बोलने के पहले झुककर कुछ आगे आ जाता है। वे मुस्कराए नहीं, लेकिन देखने में उनके चेहरे से कोमलतायुक्त गम्भीरता प्रकट हो रही थी। "मुझे क्षमा कीजिएगा श्रीमन्," उन्होंने कहा, "मैंने आपको आश्वासन दिया था कि मैं अपनी बहन के फैसले को किसी भी तरह प्रभावित करने का यत्न नहीं करूंगा। जो वादा मैंने किया, उसका मैंने अक्षरशः पालन किया है। क्यों बहन, क्या मैंने ऐसा नहीं किया ?"

"बेटे, तुम्हें किसीकी गवाही दिलाने की ज़रूरत नहीं है," वृद्धा ने कहा, "तुम्हारा कहना ही काफी है।"

"जी हां—उन्होंने मुझे विवाह करने का वचन दे दिया," न्यूमैन ने कहा, "यह बिलकुल ठीक है ; इससे मैं इन्कार नहीं कर सकता।" इसके बाद अपना स्वर बदलते हुए मदाम द सान्त्रे की तरफ मुड़कर न्यूमैन ने पूछा, "कम से कम आपने मुझे विवाह के लिए तो स्वीकार कर ही लिया था न ?"

न्यूमैन के स्वर मे कुछ ऐसा भाव था, जिसने मदाम द सान्त्रे के मर्म को बेध दिया। वे एकदम मुड़ गईं और उन्होंने दोनों हाथों में अपना मुह छिपा लिया।

"लेकिन अब आपने हस्तक्षेप किया, किया है न ?" न्यूमैन ने मारक्विस से पूछा।

"न तब किया था और न अब मैंने अपनी बहन के निर्णय को बदलवाने के लिए अपनी तरफ से कोई प्रयत्न किया है। उस समय भी मैंने किसी प्रकार का आग्रह या अनुरोध नहीं किया था और आज भी मैंने ऐसी कोई बात नहीं की है।"

"तो फिर आपने क्या किया है ?"

"हमने अपने अधिकार का उपयोग किया है," मदाम द बेलगार्द ने एक बड़े घण्टे की तरह गुरुघोष करते हुए कहा।

"आह, आपने अपने अधिकार का उपयोग किया है !" न्यूमैन ने चीखकर कहा। "इन लोगों ने अपने अधिकार का उपयोग किया है," यह कहते हुए न्यूमैन मदाम द सान्त्रे की तरफ मुड़ गया, "वह अधिकार क्या है ? उस अधिकार का उपयोग किस तरह किया गया है ?"

"मेरी मां ने मुझे आज्ञा दी है," मदाम द सान्त्रे ने कहा।

"आज्ञा दी है कि आप मुझे छोड़ दें, त्याग दें —अब मैं समझा। और आप उसका पालन कर रही हैं—मैं समझा। लेकिन आप आज्ञा का पालन क्यों कर रही हैं ?"

मदाम द सान्त्रे ने अपनी वृद्धा मां की ओर देखा ; उसने अपनी आंखों ही आंखो से उन्हे सिर से लेकर पैर तक धीरे-धीरे माप डाला। "मैं अपनी मां से डरती हूं," उन्होंने कहा।

मदाम द बेलगार्द अकस्मात् जल्दी से उठ खड़ी हुई और चिल्लाकर कहने लगी, "यह बहुत ही भद्दी बात है !"

"मै इस बात को बढ़ाना नहीं चाहती हूं," मदाम द सांत्रे ने कहा और दरवाजे की ओर मुड़ते हुए उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। "अगर आप मुझपर ज़रा भी तरस खाते हो, तो मुझे अकेला चला जाने दीजिए।"

न्यूमैन ने बड़े शान्त भाव से, लेकिन दृढ़ता के साथ हाथ मिलाया। उसने कहा, "मैं वहां आऊंगा।" मदाम द सान्त्रे आगे बढ़ गई और उनके पीछे परदा गिर गया। न्यूमैन एक गहरी सास छोड़कर सबसे पास वाली कुरसी पर गिर पड़ा। वह बिलकुल अन्दर की तरफ खिसक गया था और उसने अपने दोनों हाथ कुर्सी के हत्थों पर रख लिए थे। वह मदाम द बेलगार्द और अरबेन को देख रहा था। काफी देर तक सब लोग एकदम चुप रहे। वे मां-बेटे एक-दूसरे के पास खड़े थे, उनके सिर ऊंचे थे और भौहो मे बल पड़े हुए थे।

आखिर न्यूमैन ने कहा, "तो आप लोग भेद करते हैं। आप आग्रह, अनुरोध और आज्ञा देने में अन्तर मानते है। यह बहुत स्पष्ट है, लेकिन आपका जोर आज्ञा देने पर है, इससे सारी बात बिगड़ जाती है।"

"हमें अपनी स्थिति स्पष्ट करने मे कोई आपत्ति नहीं है," मो० द बेलगार्द ने कहा, "हम यह समझ सकते हैं कि आरम्भ में आपको सारी बात साफ तौर पर समझ में नहीं आएगी और सच तो यह है कि हमारा ख्याल है कि आप हमारे साथ न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करेंगे।"

"ओह, मैं आपके साथ अवश्य ही न्यायपूर्ण व्यवहार करूंगा," न्यूमैन ने कहा, "आप डरिए मत। अपनी बात कहिए।"

वृद्धा ने अपने पुत्र की बाह पर अपना हाथ रखा, जैसे वे स्थिति स्पष्ट करने के प्रयत्न के विरुद्ध हों। "हम लोग, चाहे कितना भी प्रयत्न करते," वृद्धा

ने कहा, "ऐसी व्यवस्था करने में असमर्थ थे, जो आपको प्रिय होती । हमारा फैसला आपको कभी भी पसन्द न आता । यह आपके लिए निराशा है और निराशाए हमेशा कटु होती है । मैने सारे मामले पर बहुत सावधानी से विचार किया और यह कोशिश की कि मै कुछ और अच्छी व्यवस्था कर सकू, लेकिन इससे मेरे सिर में दर्द हो गया और मुझसे मेरी नीद उड़ गई । हम जो चाहें कहे, आप यही सोचेंगे कि आपके साथ दुर्व्यवहार किया गया है और आप अपने मित्रों में हमारी बदनामी करेंगे । लेकिन हमे इसका कोई भय नही है । इसके अलावा जो आपके मित्र है, वे हमारे मित्र नहीं है, इसलिए आप उनसे कुछ भी क्यों न कहें, हमें इसकी परवाह नहीं है । आप जो मर्जी आए, हमारे बारे में सोच सकते है। मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि क्रोध का प्रदर्शन न करें । मैने अपने जीवन में कभी भी ऐसी बात नहीं देखी है और इस उम्र में मुझसे इस तरह की आशा भी नहीं की जानी चाहिए कि मैं लोगों के क्रोध-प्रदर्शन को देख सकूगी ।"

"बस, आपको इतना ही कहना है ?" न्यूमैन ने अपनी कुर्सी से धीरे-धीरे उठते हुए पूछा । "आप जैसी चतुर महिला के लिए यह कहना कमज़ोरी की निशानी है । बताइए, फिर कोशिश करिए ।"

"मेरी मा ने, हमेशा की तरह, बड़ी ईमानदारी और निर्भीकता से सारी बात स्पष्ट रूप से कह दी है," मो० द बेलगार्द ने अपनी घड़ी के ढकने से खेलते हुए कहा । "लेकिन शायद कुछ और बता देना भी अच्छा ही होगा । हम आपके इस आरोप का खण्डन करते है कि हमने आपको दिया हुआ वचन तोड़ा है। हमने आपको अपनी बहन से मिलने का पूरा अवसर दिया, हमने आपको इस बात की छूट भी दी कि हमारी बहन आपका विवाह का प्रस्ताव सुन ले । जब उसने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, तब भी हमने कुछ नहीं किया । इसलिए हमने अपने वचन का लगभग पूरी तरह पालन किया । लेकिन बाद में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई, जिसका कारण बिलकुल भिन्न था कि हमें बोलना पड़ा । सम्भवतः यह अधिक अच्छा होता कि हम पहले ही इस विषय में अपनी राय दे देते, लेकिन वास्तविकता यह है कि, जैसाकि आप भी समझते हैं, अभी तक कुछ बिगड़ा नही था ।"

"अभी तक कुछ बिगड़ा नही था ?" न्यूमैन ने शब्दों को दोहराया । इसमें क्या विनोद निहित था ? यह न्यूमैन को पता नहीं लगा । सच तो यह है कि

यूमैन को इस बात का ही होश नहीं था कि मारक्विस क्या कह रहे हैं। मो० : बेलगार्द अकड़कर जो बातें कह रहे थे, न्यूमैन के कानों में उनकी कोरी भनक के सिवा और कुछ नहीं जा रहा था। उसकी समझ में केवल इतना ही आया के जो कुछ अभी हुआ है, वह मज़ाक नही था। और जो लोग उसके सामने खड़े बातें कर रहे है, वे बहुत गम्भीरता से अपना मत प्रकट कर रहे है। न्यूमैन को गहरी चोट लगी थी और वह बहुत ही क्षुब्ध था। "आपका क्या ख्याल है के मैं इस बात को मान लूंगा ?" उसने पूछा, "क्या आप समझते है कि आप जो कुछ कह रहे है, उसको मैं तनिक भी महत्त्व दूंगा ? क्या आप समझते हैं के मै आपकी बात गम्भीरता से सुन सकता हूं ? आप बिलकुल पागल हैं।"

मदाम द वेलगार्द ने अपने पंखे से अपने हाथ की हथेली पर चोट की। "अगर आप नहीं सुनना चाहते, तो मत सुनिए; आप क्या करेंगे, इसका हमारी निगाह मे कोई महत्त्व नहीं है। मेरी पुत्री ने आपको त्याग दिया।"

"नही, उनका यह मतलब नही है," एक क्षण बाद न्यूमैन ने कहा।

"मेरा ख्याल है कि मै आपको बता सकता हूं कि बात ऐसी ही है," मारक्विस ने कहा।

"बेचारी स्त्री, आपने उसके साथ पता नहीं क्या हरकत की है !" न्यूमैन ने चीखकर कहा।

"धीरे-धीरे !" मो० द बेलगार्द ने बुदबुदाकर कहा।

"उसने आपसे कह दिया है," वृद्धा ने कहा, "कि मैने आज्ञा दी थी।"

न्यूमैन ने अपना सिर हिला दिया। "इस तरह की बात नही हो सकती, आप जानती है," न्यूमैन ने कहा, "किसी भी व्यक्ति पर इस तरह से अधिकार का प्रयोग नही किया जा सकता। आपको ऐसा करने का कोई हक नही है ; आपको कोई अधिकार नहीं है।"

"मेरा अधिकार," मदाम द वेलगार्द ने कहा, "मेरे बच्चों द्वारा मेरी आज्ञा के पालन में है।"

"नहीं, वह आपसे डरते है। आपकी लड़की ने यह बात कह दी है, यह बड़ी विचित्र बात है। आपकी पुत्री को आपसे क्यों डरना चाहिए ?" न्यूमैन ने एक क्षण वृद्धा की ओर देखते हुए कहा, "अवश्य ही कोई कपट-जाल रचा गया है।"

"मेरे प्यारे दोस्त," वेलेंतीन ने मुस्कराते हुए कहा, "आप ऐसी किसी भी चीज़ का आविष्कार नहीं कर सकते, जिससे अपमान होने पर आप चुप होकर बैठ जाएं और सन्तोष का अनुभव कर सकें। अपमान का बदला लेने के लिए द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारना और उसकी चुनौती स्वीकार करना, ये दोनों ही बातें बहुत अच्छी हैं।"

"क्या आप इस तरह के युद्ध को सन्तोषजनक बताते है ?" न्यूमैन ने पूछा, "क्या आपको उस स्थूलकाय युवक की लाश उपहार में पाकर सन्तोष होगा ? क्या आपको अपनी लाश उसे उपहार में देकर बड़ी प्रसन्नता होगी ? अगर कोई आदमी आपको मारता है, तो आप भी उसे मारिए; लेकिन अगर कोई आपका कुछ कहकर अपमान करता है, तो आप उसे अदालत मे ले जाइए, मुकदमा चलाइए।"

"मुकदमा चलाइए, अदालत मे जाइए ? यह तो बड़ी निर्लज्जतापूर्ण बात है !" वेलेंतीन ने कहा।

"यह उस आदमी की निर्लज्जता है—आपकी नहीं। और अगर देखा जाए, तो आप जो कुछ कर रहे है, वह भी कोई खास अच्छी बात नहीं है। आप इस तरह के द्वंद्व युद्धों के लिए नहीं बनाए गए है। मैं यह नहीं कहता कि आप ससार के लिए सबसे ज़्यादा उपयोगी व्यक्ति हैं या संसार के सबसे चतुर व्यक्ति हैं या सबसे अधिक मिलनसार व्यक्ति हैं, लेकिन इतना जरूर कह सकता हूं कि आप इसलिए नहीं पैदा हुए हैं कि एक वेश्या के लिए जाकर अपना गला कटा दें।"

वेलेंतीन का चेहरा कुछ सुर्ख हो गया, लेकिन वह हंसता रहा। "अगर मेरा बस चलेगा, तो मैं अपना गला नहीं कटने दूगा। और दूसरी बात यह हैं कि आत्मसम्मान की बाबत दो मानदण्ड नही हो सकते। अगर किसीके सम्मान को धक्का लगता है, तो वह यह नहीं पूछता है कि कब, कहां और कैसे अपमान हुआ।"

"यह और भी बड़ी बेवकूफी है !" न्यूमैन ने कहा।

वेलेंतीन का हंसना बन्द हो गया था। वह गम्भीर दिखलाई पड़ रहा था। "मेरी आपसे विनय है कि अब आप और कुछ न कहें," उसने कहा, "अगर आपने और कुछ कहा तो मैं समझूंगा कि आप इस बारे में मेरी भावनाओं की कोई परवाह नहीं करते है कि—कि—" और वह रुक गया।

"कि—कि, क्या ?"

"यही कि—आत्मसम्मान क्या होता है।"

"आप जो चाहें सोचिए," न्यूमैन ने कहा, "आप जब वहां लड़ें, तो यह ध्यान रखिएगा कि मुझे आपसे स्नेह है—हालांकि आप इस काबिल नहीं हैं। लेकिन बिना अपने को कोई नुकसान पहुंचाए जल्दी वापस लौटिएगा," न्यूमैन ने एक क्षण बाद ही कहा, "और मैं आपको लौटने पर क्षमा कर दूंगा।" और फिर वेलेंतीन के जाते-जाते न्यूमैन कह रहा था, "लौटते ही मैं आपको तुरन्त जहाज़ में सवार कराके अमरीका रवाना कर दूंगा।"

"ठीक है," वेलेंतीन ने उत्तर दिया, "अगर मेरे जीवन का एक नया अध्याय शुरू होना है, तो यह द्वंद्व युद्ध पुराने जीवन की समाप्ति का प्रतीक होगा।" और इसके बाद उसने एक दूसरा सिगार जलाया और चल दिया।

"भाड़ में जाए यह लड़की !" न्यूमैन ने वेलेंतीन के जाने के बाद दरवाज़ा बन्द करते हुए कहा।

अठारह

दूसरे दिन सवेरे न्यूमैन मदाम द सान्त्रे से मिलने गया। वह जब पहुंचा तब दोपहर का भोजन किया जा चुका था। कोठी के अहाते में, पोर्टिको के सामने, मदाम द बेलगार्द की पुरानी बक्सनुमा गाड़ी खड़ी हुई थी। जिस नौकर ने दरवाज़ा खोला, उसने न्यूमैन के प्रश्न का कुछ अटपटे ढंग से झिझकते हुए कुनमुनाकर उत्तर दिया और तभी पीछे मिसेज ब्रैंड आती हुई दिखलाई पड़ीं। वे बडा काला बोनेट लगाए थीं और शाल ओढे थीं।

"क्या मामला है ?" न्यूमैन ने पूछा, "क्या मदाम ला काउंतेस घर पर नहीं हैं ?"

मिसेज़ ब्रैंड आगे बढ़ आई। वे न्यूमैन को एकटक देख रही थीं। न्यूमैन ने देखा कि उनके हाथ में एक सीलबन्द मोहर-पत्र है। "काउंतेस ने आपके लिए यह पत्र लिखा है। वे इसे दे गई हैं," मिसेज़ ब्रैंड ने लिफाफे को उनकी ओर

बढ़ाते हुए कहा, जिसे न्यूमैन ने ले लिया।

"यह पत्र दे गई है? क्या वे कहीं बाहर गई हैं? क्या वे चली गई हैं?"

"वे जा रही है, वे शहर से बाहर जा रही हैं," मिसेज़ ब्रैड ने कहा।

"शहर से बाहर जा रही हैं!" न्यूमैन ने जोर से कहा। "क्या हुआ?"

"यह तो मैं नहीं बता सकती," मिसेज़ ब्रैड ने ज़मीन की ओर देखते हुए कहा। "लेकिन मेरा ख्याल था कि कुछ बात होगी।"

"कृपा कर बताइए कि क्या बात होगी?" न्यूमैन ने पूछा। उसने लिफाफे की सील तोड़ डाली थी, लेकिन प्रश्न किए जा रहा था। "क्या वे घर में है? क्या वे मिल सकती हैं?"

"मेरा ख्याल है कि आज सुबह उन्हें आपके आने की आशा नहीं थी," वृद्धा नौकरानी ने उत्तर दिया, "वे तुरन्त शहर छोड़कर जा रही है।"

"कहां जा रही हैं?"

"फ्लूरीयर्स।

"फ्लूरीयर्स? लेकिन मै उनसे मिल तो ज़रूर सकता हूं?"

मिसेज़ ब्रैड एक क्षण के लिए झिझकीं और फिर उन्होंने अपने दोनों हाथ बांध लिए। "मै आपको ले चलूगी!" उन्होंने कहा। और इसके बाद वे न्यूमैन को ऊपर ले चली। सीढ़ियों के ऊपर पहुंचकर वे कुछ देर के लिए ठहरीं और उन्होंने अपनी शुष्क लेकिन दुःखभरी दृष्टि न्यूमैन पर डाली। "आप उनके साथ कोई कठोर व्यवहार न कीजिएगा," मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "मदाम द सान्त्रे बहुत ही दुःखी हैं!" और इसके बाद वे न्यूमैन को मदाम द सान्त्रे के कमरे की ओर ले चलीं। न्यूमैन बड़ी उलझन में पड़ गया था और बहुत ही घबरा गया था। वह तेजी से पीछे-पीछे चला जा रहा था। मिसेज ब्रैड ने कमरे का दरवाज़ा खोल दिया, और न्यूमैन ने सामने पड़े परदे को हटा दिया। कमरे के बीचोबीच मदाम द सान्त्रे खड़ी हुई थीं, उनका चेहरा पीला पड़ा हुआ था और वे यात्रा के लिए तैयार थी। उनके पीछे आतिशदान के सामने अरबेन द बेलगार्द खड़े थे और वे अपनी उंगलियों के नाखून देख रहे थे। उन्हींके पास उनकी मां एक कुर्सी पर निढाल पड़ी थी। न्यूमैन के सामने आते ही वृद्धा ने उसको एकटक देखना शुरू कर दिया। कमरे में घुसते ही न्यूमैन को लगा कि कोई

बहुत ही अशुभ घटना हो गई है। वह चौक गया था और अशुभ घटना की कल्पना-मात्र से उसे अत्यन्त मानसिक पीड़ा हो रही थी। ठीक उसी तरह की जैसी रात के अंधेरे में किसीके रोने की आवाज़ सुनकर होती है। वह सीधा मदाम द सान्त्रे के पास गया और उसने उनका हाथ पकड़ लिया।

"मामला क्या है ?" उसने अधिकारपूर्वक पूछा, "यह क्या हो रहा है ?"

"अरबेन द बेलगार्द एकटक देख रहे थे। वे अब अपनी जगह छोड़कर आगे आ गए और अपनी मां की कुर्सी पर पीछे की तरफ जाकर सामने को झुक गए। न्यूमैन के अकस्मात् आ जाने से मां और पुत्र दोनों ही उलझन में पड़ गए थे। मदाम द सान्त्रे चुपचाप खड़ी थीं और उन्होंने अपनी आंखें न्यूमैन पर गड़ा रखी थीं। मदाम द सान्त्रे ने अकसर बडी गहराई से न्यूमैन को देखा था, लेकिन उनकी इस दृष्टि की गहराई अथाह मालूम पड़ती थी। वे अत्यन्त विचलित थी। न्यूमैन को यह दृश्य देखकर ज़बर्दस्त आघात लगा। ऐसी घटना उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसका कलेजा मुंह को आने लगा। और वह अरबेन द बेलगार्द और वृद्धा की तरफ मुड़कर उन्हें ज़ोर से डांटने ही वाला था कि मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन के उस हाथ को दबाया, जिससे वह मदाम द सान्त्रे को पकड़े था।

"बहुत ही गम्भीर घटना हो गई है," मदाम ने कहा। "मै आपसे विवाह नहीं कर सकती।"

न्यूमैन ने मदाम द सान्त्रे का हाथ छोड़ दिया और पहले उनको और फिर बाद में अन्य लोगों को देखने लगा। "क्यों नहीं ?" उसने पूछा। यह प्रश्न पूछते समय वह अपना स्वर जितना संयत रख सकता था, उतना रखे था।

मदाम द सान्त्रे करीब-करीब मुस्करा दीं, लेकिन उनका यह प्रयत्न अजीब-सा लगा। "यह बात आप मेरी मां से पूछिए, मेरे भाई से पूछिए।"

"ये मुझसे शादी क्यों नहीं कर सकतीं ?" न्यूमैन ने उन लोगों की तरफ देखते हुए कहा।

मदाम द बेलगार्द अपने स्थान से ज़रा भी नही हिली, लेकिन उनका चेहरा भी पुत्री की तरह ही पीला पड़ा हुआ था। मारक्विस ने अपनी मां की ओर देखा। कुछ क्षण तक वृद्धा कुछ न बोलीं, लेकिन वे साहसपूर्वक निरन्तर न्यूमैन को देखती रहीं। मारक्विस ने अन्त में छत की ओर देखते हुए धीरे से कहा, "यह

विवाह असम्भव है !"

"यह विवाह करना अनुचित होगा," वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने कहा।

न्यूमैन हंसने लगा। "ओह, आप लोग मुझे बेवकूफ बना रहे हैं !" उसने जोर से कहा।

"बहन, तुम्हारे पास वक्त बिलकुल नहीं है ; तुम्हारी ट्रेन छूट जाएगी।" मारक्विस ने कहा।

"मुझे बताओ, क्या ये पागल हो गए हैं ?" न्यूमैन ने पूछा।

"नहीं ; मेरा ख्याल है, पागल नहीं हैं," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "लेकिन मैं जा रही हूं।"

"आप कहां जा रही हैं ?"

"गाव जा रही हूं, फ्लूरीयर्स जा रही हूं ; जिससे वहां एकान्त में रह सकूं।"

"मुझे छोड़कर ?" न्यूमैन ने धीरे से कहा।

"मैं अब आपसे नहीं मिल सकती," मदाम द सान्त्रे ने कहा।

"अब—क्यों नहीं ?"

"मैं लज्जित हूं," मदाम द सान्त्रे ने सीधे-सादे ढंग से कह दिया।

न्यूमैन अब मारक्विस की ओर मुड़ा। "आपने क्या कहा है—क्या किया है—इस सबका क्या मतलब है ?" न्यूमैन ने संयत रहने का प्रयत्न करते हुए ये प्रश्न किए। न्यूमैन ने हर परिस्थिति में अपना स्वभाव शान्त रखने का जो अभ्यास किया था, संयत स्वर उसीका परिणाम था। वह बहुत उत्तेजित था, लेकिन यह उत्तेजना गम्भीर प्रयत्न द्वारा ही प्रकट हो सकती थी। ऐसा लग रहा था, जैसे कोई तैरने की तैयारी में कपड़े उतारकर खड़ा हो।

"इसका मतलब यह है कि मैंने आपसे विवाह करने का इरादा छोड़ दिया," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "इसका यही मतलब है।"

मदाम द सान्त्रे के चेहरे से दुःख का भाव इतना ज्यादा प्रकट हो रहा था कि वह इन शब्दों की गम्भीरता से मेल नहीं खाता था। न्यूमैन को गहरा आघात लगा था, लेकिन फिर भी मदाम के प्रति उसके हृदय में किसी प्रकार का रोष उत्पन्न नहीं हुआ। वह आश्चर्यचकित था, स्तब्ध था और वहां वृद्धा तथा उसके पुत्र की उपस्थिति उसकी आंखों में ठीक उसी तरह खटक रही थी, जिस तरह रात के अंधेरे में चौकीदार की लालटेन की तेज रोशनी। "क्या मैं आपसे अकेले में दो बातें नहीं

कर सकता ?" उसने पूछा।

"क्या फायदा, वह और भी दुखदायी होगा। मैं आशा कर रही थी कि अब आपसे मुलाकात नहीं होगी—मैं आपके सामने पडने से बच निकलूंगी। मैंने आपको पत्र लिख दिया था। गुड-बाई।" और उसने हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

न्यूमैन ने अपने दोनों हाथ जेब में डाल लिए। "मै आपके साथ चलूंगा," उसने कहा।

मदाम द सान्त्रे ने अपने दोनों हाथ न्यूमैन की बाह पर रख दिए। "क्या आप मेरा अन्तिम अनुरोध स्वीकार करेंगे ?" और यह कहते हुए जब मदाम द सान्त्रे न्यूमैन की तरफ देख रही थीं, तो उनकी आंखें भर आईं। "मुझे अकेला ही चला जाने दीजिए मुझे शान्ति से जाने दीजिए। मैं इसे शान्ति तो नहीं कह सकती—यह मृत्यु है। लेकिन मुझे अपने-आपको जीवित ही दफन हो जाने दीजिए। अच्छा—अलविदा।"

न्यूमैन अपना हाथ अपने बालों पर फेरने लगा और वहां खड़ा धीरे-धीरे सिर मलने लगा। उसकी आंखें कुछ मुंद-सी गई थीं और वह अपने सामने खड़े तीनों व्यक्तियों को एक-एक करके देख रहा था। उसने अपने होंठ ज़ोरों से दबा लिए थे, उसके मुंह पर होंठों की दोनों तरफ जो दो रेखाएं बन गई थी, उनको देखकर पहली वार नज़र डालने पर ऐसा लगता था कि वह मुस्करा रहा है। मैं कह चुका हूं कि उत्तेजना प्रकट करने के लिए न्यूमैन को विशेष प्रयत्न करना पड़ता था, और अब वह बहुत ही कठोर दिखलाई पड़ रहा था। "मुझे ऐसा लगता है, मार-क्विस, कि आपने बहुत ज़्यादा हस्तक्षेप किया है," न्यूमैन ने धीरे-धीरे कहा। "मेरा ख्याल था कि आपने मुझसे वादा किया था कि आप इस मामले में दखल नही देंगे। मैं जानता हूं कि आप मुझे पसन्द नही करते ; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरा विचार था कि आप वादा कर चुके हैं कि आप इस मामले में बिलकुल बाधा नहीं डालेंगे। मेरा यह भी ख्याल था कि यह वादा आपने अपने सम्मान की शपथ लेकर किया था। यह सब आपको याद नहीं है क्या ?"

मारक्विस ने अपनी भौहे चढ़ा लीं ; लेकिन ऐसा लगा कि उन्होने पहले से ही और भी अधिक सुसभ्यता से उत्तर देने का दृढ़ निश्चय कर रखा था। उन्होंने अपने दोनों हाथ अपनी मां की कुर्सी के पीले वाले हिस्से पर रख लिए और आगे झुक

गए, ठीक उसी तरह, जिस तरह कोई पादरी या व्याख्याता अपने सामने रखी ऊंची मेज़ पर बोलने के पहले झुककर कुछ आगे आ जाता है। वे मुस्कराए नहीं, लेकिन देखने में उनके चेहरे से कोमलतायुक्त गम्भीरता प्रकट हो रही थी। "मुझे क्षमा कीजिएगा श्रीमन्," उन्होंने कहा, "मैंने आपको आश्वासन दिया था कि मैं अपनी बहन के फैसले को किसी भी तरह प्रभावित करने का यत्न नहीं करूंगा। जो वादा मैंने किया, उसका मैंने अक्षरशः पालन किया है। क्यों बहन, क्या मैंने ऐसा नहीं किया ?"

"बेटे, तुम्हें किसीकी गवाही दिलाने की जरूरत नहीं है," वृद्धा ने कहा, "तुम्हारा कहना ही काफी है।"

"जी हां—उन्होने मुझे विवाह करने का वचन दे दिया," न्यूमैन ने कहा, "यह बिलकुल ठीक है ; इससे मैं इन्कार नहीं कर सकता।" इसके बाद अपना स्वर बदलते हुए मदाम द सान्त्रे की तरफ मुड़कर न्यूमैन ने पूछा, "कम से कम आपने मुझे विवाह के लिए तो स्वीकार कर ही लिया था न ?"

न्यूमैन के स्वर में कुछ ऐसा भाव था, जिसने मदाम द सान्त्रे के मर्म को बेध दिया। वे एकदम मुड़ गईं और उन्होंने दोनों हाथों में अपना मुंह छिपा लिया।

"लेकिन अब आपने हस्तक्षेप किया, किया है न ?" न्यूमैन ने मारक्विस से पूछा।

"न तब किया था और न अब मैंने अपनी बहन के निर्णय को बदलवाने के लिए अपनी तरफ से कोई प्रयत्न किया है। उस समय भी मैंने किसी प्रकार का आग्रह या अनुरोध नहीं किया था और आज भी मैंने ऐसी कोई बात नहीं की है।"

"तो फिर आपने क्या किया है ?"

"हमने अपने अधिकार का उपयोग किया है," मदाम द बेलगार्द ने एक बड़े घण्टे की तरह गुरुघोष करते हुए कहा।

"आह, आपने अपने अधिकार का उपयोग किया है !" न्यूमैन ने चीखकर कहा। "इन लोगों ने अपने अधिकार का उपयोग किया है," यह कहते हुए न्यूमैन मदाम द सान्त्रे की तरफ मुड़ गया, "वह अधिकार क्या है ? उस अधिकार का उपयोग किस तरह किया गया है ?"

"मेरी मां ने मुझे आज्ञा दी है," मदाम द सान्त्रे ने कहा।

"आज्ञा दी है कि आप मुझे छोड़ दें, त्याग दें —अब मै समझा। और आप उसका पालन कर रही है—मैं समझा। लेकिन आप आज्ञा का पालन क्यों कर रही हैं ?"

मदाम द सान्त्रे ने अपनी वृद्धा मां की ओर देखा ; उसने अपनी आंखों ही आंखों से उन्हें सिर से लेकर पैर तक धीरे-धीरे माप डाला। "मै अपनी मां से डरती हूं," उन्होंने कहा।

मदाम द बेलगार्द अकस्मात् जल्दी से उठ खड़ी हुई और चिल्लाकर कहने लगीं, "यह बहुत ही भद्दी बात है !"

"मै इस बात को बढ़ाना नहीं चाहती हूं," मदाम द सांत्रे ने कहा और दरवाज़े की ओर मुड़ते हुए उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। "अगर आप मुझपर ज़रा भी तरस खाते हो, तो मुझे अकेला चला जाने दीजिए।"

न्यूमैन ने बड़े शान्त भाव से, लेकिन दृढ़ता के साथ हाथ मिलाया। उसने कहा, "मैं वहां आऊंगा।" मदाम द सान्त्रे आगे बढ़ गईं और उनके पीछे परदा गिर गया। न्यूमैन एक गहरी सांस छोड़कर सबसे पास वाली कुरसी पर गिर पड़ा। वह बिलकुल अन्दर की तरफ खिसक गया था और उसने अपने दोनों हाथ कुर्सी के हत्थों पर रख लिए थे। वह मदाम द बेलगार्द और अरबेन को देख रहा था। काफी देर तक सब लोग एकदम चुप रहे। वे मां-बेटे एक-दूसरे के पास खड़े थे, उनके सिर ऊंचे थे और भौंहों में बल पड़े हुए थे।

आखिर न्यूमैन ने कहा, "तो आप लोग भेद करते है। आप आग्रह, अनुरोध और आज्ञा देने में अन्तर मानते हैं। यह बहुत स्पष्ट है, लेकिन आपका ज़ोर आज्ञा देने पर है, इससे सारी बात बिगड़ जाती है।"

"हमें अपनी स्थिति स्पष्ट करने में कोई आपत्ति नहीं है," मो० द बेलगार्द ने कहा, "हम यह समझ सकते हैं कि आरम्भ में आपको सारी बात साफ तौर पर समझ में नहीं आएगी और सच तो यह है कि हमारा ख्याल है कि आप हमारे साथ न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करेंगे।"

"ओह, मैं आपके साथ अवश्य ही न्यायपूर्ण व्यवहार करूंगा," न्यूमैन ने कहा, "आप डरिए मत। अपनी बात कहिए।"

वृद्धा ने अपने पुत्र की बांह पर अपना हाथ रखा, जैसे वे स्थिति स्पष्ट करने के प्रयत्न के विरुद्ध हों। "हम लोग, चाहे कितना भी प्रयत्न करते," वृद्धा

ने कहा, "ऐसी व्यवस्था करने में असमर्थ थे, जो आपको प्रिय होती । हमारा फैसला आपको कभी भी पसन्द न आता । यह आपके लिए निराशा है और निराशाए हमेशा कटु होती है । मैंने सारे मामले पर बहुत सावधानी से विचार किया और यह कोशिश की कि मै कुछ और अच्छी व्यवस्था कर सकू, लेकिन इससे मेरे सिर में दर्द हो गया और मुझसे मेरी नीद उड़ गई । हम जो चाहे कहे, आप यही सोचेंगे कि आपके साथ दुर्व्यवहार किया गया है और आप अपने मित्रों में हमारी बदनामी करेंगे । लेकिन हमें इसका कोई भय नही है । इसके अलावा जो आपके मित्र हैं, वे हमारे मित्र नहीं हैं, इसलिए आप उनसे कुछ भी क्यों न कहें, हमें इसकी परवाह नहीं है । आप जो मर्जी आए, हमारे बारे में सोच सकते हैं । मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि क्रोध का प्रदर्शन न करें । मैने अपने जीवन में कभी भी ऐसी बात नहीं देखी है और इस उम्र में मुझसे इस तरह की आशा भी नहीं की जानी चाहिए कि मैं लोगों के क्रोध-प्रदर्शन को देख सकूगी ।"

"बस, आपको इतना ही कहना है ?" न्यूमैन ने अपनी कुर्सी से धीरे-धीरे उठते हुए पूछा । "आप जैसी चतुर महिला के लिए यह कहना कमजोरी की निशानी है । बताइए, फिर कोशिश करिए ।"

"मेरी मां ने, हमेशा की तरह, बड़ी ईमानदारी और निर्भीकता से सारी बात स्पष्ट रूप से कह दी है," मो० द बेलगार्द ने अपनी घड़ी के ढकने से खेलते हुए कहा । "लेकिन शायद कुछ और बता देना भी अच्छा ही होगा । हम आपके इस आरोप का खण्डन करते है कि हमने आपको दिया हुआ वचन तोड़ा है । हमने आपको अपनी बहन से मिलने का पूरा अवसर दिया, हमने आपको इस बात की छूट भी दी कि हमारी बहन आपका विवाह का प्रस्ताव सुन ले । जब उसने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, तब भी हमने कुछ नहीं किया । इसलिए हमने अपने वचन का लगभग पूरी तरह पालन किया । लेकिन बाद में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई, जिसका कारण बिलकुल भिन्न था कि हमें बोलना पड़ा । सम्भवतः यह अधिक अच्छा होता कि हम पहले ही इस विषय में अपनी राय दे देते, लेकिन वास्तविकता यह है कि, जैसाकि आप भी समझते हैं, अभी तक कुछ बिगड़ा नही था ।"

"अभी तक कुछ बिगड़ा नहीं था ?" न्यूमैन ने शब्दों को दोहराया । इसमें क्या विनोद निहित था ? यह न्यूमैन को पता नहीं लगा । सच तो यह है कि

न्यूमैन को इस बात का ही होश नही था कि मारक्विस क्या कह रहे हैं। मो० द बेलगार्द अकड़कर जो बातें कह रहे थे, न्यूमैन के कानों में उनकी कोरी भनक के सिवा और कुछ नहीं जा रहा था। उसकी समझ में केवल इतना ही आया कि जो कुछ अभी हुआ है, वह मज़ाक नही था। और जो लोग उसके सामने खड़े बातें कर रहे है, वे बहुत गम्भीरता से अपना मत प्रकट कर रहे हैं। न्यूमैन को गहरी चोट लगी थी और वह बहुत ही क्षुब्ध था। "आपका क्या ख्याल है कि मै इस बात को मान लूगा ?" उसने पूछा, "क्या आप समझते हैं कि आप जो कुछ कह रहे है, उसको मैं तनिक भी महत्त्व दूंगा ? क्या आप समझते हैं कि मै आपकी बात गम्भीरता से सुन सकता हूं ? आप बिलकुल पागल हैं।"

मदाम द बेलगार्द ने अपने पंखे से अपने हाथ की हथेली पर चोट की। "अगर आप नहीं सुनना चाहते, तो मत सुनिए; आप क्या करेंगे, इसका हमारी निगाह में कोई महत्त्व नही है। मेरी पुत्री ने आपको त्याग दिया।"

"नही, उनका यह मतलब नहीं है," एक क्षण बाद न्यूमैन ने कहा।

"मेरा ख्याल है कि मै आपको बता सकता हूं कि बात ऐसी ही है," मारक्विस ने कहा।

"बेचारी स्त्री, आपने उसके साथ पता नहीं क्या हरकत की है !" न्यूमैन ने चीखकर कहा।

"धीरे-धीरे !" मो० द बेलगार्द ने बुदबुदाकर कहा।

"उसने आपसे कह दिया है," वृद्धा ने कहा, "कि मैने आज्ञा दी थी।"

न्यूमैन ने अपना सिर हिला दिया। "इस तरह की बात नहीं हो सकती, आप जानती है," न्यूमैन ने कहा, "किसी भी व्यक्ति पर इस तरह से अधिकार का प्रयोग नही किया जा सकता। आपको ऐसा करने का कोई हक नहीं है; आपको कोई अधिकार नहीं है।"

"मेरा अधिकार," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "मेरे बच्चों द्वारा मेरी आज्ञा के पालन में है।"

"नहीं, वह आपसे डरते हैं। आपकी लड़की ने यह बात कह दी है, यह बड़ी विचित्र बात है। आपकी पुत्री को आपसे क्यों डरना चाहिए ?" न्यूमैन ने एक क्षण वृद्धा की ओर देखते हुए कहा, "अवश्य ही कोई कपट-जाल रचा गया है।"

जब न्यूमैन ने वृद्धा की ओर देखा तो दोनों की आंखें मिलीं, किन्तु मदाम की आंखों मे कोई विकार नहीं था और ऐसा लगता था, जैसे उन्होंने न कोई बात सुनी है और न कुछ देखा है। "मैने भरसक प्रयत्न किया," वृद्धा ने शात भाव से कहा, "लेकिन मैं अब और अधिक नहीं सह सकती थी।"

"हमने बड़ा साहसिक प्रयोग किया।" मारक्विस ने कहा।

न्यूमैन का जी चाहा कि वह जाए और मारक्विस की गर्दन पकड़कर अपने अंगूठे से उसका गला घोंट दे। "मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि आपने कितना ज़बर्दस्त प्रहार मेरे ऊपर किया है," न्यूमैन ने कहा, "बेशक आपको इसका पता है, लेकिन मेरा ख्याल था कि आपको कम से कम अपने मित्रों का तो कुछ डर होना चाहिए था। उन सब लोगों का ख्याल कीजिए, जिनसे मुझे उस दिन रात को मिलवाया था। उनमें कई लोग बड़े अच्छे थे। आप भी यह मानते होंगे कि उनमें ईमानदार स्त्री-पुरुष थे।"

"हमारे मित्रों ने हमारी इस कार्रवाई का समर्थन किया है," मो० द बेलगार्द ने कहा, "उन लोगों में एक भी परिवार ऐसा नहीं है, जो हमारी स्थिति में इसके विपरीत आचरण करता, जो हम कर रहे हैं। और फिर हम किसीसे पथ-प्रदर्शन ग्रहण नहीं करते। बेलगार्द परिवार दूसरे लोगों के सामने अपने आचरण द्वारा दृष्टांत रखता है, दृष्टांत के लिए दूसरों की प्रतीक्षा नहीं करता।"

"अगर आप दूसरों के दृष्टांत की प्रतीक्षा करते, तो शायद आपको बड़ी लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ती।" न्यूमैन ने तेज़ी से कहा। "क्या मैंने कोई गलत काम किया है ?" उसने पूछा, "क्या मैने आपको कोई भी ऐसा आचरण करके इस बात का मौका दिया कि आप मेरे बारे में अपनी राय बदल दें ? क्या आपको मेरे विरुद्ध कुछ पता लगा है ? कम से कम मुझे तो इस बात की कोई कल्पना नहीं है।"

वृद्धा ने कहा, "हमारा मत वही है, जो पहले था। आपके प्रति हमारा कोई दुर्भाव नहीं है। आचरण-सम्बन्धी किसी भी आरोप को लगाने की बात हम सोच भी नहीं सकते। सच तो यह है कि जब से हमसे आपके सम्बन्ध बढ़े, तब से आपके आचरण में कोई अजीब बात भी हमें नहीं लगी। हालांकि हम सोच रहे थे कि सम्भवतः कुछ बातें हमें विचित्र लगें। हमें आपके आचरण या स्वभाव की कोई शिकायत नहीं है। असली कारण तो आपका पिछला जीवन

है। सच तो यह है कि हम किसी भी व्यापारी से अपनी लड़की के विवाह की बात पर राज़ी नहीं हो पाते हैं। हमारा मन नहीं मानता। किसी कुघड़ी में हमने सोचा था कि शायद इस स्थिति से हम समझौता कर लेंगे, लेकिन वह हमारा दुर्भाग्य था। हमने अन्त तक प्रयत्न किया। आपको हर तरह लाभ पहुं-चाने की कोशिश की। मैंने यह निश्चय कर रखा था कि मैं आपको इस बात का कोई मौका नहीं दूगी कि आप मुझपर विश्वासघात का आरोप लगा सकें। और इसमें शक नहीं कि हमने बात बहुत आगे बढ़ जाने दी ; हमने अपने मित्रों से भी आपका परिचय करा दिया। सचाई यह है कि उस दिन शाम को मेरा साहस छूट गया। बृहस्पतिवार की रात को इन कमरों में जो कुछ हुआ, उसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकी। अगर मै आपसे कोई कटु बात कहूं, तो आप मुझे क्षमा कीजिएगा, लेकिन बिना यह सफाई दिए हमें शान्ति न मिलेगी।"

"इससे अधिक हमारी विश्वस्तता का कोई और प्रमाण नहीं हो सकता," मार-क्विस ने कहा, "कि उस दिन शाम को हमने सबके सामने आपको अपने भावी दामाद के रूप मे पेश किया। हमने इस तरह अपने हाथ बाधने की कोशिश की।"

"लेकिन हुआ यह कि, "मां ने कहा, "कि हमारी आंखें खुल गईं और वे बन्धन भी टूट गए, जिनसे हमने अपने-आपको बाध रखा था। हम बहुत ही बैचेन थे! आप जानते है," वृद्धा ने एक क्षण बाद कहा, "हमने आपको चेतावनी दे दी थी। हम लोग बहुत घमण्डी हैं।"

न्यूमैन ने अपना हैट उठा लिया और उसे अपने हाथ से पोंछने लगा। वह इतना चिढ़ा हुआ था कि उससे चाहते हुए भी बोला नहीं जा रहा था। "आप अभिमानी तो हैं, लेकिन उतने नहीं जितना होना चाहिए," अन्त में न्यूमैन ने कहा।

"इस सारे मामले में," मारक्विस ने मुस्कराते हुए कहा," हमारा ही सबसे ज़्यादा अपमान हुआ है।"

"इस विषय में आवश्यकता से अधिक बात करना ठीक नहीं होगा," वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने फिर कहा, "मेरी पुत्री ने आपसे सब बात कह दी है, और यह भी बता दिया है कि वह आपसे विवाह नही करेगी।"

"आपकी पुत्री ने जो कुछ कहा है, उससे मुझे सन्तोष नही है," न्यूमैन ने कहा, "मैं जानना चाहता हू कि आपने उसके साथ क्या किया है। यह सब

तो बेकार की बात है कि आपने अपने अधिकार का प्रयोग किया है और उसे मुझसे विवाह न करने का आदेश दिया है। आपकी पुत्री ने मुझे आंखों पर पट्टी बांध, अंधे बनकर तो स्वीकार नहीं किया था और न ही वह अंधों की तरह मुझे ठुकरा सकती है। मै इस बात पर विश्वास नहीं करता कि उसने सचमुच मुझसे विवाह न करने का फैसला कर लिया है; इस सम्बन्ध में वे मुझसे बात करेंगी। लेकिन आप लोगों ने उसे डराया-धमकाया है, आपने उसे बहुत दुःख पहुंचाया है। यह सब आपने किस तरह किया है ?"

"मैने जो कुछ किया, बहुत ही थोड़ा किया !" मदाम द बेलगार्द ने यह बात ऐसे स्वर मे कही कि बाद में उसका स्मरण करके भी न्यूमैन सिहर उठता था।

"मुझे यह बताने की अनुमति दीजिए कि हमने जो आपको अपनी सफाई दी है," मारक्विस ने कहा, "वह इस शर्त पर दी है कि आप किसी भी प्रकार की उग्र भाषा का प्रयोग नहीं करेंगे।"

"मैं उग्र नहीं हू," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "उग्र तो आप हैं ! मैं नहीं जानता कि मुझे आपसे कुछ और अधिक कहना है। आप मुझसे क्या आशा करते हैं, शायद यह कि मैं आपको धन्यवाद दूंगा, कहूंगा, जो कृपा आपने मेरे ऊपर की है, उसके लिए मै बड़ा आभारी हूं, वादा करूगा कि मैं आपको भविष्य में फिर कभी कष्ट नहीं दूंगा, और अपना रास्ता नापूगा।"

"हम आशा करते हैं कि आप एक चतुर व्यक्ति की तरह व्यवहार करेंगे," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "आपने पहले ही यह सिद्ध कर दिया है। अब हमने जो कुछ किया है, वह यही सोचकर किया है कि आप चतुर व्यक्ति हैं। जब नियति के आगे किसीको झुकना पड़ता है, तो उसे झुकना ही चाहिए। चूकि मेरी पुत्री ने आपसे विवाह करने से साफ इन्कार कर दिया है, इसलिए अब आपके शोर मचाने से क्या लाभ है ?"

"अभी यह देखना बाकी है कि आपकी पुत्री ने वाकई इन्कार कर दिया है। आपकी पुत्री और मैं अब भी एक-दूसरे के घनिष्ठ मित्र हैं; अभी कुछ भी नहीं बदला है। जैसा मैंने कहा, इस विषय में मैं उनसे बात करूंगा।"

"कोई फायदा नहीं है," वृद्धा ने कहा, "मैं अपनी पुत्री को जानती हूं कि जो शब्द उसने अभी कहे हैं, वे अन्तिम हैं। इसके अलावा उसने मुझसे आपसे विवाह

न करने का वादा किया है।"

"मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि आपकी पुत्री का वचन आपके वचन से कहीं अधिक मूल्यवान है," न्यूमैन ने कहा, "फिर भी मैं अभी निराश नहीं हुआ हूं।"

"आपकी मर्जी ! लेकिन अगर वह आपसे मिलेगी भी नहीं—और जैसाकि तय है कि वह आपसे नहीं मिलेगी, तो फिर आपका यह प्रेम केवल कपोल-कल्पना ही रहेगा।"

बेचारा न्यूमैन ऊपर से काफी दृढ़ता दिखला रहा था, लेकिन अन्दर ही अंदर वह भी आत्मविश्वास की कमी अनुभव कर रहा था। मदाम द सान्त्रे ने जिस गम्भीरता से उससे विवाह करने से इन्कार किया था, उससे उसके ऊपर घड़ों पानी पड़ गया था। मदाम द सान्त्रे का चेहरा अब भी न्यूमैन के सामने घूम रहा था और विवाह न करने के निश्चय की घोषणा का चित्र भयंकर रूप से उसकी कल्पना में सजीव बना हुआ था। वह बहुत ही दुखी था और यकायक अपने-आपको बड़ा ही असहाय अनुभव कर रहा था। वह मुड़ा और एक क्षण तक दरवाज़े पर हाथ रखे सोचता रहा। इसके बाद वह पीछे मुडा और बिना किसी झिझक के अपना स्वर बदलते हुए बोला, "ज़रा यह तो सोचिए कि इस सबका मेरे ऊपर क्या असर होगा, ईश्वर के लिए उसे अपने हाल पर छोड़ दीजिए! आपको मेरे साथ विवाह करने में क्या आपत्ति है—आखिर मुझमे क्या खराबी है ? मैं आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता, चाहूं तो भी नहीं। मै संसार का सबसे निरीह प्राणी हूं। क्या हुआ अगर मैं व्यापारी हूं ? आपका मतलब क्या है ? व्यापारी ? अच्छा आप जो कहेंगे मैं वही काम कर लूंगा। व्यापार के बारे में तो मैंने आपसे कोई बात भी नहीं की। आप उसका विवाह मेरे साथ कर दीजिए और मै आपसे कोई प्रश्न नहीं करूंगा। मै उसे लेकर चला जाऊंगा, न तो आप मुझे कभी देखेंगे और न कभी मै आपको पत्र लिखूगा। आप चाहेंगे तो मै अमरीका में ही रहा आऊंगा। आप कहे तो यह बात मैं कागज़ पर लिखकर दे सकता हू कि मै यूरोप में कदम भी नहीं रखूंगा ! मैं केवल इतना चाहता हूं कि उनसे मुझे हाथ न धोना पड़े !"

मदाम द बेलगार्द और उनके पुत्र ने आपस में एक-दूसरे को देखा, उनकी नज़रों में व्यंग्य का भाव था। अरबेन बोला, "श्रीमान, जो कुछ आप कह रहे हैं,

देने से उस सफलता के अभिमान को गहरा आघात लगा था, साथ ही भावी सुख के सपने भी चूर-चूर हो गए थे। और मदाम द सान्त्रे को उसने खोया भी कैसे था, दूसरों के हस्तक्षेप और आदेशों के कारण, एक धृष्ट बुढ़िया और पाखण्डी युवक की वजह से, जिन्होंने अपने तथाकथित 'अधिकार' का प्रयोग किया था ! यह बात कल्पनातीत थी। बहुत ही भयंकर, तरस खाने योग्य। बेलगार्द परिवार द्वारा यह निर्लज्जतापूर्ण विश्वाघात ऐसा था, जिसपर वह ज्यादा विचार करने को तैयार नहीं था। उसे तो उसने हमेशा के लिए विरह की आग में झोंक दिया था, लेकिन वह मदाम द सान्त्रे के अपनी बात से फिर जाने पर, उनके विश्वास-घात पर स्तब्ध था। आश्चर्यचकित था। इसका भी कुछ न कुछ रहस्य ज़रूर था, लेकिन वह इस रहस्य की कुंजी को बहुत कोशिश करने पर भी न पा सका। इस तरह बात बदल जाने का क्या मलतब है ? आखिर उसे ऐसा क्या ज़हर चखाया गया ? बेचारे न्यूमैन को अब यह आशंका बुरी तरह सताने लगी थी कि मदाम द सान्त्रे वाकई अपनी बात से फिर गई हैं। लेकिन वह अब भी उनके प्रति कोई दुर्भाव अपने मन में नहीं पा रहा था और वह बार-बार यही सोच रहा था कि उसके सम्बन्ध को तोडने में बल का प्रयोग किया गया है। लेकिन वह मदाम द सान्त्रे पर बिगड़ा नहीं। उसने उनको झूठा भी नहीं बताया, क्योंकि न्यूमैन को विश्वास था कि वे वाकई बहुत दुखी थी। चलते-चलते न्यूमैन ने सीन नदी पर बने एक पुल को पार कर लिया, लेकिन वह बिना कुछ सोचे-समझे सड़क पर लगातार आगे, और आगे बढ़ा चला जा रहा था। पेरिस बहुत पीछे छूट गया था और वह करीब-करीब देहाती इलाके में आ गया था। वह औतील उपनगर के पास था, जहां आसपास की प्राकृतिक सुषमा दर्शनीय है। आखिर वह रुका, उसने चारों तरफ देखा, लेकिन वहां के सुन्दर वातावरण का उसपर कोई अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ा। और इसके बाद वह फिर धीरे से लौट पड़ा। लौटने में उसकी चाल बड़ी मन्द हो गई थी। जब वह त्रोकादीरो के किनारे पहुंचा, तो उसे फिर होश आया। हालांकि अब भी वह बहुत अधिक व्यथित था, लेकिन अपनी वेदना के बावजूद उसने महसूस किया कि वह मिसेज़ ट्रिस्टरैम के घर के पास है। और मिसेज़ ट्रिस्टरैम किन्हीं विशेष अवसरों पर जो कुछ कहती हैं, उसमें नारी-सुलभ करुणा होती है। उसे लगा कि अगर वह अपने मन की बात कह दे, तो उसका मन का बोझ हल्का हो जाएगा। न्यूमैन ने यह सोचकर मिसेज़ ट्रिस्टरैम के घर की राह

पकड़ी। मिसेज़ ट्रिस्टरैम घर पर ही थीं और अकेली थी। न्यू मैन जैसे ही कमरे में अन्दर घुसा, उन्होंने कहा कि मैं आपके आने का कारण समझ गई हू। न्यू-मैन गुमसुम भारी मन से बैठा रहा और उनकी तरफ देखता रहा।

"वे अपनी बात से फिर गए हैं!" मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा, "आप भले ही इस बात से चौके हों, लेकिन मुझे उस दिन रात को ही इस तरह की बात का कुछ आभास हो गया था।" न्यूमैन ने अपनी सारी कथा कह सुनाई; वे सुनती रहीं और एकटक उसकी ओर देखती रहीं। जब न्यूमैन ने अपनी बात खत्म कर ली, तो उन्होंने शान्त भाव से कहा, "वे लोग उसका विवाह लार्ड डीपमेयर से करना चाहते हैं।" न्यूमैन एक ओर घूरता रहा। उसे नहीं पता था कि मिसेज़ ट्रिस्टरैम को लार्ड डीपमेयर के बारे में भी कुछ मालूम है। "लेकिन मै नही सम-झती कि क्लेयर उनसे शादी करने को राजी होगी," मिसेज ट्रिस्टरैम ने कहा।

"वह उस बिचारे से क्या शादी करेगी!" न्यूमैन ने चीखकर कहा। "हे भगवान। वह उससे शादी नहीं करेगी, फिर भी उसने मुझसे इन्कार कर दिया है, क्यों?"

"लेकिन इतनी-सी बात नहीं है," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "सच तो यह है कि वे लोग अब और अधिक आपको सह नहीं सकते थे। उन्होने अपने साहस के बारे में ज़रूरत से ज़्यादा अनुमान लगा लिया था। न्याय की दृष्टि से मुझे यह कहना ही होगा कि इसमें भी कुछ अच्छी ही बात है। वे लोग आपके व्यापारी होने की बात को पचा नहीं सके। यह आभिजात्य संस्कारों की मजबूरी है। उनकी निगाह आपके धन पर थी, लेकिन उन्होंने सिर्फ इस वजह से आपको ठुकरा दिया कि आप दुनिया की निगाह में व्यापारी-मात्र हैं।"

न्यूमैन ज़ोर-ज़ोर से सांसें लेकर अपना रोष प्रकट कर रहा था, और उसने अपना हैट फिर उठा लिया। "मैं सोच रहा था कि आपके पास आने से मुझे साहस मिलेगा।" उसने कहा। यह शब्द कहने से न्यूमैन का बाल-सहज दुःख का भाव प्रकट हो गया।

"मुझे क्षमा कीजिएगा," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने बड़ी कोमलता से उत्तर दिया, "मैं भी आपसे कुछ कम दुखी नहीं हूं, विशेष रूप से इसलिए कि इन सारे उपद्रवों की जड़ मैं ही हूं। मैं यह नहीं भूली हूं कि सबसे पहले मैंने ही आपको यह सुझाव दिया था कि आप मदाम द सान्त्रे से विवाह करें। मैं इस बात का विश्वास नहीं

करती कि मदाम द सान्त्रे का इरादा लार्ड डीपमेयर से विवाह करने का है। इसमें शक नहीं कि लार्ड डीपमेयर मदाम द सान्त्रे से उमर में छोटे नहीं है, जैसाकि लगता है, उनकी भी आयु तैंतसी वर्ष की है। मैंने यह बात जान ली है। लेकिन नहीं—मैं यह नहीं मान सकती कि मदाम द सान्त्रे इतनी भयानक हैं, इतनी क्रूर और झूठी हैं।"

"कृपया उनके विरुद्ध कुछ न कहें," न्यूमैन ने कहा।

"बेचारी लड़की, वह बड़ी निर्दयी है। लेकिन बेशक आप तो वहां उसके पास जा रहे है और अपनी बात, जितने ज़ोरदार ढंग से हो सकेगा, कहेंगे। आपको पता हैं कि आप इस समय जैसे दिखलाई पड़ रहे है," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने अपनी टिप्पणी जारी रखते हुए अपने दुस्साहस का परिचय दिया, "इस समय आप बिना बोले ही बहुत कुछ अपने चेहरे से ही कहे दे रहे हैं। इस समय आपको ऐसी ही स्त्री ठुकरा सकती है, जो बहुत ही हठी हो। काश, मैंने भी आपके साथ ऐसा अन्याय किया होता और आप मेरे पास भी इसी रूप में आए होते! लेकिन आप जाइए, जो भी हो, मदाम द सान्त्रे के पास जाइए और उनसे कहिए कि वे मेरे लिए भी एक पहेली हैं। मुझे भी यह जानने की उत्सुकता है कि परिवार का अनुशासन अब कहां तक बना रहेगा।"

न्यूमैन कुछ देर और बैठा रहा, उसने अपनी कोहनियां घुटनों पर रख ली थीं और सिर अपने हाथों पर। मिसेज़ ट्रिस्टरैम उदारता और दर्शन तथा करुणा और आलोचना की बातें करती रहीं। आखिर उन्होंने पूछा, "और इस मामले पर काउत वेलेंतीन का क्या कहना है?" न्यूमैन एकदम चौंक उठा। उसे वेलेंतीन का ध्यान ही नही आया था और न यह ख्याल आया था कि स्विट्जरलैंड की सीमा पर आज सवेरे से लेकर अब तक न जाने क्या हो चुका होगा। यह सोचते ही वह फिर बेचैन हो उठा और उसने मिसेज ट्रिस्टरैम से विदा ली। वह सीधा अपने घर आया, जहां बाहर बरामदे मे ही उसे मेज़ पर एक तार रखा मिला। तार में तारीख और स्थान के साथ यह सदेश लिखा था: "मै गम्भीर रूप से घायल हो गया हूं; जितनी जल्दी हो सके, मेरे पास आइए। वे० बे०।" यह दुखद समाचार पढ़कर न्यूमैन के मुह से आह निकल गई। उसे लगा कि अब उसे फ्लूरीयर्स की यात्रा भी स्थगित करनी होगी। लेकिन फिर भी उसने मदाम द सान्त्रे के नाम कुछ पंक्तियों में यह पत्र लिखा, क्योंकि उसके पास बहुत ही कम समय था:

"मैंने आपका पल्ला अभी छोड़ा नहीं है और मैं यह भी नहीं विश्वास करता

कि आप मुझसे विवाह करने के वचन से फिर गई हैं। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है, लेकिन हम लोग जल्दी ही मिलेंगे, तब बातचीत हो सकेगी। मैं आज ही आपके पास नही आ सकता, क्योंकि मुझे एक मित्र ने बुलाया है, जो बहुत ही अस्वस्थ है और शायद मौत के मुंह में पड़ा है। लेकिन जैसे ही मैं अपने मित्र के पास से छुट्टी पा सकूंगा, आपके पास आऊंगा। मै यह क्यों न बता दू कि मेरा यह मित्र आपका ही छोटा भाई है ? क्रि० न्यू०"

यह लिखने के बाद न्यूमैन के पास केवल इतना ही समय बचा था कि वह रात को चलनेवाली जिनेवा ऐक्सप्रेस में सवार हो सकता।

उन्नीस

आवश्यकता पडने पर न्यूमैन में एक स्थान पर चुपचाप बैठे रहने की विलक्षण क्षमता थी। उसे स्विट्ज़रलैंड की यात्रा करने में अपनी इस क्षमता को काम में लाने का अवसर मिला। रात चढ़ती जा रही थी, घण्टे पर घण्टे गुज़रते जा रहे थे, लेकिन न्यूमैन की आंखों में ज़रा भी नींद नहीं थी। लेकिन वह चुपचाप रेल के डिब्बे में बिना हिलेडुले कोने में एक ही जगह बैठा रहा। उसने अपनी आंखें बन्द कर रखी थीं और साथी यात्रियो में लोगों की ओर सबसे ज्यादा ताकनेवाला व्यक्ति भी मन ही मन इस बात पर ईर्ष्या कर सकता था कि वह प्रकट रूप से कितने आराम से तन्द्रामग्न है।

लेकिन तड़के के कुछ पहले उसे सचमुच थोड़ी-सी नींद आ गई। यह शारीरिक क्लांति के कारण न आई थी, बल्कि मानसिक थकावट के कारण आई थी। वह कुछ घण्टे सोया और जब उसकी आंख खुली, तो उसने देखा कि सामने जूरा की हिममण्डित पहाड़िया हैं, जिनके पीछे उषा की लालिमा दिखलाई पड़ रही थी। लेकिन न्यूमैन न तो शीतल पर्वतों को देख रहा था और न उष्ण आकाश को। वह फिर जाग उठा था और उसके साथ ही उसके दर्द की कसक भी उभर उठी थी। वह ज़रा भी यह नहीं भूल सका था कि उसके साथ कितना बड़ा अन्याय हुआ है। ट्रेन के जिनेवा पहुंचने के आधे घण्टे पहले वह उषाकाल के झुकझुके में वेलेंतीन के

तार में लिखे स्टेशन पर उतर पड़ा। प्लेटफार्म पर लालटेन लिए एक उनींदा स्टेशन मास्टर अपने सिर पर ओवरकोट का हुड ओढ़े खड़ा था। उसके पास ही एक और व्यक्ति था। यह व्यक्ति न्यूमैन से मिलने के लिए आगे बढ़ा। इसकी आयु ४० के करीब होगी। वह लम्बा और छरहरा था, उसका चेहरा सांवला, आंखें काली और मूंछें पतली थीं। हाथ के दस्ताने नये मालूम होते थे। उसने अपना हैट उतार लिया। उसके चेहरे पर बड़ी गम्भीरता थी। उसने न्यूमैन का नाम लिया। न्यूमैन ने स्वीकारात्मक उत्तर देकर पूछा, "क्या आप मो० द बेलगार्द के मित्र हैं?"

"जी हां, आपकी तरह ही मैं भी उनका एक दुखी मित्र हूं," इन सज्जन ने कहा, "इस सारे दुखद काण्ड में मो० द ग्रासजॉयज के साथ मैंने भी अपनी सेवाएं मो० द बेलगार्द को प्रदान करने पर अपनी सहमति दे दी थी। मो० द ग्रासजॉयज इस समय अपने मित्र की शय्या के पास हैं। मेरा ख्याल है कि मो० द ग्रासजॉयज़ को पेरिस में आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है; लेकिन वे मुझसे अधिक अच्छी परिचर्या कर सकते हैं, इसलिए वे हमारे मित्र के पास ही है। बेलगार्द बड़ी उत्सुकता से आपके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"और बेलगार्द है कैसे?" न्यूमैन ने कहा, "क्या वे बहुत गम्भीर रूप से आहत हो गए हैं?"

"डाक्टर ने तो जवाब दे दिया है। हम लोग अपने साथ एक सर्जन लाए थे। लेकिन बेलगार्द मरते समय भी बड़ा प्रसन्न है। मैंने कल संध्या को पास के फ्रेंच गांव से एक पादरी बुलाया था। पादरी लगभग एक घण्टे उनके पास रहा। पादरी बिलकुल सन्तुष्ट था।"

"ईश्वर हमें क्षमा करें," न्यूमैन ने कराहते हुए कहा, "ज़्यादा अच्छा होता कि डाक्टर बेलगार्द की हालत पर सन्तोष व्यक्त करता। क्या मैं उनसे मिल सकता हूं—क्या वे मुझे पहचानेंगे?"

कोई आधे घण्टे पहले जब मैं उन्हे छोड़कर चला था, तो वे सो रहे थे। इसके पहले उन्हें रात-भर ज्वर रहा था और बिलकुल नींद नहीं आई थी। लेकिन चलिए, चलकर देखते हैं।" और न्यूमैन का साथी उस रास्ते पर आगे-आगे चलने लगा जो स्टेशन से गांव की तरफ जाता था। रास्ते में उसने बतलाया कि हम लोग एक छोटी-सी स्विस सराय में ठहरे है। लेकिन आशा के प्रतिकूल इस सराय में भी मो० द बेलगार्द को रखने और उनकी परिचर्या का अच्छा प्रबन्ध हो गया है। हम

लोग हथियार वगैरा चलाने की साथ-साथ शिक्षा लेते रहे हैं और अभ्यास भी करते रहे हैं," वेलेंतीन के मित्र ने कहा, "यह पहला मौका नहीं है कि हम लोगों ने एक-दूसरे की घायल अवस्था में इस तरह परिचर्या की हो। लेकिन बेलगार्द को घाव बड़ी बेढब जगह लगा है। और इससे भी विचित्र बात यह है कि बेलगार्द का प्रतिद्वंद्वी कोई अच्छा निशानेबाज़ नहीं था। उसने तो जहां मर्ज़ी आई, वहां गोली चला दी; लेकिन गोली देखिए कहां लगी, बेलगार्द की बाईं तरफ ठीक हृदय के नीचे।"

सफेद अशुभ प्रभात में वे लोग गांव की सड़क पर इधर-उधर पड़े गोबर के ढेरों के बीच से होते हुए चले जा रहे थे और न्यूमैन का साथी उन्हें द्वंद्व युद्ध का ब्यौरा बता रहा था। यह शर्त थी कि अगर पहली बार गोली चलाए जाने के बाद दोनों में से कोई भी प्रतिद्वन्द्वी सन्तुष्ट न होगा, तो फिर गोली चलाई जाएगी। वेलेंतीन ने गोली पहली बार चलाई, उसका ठीक वही परिणाम हुआ, जो वेलेंतीन चाहता था। उस गोली से मो० स्टानीस्लास काप की बांह का जरा-सा मांस छिल गया। इस बीच मो० काप की अपनी गोली वेलेंतीन से दस इंच की दूरी से गुज़र गई। मो० स्टानीस्लास के प्रतिनिधि ने मांग की कि दोनों प्रतिद्वन्द्वी एक बार फिर गोली चलाएं। यह अनुरोध स्वीकार कर लिया गया। इस बार वेलेंतीन की गोली मो० काप के पास से गुज़र गई, लेकिन मो० काप की गोली सीधे वेलेंतीन को लगी। जब हमने वेलेंतीन को ज़मीन पर पड़े देखा," न्यूमैन के साथी ने बताया, "तो देखते ही समझ लिया कि घाव बड़ा बेढब है और वेलेंतीन का अच्छा होना सरल नहीं है। घाव बड़ा विकट था। हम लोग तुरत वेलेंतीन को उठाकर सराय ले आए और मो० स्टानीस्लास तथा उनके दोस्त पता नहीं कहां गायब हो गए। इस ज़िले के पुलिस अधिकारी सराय में हम लोगों के पास आए। उनका व्यवहार बड़ा ही गरिमापूर्ण था। उन्होने हमसे बयान लिए, तहरीरें लिखीं, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि इतने अच्छे और सुसभ्यतापूर्ण द्वद्व युद्ध के बारे मे वे कोई कार्रवाई करेंगे।" न्यूमैन ने पूछा कि क्या वेलेंतीन के परिवार को खबर दे दी गई है? तो उसे बताया गया कि पिछली रात काफी देर तक वेलेंतीन ने घरवालों को खबर भेजे जाने का विरोध किया। वेलेंतीन यह बात मानता ही न था कि उसका घाव गम्भीर है। लेकिन जब पादरी उससे मिलकर गया, तो उसने घर तार भेजे जाने की अनुमति दे दी और तदनुसार उसकी मां को सूचना भेज दी गई। लेकिन वृद्धा को जल्दी आना

चाहिए !" न्यूमैन के साथी ने कहा।

"जो हो, यह है बड़ा घिनौना काण्ड !" न्यूमैन ने कहा, "मुझे तो बस यही कहना है !" कम से कम इतना कहना न्यूमैन को अपनी असह्य मानसिक व्यथा को प्रकट को करने के लिए बड़ा ही आवश्यक जान पड़ा।

"आह, आप इसका अनुमोदन नही करते ?" न्यूमैन के साथ चलनेवाले व्यक्ति ने बड़ी ही शिष्टता से पूछा।

"अनुमोदन ?" न्यूमैन ने चिल्लाकर कहा, "मैं तो यह सोच रहा हूं कि जब बेलगार्द परसों रात मेरे पास आए थे, तो क्यो न मैने उन्हे अपने गुसलखाने में ताला लगाकर बन्द कर दिया !"

वेलेतीन के दूसरे साथी ने अपनी आखे खोलीं और दो-तीन दफा अपना सिर बड़ी गम्भीरता से ऊपर-नीचे किया और बांसुरी की तरह सीटी बजाई, लेकिन वे लोग तब तक सराय पहुंच चुके थे और नाइट कैप पहने तथा दरवाजे पर एक लालटेन लिए खड़ी हृष्ट-पुष्ट नौकरानी ने न्यूमैन का बक्सा उस कुली से ले लिया, जो उनके पीछे-पीछे स्टेशन से आया था। वेलेंतीन को सराय की नीचे की मंजिल पर ही पीछे की तरफ एक कमरा दे दिया गया था और न्यूमैन का साथी पक्के रास्ते से होता हुआ आगे-आगे गया और उसने कमरे का दरवाजा खोल दिया। इसके बाद उसने न्यूमैन को इशारा किया। न्यूमैन आगे आया और उसने कमरा देखा। कमरे मे सिर्फ एक मोमबत्ती जल रही थी। आग के पास मो० द ग्रासजॉयज एक कुर्सी पर ड्रेसिंग गाउन पहने सो रहे थे—वे कुछ मोटे और गौर वर्ण के व्यक्ति थे, जिनसे न्यूमैन वेलेंतीन के साथ कई बार मिल चुका था। वेलेंतीन बिस्तर पर चुपचाप पड़ा था। उसका चेहरा बिलकुल पीला था और आंखें बन्द थीं। न्यूमैन ने वेलेंतीन को हमेशा बड़ा ही चुस्त देखा था। उसकी यह अवस्था देखकर न्यूमैन को गहरा धक्का लगा। मो० द ग्रासजॉयज़ के साथी ने सामने की ओर एक कमरे के खुले दरवाज़े की तरफ संकेत करके बहुत धीरे से बताया कि डाक्टर अन्दर है और वे वेलेंतीन की देखभाल कर रहे है। जब तक वेलेंतीन सो रहा है या ऐसा लगता है कि वह निद्रा में है, तब तक जाहिर है न्यूमैन उसके पास नहीं जा सकता। इसलिए न्यूमैन उस समय वापस चला आया और वह अधजगी नौकरानी के पीछे-पीछे चल दिया। वह न्यूमैन को सीढ़ियों से ऊपर ले गई, जहां एक कमरे में उसके लिए बिस्तर लगा

हुआ था। गद्दा खूब गुदगुदा था और उसपर पीली चादर बिछी थी। न्यूमैन लेट गया। वह करीब तीन-चार घण्टे सोया। जब वह जगा, तो धूप चढ़ आई थी और वह खिड़की के रास्ते कमरे में फैल गई थी। बाहर मुर्ग़ियों की कूं-कूं करने की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। अभी वह तैयार ही हो रहा था कि उसे मो० द ग्रासजॉयज का यह संदेश मिला कि वेलेंतीन के दोनों मित्र उसके साथ सुबह को नाश्ता करने का इंतज़ार कर रहे हैं। वह उतरकर नीचे गया। यहां पर पक्के फर्श के कमरे में भोजन की व्यवस्था थी। नौकरानी ने अपनी रात वाली टोपी उतार दी थी और वह नाश्ता परोस रही थी। मो० द ग्रास-जॉयज़ ने रात का काफी हिस्सा वेलेंतीन की परिचर्या में बिताया था, लेकिन इतने पर भी वे आश्चर्यजनक ढंग से ताज़े नजर आ रहे थे। वे अपने हाथ मल रहे थे और नाश्ते वाली मेज को बड़े ध्यान से देख रहे थे। न्यूमैन ने उनसे अपना पुनः परिचय किया और तब उसे पता लगा कि वेलेंतीन अभी भी सो रहा है; सर्जन के लिए भी रात काफी शांति से बीती। वह भी वहीं मौजूद था। मो० द ग्रासजॉयज के दूसरे साथी के आने के पहले न्यूमैन को पता चला कि उनका नाम मो० ल दॉज है और बेलगार्द तथा उनका परिचय तब से है, जब वे पोप के लिए लड़ने इटली गए थे। मो० ल दॉज 'अल्ट्रा मोन्तेने' के प्रसिद्ध बिशप के भतीजे हैं। अन्त में बिशप के भतीजे साहब ऐसी पोशाक में आए, जो उस विशेष स्थिति से मेल खाती हुई लगती थी। वे काफी गम्भीर थे और सराय के रसोईघर द्वारा परोसे गए सर्वोत्तम नाश्ते के प्रति बड़ी रुचि दिखला रहे थे। वेलेंतीन का नौकर, जिसे अपने मालिक के पास जाने का अवसर बहुत कम दिया जा रहा था, रसोईघर में थोड़ा-बहुत काम करा रहा था। दोनों फ्रेंच युवक इस बात को सिद्ध करने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे कि परिस्थितियां भले ही विषादपूर्ण हों, लेकिन उनमें भी वे बातचीत करने के अपने राष्ट्रीय गुण को भुलाने के लिए तैयार नहीं हैं। मो० ल दॉज ने बेचारे बेलगार्द की प्रशस्ति करते हुए संक्षेप में अपनी श्रद्धांजलि भी अर्पित कर दी। इस श्रद्धांजलि में उसने कहा कि बेलगार्द बड़ा ही आकर्षक अंग्रेज़ युवक है। इतने अच्छे व्यक्ति से उसका परिचय पहले कभी नहीं हुआ।

"आप उनको अंग्रेज़ कहते हैं?" न्यूमैन ने पूछा।

मो० ल दॉज एक क्षण के लिए मुस्करा दिए और फिर उन्होंने एक सूत्र

सुना डाला। "जो व्यक्ति अंग्रेज़ी भाषा और अंग्रेज़ी सभ्यता के लिए भागता फिरे, वह तो अंग्रेज से भी ज़्यादा है।" न्यूमैन ने गम्भीरतापूर्वक कहा कि ऐसा मैंने कभी नहीं देखा ; और मो० द ग्रासजॉयज़ ने कहा कि अभी से ही बेचारे बेल-गार्द को मरणोपरान्त दी जानेवाली श्रद्धांजलि दे डालना बहुत अधिक जल्द-बाज़ी है। "जाहिर है," मो० ल दॉज ने कहा, "लेकिन आज सवेरे मैं मि० न्यूमैन से यह कहे बिना नहीं रह सका था कि जब कोई व्यक्ति संसार से मुक्ति पाने के लिए ऐसा कार्य कर डाले, जैसाकि हमारे मित्र बेलगार्द ने किया है, तो फिर उसका ज़िन्दा रहकर अपने-आपको दुनिया के सकटों में फिर डालना बड़ी बुरी बात होती।" मो० ल दॉज कैथोलिक धर्म के कट्टर अनुयायी थे और वे न्यूमैन को बड़े अजीब लग रहे थे। दिन की रोशनी में उनका चेहरा मित्रतापूर्ण और काफी भरा-भरा-सा लग रहा था ; उनकी नाक पतली और बड़ी थी तथा वे कुछ-कुछ ऐसे व्यवित लग रहे थे, जैसे स्पेनिश चित्रों में होते हैं। उनका ख्याल था कि द्वन्द्व युद्ध बड़ी अच्छी व्यवस्था है, लेकिन उसी हालत में कि अगर किसी-को घातक रूप से चोट लग जाए, तो वहां पर पादरी तुरन्त मिल सके। ऐसा लगता था कि वेलेंतीन को पादरी से मिलाकर उन्हें बड़ा सतोष हुआ था। लेकिन फिर भी उनकी बातचीत से यह प्रकट नही होता था कि वे बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति के आदमी है। मो० ल दॉज सुसभ्य थे और उनकी हर बात से सुसंस्कृति और रुचि-सम्पन्नता प्रकट होती थी। वे हमेशा मुस्कराते रहते थे। (जिससे उनकी मूछें ऊपर चढ़कर नाक में घुस-सी जाती थी) और हमेशा कुछ कैफियत-सी देते रहते थे। जीवन कैसे व्यतीत किया जाए, इस विषय पर उनका विशेष अध्ययन था। उनके इस ज्ञान में यह भी शामिल था कि किस तरह मरना चाहिए। लेकिन न्यूमैन ने बिना कुछ कहे और मन ही मन काफी झुंझलाते हुए यह देखा कि मो० ल दॉज का व्याख्यान अधिकतर, किस प्रकार मरा जाए, इसी विषय पर होता था। मो० द ग्रासजॉयज़ बिलकुल भिन्न प्रकार के व्यक्ति थे। वे समझते थे कि उनके मित्र के धार्मिक प्रवचन एक ऐसे बहुत ही प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति के है, जिसको समझा नहीं जा सकता। ज़ाहिर था कि वे अपने बिनोदपूर्ण कोमल व्यवहार से वेलेंतीन को अतिम सास तक यथाशक्ति आराम पहुचाना चाहते थे। वे यह भी कोशिश कर रहे थे कि उन्हें 'बुलवर्द देस इतालियन्स' की याद न आए, लेकिन जो बात उन्हें अब भी तंग कर रही थी, वह यह थी कि एक शराब बनाने के कारखाने के

मालिक का लड़का, जिसे ठीक से गोली चलाना भी नहीं आता था, किस तरह बेलगार्द को इतना घातक निशाना लगाने में सफल हो गया। वे स्वयं भी गोली मारकर मोमबत्ती बुझा सकते थे और कुछ ऐसे ही अन्य काम कर सकते थे, लेकिन इतने पर भी उन्होंने स्वीकार किया था कि वे स्वय ही इतना अच्छा निशाना लगाने में समर्थ नही थे। इसके साथ ही उन्होने यह भी कहा कि वर्तमान स्थिति में मुझसे इतना अच्छा निशाना लगाना बिलकुल सम्भव नहीं था। इस तरह का हत्यारे कर्म का यह मौका नही था, हे भगवान ! ऐसे मौके पर तो ज़्यादा से ज़्यादा वे यही कर सकते थे कि किसी मासल उभरे हुए स्थान पर नुकसान न पहुंचानेवाली गोली का स्पर्श-भर करा देते। मो० स्टानीस्लास काप ने बड़ी निन्दनीय कठोरता दिखलाते हुए उनके मित्र को बुरी तरह घायल किया है। लेकिन कोई क्या कर सकता है, जब लोग शराब के कारखानो के मालिक के लड़के से द्वन्द्व युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं!·······मो० द ग्रासजॉयज़ के साधारणीकरण का यह स्पष्टतम उदाहरण था। वे खिड़की से बाहर मो० ल दॉज के कन्धों के ऊपर से देखते रहे। उनकी नज़र एक छोटे पेड़ पर टिकी हुई थी, जो एक गली के नुक्कड़ पर था। यह गली सराय के ठीक सामने थी। ऐसा लगता था कि वे अपने आगे की हुई बाह के सहारे अपने बीच और उस पेड़ के बीच की दूरी नापने का प्रयत्न कर रहे थे और मन ही मन यह सोच रहे थे कि अब चूंकि बात चल ही पड़ी है, इसलिए अगर पिस्तौल द्वारा थोड़ी-सी निशानेबाज़ी कर ली जाए, तो बहुत अनुचित बात नहीं होगी।

न्यूमैन इतनी बढ़िया मण्डली के साथ आनन्द से समय बिताने के लिए बिलकुल तैयार न था। न तो उससे खाया जा रहा था और न बातचीत की जा रही थी; दुःख और क्रोध से उसका रोम-रोम जल रहा था। उसे दो दुःख बिलकुल असह्य लग रहे थे। वह एकटक मेज़ पर रखी प्लेट को देख रहा था, एक-एक मिनट गिन रहा था और कभी-कभी तो उसकी यह इच्छा होती थो कि वेलेंतीन से मुलाकात जल्दी हो जाए, जिससे वह मदाम द सान्त्रे और अपनी खोई हुई खुशी की तलाश में जाने के लिए मुक्त हो जाए, लेकिन दूसरे ही [illegible] की इस भावना और अपनी पाशविक अधीरता के लिए वह अपने-आपको धिक्कारने लगता। न्यूमैन की वैसे भी ज़्यादा बातचीत करने की आदत नहीं थी, लेकिन इस समय वह बहुत अधिक सोच-विचार में पड़ा था। इसलिए बातचीत की दृष्टि से वह अन्य लोगों के लिए बेकार था।

वह इतना विचारमग्न था कि यह सोचे बिना नहीं रह सकता था कि बेलगार्द के दोनों मित्र बराबर यही सोच रहे होंगे कि ऐसा चुप्पा अमरीकन बेलगार्द का किस प्रकार मित्र हो गया। और इतना बड़ा मित्र कि बेलगार्द को उसकी आवश्यकता अपनी मृत्यु-शय्या पर भी पड़ रही है। नाश्ते के बाद न्यूमैन अकेला ही निकल पड़ा और गांव की ओर चल दिया। उसने झरना देखा, बतखें देखीं, खलिहानो के खुले दरवाजे देखे, सांवले रग की ऐसी बुढ़िया औरतें देखीं, जिनकी कमर झुकी हुई थी और जो लकड़ी के जूते पहने हुए थीं, जिनसे उनके रफू किए हुए मौजो की एड़ियां दिखलाई पड़ रही थी। उसने हिममण्डित आल्प्स पर्वत देखा और दूसरी तरफ बैंगनी जूरा पर्वत देखा। ये दोनो पहाड़ उस छोटी-सी सड़क के दाये-बाये थे। अच्छी-खासी धूप खिली हुई थी। हवा और धूप मे नव वसन्त का स्पर्श था। जाड़ों में जो बर्फ मकानों की छतों पर जम गई थी, अब वह पिघलकर छतों की किनारियों से पानी के रूप में धीरे-धीरे टपकने लगी थी। चारों तरफ प्रकृति में नवजीवन और चमक-दमक दिखलाई पड़ रही थी। चूज़े और बतखों के छोटे-छोटे बच्चे इधर-उधर आवाज़ें करते फिर रहे थे, और दूसरी ओर गरीब, मूर्ख, उदार और प्रिय बेलगार्द मृत्यु का और अपने दफन किए जाने का इतज़ार कर रहा था। न्यूमैन गांव के चर्च तक घूमता हुआ गया। और इसके बाद चर्च के पास बनी छोटी-सी कब्रगाह में गया। वह वहा जाकर बैठ गया और कब्रों पर लगे पत्थरों पर लिखी उन इबारतों को देखने लगा, जो चारों तरफ लगी थीं। वे सब अत्यन्त कठोर और कुत्सित लग रही थीं। वहां बैठकर न्यूमैन को मृत्यु की कठोरता और शीतलता के अतिरिक्त और कुछ अनुभव नहीं हुआ। वह उठ खड़ा हुआ और सराय वापस आ गया। यहां मो० ल दॉज ने एक छोटी-सी मेज़ उद्यान मे निकलवा ली थी। इस मेज़ पर हरा कपड़ा बिछा था और इसके पास एक कुर्सी पर बैठकर मो० ल दॉज कॉफी की चुस्कियां लेते हुए सिगरेट पी रहे थे। न्यूमैन को पता चला कि वेलेंतीन के पास डाक्टर अब भी बैठा हुआ है। न्यूमैन ने मो० ल दॉज से पूछा कि क्या मैं वेलेंतीन के पास बैठकर उसकी परिचर्या नहीं कर सकता और क्या डाक्टर को कुछ देर आराम का अवसर नहीं दे सकता? न्यूमैन ने कहा कि मेरी बहुत इच्छा है कि अपने घायल मित्र की कुछ सेवा कर सकू। इस बात का प्रबन्ध बड़ी आसानी से हो गया; डाक्टर बड़ी खुशी से आराम करने चले गए। डाक्टर अभी युवावस्था मे थे और उनका काम भी अच्छा ही चल रहा था। उनके चेहरे से चतुरता प्रकट

होती थी और उनके बटन के छेद में 'लीजन ऑफ ऑनर' का पदक लटक रहा था। न्यूमैन ने डाक्टर की वे सारी बातें बड़े ध्यान से सुनीं, जो उन्होंने अपने जाने के पहले बताईं। उन्होंने डाक्टर के हाथ से वह पुस्तक भी ले ली, जो डाक्टर ने यह कहते हुए दी थी कि इस पुस्तक के पास रहने से जागते रहने में सहायता मिलेगी। बाद में पता चला कि यह पुस्तक, 'फाबलास' की पुरानी प्रति है। वेलेंतीन अपने बिस्तर में आखें बन्द किए हुए चुपचाप पड़ा हुआ था और उसकी हालत में जाहिरा तौर पर कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ था। न्यूमैन उसके पास बैठ गया और बड़ी देर तक उसे गौर से देखता रहा। इसके बाद वह अपनी स्थिति पर विचार करने लगा। दीवार पर एक सूती परदा टंगा था, जिसपर चित्र बने हुए थे। उसकी आखें आल्प्स पर्वतमाला पर टिक गईं। खिड़की से कमरे में धूप आ रही थी और लाल फर्श पर पड़ रही थी। उसने भविष्य के सम्बन्ध में आशापूर्ण ढंग से विचार करना शुरू किया, लेकिन उसे ऐसा करने में आंशिक सफलता ही मिली। उसे ऐसा लगा कि जो कुछ हुआ है, वह अत्यन्त ही भयंकर काण्ड है और इसमें काल तथा नियति की क्रूरता और विडम्बना निहित है। जो कुछ हुआ था, वह बड़ा ही अस्वाभाविक तथा भयकर था और न्यूमैन के पास उससे बचने का कोई साधन न था। अकस्मात् कमरे की स्तब्धता को भंग करते हुए न्यूमैन के कानों में एक आवाज पड़ी। यह वेलेंतीन का कण्ठस्वर था।

"यह आप मुंह बिगाड़-बिगाड़कर सोच रहे हैं; कम से कम मेरे बारे में तो नहीं सोच रहे!" न्यूमैन ने मुड़कर देखा। वेलेंतीन अब भी उसी तरह लेटा था, जैसी मुद्रा में उसने पहले देखा था, लेकिन वेलेंतीन की आंखें खुली हुई थी और वह मुस्कराने की कोशिश कर रहा था। न्यूमैन ने उसके हाथ पर अपना हाथ रखा। वेलेंतीन ने मित्रता का भाव प्रकट करने के लिए न्यूमैन का हाथ दबाया, लेकिन उसमें न्यूमैन का हाथ दबाने की शक्ति न थी। "मै कोई पन्द्रह मिनट से आपको देख रहा हूं," वेलेंतीन कह रहा था, "आपका चेहरा बहुत ही उदास है। मैं देखता हूं कि आप मुझपर बहुत ही नाराज-से हैं। ठीक है, निस्संदेह मैं भी अपने-आपपर नाराज़ हूं!"

"ओह, मैं तुम्हें डांटूंगा नहीं," न्यूमैन ने कहा, "सच तो यह है कि मुझे बड़ा बुरा लग रहा है और बहुत दु:ख हो रहा है। अच्छा, तबियत कैसी है?"

"ओह, बस चलनेवाला हूं! वे लोग तो कह ही गए हैं; नहीं क्या?"

"वे लोग क्या कह गए हैं ? यह बात तो तुम्हारे हाथ में है । अगर तुम कोशिश करो, तो अच्छे हो सकते हो," न्यूमैन ने अपने चेहरे पर प्रसन्नता लाते हुए कहा ।

"मेरे प्यारे मित्र, मैं क्या कोशिश करूं ? कुछ भी करना मेरे लिए बहुत ही कठिन है । एक ऐसा आदमी, जिसके पार्श्व में आपके हैट जितना बड़ा छेद हो गया हो और जो अगर बाल-बराबर भी हिलता है, तो बुरी तरह खून बहने लगता है, ऐसा आदमी क्या कोशिश कर सकता है ! मैं जानता था कि आप ज़रूर आएंगे," बेलगार्द ने कहा, "मैं जानता था कि जब मैं जागूंगा, तो आप मुझे यहां बैठे मिलेंगे ; इस-लिए मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ । लेकिन कल रात मैं बहुत घबरा गया था । मेरी समझ में नहीं आता था कि मैं उस समय तक कैसे शान्त रहूं, जब तक आप आएंगे । मुझे केवल इसी प्रकार पड़ा रहना था । ठीक इसी तरह, जैसे अब लेटा हुआ हूं । मेरी हालत उस 'ममी' की तरह थी, जो बक्स में बन्द कर दी जाती है । आप मुझसे कोशिश करने के लिए कह रहे हैं ; मैंने कोशिश भी की है, देख लीजिए आपके सामने हाज़िर हूं—ये बीस घण्टे, ऐसा लगता है, जैसे बीस दिन बीत गए हैं ।" बेलगार्द धीरे-धीरे क्षीण स्वर में बोल रहा था, लेकिन उसके शब्द बहुत स्पष्ट थे । मगर देखने से प्रकट हो जाता था कि उसके बहुत दर्द हो रहा है और आखिर उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं । न्यूमैन ने उससे अनुरोध किया कि वह चुपचाप पड़ा रहे और आराम करे । डाक्टर भी यही आदेश बड़ी कठोरता से दे गया है । "ओह," वेलेंतीन ने कहा, "हम लोगों को खाना-पीना चाहिए, क्योंकि कल—कल—" और वह फिर रुक गया । "नहीं, कल नहीं, शायद आज ही । मैं खा नहीं सकता, पी नहीं सकता, लेकिन बात कर सकता हूं । अब इस हालत में किसी चीज़ को न करने से क्या फायदा है ? लेकिन इतनी बड़ी बातें करने से क्या लाभ ? मैं हमेशा से बड़ा बातूनी रहा हूं ; हे भगवान, अपने जीवन में मैंने कितनी बातें की हैं !"

"यही तो कारण है कि अब तुम्हें चुप रहना चाहिए," न्यूमैन ने कहा, "हम जानते हैं कि तुम कितनी अच्छी बातें करते हो । पता है न ?"

लेकिन वेलेंतीन ने कुछ नहीं सुना । वह अपने क्षीण स्वर में बोलता ही गया, ठीक वैसे ही, जैसे कोई मरणासन्न व्यक्ति बोलता जाता है । "मैं आपसे मिलना चाहता था, क्योंकि आप मेरी बहन से मिले होंगे । क्या उन्हें पता है—क्या वे आएंगी ?"

न्यूमैन बड़े संकोच में पड़ गया । "हां, इस समय तक उनको पता लग गया होगा ।"

"क्या आपने उन्हे नहीं बताया ?" वेलेंतीन ने पूछा। और इसके एक क्षण बाद ही उसने कहा, "क्या आप उनका कोई सन्देश मेरे लिए नहीं लाए ?" वेलेंतीन की दृष्टि यह प्रश्न पूछने के बाद न्यूमैन के चेहरे पर टिक गई। प्रतीत हो रहा था कि वह बड़ी उत्सुकता से उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है।

"आपका तार मिलने के बाद मैं उनसे नहीं मिल सका." न्यूमैन ने कहा, "मैंने उन्हे पत्र लिख दिया था।"

"और फिर भी मेरी बहन ने उसका कोई उत्तर नहीं भेजा ?"

न्यूमैन को बताना पड़ा कि मदाम द सान्त्रे पेरिस से चली गई हैं। "वे कल फ्लूरीयर्स चली गई।"

"कल—फ्लूरीयर्स गई ? वे फ्लूरीयर्स क्यों गई हैं ? आज कौन-सा दिन है ? कल कौन-सा दिन था ? आह, तब मैं उनको नही देख सकूंगा," वेलेंतीन ने बहुत ही दुःखपूर्वक कहा। "फ्लूरीयर्स तो बहुत ही दूर है !" और उसने अपनी आंखें फिर बन्द कर लीं। न्यूमैन चुपचाप बैठा रहा और सोचता रहा कि ऐसा कौन-सा बहाना बतलाए, जिससे कोई अप्रिय स्थिति उत्पन्न न हो, लेकिन जब उसने देखा कि वेलेंतीन बहुत ही क्षीण है और तर्क-वितर्क या अपनी जिज्ञासा प्रकट करने में समर्थ नहीं है, तो उसे कुछ राहत मिली। बेलगार्द फिर भी कुछ देर बाद बोल उठा—"और मेरी मां—और मेरा भाई—क्या वे लोग आएंगे ? क्या वे भी फ्लूरीयर्स गए ?"

"वे लोग पेरिस में थे, लेकिन मैं उनमें से किसीसे नहीं मिला," न्यूमैन ने उत्तर दिया। "अगर आपका तार उन्हें समय से मिल गया होगा, तो वे आज सवेरे चल दिए होंगे। अन्यथा उन्हें रात को चलनेवाली ऐक्सप्रेस की प्रतीक्षा करनी होगी और फिर वे कल सवेरे यहां पहुंचेंगे। जैसे मैं आज सवेरे यहां पहुंचा हूं।"

"इस सबके लिए वे मुझे धन्यवाद नहीं देंगे—धन्यवाद नहीं देंगे," वेलेंतीन ने फुसफुसाते हुए कहा। "उनकी सारी रात बड़े कष्ट में बीतेगी और अरबेन को तो सवेरे उठना जरा भी पसन्द नहीं है। मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी भी अरबेन को दोपहर से पहले नहीं देखा—दोपहर के नाश्ते के पहले। किसीने भी नहीं देखा। हमें नहीं पता कि इसके पहले उसका समय कैसे बीतता है। सम्भवतः उसका स्वभाव हम लोगों से भिन्न है। कौन जानता है ? शायद बाद की पीढ़ी

को पता लगे । वह सवेरे अपने कमरे में राजकुमारियों का इतिहास लिखता होगा। लेकिन मुझे उन्हें खबर भेजनी ही पड़ी और यहां बुलाना पड़ा—नहीं क्या ? और फिर मैं चाहता हूं कि मेरी मां यहां आकर बैठें, उस कुर्सी पर, जहां आप बैठे हुए हैं और मैं उनसे हमेशा के लिए विदा ले सकूं, उन्हे अंतिम बार प्रणाम कर सकूं। शायद मैं अभी उनको पहचान नहीं पाया हूं। क्या पता अब भी मुझे वे कोई आश्चर्यजनक खबर दें। आप भी यह मत सोचिएगा कि आप उन्हें भली भांति जान गए हैं ; वे आपको भी आश्चर्यचकित कर सकती हैं। लेकिन अगर मै क्लेयर से नही मिल सकता, उसे देख नहीं सकता, तो मुझे किसी चीज़ की परवाह नही है। मै उन्हींके बारे में सोच रहा था, सपने में भी उन्हीको देख रहा था। वे आज फ्लूरीयर्स क्यों गई ? उन्होंने मुझसे तो कुछ नहीं कहा था। हुआ क्या ? आह, कम से कम उन्हे यह कल्पना कर लेनी चाहिए थी कि यहां हूं—इस हालत में हूं। जीवन में पहली दफा मेरी बहन ने मुझे निराश किया है। बेचारी क्लेयर !"

"तुम्हें यह तो पता ही है कि अभी हम दोनों पति-पत्नी नहीं हुए हैं—तुम्हारी बहन और मैं," न्यूमैन ने कहा, "इसलिए वे जो कुछ करती हैं, उसकी सफाई मुझे देने के लिए वे बाध्य नहीं है।" और वह एक विशेष प्रकार से मुस्करा दिया।

वेलेंतीन ने एक क्षण के लिए उसकी तरफ देखा। "आप दोनों में लड़ाई हुई है ?"

"नहीं, नहीं, नही।" न्यूमैन ने ज़ोर से कहा।

"ओह, आप कितनी प्रसन्नता से यह बात कह रहे हैं," वेलेंतीन ने कहा। "आपका जीवन सचमुच बड़ा सुखी होगा—वाह !" इस विडम्बना के उत्तर में बेचारा न्यूमैन कुछ नहीं कह सका और केवल असहाय भाव से वेलेंतीन को एकटक घूरता रहा। उधर वेलेंतीन बराबर तेज़ निगाहों से उसकी तरफ देख रहा था। वेलेंतीन फिर बोला, "लेकिन कोई बात तो ज़रूर है। मैं अभी आपको देख रहा था; आपके चेहरे में वह बात नहीं है, जो किसी ऐसे व्यक्ति के मुखमण्डल पर होती है, जिसका विवाह होनेवाला होता है।"

"मेरे प्यारे दोस्त!" न्यूमैन ने कहा, "मै तुम्हें दूल्हे का मुंह कैसे दिखा सकता हूं ? क्या तुम्हारा ख्याल है कि मै आपको यहां इस हालत में पड़ा देखकर और

तुम्हारी कुछ भी सेवा करने योग्य न पाकर मन ही मन बड़ा प्रसन्न हो रहा हूं ?"

"क्यों, आप जैसे आदमी को खुश होना ही चाहिए। आप अपने अधिकार को क्यों छोड़ें ? मैं आपकी बुद्धिमानी का जीता-जागता प्रमाण हूं। कोई भी व्यक्ति जो यह कह सकता हो, 'देखो मैंने पहले ही कहा था ?' ऐसी बात मुझसे कह सकनेवाला व्यक्ति उदास क्योंकर हो ? और आपने भी मुझे पहले ही बता दिया था। मुझे चेतावनी दे दी थी। आपको याद है न ? आपने मुझे रोकने की भी भरसक चेष्टा की, बडी अच्छी बातें कही। मैंने उन सबपर विचार किया। लेकिन मेरे दोस्त, मै सही था। यही तो हमारी परम्परागत नीति रही है।"

"मैंने वह नहीं किया, जो मुझे करना चाहिए था," न्यूमैन ने कहा, "मुझे कुछ और करना चाहिए था।"

"उदाहरण के लिए ?"

"ओह, कुछ न कुछ करना ही चाहिए था। मुझे आपके साथ एक छोटे बालक जैसा व्यवहार करना चाहिए था।"

"ठीक है, इस समय तो मै छोटा बालक ही हूं," वेलेंतीन ने कहा, "इस समय तो मेरी हालत एक शिशु से भी गई-बीती है। शिशु असहाय होता है, लेकिन उसके लिए भविष्य में यह आशा तो होती है कि वह अपने हाथ-पैर का हो जाएगा। लेकिन मेरे सम्बन्ध में तो यह बात भी नहीं है, है न ? खैर, मेरे मर जाने से समाज का कोई बहुत उपयोगी सदस्य दुनिया से नहीं उठ जाएगा।"

न्यूमैन वेलेंतीन की बातें सुनकर छटपटा उठा। वह उठ खड़ा हुआ और उसने अपने दोस्त की ओर से पीठ फेर ली और खिड़की की तरफ चला गया। खिड़की की ओर जाकर वह बाहर की ओर देखने लगा। लेकिन उसकी आंखों के आगे धुंधलका-सा छा गया था और सारी चीजें धुधली पड़ गई। "नहीं, मुझे आपका पीठ देखना पसन्द नहीं है," वेलेंतीन ने कहा, "मैं हमेशा से लोगों की पीठें देखता रहा हूं; आपकी पीठ उन सब लोगों से अलग है।"

न्यूमैन वेलेंतीन के बिस्तर के पास वापस लौट आया और उससे अनुरोध करने लगा कि वह शान्त रहे। "चुप रहो, ज्यादा बातें मत करो और जल्दी से अच्छे हो जाओ," न्यूमैन ने कहा, "यही तो तुम्हे करना चाहिए। जल्दी से अच्छे हो जाओ और फिर मेरी मदद करना।"

"मैंने आपसे कहा नहीं था कि आप किसी संकट में है ! मैं आपकी क्या मदद

कर सकता हूं ?" वेलेंतीन ने पूछा ।

"तुम अच्छे तो हो जाओ, फिर मैं तुम्हें सब बताऊंगा । तुम हमेशा से ज़रूरत से ज़्यादा उत्सुकता दिखाते रहे हो, जिज्ञासु रहे हो, तुम्हें अच्छे होकर कुछ काम करना है !" न्यूमैन ने बड़े भावावेश से कहा ।

वेलेंतीन ने अपनी आंखें फिर बन्द कर लीं और बड़ी देर तक बिना कुछ बोले पड़ा रहा । ऐसा लगता था कि वह सो गया है । लेकिन आधे घण्टे बाद उसने फिर बोलना शुरू कर दिया । "मुझे बैंक वाली उस नौकरी के सम्बन्ध में बड़ा खेद है । कौन जानता है कि मै बहुत बड़ा बैंक व्यवसायी न बन जाता ? लेकिन मैं बैंकर होने लायक नहीं था । बैंकर लोग इतनी आसानी से गोली के शिकार नहीं हो जाते । क्या आपका ख्याल नही है कि मुझे बड़ी आसानी से मार डाला गया है ? यह गम्भीर पुरुषों जैसी बात नहीं है । सचमुच बड़ी ही कष्टदायक स्थिति है । ठीक उसी तरह से जैसे आप तो यह सोच रहे हों कि आपकी मेज़बान महिला आपसे यह कहेगी कि आप ठहरिए, रुकिए, अभी मत जाइए ; लेकिन वह आपसे इसके प्रतिकूल यह आकर कहे कि नहीं, आप रुक नहीं सकते, आपको अभी ही चला जाना चाहिए । सचमुच—इतनी जल्दी, अभी तो आप आए ही थे ! ज़िन्दगी मुझसे ऐसी कोई विनम्र बात नहीं कह रही है ।"

न्यूमैन कुछ देर बोल नही सका । आखिर उसके धीरज का बांध टूट गया । "बड़ा खराब है—बड़ा खराब है यह मामला । मैं कभी भी ऐसे व्यक्ति से अपने जीवन में नहीं मिला । मैं कोई अप्रिय बात नहीं कहना चाहता, लेकिन क्या करूं, मुझसे चुप नहीं रहा जाता । मैंने बहुत-से आदमियों को मरते हुए देखा है—और मैंने यह भी देखा है कि लोगों को गोली मारी गई है, लेकिन मुझे हमेशा लगा है कि यह साधारण-सी बात है ; वे लोग तुम जैसे चतुर नहीं थे । हाय,—हाय ! तुम इससे बेहतर भी तो कुछ काम कर सकते थे । कोई आदमी इस तरह से इतनी दु:खान्त परिस्थितियों में अपनी जान दे, इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता ।"

वेलेंतीन ने अपना हाथ इधर से उधर हिलाया, लेकिन उससे बड़ी कमज़ोरी प्रकट हो रही थी । "न कहिए—न कहिए ! बहुत ही बुरा है—निश्चय ही बड़ा बुरा हुआ है । इस समय आपको बड़ी ही निराशा हो रही है, बहुत दु:ख हो रहा है—मैं मानता हूं । मै आपसे सहमत हूं !"

इसके कुछ देर बाद डाक्टर ने दरवाज़ा आधा खोलकर उसमें से अन्दर की तरफ झांका। वेलेंतीन को जगा हुआ देखकर डाक्टर अन्दर आ गया और उसने नाड़ी देखी। सिर हिलाते हुए उसने कहा कि वेलेंतीन ने बहुत ज्यादा बातें की हैं—दस गुनी अधिक। "बेकार की बात है!" वेलेंतीन ने कहा, "एक ऐसा आदमी, जिसको मृत्यु-दण्ड मिल चुका हो, कभी भी जरूरत से ज़्यादा बात नहीं कर सकता। क्या आपने कभी भी अखबारों में किसी बन्दी को फांसी की सज़ा दिए जाने का ब्योरा नहीं पढ़ा है? क्या वे लोग बन्दी के पास वकीलों, रिपोर्टरों, पादरियों आदि बहुत-से लोगों को नहीं भेजते, जिससे वह बातें कर सके? लेकिन इसमें मि० न्यूमैन की कोई गलती नहीं है। वे तो बिलकुल मौत के पुतले की तरह चुपचाप बैठे हुए हैं।"

डाक्टर ने कहा कि मरीज के घाव की फिर मरहम-पट्टी का वक्त हो गया है। मो० द ग्रासजाँयज़ और मो० ल दाँज, जिन्होंने पहले भी मरहम-पट्टी का यह नाज़ुक काम देखा था, वे न्यूमैन के स्थान पर डाक्टर की सहायता के लिए आ गए। न्यूमैन हट आया और उसे, कमरे के बाहर जो लोग खड़े देख रहे थे, उनसे पता चला कि अरबेन द बेलगार्द का तार आ गया है। इस तार में लिखा है कि रू द ला यूनिवर्सिते में बेलगार्द के सम्बन्ध में सूचना इतनी देर से मिली कि प्रातःकाल की ट्रेन पकड़ना सम्भव न था, लेकिन अरबेन अपनी मां के साथ रात की ट्रेन से रवाना होगा। न्यूमैन फिर गांव की ओर घूमने चला गया और दो-तीन घण्टे बड़ा बेचैन-सा इधर-उधर टक्करें मारता रहा। दिन बिताए नहीं बीत रहा था। सांझ पड़े वह वापस लौटा और उसने डाक्टर तथा मो० ल दाँज के साथ भोजन किया। वेलेंतीन के घाव की मरहम-पट्टी बड़ी कठिन सिद्ध हुई। डाक्टर की समझ में नहीं आ रहा था कि मरीज दोबारा घाव की मरहम-पट्टी के दौरान होनेवाले कष्ट को किस प्रकार सह सकेगा। ज़ाहिर था कि अन्य किसी भी व्यक्ति की तुलना में न्यूमैन ही बेलगार्द को बोलने के लिए प्रेरित कर सकता था, यह उसका असुविधाजनक अधिकार था, लेकिन इसपर वह खुश हो सकता था। मो० ल दाँज इस बीच चुपचाप एक गिलास शराब चढ़ा गए थे। वे यह सोच रहे थे कि आखिर इस अमरीकन में ऐसी क्या बात है, जो न्यूमैन को देखते ही वेलेंतीन इतना अधिक बोलने लगता है।

रात के भोजन के बाद न्यूमैन ऊपर अपने कमरे में चला गया, जहां वह

बड़ी देर तक जलती हुई मोमबत्ती को देखता रहा और सोचता रहा कि नीचे वेलेंतीन दम तोड़ रहा है। बहुत देर बाद जब मोमबत्ती काफी छोटी रह गई, तो दरवाजे पर किसीने आहिस्ते थपकी दी। बाहर डाक्टर खड़ा था, उसके हाथ में मोमबत्ती थी और वह अपने कंधे उचका रहा था।

"वह अब भी बात करना चाहता है!" वेलेंतीन के डाक्टर ने कहा, "वह आग्रह कर रहा है कि मैं आपसे मिलूंगा और मेरा ख्याल है कि आप मेरे साथ चलें। जो हालत है, उसे देखते हुए मुझे नहीं लगता कि रात कट सकेगी।"

न्यूमैन फिर वेलेंतीन के कमरे में पहुंच गया। वहां आतिशदान पर एक ढिबरी जल रही थी। वेलेंतीन ने आग्रह किया कि मोमबत्ती जला दी जाए। "मैं आपका चेहरा देखना चाहता हूं," उसने कहा, "ये लोग कहते हैं कि आपको देखकर मैं बहुत बातें करने लगता हूं," वेलेंतीन बोले चला जा रहा था, जबकि न्यूमैन उसके अनुरोध के अनुसार मोमबत्ती जलाने में लगा था। "और मैं यह स्वीकार करता हूं कि आपको देखकर मुझे बोलने की इच्छा हो आती है। लेकिन इसका कारण आप नहीं हैं—ये मेरे अपने ही विचार हैं। मैं सोच रहा था—सोचे जा रहा था। यहां बैठिए, और मुझे अपने चेहरे को फिर देखने दीजिए।" न्यूमैन बैठ गया, उसने अपने दोनों हाथ बांध लिए, और अपने मित्र को बड़ी ही कारुणिक दृष्टि मे देखने लगा। उसे ऐसा लग रहा था कि वह मशीन की तरह अपनी भूमिका निभाए जा रहा है, जो एक दु:खभरा नाटक है। वेलेंतीन कुछ देर उसे देखता रहा। "हां, मैंने जो बात आज सवेरे कही थी, वह ठीक थी; आप कुछ ऐसी बात सोच रहे हैं, जो वेलेंतीन द बेलगार्द से भी अधिक दुखदायी है। बताइए, मैं मौत के मुंह में पड़ा हुआ हूं और मुझे धोखा देना अच्छा नहीं है। मेरे पेरिस से रवाना होने के बाद कोई बात हुई है। बिना बात मेरी बहन आजकल के मौसम में फ्लूरीयर्स नहीं जा सकती। वह वहां क्यों गई? यह बात मुझे बार-बार कचोट रही है। मैं निरन्तर यही बात सोच रहा हूं और अगर आपने मुझे सच बात नहीं बताई, तो मै अपना अनुमान कह डालूंगा।"

"बेहतर यही होगा कि इस समय मैं तुमसे कुछ न कहूं," न्यूमैन ने कहा, "इससे आपको कोई लाभ न होगा।"

"अगर आप यह सोचते हैं कि मुझे न बताने से कोई लाभ होगा, तो यह आपकी बड़ी भूल है। आपकी शादी को लेकर कोई झगड़ा हुआ है न?"

"हां," न्यूमैन ने कहा, "शादी के बारे मे झगड़ा हुआ है।"

"ठीक !" और वेलेंतीन फिर चुप हो गया। "उन्होंने शादी रोक दी है।"

"उन्होने शादी रोक दी है," न्यूमैन ने कहा। अब चूकि पूरी बात खुल गई थी, इसलिए न्यूमैन को हर क्षण के बाद सन्तोष होता जा रहा था। "तुम्हारी मा और भाई ने मेरे साथ विश्वासघात किया है। उन्होंने यह फैसला कर दिया कि शादी नहीं हो सकती। उनका कहना था कि मैं घर का दामाद बनने योग्य नही हूं। वे अपने वचन से फिर गए। क्योंकि आप आग्रह कर रहे हैं, इसलिए मैं सच-सच बात बताए दे रहा हूं !"

वेलेंतीन के मुंह से कराह-सी निकल गई। उसके दोनो हाथ एक क्षण के लिए उठे और फिर अपने-आप गिर गए।

"मुझे बड़ा अफसोस है कि मैं उन लोगो के बारे में आपसे और कोई ज़्यादा अच्छी बात नहीं कह सकता," न्यूमैन कहे जा रहा था, "लेकिन इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। सच तो यह है कि जब आपका तार मिला, तो मैं शोक-सागर में डूबा हुआ था। मेरी हालत बहुत ही खराब थी। अब आप ही सोच सकते हैं कि इस समय भी मै कुछ ठीक हूं या नहीं।"

वेलेंतीन की सांस तेज़ी से ऊपर-नीचे चल रही थी और वह बराबर कराह रहा था, जैसेकि उसके घाव का दर्द लहरें मार रहा हो। "विश्वासघात किया, विश्वासघात किया !" वेलेंतीन फुसफुसाया, "और मेरी बहन—मेरी बहन ?"

"तुम्हारी बहन बहुत दुःखी हैं। वे मुझे त्यागने को सहमत हो गई हैं। मैं नहीं जानता क्यों। मैं नहीं जानता कि उन्होने उनके साथ क्या किया; जरूर ही कोई ऐसी बात की है, जो बहुत खराब है। उनके बदल जाने के औचित्य को समझने के लिए आप ही जान सकते हैं कि उन लोगों ने आपकी बहन के साथ क्या व्यवहार किया होगा। उन्हें बड़ी यंत्रणा दी गई। मैं उनसे अकेले में बात नहीं कर सका, जो बातें हुईं, वे सब उन लोगों के सामने ही हुईं। हमारी मुलाकात कल सुबह हुई थी। उन लोगों ने साफ शब्दों में शादी से इन्कार कर दिया। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अपना रास्ता नापूं। बड़ा ही खराब मामला दीखता है। मैं नाराज़ हूं, क्षुब्ध हूं, मैं बहुत दुःखी हूं।"

वेलेंतीन बिस्तर पर पड़ा एकटक देखे जा रहा था, लेकिन उसकी आंखों में और ज़्यादा चमक थी। दोनों होंठ निःशब्द खुल गए थे और पीले मुंह पर भी कुछ

लाली आ गई थी। न्यूमैन ने कभी भी इतने दुःखपूर्ण शब्द अपने मुंह से नहीं निकाले थे, लेकिन अब बेचारे दम तोड़ते हुए ग़रीब वेलेंतीन के सामने अपने भावोद्‌गार प्रकट करते हुए न्यूमैन को ऐसा लगा कि वह एक ऐसी शक्ति के सामने शिकायत कर रहा है, जिसके पास कष्ट में पड़ने पर लोग प्रार्थना के लिए जाते हैं। उसे ऐसा लगा कि विरोध का यह विस्फोट उसका आध्यात्मिक अधिकार-सा है।

"और क्येलर," बेलगार्द ने कहा, "क्लेयर? उसने भी कह दिया कि मैं शादी नहीं करूंगी?"

"सच तो यह है कि उनकी इस बात पर मुझे विश्वास नहीं है," न्यूमैन ने कहा।

"नहीं, उसकी इस बात का विश्वास न कीजिए, उसकी इस बात का विश्वास न कीजिए, वह समय चाहती है, उसे माफ कर दीजिए।"

"मुझे उनपर बड़ा तरस आ रहा है।" न्यूमैन ने कहा।

"बेचारी क्लेयर!" वेलेंतीन ने फुसफुसाकर कहा। "लेकिन वे लोग—लेकिन वे लोग,"—और वह फिर रुक गया। "आपने उन लोगों से मुलाकात की थी; उन्होंने आपको आपके मुह पर चले जाने के लिए कह दिया?"

"बिलकुल मुंह पर। बडे स्पष्ट ढंग से उन्होने सारी बात कह दी।"

"उन लोगों ने क्या कहा?"

"उन्होंने कहा कि हम अपने घर में एक व्यापारी को दामाद बनाना बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

वेलेंतीन ने अपना हाथ बढ़ाकर न्यूमैन की बांह पर रख दिया। "और उन्होंने अपने वादे के बारे में, अपने वचन के बारे में क्या कहा?"

"उन्होंने इसमें भेद किया है। उनका कहना था कि हमारा वचन केवल उस समय तक के लिए ही था, जब तक मदाम द सान्त्रे मुझे पति बनाने के लिए राजी नहीं हो जातीं।"

वेलेंतीन कुछ देर एक जगह नज़र गड़ाए देखता रहा और उसके चेहरे की लालिमा लुप्त हो गई। "मुझे और अधिक न बताइए," अन्त में उसने कहा, "मैं लज्जित हूं।"

"तुम? तुम तो सम्मान की मूर्ति हो," न्यूमैन ने कहा।

वेलेंतीन कराहने लगा और उसने अपना सिर दूसरी तरफ घुमा लिया। कुछ

देर दोनों में से किसीने कुछ नहीं कहा। इसके बाद वेलेंतीन ने फिर करवट बदली और न्यूमैन की बांह को थोड़ा-सा दबाने में सफलता पाई। "बड़ी खराब बात है—बड़ी खराब बात है। जब हमारे लोग—मेरी जाति—इस सबपर उतर आए, तो मेरे लिए यही अच्छा है कि मैं चल बसू। मुझे अपनी बहन पर विश्वास है; वह अवश्य सफाई देगी। उसे माफ कर दीजिए। अगर वह शादी न कर सके—अगर वह शादी न कर सके, माफ कर दीजिए। उसने बड़ा दुःख भोगा, लेकिन और लोगों के लिए यह बहुत बुरा है—बहुत बुरा। आपको बडा आघात लगा? नहीं, आपसे यह कहलवाना मेरे लिए बड़ी लज्जा की बात है।" उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और फिर चारों तरफ स्तब्धता छा गई। न्यूमैन का रोम-रोम सिहर उठा; उसे इस बात का ख्याल भी नहीं था कि वह वेलेंतीन को इतना अधिक व्यथित कर देगा। वेलेंतीन ने फिर उसकी ओर देखा और अपना हाथ उसकी बांह से हटा लिया। "मैं आपसे क्षमायाचना करता हूं," उसने कहा। "आप समझते हैं न? मैं यहां मृत्यु-शय्या पर पड़ा हूं। मैं आपसे अपने परिवार की ओर से क्षमा मांगता हूं। अपनी मां की तरफ से। अपने भाई की तरफ से। अपने प्राचीन घराने बेलगार्द परिवार की तरफ से। देखिए!" उसने आहिस्ते से कहा।

न्यूमैन ने जवाब में केवल उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया और बड़े ही करुणापूर्ण ढंग से उसे दबाया। वेलेंतीन चुप रहा और आधे घण्टे बाद आहिस्ते से डाक्टर अन्दर आया। उसके पीछे अधखुले दरवाज़े से न्यूमैन ने मो० द ग्रास-जॉयज़ और मो० ल दॉंज के प्रश्नसूचक चेहरे देखे। डाक्टर ने वेलेंतीन की कलाई पर अपना हाथ रखा और बैठकर उसे देखने लगे। डाक्टर ने कोई संकेत नहीं किया और वेलेंतीन के दोनों साथी अन्दर आ गए। मो० ल दॉंज ने अन्दर आकर बाहर किसीको इशारा किया कि वह अन्दर आ जाए। यह पादरी थे, जिनके हाथ में कोई चीज थी। न्यूमैन इसे पहचान न सका। पादरी ठिगने कद के गोल-मटोल शरीर वाले व्यक्ति थे। उनका चेहरा सुर्ख था। वे आगे बढ़े और उन्होंने अपनी छोटी काली टोपी उतारकर न्यूमैन को दे दी तथा अपने हाथ की चीज़ मेज़ पर रख दी और इसके बाद वे सबसे बढ़िया हत्थे वाली कुर्सी पर अपने हाथ बांधकर बैठ गए। अन्य लोगों ने आपस में एक-दूसरे को देखा और पादरी की सामयिक उपस्थिति पर सन्तोष प्रकट किया। लेकिन बड़ी देर तक वेलेंतीन न तो कुछ बोला और न हिला-डुला। न्यूमैन को बाद में ख्याल आया कि इस

बीच पादरी महाशय भी सो गए थे। आखिर यकायक वेलेंतीन ने न्यूमैन का नाम लिया। न्यूमैन उसके पास गया, तो उसने फ्रेंच में कहा, "आप अकेले नहीं हैं, मैं आपसे अकेले में बात करना चाहता हूं।" न्यूमैन ने डाक्टर की तरफ देखा और डाक्टर ने पादरी की तरफ और पादरी ने अपने पीछे देखा ; इसके बाद डाक्टर और पादरी ने अपने कन्धे उचकाए। "एकान्त, केवल पांच मिनट के लिए," वेलेंतीन ने फिर कहा, "हमें अकेला छोड़ दीजिए।"

पादरी ने मेज़ पर रखा अपना सामान उठाया और बाहर चला गया। बाद में पीछे-पीछे और लोग भी चले गए। न्यूमैन ने उनके जाने के बाद दरवाज़ा बन्द कर लिया और वेलेंतीन के बिस्तर के पास लौट आया। वेलगार्द यह सारी कार्रवाई बड़े ध्यान से देखता रहा।

"यह बड़ा बुरा हुआ, यह बड़ा बुरा हुआ," उसने न्यूमैन को अपने पास बैठाने के बाद कहा। "जितना ही मैं इस बारे में सोचता हूं, उतना ही ज़्यादा बुरा मुझे लगता है।"

"ओह, इस बारे में मत सोचो," न्यूमैन ने कहा।

लेकिन वेलेंतीन की कोई बात नहीं सुन रहा था, वह कहे जा रहा था। "अगर वे लोग अब किसी तरह राज़ी भी हो जाएं, तो भी शर्म—नीचता—तो रहेगी ही।"

"ओह, अब वे लोग कभी राजी नहीं होंगे!" न्यूमैन ने कहा।

"लेकिन आप उन्हें राजी कर सकते हैं।"

"राजी कर सकता हूं ?"

"मैं आपको एक बात बता सकता हूं—बड़े रहस्य की—बड़ी ही गुप्त बात। आप उसका प्रयोग उनके खिलाफ कर सकते हैं—उन्हें डरा सकते हैं, उन्हें मजबूर कर सकते है।"

"गुप्त बात!" न्यूमैन ने दोहराया। अपनी मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए वेलेंतीन का 'बड़े ही रहस्य' की बात उसे बताने का प्रस्ताव सुनकर न्यूमैन स्तब्ध-सा रह गया था। एक क्षण के लिए वह कुछ पीछे हट गया। उसे लगा कि किसी भी सूचना को प्राप्त करने का यह बड़ा नाजायज ढंग है। उसे ऐसा लगा जैसे वह किसीका कोई गुप्त रहस्य बन्द कमरे के बाहर खड़े हुए ताली के छेद से सुन रहा है। इसके बाद यकायक मदाम द बेलगार्द और उनके पुत्र को 'बलात्'

राज़ी करने का विचार न्यूमैन को बड़ा आकर्षक-सा प्रतीत होने लगा और न्यू-मैन अपना सिर आगे बढ़ाकर वेलेंतीन के होंठों तक ले गया। कुछ देर तक मरणासन्न वेलेंतीन के मुंह से बोल नहीं निकल सका। वह वहां चुपचाप पड़ा हुआ अपने मित्र को चमकती खुली हुई परेशान आंखों से देखता रहा और न्यूमैन को प्रतीत हुआ कि अभी जो बातें बेलगार्द ने कही हैं, वे अचेत अवस्था में कही हैं। लेकिन अन्त में वेलेंतीन बोला :

"कुछ बात की गई थी—फ्लूरीयर्स में कुछ किया गया था। वह बड़ा ही कुत्सित कार्य था। मेरे पिता—उनको कुछ हो गया था। मैं नही जानता क्या; मैं बहुत शर्मिन्दा हूं—मुझे असल बात जानने से हमेशा डर लगता था। लेकिन मैं जानता हूं कि कुछ किया गया था। मेरी मां जानती है—अरबेन जानता है।"

"तुम्हारे पिता को कुछ हो गया था ?" न्यूमैन ने अधीरता से पूछा।

वेलेंतीन ने उसकी तरफ देखा, उसकी आंखे और भी चौड़ी हो गई थीं। "वे अच्छे नहीं हो सके।"

"किससे अच्छे नहीं हो सके ?"

लेकिन वेलेंतीन ने इसके पहले जो कुछ कहा था और वह बात कहने के लिए जो शक्ति संचित की थी, ऐसा लगता है, वह सब खर्च हो चुकी थी। वह फिर निढाल होकर चुप हो गया था और न्यूमैन उसे देख रहा था। "आप समझ गए न ?" उसने फिर बोलना शुरू किया। "फ्लूरीयर्स में। आप पता चला सकते हैं। मिसेज़ ब्रैड को मालूम है। आप उनसे कहिएगा कि मैंने आपसे अनु-रोध किया था कि आप उनसे सब बातें पूछें। इसके बाद इन लोगों से कहिएगा। शायद आपको मदद मिले। अगर ऐसा न हो, तो सब लोगों में इस बात को फैला दीजिएगा। ऐसा करने से—ऐसा करने से," इस स्थल पर वेलेंतीन की आवाज़ हलकी बुदबुदाहट में बदल गई थी—"आप अपना बदला ले सकेंगे।"

बाकी के शब्द लम्बी हलकी कराह की आवाज़ में खो गए। न्यूमैन उठ खड़ा हुआ। वह बड़ा अभिभूत था, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे और उसके दिल की धड़कन बहुत तेज़ हो गई थी। अन्त में उसने कहा, "धन्य-वाद। मैं तुम्हारा बड़ा आभारी हूं।" लेकिन ऐसा लगा कि वेलेंतीन सुन नहीं सका ; वह चुप रहा और यह मौन बना ही रहा। आखिर न्यूमैन हट आया और उसने दरवाज़ा खोल दिया। पादरी फिर कमरे में आ गए। वे अपनी पवित्र

सामग्री हाथ में लिए थे, उनके पीछे-पीछे तीन और लोग आ गए। साथ में वेलेंतीन का नौकर भी था। न्यूमैन को उनका कमरे मे प्रवेश करना ऐसा लगा, जैसे कोई मातमी जुलूस अन्दर आ रहा है।

बीस

वेलेंतीन की शान्तिपूर्वक मृत्यु हो गई। मृत्यु जिस समय हुई, उस समय मार्च का शीतल प्रभात हो रहा था और पौ फटने की लालिमा वेलेंतीन के बिस्तर के चारों ओर खड़े मित्रों के मुह पर पड़ने लगी थी। एक घण्टे बाद न्यूमैन ने सराय छोड़ दी और वह गाड़ी से जिनेवा आ गया। वह नहीं चाहता था कि जब मदाम द बेलगार्द अपने ज्येष्ठ पुत्र के साथ वहा पहुंचें, तो वह सराय में रहे। वह फिलहाल जिनेवा में ही रुका रहा। न्यूमैन की अवस्था कुछ-कुछ ऐसे व्यक्ति की तरह थी, जो गिर पड़ा हो और चुपचाप बैठकर यह देखना चाहता हो कि उसको कहां-कहां चोटें लगी हैं। उसने तुरन्त मदाम द सान्त्रे को पत्र लिखा। पत्र में उसके भाई की मृत्यु का पूरा हाल लिख दिया। हां, कुछ बातें जरूर छिपा लीं। पत्र में उसने यह भी पूछा था कि वह जल्दी से जल्दी उनसे कब मिल सकता है। मो० ल दॉज ने उन्हें बताया था कि वेलेंतीन ने अपनी वसीयत में—बेलगार्द की अपनी निजी सम्पत्ति काफी थी—यह इच्छा व्यक्त की है कि उसे फ्लूरीयर्स में अपने पिता की कब्र के पास चर्च के कब्रगाह में दफनाया जाए। और न्यूमैन चाहता था कि बेलगार्द परिवार से वर्तमान अप्रिय सम्बन्धों के बावजूद उसके अपने सर्वोत्तम मित्र के अन्त्येष्टि संस्कार के समय सम्मान प्रकट करने के लिए उपस्थित रहने में कोई बाधा न पड़े। उसने सोचा कि वेलेंतीन की मित्रता अरबेन की शत्रुता से ज्यादा पुरानी थी और अन्त्येष्टि के समय वह उपस्थित रहकर भी लोगों की निगाह से बच सकता है। मदाम द सान्त्रे ने उसके पत्र का जो उत्तर दिया था, उससे न्यूमैन को फ्लूरीयर्स पहुचने के कार्यक्रम को बनाने में सहायता मिली। जवाब बहुत सक्षिप्त था। पत्र में लिखा था :

"आपके पत्र के लिए धन्यवाद और इसलिए भी कि आप अतिम क्षणों में

वेलेंतीन के पास थे। मैं नही थी, इसका मुझे कितना दुःख है, उसका वर्णन मैं नहीं कर सकती। आपसे मिलकर मैं बहुत ही विचलित हो उठूगी; इसलिए मेरी समझ से उन दिनों की प्रतीक्षा करने की कोई आवश्यकता नही है, जिन्हे आपने आशा के दिन बताया है। अब सब एक ही जैसा है। मेरे लिए सुनहले दिन अब कभी न आएगे। आपकी जब इच्छा हो, तब आइए; केवल मुझे पहले सूचना दे दीजिए। मेरे भाई की अंत्येष्टि शुक्रवार को होगी और मेरा परिवार यहीं रहेगा। का० द सा०।"

पत्र मिलते ही न्यूमैन सीधा पेरिस और वहा से पोयतियर्स गया। पोयतियर्स पहुंचने के लिए उसे सुदूर दक्षिण की यात्रा करनी पड़ी। रास्ते में पड़नेवाले हरे-भरे तूरां के मैदानों के पार, लोयर के चमकीले प्रांगण से होता हुआ जब वह जा रहा था, तो उसने देखा कि ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ रहा है, नववसन्त की छटा और गहरी होती जा रही है। लेकिन न्यूमैन ने अपने जीवन में शायद ही कोई ऐसी यात्रा की हो, जिसमें उसने प्राकृतिक स्थलों पर इतना कम ध्यान दिया हो। पोयतियर्स पहुंचकर उसने एक सराय में डेरा डाला। दूसरे दिन सवेरे वह कुछ ही घण्टों में फ्लूरीयर्स ग्राम पहुच गया। इस यात्रा में भी उसका ध्यान बंटा रहा, लेकिन फिर भी प्रकृति के सौदर्य को निहारने से वंचित न रहा। फ्लूरीयर्स, जैसाकि फ्रेंच लोग कहते हैं, 'प्यारा छोटा-सा गांव' था। यह गांव एक बड़े टीले की तलहटी में बसा था। इस टीले की चोटी पर सामन्त युग की एक टूटी-फूटी गढ़ी थी। गढ़ी की चहारदीवारी नीचे तक आई थी, जो गांव के मकानों की भी रक्षा-सी करती थी। इस गढ़ी और चहारदीवारी के मज़बूत पत्थरों को लोग नीचे ले आए थे और गांव के बहुतेरे मकान उन्हीं पत्थरों के बने थे। गांव का चर्च भी गढ़ी का पुराना गिर्जाघर ही था। चर्च के सामने एक लम्बा-चौड़ा मैदान था, जिसके एक कोने में कब्रगाह था। वहां कब्रों के पास खड़े पत्थर भी बड़ी घास पर झुक गए थे और ऐसा लगता था कि वे भी सो रहे हैं। कब्रगाह के इन पत्थरों को एक ओर तो ध्वस्त गढी का सहारा था और सामने की ओर उनके पास जमी काई वाले मैदान के नीचे दूर-दूर तक लम्बे-चौड़े हरे-भरे खेत थे, और नीला आसमान फैला था। पहाड़ी के ऊपर बने चर्च को जानेवाले रास्ते पर कोई गाड़ी नहीं आ-जा सकती थी। इस रास्ते पर दो-दो, तीन-तीन कतारों में किसान खड़े थे, वे लोग वृद्धा

मदाम द बेलगार्द को धीरे-धीरे ऊपर आते देख रहे थे। वे अपने पुत्र की बांह का सहारा लिए थीं। उनके आगे दूसरे पुत्र का जनाज़ा लिए लोग चल रहे थे। जिस समय लोगों ने धीरे से बुदबुदाकर कहा : 'मदाम ल कान्तेस' तो न्यूमैन ने चुपचाप शोक-सन्तप्त भीड़ के साधारण लोगों में अपना मुंह इस तरह छिपा लिया, जिससे सामने से गुज़रनेवाला कोई व्यक्ति उसे देख न पाए और एक लम्बी, छरहरे शरीर की युवती, जिसके चेहरे के आगे एक काला नकाब पड़ा था, लोगों के सामने से निकल गई। जब दफनाने का कृत्य हो रहा था, तब वह मटमैले छोटे-से चर्च में खड़ा-खड़ा सब देख रहा था। जब कार्य समाप्त हो गया तो वह एक छोटी-सी छतरी के पास से मुड़ गया और पहाड़ी से नीचे उतर आया। वह पोयतियर्स वापस चला गया और उसने वहां दो दिन कभी धीरज और कभी अधीरता की मिश्रित भावनाओं के झूले में बिताए। तीसरे दिन उसने मदाम द सान्त्रे को एक पत्र भेजा, जिसमें उसने लिखा था कि मै आज तीसरे पहर आपसे मिलने आ रहा हूं। यह पूर्व-सूचना देने के बाद वह फ्लूरीयर्स रवाना हो गया। उसने अपनी गाड़ी गांव की सड़क पर शराबखाने के सामने छोड़ दी, और कोठी पर जाने के लिए उसे जो सरल-सी कुछ बाते बतलाई गई थीं, उनके अनुसार चल दिया।

शराबखाने के मालिक ने सामने के मकानों से आगे एक बाग के वृक्षों की फुनगियो की ओर इशारा करते हुए बताया था कि वह कोठी ठीक उनके आगे है। न्यूमैन पहले चौराहे से दाहिनी ओर मुड़ गया। इस सड़क के दोनों तरफ पुरानी झोपड़ियां थी। कुछ ही क्षण बाद उसे स्तम्भों के शिखर दिखलाई पड़ने लगे। कुछ और आगे चलने पर उसने देखा कि वह एक बड़े लोहे के फाटक के सामने खड़ा है। फाटक पर ज़ंग लगी थी और वह बन्द था। यहां वह रुक गया और फाटक में लगी छड़ों के बीच से झाककर अन्दर देखने लगा। कोठी सड़क के किनारे थी। यह उसका गुण भी था और दोष भी। बाहर से देखने में वह बड़ी शानदार लगती थी। बाद में क्षेत्रीय गाइडबुक से न्यूमैन को पता चला था कि कोठी हेनरी चतुर्थ के काल में बनी थी। इसके सामने पक्का मैदान था। मैदान के सिरे पर टूटा-फूटा घर था। उसका सामने का भाग बहुत लम्बा-चौड़ा था। दीवार की ईटों पर काई जमी थी। मकान के दायें-बायें दो भाग थे। इन दोनो भागों के बगल में डच ढंग के मण्डप-से बने थे, जिनकी छतें बड़ी अजीब-सी लगती थीं। पीछे की तरफ दो खम्भे थे, इन खम्भों के पीछे बहुत-से वृक्ष थे, जिनपर कुछ ही हरे पत्ते आ गए थे।

लेकिन कोठी की विशेषता चौड़े पाटवाली हरे वर्ण के जल की नदी थी, जो बिलकुल उसे छूती हुई बहती थी। घुमावदार नदी के बीच यह कोठी एक द्वीप पर बनी थी, जिससे नदी एक ऐसी जलभरी खाई का काम देती थी, जिसपर दो मेहराबों का पुल तो था, लेकिन खाई के पास कोई दीवार नहीं थी। ईंटों की मैली दीवार कहीं-कही एकदम सीधी ऊपर चढ़ी चली जाती थी। कोठी के पार्श्व में बने भद्दे लगनेवाले छोटे गुम्बद, दीवारों में अन्दर घुसी खिडकिया. दूर तक फैली लम्बी, सीधी ऊपर तक जानेवाली काई की परतें, इन सबकी नदी के शांत जल में प्रतिच्छाया पड़ रही थी। न्यूमैन ने फाटक के पास लगा बड़ा घण्टा बजा दिया, यह ठीक उसके ऊपर था। इसकी आवाज़ सुनकर वह स्वयं भयभीत-सा हो गया। फाटक के पास के घर से एक बुढ़िया निकलकर आई और उसने फाटक खोला। फाटक 'किर्र-किर्र' की आवाज़ करता हुआ केवल इतना ही खुला कि न्यूमैन उसमें से होकर अन्दर जा सके। वह सूखे और खाली पड़े पक्के चौक से होता हुआ खाई पर बने पुल के पार चला गया। इसके सफेद पत्थरों में कहीं-कहीं दरारें पड़ गई थीं। कोठी के दरवाजे पर खड़े होकर उसने कुछ देर प्रतीक्षा की। उसने देखा कि फ्लूरीयर्स की कोठी की देखभाल ठीक से नहीं की जाती। उसे यह भी लगा कि फ्लूरीयर्स की कोठी का वातावरण बड़ा विषादपूर्ण है और यहां रहकर कोई भी व्यक्ति दुःख ही अनुभव करेगा। न्यूमैन ने अपने-आपसे कहा, 'ऐसा प्रतीत होता है कि यह मकान चीनी जेल जैसा है।' मैं भी यह उपमा यहां लिखे दे रहा हूं। इसकी उपयुक्तता पाठक स्वयं तय कर सकते हैं। आखिर दरवाज़ा खुला। जिस नौकर ने दरवाजा खोला उसका चेहरा देखकर न्यूमैन को याद आया कि इस व्यक्ति को वह रू द ल यूनिवर्सिते में भी देख चुका है। नौकर के उदास चेहरे पर भी न्यूमैन को देखकर चमक आ गई। न्यूमैन को भी वर्दीधारी नौकर देखकर पता नहीं क्यों कुछ ढाढ़स-सा बंधा। नौकर उसे कोठी के बीचोबीच बने एक लम्बे गलियारे में से एक बड़े कमरे में ले गया, जो कोठी का बैठकखाना-सा लगता था। यहां बीचोबीच बहुत-से पौधों के टब एक के ऊपर एक पिरामिड की शक्ल में रखे थे। कमरे में चारों तरफ कांच के दरवाज़े थे। जब इस कमरे में न्यूमैन अंदर घुसा, तो उसे लगा कि वह यहां पर्यटक की तरह आया है और उसके साथ एक गाइड है, जिसकी वह फीस चुकाएगा। लेकिन न्यूमैन के साथ जो नौकर आया था, वह यह कहकर चला गया कि, 'मैं मदाम ला

काम्तेस को खबर देता हूं।' नौकर के जाने के बाद न्यूमैन ने देखा कि कमरे में सिवा काली छत की लकड़ी पर नक्काशी के काम तथा भारी-भरकम परदों, टेपेस्ट्री और लकड़ी के चमकते हुए फर्श के अलावा और कोई खास बात नहीं थी। उसने कुछ मिनट प्रतीक्षा की। इधर-उधर टहलता रहा, इसके बाद जब वह कमरे के एक सिरे पर जाकर मुड़ रहा था, तो उसने सामने के दरवाज़े से मदाम द सान्त्रे को अंदर आते देखा। वे काले वस्त्र पहने थीं और उसकी तरफ देख रही थीं। कमरे के बीच में दोनों के मिलने के पहले काफी दूरी थी, इसलिए न्यूमैन को मदाम को देखने का काफी समय मिल गया।

मदाम की शक्ल के परिवर्तन को देखकर न्यूमैन त्रस्त हो गया। उनका चेहरा पीला पड़ गया था। भौंहें बड़ी घनी लग रही थीं, जैसे बिखरी हों। कपड़े भिक्षुणियों जैसे साधारण थे। जिस युवती के सौंदर्य की दीप्यमान आभा को वह इतना सराहा करता था, वह न जाने कहां लुप्त हो गई थी। मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन की आंखों से अपनी आखें मिलाई और बिना उन्हें हटाए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। लेकिन अब भी मदाम द सान्त्रे की दोनों आंखें शरत्कालीन वर्षा के दो चन्द्रमाओं की भांति लग रही थी और स्पर्श में बड़ी ही अशुभ निर्जीवता थी।

"मैं आपके भाई की अंत्येष्टि के समय मौजूद था," न्यूमैन ने कहा। "इसके बाद मैंने तीन दिन प्रतीक्षा की। लेकिन मैं इससे अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था।"

"प्रतीक्षा करने से कोई फायदा या नुकसान नहीं हो सकता।" मदाम द सान्त्रे ने कहा, "लेकिन आपने प्रतीक्षा करके बड़े धैर्य का परिचय दिया। विशेष रूप से उस समय, जब आपके साथ इतना अन्याय हुआ है।"

"मुझे इस बात की खुशी है कि आपका ख्याल है कि मेरे साथ अन्याय हुआ है," न्यूमैन ने कुछ अजीब ढंग से हंसते हुए कहा। वह अकसर बड़े गंभीर अर्थ वाले वाक्य इसी तरह कह जाता था।

"क्या यह कहने की मुझे आवश्यकता है!" मदाम द सान्त्रे ने पूछा, "मैं नही समझती कि मैने कभी किसीके साथ गम्भीर अन्याय किया हो, और जान-बूझकर तो कभी नही किया। आपके साथ मैने बड़ा कठोर व्यवहार किया है और बड़ी क्रूरता दिखाई है और इसकी एवज़ में मैं केवल इतना ही कह सकती हूं कि

'मैं जानती हू, मैं उसे अनुभव कर रही हूं !' यह क्षति-पूर्ति निस्सदेह बड़ी स्वल्प है !"

"ओह, यह तो बड़ी प्रगति है !" न्यूमैन ने प्रोत्साहन देने के लिए अपनी मुस्कान बिखेर दी। उसने एक कुर्सी उनकी तरफ सरका दी और उसे पकड़े-पकड़े मदाम द सान्त्रे की तरफ अधीरता से देखने लगा। वे यंत्रवत् बैठ गईं और वह भी उन्हींके पास बैठ गया; लेकिन एक क्षण बाद ही वह उठ खड़ा हुआ, बेचैनी से, और उनके सामने खड़ा हो गया। वे बैठी रहीं—एक ऐसे दुखित व्यक्ति की तरह, जिसने बेचैनी की अवस्था गुज़ार दी हो।

"मैं कहती हूं कि मुझसे मिलने से कोई लाभ नहीं होगा," मदाम द सान्त्रे कह रही थीं, "और फिर भी मुझे बड़ी खुशी है कि आप मुझसे मिलने आए। अब मैं आपसे कह सकती हूं कि मुझे कैसा लग रहा है। यह विशुद्ध स्वार्थ है, लेकिन शायद यह मेरे जीवन का अन्तिम मिलन है, जिससे मुझे आनन्द मिलेगा।" और वे बोलते-बोलते रुक गईं, उनकी स्वप्निल आंखें न्यूमैन पर स्थिर हो गईं। "मैं जानती हूं कि मैंने आपको किस तरह ठगा है और आपको कितनी चोट पहुंचाई है ; मैं यह भी जानती हूं कि मैंने कितना क्रूरता और कायरतापूर्ण व्यवहार किया है। मैं यह सब उतने ही स्पष्ट रूप से अनुभव कर रही हूं, जितना कि आप। आपका दुःख मेरी रग-रग में व्याप रहा है।" अब तक उन्होंने अपने हाथ बांध रखे थे, वे खोल दिए। वे बंधे हुए हाथों को अपनी गोदी में रखे थीं। अब उन्होंने हाथ उठाकर अपने पार्श्व-भाग में गिरा लिए। "आपने अधिक से अधिक क्रोध के समय भी जिन शब्दों में मुझे धिक्कारा होगा, वे भी शायद उतने कठोर नहीं होंगे, जिस तरह से मैंने आपको कोसा है।"

"जब मैं सबसे ज़्यादा नाराज़ था," न्यूमैन ने कहा, "उस समय भी, मैंने आपके प्रति किसी कठोर शब्द का प्रयोग नहीं किया। जो सबसे खराब बात मैंने अपने मन में आपके बारे में कही, वह यह थी कि आप सुन्दरतम स्त्री हैं।" और वह अनायास फिर मदाम द सान्त्रे के सामने कुर्सी पर बैठ गया।

उनका चेहरा कुछ सुर्ख हो गया, लेकिन उस सुर्खी में भी पीलापन था। "इसका कारण यह है कि आप सोचते हैं कि शायद मैं वापस लौट आऊंगी। लेकिन अब मैं वापस नहीं लौटूंगी। शायद आप इसी आशा से यहां आए हैं, यह मुझे मालूम है। मुझे आपके लिए बड़ा दुःख है। मैं आपके लिए कुछ भी करने के लिए तैयार

हूं। इस समय यह बात कहनी बड़ी ढीठता मालूम पड़ती है, जबकि मैंने आपसे ऐसा क्रूर व्यवहार किया हो ; लेकिन बताइए, मैं क्या कहूं, जिससे मेरी धृष्टता प्रकट न हो ? पहले आपके साथ अन्याय करूं और फिर माफी मांगूं—यह बड़ा सरल है। मुझे आपके साथ यह अन्याय नहीं करना चाहिए था।" वे एक क्षण के लिए रुक गई और उसकी ओर देखने लगीं तथा इशारा किया कि उन्हें बोलते रहने दिया जाए। "पहली बात तो यह थी कि मुझे आपकी बात ही नहीं सुननी चाहिए थी ; सबसे बड़ा अन्याय तो यही हुआ। आपका प्रस्ताव सुनने से कोई भी लाभ नहीं होनेवाला था। मैं यह जानती थी, फिर भी मैंने आपकी बात सुन ली ; यह गलती थी। मुझे आपसे बहुत प्रेम हो गया था ; मुझे आपपर विश्वास हो गया था।"

"और क्या अब आपको मुझपर भरोसा नहीं है ?"

"हमेशा से भी ज़्यादा। लेकिन अब कोई फायदा नहीं। मैंने आपसे विवाह का विचार त्याग दिया।"

न्यूमैन ने अपनी बन्द मुट्ठी से घुटने पर बड़ी जोर से घूंसा मारा। "क्यों, क्यों, क्यों ?" उसने चिल्लाकर कहा, "मुझे कारण बताइए—कोई एक दृढ़ कारण बताइए। आप बच्ची नहीं हैं—नाबालिग नहीं हैं, मूर्खा नहीं हैं। आप केवल इसीलिए मुझे त्यागने के लिए विवश नहीं की जा सकतीं कि आपकी मां ने ऐसा करने के लिए कह दिया है। यह कारण बताना आपको शोभा नहीं देता।"

"मैं जानती हूं; यह कारण उपयुक्त नहीं है। लेकिन मैं केवल यही कारण बता सकती हूं। आप सोच लीजिए," मदाम द सान्त्रे ने अपने दोनों हाथ आगे की तरफ करके कहा, "समझ लीजिए मै मूर्खा हूं, और मुझे भूल जाइए ! यही सबसे आसान होगा।"

न्मैयून उठ खड़ा हुआ और इधर-उधर टहलने लगा। वह इस भावना से दबा जा रहा था कि अब सब कुछ उसने खो दिया। लेकिन फिर भी वह हाथ-पैर पटकना नहीं छोड़ पा रहा था। कमरे की एक बड़ी-सी खिड़की के पास जाकर वह बहती हुई नदी को देखने लगा। उसके आगे बाग था। उसपर भी उसकी नज़र गई। जब वह वापस लौटा, तो मदाम द सान्त्रे उठ खड़ी हुई। वे चुप-चाप और बिना कुछ कहे एक स्थान पर अविचल खड़ी थीं। "आप साफ बात

नहीं कर रही है," न्यूमैन ने कहा, "आप ईमानदार नही है। आप कहती हैं कि आप अशक्त हैं, इसके बजाय आपको कहना चाहिए कि अन्य लोग दुष्ट हैं। आपकी मां और आपका भाई, दोनों झूठे और क्रूर है ; उन्होंने यही व्यवहार मेरे साथ किया है और मेरा पक्का विश्वास है कि उन्होंने ऐसा ही आचरण आपके साथ भी किया होगा। आप उनको बचाने की कोशिश क्यों करती हैं ? आप उनके लिए मेरा बलिदान क्यों कर रही हैं ? मै झूठा नहीं हूं ; मैं क्रूर नहीं हूं। आप नहीं जानतीं कि आप क्या ठुकरा रही हैं ; मै आपसे यही कह सकता हूं—आप ऐसा न करिए। वे आपको डाटते-फटकारते है, आपके खिलाफ षड-यंत्र रचते हैं ; और मैं— मै"—और उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया और ठहर गया। वे मुड़ गई और उसे छोड़कर जाने लगीं। "आपने उस दिन मुझसे कहा था कि आपको अपनी मां से भय लगता है," उसने उनके पीछे-पीछे चलते हुए कहा, "इससे आपका क्या मतलब था ?"

मदाम द सान्त्रे ने अपना सिर हिलाया। "मुझे याद है ; बाद में इस बात का मुझे खेद हुआ।"

"आपको उस समय खेद हुआ, जब उन्होंनें पीड़ादायी यंत्र से आपको कष्ट दिया होगा। ईश्वर के लिए मुझे यह तो बताइए कि वे आपके साथ क्या करती हैं ?"

"कुछ नहीं, ऐसी कोई बात नहीं, जो आप समझ सकें। और अब चूंकि मैंने आपका परित्याग कर दिया है, इसलिए मुझे आपसे उनकी कोई शिकायत भी नहीं करनी चाहिए।"

"यह कोई बात नहीं है !" न्यूमैन ने कहा। "इसके विपरीत आपको उनकी शिकायत करनी चाहिए, मुझे साफ-साफ और विश्वासपूर्वक इस बारे में सब कुछ बताना चाहिए और फिर हम लोग इस सम्बन्ध में इतने संतोषजनक ढंग से बातचीत करेंगे कि आप मुझे त्यागने का इरादा छोड़ देंगी।"

मदाम द सान्त्रे कुछ क्षण फर्श की ओर एकटक देखती रहीं ; और इसके बाद उन्होंने अपनी नजर उठाते हुए कहा, "इसका कम से कम एक अच्छा फल तो हुआ है : आप मेरे बारे में न्यायोचित ढंग से निर्णय कर सकते हैं। आपने मेरे बारे में जो धारणाएं बनाई थीं, वे मेरे लिए बड़े सम्मान का विषय हैं; मुझे नहीं पता कि ये सारी बातें आपने क्योंकर सोच डालीं, लेकिन इनकी वजह से

मेरे पास बचने का कोई रास्ता न था।—मुझ जैसी सामान्य और अशक्त स्त्री को बचने का कोई रास्ता नहीं मिल रहा था, लेकिन मुझे पहले ही आपको और ज़्यादा आगाह कर देना चाहिए था। मुझे यह समझा देना चाहिए था कि मैं आपको निराश करने के लिए ही आपके जीवन में आई हू। लेकिन एक तरह से मैं भी बड़ी घमण्डी थी। अब आपको पता चल गया होगा कि मेरे इस घमण्ड का क्या परिणाम हुआ !" मदाम द सान्त्रे की आवाज़ प्रकम्पित कण्ठ से बराबर ऊंची उठती चली गई। लेकिन उस समय भी न्यूमैन को मदाम द सान्त्रे बड़ी सुन्दर लग रही थीं। "सच तो यह है कि मैं इतनी घमण्डी हूं कि ईमानदार नहीं हो सकती। लेकिन मुझमें इतना घमण्ड नहीं है कि मैं विश्वासघात कर सकूं। मै बड़ी डरपोक हूं, कायर हूं और स्वार्थी हूं। मुझे कष्टों से भय लगता है।"

"और क्या आप मुझसे शादी करके दु:ख पाएंगी ?" न्यूमैन ने घूरते हुए कहा।

मदाम द सान्त्रे का चेहरा कुछ लाल हो गया और लगा कि वे यह कह रही हैं कि मेरा माफी मांगना अगर धृष्टता है, तो मैं कम से कम अपने आचरण की त्रुटि को इस तरह तो प्रकट कर ही सकती हूं। "आपके साथ विवाह करके मुझे दु:ख नहीं मिलेगा ; लेकिन ऐसा करने के लिए जो कुछ मुझे करना पड़ेगा, वह बड़ा दुखदायी होगा। मुझे सारे सम्बन्ध तोड़ लेने होंगे, विद्रोह करना होगा, और यह ज़ोर देकर कहना होगा कि मैं अपने ढंग से ही सुखी रह सकती हूं। मुझे क्या अधिकार है खुश होने का जब—" और वे रुक गई।

"जब क्या ?" न्यूमैन ने कहा।

"जब अन्य लोग इतने अधिक दुखी हों !"

"अन्य लोग कौन ?" न्यूमैन ने पूछा। "आपको मुझे छोड़कर अन्य लोगों से क्या मतलब है ? इसके अलावा अभी आपने कहा कि आप सुखी होना चाहती हैं और यह सुख आपको अपनी मां की आज्ञा के पालन से मिलेगा। क्या यह कहकर आप अपनी ही बातों को काट नहीं रही हैं ?"

"जी हां, मै अपनी ही बात का खण्डन कर रही हूं ; इससे आप समझ गए होंगे कि मैं बुद्धिमती भी नहीं हूं।"

"आप मुझपर हंस रही हैं !" न्यूमैन ने चिल्लाकर कहा, "आप मेरा मज़ाक

उड़ा रही हैं।"

वे बराबर उसको देखती रहीं और अगर वहां कोई प्रेक्षक होता, तो वह कह सकता था कि वे शायद अपने मन में यह प्रश्न कर रही हैं कि मैं यह क्यों न कह दूं कि हां मै आपका मजाक उड़ा रही थी और इस तरह अपनी स्वीकारोक्ति से उस मनोव्यथा का अन्त कर दूं, जो उस समय उन दोनों को हो रही थी। "नहीं, मै आपका मजाक नहीं उड़ा रही हूं।" अन्त में उन्होंने कहा।

"अच्छा मान लिया कि आप बुद्धिमती नहीं हैं, न्यूमैन ने कहा, "यह भी मान लिया कि आप कमज़ोर हैं, आप साधारण स्त्री हैं और आपमें वह कोई गुण नहीं है, जिनकी कल्पना मैंने आपमें की थी।—अब मै आपसे जो करने के लिए कह रहा हूं वह कोई बड़ी वीरता का काम नहीं है—बड़ा साधारण-सा काम है। लेकिन आपके ऐसा करने से मेरा काम बड़ा सरल हो जाएगा। सीधी-सादी बात यह है कि आपको मेरा उतना ख्याल नहीं है कि आप मेरे लिए इतना साधारण-सा काम कर सकें।"

"मैं शीतल हूं," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "मै उतनी ही शीतल हूं, जितनी सामने बहती हुई नदी।"

न्यूमैन ने अपनी छड़ी से फर्श पर ज़ोरों का प्रहार किया और बड़ी देर तक दु:खभरी हंसी हंसता रहा। "ठीक है, ठीक है!" उसने ज़ोरों से कहा, "आप बहुत आगे बढ़ गई हैं—जितनी ज़रूरत थी, उससे भी ज्यादा। दुनिया में कोई भी स्त्री इतनी खराब न होगी, जितना अपने-आपको आप बता रही हैं। मैं आपकी चालाकी समझ रहा हूं; यह वही है, जो मैं कह रहा था। आप अपने मुंह पर इसलिए कालिख पोत रही हैं कि दूसरे लोगों का मुंह उजला रह सके। आप मुझे बिलकुल नहीं छोड़ना चाहतीं; आप मुझे चाहती हैं—आप मुझे चाहती हैं। मैं जानता हूं आप मुझे चाहती हैं; आपने इसे प्रकट भी किया है और मैंने आपके प्रेम को अनुभव किया है। इसके बाद आप मर्ज़ी आए उतनी ठण्डी पड़ जाइए। उन लोगों ने आपको धमकाया है, मैं कहता हूं उन्होंने आपको यंत्रणाएं दी हैं। यह बड़ा अत्याचार है और मैं आपको आपकी उदारता से बचाने की कोशिश कर रहा हूं। अगर आपकी मां आपसे कहेंगी, तो क्या आप अपना हाथ काट डालेंगी?"

मदाम द सान्त्रे कुछ भयभीत होने लगीं। "मैंने अपनी मां के बारे में बिना सोचे-समझे यह बात उस दिन कह दी थी। मैं अपनी स्वामिनी स्वयं हूं; कानूनन

भी और अपनी मां के अनुमोदन से भी। वे मेरा कुछ नहीं कर सकतीं; उन्होंने कुछ भी नहीं किया है। मैंने उनके लिए जो कठोर शब्द कहे थे, उनको कहने का मेरे पास कोई कारण नहीं था।"

"मेरा ख्याल है कि इसके लिए उन्होंने आपको काफी सज़ा दी है। मैं शर्त बदकर यह बात आपसे कह सकता हूं!" न्यूमैन ने कहा।

"नहीं, यह मेरी अन्तरात्मा है, जो मुझसे यह बात कहलवा रही है।"

"आपकी अन्तरात्मा बड़ी अजीब मालूम पड़ती है!" न्यूमैन ने क्रोध में चिल्लाकर कहा।

"मेरी अन्तरात्मा बहुत प्रताड़ित थी, लेकिन अब वह स्वच्छ है।" मदाम द सान्त्रे ने कहा, "मैं आपको किन्हीं सांसारिक लाभों या किसी भी सांसारिक सुख-सुविधा के लिए नहीं छोड़ रही हूं।"

"ओह, मै जानता हूं कि आपने मुझे लार्ड डीपमेयर की खातिर नहीं छोडा, है," न्यूमैन ने कहा, "मैं आपको चिढ़ाने के लिए भी यह नहीं कहूगा कि मै इस तरह की बात सोचता हूं। लेकिन आपकी मां और आपका भाई यह चाहते थे। आपकी मां ने उस दिन नाचपार्टी में—जिसे मैंने उस दिन बहुत पसन्द किया था, लेकिन जिसका ख्याल आते ही अब मै पागल-सा हो उठता हूं—उसे आपके पास धक्का देकर शादी का प्रस्ताव करने के लिए भेजा था।"

"आपसे यह किसने कहा?" मदाम द सान्त्रे ने आहिस्ता से पूछा।

"वेलेंतीन ने नहीं। मैंने इसे देखा था। मैने इसके बारे में कल्पना की थी। उस समय देखते हुए भी मैं इस बात को नही समझ सका था, लेकिन यह बात मेरे दिमाग में बराबर चक्कर काटती रही। और आपको याद होगा कि बाद में मैंने उद्यान वाले कांच के कमरे में आपको लार्ड डीपमेयर के साथ बातें करते देखा था। उस समय आपने मुझसे यह कहा था कि आप मुझे, जो बातें लार्ड डीपमेयर से हुई हैं, फिर कभी बताएंगी।"

"ऐसा पहले हुआ था—इस निश्चय से पहले," मदाम द सान्त्रे ने कहा।

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता," न्यूमैन ने कहा, "और इसके अलावा मेरा ख्याल है कि मै जानता हूं। वह ईमानदार अंग्रेज़ युवक था। वह आपके पास आया और उसने आपको बताया कि आपकी मां के क्या इरादे हैं—कि वे मुझे हटाकर उसे वहां अपने दामाद के रूप में स्वीकार करना चाहती हैं; क्योंकि लार्ड डीपमेयर

व्यापारी नही है । आपकी मां ने यह कहा था कि अगर लार्ड डीपमेयर आपसे विवाह का प्रस्ताव कर दें, तो वे आपका विवाह उनसे करा देंगी और मुझे धता बताएंगी । लार्ड डीपमेयर बहुत ज़्यादा अक्लमन्द नहीं थे, इसलिए आपकी मां को यह सारी बात साफ-साफ शब्दों में उनसे कहनी पड़ी । उन्होंने आपसे कहा कि वे आपके परम प्रशंसक है और वे चाहते थे कि यह बात आपको पता चल जाए ; लेकिन लार्ड डीपमेयर को, जो गंदी चाल चली जा रही थी, वह पसन्द नहीं थी और उन्होंने आकर सारी बात आपको बता दी । सारी बात का सारांश यह है, है या नहीं ? और उस वक्त आपने यह कहा था कि आप बड़ी प्रसन्न हैं ।"

"मेरी समझ में नही आता है कि हम लोग लार्ड डीपमेयर के बारे में बातें क्यों करें," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "आप उनके बारे मे बात करने तो यहां नही आए थे । और जहां तक मेरी मां का सम्बन्ध है, आप उनपर क्या शक करते हैं और क्या जानते हैं, इसका कोई खास मतलब नहीं है । जब मैंने एक बार निश्चय कर लिया, जैसाकि मै अब करे बैठी हूं, तो मुझे इन सब विषयों पर बातचीत नही करनी चाहिए । सच तो यह है कि इस सम्बन्ध में अब कोई भी बात करना बेकार है । हम लोगों को अलग-अलग स्वतंत्र रूप से अपना जीवन बिताने का प्रयत्न करना चाहिए । मेरा ख्याल है कि आप फिर खुश हो सकेंगे ; शायद उस समय भी, जब आप मेरे बारे में सोचें । जब आपको मेरा ख्याल आए, तो यह याद रखिएगा कि मेरे लिए भी यह कोई सरल काम नहीं था । और मैंने अपने कर्तव्य को भरसक निबाहने की कोशिश की । मुझे ऐसी-ऐसी चीज़ों का सामना करना पड़ा, जिनके बारे में आप कुछ नहीं जानते । मेरा मतलब मेरी अपनी भावनाओं से है । मुझे अपनी भावनाओं के अनुसार कार्य करना ही चाहिए । अगर मैं ऐसा नहीं करूंगी, तो मैं परेशान रहूंगी, दु:खी रहूंगी," वे बिगड़कर चीखती हुई बोलीं, "वे भयानक ख्याल मुझे मार डालेंगे ।"

"मुझे नहीं पता कि आपके भयानक ख्याल क्या हैं : शायद वे मूढ़ाग्रह हैं । शायद आपको यह ध्यान आता होगा कि आखिर मै अच्छा आदमी था, भले ही मैं व्यापारी था, तो क्या ; आपको यह ख्याल आता होगा कि आपकी मां की निगाहें ही कानून हैं और आपके भाई के शब्द पोप के वाक्य की तरह अटल हैं ; आप इन सबको बहुत ऊंचा स्थान देती हैं और आप यह समझती हैं कि आप जो कुछ भी करें, उन सबमें आपकी मां और भाई की अनुमति और सहमति परम आवश्यक है ।

तभी आपका कार्य उचित हो सकता है। यह सोचकर मेरा खून खौलने लगता है। अर्थात् ठण्डा हो जाता है ; आप ठीक कहती हैं। और इधर मैं क्या अनुभव करता हूं," और न्यूमैन ने अपने सिर पर हाथ रखते हुए कहा ; यह कहते हुए वह यह नहीं जान सका कि कितना काव्यमय उद्गार उसने प्रकट किया है, "मैं यहां एक आग-सी जलती महसूस करता हूं !"

मदाम द सान्त्रे का निराश प्रेमी अपने ही विचारों में बहुत अधिक खोया हुआ था, लेकिन अगर वहां कोई और दर्शक होता और वह न्यूमैन की तरह अपने विचारों में ही मग्न न होता, तो वह यह देखता कि मदाम द सान्त्रे के चेहरे की बाह्य रूप से प्रकट होनेवाली शान्ति उनके बहुत ही कठिन आन्तरिक प्रयत्नों का परिणाम थी। और इन प्रयत्नों के बावजूद मदाम द सान्त्रे के हृदय में उत्तेजना का ज्वार तेजी से उमड़ रहा था। न्यूमैन के अंतिम शब्दों को सुनकर वे फूट पड़ीं। आरम्भ में उन्हें भय था कि कहीं उनका गला इतना न भर आए कि मुंह से बोल ही न निकल सके, इसलिए वे बहुत धीरे-धीरे बोलीं, "नहीं, मैंने यह बात ठीक नही कही थी—मैं शीतल नहीं हूं। मेरा ख्याल है कि अगर मैं कोई ऐसा काम कर रही हूं जो देखने में बुरा लग रहा है, तो वह केवल मेरी दुर्बलता और मेरी मिथ्यावादिता ही नहीं है। मि० न्यूमैन, जो कुछ मैं कर रही हूं, वह मेरे लिए धर्म के तुल्य है। कैसे ?—यह मैं आपको नहीं बता सकती—नहीं बता सकती ! आपका यह आग्रह बड़ा ही निर्दयतापूर्ण है। मेरी समझ में नही आता कि मैं आपसे अपने ऊपर विश्वास करने के लिए क्यों न कहूं—क्यों न कहू कि आप मेरे ऊपर दया करें, तरस खाएं ? मेरे लिए यही धर्म है। हमारा परिवार अभिशप्त है ; मुझे पता नहीं कि यह शाप क्या है—पता नहीं क्यों है—यह सब मुझसे मत पूछिए, लेकिन हम सबको उसे धोना है। मैं बहुत ही स्वार्थी थी ; मैं उससे बच निकलना चाहती थी। मैं आपको चाहती थी, इसमें कोई शक नहीं—और आपने मुझे बड़ा सुनहला अवसर भी प्रदान किया। बिलकुल ही बदल जाना, इस घर से बिलकुल सबध तोड़ लेना और यहां से चला जाना बड़ा अच्छा प्रतीत हो रहा था। और फिर मैं आपसे प्रेम करती थी। लेकिन मैं आपसे विवाह नहीं कर सकी; वह शाप फिर लौट आया, उसने मुझे फिर धर दबाया।" मदाम द सान्त्रे के धीरज का बांध बिलकुल टूट चुका था और उनके शब्द लम्बी-लम्बी सिसकियों के साथ निकल रहे थे। "आखिर हमारे यहां ऐसी भयानक घटनाएं क्यों होती हैं—मेरा भाई वेलेंतीन भरी जवानी में कुत्ते की मौत क्यों मारा

मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन की भटकती हुई निगाहों को अपनी दृष्टि से बेध दिया। "तो आप समझते हैं कि मै कठोर हूं ?"

न्यूमैन ने भी मदाम द सान्त्रे की दृष्टि से दृष्टि मिलाई और फिर बोला, "आप बिलकुल निर्दोष है। आप मेरा साथ दीजिए !"

'बेशक मैं कठोर हू," मदाम द सान्त्रे कहे जा रही थी, "हम जब भी किसी को दुःख पहुंचाते हैं, तो हम कठोर होते हैं और हमें दुःख पहुंचाना ही पड़ता है। दुनिया ही ऐसी है—यह घृणित और दुःखदायी दुनिया। आह !" और उन्होंने दीर्घ, गहरा उच्छ्‌वास छोड़ा। "मै यह भी नहीं कह सकती कि मैं आपको मित्र बनाकर खुश हूं—हालांकि खुश मैं हूं। यह कहना भी आपके साथ अन्याय होगा। मैं अपने मुह से एक भी शब्द ऐसा नहीं निकाल सकती, जिसे क्रूर न समझा जाए। इसलिए अब हम लोगों को बिना और कुछ कहे-सुने विदा होना चाहिए। अलविदा !" और मदाम द सान्त्रे ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

न्यूमैन ने हाथ नहीं मिलाया और वह खड़ा रहा। उसने अपनी आंखें उठाईं तथा मदाम द सान्त्रे के चेहरे को देखा। उसे लग रहा था कि मारे गुस्से के उसकी आंखों से आंसुओं की धार बह निकलेगी। "आप क्या करने जा रही हैं ?" उसने पूछा, "आप कहां जा रही है ?"

"मै वहां जा रही हूं, जहां मै किसीको कोई दुःख नही दूंगी और जहां किसी भी प्रकार की कोई दुष्ट बात न होगी। मैं इस दुनिया को छोड़कर जा रही हूं।"

"इस दुनिया से जा रही हैं ?"

"मै कन्वेंट (ईसाई मठ) में जा रही हूं।"

"कन्वेंट में जा रही हू !" न्यूमैन ने गहरे क्षोभ के साथ ये शब्द दोहराए। उसे ऐसा लगा जैसे वे कह रही हैं कि मैं अस्पताल जा रही हूं। "कन्वेंट में जा रही है—आप ?"

"मैने आपसे नही कहा था कि मै आपको किसी सांसारिक लाभ या आनन्द के लिए नहीं छोड़ रही हूं ?"

लेकिन न्यूमैन की समझ में फिर भी कुछ नहीं आया। "आप नन (भिक्षुणी) बनेंगी," वह कहे जा रहा था, "जीवन—सारा जीवन एक कोठरी में गाउन पहनकर और मुंह पर सफेद परदा डालकर बिता देंगी ?"

"हां, नन बनूंगी—कारमेलाइट कन्वेण्ट की नन," मदाम द सान्त्रे ने कहा,

"ईश्वर की इच्छा हुई, तो सारे जीवन के लिए।"

न्यूमैन को यह विचार बड़ा भयानक प्रतीत हुआ ; इतना भयानक कि वह उसपर विश्वास नहीं कर सकता था। उसे ऐसा लगा कि उससे कहा गया है कि मदाम द सान्त्रे अपने सुन्दर मुख को चाकू से काटकर बदसूरत बना देंगी, या वे कोई ऐसी दवा पी लेंगी, जिससे पागल हो जाएं। उसने अपने दोनों हाथ जोड़ लिए और बुरी तरह कांपने लगा।

"मदाम द सान्त्रे, नहीं, नहीं, ऐसा न कीजिए !" उसने कहा, "मैं आपसे प्रार्थना करता हूं ! अगर आप चाहें, तो मैं अपने घुटनों पर बैठकर आपसे प्रार्थना करने के लिए तैयार हूं।"

मदाम द सान्त्रे ने न्यूमैन की बाह पकड़ ली। उनके स्पर्श में कोमलता थी, दया का भाव था और आश्वस्त करने की उत्कट इच्छा थी। "आप नहीं समझते," उन्होने कहा, "आपके बड़े गलत ख्याल हैं। यह कोई भयंकर बात नहीं है। इससे तो मुझे शान्ति मिलेगी और सुरक्षा प्राप्त होगी। ऐसा करने से मै रोज-रोज के सांसारिक दु:खों से, उन सांसारिक दुःखों से, कष्टों से छुट्टी पा जाऊंगी, जो यहां निर्दोष लोगों को भोगने पड़ते हैं। और ऐसा सारे जीवन के लिए हो जाएगा—यही तो इसका सबसे बड़ा लाभ है ! वहां फिर मुझे कोई कष्ट नहीं दे सकेगा।"

न्यूमैन निर्जीव-सा कुर्सी पर गिर पड़ा ; और वहां बैठा-बैठा उन्हें देखता रहा। वह कुछ कह रहा था, लेकिन शब्द निकल नहीं रहे थे। यह इतनी सुन्दर स्त्री, जिसमें सारी दुनिया की श्रेष्ठता निहित है, जो किसी भी घर को स्वर्ग बना सकती है, वह उस आदमी से मुंह मोड़ ले, जो एक बहुत ही समृद्ध और सुनहले जीवन बिताने का प्रस्ताव कर रहा है।—वह उस आदमी से, उसके भविष्य से, उसकी सम्पत्ति से, उसके प्रेम और विनय से मुंह मोड़ ले और अपने-आपको मठ की काली कोठरी में जिन्दा दफन कर ले, यह ऐसा भयानक ख्याल था, जो किसी भी तरह न्यूमैन के दिमाग में बैठ ही नही पा रहा था। ज्यों-ज्यों वह इस बात को समझता जा रहा था, त्यों-ज्यों उसकी भयंकरता का प्रभाव न्यूमैन पर बढ़ता जा रहा था। जो परीक्षा उसने अभी दी थी, उसका यह बड़ा ही वाहियात अन्त था। "आप एक नन बनेंगी !" उसने चीखकर कहा, "आप अपनी इस सुन्दरता का नाश कर लेंगी—आप अपने-आपको तालों से दीवार के भीतर बन्द कर लेंगी ! कभी नहीं, कभी नहीं। अगर मेरा बस चला, तो मैं ऐसा कभी

नहीं होने दूंगा !" और वह उठकर खड़ा हो गया तथा ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा।

"आप नहीं रोक सकते," मदाम द सान्त्रे ने कहा, "और ऐसा मैं कुछ आपके सन्तोष के लिए भी कर रही हूं। इससे आपको सान्त्वना मिलनी चाहिए। आप क्या समझते हैं कि मैं इस दुनिया में रही आऊंगी ? आपके बगल में रहती हुई और फिर भी आपके साथ के बिना ? नहीं, अब सब तय हो चुका है। अलविदा, अलविदा !"

इस बार न्यूमैन ने दोनों हाथों से मदाम द सान्त्रे का हाथ पकड़ लिया। "हमेशा के लिए ?" उसने कहा। मदाम द सान्त्रे के होंठों में ज़रा-सा स्पंदन हुआ, लेकिन कोई शब्द नहीं निकला और उसके अपने मुंह से कुछ अपशब्द-सा निकल गया। मदाम द सान्त्रे ने अपनी आंखें बन्द कर ली थीं, जैसे उन्हें यह अपशब्द सुनकर बड़ा दुःख हुआ हो ; और फिर न्यूमैन ने मदाम द सान्त्रे को अपनी ओर खींच लिया और उन्हें अपने बाहुपाश में बांध लिया। उसने उनका गोरा चेहरा चूम लिया ; एक क्षण के लिए मदाम ने इसका प्रतिरोध किया और फिर अपने-आपको समर्पित कर दिया। इसके बाद उन्होंने पूरी शक्ति लगाकर अपने-आपको न्यूमैन के आलिंगन से छुड़ा लिया और लम्बे, चमकते हुए फर्श पर दरवाज़े की ओर भागती हुई चली गईं। दूसरे ही क्षण मदाम द सान्त्रे के निकलने के बाद न्यूमैन के सामने दरवाज़ा बन्द हो चुका था।

जैसे हो सका, न्यूमैन भी वहां से चला आया।

इक्कीस

पोयतियर्स में एक बड़ा ही सुन्दर घूमने का स्थान है। यह स्थान ऊंची पहाड़ी के चारों तरफ है। यहां खूब घने वृक्ष हैं। छोटा-सा कस्बा इसी पहाड़ी के चारों ओर बसा हुआ है। पहाड़ी पर से नीचे के उपजाऊ खेत दिखाई पड़ते हैं। किसी ज़माने में अंग्रेज़ नरेशों ने यहां पर अधिकार कर लिया था और अपना अधिकार बनाए रखने के लिए युद्ध किया था। अगले दिन का अधिकांश भाग न्यूमैन ने इसी स्थान पर घूम-घूमकर बिताया और वह बार-बार इस ऐतिहासिक भूमि को

देखता रहा ; लेकिन अगर बाद में आप उससे यह पूछते कि मैदानों में सामने उसने कोयले की खानें देखी थीं या अंगूर की बेलों के उद्यान, तो शायद वह इसका ठीक-ठीक उत्तर नहीं दे सकता था। वह शोक-सागर में डूबा हुआ था। सोचने से उसके दु:ख में ज़रा भी कमी नही हुई थी। अब उसे लग रहा था कि मदाम द सान्त्रे को उसने हमेशा के लिए खो दिया है ; लेकिन फिर भी, जैसाकि वह मन ही मन कहता था, उसकी समझ में नहीं आता था कि वह अपने-आपको मदाम द सान्त्रे के परित्याग के लिए किस तरह राज़ी कर सकता है। फ्लूरी-यर्स और उसमें रहनेवाले लोगों से मुंह मोड़ लेना उसे असम्भव प्रतीत हो रहा था। उसे लगता था कि कहीं न कहीं कोई आशा की किरण ज़रूर दिखलाई पड़ेगी या कोई न कोई सूत्र हाथ ज़रूर लगेगा, जिससे वह अपनी मनोवांछित आकांक्षा पूरी कर सकेगा। वह सोचता था कि एक बार उसे सही रास्ता मिल जाए, तो वह ज़रूर ही अपने मन की चीज़ पा लेगा। उसे लग रहा था कि वह एक दरवाज़े के सामने खड़ा है, दरवाज़े के हत्थे पर उसका हाथ रखा है, वह ज़ोर-ज़ोर से हत्थे को घुमा रहा है, दरवाज़े पर घूंसे मार रहा है, आवाज़ें दे रहा है, घुटनों से धक्के मार रहा है और पूरी ताकत से उसने दरवाज़े को झक-झोर डाला है, लेकिन उसे मृत्यु जैसे मौन के सिवा कोई उत्तर नहीं मिला है और फिर भी उसे कोई चीज़ वहां रोके हुए थी—कोई ऐसी बात थी, जिसकी वजह से उसकी उंगलियां उस काल्पनिक दरवाज़े के हत्थे को ज़्यादा से ज़्यादा ज़ोर के साथ पकड़ती जा रही थीं। न्यूमैन को बहुत भरोसा हो गया था। उसे पक्का विश्वास हो गया था कि मदाम द सान्त्रे के साथ उसका विवाह ज़रूर होगा। उसकी सारी योजना बड़ी सूझ-बूझ, सावधानी और प्रौढ़ताजन्य अनु-भव के साथ बनाई गई थी। उसके भावी जीवन की कल्पना बड़ी ही सुखपूर्ण तथा व्यापक थी। और यह कल्पना एक ही प्रहार में नष्ट नहीं हो सकती थी। इसमें शक नहीं कि उसकी कल्पना के महल की नींव को बड़ा घातक धक्का लगा था, लेकिन फिर भी उसके मन में यह बात घर कर गई थी कि मैं, जहां तक हो सकेगा, इसकी रक्षा करूंगा। उसके साथ जो अन्याय हुआ था, वह उसके प्रति अत्यन्त कटु था—इतनी कटुता उसने अपने जीवन में पहले कभी अनुभव न की थी। जो प्रहार उसपर हुआ था, उसे सह लेना और फिर बिना कुछ कहे-सुने वहां से चुपचाप चले आना उस जैसे भले आदमी के भी बस की बात न थी।

वह बराबर बीती हुई घटनाओं पर बड़ी गहराई से सोच रहा था और जो कुछ हुआ था, उससे उसके मन को किसी भी प्रकार की शान्ति नहीं मिलती थी। उसका ख्याल था कि वह स्वयं अत्यन्त विश्वस्त, उदार, सहिष्णु, धैर्यवान, सरल और छोटी-मोटी बातों और अपमानों की परवाह न करनेवाला व्यक्ति है। अगर उसे थोड़ा-बहुत नीचा देखना पड़ता, थोड़ी-बहुत डांट-फटकार खानी पड़ती, उसपर कुछ ताने कसे जाते या कुछ लोग उसपर अपना बड़प्पन झाड़ते, तो भी इसे वह अपने सौदे की शर्त समझकर सारी बातें बर्दाश्त कर लेता। वह इसका ज़्यादा बुरा न मानता। हालांकि इन बातों के प्रति उसे विरोध करने का अधिकार तो रहता ही। लेकिन केवल इसलिए निराश कर दिया जाना कि वह व्यापारी है, जैसे उसने बेलगार्द परिवार से सम्पर्क होने के बाद व्यापार के संबंध में कोई बात की हो या उसके विषय में सोचा हो। सच तो यह था कि इन दिनों व्यापारिकता तो उसके ओर-पास भी कहीं नहीं थी। अगर उसे यह भरोसा होता कि बेलगार्द परिवार उसके साथ यह धोखा नहीं करेगा और ऐसा करने से रत्ती-भर भी उसके विवाह का अवसर बन रहा होता, तो वह दिन में पचास बार व्यापारिकता की निन्दा करने को तैयार था। यह भी मान लिया जाए कि व्यापारी होने के कारण उसके साथ यह धोखा हुआ, तो भी यह तो स्वीकार करना ही होगा कि बेलगार्द घराने के लोगो को व्यापारी वर्ग के लोगों के बारे में बहुत कम ज्ञान था और उनको यह तो पता ही नहीं था कि व्यापारी लोग छोटी-छोटी बातों की परवाह नहीं करते हैं! उसके साथ जो भयानक अन्याय हुआ था, उसके कारण न्यूमैन को बड़ी पीड़ा थी और वह उसे सह नहीं पा रहा था। पहले उसे इतनी झुंझलाहट नही हो रही थी, क्योंकि वह उसके प्रेमालाप के निरभ्र नीले आससान में खोई हुई थी; लेकिन अब उसके साथ जो भयानक अन्याय हुआ था, वह उसे गहरी चोट पहुचा रहा था। वह हर वक्त दुःख देता रहता था, उसका दर्द हर वक्त बना रहता था। वह सोचता था कि मैं एक भला आदमी हूं और इन लोगों ने मुझ जैसे भले आदमी के साथ इतना अन्याय किया है। जहां तक मदाम द सान्त्रे के आचरण का सवाल था, उसकी याद करके वह सिहर उठता था। सचाई यह थी कि वह उनके आचरण को समझने में असमर्थ था या वह ज्यों-ज्यों इस बात पर विचार करता था कि किस नीयत से मदाम द सान्त्रे ने उसे छोड़ा है, त्यों-त्यों उनके प्रति उसका आकर्षण और

अधिक बढ़ता जाता था। मदाम द सान्त्रे की धर्मप्रियता से उसे कभी कोई परेशानी नहीं महसूस हुई। उसे वह सिवाय नाम के और कुछ नहीं समझता था। उसे लगता था कि मदाम द सान्त्रे की धार्मिक भावनाएं जिस तरह अभिव्यक्त हुई हैं और जो रूप उन्होंने ग्रहण किया है, वह न्यूमैन की दृष्टि से विशुद्ध आडम्बर था। अगर मदाम द सान्त्रे जैसे सफेद फूल कैथोलिक धर्म की भूमि पर पुष्पित हो सकते थे, तो निश्चय ही यह भूमि अनुर्वर नहीं थी। लेकिन कैथोलिक होना एक बात है और 'नन' बन जाना—स्वयं 'नन' बन जाना बिलकुल दूसरी। पुराने विचार के लोग इस तरीके को जैसा समझते थे, वह न्यूमैन के सम-सामयिक आशावादिता की दृष्टि से बड़ा ही पुरमज़ाक लेकिन दुःखभरा ढंग था। एक ऐसी स्त्री को, जो उसकी पत्नी बननेवाली हो, उसके बच्चों की मां बननेवाली हो, वह इस तरह से किसी मठ में भिक्षुणी बनने चली जाए, यह बड़ा ही दुःखान्त काण्ड था। ऐसा काण्ड, जिसे देखकर कोई भी आंखें मलने लगता, जैसे वह कोई दुःस्वप्न हो, कल्पना हो या कोई अयथार्थ घटना हो। लेकिन एक-एक करके घण्टे बीतते गए और इस घटना की असत्यता सिद्ध नहीं हुई। उसे बस इतना ही ध्यान रहा कि उसने बड़े ही आवेश में मदाम द सान्त्रे का आलिंगन किया था। उसे उनके शब्द बार-बार याद आते थे। उनकी वे आंखें, नज़रें बार-बार याद आती थीं ; वह इस विषय में फिर-फिर सोचता और उनमें निहित रहस्य को झटकारकर फेंक देने की कोशिश करता, पर फिर भी उसे लगता कि उन सबका कोई शाश्वत अर्थ है, अभिप्राय है। मदाम द सान्त्रे का यह कहना था कि उनकी भावनाएं उनके लिए धर्म के तुल्य हैं। इसका क्या मतलब है ? क्या वह धर्म पारिवारिक नियमों का था, जिस धर्म में उनकी बुढ़िया मा सबसे बड़ी पादरिन थी ? वे अपनी उदारता से इस बात को चाहे जितना घुमा-फिराकर कहती, लेकिन एक तथ्य निश्चित था और वह यह कि उन लोगों ने मदाम द सान्त्रे पर बल का प्रयोग किया था। मदाम द सान्त्रे ने अपनी उदारता से अपनी मां और भाई को बचाने की कोशिश की थी, लेकिन जब न्यूमैन यह सोचता कि वे लोग बेदाग बच निकलेंगे, तो उसका खून खौलने लगता।

धीरे-धीरे चौबीस घण्टे बीत गए और दूसरे दिन सवेरे न्यूमैन इस निश्चय के साथ उठा कि वह फ्लूरीयर्स वापस जाएगा और मदाम द बेलगार्द तथा उनके पुत्र से फिर मिलेगा। इस कार्य में उसने ज़रा भी समय नष्ट नहीं किया। जब

वह बढ़िया सड़क पर अपनी गाड़ी में बैठा तेज़ी से चला जा रहा था, तो उसने अपने दिमाग के सुरक्षित कोने से उस सूचना के बारे में विचार करना शुरू किया, जो बेचारे वेलेंतीन ने मरते समय उसे दी थी। वेलेंतीन ने कहा था कि वह उस सूचना से कुछ लाभ उठा सकता है। न्यूमैन ने सोचा कि यह सूचना प्राप्त कर लेना लाभदायी होगी। इस बात की ओर न्यूमैन का ध्यान पहली बार नहीं गया था। इस सम्बन्ध में उसने अनेक बार इसके पहले भी सोचा था। जो कुछ उसे पता था, वह बड़ी मोटी-सी बात थी। —बड़ी दुष्टतापूर्ण और उलझन में डालनेवाली ; लेकिन अब न्यूमैन न तो असहाय था और न उसे कोई भय था। ज़ाहिर था कि वेलेंतीन ने उसके हाथ में एक बहुत बड़ा शस्त्र थमा दिया था। हालाकि वह उस शस्त्र को पूरी तरह न्यूमैन को नहीं पकड़ा सका था। लेकिन अगर वह इस गुप्त रहस्य की बात उसे नहीं बता पाया था, तो भी उसने इस रहस्य के सूत्र का एक सिरा उसके हाथ में थमा दिया था, जिसका दूसरा छोर मिसेज़ ब्रैड के पास था। मिसेज़ ब्रैड को देखकर न्यूमैन को हमेशा कुछ यह आभास होता था कि वे घर के रहस्य की बातें जानती हैं, और न्यूमैन को उनका सम्मान प्राप्त था। इसलिए न्यूमैन का अनुमान था कि वह चाहे तो मिसेज़ ब्रैड को गुप्त रहस्य बताने के लिए राज़ी कर सकता है। जहां तक मिसेज़ ब्रैड से बातचीत करने का सवाल था, न्यूमैन को यह काम बड़ा सरल प्रतीत हो रहा था। लेकिन बात करने से जो रहस्य खुलता, उसके बारे में न्यूमैन को यह डर लगता था कि कहीं वह बड़ी ही खराब बात न हो। इसके बाद जब न्यूमैन को वृद्धा और उनके पुत्र का फिर ध्यान आया, कि वे दोनों एक-दूसरे के पास-पास खड़े हैं, वृद्धा का हाथ अरबेन के कंधे पर रखा है और दोनों की आंखों में शिष्टाचार का वही अभाव है, तो उसने मन ही मन ज़ोरों से कहा कि किसी भी तरह से उसे आशंकित होने की आवश्यकता नही है। कम से कम इस रहस्य में कोई न कोई घर की ऐसी बात है, जिसे वे लोग जी-जान से छिपाना चाहेंगे। जब वह फ्लूरीयर्स पहुंचा, तो बड़ा आनन्दमग्न था। उसे पक्का विश्वास हो गया था कि कम से कम तार्किक दृष्टि से कि उनका भण्डा फोड़ने की धमकी के आगे बुढ़िया और उसका लड़का, दोनों भरी बालटियों की तरह उसके सामने लुढ़कने लगेंगे। फिर उसे याद आया कि सबसे पहले उसे यह पता लगा लेना चाहिए कि आखिर वह किस बात का भेद खोलेगा ; लेकिन इसके बाद क्या पता कि वह

फिर से अपनी खुशी प्राप्त कर ले। मां और बेटे दोनों अपने सुन्दर शिकार को छोड़कर आतंकित हो कहीं छिपने चले जाएगे और जब मदाम द सान्त्रे अकेली रह जाएंगी, तो अपने-आप उसके पास वापस आ जाएंगी। क्यों न उन्हे एक ऐसा मौका दिया जाए, जिससे वे फिर दुबारा सोच सकें और जिस कठिनाई के सागर में वे गोते खा रही हैं, उससे ऊबकर किनारे पर आ सकें। वे यह बात किस तरह अपनी आंखों से ओझल होने देंगी कि न्यूमैन का घर कन्वेंट से कहीं अधिक सुविधाजनक है ?

पहले की तरह इस बार भी न्यूमैन ने अपनी गाड़ी फ्लूरियर्स पहुंचकर सराय के सामने छोड़ दी और वह कोठी की तरफ पैदल ही गया। जब वह बड़े फाटक के सामने पहुचा, तो उसके मन में एक विचित्र भाव आया—यह भाव उसकी अगाध भलमनसाहत का प्रतीक था। वह वहां खड़ा-खड़ा फाटक में लगी छड़ों के अन्दर से प्राचीनकाल की उस कोठी को देख रहा था और सोच रहा था कि इस पुरानी कोठी में, जिसका इतना अच्छा नाम है, ऐसा क्या और कितना बड़ा अपराध हो गया है, जिसकी वजह से लोगों को यहां इतना दु:ख झेलना पड़ता है, इतनी पीड़ा और यंत्रणा का सामना करना पड़ता है। न्यूमैन ने अपने मन में कहा कि यह रहने के लिए बड़ी ही अशुभ जगह है। तभी उसे ख्याल आया कि वह भी किस जगह, कैसी गन्दी जगह अन्दर जा रहा है ! वह दण्ड देने आया था, लेकिन उसका विचार बदल गया और तभी उसने सोचा कि वह बेलगार्द परिवार के सदस्यों को एक और मौका देगा। वह फिर उनसे न्याय की भीख मांगेगा, बिना भयभीत हुए और अगर वे तर्कसंगत बात मान लेगें, तो वह उनके घर के गुप्त रहस्य के बारे में और आगे कुछ भी पता नहीं लगाएगा। जितना उसे मालूम था, वही काफी खराब था।

चौकीदार ने उसे पहले दिन की ही तरह जरा-सा फाटक खोलकर अदर आ जाने दिया और वह सामने के पक्के चौक से होता हुआ खाई पर बने पुल को पार कर मकान के दरवाज़े पर पहुच गया। उसके दरवाज़े तक पहुचने के पहले ही वह खोला जा चुका था और जैसे दैव उसका पूरा साथ दे रहा था। दरवाज़ा खोले मिसेज़ ब्रैड उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उनका चेहरा हमेशा की तरह भावहीन और निराश था। जैसे ज्वार के उतर जाने के बाद समुद्र की रेत हो जाती है। उनके काले कपड़े और भी अधिक काले लग रहे थे। न्यूमैन

को पता था कि मिसेज़ ब्रैड के चेहरे की यह भावहीनता बड़े गहरे भावों का माध्यम बन सकती है और जब कुछ दबे हुए उत्साह के साथ मिसेज़ ब्रैड ने उनसे फुसफुसाकर कुछ कहा, तो न्यूमैन को ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ। मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "मेरा ख्याल है कि श्रीमन् फिर प्रयत्न करेंगे। मैं आपकी प्रतीक्षा ही कर रही थी।"

"मुझे आपको देखकर बड़ी खुशी हो रही है," न्यूमैन ने कहा, "आप मेरी मित्र हैं।"

मिसेज़ ब्रैड ने उनकी ओर अपनी धुधली दृष्टि से देखा। "मैं आपकी हितैषी हूं, लेकिन अब मेरी व्यर्थ की हिताकांक्षा से क्या होता है!"

"तो आपको पता है कि इन लोगों ने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया है?"

"ओह श्रीमन्," मिसेज़ ब्रैड ने शुष्क स्वर में कहा, "मुझे सब कुछ पता है।"

न्यूमैन एक क्षण के लिए ठिठक गया। "सब कुछ?"

मिसेज़ ब्रैड ने चमकती हुई आंखों से उनकी तरफ देखा।" श्रीमन्, मुझे बहुत ज़्यादा पता है।"

"कोई भी व्यक्ति बहुत ज़्यादा नही जानता। मैं आपको बधाई देता हूं। मैं यहां मदाम द बेलगार्द और उनके पुत्र• से मिलने आया हूं," न्यूमैन ने कहा, "क्या वे लोग घर पर हैं? अगर नहीं हैं, तो मैं उनकी प्रतीक्षा करूंगा।"

"मालकिन हमेशा ही घर में रहती हैं," मिसेज़ ब्रैड ने जवाब दिया, "और उनके पुत्र भी ज़्यादातर उन्हीके साथ रहते हैं।"

"तो कृपा कर उन्हें बता दीजिए—चाहे तो पहले एक को बता दीजिए फिर दूसरे को; या इच्छा हो तो दोनों को एकसाथ ही बता दीजिए कि मैं यहां आया हूं और उनसे मिलना चाहता हूं।"

मिसेज़ ब्रैड कुछ ठिठक-सी गईं। "क्या मै आपसे कुछ और पूछ सकती हूं?"

"आपने जब भी कुछ पूछा है, तो हमेशा उसका कोई न कोई उचित कारण रहा है," न्यूमैन ने अपना वाक्-चातुर्य दिखाते हुए कहा।

मिसेज़ ब्रैड ने झुर्री पड़ी हुई पलकों को आदर का भाव प्रकट करने के लिए झुका लिया; लेकिन फिर वे ठहर गईं। यह अवसर बड़ा ही गंभीर था। "श्रीमन्, क्या आप उन लोगों से फिर यह कहने आए हैं कि वे लोग आपका विवाह करने के लिए राज़ी हो जाएं? लेकिन शायद आपको यह नहीं पता है कि

मदाम द सान्त्रे आज सवेरे पेरिस वापस चली गई ।"

"आह, वे चली गई !" और न्यूमैन अपना दुःख व्यक्त करता हुआ छड़ी से ज़मीन पर प्रहार करने लगा ।

"वे सीधी कन्वेंट गई हैं—इस कन्वेंट का नाम कारमेलाइट है । ओह, मुझे लगता है कि श्रीमन् को पहले से ही पता है । मेरी मालकिन और उनके पुत्र को यह बात बहुत खली है । मदाम द सान्त्रे ने अपना निश्चय कल ही रात को बताया था ।"

"आह, तो उन्होंने यह बात इन लोगों से भी छिपा रखी थी ?" न्यूमैन ने कहा, "ठीक, ठीक ! और क्या वे लोग बहुत नाराज हैं ?"

"वे लोग खुश नहीं हैं," मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "लेकिन उनका बुरा मानना स्वाभाविक है । लोगों का कहना है कि सारे ईसाई जगत् में कारमेलाइट कन्वेंट में रहना सबसे कठिन कार्य है । आप यह भी कह सकते हैं कि वहां लड़कियों को, जो 'नन' बनने जाती हैं, बिलकुल अमानवीय ढंग से रखा जाता है । कन्वेंट में जाने के बाद हर चीज़ का हमेशा के लिए परित्याग कर देना होता है मदाम द सान्त्रे के वहां रहने की कल्पना करना बड़ा ही भयावह है । कम से कम यह सुनने के बाद मैं तो बहुत रोई ।"

न्यूमैन ने एक क्षण के लिए वृद्धा की तरफ देखा । "मिसेज़ ब्रैड, हमें रोना नहीं चाहिए ; हमें कुछ करना चाहिए । जाइए और उनको खबर दीजिए !" और न्यूमैन ने अन्दर जाने के लिए कदम बढ़ाया ।

लेकिन मिसेज़ ब्रैड ने उन्हें आहिस्ते से रोक लिया । "क्या मैं एक और प्रश्न पूछ सकती हूं ? मुझे बताया गया है कि मेरे अत्यन्त प्रिय मि० वेलेंतीन के अंतिम समय में आप उनके पास थे । क्या उनके बारे में एक शब्द भी आप मुझे बता सकते हैं ? श्रीमन्, मैंने बिचारे काउंट को अपने बच्चे की तरह पाला था । एक साल तक शायद ही मैंने उसको अपनी गोद से ज़रा भी उतारा हो । मैंने ही उन्हें बोलना सिखाया था । और काउंट कितना मीठा बोलते थे ! वह हमेशा अपनी बेचारी वृद्धा ब्रैड की तारीफ ही किया करते थे, और जब वे बड़े हो गए, उन्होंने जीवन में प्रवेश किया, तब भी उन्होंने मेरे ऊपर अपना दया-भाव बनाए रखा । और उनकी कैसी दुखद परिस्थितियों में मौत हुई है ! लोग कहते हैं कि वे किसी शराब के व्यापारी से द्वन्द्व युद्ध में मारे गए हैं । मैं इसका विश्वास नहीं

कर सकती श्रीमन् ! और क्या उन्हें बड़ी पीड़ा हुई ?"

"मिसेज़ ब्रैड, आप बड़ी बुद्धिमान और दयालु महिला हैं," न्यूमैन ने कहा, "मैं उम्मीद कर रहा था कि किसी दिन आपकी गोद में मेरे बच्चे भी खेलेंगे। वे आपके हाथों से पाले-पोसे जाएंगे। शायद अब भी ऐसा हो सके।" और न्यूमैन ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। मिसेज़ ब्रैड न्यूमैन की खुली हथेली को देखती रहीं और फिर मित्रता के इस नये प्रयत्न पर मुग्ध होकर उन्होंने भी अपना हाथ बढ़ाकर हाथ मिला लिया। न्यूमैन ने इनका हाथ दृढ़ता से पकड़ लिया और उनपर आंखें गड़ाए हुए कहा, "आप मिस्टर वेलेंतीन के बारे में सब कुछ जानना चाहती हैं ?"

"हां, यह मेरे लिए बड़ा दुखद प्रसंग होगा, लेकिन इससे मुझे आनन्द भी मिलेगा श्रीमन्।"

"मैं आपको सब कुछ बता सकता हूं। क्या आप अकेले में इस कोठी के बाहर मुझसे मिल सकती हैं ?"

"कोठी से बाहर श्रीमन् ? मैं नहीं जानती। मैंने कभी कोशिश नहीं की।"

"तो फिर कोशिश कीजिए, पूरी कोशिश कीजिए। आज शाम को अंधेरा पड़ने के बाद। आप मेरे पास उस पहाड़ी पर टूटी हुई गढ़ी में आइए, मैं वहां आपको चर्च के सामने वाले मैदान पर मिलूंगा। मैं वहीं आपकी प्रतीक्षा करूंगा। मुझे आपको एक बहुत जरूरी बात बतानी है। आप जैसी वृद्धा स्त्री जो चाहे वह कर सकती है।"

मिसेज ब्रैड के दोनों होठ खुल गए। वे सोच में डूब गई और एकटक देखती रह गईं। "क्या आप काउंट की तरफ से मुझे कुछ बताएंगे ?" मिसेज़ ब्रैड ने पूछा।

"हां, काउंट का एक संदेश देना है—वह संदेश, जो उन्होंने मृत्यु-शय्या से आपके लिए भेजा है।"

"तो फिर मैं आऊंगी, मैं जरूर आऊंगी, उनका संदेश सुनने के लिए सब कुछ करूंगी।"

मिसेज़ ब्रैड न्यूमैन को उस लम्बे-चौड़े बैठकखाने में ले गईं जिसमें वह कल आ चुका था। और इसके बाद न्यूमैन की आज्ञानुसार खबर देने के लिए अन्दर चली गईं। न्यूमैन काफी देर तक प्रतीक्षा करता रहा; और अंत में वह घण्टी बजाकर

अपना अनुरोध दोहराने की सोचने लगा। वह अपने चारों ओर घूमकर यह देख रहा था कि घण्टी किस जगह है, तभी मारक्विस अन्दर आए। उनके कन्धे पर वृद्धा मां का हाथ रखा था। यह तो आपने देख ही लिया था कि न्यूमैन बड़े तर्क-संगत ढंग से बात कहता था। इन लोगों को आते देखकर न्यूमैन ने मन ही मन कहा, खास तौर से उन संकेतों के कारण जो उसे वेलेंतीन ने किए थे कि वृद्धा और उनका पुत्र दोनों ही शक्ल से बड़े दुष्ट दिखलाई पड़ रहे हैं। 'अब इसमें किसी प्रकार की भूल नहीं हो सकती,' न्यूमैन ने आगे बढ़ते हुए मन ही मन कहा, 'कि यह बहुत ही दुष्ट हैं, अब इनके चेहरे से नकाब हट गया है।' मदाम द बेलगार्द और उनके पुत्र के चेहरे से इसमें संदेह नहीं कि बड़ी उद्विग्नता प्रकट हो रही थी। ऐसा लगता था कि वे लोग रात-भर सो नही सके हैं। इसके बाद उन्हें एक और ऐसी मुसीबत का सामना करना पड़ रहा था, जिसके बारे में वे समझते थे कि उन्होने उससे अपनी जान छुड़ा ली है। इसलिए स्वाभाविक था कि जब उन्होंने न्यूमैन को देखा, तो उनकी दृष्टि में कोमलता नहीं थी। न्यूमैन उन लोगों के सामने खड़ा था और उन लोगों ने अपनी नजरों से जैसा कुछ स्वागत हो सकता था, वह किया। न्यूमैन को ऐसा लगा कि जैसे किसी मकबरे का दरवाज़ा यकायक खुल गया है और उसकी ठण्डी, सील-भरी हवा का झोंका उसे आकर लगा है।

"आप देख ही रहे हैं कि मैं वापस लौट आया हूं," उसने कहा, "मैं फिर से प्रयत्न करने के लिए आया हूं।"

"यह बड़ी ही हास्यास्पद बात होगी," मो० द बेलगार्द ने कहा, "कि हम आपके सामने यह कहें कि हमें आपको देखकर प्रसन्नता हो रही है या हम आपके आने के इस कार्य को आलोचना की दृष्टि से नहीं देखते।"

"ओह, इस तरह के प्रश्न मत उठाइए," न्यूमैन ने हंसते हुए कहा, "नहीं तो मैं भी आपके बारे में ऐसे ही सवाल करने लगूगा। इसमें संदेह नहीं कि अगर मेरा वश चलता, तो मैं आपसे कभी मिलने के लिए न आता। इसके अलावा मैं अपनी बात संक्षेप में कहकर जल्दी से जल्दी इस प्रकरण को समाप्त कर दूंगा। आप मदाम द सान्त्रे पर से अपनी रोक उठा लीजिए।—उनको स्वतंत्र कर दीजिए—और मैं तुरन्त यहां से चला जाऊंगा।"

"हम लोगों को जब आपके आने की खबर मिली, तो यह सोच रहे थे कि आपसे

मिलें या नहीं," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "और एक बार तो हमने यह भी सोचा कि आपको मिलने का यह सम्मान न दिया जाए। लेकिन मुझे ऐसा लगा कि हमें सभ्यता से पेश आना चाहिए, जैसाकि हमेशा हमने किया है और मुझे आपको यह सूचना देते हुए सन्तोष होता है कि इस तरह की कमज़ोरी हमारे वर्ग के लोग केवल एक ही बार अनुभव करते हैं।"

"हो सकता है कि आप एक ही बार कमज़ोरी दिखलाएं, लेकिन आप धृष्टता तो कई बार कर सकती हैं मदाम," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "जो हो, मैं यहां आपसे बातचीत करने के लिए नहीं आया हूं। मैं सिर्फ इतनी-सी बात कहने आया हूं : कि अगर आप तुरन्त अपनी पुत्री को यह लिख दें कि आपने मुझसे शादी न करने की जो आज्ञा दी थी, वह वापस ले रही हैं और अपनी रोक हटा रही हैं, तो बाकी बातों की फिक्र मैं आप कर लूंगा। आप उन्हें नन तो नहीं बनाना चाहतीं—नन बनने में कैसी भयंकर बातों का सामना करना पड़ता है, यह आप मुझसे ज्यादा जानती है। एक व्यापारी से शादी कर लेना इसकी अपेक्षा ज़्यादा अच्छा होगा। मुझे अपने दस्तखत करके सील-मोहरबन्द अपना पत्र दे दीजिए और इसमें लिख दीजिए कि आपकी पुत्री आपके आशीर्वादों-सहित मुझसे विवाह कर सकती है, मैं उस पत्र को कन्वेंट ले जाऊंगा और वहां से उसे निकाल लाऊंगा। मैं आपको यह मौका दे रहा हूं—और मैं कहता हूं कि ये शर्तें बहुत ही आसान हैं।"

"आप जानते ही हैं कि हमारा इस मामले में मत आपके प्रतिकूल है। हम इनको बहुत कड़ी शर्तें मानते हैं," अरबेन द बेलगार्द ने कहा। तीनों ही व्यक्ति तने और अकड़े हुए कमरे के बीचोबीच खड़े थे। "मेरा ख्याल है कि मेरी मां आपको यह बता देंगी कि उन्हें अपनी पुत्री का नन हो जाना मंजूर है, लेकिन मिसेज़ न्यूमैन होना मंजूर नहीं है।"

लेकिन वृद्धा ने अपनी गम्भीरता प्रदर्शित करते हुए अपनी बात पुत्र से ही कहलवाई। वे केवल मुस्कराती रहीं, जिसमें मधुरता का अंश भी था। और सिर हिलाती रहीं और यह दोहराती रहीं, "लेकिन एक बात मि० न्यूमैन, केवल एक बात!"

न्यूमैन ने अब तक जितनी चीज़ें देखी या सुनी थीं, उन सबमें कभी उसे इतनी कठोरता के दर्शन नहीं हुए थे, जितनी वृद्धा के इस हाव-भाव से और उनके उस स्वर से, जिसमें वे शब्द कहे गए थे। "क्या आपको ऐसा करने के लिए कोई भी

बात बाध्य कर सकती है ?" उसने पूछा, "क्या आप कोई भी ऐसी बात जानती हैं, आपको किसी भी ऐसी बात का पता है, जिसकी वजह से लाचार होकर आपको मेरी बात माननी पड़ जाए ?"

"आपकी भाषा श्रीमान !" मारक्विस ने कहा, "शोकसतप्त लोगों के प्रति इस भाषा का उपयोग उचित नहीं है।"

"अधिकांशतः," न्यूमैन ने जवाब दिया, "आपकी यह आपत्ति उचित होगी, हालांकि मदाम द सान्त्रे के वर्तमान इरादों को देखते हुए हमारा समय बड़ा बहुमूल्य है; लेकिन फिर भी आप जो बात कह रहे है, उसपर मैंने पहले ही विचार कर लिया था और आज जो मैं यहां आया हूं, उसका एक मुख्य कारण यह है कि मैं आपके भाई को और आपको बिलकुल अलग-अलग दो व्यक्ति मानता हूं। मैं आप दोनों में कोई समानता या सम्बन्ध नहीं देखता। आपका भाई आपके कृत्यों पर लज्जित था। वह बेचारा घायल हो गया था और अपना दम तोड़ रहा था, तब उसने आपके इस आचरण के लिए मुझसे क्षमा मांगी। उसने अपनी मां के कृत्यों के लिए क्षमा मांगी।"

एक क्षण के लिए वृद्धा और उनका पुत्र दोनों ही स्तब्ध रह गए। ऐसा लगा कि न्यूमैन ने उनपर शारीरिक प्रहार किया है। मदाम द बेलगार्द और उनके पुत्र का चेहरा सुर्ख हो गया और दोनों ने परस्पर एक-दूसरे को बड़ी ही कठोर दृष्टि से देखा। अरबेन ने दो शब्द कहे, जिन्हें न्यूमैन केवल थोड़ा-सा सुन सका, लेकिन उसे ऐसा लगा कि उसने कहा है, 'बेचारा दुखिया !'

"आप जीवितों का तो सम्मान करते नहीं हैं," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "लेकिन कम से कम जो मर गया है, उसका सम्मान तो करिए। मेरे अबोध और निर्दोष पुत्र की यों बदनामी न कीजिए—यों उसका अपमान न कीजिए।"

"मैं सच बात कह रहा हूं," न्यूमैन ने कहा, "और मैं यह बात एक विशेष उद्देश्य से कह रहा हूं। मैं फिर दोहराता हूं—बिलकुल स्पष्ट रूप से। आपका पुत्र आपके कृत्यों पर बहुत ही लज्जित था—आपके पुत्र ने मुझसे क्षमा-याचना की।"

अरबेन द बेलगार्द गुस्से से गरम-गरम सांसें छोड़ रहा था और न्यूमैन का ख्याल था कि वह बेचारे वेलेंतीन की शक्ल की कल्पना करके उसपर मन ही मन बहुत बिगड़ रहा था। न्यूमैन ने यह बातें इतने आकस्मिक ढंग से कही थीं कि बहुत ही चकित होकर अरबेन द बेलगार्द अपने भाई के प्रति क्षणिक कमजोरी में बड़े ही

अपमान का भाव कुछ क्षणों के लिए प्रकट कर बैठा। लेकिन उसकी मां को भी आवरण डालने में कुछ देर लगी। "यह आपकी बहुत बड़ी भूल है श्रीमान," उन्होंने कहा, "मेरा पुत्र हंसोड़ ज़रूर था, लेकिन वह अशिष्ट कभी नहीं हुआ। वह पूरे सम्मान के साथ मरा है और उसने अपने घर का नाम रखा है।"

"आप उसे बिलकुल गलत समझे," मारक्विस ने अपने को संभालते हुए कहा, "जो बात आप कह रहे हैं, वह असम्भव है!"

"ओह, मैं बेचारे वेलेंतीन की क्षमा को इतना महत्त्व यहां नहीं देना चाहता," न्यूमैन ने कहा, "वह क्षमा-याचना मेरे लिए उतने आनन्द का विषय नहीं थी, जितनी कि दुःख का। जो क्रूर कर्म हुआ है, उसमें उस बेचारे का कोई दोष न था। उसने कभी मुझे आघात नहीं पहुंचाया और न अन्य किसीने, और वेलेंतीन तो सम्मान और प्रतिष्ठा की जीती-जागती प्रतिमा था। लेकिन इससे पता लगता है कि आपने जो कार्य किया, उसको उसने कितना गर्हित समझा।"

"अगर आप यह सिद्ध करना चाहते हैं कि अपने अंतिम क्षणों में मेरा गरीब भाई पागल हो गया था, तो मैं केवल यही कह सकता हूं कि जो दुःखपूर्ण परिस्थितियां थीं, उनमें ऐसा होना सम्भव था। लेकिन आप बस यहीं तक सीमित रहिए।"

"नहीं, वह मानसिक रूप से बिलकुल स्वस्थ था," न्यूमैन ने कहा, "उसके स्वर में शिष्टतापूर्ण लेकिन बड़ी खतरनाक दृढ़ता थी। मैंने उस जैसा चतुर और प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति कोई नहीं देखा। इतना होशियार, इतना अक्लमन्द आदमी ऐसी मौत मरे। आप जानते हैं कि आपके भाई से मेरी कितनी गहरी मित्रता थी। और अभी मैं आपको उसकी मानसिक स्वस्थता का और एक सबूत देता हूं," न्यूमैन ने यह कहते हुए अपनी बात खत्म की।

वृद्धा बड़ी शान से उठ खड़ी हुई। "यह बड़ा अशिष्टतापूर्ण है!" उन्होंने चिल्लाकर कहा, "हम आपकी बात नहीं मानते, हम उसका खण्डन करते हैं, अरबेन, दरवाजा खोल दो।" और वे मुड़ गईं और उन्होंने कांपते हुए हाथों से अपने पुत्र को इशारा किया और जल्दी-जल्दी तेज़ कदमों से कमरा पार करके दरवाज़े की ओर चल दीं। अरबेन द बेलगार्द भी उनके साथ गया और उसने दरवाज़ा खोल दिया और एक तरफ खड़ा हो गया। न्यूमैन जहां था, वहीं खड़ा रहा।

अपनी मा के चले जाने के बाद मो० द बेलगार्द खड़े थे, तभी न्यूमैन ने उनको उंगली से इशारा किया और रुकने के लिए कहा। धीरे-धीरे न्यूमैन उनकी तरफ

गया। इस बीच वह बिलकुल मौन हो गया था। दोनों व्यक्ति आमने-सामने खड़े थे। इसके बाद न्यूमैन को एक अजीब तरह की सनसनी-सी महसूस हुई और उसे लगा कि उसका जो अपमान किया गया है, वह अब फट पड़नेवाला है। "अच्छा, यह तो स्वीकार कीजिए," न्यूमैन ने कहा, "कि आपने मेरे साथ उचित व्यवहार नहीं किया है।"

मो० द बेलगार्द ने न्यूमैन की ओर सिर से पैर तक देखा और फिर बड़े ही कोमल और शिष्ट स्वर में उन्होंने कहा, "मैं व्यक्तिगत रूप से आपसे घृणा करता हूं!"

"यही भावना आपके सम्बन्ध में मेरी भी है, लेकिन शिष्टाचार के नाते मैं यह नहीं कहता हूं," न्यूमैन ने कहा, "यह बड़ी अजीब-सी बात है कि मैं आपका बहनोई बनना चाहता हू, लेकिन क्या बताऊं, मुझसे अपनी इस इच्छा का परित्याग नहीं किया जा रहा। मैं एक बार और प्रयत्न करूंगा।" और वह एक क्षण के लिए रुक गया। "आपका कोई रहस्य है, जिसे कोई नहीं जानता।" मो० द बेलगार्द न्यूमैन की ओर बड़ी कठोरता से देखते रहे, लेकिन न्यूमैन को बेलगार्द की आंखों से यह पता नहीं लगा कि उनके ऊपर उसके कथन की क्या प्रतिक्रिया हो रही है। न्यूमैन कुछ ठहर गया और इसके बाद फिर बोला, "आपने और आपकी मां ने मिलकर एक अपराध किया है।" इसपर मो० द बेलगार्द की आंखों का रंग कुछ बदला; ऐसा लगा कि वे कुछ कांप-सी गई है, ठीक उसी तरह, जैसे वह मोमबत्ती जिसको बुझाने के लिए कोई फूंक मारे। न्यूमैन ने देखा कि उनका प्रतिद्वन्द्वी बुरी तरह चौक उठा है; लेकिन उसे अपने ऊपर बड़ा आत्मसंयम था, जो सराहनीय था।

"कहते चलिए," मो० द बेलगार्द ने कहा।

न्यूमैन ने अपनी उंगली उठाकर हवा में घुमाई। "क्या मैं अब भी कहूं? आप कांप रहे हैं।"

"क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि यह दिलचस्प खबर आपको कहा से लगी?" मो० द बेलगार्द ने बड़े आहिस्ते से पूछा।

"इस मामले में मैं बड़ी सच्चाई से काम लूंगा," न्यूमैन ने कहा, "मैं जितना जानता हूं, उससे ज्यादा जानने का प्रदर्शन आपके सामने नहीं करूंगा। फिलहाल मुझे इतना ही पता है। आपने कोई ऐसा कृत्य किया है, जिसे आपको दुनिया की नज़रों से छिपाना है और अगर लोगों को इसका पता लग जाए, तो आप सबकी

निगाहों से गिर जाएंगे। आपके परिवार के घराने के नाम को धब्बा लग जाएगा, जिस पारिवारिक प्रतिष्ठा का आपको बड़ा घमण्ड है। मुझे पता नहीं कि वह क्या कृत्य है, लेकिन मैं उसका पूरा पता लगा सकता हूं। आपने जो रवैया अख्तियार किया है, उसे आप न बदलिए और देखिए कि मैं आपके इस कृत्य का पता लगा लेता हूं या नहीं। अगर आप अपना निर्णय बदल देते हैं, और अपनी बहन का विवाह शान्ति से चुपचाप मेरे साथ कर देते हैं, तो मैं आपको छोड़ दूंगा। यह हमारा सौदा रहा। है मंजूर ?"

मारक्विस बाह्य रूप से यह दिखलाने में लगभग सफल हो गए कि उनके ऊपर इस बात का कोई असर नहीं हुआ है। उनकी बाह्य मुद्रा को पिघलाना बर्फ को पिघलाने की तरह था, जो कार्य धीरे-धीरे ही हो सकता था। लेकिन न्यूमैन अपने तर्क को और मज़बूती से बार-बार दोहराता गया। अन्त में उसे उनकी आंखों में कुछ परिवर्तन दिखलाई पड़ा। वे कुछ क्षण चुपचाप सोचते हुए खड़े रहे।

"यह बात मेरे भाई ने आपको बताई है," आखिर उन्होंने अपनी आंखें ऊपर उठाकर देखते हुए कहा।

न्यूमैन एक क्षण के लिए झिझका। "जी हां, आपके भाई ने मुझे यह बात बताई है।"

मारक्विस ने मुस्कराते हुए कहा, "क्या आपसे मैंने नहीं कहा था कि मेरा भाई विक्षिप्त हो गया था ?"

"जी हा, अगर मैं इस रहस्य का पता नहीं लगाता हू, तो वह विक्षिप्त ही था, लेकिन अगर मैं पता लगा लेता हूं, तो वह बिलकुल स्वस्थ था।"

मो० द बेलगार्द ने अपने कंधे उचकाए। "आह, श्रीमन्, आप पता लगाएं, न लगाएं यह आपकी मर्ज़ी है।"

"क्या आपको डर नहीं लग रहा ?" न्यूमैन ने पूछा।

"इसका फैसला करना आपका काम है।"

"नहीं, इसका फैसला करना आपका काम है, आप फुरसत में इसपर विचार कर लीजिएगा। खूब आराम से सोच लीजिए। मैं आपको घण्टे, दो घण्टे का वक्त देने को तैयार हूं। इससे ज्यादा वक्त नहीं दूंगा, क्योंकि मुझे पता नहीं कि वे न जाने कितनी जल्दी मदाम द सान्त्रे को नन बनाने का प्रयत्न कर रहे हों ? अपनी मां से भी बातचीत कर लीजिए ; और वे भी सोच लें कि उन्हें कोई डर है कि नहीं।

मैं नहीं समझता कि वे आम तौर पर आपकी तरह सरलता से भयभीत हो जाएंगी। लेकिन आप खुद ही समझ लीजिएगा। मैं जाता हूं और गांव की सराय में प्रतीक्षा करता हूं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप जितनी जल्दी हो सके, अपने फैसले की सूचना दे दें। मेरे ख्याल से तीन बजे तक ठीक रहेगा। एक कागज़ पर 'हां' या 'ना' इतना काफी होगा। यदि आप 'हां' लिखें तो इस बार मैं चाहूंगा कि आप अपने वादे पर खरे उतरें।" और इसके साथ न्यूमैन दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल आया। मारक्विस अपने स्थान पर अविचलित भाव से खड़े रहे और जाते हुए न्यूमैन ने उनको एक बार फिर देखा। "गांव की सराय में," न्यूमैन ने अपनी बात दोहराई। इसके बाद वह मुड़ गया और कोठी से बाहर आ गया।

उसने जो कुछ किया था, उससे न्यूमैन बड़ी उत्तेजना अनुभव कर रहा था क्योंकि एक हज़ार वर्ष पुराने खानदान की पगड़ी उछालना कोई साधारण बात नहीं थी। लेकिन वह सराय वापस लौटा और वहां उसने प्रतीक्षा भी की। वह वहां कोई दो घण्टे रुका। उसने यह भी सोचा कि शायद अरबेन द बेलगार्द उसे कोई खबर ही न भेजे। लेकिन न्यूमैन का ख्याल था कि अगर उसने चुनौती का कोई जवाब न भेजा, तो भी उनका मतलब यह होगा कि उन लोगों ने अपना दोष मान लिया है। उसका ख्याल था कि बहुत संभव है कि वे लोग मौन धारण कर लें—दूसरे शब्दों में जिसका अर्थ था विरोध। लेकिन वह प्रार्थना कर रहा था कि संभवतः उसने जो तीर मारा है, वह निशाने पर लग जाए। तीन बजे एक नौकर पत्र लेकर उसके पास आया, उसपर अरबेन द बेलगार्द के सुन्दर हस्ताक्षरों में न्यूमैन का नाम लिखा हुआ था। पत्र इस प्रकार था :

"मैं आपको यह सूचित करते हुए बड़ा सन्तोष अनुभव कर रहा हूं कि मैं अपनी मां के साथ कल पेरिस वापस लौट रहा हूं, जिससे हम लोग अपनी बहन से मिल सकें और उनके इरादे की पुष्टि कर दें। यह पुष्टि आपकी धृष्टतापूर्ण उद्दण्डता का सबसे प्रभावशाली उत्तर होगी।

हैनरी अरबेन द बेलगार्द।"

न्यूमैन ने पत्र को अपनी जेब में रख लिया और सराय के कमरे में इधर-उधर घूमने लगा। पिछले सप्ताह का अधिकांश समय उसने इसी तरह कमरे में इधर से उधर घूमते बिताया था। वह शाम तक इसी प्रश्न पर सोचता रहा और इसके बाद मिसेज़ ब्रैड से मिलने निर्दिष्ट स्थान की ओर चल दिया।

जो रास्ता पर्वत के ऊपर जाता था और वहां से ध्वस्त गढ़ी की ओर जाता था, उसे खोजने में कोई कठिनाई नहीं हुई और न्यूमैन जल्दी ही पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गया। वह गढ़ी की दीवार की पुरानी मेहराब के नीचे से गुज़रा, तो उसने सांझ के धुंधलके में देखा कि एक बुढ़िया औरत काले कपड़े पहने चली आ रही है। गढ़ी का अहाता खाली पड़ा था, लेकिन चर्च का दरवाज़ा खुला था। न्यूमैन एक छोटे-से दालान में घुस गया, जहां बाहर से ज्यादा अंधेरा था। इधर-उधर कुछ ढिबरियां जल रही थीं, जिनसे वेदी पर रोशनी हो रही थी। इस रोशनी में उसे खम्भों के पास बैठी हुई एक स्त्री दिखाई पड़ी। और पास जाने पर पता लगा कि वे मिसेज़ ब्रैड थीं। उन्होंने काफी अच्छे कपड़े पहन रखे थे। मिसेज़ ब्रैड ने काला रेशमी बोनेट लगा रखा था, उसपर बड़ी शानदार क्रेप की 'बो' थी और काले साटन की पोशाक थी, जो खूब चमक रही थी। उन्होंने यह उचित समझा था कि इस अवसर पर वे अपनी सर्वोत्तम पोशाक पहनकर चलें। मिसेज़ ब्रैड खम्भे के पास बैठी ज़मीन की ओर एकटक देख रही थीं। लेकिन जब न्यूमैन वहां से गुज़रा, तो उन्होंने नज़र उठाकर ऊपर देखा और फिर वे उठ खड़ी हुईं।

"क्या आप कैथोलिक हैं मिसेज़ ब्रैड ?" उसने पूछा।

"नहीं श्रीमन्, मैं प्रोटेस्टेंट हू और चर्च ऑफ इगलैंड की एक तुच्छ अनुयायी हू," उन्होंने उत्तर दिया, "लेकिन मैंने सोचा कि चर्च के अन्दर बाहर की अपेक्षा मैं अधिक सुरक्षित रहूंगी। श्रीमन्, इसके पहले मैं रात को कभी बाहर नहीं निकली।"

"हम और भी सुरक्षित रहेंगे," न्यूमैन ने कहा, "ऐसी जगह चलकर बैठते हैं, जहां हमारी बात कोई न सुन सके।" और न्यूमैन गढ़ी के अहाते के पीछे की तरफ चल दिया और इसके बाद वह उस रास्ते पर आ गया, जिसके पीछे चर्च था। उसका ख्याल था कि यह रास्ता ध्वस्त गढ़ी के दूसरे भाग की ओर ले जाता है। मिसेज़ ब्रैड उनके पीछे-पीछे थी। न्यूमैन ने जैसा सोचा था, बात वैसी ही थी। उसे कोई गलतफहमी नहीं हुई थी। वह रास्ता पहाड़ी की चोटी से होता हुआ एक दीवार के पास जाकर खत्म हो गया, जहां एक दरार-सी थी। यह दरार कभी एक दरवाज़ा रही होगी। इस दरार से निकलकर न्यूमैन एक कोने में पहुंच गया। यह कोना बातचीत के लिए बड़ा ही उपयुक्त था। सम्भवतः इस जगह

और भी जोड़े आते होंगे। इस जगह से पहाड़ी एकदम ढलवां हो जाती थी। यहां सबसे ऊपर दो या तीन बड़े-बड़े पत्थर थे। नीचे थोड़ी-सी चौरस जगह में तारों की छांह थी। यहां से कोठी की दो-तीन रोशनियां दिखलाई पड़ रही थीं। मिसेज़ ब्रैड धीरे-धीरे न्यूमैन के पीछे चली आई और न्यूमैन ने पास में पड़े एक पत्थर को पहले हिला-डुलाकर देखा कि वह गिरेगा तो नहीं और इसके बाद प्रस्ताव किया कि वे उसपर बैठ जाएं। मिसेज़ ब्रैड बड़ी सावधानी से उस पत्थर पर बैठ गई और न्यूमैन भी उनके पास ही एक दूसरे पत्थर पर बैठ गया।

बाईस

"आप यहां आई, इसके लिए मैं आपका बड़ा आभारी हूं," न्यूमैन ने कहा, "मुझे आशा है कि ऐसा करने से आपको किसी मुसीबत का सामना नहीं करना पड़ेगा।"

"मेरा ख्याल है कि मेरी अनुपस्थिति की ओर किसीका ध्यान नहीं जाएगा। मेरी मालकिन आजकल मुझे अपने पास ज्यादा नहीं रहने देतीं।" यह बात जिज्ञासु भाव से कही गई थी, जिससे वृद्धा नौकरानी का न्यूमैन में विश्वास प्रकट होता था।

"आरम्भ से ही, आप जानती हैं," उसने जबाब दिया, "आप मेरे मामले में काफी रुचि ले रही हैं। आप मेरी तरफ थीं। मैं कहना चाहता हूं कि इससे मुझे बड़ा सहारा था और खुशी थी। और अब आप यह जानती हैं कि इन लोगों ने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया है, इसलिए मेरा विश्वास है कि आप पहले से भी ज्यादा मेरे साथ होंगी।"

"इन लोगों ने यह अच्छा नहीं किया—यह तो मैं कहूंगी ही," मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "लेकिन इसके लिए आपको बेचारी काउंटेस को दोषी नहीं समझना चाहिए; इन लोगों ने उन्हें विवश कर दिया था।"

"अगर मुझे कोई यह बताए कि इन लोगों ने क्या किया है, तो इस सूचना के लिए मैं दस लाख डालर देने को तैयार हूं!" न्यूमैन ने ज़ोर से बोलते हुए कहा।

मिसेज़ ब्रैड उदासीन-सी बैठी हुई थीं और उनकी दृष्टि कोठी में हो रहे प्रकाश पर स्थिर थी। "उन लोगों ने काउंटेस की भावनाओं को उभारा। वे जानते थे कि इसी तरह सफलता मिलेगी। काउंटेस बड़ी भावुक हैं, नाज़ुक हैं। इन लोगों ने काउंटेस से कहा कि वह बड़ी दुष्ट हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि वह बड़ी ही भली हैं।"

"आह, तो इन लोगों ने काउंटेस के मन में यह बात पैदा कर दी कि वे बड़ी दुष्ट हैं," न्यूमैन ने धीरे-धीरे कहा; और फिर यही शब्द दोहराए। "वे बड़ी दुष्ट हैं, यह कहा गया…!" न्यूमैन के यह शब्द इस समय उन लोगों की अधमता का स्पष्ट चित्र सामने रख रहे थे।

"चूंकि काउंटेस बहुत भली थीं, इसलिए वे शादी का इरादा छोड़ देने के लिए सहमत हो गईं।—बेचारी काउंटेस!" मिसेज़ ब्रैड ने कहा।

"लेकिन काउंटेस ने मेरी बजाय उन लोगों से ही ज़्यादा अच्छा व्यवहार किया," न्यूमैन ने कहा।

"वे बहुत डरती थी," मिसेज ब्रैड ने बड़े विश्वासपूर्वक कहा, "वे इन लोगों से हमेशा से ही डरती रही हैं या कम से कम काफी समय से डरती आ रही हैं। यही असली कठिनाई थी श्रीमन्। वे बड़े सुन्दर फल की तरह थीं, जिसपर एक छोटा-सा काला धब्बा था। आपने उस फल को धूप में रख दिया और वह दुःख का धब्बा लगभग लुप्त हो गया। लेकिन इन लोगों ने उस फल को हटाकर फिर अंधेरी छाया में रख दिया और फिर वह दुःख का धब्बा बढ़ने लगा। इसके पहले कि हम लोग कुछ जानते, वे स्वयं हमारे हाथ से निकल गईं। मदाम द सान्त्रे बड़ी ही नाज़ुक थीं।"

मदाम द सान्त्रे के कोमल स्वभाव के बारे में जो अनुपम दृष्टांत मिसेज ब्रैड ने दिया, उसे सुनकर न्यूमैन का घाव फिर हरा हो गया। उसे लगा कि एक बड़ी गहरी टीस उठ रही है। लेकिन उसने सिर्फ इतना ही कहा, "अच्छा, क्या वे अपनी मां की किसी बुराई के बारे में जानती थीं?"

"नहीं श्रीमन्, इस बारे में वे कुछ नहीं जानती थीं।" मिसेज़ ब्रैड ने अपना सिर एकदम सीधा रखते हुए और कोठी की खिड़कियों से दिखलाई पड़नेवाले प्रकाश पर दृष्टि स्थिर रखते हुए कहा।

"वे क्या कुछ शक करती थीं या किसी बुरी बात के बारे में उनका क्या अपना

अनुमान था ?"

"उन्हें इन बातों के जानने से डर लगता था," मिसेज़ ब्रैड ने कहा।

"लेकिन जो हो, आप तो जानती हैं," न्यूमैन ने कहा।

मिसेज़ ब्रैड ने अपनी भावहीन दृष्टि न्यूमैन पर डाली, यह कार्य उन्होंने धीरे-धीरे किया। उनके दोनों हाथ उनकी गोद में थे और वे उन्हें मल रही थीं। "आप अपने वादे के पक्के नहीं हैं, श्रीमन्। मेरा ख्याल था आपने मुझे यहां मिस्टर वेलेंतीन के सम्बन्ध में बताने के लिए बुलाया था।"

"ओह, मिस्टर वेलेंतीन के बारे में हम जितनी बातचीत करें, उतनी कम हैं," न्यूमैन ने कहा, "और मैं भी उन्हींके बारे में बात करना चाहता हूं। जैसाकि मैंने आपसे कहा था, अंतिम समय में मैं उनके पास था। उन्हें बहुत अधिक तकलीफ थी, लेकिन फिर भी उन्होंने अपना आपा नहीं खोया था। आप समझीं कि इसका क्या मतलब है; वे बड़े प्रतिभा-सम्पन्न, सजीव और चतुर लग रहे थे।"

"ओह, वे हमेशा से ही चतुर थे," मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "और क्या वे आपकी कठिनाई के बारे में जान गए थे ?"

"हां, उन्होंने खुद ही अनुमान लगा लिया था।"

"और उन्होंने इस बारे में क्या कहा ?"

"उन्होंने कहा कि जो कुछ हुआ है, इससे उनके नाम पर बहुत बड़ा बट्टा लगा है—लेकिन यह पहला ऐसा काम नहीं है।"

"हे भगवान, हे भगवान !" मिसेज़ ब्रैड ने बुदबुदाकर कहा।

"उन्होंने कहा कि उनके मां और भाई ने एक बार पहले भी मिलकर इससे ज़्यादा भयानक कर्म किया है।"

"आपको यह बात नही सुननी चाहिए थी।"

"शायद नहीं। लेकिन मैंने यह बात सुनी और अब मैं उसे भूल नही सकता। अब मैं जानना चाहता हू कि उन लोगों ने वाकई क्या किया।"

मिसेज़ ब्रैड बड़े आहिस्ता से कराहीं। "और आप मुझे यह सब जानने के लिए इस निर्जन स्थान पर फुसलाकर ले आए हैं ?"

"आप डरिए मत," न्यूमैन ने कहा, "मैं एक शब्द भी ऐसा नहीं कहूंगा, जो आपको नाराज़ करे। आपकी जिस तरह मर्ज़ी हो, जैसे अच्छा लगे, वैसे बताइए। केवल एक बात याद रखिए कि मि० वेलेंतीन की यह अंतिम इच्छा थी कि आप

इस सम्बन्ध में सारी बात मुझे बता दें।"

"क्या उन्होंने ऐसा कहा था ?"

"यह बात उन्होने आखिरी दम तोड़ते वक्त कहीं थी—मिसेज ब्रैड से कहिएगा कि मैंने आपसे यह पूछने के लिए कहा है।"

"यह सब बातें उन्होंने आपको स्वयं क्यों न बता दीं ?"

अंतिम सांसें तोड़ रहे किसी भी व्यक्ति के लिए यह लम्बी कथा बताना संभव न था; उनमें बिलकुल भी शक्ति शेष न रही थी। वे इतना ही केवल कह सके कि वह चाहते हैं कि मैं यह बात जान लूं; विशेष रूप से इसलिए कि उनके घरवालों ने जो अन्याय मेरे साथ किया है, उसकी वजह से यह बात जानने का मुझे अधिकार है।"

"लेकिन, श्रीमन्, इससे आपको क्या सहायता मिलेगी ?" मिसेज़ ब्रैड ने कहा।

"इसका फैसला तो मैं करूंगा। मि० वेलेंतीन का ख्याल था कि इस रहस्य को जान लेने से मुझे मदद मिलेगी, इसीलिए उन्होंने मुझे ये सारी बातें बताईं। जो अंतिम शब्द उनके मुख से निकला था, वह आपका नाम था।"

ऐसा लग रहा था कि मिसेज ब्रैड न्यूमैन के इस कथन से सहम गई हैं; उन्होंने अपनी बंधी हुई दोनों हथेलियों को ऊपर-नीचे किया। "मुझे क्षमा कीजिएगा श्रीमन्," मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "अगर मैं एक और प्रश्न पूछूं। क्या जो कुछ आप कह रहे हैं, वह बिलकुल सत्य है ? मुझे यह प्रश्न पूछना ही चाहिए, है न ?"

"आपके पूछने में कोई बुराई नहीं है। जो कुछ मैं कह रहा हूं, वह बिलकुल सच है। यह बात मैं शपथ खाकर कहता हूं। अगर मि० वेलेंतीन इस योग्य होते, तो निश्चय ही वे सब कुछ मुझे बता देते।"

"ओह श्रीमान, अगर वे कुछ और ज़्यादा जानते होते तो !"

"क्या आप समझती हैं कि उन्हें और अधिक नहीं मालूम था ?"

"इस बारे में मैं कुछ नहीं कहती हूं," मिसेज़ ब्रैड ने आहिस्ते से अपना सिर हिलाते हुए कहा। "वे बहुत चतुर थे। वे आपसे इस तरह बातें कर सकते थे कि वे जो बात नहीं जानते, उसके बारे में भी आपको ऐसा लगता कि वे उसे जानते हैं, और वे बहुत-सी अन्य बातें नहीं जानते थे, जिनका न जानना ही उनके लिए अच्छा था।"

"मुझे शक है कि वे अपने भाई के बारे में कोई ऐसी बात जानते थे, जिससे मारक्विस उनके साथ सभ्यतापूर्ण व्यवहार करने के लिए बाध्य रहते थे," न्यूमैन ने कहा, "वे मारक्विस को धमकाए रखते थे। वे चाहते थे कि उनके बाद मैं यह जगह ले लू। वे मुझे यह मौका देना चाहते थे कि मारक्विस मुझसे डर जाएं।"

"हे भगवान दया करो !" बुढ़िया नौकरानी के मुंह से निकल गया, "हम सब कितने दुष्ट हैं !"

"यह मैं नहीं जानता," न्यूमैन ने कहा, "हममें से कुछ लोग दुष्ट ज़रूर हैं। मैं बहुत रुष्ट हूं, अत्यन्त क्षुब्ध हूं और बड़ी कटुता अनुभव कर रहा हूं, लेकिन मैं यह नहीं जानता कि मैं दुष्ट हूं। मुझे बड़ी निर्दयता से चोट पहुंचाई गई है। उन लोगों ने मुझे चोट पहुंचाई है, मैं उन्हें चोट पहुंचाना चाहता हूं। मैं इस बात से इंकार नहीं करता ; बल्कि मैं साफ-साफ आपसे यह कह देना चाहता हूं कि जो गुप्त रहस्य आप मुझे बताएंगी, मैं उसका प्रयोग उन लोगों को चोट पहुंचाने के लिए करूंगा।"

मिसेज़ ब्रैड को ऐसा लगा, अपनी सांस रोके बैठी हुई हैं। "क्या आप इस रहस्य को प्रकाशित करवा देंगे—क्या आप उनको सरे-आम लज्जित करेंगे ?"

"मैं उन्हें दुनिया की नज़रों से गिराना चाहता हूं—नीचे, नीचे, नीचे। मैं उनसे बदला लेना चाहता हूं—जिस तरह उन्होंने मुझे दुःख दिया है, उसी तरह मैं भी उन्हें दुःखी करना चाहता हूं। पहले इन लोगों ने मुझे बड़ा ऊंचा स्थान दिया, सम्मान के उस स्थान पर मुझे खड़ा किया, जिससे सारी दुनिया मुझे देख ले, इसके बाद मुझे एक अंधेरे गड्ढे में धक्का देकर वे लोग चुपचाप खिसक गए और मैं यहां पड़ा-पड़ा चीख रहा हूं, चिल्ला रहा हूं और अपने दांत पीस रहा हूं ! मैं अपने सारे मित्रों के सामने बेवकूफ बन गया ; लेकिन अब मैं उनकी अपने से भी ज्यादा खराब हालत करूंगा।"

न्यूमैन ने ये सारी बातें बड़े आवेशपूर्वक कही थीं। इनको कहने का अवसर उसे पहली बार मिला था। न्यूमैन की बातें सुनकर मिसेज़ ब्रैड की आंखें दो अंगारों की तरह चमकने लगीं। "मेरा ख्याल है श्रीमन्, कि आपको नाराज़ होने का पूरा अधिकार है ; लेकिन ज़रा इसका तो ख्याल कीजिए कि मदाम द सान्त्रे की इससे कितनी बदनामी होगी !"

"मदाम द सान्त्रे तो ज़िन्दा दफन हो गई हैं," न्यूमैन ने चीखकर कहा,

"अब उन्हें मान या सम्मान से क्या मतलब ? जिस मकबरे में वे दफन होने गई हैं, इस समय वे उसके अन्दर हैं और उसका दरवाज़ा बन्द हो रहा है ।"

"जी हां, बड़ी ही भयानक बात है," मिसेज़ ब्रैड ने आह भरते हुए कहा।

"वे भी अपने भाई वेलेंतीन की तरह यह दुनिया छोड़कर मेरे सामने से हट गईं, जिससे मैं अपना काम खुलकर कर सकूं । ऐसा लगता है कि जैसे मैं यही करने के लिए बैठा हुआ हूं और मिस्टर वेलेंतीन की मृत्यु तथा मदाम द सान्त्रे का कन्वेंट में चला जाना भी किसी खास उद्देश्य से ही हुआ है ।"

"निश्चय ही," मिसेज़ ब्रैड ने न्यूमैन की अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्णबातों से प्रभावित होकर कहा। वे कुछ क्षण मौन रहीं ; इसके बाद उन्होंने कहा, "और क्या आप मेरी मालकिन को अदालत में खड़ा करेंगे ?"

"अदालतें आपकी मालकिन की प्रतिष्ठा की कोई परवाह नहीं करतीं," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "अगर उन्होंने कोई अपराध किया है, तो वे अदालत की नज़रों में एक दुष्टा वृद्धा के सिवाय और कुछ नहीं हैं ।"

"तो श्रीमन्, क्या अदालत उन्हें फांसी की सजा देगी ?"

"यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि उन्होंने क्या किया है ।" और न्यूमैन ने मिसेज़ ब्रैड को बड़े गौर से देखा !

"तो श्रीमन्, यह परिवार तो तहस-नहस हो जाएगा ।"

"ऐसे परिवार के तहस-नहस होने का समय आ गया है !" न्यूमैन ने हंसते हुए कहा।

"और मैं श्रीमन्, इस उमर में बेकार हो जाऊंगी ?" मिसेज़ ब्रैड ने गहरा सांस छोड़ा।

"ओह, मैं आपकी देखभाल करूंगा ! आप मेरे पास आकर रहिएगा। आप मेरे घर की पूरी देखभाल और रूाज़-संभाल करिएगा या जो मर्ज़ी आए, वह काम कीजिएगा। मैं आपको जीवन-भर पेंशन दूंगा ।"

"ओह, हे भगवान्, आपने तो सारी बातें पहले ही सोच ली हैं," और मिसेज़ ब्रैड कुछ देर के लिए विचार-सागर में डूब गईं।

न्यूमैन कुछ देर उनको देखता रहा और इसके बाद यकायक बोल उठा, "आह, मिसेज़ ब्रैड, क्या आप अपनी मालकिन को बहुत चाहती हैं ?"

मिसेज़ ब्रैड ने जल्दी से न्यूमैन की ओर देखा। "श्रीमन्, मैं नहीं चाहूंगी कि

यह बात आप कहें। मेरा ख्याल है कि अपनी मालकिन के प्रति स्नेह रखना मेरे कर्तव्य का अंग नहीं है। मैंने इतने वर्षों तक उनकी बड़ी निष्ठा से सेवा की है; लेकिन अगर कल वे मर जाएं, तो मैं भगवान को साक्षी रखकर कह सकती हूं कि मैं उनके लिए एक आंसू भी नहीं बहाऊंगी।" इसके बाद कुछ ठहरकर उन्होंने कहा, "कोई कारण नहीं है कि मैं उन्हें चाहूं, उनसे प्रेम करूं!" मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "उन्होंने मेरे लिए जो ज़्यादा से ज़्यादा किया है, वह इतना ही है कि मुझे नौकरी से नहीं निकाल दिया।" न्यूमैन को लग रहा था कि मिसेज़ ब्रैड अब अपना हृदय उनके सामने खोलने लगी हैं और अगर विलासिता से आदमी भ्रष्ट होता है, तो मिसेज़ ब्रैड भी ऐसे विलक्षण प्रदेश में मुक्तभाषी करोड़पति से बातचीत का अवसर पाकर आध्यात्मिक शान्ति अनुभव कर रही थीं। न्यूमैन मन ही मन समझ रहा था कि उसका काम इतना ही करना है कि वह मिसेज़ ब्रैड को जितना आवश्यक हो, उतना समय दे, जिससे मौके का जादू स्वयं सिर चढ़कर बोलने लगे। इसलिए उसने कुछ नहीं कहा। वह केवल बड़ी ही करुण दृष्टि से मिसेज़ ब्रैड की ओर देखता रहा। मिसेज़ ब्रैड अपनी कोहनियों के सहारे बैठी रहीं। "मेरी मालकिन ने एक बार मेरे साथ भी बड़ा अन्याय किया था," मिसेज़ ब्रैड ने आखिर कह दिया, "जब वे नाराज़ होती हैं, तो वे अत्यन्त ही कटुभाषी हो जाती हैं। यह बहुत साल पहले की बात है, लेकिन मैं अभी तक यह बात नहीं भूली हूं। मैंने आज तक उसका जिक्र किसी भी व्यक्ति से नहीं किया; और मैंने अपना रोष अपने तक ही सीमित रखा है। मैं इसके लिए अपने-आपको बहुत ही दुष्ट मानती हूं और मेरे मन का यह रोष भी अब बूढ़ा हो गया है। इस रोष का कोई अर्थ नहीं है। लेकिन यह मेरे मन में बराबर रहा है और मैं उसे भूली नहीं हूं। शायद जब मैं मरूंगी तभी वह मेरी दम के साथ जाएगा—इससे पहले नहीं!"

"और आप किस बात पर रुष्ट हैं?" न्यूमैन ने पूछा।

मिसेज़ ब्रैड नीचे देखने लगीं और रुक गईं। "अगर मैं विदेशी होती तो श्रीमन्, तो शायद मैं यह सब बताने में न झिझकतीं। किसी भी अंग्रेज़ स्त्री के लिए यह सब बताना बड़ा कठिन होता है। लेकिन कभी-कभी मैं सोचती हूं कि मैंने बहुत-सी विदेशी बातें सीख ली हैं। जो बात मैं आपसे कह रही हूं, वह उस समय की है, जब मैं उम्र में काफी कम थी। उस समय मैं देखने में भी ऐसी नहीं लगती थी, जैसी अब हूं। मैं बहुत सुन्दर थी, श्रीमन्। चाहे आप विश्वास न करें, लेकिन मैं बड़ी

ही चुस्त लड़की थी। मेरी मालकिन भी तब छोटी ही थीं और स्वर्गीय मालिक हम सबसे छोटे थे—मेरा मतलब है कि जिस तरह का वे जीवन बिताते थे। वे बड़े उत्साही व्यक्ति थे। बड़े ही उदारमना और खुले दिल के आदमी थे। सभी विदेशियों की तरह वे भी बड़े विषयोपभोगी थे। मुझे यह बात भी कहनी ही होगी कि कभी-कभी वे विषय-भोग के अपने आनन्द के लिए कुछ नीचे स्तर पर भी उतर आते थे। मेरी मालकिन अक्सर बड़े ईर्ष्यालु स्वभाव का प्रदर्शन करती थीं और अगर आप मेरी बात मानें, तो श्रीमन् मै यह भी कह दूं कि उन्होंने मुझसे भी ईर्ष्या की थी। एक दिन मैं अपनी टोपी में लाल रिबन लगाए थी, उसे देखकर मेरी मालकिन मुझपर बुरी तरह बिगड़ पड़ीं और उन्होंने मुझसे कहा कि मैं तुरन्त उसे निकाल फेंकूं। उन्होंने मुझपर आरोप लगाया कि मैने यह रिबन इसलिए लगाया है कि मालिक मेरी ओर देखें। मुझे पता नही कि मैंने कोई उद्दण्डता की, लेकिन एक ईमानदार लड़की की तरह मैंने उनकी बात का कठोर विरोध किया और मुझे याद नहीं कि मैने क्या-क्या कहा। हां, सचमुच वह लाल रिबन ही था। जैसे मालिक मेरे रिबनों को देखा करते हैं! बाद में मेरी मालकिन को पता चला कि मैं बिलकुल निर्दोष थी, लेकिन उन्होंने कभी एक शब्द द्वारा भी यह नहीं बताया कि वह मुझे निर्दोष समझती हैं और उन्होंने गलत ढग से मेरा अपमान किया था। लेकिन मालिक ने अपना खेद प्रकट किया था!" मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "मैने लाल रिबन निकाल दिया और उसे दराज में रख दिया, जहां वह आज भी रखा हुआ है। अब उसका रंग उड़ गया है, और वह हलके गुलाबी रग का हो गया है; लेकिन वह दराज में ही रखा हुआ है। इसी तरह मेरे रोष का रंग भी उड़ चुका है, उसकी गरमी जाती रही है, लेकिन वह रिबन की तरह अब भी बना हुआ है।" और मिसेज़ ब्रैड ने अपनी काली साटन की अंगिया पर हलकी-सी चोट की।

न्यूमैन उनकी बात बड़ी दिलचस्पी से सुनता रहा, क्योंकि उससे मिसेज़ ब्रैड की पुरानी यादें ताज़ा हो गई थीं। और इसके बाद चूंकि वे चुप हो गई थीं और ऐसा लगता था कि वे अपने सतीत्व के बारे में पिछली घटनाओं को सोचने में लग गई हैं, इसलिए न्यूमैन ने जल्दी से अपनी अभीष्ट बात जान लेने की इच्छा पूरी करने के लिए कहा, "अच्छा, मैं समझा, तो मदाम द बेलगार्द भी ईर्ष्यालु थीं और मो० द बेलगार्द सुन्दरियों को पसन्द करते थे और ऐसा करने में वे वर्गगत भेद-

भाव नहीं मानते थे। लेकिन मेरा ख्याल है कि इसके लिए उनपर इतना नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं है। अन्य औरतें संभवतः उतने ही उचित ढंग से व्यवहार न करती हों, जितने उचित ढंग से आप व्यवहार करती थीं। लेकिन वर्षों बाद ईर्ष्या के कारण ही तो शायद मदाम द बेलगार्द ने यह अपराध न किया होगा।"

मिसेज़ ब्रैड ने इस तरह गहरी सांस छोड़ी, जैसे वह बड़ी क्लान्ति अनुभव कर रही हैं। "श्रीमन् हम लोग भयंकर शब्दों का प्रयोग कर रहे है, लेकिन अब मुझे इसकी परवाह नहीं है। मैं आपका आशय समझ रही हूं और इस मामले में मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं है। मेरी इच्छा मेरे बच्चों की इच्छा थी। मैं इस घर के बच्चों को अपने ही बच्चों की तरह मानती थी; लेकिन अब वे मेरे बच्चे भी चले गए। वे मर गए हैं—मैं अब कह सकती हूं कि वे अब दोनों ही मर गए हैं; और अब मुझे जीवित रहकर भी क्या करना है? अब मुझे घर के किसी व्यक्ति से क्या लेना है—अब मैं उनके लिए क्या हूं? मेरी उपस्थिति पर मेरी मालकिन आपत्ति करती हैं—यह आपत्ति तो वे पिछले तीस वर्षो से करती रही हैं। अच्छा होता मैं छोटी मदाम द बेलगार्द के लिए कुछ कर पाती, हालांकि मैं वर्तमान मालिक की परिचारिका कभी नहीं रही। जब वे छोटे शिशु थे, तो मैं उम्र में काफी छोटी थी और ये लोग मुझे इस योग्य नहीं समझते थे कि मैं उनको संभाल सकूंगी। लेकिन वर्तमान मालिक की पत्नी ने अपनी नौकरानी मदामाजेल क्लेरिज को मेरे बारे मे एक बार अपनी राय बताई थी। शायद उसे आप सुनना पसन्द करेंगे श्रीमन्।"

"ओह ज़रूर सुनना चाहूंगा," न्यूमैन ने कहा।

"उन्होंने कहा कि अगर मैं उनके बच्चों के स्कूल के कमरे में बैठूं, तो बच्चों की कलमें साफ करने का काम बहुत अच्छा कर सकती हूं। लेकिन जब ऐसी स्थिति हो, तो मेरा ख्याल है किसी प्रकार का ऊपरी शिष्टाचार दिखाने की आवश्यकता नहीं रह जाती है।"

"बिलकुल नहीं," न्यूमैन ने कहा, "आप बोलती चलिए मिसेज़ ब्रैड।"

मिसेज़ ब्रैड फिर भी अपने मन की परेशानी की वजह से चुप हो गईं और न्यूमैन वहां हाथ बांधकर बैठ गया और प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन आखिर मिसेज़ ब्रैड को फिर चेत आया और वे इस काबिल हुईं कि अपनी सारी यादें व्यवस्थित कर सकें। काफी दिन बाद स्वर्गीय मालिक वृद्ध हो गए हो गए थे और उनके ज्येष्ठ पुत्र के विवाह को हुए दो वर्ष बीत चुके थे। मदामाजेल क्लेयर के विवाह

का अवसर आ गया था। यहां लोग इसी तरह बातें करते हैं श्रीमन्। मालिक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। वे बहुत कमजोर हो गए थे। मेरी मालकिन ने पता नहीं किस कारणवश मो० द सान्त्रे को अपनी लड़की के लिए चुना। उन्होंने ऐसा क्यों किया था, यह मुझे पता था, लेकिन कारण मेरी समझ में बिलकुल नही आया। और आपने तो दुनिया देखी है, इसलिए आप स्वयं ही अनुमान कर सकते हैं कि इसका क्या कारण होगा। वृद्ध मो० द सान्त्रे काफी लम्बे कद के थे और मेरी मालकिन उन्हें अपनी ही तरह सुन्दर समझती थीं; इतना कहना काफी है। मि० अरेबन ने अपनी मां का साथ दिया, जैसाकि वे हमेशा करते थे। कठिनाई यह थी, जैसाकि मेरा ख्याल है, कि मेरी मालकिन बहुत कम धन खर्च करना चाहती थीं तथा अन्य विवाह के इच्छुक वर ज्यादा दहेज मांग रहे थे। मो० द सान्त्रे ही ऐसे व्यक्ति थे जो विवाह में मिलनेवाले दहेज से सन्तुष्ट थे। ईश्वर की मर्ज़ी थी कि उनमें यह एक अच्छाई हो। लेकिन बस उनमें एक यही अच्छाई थी। इसमें शक नहीं कि उनका घराना बड़ा नामी था और वे झुक-झुककर अभिवादन करने तथा बातचीत करने में भी बड़े शिष्टाचार का प्रदर्शन करते थे। लेकिन उनकी शान यहीं तक सीमित थी। मैंने विदूषकों के बारे में सुना है। मो० द सान्त्रे भी विदूषकों से कुछ कम न थे। मुझे यह भी पता था कि वे अपना चेहरा रंगते हैं। लेकिन वे चाहे जितना अपना चेहरा रंगते, मैं उन्हें पसन्द नहीं कर सकती थी! वे मालिक को भी पसन्द नहीं थे। जब उन्हें पता लगा कि मदामा जेल क्लेयर के लिए मो० द सान्त्रे को चुना गया है, तो उन्होंने कहा कि इससे अच्छा है कि मेरी पुत्री का विवाह ही न हो। इस बात को लेकर मालिक और मालकिन में बड़ी लड़ाई हुई और उनको ज़ोर-जोर से बातें करते हुए हॉल में खड़े नौकरों ने भी सुना। सच बात तो यह थी कि नौकरों के कानों में पड़नेवाली लड़ाई की ये बातें पहली नहीं थीं। दोनों पति-पत्नी में आपस में बनती नहीं थी, लेकिन फिर भी आमने-सामने तू-तू मैं-मैं होने की नौबत कम ही आती थी। मेरा ख्याल है कि इसका कारण यह था कि दोनों में से कोई भी, किसीके कार्य को, कोई खास महत्त्व नहीं देता और दोनों ही यह सोचते थे कि जो दूसरा कर रहा है, उसपर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है। इस मामले में मुझे यह कहना चाहिए कि दोनों एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर थे। मालिक बड़े आरामपसन्द और सज्जन स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्हें वर्ष में एक बार ही गुस्सा आता था, लेकिन जब

ग्राता था, तो बहुत ज़ोर से ग्राता था। लड़ने के बाद वे सीधे अपने बिस्तर पर चले जाते थे। इस बार भी जब लड़ाई हुई, जिस लड़ाई की चर्चा मैंने अभी की है, तो वे हमेशा की तरह अपने बिस्तर पर चले गए; लेकिन उस बार जो बिस्तर पर गए, तो फिर उठे नही। बुढ़ापे में श्रीमन् उन्हें अपने विषय-व्यसनी होने का परिणाम भुगतना ही था। क्या ऐसा नही होता है? मेरी मालकिन और मि० अरबेन बिलकुल चुपचाप रहे, लेकिन मैं जानती हूं कि मेरी मालकिन ने मो० द सान्त्रे को चिट्ठिया लिखीं। मालिक की हालत और खराब हो गई तथा डाक्टर जवाब दे गए। मेरी मालकिन भी निराश हो गई थी और सच बात कही जाए तो उन्हें इस बात की खुशी थी कि मालिक के मर जाने से उनकी जान छूटेगी। एक बार मालिक के रास्ते से हट जाने के बाद वह अपनी पुत्री के विवाह के बारे में जो चाहती वह करतीं और यह पहले से ही तय हो गया था कि बेचारी क्लेयर को बाप के मरते ही मो० द सान्त्रे के हवाले कर दिया जाएगा। श्रीमन्, आप मदामाजेल को, उन दिनों कैसी थीं, यह नहीं जानते। फ्रांस-भर की वे सबसे सुन्दर युवती थीं और उन बेचारी को कुछ भी पता नहीं था। वे उतनी ही अबोध थीं, जितना कोई मेमना होता है और उसे यह पता नहीं होता कि कसाई क्या करनेवाला है। मै अपने मालिक की सेवा किया करती थी और हमेशा उनके कमरे में रहती थी। यहीं फ्लूरीयर्स की बात है। पतझड़ का मौसम था; पेरिस से एक डाक्टर आया हुआ था। वह दो-तीन सप्ताह से कोठी में ही ठहरा हुआ था। इसके बाद दो और डाक्टर आए। तीनों डाक्टरों में विचार-विमर्श हुआ। बाद में जो दो डाक्टर आए थे, जैसाकि मैं बता चुकी हूं, वे यह कहकर चले गए कि मालिक नहीं बच सकेंगे। उन्होंने अपनी फीस अपनी जेबों में रखी, और अपना रास्ता लिया। लेकिन तीसरा डाक्टर रुका रहा और उसने मालिक की जान बचाने के लिए जो भी सम्भव था, वह सब किया। मालिक स्वयं यह रटते रहते थे कि मैं नहीं मरूंगा, और मैं नहीं मरना चाहता, मैं ज़िन्दा रहना चाहता हूं, मैं अपनी पुत्री की देखभाल करना चाहता हू। मदामाजेल क्लेयर और वाइकाउंट मिस्टर वेलेंतीन थे, जैसाकि आप जानते हैं, ये दोनों बच्चे घर में ही थे। डाक्टर बड़ा चतुर था—यह मैंने स्वयं देखा था—और मेरा ख्याल था कि वह समझता था कि मालिक स्वस्थ हो सकते हैं। उसने बड़ी कुशलता से मालिक का इलाज किया। मैंने और उसने दोनों ने एक दिन देखा कि जब मेरी मालकिन ने शोक

मनाने का एलान कर दिया था, तब अकस्मात् मालिक का स्वास्थ्य सुधरने लगा। वे स्वस्थ से स्वस्थतर होते गए और अन्त में डाक्टर ने कहा कि अब मालिक खतरे से बाहर हैं। मेरे मालिक के पेट में अकसर भयानक दर्द उठा करता था। इसी दर्द की वजह से वे मरणासन्न हो गए थे, लेकिन धीरे-धीरे यह दर्द उठना बन्द हो गया और वे बेचारे फिर हंसने-बोलने लगे। डाक्टर ने एक ऐसी दवा खोज ली थी, जिससे उन्हें बड़ा आराम मिला था—यह एक सफेद चूरन-सा था, जिसे हमने एक बड़ी बोतल मे चिमनी के पास रख छोड़ा था। मैं यह चूरन एक कांच की नली से मालिक को दे दिया करती थी, जिससे उनका दर्द तुरन्त बन्द हो जाता था। इसके बाद डाक्टर चला गया। उसने मुझसे यह कह दिया था कि जब भी कभी दर्द हो, तो मैं यह मिक्शचर मालिक को पिला दिया करू। उस डाक्टर के जाने के बाद पोयतियर्स से एक और डाक्टर आया। यह डाक्टर प्रतिदिन आता था। हम सब लोग घर में अकेले ही थे—मेरी मालकिन, बेचारे बीमार मालिक और तीन बच्चे। बड़े पुत्र की पत्नी अपनी छोटी बच्ची को लेकर अपनी मां के यहां चली गई थीं। आप जानते ही हैं कि वे कितना हुल्लड़ मचाती रहती हैं और उनकी नौकरानी ने मुझसे कहा था कि वे ऐसे घर में रहना पसन्द नहीं करतीं, जहां लोग मर रहे हों।" मिसेज़ ब्रैड एक क्षण के लिए ठहर गई और इसके बाद फिर उन्होंने उसी शान्त भाव से अपनी बात कहना जारी रखा, "मेरा ख्याल है कि आपने अनुमान लिया होगा कि जब मालिक स्वस्थ होने लगे, तो मालकिन को बड़ी निराशा हुई," इतना कहकर वे फिर ठहर गईं। उन्होंने झुककर न्यूमैन के चेहरे को देखा। न्यूमैन का चेहरा आंखों के अंधेरे में देखने का अभ्यस्त हो जाने के कारण अब अपेक्षतया अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था।

न्यूमैन बड़ी उत्सुकता से सारी बातें सुन रहा था। उसे इतनी उत्सुकता उस समय भी नहीं हुई थी, जब वह मरणासन्न वेलेंतीन के मुह के पास अपने कान को ले गया था और जब वेलेंतीन अन्तिम शब्द कह रहा था। कभी-कभी बीच में जब मिसेज़ ब्रैड न्यूमैन की ओर देखतीं, तो न्यूमैन को उस बुढ़िया बिल्ली की याद आ जाती, जो तश्तरी में आराम से दूध पीते-पीते कभी-कभी आनन्द के लिए इधर-उधर देखने लगती है। मिसेज ब्रैड की विजय भी बड़ी नपी-तुली और संयत थी। उन्हें इतने दिन से कोई खुशी नहीं हुई थी कि आज अनभ्यस्तता के कारण उन्हें अपना हर्ष प्रकट करना भी नहीं आ रहा था। वे कहे जा रही थी, "एक

दिन रात को बहुत देर बाद मैं मालिक के कमरे में बैठी थी। यह बड़ा लाल कमरा पश्चिम वाले गुम्बद में है। उन्होंने मुझसे कहा कि उनके पेट में कुछ दर्द है और मैंने डाक्टर की बताई हुई एक चम्मच दवा उन्हें पिला दी। मालकिन शाम को उनके पास आई थीं। वे उनके बिस्तर के पास कोई एक घण्टे बैठी रहीं। इसके बाद वे चली गईं और मुझे वहीं अकेला छोड़ गईं। आधी रात के बाद वे फिर आईं। उनके साथ उनके बड़े पुत्र भी थे। वे दोनों मालिक के पास गए और उन्होंने उनको देखा। मेरी मालकिन ने मालिक का हाथ थामा। इसके बाद मालकिन ने मुड़कर मुझसे कहा कि मालिक की हालत अच्छी नहीं है। मुझे याद है इस बात पर मालिक किस प्रकार बिलकुल चुपचाप पड़े रहे। वे केवल अपनी पत्नी की ओर देखते रहे। मुझे इस समय भी उनका सफेद चेहरा याद है। वे मसहरियों के बीच एक चौकोर पलंग पर पड़े थे। मैंने कहा कि मेरे ख्याल से मालिक की हालत ज़्यादा खराब नहीं है। इसपर मुझे मालकिन ने आदेश दिया कि मैं अपने कमरे में जाकर सोऊं, क्योंकि कुछ देर वे स्वयं वहां बैठेंगी। जब मालिक ने मुझे जाते हुए देखा तो उन्होंने कराहकर कुछ कहा। वे मुझे बुला रहे थे और कह रहे थे कि मैं कमरे से न जाऊं। लेकिन मि० अरबेन ने दरवाजा खोल दिया और मुझे बाहर की तरफ जाने का इशारा किया। आपने देखा होगा कि वर्तमान मालिक बड़े घमण्ड से हुकुम चलाया करते हैं, और मैं वहां हुकुम मानने के लिए ही थी। मैं अपने कमरे में चली गई, लेकिन वहां मुझे नींद नहीं आई। ऐसा क्यों हुआ, यह मैं नहीं बता सकती। मैंने अपने कपड़े भी नहीं बदले और बैठी-बैठी प्रतीक्षा करती रही और कान लगाए रही। लेकिन मैं क्या कह सकती थी? मैं यह तो नहीं कह सकती थी कि वहां क्या हो रहा था, क्या पता कि मालिक अपनी पत्नी और पुत्र के साथ बड़े आराम के साथ अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे बातचीत कर रहे हों। लेकिन मुझे यह ख्याल ज़रूर था कि ये कराहते हुए मुझे फिर बुलाएं। मैं कान लगाए रही, लेकिन मुझे सुनाई नहीं पड़ा। रात बिलकुल स्तब्ध थी; इतनी स्तब्ध रात मैंने कभी नहीं बिताई थी। आखिर मुझे उस स्तब्धता से डर लगने लगा। मैं अपने कमरे से बाहर आ गई और धीरे-धीरे सीढ़ियों से नीचे उतरी। मालिक के कमरे के बाहर एक छोटे कमरे में मैंने मि० अरबेन को टहलते हुए देखा। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं क्या चाहती हूं। इसके उत्तर में मैंने कहा कि मैं मालकिन की जगह बैठूंगी, जिससे वे आराम करने जा सकें। मि० अरबेन

बोले कि अपनी मां की जगह मै पिता की देखभाल के लिए बैठ जाऊंगा। उन्होंने मुझे आदेश दिया कि मैं अपने कमरे में जाकर सो जाऊं। लेकिन मेरी वापस आने की इच्छा नहीं थी, मैं वहीं खड़ी थी, तभी मालिक के कमरे का दरवाज़ा खुला और मालकिन बाहर आईं। मैंने देखा कि उनका चेहरा पीला पड़ा हुआ था और उनका मुंह बड़ा अजीब-सा हो गया था। एक क्षरण के लिए उन्होंने काउंट को देखा और फिर मुझे देखा और फिर उन्होंने अपना हाथ काउट के कंधे पर रख लिया। वे उनके पास चले गए थे। मालकिन ने अपने पुत्र के कन्धे पर सिर रख दिया और अपना मुह छिपा लिया। मैं उन्हें छोड़कर सीधे मालिक के कमरे के अन्दर घुस गई और उनके बिस्तर के पास पहुंची। मालिक पलंग पर पड़े थे, उनका चेहरा एकदम सफेद हो रहा था, आंखें बन्द थीं। ऐसा लग रहा था, जैसे कोई मुर्दा पड़ा हो। मैंने उनका हाथ अपने हाथ में लिया और उनसे बात करने की कोशिश की। लेकिन मुझे ऐसा लगा कि वे लाश की तरह निर्जीव हैं। इसके बाद मैं मुड़ी तो मैंने देखा कि वहां मालकिन और मिस्टर अरबेन खड़े थे। 'मेरी ब्रैड,' मालकिन ने मुझसे कहा, 'मो० ल मारक्विस गुज़र गए।' मिस्टर अरबेन पलंग के सामने घुटनों के बल बैठ गए और आहिस्ते से बोले, 'मेरे पिता, मेरे पिता।' मुझे यह आश्चर्यजनक रूप से अजीब लगा और मैंने मालकिन से पूछा कि आखिर हुआ क्या, और उन्होंने मुझे क्यों नहीं बुलाया। मालकिन ने बताया कि कुछ नहीं हुआ। मैं यहीं बैठी थी उनके पास और वे चुपचाप थे। इसके बाद मालकिन ने अपनी आंखें बन्द कर लीं और सोचा कि थोड़ी देर सो लें। और वे सो गई, पता नहा कितनी देर सोती रहीं, जब वे जागीं, तो मालिक मर चुके थे। 'यह मौत है मेरे पुत्र, यह मौत है,' उन्होंने काउन्ट से कहा। मिस्टर अरबेन ने कहा कि पोयतियर्स से डाक्टर को तुरन्त बुलाना चाहिए। वे बोले कि मै खुद घोड़े पर जाता हूं और डाक्टर को लेकर आता हू। उन्होंने अपने पिता के माथे को चूमा और फिर अपनी मां को चूमा और इसके बाद बाहर चले गए। मालकिन और मैं वहीं बिस्तर के पास खड़े रहे। जब मैं खड़ी-खड़ी पलंग पर पड़े मालिक को देख रही थी, तब मुझे यह ध्यान आया कि हो सकता है मालिक अभी न मरे हों और शायद अचेत हों। और तभी मालकिन ने फिर कहा, 'मेरी ब्रैड, यह मौत है, यह मौत है!' और मैंने कहा, 'जी हां मालकिन, मालिक सचमुच मर गए हैं।' उस समय मेरे मन में जो बात थी, उसकी ठीक उलटी बात मैंने

कही थी। तब मेरी मालकिन ने कहा कि हमें डाक्टर की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हम वहीं बैठे-बैठे प्रतीक्षा करते रहे। बहुत समय गुजर गया। इस बीच बेचारे मालिक न तो हिले-डुले और न उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन हुआ। 'मैंने पहले भी मौत देखी है,' मेरी मालकिन ने कहा, 'मौत सचमुच ऐसी ही होती है।' 'जी हां, मेरी मालकिन,' मैंने कहा ; और मैं बराबर सोचती रही।

लेकिन रात बीत गई। सवेरा हो गया। काउट वापस नहीं लौटे। मालकिन को डर लगने लगा। वे आशंकित हो उठी कि कहीं अंधेरे में कोई दुर्घटना न हो गई हो या डाकू न मिल गए हों। अन्त में वे इतनी बेचैन हो उठीं कि अपने पुत्र को देखने के लिए नीचे अहाते में चली गई। मैं वहां अकेली बैठी रही। इस बीच मालिक ज़रा भी नहीं हिले-डुले।"

इस स्थल पर मिसेज़ ब्रैड बोलते-बोलते फिर रुक गई और शायद कोई भी इतनी रोमांचक कहानी कहनेवाला इतनी अधिक कला का प्रदर्शन नहीं कर सकता था, जितनी चतुराई उन्होंने दिखलाई थी। न्यूमैन को ऐसे लगा कि जैसे किसी उपन्यास का पृष्ठ उलटा जा रहा है। "तो वे मर चुके थे!" न्यूमैन ने ज़ोर से कहा।

"उनकी इस हालत के तीन दिन बाद," मिसेज़ ब्रैड ने छोटे-छोटे वाक्यों में कहा, "मैं कुछ देर के लिए सामने वाले मकान में गई और वहां से मैंने चौक की तरफ देखा। मैं वहां कुछ ही देर खड़ी रही थी कि मैंने देखा कि मि० अरबेन घोड़े पर सवार अकेले ही चले आ रहे हैं। मै थोड़ी देर प्रतीक्षा करती रही, जिससे वे अपनी मां के पास, जो सीढ़ियों पर खड़ी थीं, पहुंच जाएं। लेकिन वे नीचे ही खड़े रहे, और मै मालिक के कमरे में लौट गई। मैं उनके बिस्तर के पास गई और मोमबत्ती उठाकर उनके मुह के ऊपर तक ले गई, लेकिन पता नहीं क्यों मेरे हाथ से मोमबत्ती गिरी नहीं। मालिक की आंखें खुली हुई थीं— फटी हुई थीं! वे मेरी तरफ एकटक देखे जा रहे थे। मैं उनकी बगल में बैठ गई और उनके हाथों को अपने हाथों में ले लिया। और उनसे प्रार्थना करने लगी कि ईश्वर के लिए वे मुझे यह बताएं कि वे ज़िन्दा हैं या मर गए हैं। लेकिन वे फिर भी बड़ी देर तक मुझे एकटक देखते रहे और फिर उन्होंने मुझे इशारा किया कि मैं अपने कान उनके मुंह के पास ले आऊं। 'मैं मर गया हूं,' उन्होंने कहा, 'मैं मर गया हूं। मुझे मेरी पत्नी ने मार डाला है।' मैं बुरी तरह कांपने लगी ;

मेरी समझ में उनकी बात नहीं आई। मुझे नही मालूम था कि उन्हें क्या हो गया है। वे ज़िन्दा भी लग रहे थे और मरे भी, आप जैसा चाहें कह सकते हैं। 'लेकिन अब आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे मालिक,' मैंने कहा और इसके बाद उन्होंने बड़े ही क्षीण स्वर में फुसफुसाते हुए कहा : 'मैं, चाहे कोई सारी बादशाहत लुटा दे, फिर भी अच्छा न हो सकूगा। मै उस औरत का पति अब कभी नही बनना चाहता।' और इसके बाद उन्होंने कुछ और कहा, 'मेरी पत्नी ने मुझे मार डाला है।' मैंने पूछा कि मालकिन ने क्या किया है; लेकिन उन्होंने जवाब दिया, 'हत्या, हत्या। और अब यह औरत मेरी पुत्री को भी मार डालेगी।' उन्होंने कहा : 'मेरी बेचारी दुखियारी बच्ची।' और उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मै उसकी रक्षा करूं और कहा कि मैं मर रहा हूं, मैं मर गया हूं। मुझे वहां से हटते हुए या उन्हें छोड़ते हुए डर लग रहा था। मैं स्वयं डर के मारे मरी जा रही थी। अकस्मात् उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उनको एक पेंसिल लाकर दू और उनकी तरफ से जो वे बोलें, वह लिख लूं। तब मैंने उनसे कहा कि मैं लिखने में असमर्थ हूं। मालिक मुझसे बोले कि मै बिस्तर में ही बैठकर उनका हाथ इस तरह पकड़ लूं कि पेंसिल सीधी रह सके। मैंने ऐसा ही किया, तब उन्होंने अपने हाथ से कुछ लिखा। मै मन ही मन यह कहती रही कि वे ऐसी बात हरगिज, हरगिज़ नहीं कर सकते। लेकिन उनके मन में कुछ ऐसा डर था, जिसकी वजह से उनमें यह दैवी शक्ति आ गई थी। मैंने कमरे में से ढूंढ़कर एक पेंसिल लाकर उन्हें दी, कागज़ का एक टुकड़ा दिया और एक किताब दी। मैंने कागज़ किताब के ऊपर रख दिया और पेंसिल उनके हाथ में पकड़ा दी और उसके बाद मोमबत्ती उनके निकट ले गई। श्रीमन्, आपको ये सारी बातें बड़ी अजीब-सी लगेंगी ; और ये बातें हैं भी अजीब। इससे भी अधिक अजीब बात यह है कि मैं विश्वास कर रही थी कि वे मरनेवाले हैं और मैं लिखने में उनकी सहायता कर रही थी। मै उनके पास बिस्तर पर बैठ गई और मैंने अपना हाथ उनके ऊपर से रखकर उन्हें सहारा दिया। उस समय मैं अपने को काफी ताकतवर अनुभव कर रही थी। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं उनको उठा सकती हूं और उठाकर दूसरी जगह भी रख सकती हूं। मुझे आश्चर्य था कि वे कैसे लिख पा रहे थे, लेकिन उन्होंने लिखा। अक्षर बड़े टेढे-मेढ़े थे। उन्होंने एक तरफ का पूरा कागज़ भर दिया। ऐसा लग रहा था कि बहुत समय बीत गया है ; लेकिन

मुझे लगा कि तीन या चार मिनट हुए है। इस बीच वे बहुत कराह रहे थे। उनकी कराह सुनकर बड़ा डर लग रहा था। इसके बाद उन्होंने कहा कि पत्र लिखा जा चुका है, और मैने उन्हे तकिये के सहारे लिटा दिया। उन्होने वह पत्र मुझे दे दिया और कहा कि उसे मै मोड़कर कहीं छिपाकर रख लू और किसी ऐसे व्यक्ति को दू, जो इस पत्र के लिखे अनुसार कार्रवाई कर सके। "आपका मतलब किस व्यक्ति से है ?' मैने पूछा, 'वे कौन लोग हैं, जो इस पत्र में लिखी बात के अनुसार कार्रवाई करेंगे।' लेकिन उत्तर में वे केवल कराहते रहे ; वे इतने कमज़ोर थे कि बोल नहीं सकते थे। कुछ मिनट बाद उहोंने कहा कि मैं जाऊं और चिमनी के पास रखी शीशी को देखू। मैं समझ गई और उस बोतल को देखने गई, जिसमें उनकी सफेद दवा रखी थी, जिसको खाने से पेट के दर्द में उनको आराम मिलता था। मैंने वहां देखा कि बोतल एकदम खाली है। जब मैं लौटी तो उनकी आंखें खुली की खुली थीं और वे मेरी तरफ एकटक देखे जा रहे थे। लेकिन जल्दी ही उन्होने अपने पलक मूंद लिए थे और इसके बाद कुछ नहीं कहा। मैने वह कागज़ अपने वस्त्रों में छिपा लिया ; मैंने यह नहीं देखा कि उसमें क्या लिखा है, हालांकि मैं वहुत अच्छी तरह पढ़ सकती थी, लेकिन मेरी समझ में वह हस्तलिपि नहीं आई। मैं बिस्तर के पास फिर बैठ गई। कोई आधा घण्टा बीत गया, जिसके बाद मेरी मालकिन आईं और उनके साथ काउट भी थे। मालिक वैसे ही दीख रहे थे, जैसा मालकिन उन्हें छोड़ गई थीं और मैंने उन्हें कोई बात नहीं बताई। मि० अरबेन ने कहा कि डाक्टर किसी ऐसी जगह गए हैं जहां किसीके घर बच्चा होनेवाला है, लेकिन वे जल्दी ही छुट्टी पाकर फ्लूरीयर्स आएगे। लगभग आधे घण्टे बाद डाक्टर भी आ गए और उन्होंने देखने के बाद कहा कि हम लोगों को गलतफहमी हो गई है। मालिक बहुत क्षीण हैं, लेकिन वे अभी ज़िन्दा हैं। मैंने अपनी मालकिन को और उनके पुत्र को उस समय देखा, जब डाक्टर अपनी बात कह रहा था। मैं जानना चाहती थी कि वे एक-दूसरे की ओर देखते हैं या नहीं। लेकिन मुझे यह कहना ही पड़ेगा कि उन लोगों ने एक-दूसरे से नज़रें नहीं मिलाईं। डाक्टर ने कहा कि कोई वजह नहीं है कि मालिक मरें ; वे बहुत स्वस्थ हो गए थे और डाक्टर यह जानना चाहते थे कि यकायक उनकी हालत इतनी खराब कैसे हो गई, क्योंकि जब पहली बार मालिक को उन्होंने देखा था, तो वे काफी स्वस्थ थे। मेरी

लकिन ने वही कथा फिर से सुना दी, जो उन्होंने मुझे और मि० अरबेन को
ाई थी। डाक्टर उनकी तरफ देखते रहे, लेकिन उन्होंने कुछ कहा नहीं।
दिन वे कोठी पर ही रहे और उन्होंने एक क्षण के लिए भी मालिक को
स्तर पर अकेला नहीं छोड़ा। मैं भी बराबर वहीं रही। मदामाजेल और
वेलेंतीन भी अपने पिता को कमरे में देखने आए। लेकिन मालिक निर्जीव-
ही पड़े रहे। वह एक अजीब बेहोशी थी, मौत की बेहोशी। मालकिन वहीं
ासपास बराबर रही आईं। उनका चेहरा भी अपने पति की तरह ही सफेद
गया था। उनको देखने से ऐसा लगता था। कि वे बड़े घमण्ड में हैं। जब
किसीको आदेश देती थीं या कोई उनकी आज्ञा का पालन नहीं करता था,
भी उनका चेहरा इतना ही सख्त हो जाता था ऐसा लगता था कि जैसे
ारे मालिक ने उनकी आज्ञा का पालन नहीं किया है; और जिस तरह उन्होंने
ालिक के न मरने की खबर सुनी थी, उसे देखकर मुझे उनकी शक्ल से डर
लगा था। पोयतियर्स के डाक्टर ने दिन-भर लगकर मालिक का इलाज
' और हम लोग पेरिस से एक और डाक्टर के आने का इंतज़ार करते रहे।
डाक्टर का, जिसके बारे में मै पहले बता चुकी हूं कि वह फ्लूरीयर्स रहा
। इस डाक्टर को बड़े तड़के ही तार दे दिया गया था। शाम को डाक्टर आ गए।
्होंने पोयतियर्स के डाक्टर के साथ बाहर जाकर कुछ बातचीत की और इसके
द दोनों ने अन्दर आकर मालिक को फिर देखा। मैं उनके ही पास थी और
ास्टर अरबेन भी थे। मालकिन पेरिस से आनेवाले डाक्टर को लेने गई थीं,
किन वे कमरे में उनके साथ अन्दर नहीं आईं। वह डाक्टर मालिक के पास
ाकर बैठ गया। मेरे सामने वह चित्र अब भी स्पष्ट है। डाक्टर मालिक के
बिस्तर पर बैठा हुआ था और उसके हाथ में मालिक की कलाई थी तथा
ास्टर अरबेन डाक्टर को अपने हाथ में एक दूरबीन लिए देख रहे थे। 'मेरा
ाल है कि अब मरीज़ की हालत अच्छी है,' पोयतियर्स के डाक्टर ने कहा,
तो समझता हू कि वे अब जल्दी अच्छे हो जाएगे।' डाक्टर के इन शब्दों के
हने के बाद कुछ ही देर में मालिक ने अपनी आंखें खोलीं, जैसे वह सोते-सोते
पड़े हों और हम लोगों की तरफ एक-एक करके देखने लगे। मैने देखा कि
्होंने बड़ी कोमलता से मेरी ओर देखा है, उसी समय पंजों के बल चलती हुई
लकिन भी कमरे में आ गई और मेरे तथा अपने पुत्र के बीच से झाककर

तो बताइए कि इसका क्या कारण कि आपने अभी तक मो० द बेलगार्द की अंतिम इच्छा के अनुसार किसीको कार्रवाई करने के लिए नहीं दिया ?"

"मैं इसे किसको दिखलाती ?" मिसेज़ ब्रैड ने दुःखित भाव से कहा, "यह तय कर पाना बड़ा कठिन था कि कागज़ किस आदमी को दिखाया जाए और इस सोच में मैं कई-कई रातों तक सो नहीं सकी। छः महीने बाद जब इन लोगों ने मदामाजेल का विवाह उस दुष्ट बूढ़े के साथ कर दिया, तो मैं उस कागज को किसीको दे देनेवाली थी। मैंने सोचा कि यह मेरा कर्तव्य है कि मैं उस पत्र का कुछ प्रयोग करूं, लेकिन पता नहीं क्यों मुझे बड़ा भय था। मैं यह नहीं जानती थी कि पत्र में क्या लिखा हुआ है और यह भी नहीं जानती थी कि इससे कितना नुकसान हो सकता है। और ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था, जिसका विश्वास करके उससे कुछ पूछ सकती। और मुझे ऐसा भी प्रतीत हुआ कि उस बेचारी लड़की को यह बताना उचित न होगा कि उसके पिता ने उसकी मां के बारे में कितनी लज्जा-जनक बात लिखी है, क्योंकि मेरा ख्याल था कि उस पत्र में यही लिखा था। मैंने सोचा कि इस तरह दुःखी होने की बजाय यह ज्यादा अच्छा है कि वह अपने पति के घर का अपेक्षाकृत कम दुःख सह ले। मैं, क्लेयर और वेलेंतीन के लिए चुप रही। मैं इसे चुप रहना ही कहूंगी, लेकिन मेरे लिए यह ऐसी चुप्पी थी, जिसने मुझे थका डाला था। इसकी वजह से मैं बहुत चिंतित रहती थी और मेरे स्वभाव में भी बहुत परिवर्तन हो गया। लेकिन इन दोनों व्यक्तियों के लिए मैंने अपनी ज़बान सी ली और आज तक यह कोई नहीं जानता है कि बीमार मालिक ने अंतिम समय से कुछ पहले मुझसे क्या बातचीत की थी।"

"लेकिन यह तो ज़ाहिर है कि लोगों को कुछ शक होगा," न्यूमैन ने कहा, "अगर ऐसा नहीं था, तो मि० वेलेंतीन को कैसे पता लगा ?"

"यह बात उन्हें पोयतियर्स के डाक्टर से पता लगी होगी। वह बहुत असन्तुष्ट था और उसने इस बारे में काफी चर्चा की। उसकी आंखें काफी तेज़ थीं और वह प्रतिदिन घर आया करता था, इसलिए उसने मेरा ख्याल है कि उसने जो कुछ देख लिया था, वह ज़रूरत से ज्यादा था। और जिस तरह से बेचारे मालिक ने मालकिन को देखते ही दम तोड़ दिया था, वह तो किसीके लिए भी बड़े ही आघात का विषय था। लेकिन जो डाक्टर पेरिस से आए थे, उन्होंने काफी मदद की तथा उन्होंने दूसरे डाक्टर को भी चुप किया। लेकिन वह डाक्टर कुछ भी करता,

मिस्टर वेलेंतीन और मदामाजेल ने दोनों की कुछ न कुछ बातें सुन ही ली थीं; वे समझ गए कि उनके पिता की स्वाभाविक मृत्यु नहीं हुई है। निस्संदेह वे अपनी मां पर आरोप नहीं लगा सकते थे; और जैसाकि मै आपसे कह चुकी हू, मैं पत्थर की तरह मौन रही। मि० वेलेंतीन कभी-कभी मुझे देखते थे और उनकी आखों में चमक आ जाती थी। ऐसा लगता था कि जैसे वे मुझसे कुछ पूछना चाहते हैं। मुझे इस बात से बड़ा डर लगता कि कहीं वे मुझसे कुछ पूछ न बैठें। जैसे ही वे मेरी तरफ देखते, मैं दूसरी तरफ देखने लगती और किसी काम में लग जाती। अगर मैं उनको बता देती तो मुझे पक्का विश्वास है कि बाद में वह मुझसे घृणा ही करते और यह बात मैं कभी भी बर्दाश्त न कर पाती। एक बार मैं उनके पास गई और मैंने बड़े प्यार से उनको चूम लिया। ठीक उसी तरह, जैसे मैं अपने वेलेंतीन को बचपन में प्यार किया करती थी। 'आपको इतना दु:खी नहीं रहना चाहिए।' मैंने कहा, 'आप अपनी इस बुढ़िया ब्रैड का विश्वास कीजिए। आप जैसे बहादुर और सुन्दर नौजवान को किसी भी कारण दु:खी नहीं रहना चाहिए।' मैंने उनसे कहा था। और मेरा ख्याल है कि उन्होंने मेरी बात समझ ली थी; वे यह भी समझ गए थे कि मैं उनसे क्या भीख मांग रही हू और उन्होंने मन ही मन इस बारे में निश्चय कर लिया था। लेकिन उनके दिमाग में जिज्ञासा बनी हुई थी और जब मै इस अनकही कथा के साथ उनसे मिलती, तो हमें हमेशा यही डर लगता कि कहीं कोई ऐसी बात न हो जाए कि इस घर के नाम को बट्टा लग जाए। और यही बात मदामाजेल के बारे में थी। वे भी नहीं जानती थीं कि क्या हुआ था। वे जान भी नही सकती थीं। मेरी मालकिन और मि० अरबेन ने मुझसे कोई सवाल नहीं पूछा, क्योंकि उन्हें कोई शक नहीं था। मैं चुहिया की तरह खामोश थी। जब मैं छोटी थी, तो मेरी मालकिन मुझे दुश्चरित्रा समझती थीं और जब मैं बूढ़ी हो गई, तो वे मुझे बेवकूफ समझने लगीं। ऐसी हालत में मैं उनका सम्मान किस प्रकार कर सकती हू ?"

"लेकिन आप तो कहती हैं कि पोयतियर्स के डाक्टर ने इस बात की काफ़ी चर्चा की थी," न्यूमैन ने कहा, "क्या इस बात की और किसीने जांच नहीं की ?"

"नहीं, मैंने इस बारे मे कुछ नही सुना श्रीमन्। और लोग तो हमेशा ही कुछ कुछ न कुछ बातें उड़ाया करते हैं—आपने सुना ही होगा, और मेरा ख्याल है कि वे वृद्धा मदाम द बेलगार्द के नाम से अपना सिर हिलाने लगते हैं, लेकिन कुछ भी

हो, वे क्या कह सकते हैं ? मालिक बीमार थे, और मालिक मर गए; उनको भी मरने का उतना ही हक था, जितना किसी और को। डाक्टर यह नहीं कह सके कि मालिक वस्तुत: अपने पेट के दर्द के कारण नहीं मरे हैं। अगले वर्ष पोयतियर्स का डाक्टर भी कस्बा छोड़कर चला गया और उसने बोर्दो में प्रैक्टिस शुरू कर दी। फिर इसके बाद अगर कोई चर्चा उठी भी, तो वह अपने-आप दब गई और मैं नहीं समझती कि मेरी मालकिन के बारे में कोई ज़्यादा चर्चा उठ सकती थी—ऐसी चर्चा जिसे कोई सुनता। सब लोग मालकिन की इज़्ज़त करते थे।"

न्यूमैन आखरी वाक्य सुनकर बड़ी ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा और उसकी हंसी चारों तरफ प्रतिध्वनित होने लगी। मिसेज़ ब्रैड उस स्थान से चल पड़ी थीं, जहां वे लोग अब तक बैठे थे। उसने उन्हें दीवार की दरार में से निकलने में मदद दी और उनको सहारा देकर कोठी की ओर जानेवाली सड़क पर ले गया। "हां," उसने कहा, "आपकी मालकिन की लोग काफ़ी इज़्ज़त करते हैं और जब उनको पता लगेगा तो सारा धूल में मिल जाएगा।" अब वे लोग चर्च के सामने वाले चौक में पहुंच गए थे। यहां वे एक क्षण के लिए रुके और उन्होंने एक-दूसरे को देखा। दोनों की नज़रों में यह भाव था कि अब हम दोनों मित्र हैं, ठीक उसी तरह जैसे चोर-चोर मौसेरे भाई होते हैं। "लेकिन वह क्या था," न्यूमैन ने कहा, "वह क्या कार्य था, जो आपकी मालकिन ने मालिक के साथ किया ? उन्होंने न तो अपने पति को छुरा मारा और न उन्हें ज़हर दिया !"

"यह मैं नहीं जानती श्रीमन्, किसीने कुछ देखा नहीं।"

"जब तक वहां अरबैन का होना सिद्ध न हो। आप कहती है कि अरबेन बाहर के कमरे में इधर से उधर घूम रहा था। सम्भवत: वह ताले के छेद में से देख रहा हो, लेकिन नहीं। मेरा ख्याल है कि वह अपनी मां की बात का ही पूरा-पूरा विश्वास करेगा।"

"आप विश्वास रखिए कि मैंने इस विषय पर कई बार सोचा है," मिसेज़ ब्रैड ने कहा। "मेरा पक्का विश्वास है कि मालकिन ने पति को अपने हाथों से छुआ भी नही। मैंने उनके शरीर पर कहीं कोई निशान नहीं देखा। मेरा ख्याल है कि ऐसा हुआ होगा। उन्हे बड़े ज़ोर का दर्द उठा करता था और उन्होंने दर्द की दवा मांगी होगी। दवा देने की बजाय उनकी आंखों के सामने ही मालकिन ने दवा गिराकर बहा दी होगी। यह देखकर वे समझ गए होंगे कि मालकिन का

क्या मतलब है। वे कमज़ोर और असहाय तो थे ही, इस काण्ड से और अधिक त्रस्त हो गए होंगे और भय के कारण उन्हें बहुत बड़ा आघात लगा होगा। 'तुम मुझे मार डालना चाहती हो,' उन्होंने कहा होगा। 'हां, मैं तुम्हें मार डालना चाहती हूं,' मेरी मालकिन ने उत्तर दिया होगा और वे वहां बैठकर उनकी तरफ कठोर दृष्टि से देखती रही होंगी। आप मेरी मालकिन की आंखें तो जानते ही हैं, मेरा ख्याल है कि उन्होंने अपनी तेज़ नज़रों से ही उन्हें मार डाला होगा; उनकी आंखों में गज़ब की इच्छाशक्ति व्यक्त करने की क्षमता है। उनकी तेज़ नज़रों का असर ठीक उसी तरह होता है, जैसा पाले का फूलों पर।"

"ठीक, आप बड़ी बुद्धिमती स्त्री है; आपने बड़े विवेक का प्रदर्शन किया," न्यूमैन ने कहा, "मैं घर की देखभाल करने के लिए आपकी सेवाओं को बड़ा बहुमूल्य मानूंगा।"

इसके बाद वे लोग पहाड़ी से नीचे उतरने लगे और जब तक नीचे नहीं आ गए, तब तक कुछ नहीं बोले। न्यूमैन मिसेज़ ब्रैड के बराबर चलता रहा। उसका सिर तना हुआ था और वह ऊपर की तरफ कभी-कभी तारों को देख लेता था। उसे लगता था कि अब वह पूरी तरह बदला ले सकेगा। "श्रीमन्, क्या आप वाकई अपने यहां मुझे रखेंगे?" मिसेज़ ब्रैड ने आहिस्ता से पूछा।

"मेरे साथ रहने के बारे में, क्यों, बेशक मैं आपकी पूरी ज़िन्दगी देखभाल करने का ज़िम्मा लेता हूं। अब आप उन लोगों के साथ नहीं रह सकतीं। और आपको रहना भी नहीं चाहिए। आप जानती ही हैं कि इस घटना के बाद अब आपका वहां रहना उचित नहीं है। आप वह कागज़ मुझे दे दीजिए और वहां से चली आइए।"

"इस वृद्धावस्था में आकर किसी नये घर में नौकरी करना, यह बात सोचकर भी मुझे बड़ा अजीब-सा लग रहा है," मिसेज़ ब्रैड ने दुःखभरे शब्दों में कहा। "लेकिन अगर आप इस घर को ही तहस-नहस करने पर उतारू हैं, तो अच्छा है कि मैं वहां से अलग हट जाऊं।"

"ओह," न्यूमैन ने उस व्यक्ति की तरह हर्षित स्वर में कहा, जिसके पास अनेक विकल्प हों, "मेरा ख्याल है कि मैं कांस्टेबल लेकर वहां नहीं जाऊंगा। आप यह न समझिए कि मैं वहां पुलिस के साथ जाऊंगा। मदाम द बेलगार्द ने जो कुछ किया है, मुझे भय है कि कानून उसकी सजा उनको नहीं दे सकता।

लेकिन मुझे इस बात की खुशी है कि अब वे मेरी मुट्ठी में हैं !"

"आप बहुत बहादुर आदमी हैं श्रीमान," मिसेज़ ब्रैड ने फुसफुसाकर कहा, और यह कहते हुए अपना सिर ज़रा-सा घुमाकर न्यूमैन की ओर देखा।

न्यूमैन वृद्धा नौकरानी के साथ कोठी तक आया। फ्लूरीयर्स गांव के लोग दिन-भर के परिश्रम के बाद अपने-अपने घरों में सो रहे थे और सड़कें अंधेरी और खाली थीं। मिसेज़ ब्रैड ने वादा किया कि वे अपने मालिक के हाथ का लिखा पत्र आधे घण्टे में उसे दे देंगी। मिसेज़ ब्रैड ने फैसला किया कि वे घर के सामने के बड़े वाले फाटक से प्रवेश नहीं करेंगी। और वे घूमकर एक दूसरी गली से बाग की दीवार में बने उस दरवाज़े में से अन्दर गईं, जिसकी चाबी उनके पास थी। इस रास्ते से वे कोठी के पिछले भाग से अन्दर जा सकती थीं। न्यूमैन ने उनके साथ यह व्यवस्था की कि वह दीवार के पास बाहर खड़ा हुआ उस पत्र के लिए आधे घण्टे तक प्रतीक्षा करेगा।

मिसेज़ ब्रैड अन्दर चली गई और उस अंधेरी गली मे आधा घण्टा बहुत बड़ा लगने लगा। लेकिन उसके पास सोचने के लिए काफी मसाला था। आखिर दरवाजा फिर खुला और मिसेज ब्रैड वहां खड़ी थीं। उनका एक हाथ ताले पर था और दूसरे हाथ में एक सफेद मुड़ा-तुड़ा छोटा-सा कागज़। एक क्षण बाद ही वह कागज़ न्यूमैन के हाथ में आ गया और वह उस कागज़ का स्वामी बन गया था। उसने वह पत्र अपनी जाकेट की जेब में रख लिया। "पेरिस आकर आप मुझसे मिलिएगा," उसने कहा, "आप जानती ही हैं कि आपके भविष्य का प्रबन्ध मुझे करना है ; और मैं आपके मालिक मो० द बेलगार्द का फ्रेंच में लिखा पत्र अनुवाद करके आपको सुना दूंगा।" मो० नियोशे ने उसे जो फ्रेंच सिखाई थी, उसके लिए न्यूमैन कभी इतना कृतज्ञ नही हुआ, जितना उस समय वह उनके प्रति आभार मान रहा था।

मिसेज़ ब्रैड अपनी थकी निगाहों से कागज़ को जेब में रखा जाते देखती रहीं और उन्होंने एक गहरी सांस छोड़ी। "श्रीमन्, आप मुझसे जो चाहते थे, वह सब कुछ मैंने कर दिया और अब आपको शेष जीवन के लिए मेरी व्यवस्था करनी होगी। आप बड़े दृढ़ निश्चयी व्यक्ति हैं।"

"इस समय तो मैं," न्यूमैन ने कहा, "बड़ा ही अधीर व्यक्ति हूं !" और न्यूमैन विदा लेकर तेजी से सराय वापस लौटा। उसने आदेश दिया कि पोयतियर्स जाने

के लिए गाड़ी तुरन्त तैयार की जाए। इसके बाद उसने हॉल का दरवाज़ा बन्द कर लिया और वहां रखे एकमात्र लैम्प के पास चला गया। लैम्प चिमनी के पास रखा था। उसने कागज़ निकाला और जल्दी से उसे खोला। कागज पर पेंसिल से कुछ लिखा था। लैम्प की हलकी रोशनी में पहले कुछ समझ में नहीं आया, लेकिन न्यूमैन की उत्कट जिज्ञासा के कारण अन्त में उन कांपते हुए हाथ से लिखे गए शब्दों का अर्थ धीरे-धीरे समझ में आने लगा। पत्र का अनुवाद इस प्रकार है :

"मेरी पत्नी ने मुझे मारने की कोशिश की है और वह इसमें कामयाब रही है। मैं मर रहा हूं, बड़े ही भयानक ढंग से मर रहा हूं। वह मेरी प्यारी पुत्री का विवाह मो० द सान्त्रे से करना चाहती है। मैं इस विवाह का पूरी तरह विरोध करता हूं—मैं आदेश देता हूं कि यह विवाह न किया जाए। मैं पागल नहीं हूं—डाक्टरों से पूछिए, मिसेज़ ब्रै—से पूछिए। उस दिन रात को मेरी पत्नी मेरे पास थीं और कोई नहीं था; तभी उन्होंने मेरे ऊपर हमला किया और मुझे मार डाला। अगर कभी भी किसीकी हत्या की गई है, तो मेरी भी हत्या हुई है। डाक्टरों से पूछ देखिए।

हैनरी–अरबेन द बेलगार्द।"

तेईस

मिसेज़ ब्रैड से मिलने के बाद दूसरे दिन न्यूमैन पेरिस वापस लौट आया। इसके पहले, उसने पूरा एक दिन पोयतियर्स में बिताया था। न्यूमैन ने दिन में वह कागज़ बार-बार पढ़ा, जिसे अब उसने अपनी पॉकेट-बुक में रख लिया था। वह सोच रहा था कि वर्तमान परिस्थितियों में वह क्या और कैसे कार्रवाई करेगा। पोयतियर्स को वह आकर्षक स्थान नहीं कह सकता था, लेकिन दिन बड़ी जल्दी बीत गया। पेरिस में वह हॉसमान मार्ग पर स्थित अपने फ्लैट में उतरने के बाद रू द ल' यूनिवर्सिते गया और उसने वृद्धा मदाम द बेलगार्द की नौकरानी से पूछा कि क्या

उसकी मालकिन लौट आई हैं। नौकरानी ने बताया कि एक दिन पहले ही उसकी मालकिन ज्येष्ठ पुत्र सहित वापस आ गई हैं। नौकरानी ने यह भी सूचित किया अगर न्यूमैन मिलना चाहें तो माता और पुत्र दोनों ही घर पर हैं। यह कहते हुए बेलगार्द-निवास के फाटक के पास बने अधेरे घर से झांकती हुई सफेद चेहरे वाली बुढ़िया कुटिल ढंग से मुस्कराई। न्यूमैन को लगा जैसे इस मुस्कराहट का अर्थ हो, 'हिम्मत हो तो अन्दर जाओ न !' स्पष्ट था कि बुढ़िया को घर की राई-रत्ती बात पता थी। वह ऐसी जगह थी, जहां घर की नब्ज़ पर उसका हाथ रहता था। न्यूमैन कुछ देर खड़ा अपनी मूंछों पर हाथ फेरता रहा और उसकी ओर देखता रहा, उसके बाद यकायक घूम पड़ा। लेकिन इसका कारण यह नहीं था कि उसे अन्दर जाने में डर लग रहा था, बल्कि उसे शक था कि अगर मैं अन्दर गया तो क्या बेरोकटोक मदाम द सान्त्रे के भाई और मां से मिल सकूंगा। विश्वास,—अतिशय आत्मविश्वास और शायद इतनी ही भीरुता के कारण वह वापस लौट पड़ा था। वह मन ही मन उस वज्र को (जो पत्र के रूप में उसके पास था) से रहा था ; उसे आघात करने की अपनी इस शक्ति से प्रेम हो गया था ; वह आघात करके उस वज्र को खो नहीं देना चाहता था। उसे लगता था कि मैं उस पत्र को अपने शिकार के सिर पर लिए खड़ा हूं और हवा में उसे झुला रहा हूं। वह दोनों व्यक्तियों के ऊपर उठे हुए, पीले और पथराए चेहरों की भी कल्पना कर रहा था। मानव के मुख पर तरह-तरह के भाव व्यक्त होते हैं। लेकिन जिस स्पष्ट मुखमुद्रा का मैंने ऊपर वर्णन किया है, उसकी कल्पना कर न्यूमैन को बड़ा आनन्द मिलता था; और वह बदला आराम से, धीरे-धीरे लेना चाहता था। यह भी कह देना चाहिए कि अभी न्यूमैन ठीक-ठीक ढग से यह तय नहीं कर पाया था कि वज्र-प्रहार किस तरह किया जाएगा। अपना कार्ड वृद्धा मदाम द बेलगार्द के पास भेजना व्यर्थ की औपचारिकता होती, क्योंकि वे न्यूमैन से मिलने से इंकार कर देतीं। दूसरी ओर वह बलात् उनके कमरे में अन्दर घुसकर मिल न सकता था। पत्र लिखने का ही मार्ग शेष रह जाता है। ऐसा करने से वह मदाम द बेलगार्द के उन भावों को न देख सकता, जो उसके प्रहार के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते। यह बात सोच-सोचकर वह मन ही मन झुंझला रहा था। लेकिन फिर उसने अपने मन को यह कहकर धीरज बंधाया कि पत्र के बाद भी मुलाकात संभव है। वह जब घर पहुंचा, तब थक गया था। यह मानना ही पड़ेगा कि प्रतिहिंसा

की आग को मन मे जलाए रखना भी बड़ा क्लान्तिजनक कार्य है। इसमें काफी शक्ति खर्च हो जाती है। आते ही वह कीमखाब की हत्थेदार कुर्सी पर निढाल होकर गिर-सा गया, अपने पैर आगे पसार लिए और हाथ जेबों में डाल लिए। सामने, सड़क के पास, सुन्दर अलकृत मकानो की छतों के पीछे सूर्यास्त हो रहा था और न्यूमैन मन ही मन उस पत्र की रूपरेखा तैयार कर रहा था, जो वह मदाम द बेलगार्द को लिखनेवाला था। जब वह पत्र की रूपरेखा बनाने में मन ही मन व्यस्त था, तब ही नौकर ने कमरे का दरवाज़ा खोला और औपचारिक ढग से घोषणा की, 'मदाम ब्रैड।"

न्यूमैन उत्सुकता से उठ खड़ा हुआ और उसने दरवाज़े पर जाकर उस सम्मान्य महिला का स्वागत किया, जिससे फ्लूरीयर्स में पहाड़ी के ऊपर इतनी उपयोगी बातचीत हुई थी। मिसेज़ ब्रैड उस दिन वाली ही पोशाक पहने थीं। न्यूमैन उनके भव्य व्यक्तित्व से बड़ा प्रभावित हुआ। अभी कमरे की बत्ती नहीं जली थी; वे अपने बोनेट लगे चौड़े-चकले चेहरे को लिए गंम्भीरता से सांझ के उस धुंधलके में न्यूमैन को देख रही थीं। न्यूमैन को यह कुछ विचित्र-सा लगा कि यह स्त्री नौकरानी का काम करने उसके पास आई है। न्यूमैन ने प्रसन्न भाव से सिसेज़ ब्रैड का स्वागत किया और अन्दर आकर आराम से कुर्सी पर बैठने के लिए संकेत किया। मिसेज़ ब्रैड ने जिस तरह इन निदेशों का पालन किया, उससे प्राचीन शिष्टाचार के अन्तर्गत सुख और दुःख दोनों एकसाथ प्रकट होते थे। वह कोई हड़बड़ाहट नहीं दिखला रहो थीं, क्योंकि ऐसा करना बड़ा हास्यास्पद होता। वे इतनी अधिक विनयशीलता प्रदर्शित कर रही थीं कि उनके व्यवहार का अटपटापन भी शिष्टाचार प्रतीत हो रहा था; लेकिन जाहिर था कि उन्होंने कभी स्वप्न में नहीं सोचा था कि उनकी जन्मपत्री में यह भी योग है कि उनको सन्ध्या के समय नये मोहल्ले में नाटकघर जैसे सजे कमरों में रहनेवाले अविवाहित मिष्टभाषी सज्जन से मिलने आना पड़ेगा।

"मुझे आशा है, श्रीमन्, मैं अपनी औकात नहीं भूल रही हू," उन्होंने आहिस्ता से कहा।

"औकात नहीं भूल रही हूं ?" न्यूमैन ने ज़ोर से कहा, "अरे, आप अपनी हैसियत अब समझ रही हैं। यही आपका घर है, आप जानती हैं न ? आप मेरे घर की सेविका हैं। घर की मुख्य सेविका के रूप में आपका वेतन एक पखवारे पहले

शुरू हो गया है । मैं आपको बता दूं, मेरे घर को देखभाल की बड़ी जरूरत है। आप बोनेट उतारकर आराम से क्यों नहीं बैठतीं ?"

"बोनेट उतारकर आराम से क्यों नहीं बैठतीं ?" मिसेज ब्रैड ने कुछ डरते हुए शब्द दोहराए, "ओह, श्रीमन् ! मै अपनी टोपी नहीं लाई हूं । और आप मुझे यह कहने की अनुमति दें कि सर्वोत्तम गाउन पहने तो घर की चाकरी नहीं की जा सकती ।"

"ओह ! गाउन की चिन्ता न करिए," न्यूमैन ने हर्षित होते हुए कहा, "आपको मैं इससे भी अच्छा गाउन खरीद दूगा ।"

मिसेज ब्रैड गंभीरता से एकटक देखती रहीं, और उन्होंने अपने हाथ आभाहीन साटन की स्कर्ट पर रख लिए, जैसे उस स्थिति में उनकी वर्तमान संकटापन्न अवस्था का पता चलता था । "ओह ! श्रीमन्, मुझे अपने ही कपड़े भले लगते है," मिसेज़ ब्रैड ने धीरे से कहा ।

"आशा है, आप उन दुष्टों को छोड़ आई होंगी," न्यूमैन ने पूछा ।

"श्रीमन्, मैं यहां आ गई हूं ।" मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "इस वक्त तो मैं यही कह सकती हूं । आपके सामने बेचारी कैथराइन ब्रैड बैठी हैं। मेरे लिए यहां आना ही बड़ी अनोखी बात है । मैं खुद नहीं जानती ; मुझे पता नही था कि मुझमें इतना साहस है । लेकिन, श्रीमन्, जहां तक मुझसे बन पड़ा है, मैंने साहस से काम लिया है ।"

"ओह, मिसेज़ ब्रैड," न्यूमैन ने अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा, "अब आप यह बातें सोचकर दु:खी न हों। अब तो आपको उत्साहित होना चाहिए, है न !"

वे फिर प्रकम्पित कण्ठ से बोलने लगीं । "मैं समझती हूं कि यह ज्यादा सम्मानपूर्ण होगा अगर मैं···अगर मैं···" यह कहते हुए उनकी कांपती हुई आवाज रुक गई ।

"अगर आप इस तरह की बातें ही न सोचें तो कैसा रहेगा ?" न्यूमैन ने उनके मतलब को समझते हुए दयालुता से कहा। उसका ख्याल था कि मिसेज़ ब्रैड सेवा-निवृत्त होना चाहती हैं ।

"श्रीमन्, यदि मैं सब कुछ त्याग दूं, तो मेरी इतनी ही अंतिम इच्छा है कि प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुसार मेरी अन्त्येष्टि कर दी जाए ।"

"अन्त्येष्टि !" न्यूमैन ज़ोर से हंस पड़ा, "इस समय आपको दफन करना तो बड़ा ही दु:खद होगा, इतना उपयोगी कार्य करनेवाली स्त्री का इतनी जल्दी मरना बड़ा दु:खान्त होगा। जो अधम होते है, उनका मरना ही उचित होता है, क्योंकि मृत्यु के बाद उन्हें सम्मान मिल जाता है। हम और आप जैसे ईमानदार लोग, जिसकी जितनी आयु बदी है, वह बिता सकते हैं —साथ-साथ रह सकते हैं। अच्छा बताइए, क्या आप अपना सामान साथ लाई हैं ?"

"मेरा बक्स तैयार रखा है, लेकिन अभी मैंने अपनी मालकिन को नहीं बताया है।"

"तो बता दीजिए उन्हें, और अपना पल्ला छुड़ाइए। अब मुझे आपकी सेवाओं के उपयोग का अवसर मिलना चाहिए।" न्यूमैन ने कहा।

"श्रीमन्, मैं यह अवसर प्रसन्नता से प्रदान करने के लिए प्रस्तुत हूं। मैंने अपनी मालकिन के शृंगारकक्ष में कुछ बड़े उबा देनेवाले घण्टे काटे हैं, लेकिन शायद इस बार सबसे अधिक उकताहट होगी। वे मुझपर कृतघ्नता का आरोप लगाएंगी।"

"ठीक है," न्यूमैन ने कहा, "जब तक आप हत्या का आरोप उनपर लगा सकती हैं, तब तक······"

"ओह, श्रीमन्, यह मैं नहीं कर सकूंगी। मैं नहीं कह सकूंगी," मिसेज़ ब्रैड ने गहरी सांस भरते हुए कहा।

"आप इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना चाहतीं ? ठीक है, यह काम मेरे ऊपर छोड़ दीजिए।"

"अगर वे मुझे कृतघ्न बुढ़िया कहेंगी तो," मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "मैं चुप रहूंगी। कुछ न कहूंगी। लेकिन ज़्यादा अच्छा यही होगा," उन्होंने धीरे से कहा, "मैं मरते दम तक उनका सम्मान करती रहूं। यही ज़्यादा सम्मानपूर्ण होगा।"

"इसके बाद तो फिर आप मेरे यहां आएंगी और नौकरी करेंगी ; मैं आपका मालिक रहूंगा। यह तो उससे भी अधिक सम्मानपूर्ण होगा।" न्यूमैन ने कहा।

मिसेज़ ब्रैड उठ खड़ी हुई। उनकी आंखें झुकी थीं। वे एक क्षण खड़ी रहीं। इसके बाद उन्होंने सिर उठाया और न्यूमैन को देखा। उनके चेहरे पर जो हड़-बड़ाहट और परेशानी का भाव था, वह किसी कदर लुप्त होता जा रहा था। वृद्धा ने बड़ी देर तक और एकटक न्यूमैन को देखा। उनकी दृष्टि इतनी सहज और स्नेह-

पूर्ण थी कि न्यूमैन को स्वयं अटपटा-सा लगने लगा। अन्त में वृद्धा ने कोमल स्वर में कहा, "आप स्वस्थ नहीं प्रतीत हो रहे हैं, श्रीमन् !"

"यह तो स्वाभाविक है," न्यूमैन ने कहा, "मेरे प्रसन्न होने का कोई कारण नहीं है। मैं बड़ा उदासीन हूं और अत्यन्त क्रुद्ध हूं, बड़ा दुःखी हू और बड़ा खुश भी; बड़ा अस्वस्थ हू और बड़ा सक्रिय भी—सभी कुछ एकसाथ हूं।—क्यों, ऐसी स्थिति में तो कोई भी ऐसा ही लगेगा जैसा मैं लग रहा हू।"

मिसेज़ ब्रैड ने गहरी सांस छोड़ी, लेकिन यह निश्शब्द थी। "मै आपको कुछ और खबर बता सकती हूं। लेकिन इससे आप और भी दुःखी होंगे। परन्तु आप तो पहले से ही दुःखी हैं, इसलिए खराब समाचार देने से क्या फर्क पड़ेगा ! खबर मदाम द सान्त्रे के बारे में है।"

"आप मुझे क्या बताएंगी ?" न्यूमैन ने पूछा, "आप यह तो कहेंगी नहीं कि आपने उनसे भेंट की है ?"

वृद्धा ने सिर हिला दिया। "नहीं, श्रीमन्, मैं नहीं मिली हूं। यही तो दुःख की बात है। न मेरी मालकिन मिल सकी हैं, और न मो० द बेलगार्द।"

"आपका मतलब है कि उन्हें इतनी ज़्यादा बंदिश में रखा जा रहा है।"

"बंदिश में, बंदिश में," मिसेज़ ब्रैड ने बड़े आहिस्ते से कहा।

यह शब्द सुनकर एक क्षण के लिए न्यूमैन के दिल की धड़कन बंद-सी हो गई। वह अपनी कुर्सी पर पीछे हट गया और सहारा लेकर बैठ गया और वृद्धा की ओर एकटक देखने लगा। "उन लोगों ने मिलने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं मिलीं—मिल भी नहीं सकती थीं।"

"उन्होंने मिलने से इंकार कर दिया—हमेशा के लिए। मुझे मालकिन के पास रहनेवाली नौकरानी ने यह बताया।" मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "इस नौकरानी से यह बात मालकिन ने स्वयं कही। नौकरानी से यह बात कहने का अर्थ है कि बड़ा ज़बर्दस्त आघात लगा है। मदाम द सान्त्रे उनसे अब कभी नहीं मिलेंगी। एक यही अवसर है उनके लिए। कुछ समय बाद यह भी जाता रहेगा। फिर कोई अवसर नहीं मिलेगा।"

"आपका मतलब है अन्य औरतों ने—जो मदर्स, सिस्टर्स या डॉटर्स—न जाने क्या-क्या कहलाती हैं;—उन औरतों ने नहीं मिलने दिया ?"

"वे इसे अपने यहां का नियम बताती हैं—मठ का या यों कह लीजिए सम्प्र-

दाय का," मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "नियमों के बरतने में जितनी कठोरता कारमेलाइट्स में है, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं। सुधारगृहों (जेलों) की दुश्चरित्रा औरतें भी इस मामले में उनसे अच्छी हैं। मठ में सब औरतें पुराने और भूरे रंग के लबादे ओढ़ती हैं—मालकिन की नौकरानी ने ही यह भी मुझे बताया। ये लबादे ऐसे खुरदुरे होते हैं कि उनको घोड़ों को भी नहीं उढ़ाया जा सकता। बेचारी काउण्टेस को मुलायम कपड़े कितने पसन्द थे! वे कभी कोई खुरदुरा या सख्त कपड़ा पसन्द नहीं करती थीं। वहां तो सब औरतें ज़मीन पर सोती हैं," मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "उनका जीवन, उनका जीवन,"—वे इस जीवन की तुलना देते हुए जरा झिझकीं—"उन लोगों का जीवन कसेरों की बीवियों से बेहतर नहीं होता। उन लोगों को हर चीज़ का त्याग कर देना पड़ता है, वह नाम भी भूल जाना पड़ता है, जिससे बचपन में उनको आया या नर्स पुकारती थीं। उन्हें अपने मां-बाप, भाई-बहन सबको भुला देना पड़ता है; अन्य लोगों की तो बात ही क्या," मिसेज ब्रैड ने कोमल स्वर में कहा, "वे लोग भूरे लबादे के भीतर एक चादर ओढ़ती हैं और कमर पर रस्सी-सी लपेटती हैं। जाड़ों में रात रहते ही उठ जाती हैं और अत्यंत ठण्डी जगह जाकर कुमारी मेरी की प्रार्थना करती हैं। कुमारी मेरी की उपासना बड़ी कठोर तपस्या है।"

मिसेज़ ब्रैड जितनी देर यह भयानक तथ्य बताती रहीं, उतनी देर उनकी आंखें सूखी रहीं, चेहरा पीला पड़ा रहा। इस बीच उनके हाथ साटन के वस्त्रों पर गोद में पड़े रहे। न्यूमैन के मुह से दर्दभरी आह निकल गई और वह कुर्सी पर आगे खिसक आया। उसने अपना सिर हाथों पर रख लिया था। काफी देर नीरवता रही, चिमनी के पास लगी सुनहली घड़ी की टिक-टिक से ही यह भंग हो रही थी।

"यह जगह कहां है—कन्वेण्ट कहां है?" आखिर न्यूमैन ने सिर उठाकर पूछा।

"दो मकानों में है," मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "मैंने पता लगाया है। मेरा ख्याल था, शायद आप जानना चाहें। एक तो एवेन्यू द मसीन में और दूसरा रू द एनफर में है। मदाम द सान्त्रे पहले वाले मकान में हैं। दूसरे मकान की सड़क का नाम भी भयंकर है। मेरा ख्याल है आप इसका अर्थ तो जानते ही होंगे।"

न्यूमैन उठ खड़ा हुआ और उस लम्बे-चौड़े कमरे के अंतिम छोर पर चला गया। जब वह लौटा तो मिसेज ब्रैड उठ खड़ी हुई थीं और हाथबांधे आतिशदान

ने पास खड़ी थी। "मुझे यह बताइए," न्यूमैन ने कहा, "क्या मैं बिना मिले भी उनके समीप जा सकता हूं ? क्या मैं उस जगह, जहा वे है, किसी दरार या छड़ों के बीच या ऐसी ही किसी जगह से उन्हें देख सकता हूं ?"

कहावत है कि प्रेमी पुरुष को सभी स्त्रियां चाहती हैं। मिसेज़ ब्रैड की पूर्व-धारणा थी कि नौकर-नौकरानियों को अपनी स्थिति का हमेशा ध्यान रखना चाहिए, ठीक उसी तरह जिस तरह नक्षत्र अपनी कक्षा पर चलते है (मिसेज ब्रैड अपने-आपको जान-बूझकर कोई नक्षत्र नहीं मान रही थीं) परन्तु उन्होंने भी कुछ मातृसहज दुःख से एक तरफ सिर झुका अपने नये मालिक की ओर देखा। एक क्षरण के लिए उन्हें लगा कि आज से चालीस वर्ष पूर्व वे न्यूमैन को किस तरह गोद में उठा लेतीं। "नहीं, श्रीमन् ! इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा। इससे तो वे आपको और भी दूर लगेंगी।"

"कुछ भी हो, मैं वहां जाना चाहता हू," न्यूमैन ने कहा, "एवेन्यू द मसीन, आपने यही बताया न ? और उनका नाम क्या है ?"

"कारमेलाइट्स" मिसेज़ ब्रैड ने कहा।

"याद रखूंगा।"

मिसेज़ ब्रैड एक क्षरण के लिए झिझकीं, इसके बाद बोलीं, "श्रीमन्, यह बता देना भी मेरा कर्तव्य है कि कन्वेण्ट में एक चर्च है। यहां हर इतवार को जो प्रार्थना होती है। उसमें कुछ बाहर के लोग भी चर्च में अन्दर जा सकते हैं। कन्वेण्ट में बन्द स्त्रियों को तो आप देख नहीं सकते, लेकिन मुझे पता चला है कि आप उन्हें ईश-गीत गाते सुन सकते हैं। आश्चर्य कि इतने कष्ट सहने के बाद भी उनमें गाने का साहस कैसे बना रहता है ! किसी दिन रविवार को मैं भी जाने का प्रयत्न करूंगी। मेरा ख्याल है, मैं काउण्टेस की आवाज़ पचास कण्ठ-स्वरों में अलग पहचान सकती हूं।"

न्यूमैन ने मिसेज़ ब्रैड की ओर कृतज्ञता से देखा, इसके बाद अपना हाथ आगे बढ़ाकर मिसेज़ ब्रैड से मिलाया। "धन्यवाद," न्यूमैन ने कहा, "अगर कोई भी वहां प्रवेश पा सकता है, तो मैं अन्दर जानेवाले व्यक्तियों में रहूंगा।" कुछ ही क्षणों बाद मिसेज़ ब्रैड ने अत्यन्त आदर भाव प्रकट करते हुए जाने की अनुमति मांगी। लेकिन न्यूमैन ने उन्हें रोक लिया और हाथ में मोमबत्ती दे दी। उसने कहा, "यहां लगभग छः कमरे ऐसे हैं, जो मेरे काम नहीं आते," एक खुले दरवाज़े की ओर संकेत

करते हुए न्यूमैन बोला, "अन्दर जाकर उन्हें देखिए और अपने रहने के लिए इच्छानुसार कमरा चुन लीजिए। "आप उनमे से जिसे सबसे अच्छा समझें, उसे अपने लिए काम में लीजिए।" इस संयोग को पाकर मिसेज ब्रैड एकबारगी हड़बड़ा उठीं और ठिठक गई; लेकिन न्यूमैन ने समझा-बुझा और आहिस्ते से ठेलठालकर उन्हें अन्दर भेज ही दिया। वह अधेरी दिशा में कांपती हुई मोमबत्ती लेकर चली गईं। वे पन्द्रह मिनट बाद वापस लौटी। इस बीच न्यूमैन कमरे में इधर से उधर घूमता रहा। कभी-कभी वह खिड़की के पास रुककर सड़क की रोशनियां देखने लगता था और फिर घूमने लगता था। मिसेज़ ब्रैड को बाद में कमरे देखने में ज़्यादा आनन्द आने लगा था; आखिर वे लौटीं और उन्होने चिमनी पर मोमबत्ती रख दी।

"आपने अपने लिए कमरा छांट लिया ?" न्यूमैन ने पूछा।

"कमरा, श्रीमन् ? इस बुढ़िया के जर्जर शरीर के लिए वे सारे कमरे ज़रूरत से ज्यादा खूबसूरत हैं। हर कमरे में सुनहला काम है। कोई भी कमरा ऐसा नही, जिसमें ऐसा काम न हो।"

"यह तो ऊपरी मुलम्मा है, मिसेज़ ब्रैड," न्यूमैन ने कहा, "आपके कुछ दिन रहने के बाद वह अपने-आप उतर जाएगा," और न्यूमैन उदासीन भाव से मुस्करा दिया।

"ओह, श्रीमन् ! ऐसे तो बहुत-सी चीज़ें कमरों की दीवारों से झर रही है।" मिसेज़ ब्रैड ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया, "चूकि मैं कमरे देख रही थी, इसलिए इस ओर भी मेरा ध्यान गया। मेरा ख्याल है, इस बारे में आपको कुछ पता नहीं है, श्रीमन् ! कोनों में बड़ी गन्दगी जमा है। आपके यहां घर की देखभाल करनेवाले व्यक्ति की बड़ी जरूरत है। आपको ऐसी सफाईपसन्द अंग्रेज़ नौकरानी चाहिए, जो आवश्यकता पड़ने पर हाथ में झाड़ू लेकर सफाई करने में भी हिचकिचाए नहीं।"

न्यूमैन ने कहा कि घर गन्दा है, इसका तो मुझे शक था, लेकिन कितना, यह पता नहीं। अब इसकी उचित ढंग से सफाई करना ऐसा काम है, जो मिसेज़ ब्रैड की योग्यता और क्षमता के सर्वथा अनुकूल है। उन्होंने मोमबत्ती फिर उठाई और कमरे में इधर-उधर दृष्टि डाली, इसके बाद उन्होंने कहा कि यह कार्य मुझे स्वीकार है, और इस कार्य की अनिवार्यता वृद्धा मदाम द बेलगार्द से सम्बन्ध विच्छिन्न

करने में सहायक होगी। यह कहकर उन्होंने अभिवादन किया और चली गई।

दूसरे दिन मिसेज़ ब्रैड अपना बक्स-बिस्तर लेकर आ गई और जब न्यूमैन ड्राइंगरूम में गया तो उसने देखा कि वे वहां घुटनों के बल बैठी कोच का फटा हिस्सा सी रही थी। न्यूमैन ने पूछा कि विदा लेते समय भूतपूर्व मालकिन से क्या बातचीत हुई। इसके उत्तर में मिसेज़ ब्रैड ने बताया कि जितनी मैंने कल्पना की थी, विदा उससे कहीं अधिक सरलता से मिल गई। "मैंने, श्रीमन् अपनी विनयशीलता में कमी नहीं आने दी, लेकिन भगवान ने मुझे यह याद रखने में सहायता दी कि मुझ जैसी भली औरत को किसी बुरी औरत के सामने डरने की जरूरत नहीं है।"

"मेरा भी यही ख्याल है।" न्यूमैन ने कहा, "और क्या उन्हें पता है कि आप मेरे यहां आ गई हैं?"

"उन्होंने मुझसे पूछा, कहां जा रही हो, तो मैंने आपका नाम बता दिया," मिसेज़ ब्रैड ने कहा।

"इसपर उन्होंने क्या कहा?"

"उन्होने बड़ी कठोर दृष्टि से मुझे देखा और उनका चेहरा गहरा लाल हो गया। फिर उन्होंने मुझसे चले जाने के लिए कहा। मैं तो तैयार थी ही। हमारे यहां का कोचवान भी अंग्रेज है। उससे मैंने अपना बक्स नीचे उतरवाया और किराये की गाड़ी मगवाई। लेकिन जब मैं नीचे गई तो फाटक बन्द था। मालकिन ने दरबान को आदेश दे दिया था कि मुझे जाने न दिया जाए और उसी आदेश के अनुसार दरबान की बीवी, वह आलसी नौकरानी एक किराये की गाड़ी में बैठकर मो० द बेलगार्द को क्लब से बुलाने गई थी।"

न्यूमैन ने अपना घुटना थपथपाया। "वह डर गई है! वह डर गई है!" उसने खुशी से चिल्लाकर कहा।

"मै भी डर गई थी, श्रीमन्!" मिसेज़ ब्रैड ने कहा, "लेकिन मैं बहुत नाराज़ भी थी। मैंने दरबान को बड़ा डांटा। मैंने उससे कहा कि वह किस अधिकार से एक सम्भ्रान्त अंग्रेज़ महिला को बलपूर्वक रोक रहा है, जो उसके नौकरी में आने से तीस वर्ष पहले से इस घर में है। ओह, श्रीमन्, मैंने बड़ा रौब दिखलाया और वह डर गया। उसने फाटक खोलकर मुझे निकल जाने दिया। मैंने गाड़ीवाले से कहा कि अगर वह तेज़ चलेगा तो मैं उसे कुछ इनाम भी दूंगी। लेकिन वह बहुत धीरे-

धीरे आया। ऐसा लगता था कि वह आपके घर के दरवाज़े तक पहुंच ही नहीं सकेगा। मैं तो अब तक कांप रही हूं। अभी मैं सुई में धागा पिरो रही थी, तो इसी काम में मुझे पांच मिनट लग गए।"

न्यूमैन हर्ष प्रकट करने के लिए हंस पड़ा और बोला, कि अगर आप चाहे तो धागा पिरोने के काम के लिए कोई लड़की अलग से नौकरानी के रूप में रख ले, और वह यह बुदबुदाता हुआ दूसरी ओर चला गया कि वह बुढ़िया डर गई है—वह डर गई है।

पेरिस आने के बाद न्यूमैन ने कई बार मिसेज़ ट्रिस्टरैम से मुलाकात की थी, लेकिन वह कागज़ का पुरज़ा उन्हें नहीं दिखाया था, जो अब हमेशा उसकी पॉकेट-बुक में रहता था। मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने उससे कहा था कि वर्तमान स्थिति में न्यूमैन का दुःखी दिखलाई पड़ना स्वाभाविक है, लेकिन वह उससे भी ज़्यादा दुःखी प्रतीत होता है, जितना किसी व्यक्ति को इस अवस्था में होना चाहिए। क्या दुखान्त प्रेम ने उसे विक्षिप्त कर दिया है ? न्यूमैन ऐसे व्यक्ति की तरह लगता था, जैसे वह बड़ा रुग्ण हो। इतने पर भी वह बड़ा बेचैन और सक्रिय लगता था। एक दिन न्यूमैन को देखने पर लगता था कि वह सिर लटकाए बैठा है और ऐसा लगता है जैसे उसने ज़िन्दगी-भर कभी न मुस्कराने का संकल्प कर रखा है और दूसरे ही दिन वह ठहाके मार-मारकर हसता, मजाक करने लगता। कभी वह अपना दुःख भुलाने की चेष्टा में सचमुच बहुत आगे बढ़ जाता। मिसेज़ ट्रिस्टरैम बार-बार उससे अनुरोध करतीं कि वह ऐसा 'अजीब' व्यवहार न करे। वे कहतीं कि इस दुःखान्त काण्ड के लिए किसी हद तक मैं भी ज़िम्मेदार हूं। इसलिए मै कुछ भी सहने के लिए तैयार हूं, लेकिन वह मेहरबानी करके इतना अजीब व्यवहार न करे। वह दुःखी रह सकता है, चाहे तो खूब हंसी-मज़ाक भी कर सकता है, चाहे तो मुझपर बिगड़ भी सकता है और जी चाहे तो मज़ाक भी उड़ा सकता है, पूछ सकता है कि उसके भाग्य के साथ ऐसा खिलवाड़ मैंने क्यों किया। यह सब मैं बरदाश्त कर सकती हूं, सह सकती हूं; लेकिन वह ईश्वर के लिए पागलों जैसी बातें न करे। यह बड़ा ही अप्रिय लगता है। ऐसा लगता है जैसे वह सोते हुए आदमियों की तरह बड़बड़ा रहा है। इस तरह बड़बड़ानेवाले लोगों से उनको हमेशा डर लगा करता था। मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने उसे बतलाया था कि जो दुःखान्त घटना हुई है, उसके कारण उनका नैतिक उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है और वे जब तक मदाम द

सान्त्रे की जगह दो महाद्वीपों में कोई उपयुक्त लड़की उसके लिए न खोज लेंगी, तब तक चैन से न बैठेंगी।

"ओह," इसपर न्यूमैन ने कहा, "मैं इस काबिल नहीं हूं। नई तलाश शुरू करने की ज़रूरत नहीं है। आप किसी भी दिन मुझे दफना सकती हैं। लेकिन अब मैं शादी नहीं करूंगा। बड़ा कठिन काम है यह। जो भी हो, अब तो मैं अगले सप्ताह एवेन्यू द मसीन में कारमेलाइटों के चर्च में जाना चाहता हूं। इसमें तो कोई पागलपन नहीं है," वह कहता, "आप चर्च के किसी कैथोलिक पादरी को जानती हैं—है न?—मैंने उसे यहां भी देखा है। वही वृद्ध जो कमर में पेटी बांधे रहता है। उनसे कृपा कर पूछिएगा कि क्या मुझे वहां जाने के लिए विशेष अनुमति की आवश्यकता है, और अगर ऐसी अनुमति आवश्यक हो तो मुझे दिलवा दीजिए।"

इसपर मिसेज़ ट्रिस्टरैम बहुत प्रसन्न हुईं। "मुझे खुशी है कि आपने मुझसे कुछ काम करने के लिए कहा।" वे बोलीं, "आपको चर्च मे जाने की अनुमति मिल जाएगी, भले ही मेरे मित्र पादरी को चाहे उसके लिए दण्डित ही क्यों न होना पड़े।" दो दिन बाद उन्होंने बताया कि सारी व्यवस्था हो गई है। चर्च उसका स्वागत करता है। और अगर वह निश्चित समय पर भले आदमी की तरह कन्वेण्ट के फाटक पर पहुंच जाएगा, तो अन्दर जाने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

चौबीस

इतवार के अभी दो दिन थे, इस बीच अपनी अधीरता से लाचार न्यूमैन एवेन्यू द मसीन गया और मदाम द सान्त्रे के वर्तमान निवास की सपाट चहारदीवारी को ताकता रहा और ऐसा करने से उसे जो कुछ भी सन्तोष प्राप्त हो सकता था, वह प्राप्त किया। पेरिस के कुछ यात्रियों को शायद याद हो कि यह सड़क नगर के सबसे सुन्दर उद्यान, पार्क मोन्शो को जोड़ती है। इस सड़क के दोनों ओर जो मकान हैं, उनसे आधुनिक सुख-सुविधाएं और ऐश्वर्य प्रकट होता है और कन्वेण्ट की कठोर इमारत की आत्मा के प्रतिकूल लगता है। न्यूमैन ने क्षोभपूर्ण और विषादयुक्त दृष्टि से स्तब्ध दिखलाई पड़नेवाली उस लम्बी दीवार को देखा, जिसमें एक

भी खिड़की न थी। उसी दीवार के पीछे वह नारी थी, जिससे न्यूमैन को प्रेम था और वह अब अपने जीवन का शेष भाग इसी कन्वेण्ट में बिताने का प्रण ले रही थी। उसे आशका थी कि यह सोचकर उसे दहशत होगी। लेकिन ऐसी बात नहीं हुई। ऐसा लगता था, कन्वेण्ट की इमारत में कुछ आधुनिक ढग के सुधार किए गए थे, जिनकी वजह से उसमें अस्वच्छन्दता की परम्परा अविच्छिन्न रहते हुए भी निर्धनताजन्य कष्ट नहीं थे। ईश-चिन्तन और आराधना भले ही क्लान्ति उत्पन्न करते हों, लेकिन उसमें भी आनन्द था। और फिर भी न्यूमैन जानता था कि ऐसी बात नहीं है; इस समय यह उसके लिए यथार्थता नहीं थी। यह सब उसे बड़ा अजीब लग रहा था और ऐसा नाटक-सा प्रतीत हो रहा था, जिसे वह वास्तविक मानने को तैयार नहीं था। ऐसा लग रहा था, किसी अथ प्रेमकथा का एक पन्ना फाड़कर लगा दिया गया है, जिसका न्यूमैन की अपनी अनुभूति से कोई वास्ता नहीं है।

रविवार को सवेरे मिसेज ट्रिस्टरैम द्वारा बताए गए समय पर वह उस सपाट दीवार के फाटक पर पहुंचा और उसने घण्टी बजाई। फाटक तुरन्त खुल गया और अन्दर जाने पर उसने अपने-आपको एक चौक में पाया। चौक बड़ा ठण्डा-सा लगा। सामने चर्च था। दरबान के लिए बनाए गए घर से एक भारी-भरकम महिला-'सिस्टर' निकलीं। उन्होंने काम पूछा और उत्तर मिलने पर चर्च के दरवाज़े की ओर संकेत किया। चर्च चौक की दाहिनी ओर था। वहां पहुचने के पहले काफी सीढ़ियां चढ़नी पड़ती थीं। न्यूमैन सीढ़ियां चढ़कर खुले दरवाज़े के मार्ग से अन्दर पहुंच गया। चर्च में अभी प्रार्थना शुरू नहीं हुई थी। रोशनी मद्धिम थी। कई क्षणों बाद उसकी आंखें उस मद्धिम प्रकाश में देखने की अभ्यस्त हो गई। तब उसने देखा कि वह बड़ा कक्ष एक लोहे के आवरण द्वारा दो भागों में विभक्त था। लेकिन ये दोनों हिस्से बराबर न थे। वेदी लोहे के आवरण के इधर थी और उसके बीच तथा प्रवेशद्वार के बीच कई बेंचें और कुर्सियां पड़ी थीं। इनमें से तीन-चार स्थानों पर लोग मूर्तिवत् बैठे थे, बिना हिलाडुले—बाद में गौर से देखने पर पता चला कि ये औरतें हैं, जो आराधना में निमग्न हैं। न्यूमैन को वह जगह बड़ी ठण्डी लगी, ऐसा लगा कि वहां जो धूप जल रही है, वह भी ठण्डी है। इसके अलावा कुछ मोमबत्तियां इधर-उधर झिलमिला प्रकाश कर रही थीं, इधर-उधर से रंगीन कांचों से कुछ प्रकाश आ जाता था। न्यूमैन बैठ गया। प्रार्थनारत स्त्रियां अपनी ईशोपासना में डूबी रहीं। उनकी पीठें न्यूमैन की ओर थीं। उसने देखा कि

वे स्त्रिया भी उसीकी तरह आई थीं। उसकी इच्छा उनके चेहरे देखने की थी। ऐसा लगा कि ये स्त्रियां भी कुछ ऐसी लड़कियों की मां या बहनें हैं, जिन्होंने मदाम द सान्त्रे की तरह 'नन' बनने का उत्साह दिखाया था। लेकिन इनकी स्थिति न्यूमैन से ज्यादा अच्छी थी, क्योंकि वे लोग कैथोलिक थे और उन्हें पता था कि उन्होंने अपने तथा अपने रिस्तेदारों के स्नेह का धर्म के लिए बलिदान किया था। तीन या चार व्यक्ति और आए। उनमें से दो चढ़ती उम्र के पुरुष थे। प्रत्येक व्यक्ति बिलकुल चुप था। न्यूमैन वेदी के साथ लगे परदे को बड़े ध्यान से देखता रहा। वही कन्वेण्ट था, वास्तविक कन्वेण्ट, जहां वह थी। लेकिन वह कुछ नहीं देख सकता था। दरारों तक से कोई रोशनी नहीं आ रही थी। वह उठ खड़ा हुआ और आहिस्ते से पर्दे की तरफ गया। उसने कोशिश की कि वह दूसरी तरफ देख सके। लेकिन पीछे बिलकुल अंधेरा था। बिलकुल ज़रा-सी भी हलचल नहीं थी। वह अपनी जगह वापस लौट आया। इसके बाद पादरी आया और दो लड़के आए और उन्होंने प्रार्थना शुरू कर दी। न्यूमैन कठोर गंभीरता से, उनके हावभाव और मुंह का बनाना-बिगाड़ना देखता रहा। उसकी दृष्टि में कुछ शत्रुता का भाव भी था। उसे लग रहा था कि मदाम द सान्त्रे के उसे छोड़कर जाने में इन लोगों ने भी मदाम की मदद की है; और अब वे मुंह बना-बनाकर अपनी विजय की घोषणा कर रहे हैं। पादरी की लम्बी वक्तृता से उसे झुंझलाहट होने लगी थी, और क्रोध आने लगा था। उसके मन में जो समझ में न आनेवाला द्वन्द्व चल रहा था, उसमें गहरा विद्रोह था। न्यूमैन को लग रहा था कि वहां जो कुछ हो रहा है, वह सब उसे चिढ़ाने के लिए किया जा रहा है। तभी चर्च की गहराइयों में से, उस लौह-आवरण के पीछे से अजीब, दुखभरी आवाज़ें निकलनी शुरू हो गई। ये नारी-कण्ठ थे। पहले ये स्वर धीरे-धीरे निकले और इसके बाद क्रमशः तेज होते गए। ज्यों-ज्यों आवाजें तेज़ होती गई, त्यों-त्यों लगा कि यह रुदन और मृत्यु का संगीत है। ये कारमेलाइट्स की ननें गा रही है। केवल उनके स्वर मानवीय थे। वे अपने दफन किए गए स्नेह-सम्बन्धों और सासारिक अभिलाषाओं और आकांक्षाओं की निस्सारता का मृत्यु-संगीत गा रही थी। शुरू में न्यूमैन अत्यन्त क्रुद्ध हो गया—लगभत स्तब्ध—इस संगीत के अजीब स्वर सुनकर। उसके बाद जब सगीत का कुछ अर्थ समझ में आया, तो वह उसे ध्यान से सुनने लगा और उसका हृदय तेज़ी से धड़कने लगा। वह मदाम द सान्त्रे के स्वर के लिए उसे सुनने लगा और बेसुरी

आवाज़ों के गीत के बीचोबीच में उसने कल्पना की—अमुक स्वर मदाम द सान्त्रे का है। (लेकिन हम यह कहने के लिए विवश हैं कि न्यूमैन का यह विचार मात्र कल्पना ही थी, क्योंकि मदाम द सान्त्रे अभी उन ननों के साथ गाने योग्य नहीं हुई थीं, जो अदृश्य रूप से परदे के पीछे गा रही थीं।) संगीत जारी रहा। सगीत यंत्रवत् और एक जैसे स्वर में चल रहा था। गीत की उदासीन पक्तियां बार-बार दोहराई जा रही थीं और उनकी लय निराशाभरी थी। यह संगीत बड़ा कुत्सित और भयावना लग रहा था। न्यूमैन को लगा कि उसे पूरी शक्ति से अपने-आपपर संयम रखना पड़ेगा। वह और अधिक क्षुब्ध, कुद्ध होता जा रहा था। उसकी आंखो में आंसू भर आए। आखिर उसे धीरे-धीरे पूर्ण आवेग से यह अनुभूति हुई कि अब केवल यह अव्यवस्थित व्यक्तिहीन रुदन ही शेष रह गया है, जिसे भविष्य में यह संसार सुन सकेगा, वह संसार जिसका मदाम द सान्त्रे परित्याग करके चली गई हैं, वह कण्ठ-स्वर जो कभी न्यूमैन को अत्यन्त मधुर लगता था। उसे लगा कि वह और अधिक संगीत न सुन सकेगा। वह यकायक उठ खड़ा हुआ, और बाहर आ गया। दहलीज़ पर आकर वह कुछ ठिठका, फिर उसने उन शुष्क संगीत की लहरियों को सुना और इसके बाद सीढ़ियों से जल्दी-जल्दी उतरकर नीचे चौक में आ गया। जब वह नीचे आ रहा था, तो उसने देखा कि फाटक पर वही सुर्ख गालों वाली 'सिस्टर' अपने बालों में पंखे जैसी झालर-सी लगाए उन दो व्यक्तियों से बात कर रही थी, जो फाटक से अभी-अभी अन्दर घुसे थे। दूसरी बार देखने पर उसे पता चला कि वे लोग और कोई नहीं, बल्कि मदाम द बेलगार्द और उनके ज्येष्ठ पुत्र थे। वे भी न्यूमैन की तरह ही मदाम द सान्त्रे की आवाज़ सुनने आए थे, हालांकि न्यूमैन को इस प्रयत्न में निराशा ही हाथ लगी थी। चौक पार करते समय मो० द बेलगार्द ने न्यूमैन को पहचान लिया। मदाम द बेलगार्द के आगे वही चल रहे थे। वृद्धा ने भी न्यूमैन पर दृष्टि डाली, यह दृष्टि भी उनके पुत्र जैसी ही थी। दोनों के चेहरों से परेशानी प्रकट हुई, यह भाव घोर निराशा जैसा था। इतने स्पष्ट भाव न्यूमैन ने दोनों व्यक्तियों के चेहरों पर पहले कभी नहीं देखे थे। प्रकट था कि मां और पुत्र, दोनों ही न्यूमैन को देखकर चौंक गए थे और वह शानदार नाटक नहीं खेल सके, जो वे आम तौर पर उसके सामने खेला करते थे। न्यूमैन तेज़ी से उनके पास से गुज़र गया। अब उसकी यही इच्छा थी कि वह जल्दी से जल्दी कन्वेण्ट की चहारदीवारी से निकल जाए और बाहर सड़क पर आ जाए। उसके

पहुंचते ही फाटक खुल गया। वह बाहर निकल आया और फाटक उसके सड़क पर आते ही बन्द हो गया। एक गाड़ी, जो शायद वहां खड़ी थी, फुटपाथ से घूमकर जा रही थी। न्यूमैन ने उसकी तरफ एक क्षण के लिए यूंही देखा, तभी उसकी आंखों पर छाए धुंध के पार यह लगा कि गाड़ी में बैठी महिला उसकी ओर देखकर अभिवादन कर रही है। न्यूमैन ठीक से पहचान भी नहीं पाया था कि गाड़ी आगे बढ़ गई। गाड़ी पुराने फैशन की बग्घी थी, जिसके ऊपर का सिर्फ आधा भाग ढका था। महिला ने झुककर बड़े स्पष्ट ढंग से अभिवादन किया था। इसके साथ ही वे मुस्कराई भी थीं। महिला के बगल में एक छोटी बालिका बैठी थी। न्यूमैन ने अपने सिर से हैट उठाया और महिला ने कोचवान को रुकने का आदेश दिया। बग्घी फुटपाथ के किनारे फिर रुक गई। बग्घी में बैठी महिला ने न्यूमैन को पास आने का संकेत किया। महिला अरबेन द बेलगार्द की पत्नी थीं। उनका पास आने का संकेत पाकर न्यूमैन एक क्षण के लिए ठिठका। इस बीच उसने अपने-आपको कोसा कि उसने मूर्खता करके वृद्धा और उसके पुत्र को क्यों योंही चला जाने दिया। वह सोच रहा था, पता नहीं अब मैं उनसे किस प्रकार मिल पाऊंगा। क्या मूर्खता हो गई, वहीं उन्हें क्यों न रोक लिया? उससे बढ़कर और कौन-सी जगह अच्छी होती कि उन लोगों को उस जेल की दीवार के नीचे ही पकड़ लिया जाता, जिसमें उन लोगों ने उसके जीवन के आशा और आनन्द के पुष्प को ज़बर्दस्ती ठेलकर अन्दर कर दिया था? वह उस समय बहुत ही क्षुब्ध था, इसलिए उनको रोक न सका, लेकिन उसे लगा कि वह अब उनकी फाटक पर बाहर निकलने तक प्रतीक्षा कर सकता है। मदाम अरबेन ने फिर बड़ी अदा से न्यूमैन को अपने पास आने का इशारा किया। इस बार वह बग्घी के पास चला गया। कुछ आगे झुक बाईं ओर उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। वे उसकी ओर बड़ी करुणापूर्ण दृष्टि से देखती हुई मुस्करा रही थीं।

"आह, मोंश्यू," उन्होंने कहा, "आप मेरे ऊपर तो नाराज़ नही है? मेरा उस काण्ड में कोई हाथ नहीं है!"

"ओह, मैं नहीं समझता कि जो हुआ, उसे आप रोक सकती थीं।" न्यूमैन ने ऐसे स्वर में जवाब दिया, जिसमें वीरता के अभिनय का भाव नहीं था।

"आप जो कुछ कह रहे हैं और उससे मेरे प्रभाव की अस्तित्वहीनता का जो आभास होता है, वह इतना सच है कि मैं उसका विरोध नहीं कर सकती। जो

भी हो, मैं आपको माफ करती हूं। आपकी शक्ल से ऐसा लगता है, जैसे आपने कोई भूत देखा हो !"

"मैंने भूत ही देखा है !" न्यूमैन ने कहा।

"तो मैं प्रसन्न हूं, अच्छा हुआ मैं अपने पति और उनकी मां के साथ अंदर नहीं गई। आपने तो उनको देखा होगा, क्यों ? मुलाकात काफी स्नेहपूर्ण रही होगी ? क्या आपने संगीत सुना ? लोग कहते हैं कि वह संगीत नरक में पड़े लोगों के रुदन की भांति होता है। मैं अन्दर नहीं गई ; वहां जाते ही उसका सुनाई पड़ना निश्चित था। बेचारी क्लेयर सफेद चादर और बड़ा भूरा लबादा ओढ़ती होगी ! यही कारमेलाइट की पोशाक है ; आप जानते हैं न ? उसे हमेशा लम्बी ढीलीढाली पोशाक पसंद आती थी। लेकिन मुझे उसके बारे में आपसे बात नहीं करनी चाहिए, मुझे इतना ही कहना है कि आपके लिए मुझे बड़ा अफसोस है। अगर मैं आपकी कोई सहायता कर सकती, तो अवश्य करती ; और मेरा ख्याल है, इन सब लोगों का व्यवहार बड़ा भद्दा था। आप जानते हैं, मुझे पहले से ही इसकी आशंका थी, सब कुछ होने के एक पखवाड़े पहले ही मुझे कुछ-कुछ गड़बड़ लगने लगी थी। जब मैंने अपनी सास की पार्टी में आपको बडा खुश देखा, तब मुझे ऐसा लगा था कि आप अपनी कब्र पर नाच रहे हैं। लेकिन मैं क्या कर सकती थी ? मैं तो आपके कल्याण की ही कामना करती थी। आप कहिएगा कि इतना काफी नहीं है। हां, इतना तो मैं ज़रूर कहूंगा कि इन लोगा का व्यवहार बड़ा भद्दा था, यह कहने में मुझे ज़रा भी डर नहीं है। मुझे खेद है कि अब आपसे मुलाकात नहीं हो पाएगी। मुझे आपका साथ बड़ा अच्छा लगता है। इसका प्रमाण मैं यह अनुरोध करके दूंगी कि आप मेरे साथ बैठकर पन्द्रह मिनट गाड़ी में घूमें, क्योंकि इतनी देर मुझे अपनी सास की प्रतीक्षा करनी है। यही खतरा है कि अगर हम दोनों को किसीने देख लिया, और उसे यह पता हुआ कि हम लोगों ने आपसे विवाह के लिए इंकार कर दिया है, तो शायद लोग आपको और मुझे साथ देखकर बुराई करें। लेकिन मैं आपसे किसी समय जल्दी ही मिलूंगी—किसी जगह—क्यों ? आपको याद है न,"—यह बात अंग्रेज़ी में कही गई थी—"हम लोगों के मनोरंजन की एक योजना है ?"

न्यूमैन की आंखें बुझी थीं और वह बग्घी के हत्थे पर अपना हाथ रखे मर्मर ध्वनि में सान्त्वना के रूप में कहे जा रहे उन शब्दों को सुन रहा था। उसे शायद

यह पता भी नहीं था कि मदाम द वेलगार्द क्या कह रही थी ; वह यही समझ रहा था कि वे बेकार की बातें किए जा रही हैं। यकायक उसे लगा कि जो थोथी सहानुभूति प्रकट की जा रही है, वह उसका दृढ़ लाभ भी उठा सकता है। वह उसे वृद्धा और उसके ज्येष्ठ पुत्र से मिला सकती हैं। "क्या वे लोग जल्दी ही वापस लौट रहे हैं—आपके घर के लोग ?" उसने पूछा, "क्या आप उनका इंतज़ार कर रही हैं ?"

"हां, वे लोग बाहर खड़े होकर प्रार्थना सुनेंगे, इससे ज्यादा वे वहां नहीं रुकेंगे। क्लेयर ने उनसे मिलने से साफ इंकार कर दिया है।"

"मैं उन लोगों से बात करना चाहता हूं," न्यूमैन ने कहा, "और आप इसमें मदद कर सकती हैं। आप पांच मिनट देर से लौटें और मुझे यह समय मिल जाएगा। मैं उन लोगों की यहीं प्रतीक्षा करता हूं।"

मदाम द वेलगार्द ने मुंह से करुणा-भाव प्रकट करते हुए अपने दोनों हाथ पकड़ लिए।

"मेरे दोस्त ! अब आपको उनसे क्या काम है ? क्या आप चाहते हैं कि वे आपकी बात मान लें ? कुछ भी कहना बेकार होगा ! वे लोग कभी न मानेंगे।"

"फिर भी मैं उनसे बात करना चाहता हूं। आपसे विनय करता हूं कि जो मैं कहता हूं वैसा कर दें। आप केवल पांच मिनट देर से वापस लौटें। आपको भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। मैं कोई हिंसात्मक कार्य नहीं करूंगा, मैं शान्ति से बात करूंगा।"

"हां, आप बहुत शान्त प्रतीत हो रहे हैं। अगर उनके ज़रा-सी भी हृदय नाम की कोई कोमल चीज होती, तो वे ज़रूर पसीज जाते। लेकिन हृदय तो है ही नहीं। फिर भी जो आप कह रहे हैं, मैं उससे ज़्यादा आपकी सहायता करूंगी। मुझे यहां वापस नहीं लौटना है। मैं पार्क मोन्शो जा रही हूं। वहां मैं अपनी पुत्री को घुमाऊंगी। मेरी सास इधर बहुत कम आती हैं। अब चूंकि वे इधर आई हैं, इसलिए उद्यान की सैर भी कर लेंगी। हम उनकी वहीं प्रतीक्षा करेंगे। मेरे पति उनको लेकर वहीं आएंगे। आप मेरे पीछे आइए। उद्यान के फाटक के अन्दर जाकर मैं गाडी से उतर पड़ूंगी। आप किसी कोने में एक कुर्सी पर बैठ जाइएगा, मैं उन लोगों को उधर ही ले आऊंगी। यह आपके प्रति मेरा

अनुराग है। आपके प्रति सम्मान का भाव है।"

न्यूमैन को यह प्रस्ताव बड़ा ही सुविधाजनक लगा। वह बड़ा गिरा-गिरा-सा महसूस कर रहा था। इससे उसे कुछ सहारा मिला। उसने सोचा कि मदाम द बेलगार्द उतनी खराब स्त्री नहीं हैं, जितना उसने उन्हें समझा था। उसने वादा किया कि वह पीछे-पीछे आ रहा है और बग्घी आगे बढ़ गई।

पार्क मोन्शो बड़ा सुन्दर उद्यान है, लेकिन वहां पहुंचने पर वहा के हरित सौन्दर्य पर न्यूमैन ने बहुत कम ध्यान दिया। लेकिन वहां नववसन्त का सौन्दर्य खिल रहा था। मदाम द बेलगार्द उसे तुरन्त मिल गई। वे अपने वादे के अनुसार एकाकी कोने में बैठी थीं। उनके सामने उनकी छोटी पुत्री एक नौकर के साथ गोद में एक खिलौने का कुत्ता लिए इधर-उधर घूम रही थी। ऐसा लगता था कि जैसे उसे कोई सज़ा दी जा रही है। न्यूमैन बच्ची की मां के पास बैठ गया। वे खूब तेज़ी से बातें कर रही थीं। वे न्यूमैन को समझा रही थीं कि बेचारी क्लेयर कोई बहुत आकर्षक युवती नहीं थी। वह बड़ी लम्बी और दुबली थी, बड़ी सख्त और ठण्डी थी। उसके होठ बड़े मोटे और नाक बहुत पतली है। कहीं कोई तिल नहीं है। और फिर वह सनकी है, सनकी और ठण्डा खून, आखिर तो अंग्रेज़ ठहरी। न्यूमैन को यह सब सुनना बड़ा असह्य लग रहा था। वह एक-एक मिनट गिन रहा था और अपने शिकार की प्रतीक्षा कर रहा था। वह अपनी छड़ी पर झुका चुपचाप बैठा रहा। और वह भावहीन और निरर्थक दृष्टि से मदाम द बेलगार्द को देखे जा रहा था। आखिर मदाम द बेलगार्द ने कहा कि मैं फाटक पर जाकर अपने घर के लोगों से मिलती हूं। लेकिन जाने के पहले उन्होंने अपनी आंखें एक बार झुकाई और एक क्षण अपनी बांह की लैस से खेलते हुए न्यूमैन की ओर देखा।

"आपको वह वादा याद है," उसने पूछा, "जो वादा आपने तीन सप्ताह पूर्व किया था ?" न्यूमैन ने याद करने की असफल कोशिश की, उसे कहना पड़ा कि मुझे वादे की याद नहीं है। उन्होंने याद दिलाया कि वादा करते समय उसने बहुत ही अजीब-सी बात कही थी और उसके बाद जो घटनाएं हुई, उनको देखते हुए उसे शिकायत करने का अधिकार है। "आपने कहा था कि शादी के बाद आप मुझे बुलियर्स ले चलेंगे। शादी के बाद—इस बात पर आपने खास तौर पर ज़ोर दिया था। इसके तीन दिन बाद शादी की बात टूट गई। आप जानते है कि शादी

टूटने की खबर सुनते ही मैंने मन में क्या सोचा ? हे भगवान, अब वह मुझे बुलियर्स नहीं ले जाएंगे । और मैं सोचने लगी कि कहीं आपको जो कुछ होनेवाला है, उसका पहले से ही तो पता नहीं था ।"

"ओह, देवीजी," न्यूमैन बुदबुदाया और वह सड़क की ओर देखने लगा कि कहीं और लोग आ तो नही रहे हैं ।

"लेकिन मैं अपने अच्छे स्वभाव का परिचय दूंगी," मदाम द बेलगार्द ने कहा, "ऐसे आदमी को ज़्यादा नहीं दबाना चाहिए, जो किसी भावी नन के प्रेमपाश में बंधा हो । इसके अलावा शोक के दिनों मे हम बुलियर्स जा भी नहीं सकते । लेकिन अभी मैंने उम्मीद नहीं छोड़ी है । साथी का प्रबन्ध हो गया है । अगर आप चाहें तो नाम भी बता दूं । वे है लार्ड डीपमेयर । वे डबलिन वापस गए । कुछ महीने बाद जो दिन मैं बता दूंगी उसी दिन वे आयरलैंड से केवल इसीलिए आएंगे और मुझे बुलियर्स ले चलेंगे । इसे मैं बहादुरी कहती हू ।"

इसके कुछ ही देर बाद मदाम अपनी पुत्री-सहित चली गईं । न्यूमैन बैठा रहा । उसे समय काटना पहाड़-सा लग रहा था । उसे महसूस हुआ कि चर्च में बैठे रहने के कारण उसके घाव कितने ताजा हो उठे हैं ! मदाम द बेलगार्द भी उससे प्रतीक्षा करा रही थीं ; लेकिन उन्होंने अपने वचन का पालन किया । आखिर वे अपनी पुत्री और नौकर के साथ सड़क के कोने पर दिखलाई पड़ीं । उनके साथ उनके पति थे, जो धीरे-धीरे चल रहे थे । उनके पति की बांह का सहारा लिए वृद्धा सास थीं । वे दोनों काफी धीरे-धीरे चल रहे थे, इसलिए न्यूमैन के पास आते-आते उन्हें काफी समय लगा । न्यूमैन बिना हिलेडुले बैठा रहा । वह क्रोध से जल रहा था । यह उसकी खास विशेषता थी कि वह अपने क्रोध पर ठीक उसी तरह संयम रख सकता था, जिस तरह गैस के चूल्हे की आग को नियंत्रण में रखा जा सकता है । वह प्रकृतितः बड़ा शान्त, चतुर और सोच-समझकर काम करनेवाला व्यक्ति था । वह जीवन-भर यह मानता आया था कि शब्द ही कार्य हैं और कार्य जीवन का सोपान हैं, और कोई कार्य करते समय उछलना-कूदना ऐसी हरकत है, जो चौपाये या मूर्ख व्यक्ति करते हैं—यह सब बातें उसके क्रोध के उचित होते हुए भी हिंसक होने और अपने-आपको बेवकूफ सिद्ध करने से रोकती थी । इसलिए वृद्धा मदाम द बेलगार्द और उनके पुत्र के आने पर जब वह उठ खड़ा हुआ तो उसे लगा कि वह खूब लम्बा है और छरहरा है । वह एक ऐसी झाड़ी के पास

छिपकर बैठा था कि उसे दूर से नहीं देखा जा सकता था। लेकिन प्रकटतः ऐसा लगा कि मो० द बेलगार्द ने उसे कुछ दूरी से ही देख लिया। वे और उनकी मां सीधे बढ़े जा रहे थे, परन्तु न्यूमैन ने आगे बढ़कर उनका रास्ता रोक लिया। अब दोनों को विवश होकर रुकना पड़ा। न्यूमैन ने अपना हैट ज़रा-सा उठाया और एक क्षण के लिए उन्हें देखा। क्रोध और आश्चर्य से उन लोगों का चेहरा पीला पड़ गया था।

"आपका रास्ता रोककर खड़ा हो गया हूं, इसके लिए क्षमा कीजिएगा," उसने आहिस्ता से कहा, "लेकिन मुझे इस अवसर का फायदा उठाना ही चाहिए। मुझे कुछ ही शब्द कहने हैं। आप सुनेंगे ?"

पुत्र ने जलती निगाहों से न्यूमैन को देखा और फिर अपनी मां की ओर दृष्टि मोड़ी। "क्या मि० न्यूमैन कोई ऐसी भी बात कह सकते हैं, जो हमारे सुनने योग्य हो ?"

"जी हां, ज़रूर है," न्यूमैन ने कहा, "इसके अलावा मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको एक बात बता दूं। यह चेतावनी है—सावधान हो जाने के लिए।"

"आपका कर्तव्य ?" वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने कहा। उन्होंने अपने होंठ ऐसे सिकोड़ लिए थे, जैसे जलता कागज़ सिकुड़ जाता है। "वह आपका मामला है, हमारा नहीं," वे बोलीं।

इस बीच वृद्धा की पुत्रवधू ने अपनी लड़की का हाथ थाम लिया था। उसने आश्चर्य की मुद्रा बनाते हुए अधीरता से जिस स्वर में बात की उससे न्यूमैन को भी ताज्जुब हुआ, हालांकि वह स्वयं अपने शब्दों और उनके नाटकीय प्रभाव के बारे में सोच रहा था। "अगर मि० न्यूमैन यहां चार आदमियों के बीच खड़े होकर तमाशा दिखाना चाहते हैं, तो," पुत्रवधू बोलीं, "तो मैं इस बेचारी बच्ची को इस झमेले से अलग ले जाना चाहती हूं। वह अभी ये शरारतें देखने के लिए बहुत छोटी है।" और उसके बाद वे तुरन्त आगे बढ़ गईं।

"ज़्यादा अच्छा यही होगा कि आप मेरी बात सुन लें," न्यूमैन ने कहा, "आप सुनें या न सुनें, आपको कटु परिस्थितियों का सामना करना ही पड़ेगा। लेकिन सुन लेने से कम से कम आपको पूर्व-सूचना तो रहेगी।"

"हम आपकी धमकी पहले भी सुन चुके हैं," पुत्र ने कहा, "और आप जानते हैं, उसके सम्बन्ध में हमारा क्या ख्याल है।"

"आपका जो ख्याल है, वह आप स्वीकार नहीं कर रही हैं," न्यूमैन ने वृद्धा की झुंझलाहटभरी डांट के उत्तर में कहा, "मैं अच्छी तरह जानता हूं कि हम लोग इस समय एक सार्वजनिक स्थान में हैं, और आप देख ही रही हैं कि मैं कितना शांत हूं। मैं राह चलते आदमी को आपका गुप्त रहस्य नहीं बताऊंगा, मैं उसे अपने तक सीमित रखूंगा और आरंभ में केवल कुछ लोगों को ही यह बात बताऊंगा। अगर दूर से हमें कोई देख भी रहा होगा तो वह यही समझेगा कि हम आपस में सामान्य औपचारिकता की बातें कर रहे हैं और मैं मदाम को उनके सराहनीय गुणों पर बधाई दे रहा हूं।"

पुत्र ने अपनी छड़ी से सडक पर तीन बार प्रहार किया। "मैं कहता हूं, हमारे रास्ते से हटिए।" उसने धीरे से किन्तु गुस्से में कहा।

न्यूमैन ने तत्काल बात मान ली और वह रास्ते से हटकर खड़ा हो गया। इसके बाद न्यूमैन ने कहा, "अब से ठीक आधे घण्टे बाद मदाम द बेलगार्द को इस बात का अफसोस होगा कि उन्होंने मेरी बात क्यों नहीं सुनी-समझी।"

वृद्धा कुछ कदम आगे बढ़ गई थीं, लेकिन यह शब्द सुनकर ठिठक गई। उन्होंने वर्फ के दो टुकड़ों जैसी अपनी ठण्डी आंखों से न्यूमैन पर निगाह डालते हुए कहा, "आप राह चलते खोमचेवाले की तरह पीछे पड़ गए हैं, जो कुछ न कुछ बेचना ही चाहता है," यह कहते हुए वे निरुत्साहित करनेवाली हंसी हंसने लगीं, लेकिन इस हंसी में भी उनका प्रकम्पित कण्ठ-स्वर छिप न सका।

"ओह, नहीं, मैं बेचना नहीं चाहता," न्यूमैन ने कहा, "मैं आपको यह सूचना मुफ्त में दे रहा हूं," यह कहते हुए वह कुछ पास चला गया और उनकी आंखों में अपनी आंखें गड़ाकर देखने लगा। "आपने अपने पति की हत्या की है," उसने लगभग फुसफुसाकर कहा, "अर्थात् आपने एक बार मारने की कोशिश की, लेकिन आप असफल रहीं और फिर बिना प्रयत्न के आप सफल हो गईं।"

वृद्धा मदाम द बेलगार्द ने अपनी आंखें बन्द कर लीं और ज़रा-सा खांस दीं। न्यूमैन को उनका यह प्रयास बात टालने का वीरतापूर्ण प्रयास लगा। "मां," पुत्र ने कहा, "क्या आपको इनकी यह बात इतनी दिलचस्प लग रही है?"

"बाकी का हिस्सा और भी दिलचस्प है," न्यूमैन बोला, "अच्छा होगा आप वह सुन लें।"

मदाम द बेलगार्द ने आंखें खोल लीं । उनकी आंखों से निकलनेवाली चिन-गारियां लुप्त हो गई थीं ; पुतलियां पथरा गई थीं । लेकिन वे फिर भी मुस्करा पड़ीं और उन्होंने न्यूमैन के सामने गज़ब का अभिनय किया । न्यूमैन के शब्द दोहराते हुए बोलीं, "दिलचस्प ! क्या मैंने किसी और की भी हत्या की है ?"

"आपकी पुत्री की हत्या को मैं शामिल नहीं करता," न्यूमैन ने कहा, "हालांकि चाहूं तो उसे भी आपके कृत्यों में जोड़ सकता हूं । आपके पति को मालूम था कि आप क्या करने जा रही हैं । मेरे पास सुबूत है, ऐसा सुबूत जिसके होने की आपने कभी कल्पना भी न की होगी ।" और फिर वह पुत्र की ओर मुड़ गया । पुत्र का चेहरा सफेद-फक्क हो गया था—चित्र के अलावा अन्यत्र कहीं इतना सफेद मुंह न्यूमैन ने पहले कभी नहीं देखा था । "एक कागज़ है. जिसे आपके पति ने अपने हाथ से लिखा है और उसपर उनके दस्तखत हैं : हेनरी अरबेन द बेलगार्द । यह पत्र उन्होंने उस समय लिखा था, मदाम, जब आप उन्हें मरा समझकर अकेला छोड़ गई थी, और आप श्रीमान डाक्टर के यहां गए थे, उतनी तेज़ी से नहीं, जितनी तेज़ी से आपको जाना चाहिए था ।"

पुत्र ने वृद्धा मां की ओर देखा ; और वृद्धा ने मुंह फेर लिया । वे अपने चारों ओर देखने लगीं । "मुझे बैठ जाना चाहिए," उन्होंने बहुत धीरे से कहा, और उस बेंच की तरफ बढ गई, जहां पहले न्यूमैन बैठा था ।

"क्या आप मुझसे अकेले में बात नहीं कर सकते थे ?" न्यूमैन पर अजीब-सी निगाह डालते हुए पुत्र ने कहा ।

"जी हां, अवश्य ! अगर मुझे यह भरोसा होता कि मुझे आपकी मां से भी अकेले में बात करने का मौका मिल सकेगा ।" न्यूमैन ने जवाब दिया, "वर्तमान स्थिति में जो भी अवसर मेरे हाथ लगा, मैंने उसका फायदा उठाया । आप जिस तरह मिले, जिस अवस्था में मिले, मैंने बात की ।"

मदाम द बेलगार्द ने न्यूमैन के शब्दों में अपनी हिम्मत से काम लिया । वे वज्र जैसे कठोर स्वभाव और [illegible] के अपने स्वभाव के अनुकूल, अपने हाथ को पुत्र की बांह से छुड़ाकर आगे बढ़ गईं और बेंच पर जाकर बैठ गई । उनके चेहरे पर ऐसा भाव था, न्यूमैन को लगा, जैसे वे मुस्करा रही हों । लेकिन वह भी आगे बढ़ा और उनके सामने जाकर खड़ा हो गया । वह देख रहा था, उनका शानदार चेहरा क्षोभ के कारण किस तरह विवर्ण हो गया था । उसने यह भी

देखा कि वे अपनी लौह-इच्छाशक्ति द्वारा किस तरह क्रोध को नियंत्रित कर रही हैं और उनकी पथरायी आंखों में भय या आत्मसमर्पण जैसी कोई बात नहीं है। वे बुरी तरह चौंक गई थीं, लेकिन आतंकित नहीं हुई थीं। न्यूमैन को यह सोचकर बड़ा ही बुरा लग रहा था कि बुढ़िया फिर जीती जा रही है। उसे अपने ऊपर विश्वास नहीं हो रहा था कि किसी औरत को (चाहे वह अपराधिनी हो या नहीं) इतनी कठिन परिस्थिति में पाकर भी वह पिघलेगा नहीं। मदाम द बेलगार्द ने अपने पुत्र की ओर देखा, इसका मतलब था कि वह चुप रहे और स्थिति का सामना उनको ही करने दे। मारक्विस उनकी बगल में खड़े हो गए। उनके हाथ पीछे बंधे थे और वे न्यूमैन को देख रहे थे।

"आप किस कागज़ की बात कर रहे हैं ?" वृद्धा ने न्यूमैन से प्रश्न किया। उनकी आवाज़ में उतना ही गांभीर्य था, जितना कि अभ्यस्त और अनुभवी अभिनेत्री के सराहनीय कण्ठस्वर में होता है।

"वही, जो मैंने आपको बताया है," न्यूमैन ने कहा, "जब आप अपने पति को मृत समझकर छोड़ गईं और कुछ घण्टे उनके पास नहीं थीं, तब वह पत्र लिखा गया था। आप जानती ही हैं कि उनके पास वक्त था। आपको इतनी देर उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहिए था। पत्र में उन्होंने अपनी पत्नी के हत्या के इरादे को स्पष्ट रूप से लिख दिया है।"

"मैं वह पत्र देखना चाहूंगी," वृद्धा ने कहा।

"मैंने भी सोच लिया था कि शायद आप पत्र को देखना चाहें," न्यूमैन ने कहा, "मैंने एक प्रतिलिपि तैयार कर ली थी। और उसने अपनी जाकेट की जेब में रखी डायरी से उस पत्र की चौपरता प्रतिलिपि निकाल ली।

"इसे पुत्र को दे दीजिए," मदाम द बेलगार्द ने कहा। न्यूमैन ने वह कागज़ का पुरज़ा मारक्विस को पकड़ा दिया। मां ने पुत्र की ओर ज़रा-सी दृष्टि डालते हुए कहा, "देखो इसे !" मो० द बेलगार्द की आंखों में उत्सुकता का भाव था, जिसे उनके लिए छिपाना बेकार था। उन्होंने पुरज़ा अपने हलके दस्ताने से उंगलियों द्वारा पकड़ लिया और खोला। इसके पढ़े जाते वक्त सब मौन रहे। इसे पढ़ने में उन्होंने आवश्यकता से अधिक समय लगाया। उन्होंने पढ़ लिया फिर भी चुप खड़े रहे, पुरज़े को घूरते रहे। "मूल पत्र कहां है ?" वृद्धा मदाम बेलगार्द ने पूछा। उनका कण्ठस्वर सर्वथा अधीरता-रहित था।

"बड़ी सुरक्षित जगह। निस्सदेह, वह तो मैं आपको दिखला नहीं सकता था," न्यूमैन ने कहा। "आप शायद उसे अपने कब्ज़े में ले सकती थीं," उसने जान-बूझकर अपने स्वर में विचित्रता लाते हुए कहा, "लेकिन यह उसकी बिल्कुल सच्ची प्रतिलिपि है—निस्संदेह यह आपके पति की हस्तलिपि तो नहीं है। मैंने मूल पत्र किसी और को दिखाने के लिए रख छोड़ा है।"

मो० द बेलगार्द ने आखिर ऊपर की तरफ देखा। उनकी आंखों में अब भी बड़ी उत्सुकता थी। "यह पुरज़ा आप और किसे दिखलाएंगे ?"

"मेरा ख्याल है कि सबसे पहले मैं उसे डचेस को दिखलाऊंगा।" न्यूमैन ने कहा, "वही मोटी तगड़ी महिला जो उस दिन पार्टी में मिली थीं। उन्होंने मुझे मिलने के लिए बुलाया है। मेरा ख्याल है कि मुझे ज्यादा कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। यह छोटा-सा पुरज़ा ही उन्हें बोलने का काफी मसाला दे सकेगा।"

"बेटे, इसे रख लो !" मदाम द बेलगार्द ने कहा।

"ज़रूर रख लीजिए," न्यूमैन ने कहा, "रख लीजिए और घर पहुंचने पर अपनी मां को इसे पढ़ा दीजिएगा।"

"और डचेस को दिखाने के बाद ?" पुत्र ने पुरज़े को मोड़ा और जेब में रखने के बाद पूछा।

"इसके बाद एक-एक करके ड्यूकों के पास जाऊंगा," न्यूमैन ने कहा, "इसके बाद काउण्टों और बैरनों के पास।—एक-एक करके उन सब लोगों के पास जिनसे उस दिन पार्टी में आपने मुझे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में क्रूरतापूर्वक परिचित कराया था, जिसका अपनी बहन से विवाह न करके पूर्ण अपमान करने का इरादा आपने पहले से ही कर रखा था। मैंने पूरी सूची बना ली है।"

एक क्षण के लिए न तो वृद्धा मदाम द बेलगार्द बोलीं और न उनके पुत्र के मुंह से कोई शब्द निकला। वृद्धा बैठी-बैठी ज़मीन की ओर ताकती रहीं। मो० द बेलगार्द की पथरायी पुतलियां अपनी वृद्धा मां के चेहरे पर टिकी थीं। इसके बाद वृद्धा ने सिर उठाकर न्यूमैन की ओर देखा और पूछा, "बस, आपको क्या इतना ही कहना है ?"

"नहीं, कुछ और भी कहना है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आशा है, आप समझ गई होंगी कि मैं क्या करने जा रहा हूं। यह मेरा बदला है, समझ

गई आप ?—आपने सारी दुनिया के सामने एक समारोह का आयोजन करके यह प्रदर्शन किया कि मैं आपका दामाद बनने योग्य नहीं हूं। मैं दुनिया को दिखलाऊंगा कि मैं कितना ही खराब क्यों न होऊं, आपका यह मुंह नहीं है कि मुझे खराब कह सकें, अयोग्य बता सकें।"

वृद्धा मदाम द बेलगार्द चुप हो गई। फिर मौन भंग करके बोलीं, इस समय भी उनमें गज़ब का आत्मसंयम था। "मैं आपसे यह पूछने की आवश्यकता नहीं समझती कि आपको इस काम में किसने मदद की है। मिसेज ब्रैड ने मुझे बताया है कि आपने उसे अपने यहां नौकर रख लिया है।"

"इस पाशविकता का आरोप मिसेज़ ब्रैड पर मत लगाइए।" न्यूमैन ने कहा, "वे इतने वर्षों तक आपका गोपनीय रहस्य छिपाए रहीं। उन्होंने आपको बहुत लम्बा समय दिया। मिसेज़ ब्रैड की आंखों के सामने ही आपके पति ने वह पत्र लिखा था। मरते वक्त पत्र देकर आपके पति ने कहा था कि वे इसे सबको दिखलाएं। लेकिन वे दयालु हृदय की थीं, इसलिए उन्होंने पत्र का उपयोग नहीं किया।"

एक क्षण के लिए वृद्धा हिचकिचाईं, फिर बोलीं, "वह मेरे पति की रखैल थी," उन्होंने आहिस्ता से कहा। अपने बचाव के लिए सिर्फ इतनी-सी बात वृद्धा के मुह से निकली।

"मुझे आपकी बात पर संदेह है।" न्यूमैन ने कहा।

वृद्धा मदाम द बेलगार्द बेंच पर से उठ खड़ी हुई। "मैंने आपकी राय सुनने की हामी नहीं भरी थी और अगर आपको और कुछ न कहना हो तो यह विलक्षण भेंट समाप्त की जाए।" और अपने पुत्र की ओर मुड़कर उनकी बांह का सहारा वृद्धा ने ले लिया। "मेरे बेटे," वृद्धा ने कहा, "तुम भी तो कुछ कहो।"

मो० द बेलगार्द ने अपनी मां को देखा, फिर अपने माथे पर हाथ फेरा और फिर बड़े मुलायम स्वर में पूछा, "मैं क्या कहूं ?"

"केवल एक ही बात कहनी है," वृद्धा ने कहा, "कि इसके लिए हमारे घूमने में बाधा नहीं पड़नी चाहिए थी।"

पुत्र ने सोचा कि वे कुछ और बढ़िया बात कह सकते हैं। "यह पत्र जाली है," उन्होंने न्यूमैन से कहा।

न्यूमैन ने अपना सिर हिला दिया और शान्त और गंभीर मुस्कराहट उसके

होंठों पर दौड़ गई। "मदाम द बेलगार्द," न्यूमैन बोला, "आपकी मां का उत्तर आपसे बेहतर रहा है। जब से मैंने आप दोनों का परिचय प्राप्त किया है, तब से हमेशा आपकी मां का अभिनय आपसे सदैव अच्छा रहा है। मदाम, आप बड़ी दिलेर औरत हैं," वह कह रहा था, "यह दुःख की बात है कि आपने मुझे अपना शत्रु बना लिया। मैं आपका ज़बर्दस्त प्रशंसक होता।"

"मेरे बेटे !" मदाम द बेलगार्द ने अपने पुत्र से कहा, जैसे उन्होंने न्यूमैन की बात ही न सुनी हो, "मुझे तुरन्त गाड़ी पर वापस ले चलो।"

न्यूमैन पीछे हट गया और जाने के लिए रास्ता छोड़ दिया। वह कुछ देर उन्हें देखता रहा। मदाम अरबेन अगले मोड़ से अपनी छोटी लड़की को लिए आगे आई और साथ हो लीं। वृद्धा रुकीं और उन्होंने अपनी नातिन को चूम लिया। 'वाकई, बड़ी दिलेर औरत हैं।' न्यूमैन ने मन में कहा और वह कुछ निराश-सा, बुझा-बुझा घर पैदल वापस लौट आया। बुढ़िया अभी भी अनभि-व्यक्त ढग से विरोध कर रही थी। लेकिन विचार के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचा कि जो कुछ उसने देखा वह सुरक्षा के भाव का परिचायक नहीं था, और खैर, उससे वृद्धा की निर्दोषिता तो प्रकट होती ही नहीं थी। बुढ़िया का व्यवहार ऐसा ही था, जैसे कोई रंगे हाथों पकड़े जाने पर भी झूठी शान से अकड़ा खड़ा रहे। 'उसे पत्र पढ़ने दो, तब तक प्रतीक्षा करो।' उसने मन ही मन कहा। उसने यह भी निष्कर्ष निकाला कि जल्दी ही उसके पास कोई न कोई आएगा।

कोई आया, और उसने जो समय निश्चित कर रखा था, उसके पहले ही आया। दूसरे दिन पूर्व मध्याह्न में, जब वह नाश्ता लगाने के लिए कहनेवाला था, उसके पास मो० द बेलगार्द का कार्ड पेश किया गया। न्यूमैन ने कहा, "बुढ़िया ने पत्र पढ़ लिया है। रात बड़ी चिन्ता में कटी है।" न्यूमैन ने बेलगार्द को तुरन्त अन्दर बुलवा लिया। मो० द बेलगार्द कमरे में इस तरह प्रविष्ट हुए, जैसे वे असीम अधिकारप्राप्त राजदूत हों और किसी बर्बर जाति के प्रतिनिधि से मिलने आए हों। उनके चेहरे से लगता था कि कोई बड़ी दुर्घटना हो गई है, जिससे वे बहुत बुरी तरह क्षुब्ध हैं। जो हो, राजदूत महाशय की रात बुरी बीती थी। उनकी आंखों को कठोर रोष तथा गोरे मुंह पर लक्षित होनेवाले धब्बे बढ़िया साफ कपड़ों की पृष्ठभूमि में और भी ज़्यादा प्रकट हो रहे थे। मो० द बेलगार्द एक क्षण न्यूमैन के सामने खड़े रहे, वे कुछ हांफ-से रहे थे। न्यूमैन ने उंगली से कुर्सी

की ओर संकेत किया, लेकिन उन्होंने उंगली के इशारे से ही बड़ी अशिष्टता से बैठने से इंकार कर दिया ।

"जो कुछ मैं कहने आया हूं, वह जल्दी ही कह डालूंगा। ज़्यादा अच्छा होगा कि उसे बिना किसी औपचारिकता के ही कह दिया जाए ।"

"आप कम से कम और ज़्यादा से ज़्यादा जितनी भी बात कहना चाहें, मैं सुनने को तैयार हूं," न्यूमैन ने कहा ।

मारक्विस ने कमरे में चारों तरफ जल्दी से नज़र डाली । फिर बोले, "आप उस पुरज़े को किस शर्त पर हमें वापस दे सकते हैं ?"

"किसी भी शर्त पर नहीं ।" और जब न्यूमैन ने एक तरफ सिर करके और हाथ पीछे रखकर यह कहा तो न्यूमैन और मारक्विस की चिन्तित नज़रें मिलीं । न्यूमैन ने नज़रें मिलते ही उनकी थाह लेने का प्रयत्नकिया । इसके बाद न्यूमैन ने कहा, "इसके लिए वाकई, आपको बैठने की ज़रूरत नहीं है ।"

मो० द बेलगार्द एक क्षण सोचते रहे । ऐसा लगा जैसे न्यूमैन की अस्वीकृति उन्होंने नहीं सुनी है । "मेरी मां और मैंने कल शाम को आपकी पूरी कथा पर विचार किया," उन्होंने कहा, "आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि......" वे कुछ रुक गए और फिरबोले, "कि आपने जो पुरज़ा दिखलाया है, वह सच्चा है ।"

"आप भूल रहे हैं कि मैं अब ऐसी आश्चर्यपूर्ण बातें सुनने का अभ्यस्त हो गया हूं ।" न्यूमैन ने हंसते हुए ज़ोर से कहा ।

"अपने पिता की जो कुछ थोड़ी-बहुत इज़्ज़त हमारे मन में है," मारक्विस कह रहे थे, "उससे बाध्य होकर हमने सोचा है कि ऐसे पुरज़े के लेखक के रूप में दुनिया उन्हें न जाने, जिसमें उन्होंने अपनी पत्नी की प्रतिष्ठा पर इतना भयानक हमला किया है । पत्नी की गलती इतनी ही थी कि वह हर तरह का अपमान सहती गई ।"

"ओह, अब मैं समझा ।" न्यूमैन ने कहा, "तो आप अपने पिता की वजह से आए हैं ।" और वह अपने होंठ बन्द किए बिना आवाज़ के हंसने लगा । ऐसी हंसी न्यूमैन तभी हंसता था, जब उसे कोई बात बड़ी मनोरंजक लगती थी ।

लेकिन मो० द बेलगार्द की गंभीरता बनी रही । "मेरे पिता के कुछ ऐसे मित्र हैं, जिन्हें इस बात का पता चलने पर सचमुच बड़ा दुःख होगा । हम तो

यही कहेंगे कि ज्वर के कारण उनके मस्तिष्क का संतुलन ठीक नहीं था। बेशक यह कथन डाक्टरी प्रमाण पर आधारित होगा। ज़्यादा से ज़्यादा यही लगेगा कि वे बीमारी मे अपनी सारी सुध-बुध खो बैठे थे। पागल हो गए थे। बिलकुल पागल।"

"डाक्टरी प्रमाण पेश करने की बात मत करिए। डाक्टरों को बीच में मत लाइए, तो उनका सवाल ही नहीं उठेगा। मैं आपको यह बताने में कोई हानि नहीं समझता कि मैने अभी उन्हें कुछ नहीं लिखा है," न्यूमैन ने कहा।

न्यूमैन ने कल्पना की कि मो० द बेलगार्द के विवर्ण मुख पर इस खबर से कुछ ऐसा भाव आया, जिसका अर्थ था कि वह सूचना ठीक ही मिली। लेकिन यह बात बिलकुल कल्पना भी होनी संभव थी, क्योंकि मारक्विस शानदार ढंग से दलीलों पर दलीलें दिए जा रहे थे। "उदाहरण के लिए, मदाम द आत्रवील को," मारक्विस ने कहा, "जिनकी चर्चा कल आप कर रहे थे, यह खबर सुनकर बड़ा आघात लगेगा।"

"ओह, आप जानते ही हैं, मैं यह आघात पहुंचाने के लिए बिलकुल तैयार बैठा हूं। यह तो मेरे खेल की योजना का हिस्सा है। मैं और भी बहुत-से लोगों को आघात पहुचाऊगा।"

मो० द बेलगार्द अपने एक दस्ताने की सीवन देखने लगे। फिर बिना नजर उठाए बोले, "हम आपको धन देने की तो बात ही नहीं कर सकते," उन्होंने कहा, "यह प्रस्ताव तो हमारे ख्याल से बिलकुल बेकार होगा।"

न्यूमैन घूम गया और कमरे में दो-एक बार इधर-उधर चक्कर लगाने के बाद बोला, "आप मुझे क्या देने का प्रस्ताव कर सकते हैं ? मैं तो सोच-विचार करने के बाद यही समझा हूं कि सारी उदारता मुझे ही दिखलानी पड़ेगी।"

मारक्विस ने अपना हाथ पार्श्व में डाल लिया और सिर कुछ और ऊंचा उठा लिया। "हम आपको एक अवसर दे रहे हैं—एक ऐसा अवसर जिसे किसी भी सज्जन व्यक्ति को प्रशंसा की दृष्टि से देखना चाहिए। हम आपको ऐसा अवसर दे रहे हैं, जिससे आप एक ऐसे व्यक्ति की स्मृति को कलुषित न करें, जिसमें अपने दुर्गुण चाहे जो हों, उसने व्यक्तिगत रूप से आपको कभी कोई नुकसान नहीं पहुचाया।"

"मैं इसके जवाब में दो बातें कहूंगा," न्यूमैन ने कहा, "जहां तक अवसर का

सवाल है, आप मुझे सज्जन मत समझिए। यही आपका सबसे बड़ा तर्क है। वह नियम व्यर्थ है जो दोनों पर लागू नहीं हो सकता। और दूसरी बात, संक्षेप में, यह है कि आप निरर्थक बकवास कर रहे हैं।"

न्यूमैन ने अपनी कटुता के होते हुए भी यह निश्चय कर रखा था कि वह कोई अशिष्ट बात न कहेगा। यह बात कहते ही उसे लगा कि उसके मुह से अशिष्ट बात निकल गई है, जिसका उसे दुःख हुआ। उसे लगा कि उसके शब्दों में तीखापन था। लेकिन उसने तुरन्त ही देखा कि मारक्विस ने उसकी बात आशा से अधिक शान्ति से सुन ली थी। मो० द बेलगार्द राजदूतों की तरह अपने सामने वाले व्यक्ति की अप्रिय बातों की उपेक्षा करने की नीति अपनाए थे। उन्होंने सामने दीवार के सुनहले मुलम्मे को ज़रा देर देखने के बाद न्यूमैन पर अपनी दृष्टि डाली। उनका मतलब था कि इस तरह कमरे की दीवारों को सजाने का ढंग बड़ा भोंड़ा है। इसके बाद कहा, "यह तो आप जानते ही हैं, जहां तक आपके बारे में विचार करने का सम्बन्ध है, हम फैसला दे चुके हैं। आप हमें स्वीकार नही हैं।"

"कैसे, मैं कैसे स्वीकार नहीं हू ?"

"ऐसे कि आप स्वयं अपने-आपको गिरा रहे हैं। लेकिन मेरा ख्याल है कि यह भी आपके कार्यक्रम में शामिल है। आप हमारे ऊपर कीचड़ उछालना चाहते हैं, आपका ख्याल है कि उसका कुछ न कुछ अंश हमारे ऊपर पड़ेगा ही। हमारा ख्याल है कि हम सुरक्षित है। हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकता," मारक्विस ने रुचि-पूर्वक अपनी बात खूब आहिस्ते-आहिस्ते समझाकर कही, "ठीक है, आप उस अवसर का लाभ उठाइए। हम हर हालत में यह सिद्ध कर देगे कि आपके हाथ कितने गन्दे हैं।"

"आपने अच्छी तुलना की है, कम से कम आधी," न्यूमैन ने कहा, "मैं आप-पर कीचड़ उछालने के अवसर का लाभ उठाऊंगा, लेकिन जहां तक मेरे हाथों का सवाल है, वे एकदम स्वच्छ हैं, मैंने सब काम अपने हाथ बचाकर किया है।"

मो० द बेलगार्द ने अपने हैट के अन्दर देखा। "हमारे सारे मित्र हमारे साथ हैं," उन्होंने कहा, "वे भी इस परिस्थिति में ठीक वही करते, जो हमने किया है।"

"इस बात का विश्वास मै तभी करूंगा, जब उन्हें अपने कानों से यह कहते सुन लूंगा। तब तक मैं मानव-स्वभाव को अच्छा ही मानता रहूंगा।"

मारक्विस ने अपने हैट के अन्दर फिर देखा। "मदाम द सान्त्रे को अपने पिता से बड़ा स्नेह था। अगर उन्हें पता चला कि आपके पास यह पुरजा है और आप उसका उनके परिवार की बदनामी करने में प्रयोग करना चाहते हैं, तो वे उसे आपसे मांग लेंगी और उसे बिना पढ़े ही नष्ट कर देंगी।"

"बहुत संभव है," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "लेकिन उनको कुछ पता नहीं चलेगा। मैं कल कन्वेंट गया था, और मुझे पता है कि वे क्या कर रही हैं। भगवान ही रक्षा करें। आप स्वयं ही कल्पना कर सकते हैं कि वहां के अनुभव के बाद क्या मैं क्षमाशील हो सकता हूं!"

ऐसा लगा कि मो० द बेलगार्द के सारे तर्क समाप्त हो गए हैं। लेकिन वे अपनी जगह कठोर बने खड़े थे, वे समझते थे कि उनका वहां खड़ा रहना स्वयं किसी तर्क से कम नहीं है। न्यूमैन उन्हें देखता रहा, और मुख्य विषय पर बिना रत्ती-भर भी समर्पण किए, उसने सोचा कि उनके बाइज्जत विदा होने में कुछ सहायता करे। हालांकि यह बेतुकी बात थी, लेकिन उसके भले स्वभाव का प्रमाण थी।

"आपका यहां आना बेकार रहा," उसने कहा, "आप देख रहे हैं। आपने जो प्रस्ताव किया, उसमें कुछ भी नहीं था।"

"तो आप ही कुछ प्रस्ताव कीजिए।" मारक्विस ने कहा।

"आप मदाम द सान्त्रे को उसी मनोवस्था में मुझे वापस दे दें, जिसमें आपने उनको मुझसे छीना था।"

मो० द बेलगार्द ने अपना सिर तान लिया। उनके पीले चेहरे पर हलकी लाल आभा आ गई। "कभी नहीं।" उन्होंने कहा।

"आप यह कर ही नहीं सकते।"

"अगर हम कर सकते, तो भी न करते। जिस वजह से हमने विवाह की निन्दा की थी, वे कारण ज्यों के त्यों बने हैं। उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।"

"निन्दा की थी, यह भी अच्छी रही।" न्यूमैन ने चीखकर कहा, "अगर आपको अपने कृत्य पर पश्चाताप नहीं था और आप स्वयं को लज्जित नहीं अनुभव कर रहे थे, तो आपका यहां बात करने आना ही फिजूल था। बाकी बातों की तो मैं कल्पना भी कर सकता था।"

मारक्विस धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर बढ़ गए। न्यूमैन ने पीछे से जाकर दरवाज़ा खोल दिया। मो० द बेलगार्द ने कहा, "आप जो कुछ करने जा रहे हैं, वह स्वभावतः हमें बड़ा अप्रिय लगेगा, यह तो ज़ाहिर है, लेकिन बस इससे अधिक कुछ नहीं।"

"मेरे ख्याल से इतना ही काफी होगा।" न्यूमैन ने उत्तर दिया।

मो० द बेलगार्द एक क्षण फर्श की तरफ देखते हुए और खड़े रहे, जैसे दिमाग की पूरी ताकत लगाकर सोच रहे हों कि पिता की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए वे और क्या कर सकते हैं? इसके बाद ठण्डी सांस छोड़ते हुए उन्होंने ऐसा भाव प्रकट किया, जैसे उन्होंने स्वर्गीय पिता को अपने किए का फल भुगतने के लिए खेदपूर्वक छोड़ दिया हो। उन्होंने ज़रा से, बिलकुल अदृश्य ढंग से अपनी निस्सहायता प्रकट करने के लिए कंधे उचकाए, अपना साफ छाता बाहर खड़े नौकर के हाथ से लिया और भलेमानसों की तरह बाहर निकल गए। न्यूमैन उनके जाने की आवाज़ सुनता रहा और जब तक बाहर का दरवाज़ा बन्द होने की आहट न सुन ली, तब तक अपनी जगह पर ही खड़ा रहा। इसके बाद मन ही मन बुदबुदाया, "अब तो मुझे सन्तुष्ट होना शुरू कर देना चाहिए।"

पच्चीस

न्यूमैन विदूषिका-सी डचेस के घर गया, वे घर मिल भी गईं। उस समय एक वृद्ध सज्जन डचेस से विदा ले रहे थे। उनकी नाक बड़ी थी और हाथ में सोने की मूठ का बेंत था। बाहर जाते हुए उन्होंने न्यूमैन को लगातार कई बार अभिवादन किया। न्यूमैन को याद आया कि यह भी कोई ड्यूक हैं, जिनसे मदाम द बेलगार्द की पार्टी में उसका परिचय कराया गया था। डचेस अपनी जिस बड़ी हत्थेदार कुर्सी पर बैठी थी, उससे हिली नहीं। उनके एक तरफ बहुत बड़ा गुलदान था और दूसरी ओर गुलाबी जिल्द के बहुत-से उपन्यास रखे थे। उनकी गोद में एक बड़ी-सी टेपेस्ट्री का टुकड़ा था, जिसे वे काढ़ रही थीं। इससे उनके सामने का शानदार हिस्सा दिखलाई पड़ रहा था। वह बड़ी शान से बैठी थीं। लेकिन उनके हावभाव या

बात की आशंका नहीं थी कि न्यूमैन ऐसा प्रसग छेड़ बैठेगा, जिसमें वे नहीं पड़ना चाहतीं। उसने फिर मन ही मन कहा, 'सच, यह अपनी भूमिका बड़ी चतुराई से अदा कर रही हैं।' उसने कहा, 'ये सब बड़ी बहादुरी से एक-दूसरे का साथ दे रहे हैं, और कोई इनका विश्वास करे या न करे, ये अवश्य एक-दूसरे पर भरोसा कर सकते हैं।'

इस स्थल पर, न्यूमैन डचेस के शिष्ट स्वभाव की सराहना में लग गया। उसने महसूस किया कि अगर उसका विवाह हो रहा होता तो भी वे उस तथ्य से रत्ती-भर भी उनकी शिष्टता और सभ्यता का व्यवहार अधिक न होता, लेकिन उसने यह भी अनुभव किया कि सगाई टूट जाने से उनके सौजन्य-प्रदर्शन में कोई वृद्धि भी नहीं हुई है। डचेस सोच रही होंगी, यह आया है, भगवान जाने क्यों आया है, खास तौर से उस घटना के बाद, जो हो चुकी है, इसलिए आधे घण्टे तक वे अपना आकर्षक व्यक्तित्व बनाए रखेंगी। लेकिन उसके बाद वे कभी नहीं मिलेंगी। न्यूमैन को अपनी कथा कहने का कोई अवसर ही नही मिला। उसने निष्पक्षता से पूरी स्थिति पर विचार किया, हालांकि उससे इस तरह के चिन्तन की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। हमेशा की तरह उसने अपने पैर आगे फैला लिए और बीच-बीच में खुश होकर निश्शब्द हंसा भी। इसके बाद डचेस उसे एक चुटकुला सुनाने लगीं। वे बता रही थीं कि उनकी मां ने किस तरह नेपोलियन महान को एक बार डांटा था। तभी न्यूमैन को ख्याल आया कि फ्रेंच इतिहास का उसके सम्बन्ध में जो अध्याय है, वह शायद इसलिए छोड़े दे रही हैं कि न्यूमैन की भावनाओं को ठेस न लगे। संभवत: डचेस की नीति नहीं, बल्कि उसकी कोमल भावनाओं के प्रति आदर का भाव था। वह स्वयं कुछ कहने को हुआ, जिससे वह उनको ज़्यादा अच्छा अवसर प्रदान कर सके, तभी नौकर ने एक और मेहमान के आने की सूचना दी। यह नाम एक इटालियन राजकुमार का था। डचेस ने नाम सुनते ही ज़रा से कंधे उचकाए—जिनका देख पाना बड़ा कठिन था और जल्दी से न्यूमैन से बोलीं, "आपसे विनय है कि आप बैठे रहिए, मैं चाहती हूं कि यह सज्जन जल्दी ही विदा हो जाएं।" न्यूमैन ने मन ही मन कहा लगता है, आखिर मदाम द आग्रवील उसके साथ बेलगार्द के विषय में कुछ बातचीत करना ही चाहती हैं।

राजकुमार का कद ठिंगना, शरीर हृष्ट-पुष्ट और सिर अनुपात से अधिक बड़ा था। रंग कुछ सांवला और भौंहें घनी थीं। आंखों की पुतलियां ज़्यादातर स्थिर रहती

थीं और उनसे विद्रोह की भावना व्यक्त होती थी। वे आंखों से यह कहते लगते थे कि मैं बहुत बड़ा व्यक्ति हूं। किसीको विश्वास न हो, तो वह जांच के देख ले। डचेस ने न्यूमैन से जो कुछ कहा था, उससे न्यूमैन को लगा कि डचेस इस व्यक्ति को 'बोर' समझती हैं, लेकिन जिस धाराप्रवाह ढंग से उन्होंने उनसे बातें कीं, उससे उसे ऐसा नहीं लगा। उन्होंने नई-नई कहानियां और चुटकुले शुरू कर दिए। इनसे इटालियन बौद्धिक प्रतिभा प्रकट होती थी, सोरेन्तो के अंजीरों का स्वाद पता लगता था, इटालियन राजवंश के भविष्य का ज्ञान होता था (पाशविक सार्डिनियन शासन के प्रति घृणा व्यक्त होती थी और पूरे प्रायद्वीप पर पोप की प्रभुता की कामना प्रकट होती थी)। इसके बाद उन्होंने राजकुमारी 'क' के प्रेमकाण्ड का इतिहास बताया। इसमें इटालियन राजकुमार ने कुछ संशोधन किए। उन्होंने यह प्रकट करने का प्रयास किया कि इस प्रेमकथा के बारे में कुछ उन्हें भी पता है। जब राजकुमार ने यह फैसला कर लिया कि न्यूमैन न तो उसके सिर के आकार और न उसकी किसी अन्य बात पर हंसने को प्रस्तुत है, तो उन्होंने एक ऐसे विषय पर वार्तालाप शुरू कर दिया, जिस विषय पर बातचीत के लिए राजकुमार को 'बोर' घोषित कर देने के बाद, डचेस तैयार न थीं। राजकुमारी 'क' की भावनाओं के ऊहापोह की आम चर्चा छिड़ गई, डचेस भी पांच सप्ताह फ्लोरेंस रह चुकी थीं और उन्होंने इस सम्बन्ध में काफी मसाला इकट्ठा किया था। इसके बाद इटालियन 'हृदय' की बात होने लगी। डचेस ने विरोधी दृष्टिकोण अपनाया—उनका मत था कि इटालियन 'हृदय' जैसी पत्थर अन्य कोई चीज़ उन्हें नहीं मिली—उसपर भावनाओं का कोई असर नहीं होता, और अन्त में यह एलान कर दिया कि सब इटालियन बर्फ के टुकड़े हैं। राजकुमार ने इसका खण्डन किया और उनका डचेस के यहां आगमन अच्छा-खासा आकर्षण बन गया। स्वाभाविक था कि न्यूमैन इस वार्तालाप से अलग ही रहता, उसने अपना सिर एक तरफ झुका लिया और दोनों के संवाद सुनने लगा। डचेस कभी-कभी बड़ी मधुर मुस्कराहट उसकी ओर देखकर बिखेर देतीं, जैसे कह रही हों कि पते की बात कहना न्यूमैन के ही बस की बात है। लेकिन न्यूमैन ने कुछ भी नहीं कहा। आखिर वह वहां बैठा-बैठा इधर-उधर की बातें सोचने लगा। यकायक उसके दिमाग में एक अजीब बात आई—उसे लगा कि वह कैसी बेवकूफी का काम करने आया है? आखिर उसे डचेस से क्या कहना है? बेलगार्द को विश्वासघाती कहने और उस बुढ़िया को हत्यारिनी बताने से आखिर उसे क्या लाभ होगा? ऐसा लगा कि

उसने नैतिक कलाबाज़ी खाई थी और उसे अब अपनी कार्रवाई की योजना का हर परिणाम उलटा दिखलाई पड़ रहा था। उसे लगा कि उसकी इच्छा शक्ति दृढ़ हो गई है और वह गंभीर हो गया है। उसने सोचा डचेस आखिर उसकी क्या मदद कर सकती हैं और अगर वे बेलगार्दो को बुरा भी समझने लगें, तो उसे क्या सुख मिल जाएगा ? बेलगार्दों के बारे में डचेस की राय का उसके लिए क्या महत्त्व है ? बेल-गार्द परिवार के लोग जो कुछ डचेस के बारे में सोचते हैं, क्या उस राय से डचेस की राय का तनिक भी ज्यादा महत्त्व है—यह ठण्डे दिल की, मोटी, मुलायम मांस वाली कृत्रिम औरत क्या उसकी कुछ भी मदद कर सकती है ? पिछले बीस मिनटों में कृत्रिम सभ्यता और शिष्टापूर्ण संभाषण की जो नकली दीवार उसने खड़ी की है, उससे वह यह समझने लगी हैं कि न्यूमैन अब बाहर निकलने का कोई रास्ता न पा सकेगा। क्या अब उसकी यह हालत हो गई है, क्या वह अब इतना गिर गया है कि इन अहम्मन्य लोगों से दया की भिक्षा मांगता फिरे, उन लोगों से सहानुभूति की याचना करे, जो सहानुभूति प्रकट ही नहीं कर सकते ? उसने अपने दोनों हाथ घुटनों पर रख लिए और कुछ देर अपने हैट को घूरता रहा। वह जब ऐसा कर रहा था कि तभी उसके कान में अजीब घण्टियों के बजने जैसी आवाज़ें आने लगीं। वह करीब-करीब गधा बन गया था। अब डचेस उसकी बात सुनें या न सुनें—वह उन्हें कुछ नहीं बताएगा। क्या वह बेलगार्द—परिवार की बदनामी करने के इरादे आधे घण्टे और बैठा रहे ? भाड़ में जाएं बेलगार्द। वह अकस्मात् उठ खड़ा हुआ। और अपनी मेज़बान से हाथ बढ़ाने के लिए आगे चल पड़ा।

"आप और नहीं बैठेंगे ?" डचेस ने बड़े सौजन्य से पूछा।

"मुझे भय है कि अब मेरे पास समय नहीं है," उसने कहा।

वे एक क्षण के लिए हिचकिचाईं। फिर बोलीं, "मेरा खयाल था आप शायद कुछ कहना चाहते थे।"

न्यूमैन ने डचेस की ओर देखा, उसे कुछ चक्कर-सा आ रहा था, उसे लगा कि वह फिर कलाबाज़ी खा रहा है। लेकिन इटालियन राजकुमार ने उसकी सहायता की : "आह मदाम, आपसे कौन कुछ बात नहीं कहना चाहता ?" और राजकुमार ने ठण्डी सांस छोड़ी।

"मि० न्यूमैन को बेवकूफी की बातें कहनी मत सिखाइए।" डचेस ने कहा : "यह मि० न्यूमैन का गुण है कि वह बेवकूफी की बातें करना नहीं जानते।"

"जी हा, मैं बेवकूफी की बातें कहना नही जानता," न्यूमैन ने कहा, "और मैं कोई अप्रिय बात भी नही कहना चाहता।"

"मेरा पक्का विश्वास है कि आप बहुत समझदार है," डचेस ने कहा और मुस्करा दीं, इसके बाद उन्होंने ज़रा-सा सिर झुकाकर विदा के समय का अभिवादन किया। अभिवादन का उत्तर दे न्यूमैन वहां से चल पडा।

सड़क पर आ जाने के बाद वह कुछ देर फुटपाथ पर खड़ा रहा। वह सोच रहा था कि उसे पिस्तौल से गोली दागनी चाहिए थी या नहीं। और उसने फिर यही सोचा कि हर किसीसे बेलगार्दों के बारे में बातें करना उसे बड़ा ही अप्रिय लगेगा। अंतिम अप्रिय बात वह यही कर सकता कि बेलगार्दों के बारे में सोचना ही बन्द कर दे, उन्हें अपने दिमाग से बिलकुल निकाल दे और फिर उनके बारे में कभी न सोचे। अनिश्चय का भाव न्यूमैन में कभी नहीं था, और इस मामले में भी उसे निश्चय करने में ज़्यादा देर नहीं लगी। इसके बाद तीन दिन तक उसने इस बात का प्रयत्न किया कि वह बेलगार्दों के बारे में कुछ भी न सोचे। उसने मिसेज़ ट्रिस्टरैम के साथ रात का भोजन किया, लेकिन जब उसकी मेज़बान ने बेलगार्दों की कोई बात छेड़ी, तब उसने बड़ी रुखाई से उनकी कोई भी बात करने से मना कर दिया। टॉम ट्रिस्टरैम बहुत दिनों से सान्त्वना देने का अवसर खोज रहा था, उसे यह चिर-प्रतीक्षित अवसर अनायास मिल गया।

वह आगे झुक आया, उसने न्यूमैन की बांह पर अपना हाथ रख लिया, अपने होंठ बिचका लिए और सिर हिलाने लगा। फिर बोला, "सच तो यह है मेरे दोस्त कि आपको इस झमेले में पड़ना ही नहीं चाहिए था। मैं जानता हूं, इसमें आपका कोई दोष नहीं था—सारे उपद्रव की जड़ मेरी पत्नी है। अगर आप इनकी लानत-मलामत करें, तो भी मैं कुछ न बोलूंगा। आप जो भी इनसे कहेंगे, मैं अलग खड़ा सुनता रहूंगा। मैं आपको इनको डांटने की खुली छूट्टी देता हूं। आप जानते हैं, मैंने कभी एक कठोर शब्द भी अपनी पत्नी से नहीं कहा है, लेकिन मेरा ख्याल है कि उन्हें जोर से डांटे जाने की ज़रूरत नहीं है। आपने मेरी बात क्यों नहीं मानी? आप तो जानते ही थे कि मेरा इस बात में ज़रा भी विश्वास न था। मैं इसे ज़्यादा से ज़्यादा मीठा सपना समझता था। मैं डॉन जुआन या लोथेरियो जैसे वर्ग का पुरुष नहीं हूं, लेकिन मैं स्त्री-जाति की कठोरता के विषय में कुछ जानने का दावा कर सकता हूं। ये सबकी सब खराब हैं, इसलिए मैं इनको खराब होने के कारण

बुरा नहीं समझता। उदाहरण के लिए लिजी मुझे नहीं ठग सकी, मैं हमेशा उसे शक की निगाह से देखता रहा हूं। आप मेरी वर्तमान स्थिति के बारे में जो चाहें सोचें, लेकिन मैं तो अपने आंख-कान खोलकर इस जीवन में प्रविष्ट हुआ हूं। मान लीजिए, आपका विवाह मदाम द सान्त्रे से हो गया होता, तो आप समझ लीजिए कि आप मदाम द सान्त्रे को पाकर खुश न हुए होते, क्योंकि वह ठण्डी-कठोर लड़की थी। मेरी समझ में नहीं आता फिर आपको कैसे सुख-चैन मिलता—शान्ति मिलती। मारक्विस से बात करने से कोई लाभ न होता। वह इस तरह का आदमी नहीं है कि आप दोस्त की तरह साधारण ढग से उससे बात कर सकें। क्या वह कभी आपसे घर पर मिला—क्या वह कभी आपसे अकेले में मिला? क्या उसने शाम को अकेले में अपने साथ सिगार पीने का निमंत्रण दिया, क्या वह कभी आपके पास जब आप स्त्रियों के बीच रहे हों, तब आया हो और उसने कुछ लिया हो ? मेरा ख्याल है कि उससे आपको कभी प्रोत्साहन नहीं मिलता। और वह बुढ़िया—वह बुढिया तो बड़ी जल्लाद लगती है। यहां लोग एक शब्द का बडा प्रयोग करते हैं–'सहानुभूति' का। हर चीज़ 'सहानुभूतिपूर्ण' है या होनी चाहिए। इस बुढ़िया में उतनी ही सहानुभूति है, जितनी सरसों के बरतन में। वे सब बिलकुल ठण्डे दिल के लोग हैं। यह बात मैने उस पार्टी में भलीभाति अनुभव कर ली थी। मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं लन्दन टॉवर के शस्त्रागार में घूम रहा हूं। प्यारे भाई ! मुझे इस तरह की बात कहने के लिए असभ्य मत समझना, लेकिन सच बात यह थी कि उनकी निगाह आपकी जेब पर थी। उनको धन चाहिए था। मैं बता सकता हूं कि किस आदमी को कब डालरों की ज़रूरत है। लेकिन यकायक उनका ध्यान आपके धन पर से कैसे हट गया ; कुछ कह नहीं सकता ; मेरा ख्याल है कि उन्होंने शायद किसी और की गांठ बिना ज़्यादा मेहनत के काट ली; ऐसा लगता है। जो भी हो, इसके लिए हमें अपना दिमाग खपाने की ज़रूरत नहीं है। संभव है कि मदाम द सान्त्रे अपने वचन से पहले न मुकरी हों, उस बुढिया ने उन्हें शादी करने से इकार करने को मजबूर कर दिया हो। मेरा तो ख्याल है कि मदाम द सान्त्रे और उनकी मा दोनों की चोरो जैसी मिलीभगत है। क्यों ? अच्छा हुआ दोस्त। जान छूटी! उनका ख्याल कतई छोड़ दीजिए। अगर मैं इतने कठोर शब्दों में अपनी भावना व्यक्त कर रहा हूं, तो इसका एकमात्र कारण यह है कि मैं आपसे बड़ा स्नेह करता हूं, इस दृष्टि से मैं यह कह सकता हूं कि उस बुढ़िया

से दोस्ती बनाए रखना उतना ही कठिन है, जितना 'प्लेस द ला कान्कॉर्ड' में मीनार पर सबसे ऊपर चढ़ना ।"

इस पूरे व्याख्यान-भर न्यूमैन बैठा-बैठा बुझी आंखों से ट्रिस्टरैम को टुकुर-टुकुर ताकता रहा। उसने कभी ख्याल भी नहीं किया था कि टॉम ट्रिस्टरैम से मित्रता का जो समान आधार था, वह उसके इतना अयोग्य हो जाएगा। मिसेज़ ट्रिस्टरैम अपने पति को जलती निगाह से देख रही थीं। लेकिन उन्होंने न्यूमैन को अपेक्षाकृत कुछ मधुर मुस्कराहट से देखा। "आप कम से कम इस बात का तो ख्याल कीजिए ही," उन्होंने कहा, "कि मिस्टर ट्रिस्टरैम अपनी ज़रूरत से ज़्यादा ईर्ष्यालु पत्नी की अविवेकपूर्ण बातों की कितनी कठोरता से आलोचना करते हैं।"

टॉम ट्रिस्टरैम ने अगर बेलगार्द की बात न छेड़ी होती, तो भी न्यूमैन ने उसकी सहायता के बिना बेलगार्द परिवार के सम्बन्ध में सोचना शुरू कर दिया होता। वह उनके बारे में सोचना तभी बन्द कर सकता था, जब वह उस चोट को भूल जाता जो उसे लगी थी और जितने दिन बीते थे, उनमें यह घाव भरा नहीं था। मिसेज़ ट्रिस्टरैम उसे खुश करने का प्रयत्न करतीं, लेकिन यह व्यर्थ होता। वे कहतीं कि न्यूमैन को देखकर वे स्वयं बड़ी दुःखी हो जाती हैं।

"मैं क्या करूं ?" न्यूमैन ने कांपते हुए कण्ठ में पूछा। "मैं एक विधुर-सा हूं—ऐसा विधुर जो अपनी पत्नी की कब्र के बगल में जाकर भी खड़ा नहीं हो सकता—जिसे अपने हैट में काले कपड़े का टुकड़ा लगाने का भी अधिकार नहीं है," कुछ रुककर उसने कहा, "मैं महसूस करता हूं कि जैसे मेरी पत्नी की हत्या कर दी गई है और उसके हत्यारे अभी फरार हैं।"

मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। लेकिन अन्त में उन्होंने अपने होंठों पर जबर्दस्ती मुस्कराहट लाने की कोशिश की, लेकिन वे सफल नहीं हुईं। फिर भी उन्होंने कहा, "क्या आपका विश्वास है कि आप (विवाह बाद) बड़े प्रसन्न रहते ?"

न्यूमैन ने एक क्षण मिसेज़ ट्रिस्टरैम को देखा और फिर सिर हिलाते हुए कहा, "यह बड़ी क्षीण है, इससे काम नहीं चलेगा।"

"ठीक है," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने और अधिक बहादुरी दिखलाते हुए कहा, "मैं नहीं समझती कि आप खुश रह सकते थे।"

न्यूमैन हंस पड़ा। "तो यों कहिए न, कि बड़ा दुःखी रहता, लेकिन वह दुःख

ऐसा होता, जिसका मैं किसी भी सुख के बजाय वरण करना अधिक पसन्द करता।"

मिसेज़ ट्रिस्टरैम सोचने लगीं। "मुझे भी यह देखने की उत्सुकता थी, सच-मुच ही वह बड़ी अनोखी बात होती।"

"क्या आपने सिर्फ अपनी उत्सुकता के कारण मुझसे प्रेम करने और शादी करने के लिए कहा था?"

"कुछ उत्सुकता तो ज़रूर थी," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने और भी दुस्साहस दिख-लाते हुए कहा। न्यूमैन ने उसकी तरफ क्रुद्ध दृष्टि से देखा, जैसा स्वाभाविक था और फिर मुड़कर उसने अपना हैट उठा लिया। मिसेज़ ट्रिस्टरैम कुछ देर न्यूमैन को देखती रहीं और फिर बोलीं, "यह बात सुनने में बड़ी क्रूरतापूर्ण लगती है, लेकिन वैसे उतनी क्रूरतापूर्ण है नहीं। मेरे हर काम में कुछ न कुछ उत्सुकता का अंश रहता है। पहली बात, जो मैं जानने को उत्सुक थी, वह यह थी कि इस तरह का विवाह हो भी सकता है या नहीं, और दूसरे अगर यह विवाह हो जाए, तो उसका क्या परिणाम होगा।"

"तो आपको विश्वास न था कि यह शादी होगी।" न्यूमैन ने क्रुद्ध भाव से कहा।

"मैं यही समझती थी कि यह विवाह होगा और विवाह के बाद आप सुखी होंगे।" अगर मेरा यह ख्याल न होता तो मैं सचमुच बड़ी हृदयहीन होती। लेकिन, अपना हाथ न्यूमैन की बांह पर रखते हुए और गंभीरतापूर्वक मुस्कराते हुए मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने कहा, "किसी अच्छी कल्पनाशील लड़की के लिए कल्पना की यह सबसे ऊंची उड़ान थी!"

इसके बाद ही मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने सलाह दी कि न्यूमैन पेरिस से चला जाए और तीन महीने बाहर घूमे-फिरे। स्थान-परिवर्तन से उसे लाभ होगा और चूंकि वह इस वातावरण से दूर रहेगा, वही चीजें बार-बार नहीं दिखलाई पड़ेंगी, जो इस दुर्भाग्य के समय उसके आसपास थीं, इसलिए उसे अपना दुःख भूलने में कुछ सरलता होगी। "मैं सचमुच अनुभव करता हूं," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "कम से कम आपका साथ छोड़ने से मुझे कुछ लाभ ज़रूर होगा—और आपको छोड़ने के लिए मुझे बहुत कम प्रयास करना होगा। आप सनकी होती जा रही हैं, आप मुझे चोट पहुंचाती हैं, मुझे तकलीफ देती हैं।"

"बहुत अच्छा," मिसेज़ ट्रिस्टरैम ने चाहे तो अपने भले स्वभाव और चाहे

अपने सनकीपन में कहा, "लेकिन मैं आपसे फिर अवश्य मिलूंगी।"

न्यूमैन भी पेरिस से चल देना चाहता था। वही सुन्दर सड़कें, जिनपर वह अपने उल्लास के क्षणों में घूमा था, जो उसके हर्ष के सम्मान में जगमगाती लगती थीं, उन्हें भी, अब न्यूमैन को ऐसा लगता था कि उसकी हार का पता लग गया है और वे उसे अपमान की दृष्टि से देखती हैं। उसे कहीं जाना था, कहां, इससे ज़्यादा प्रयोजन न था। उसने यात्रा की तैयारी शुरू कर दी। एक दिन सवेरे बिना किसी कार्यक्रम के योंही वह ट्रेन में सवार होकर बूलों रवाना हो गया, जहां से उसे ब्रिटेन जाना था। ट्रेन में सवार होने के बाद उसने मन ही मन प्रश्न किया कि उसके बदले का क्या हुआ ? उसे उत्तर मिला अभी वह सवाल किसी सुरक्षित स्थान पर कुछ समय के लिए छिपाकर रख दिया गया है। वह वहां तब तक बना रहेगा, जब तक वह किसी कार्रवाई के लिए तैयार नहीं होता।

वह जब लन्दन पहुंचा, तो कथित 'सीज़न' चल रहा था। वह इस 'सीज़न' के मध्य में पहुंचा था। उसे लगा कि वह अपने मन के भारीपन को भुलाने के लिए अपने-आपको लंदन की रंगरेलियों में डुबा सकता है। वह सारे इंगलैंड में किसी भी व्यक्ति को नहीं जानता था, लेकिन लंदन की चहल-पहल ने उसे कुछ आकृष्ट किया। कोई भी बड़ी चीज़ को देखकर न्यूमैन खुश होता था। इंगलैंड की ज़बर्दस्त शक्ति और उद्योग-धंधों को देखकर उसे उत्साह हुआ और वह शिथिल चिन्तन में डूब गया। मौसम बहुत अच्छा था। वह लन्दन में पैदल निकल पड़ता और किसी भी दिशा में बड़ी दूर तक चला जाता। वह घण्टे-घण्टे-भर में केनसिंगटन उद्यानों में बैठा रहता और बगल की सड़क से लोगों, घोड़ों और गाड़ियों को जाते देखता रहता, अंग्रेज़ सुन्दरियों और युवकों को देखता, वर्दीधारी चपरासियों को देखता। वह ओपेरा गया; पेरिस से लन्दन का ओपेरा उसे ज़्यादा पसन्द आया; वह थियेटर गया और उसे यह महसूस करके प्रसन्नता हुई कि नाटकों के कथोपकथनों की सूक्ष्मतम बातों को वह समझ सकता है। वह अपने होटल के वेटर की सलाह पर कई बार ब्रिटेन के देहातों की सैर के लिए गया। घूमने-फिरने तथा ऐसे ही अन्य मामलों पर उसके होटल का वेटर न्यूमैन का गुप्त परामर्शदाता बन गया था। विण्डसर अरण्य में उसने हिरन देखे, रिचमण्ड पर्वत पर चढ़कर टेम्स नदी की छटा देखी, ग्रीनविच में उसने सफेद मछली, भूरी डबल रोटी और मक्खन खाया और केण्टरबरी के हरियाले मैदानों में घूमा। वह लन्दन टावर भी देखने

गया और मदाम तूसां की प्रदर्शनी देखी। एक दिन उसने सोचा कि वह शेफील्ड जाएगा, लेकिन फिर उसने यह विचार छोड़ दिया। वह शेफील्ड क्यों जाए? उसे लगा कि जिस कारण उसने चाकू-छुरी आदि बनाने का कारखाना खोलने की बात सोची थी, अब तो वह कारण ही नहीं रहा है। अब वह ऐसे किसी भी 'सफल उद्योग' को अन्दर जाकर नहीं देखना चाहता था और न वह चतुर से चतुर ओवरसियर से इस 'शानदार' उद्योग के ब्योरे पर बातचीत करने के लिए एक सेण्ट भी खर्च करना चाहता था।

एक दिन तीसरे पहर न्यूमैन को हाइड पार्क से गुजरना पड़ा। वह सड़क के फुटपाथ पर चलनेवाले लोगों की रेलपेल से धीरे-धीरे आगे बढ़ता जा रहा था। गाड़ियों का तांता भी लगा था। न्यूमैन उन अपरिचित, धुंधली शक्लों के बारे में सोच रहा था, जो कभी-कभी हवा खाने के लिए बड़ी शानदार गाड़ियों की खिड़कियों से झांक लेती थीं। उन्हें देखकर न्यूमैन को वे बातें याद हो आती थीं, जो उसने पूर्व और दक्षिण के देशों के बारे में पढ़ी थीं। पुस्तकों के अनुसार बड़ी-बड़ी मूर्तियों और प्रतिमाओं को कभी-कभी सोने के रथों में बैठाकर मंदिर से बाहर यात्रा के लिए जाया जाता था, जिससे लोग दर्शन कर सकें। उसने मलमल की पोशाक से उत्पन्न लहरियों के बीच से निकलते हुए बड़े-बड़े हैटों के नीचे गोरे-गोरे लाल सुर्ख चेहरों को देखा था, बड़े और घने ब्रिटिश पेड़ों के नीचे कुर्सी पर बैठे-बैठे उसने शान्त-गम्भीर नेत्रों वाली अंग्रेज युवतियों को देखा था, जो उसे फिर से याद दिलाती थीं कि मदाम द सान्त्रे के साथ उसके लिए इस दुनिया से सौंदर्य का आकर्षण समाप्त हो गया है। खंजन जैसे चचल नेत्रों वाली अन्य युवतियों की तो चर्चा ही करना व्यर्थ है, क्योंकि उनको देखकर न्यूमैन को लगता था कि वे सान्त्वना के बजाय उसपर ताना कस रही हैं। उसे चलते-चलते कुछ समय हो चुका था, तभी उसने ठीक अपने सामने ग्रीष्म की सुखद शीतल वायु-लहरों पर सवार चुने पेरिस के मुहावरों को अपने कानों में पड़ते सुना। ये वही मुहाविरे थे, जिन्हे अब न्यूमैन भुला-सा रहा था। जिस कण्ठ-स्वर में यह शब्द निकले थे, वह भी परिचित-सा लगा। जब उसने अपनी आखों पर कुछ जोर दिया, तो उसने देखा कि एक युवती की पीठ है। उसकी केशसज्जा, आम तौर पर जैसा फैशन था, उसके अनुरूप थी। यह युवती भी उसी दिशा मे आगे बढ़ रही थी, जिस दिशा में न्यूमैन जा रहा था। जाहिर था कि मदामाजेल नियोशे लन्दन में थीं

और वहां तेजी से उन्नति करने के ख्याल से आई थीं, दूसरी बार दृष्टि डालने पर न्यूमैन को पता लग गया कि उसने उन्नति करने का माध्यम पकड़ लिया है। एक सज्जन मदामाजेल नियोशे की बगल में चल रहे थे और बड़े ध्यान से उसकी बातें सुन रहे थे और वे उसकी बातों में ऐसे डूब गए थे कि अपना मुंह खोलना ही भूल गए थे। न्यूमैन इन सज्जन की आवाज़ तो सुन नहीं सका, लेकिन ऐसा लगा कि जो भी व्यक्ति साथ चल रहा है, वह बहुत अच्छे कपड़े पहने है। लोग मदामाजेल नियोशे की ओर आकृष्ट हो रहे थे। जो महिलाएं उसके समीप से गुज़रतीं, वे वापस मुड़कर पेरिस की वेशभूषा के पिछले हिस्से को भी देखतीं। मदामाजेल नियोशे की कमर से एक पतला दुपट्टा-सा बंधा था, जो झटका देने के कारण बार-बार न्यूमैन के पैरों से आकर लगता था। उसपर अपना पैर पड़ने से बचाने के लिए न्यूमैन को बार-बार बगल हो जाना पड़ता था। वह अकारण ही तेज़ी से बगल हो गया, हालांकि वह पूरी तरह कुमारी नोएमी को नहीं देख पाया था, फिर भी उनकी शक्ल की थोड़ी-सी भी झलक से ही वह अप्रसन्न हो उठा था। न्यूमैन को यह लड़की प्रकृति के चेहरे पर दुर्गन्धयुक्त काला धब्बा-सा लगती थी। वह उसकी शक्ल भी नहीं देखना चाहता था। तुरन्त ही उसे वेलेंतीन द बेलगार्द का ख्याल आया जिसका शव अभी भी कब्र में ताज़ा था—उसके तरुण जीवन का इस लड़की की चुलबुली शोखी ने अन्त कर दिया था। मदामाजेल नियोशे के कपड़ों में लगी खुशबू उसकी नाक में पहुंच रही थी, और इससे उसे क्रोध आ रहा था, उसने अपना मुंह मोड़ लिया और रास्ता बदल देने का प्रयत्न किया। लेकिन भीड़ इतनी थी कि न चाहते हुए भी कुछ देर न्यूमैन को मदामाजेल नियोशे के पीछे-पीछे चलना ही पड़ा। फलस्वरूप उसकी बातों की कुछ भनक न्यूमैन के कानों में भी पड़ गई।

"आह, मुझे पक्का भरोसा है, वह मेरी याद कर रहा होगा," उसने कहा, "उसे वहां छोड़कर मैंने वाकई बड़ी बेरहमी की। मुझे भय है आप, भी मुझे बड़ा हृदयहीन समझेंगे। वह हमारे साथ बड़े मज़े में आ सकता था। मेरा ख्याल है, उसकी तबियत भी ठीक नहीं है," उसने कहा, मुझे आज सवेरे ऐसा लगा कि वह खुश नहीं था।"

न्यूमैन सोचने लगा कि आखिर वह किसके बारे में बातें कर रही है। लेकिन तभी भीड़ कुछ छंट गई और न्यूमैन को निकल भागने का अवसर मिल गया।

न्यूमैन ने सोचा कि शायद वह ब्रिटिश शिष्टाचार की तारीफ कर रही है और अपने बाप को इन शब्दों में स्मरण कर रही है। क्या वह दुःखी वृद्ध अब भी इस लड़की के पीछे-पीछे बुरे मार्ग पर चल रहा है ? क्या वह अब भी प्रेम के मामलों में अपने अनुभवों द्वारा पुत्री को सलाह देता है, और क्या वह समुद्र पार करके यहां दुभाषिए का काम करने आया है ? न्यूमैन कुछ और आगे चला गया। उसके बाद वह पीछे लौटने लगा। लेकिन लौटने में उसने इस बात का ध्यान रखा कि मदामाजेल नियोशे फिर सामने न पड़ जाए। उसने एक पेड़ के नीचे कुर्सियां पड़ी देखीं, खाली कुर्सी ढूंढ़ने में उसे कुछ कठिनाई हुई। वह निराश होकर आगे बढ़ने ही वाला था कि उसने देखा, एक सज्जन जिस कुर्सी पर बैठे थे, उसे छोड़कर उठ गए है। न्यूमैन को बिना ओर-पास देखे उसपर बैठने का अवसर मिल गया। वह कुछ देर बिना इधर-उधर देखे या कुछ भी सुने बिना बैठा रहा। मदामाजेल नोएमी के छिछोरेपन की, जिस उछल-कूद की झलक उसने देखी थी और उससे उसके मन में जो वितृष्णा, क्षोभ और कड़वापन भर गया था, कुछ देर वह उसीके बारे में बैठा सोचता रहा। लेकिन कोई पन्द्रह मिनट बाद उसने जब नीचे की तरफ नज़र डाली, तो उसने देखा कि उसके पैरों के पास सड़क पर एक छोटा-सा कुत्ता बैठा है। वह बड़ी अच्छी नसल का सुन्दर कुत्ता था। कुत्ता फैशनेबिल दुनिया के लोगों के अपने सामने से गुज़रने पर अपने लम्बे काले मुंह से छींकता जा रहा था। वह ज़्यादा आगे नहीं बढ़ पा रहा था, इसका कारण यह था कि उसके गले में नीली पट्टी पड़ी थी, जिसमें ज़ंजीर थी। इस ज़ंजीर का दूसरा सिरा एक ऐसे व्यक्ति के हाथ में था, जो ठीक न्यूमैन की बगल में बैठा था। इस व्यक्ति की ओर अब न्यूमैन का ध्यान गया। उसने देखा कि पास का व्यक्ति उसे अपनी सफेद स्थिर दृष्टि से बराबर देखे जा रहा है। न्यूमैन चेहरा देखते ही पहचान गया, वह पिछले पन्द्रह मिनटों से मो० नियोशे के बगल में बैठा था। बीच-बीच में उसे कुछ ऐसा लगा जरूर था कि उसे कोई घूर रहा है। मो० नियोशे उसे बराबर घूरते रहे। उन्हें हिलने-डुलने से भी भय लग रहा था, इतना कि वे न्यूमैन की दृष्टि बचाने के लिए भी ऐसा नहीं करना चाहते थे।

"अरे !" न्यूमैन ने कहा, "क्या आप यहां भी मौजूद हैं ?" और न्यूमैन ने अपने पास बैठे व्यक्ति की असहायावस्था पर विषादपूर्ण दृष्टि डाली। न्यूमैन

को मो० नियोशे की निस्सहायता का पूरा पता नहीं था। मो० नियोशे के पास नया हैट था, मुलायम दस्ताने थे, कपड़े भी अपेक्षाकृत नये थे। उनकी बांह पर महिला का ओवरकोट पड़ा था—जो बड़ा ही हलका और बढ़िया था, उसकी किनारियों पर सफेद लेस टंकी थी। ज़ाहिर था, मो० नियोशे के पास यह लबादा संभालकर रखने के लिए दिया गया था। वे कुत्ते की ज़ंजीर को भी सावधानी से पकड़े थे। उनके चेहरे पर न्यूमैन को देखकर पहचान का कोई भाव न उभरा, सिवा इसके कि वे कुछ डरे-से लगे। न्यूमैन ने कुत्ते और सफेद लेस के ओवरकोट को देखा। उसकी आखें वृद्ध से फिर मिलीं। "मैं जानता हूं, आप मुझे पहचानते हैं," न्यूमैन कहे जा रहा था, "आप मुझसे पहले भी बातचीत कर चुके है।" मो० नियोशे फिर भी कुछ न बोले। लेकिन न्यूमैन को लगा कि उनकी आंखों में थोड़ा-थोड़ा पानी भर आया है। हमारे नायक ने अपना कथन जारी रखा, "काफे द ला पात्री से इतनी दूर, मुझे आपसे मिलने की उम्मीद न थी।" वृद्ध मौन रहा, लेकिन न्यूमैन ने मर्मस्पर्श कर लिया था, इसलिए वृद्ध के आंसू बहे जा रहे थे। वह न्यूमैन को घूरे जा रहा था, और न्यूमैन ने कहा, "क्या मामला है, मो० नियोशे ? आप तो बातें—अच्छी-खासी बातें करते थे। क्या आपको याद नहीं, आपने मुझे फ्रेंच पढ़ाई थी ?"

यह सुनकर मो० नियोशे का रुख कुछ बदला। उन्होंने आंसू रोके, छोटे कुत्ते को ऊपर उठाया और उसे अपने मुंह के पास लाकर उसके काले बालों से आंखें पोछीं, फिर कुत्ते की पीठ पर नज़र डालते हुए बोले, "मुझे आपसे बातें करने में डर लगता है। मैं भगवान से मना रहा था कि आपका ध्यान मेरी ओर न जाए, आप मुझे न देखें। मुझे यहां से उठ जाना चाहिए था, लेकिन मुझे डर लगा कि कहीं ऐसा करने से आपका ध्यान मेरी ओर आकृष्ट न हो जाए। इसलिए मैं बिलकुल चुपचाप बिना हिलेडुले अपनी जगह पर बैठा रहा।"

"मुझे संदेह है कि आपका मन बड़ा भारी है।" न्यूमैन ने कहा।

वृद्ध ने सावधानी से कुत्ते को अपनी गोद में बैठा लिया। इसके बाद उन्होंने अपना सिर हिलाया। वे अब भी न्यूमैन को स्थिर दृष्टि से देखे जा रहे थे। उन्होंने धीरे से कहा, "नहीं, मि० न्यूमैन, मेरा मन भारी नही है। मेरा दिल साफ है।"

"तो फिर आर मुझसे क्यों कतरा रहे थे ?"

"क्योंकि—क्योंकि आप मेरी स्थिति नहीं समझते।"

"ओह, मेरा ख्याल है कि आप एक बार अपनी स्थिति मुझे स्पष्ट कर चुके हैं," न्यूमैन ने कहा, "अब तो आपकी स्थिति में प्रतीत होता है, कुछ सुधार हुआ है।"

"सुधार ?" मो० नियोशे ने कहा, "क्या आप इसे सुधार कहते हैं ?" और उन्होंने अपनी बांह और हाथ के खज़ानों पर नज़र डाली।

"क्यों, आप यात्रा के लिए निकले हैं," न्यूमैन ने उत्तर दिया, "'सीज़न' में लन्दन की यात्रा निश्चय ही समृद्धि की प्रतीक है।"

इस कठोर व्यंग्य के उत्तर में मो० नियोशे ने कुत्ते को उठाकर फिर अपने गाल से लगा लिया और अपनी भावहीन आंखों से न्यूमैन को देखते रहे। उनके हावभावों से नितान्त असहायता-सी प्रकट होती थी। न्यूमैन की समझ में नहीं आ रहा था कि मो० नियोशे इस प्रकार का मूर्खतापूर्ण प्रदर्शन कर उसकी आड़ में मुंह छिपाने की कोशिश कर रहा था या अपनी बेइज़्ज़ती की वजह से उसका दिमाग खराब हो गया था। अगर वह वृद्ध विक्षिप्त था, तो न्यूमैन के मन में मूर्ख वृद्ध के प्रति पहले से अधिक करुणा का भाव जाग उठा था। न्यूमैन सोच रहा था कि मैं इसके लिए चाहे जिम्मेदार हूं या नहीं, लेकिन उसकी घृणास्पद लड़की की वर्तमान शरारतों में कुछ हाथ तो उसका भी था। न्यूमैन उसे छोड़-कर उठ जाना चाहता था, तभी धुंधली नज़रों से वृद्ध ने उसकी ओर देखते हुए अत्यन्त कारुणिक ढंग से प्रार्थना के स्वर में पूछा, "क्या आप जा रहे है ?"

"क्या आप चाहते हैं कि मैं रुकूं ?"

"था, मुझे आपके पास से चला जाना चाहिए था—आपका लिहाज करके। जैसे आपके इस तरह चले जाने से मैं अपने-आपको बड़ा अपमानित अनुभव [illegible] मैन।"

[illegible] "क्या आपको मुझसे कोई खास बात कहनी है ?"

[illegible] मो० नियोशे ने अपने चारों तरफ नज़र डाली, यह देखने के लिए कि उनकी बात कोई सुन तो नहीं रहा है। इसके बाद बड़े आहिस्ते से लेकिन स्पष्ट स्वर में कहा, "मैने उसे क्षमा नहीं किया है।"

न्यूमैन ज़रा-सा हंस दिया, लेकिन ऐसा लगा कि वृद्ध ने उसको हंसते नहीं देखा और न उसकी हंसी की आवाज़ सुनी। वह भावहीन, निरर्थक दृष्टि से

कहीं दूर देख रहा था। शायद उसकी आंखों के सामने अपनी निर्दयता की कल्पित मूर्ति थी। न्यूमैन ने कहा, "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपने उसे क्षमा किया है या नहीं। मैं आपको बता दूं कि कुछ और भी लोग है, जो आपकी पुत्री को क्षमा नहीं करेंगे।"

"उसने क्या किया है?" धीरे से मुड़कर मन्द स्वर में मो० नियोशे ने पूछा, "आप तो जानते ही हैं कि, वह क्या करती रहती है, इसका मुझे कुछ पता नहीं चलता।"

"उसने बड़ी शैतानी की है, उसके ब्योरे में जाना ज़रूरी नहीं है," न्यूमैन ने कहा, "वह बड़ी खतरनाक हो उठी है। उसे इन शरारतों से रोका जाना चाहिए।"

मो० नियोशे ने धीरे से अपना हाथ उठाकर न्यूमैन की बांह पर रख दिया। "रोका जाना चाहिए, हां," वृद्ध ने फुसफुसाते हुए कहा, "बिलकुल ठीक बात है। बीच में ही रोक देना चाहिए। वह बड़ी तेज भाग रही है, उसे रोकना चाहिए।" इसके बाद कुछ एक क्षण के लिए रुक गए। चारों तरफ देखकर फिर बोले, "मैं उसे रोकंगा, मै केवल अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

"अच्छा, अब मैं समझा।" न्यूमैन ने ज़रा-सा हंसकर कहा, "वह भाग रही है और आप उसके पीछे-पीछे भाग रहे हैं। आप दौड़ते-दौड़ते काफी दूर आ गए हैं।"

लेकिन मो० नियोशे निरन्तर न्यूमैन को घूरते रहे। "मैं उसे रोकूंगा।" उन्होंने धीरे से दोहराया।

वे अभी अपने मुंह से अगला शब्द नहीं निकाल पाए थे कि उनके सामने की भीड़ छंट गई, जैसे कोई बड़ा महत्त्वपूर्ण व्यक्ति आ रहा हो। जो रास्ता बना उससे होकर मदामाजेल नियोशे आईं। उनके साथ वही अंग्रेज़ नवयुवक था, [illegible] कुछ देर पहले न्यूमैन ने पीछे से देखा था। अंग्रेज़ युवक का चेहरा देखकर न्यू[illegible] तुरन्त पहचान गया। उसका हुलिया अजीब था और वर्ण भी। वह प्रसन्नव[illegible] युवक अन्य कोई नहीं लार्ड डीपमेयर थे। नोएमी ने जब अकस्मात् अपने साम[illegible] न्यूमैन को देखा तो वह एक क्षण के लिए ज़रा-सा ठिठक गई। मो० नियोशे [illegible] पहले ही उठ खड़े हुए थे। उसने अभिवादन के रूप में अपना सिर इस तरह झुकाया जैसे वह न्यूमैन से कल ही मिल चुकी हो, इसके बाद मुस्कराते हुए कहा, "हम लोग मिलते रहते हैं।" वह बड़ी आकर्षक लग रही थी। उसकी पोशा

सामने से बड़ी कलात्मक लग रही थी। वह अपने पिता के पास गई और उन्होंने हाथ फैला लिया। पिता ने विनयपूर्वक कुत्ता पुत्री के हाथ में रख दिया। उसने कुत्ते को चूमकर धीरे-धीरे कहना शुरू कर दिया : "मैं तुम्हें अकेला छोड़कर चली गई—मैं कितनी दुष्ट हूं, है न ! वाकई तेरी तबियत बड़ी खराब है।" इसके बाद न्यूमैन की ओर मुड़कर आंखों से घोर धृष्टता प्रदर्शित करते हुए नोएमी ने स्पष्ट किया, "मेरा ख्याल है कि इंगलैंड की आबहवा इसे माफिक नहीं आई।"

"लेकिन इसकी मालकिन के तो खूब माफिक आई है," न्यूमैन ने कहा।

"क्या आपका मतलब मुझसे है ? मेरे तो बहुत माफिक आई है, धन्यवाद !" नोएमी ने कहा। "लेकिन मीलार्ड के साथ,"—और उसने अपनी चमकती हुई आंखों से अपने नये साथी की ओर नज़र डाली—"कौन खुश नहीं रहेगा ?" नोएमी उस कुर्सी पर बैठ गई, जिससे उसके पिता उठे थे और वह छोटे-से कुत्ते की ज़ंजीर ठीक करने लगी।

लार्ड डीपमेयर ने ऐसे मौके पर जो अटपटापन लगना चाहिए था, उसको निम्नकोटि के पुरुष और ब्रिटेन की भांति भुगता। उनका चेहरा बार-बार सुर्ख हो जाता था। उन्हें न्यूमैन को देखकर अपनी उस प्रतिद्वंद्विता की याद आ रही थी, जिसका आधार छोटे बीमार कुत्ते की इस मालकिन के अलावा कोई और ही स्त्री थी। वह कुत्ते की तरफ देखकर सिर हिला रहे थे और एक खास तरह का इशारा करते जा रहे थे। अंग्रेज़ों को इस तरह का इशारा करते न्यूमैन ने देखा था, लेकिन इस इशारे का मतलब उसकी समझ में बिलकुल नहीं आया था। लार्ड डीपमेयर पीछे की तरफ कूल्हे पर हाथ रखे खड़े थे, और प्रयत्नपूर्वक हंस रहे थे तथा नोएमी की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देख रहे थे। यकायक उनके मन में एक नया विचार आया। वे न्यूमैन की तरफ मुड़कर बोले, "ओह, आप इन्हें जानते हैं ?"

"जी हां," न्यूमैन ने कहा, "मै इन्हें जानता हूं। मेरा ख्याल है, आप इन्हें नहीं जानते।"

"ओह, मैं भी इन्हें जानता हूं।" लार्ड डीपमेयर फिर हंस दिए और बोले, "मैं पेरिस से इनसे परिचित हूं—इनसे मेरा परिचय बेचारे बेलगार्द—मेरे भाई ने कराया था। आप तो उन्हें जानते थे न ? जो द्वन्द्व हुआ, उसकी तह में यही

थीं। आपको पता है न ? बड़ी ही दुःखद बात हुई, है न ?" बेचारे लार्ड डीप-मेयर संकोच को छिपाने के लिए अपने सरल स्वभाव के अनुकूल जो हो सकता था, कर रहे थे। "उन लोगों ने एक कहानी भी गढ़ ली है। यह कि वह पोप के लिए द्वन्द्व लड़े थे, उस आदमी ने पोप के विरुद्ध कुछ कहा था, इसे सहन न कर पाने के कारण लड़ाई हो गई। इस तरह की कहानियां तो लोग हमेशा बना लेते हैं। उन्होंने पोप की कथा गढ़ ली, क्योंकि एक बार बेलगार्द पोप के लिए लड़ने गया था। लेकिन लड़ाई इस लड़की के लिए हुई थी—यही पोप थी।" लार्ड डीप-मेयर ने कहा और आंखें चमकाते हुए मदामाजेल नियोशे की तरफ देखा। वह अब भी गोद में बैठे कुत्ते पर झुकी हुई थीं। कुछ रुककर लार्ड डीपमेयर ने कहा, "आपको शायद कुछ अजीब-सा लग रहा हो कि मैं अब भी इससे अपना परिचय बनाए हुए हूं। लेकिन मैं क्या करूं। आपको पता ही है कि बेलगार्द दूर के रिश्ते से मेरा भाई लगता है। आप शायद हाइडपार्क में मेरे मदामाजेल नोएमी के साथ घूमने का बुरा मान रहे हों। लेकिन यहां लोग इन्हें नहीं जानते, और फिर वह अभी इतनी खूबसूरत है।—" और लार्ड डीपमेयर का अगला वाक्य उस प्रशंसाभरी नज़र में खो गया, जो उन्होंने नोएमी पर डाली।

न्यूमैन मुड़ गया, और दूसरी तरफ देखने लगा। उसे जितना पसन्द था, उससे ज़्यादा नोएमी को देखना पड़ रहा था। मो० नियोशे अपनी पुत्री के आने पर एक तरफ हटकर खड़े हो गए थे। वह ज़रा-सी दूर अपनी जगह खड़े-खड़े कठोरता से ज़मीन की ओर देख रहे थे। अभी तक उनके और न्यूमैन के बीच यह तथ्य उतने अधिक तर्कसंगत ढंग से कभी प्रकट नहीं हुआ था कि मो० नियोशे ने अपनी पुत्री को क्षमा नहीं किया था। न्यूमैन ने वहां से जाते हुए मो० नियोशे की ओर देखा और उनके पास गया। यह देखकर कि वृद्ध कुछ कहना चाहता है, न्यूमैन अपने कान उनके समीप ले गया।

"आप किसी दिन अखबारों में देखिएगा।"

अपनी मुस्कराहट छिपाने के लिए हमारा नायक उस स्थान से चल दिया। न्यूमैन प्रतिदिन अखबार ध्यान से पढ़ता है, लेकिन फिर भी आज तक मो० नियोशे की उक्त घोषणा के फलस्वरूप उसे कोई समाचार पढ़ने को नहीं मिला।